ISSN : 0975-8011

बुंदेली बसंत



02/2016

बुन्देली साहित्य, संस्कृति तथा इतिहास को समर्पित-

ISSN - 0975-8011
पंजी.क्र. MPHIN-17761/12/1/2002-TC

बुन्देली बसन्त

अंक १७, फरवरी २०१६

✡

संरक्षक:

शंकरप्रताप सिंह बुन्देला 'मुन्नाराजा'

राजमहल परिसर, छतरपुर (म.प्र.)

मोबाइल : ०९४२५१४१४५५, ०९९८१५०३०५५

✡

संपादक

डॉ. बहादुर सिंह परमार

एम.आई.जी.-७, न्यू हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी

पन्ना रोड, छतरपुर (म.प्र.) ४७१००१

मोबाइल : ०९४२५४७४६६२, ०९७५५४६८९८९

e-mail : bsparmar1962@gmail.com

✡

सह संपादक

डॉ. के.एल. पटेल

रेडियो कॉलोनी के सामने, पन्ना रोड, छतरपुर (म.प्र.)

मोबाइल : ०९४२५८७९७७३

e-mail : dr.kunjeelalpatel@gmail.com

डॉ. हरिसिंह घोष

घोषयाना, संकटमोचन मार्ग, छतरपुर (म.प्र.)

मोबाइल : ०९४२५१४२०६६

बुसित्र

प्रकाशक :

बुन्देली विकास संस्थान

महल परिसर, छतरपुर (म.प्र.) ४७१००१

© प्रकाशकाधीन

♦ संपादन एवं प्रबंध पूर्णतया अवैतनिक एवं अव्यावसायिक

♦ **आवरण चित्र :** (१८५७ की वीरांगना लक्ष्मीबाई का अश्व)
अंशुमान सोनी
द्वारा-रामकुमार सोनी
गोवर्धन टाकीज के पास
ग्वाल मगरा रोड, छतरपुर (म.प्र.)

♦ **सहयोग राशिः**
२०० रुपये

♦ **आंतरिक लोकचित्र**
श्रीमती पवन ठाकुर, खजुराहो

♦ **मुद्रक :**
आकृति ग्राफिक्स, छतरपुर (म.प्र.)

♦ **संगणकीय अक्षर संयोजन :**
संतोष कुशवाहा, छतरपुर (म.प्र.)

♦ बुन्देली बसन्त में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। उनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

♦ विवादास्पद मामले केवल छतरपुर न्यायालय के अधीन होंगे।

अनुक्रमणिका

भाषा, साहित्य और आलोचना

इतिहास, परम्परा और संस्कृति

बुन्देली गद्य

बुन्देली काव्य

अन्य

संपादकीय-

इस साल बुन्देलखण्ड अँचल विकट सूखा की समस्या को झेल रहा हैं। चौमासे में आधे से कम वर्षा हुई है, खरीफ फसलें सूख चुकी हैं, रबी की फसल केवल वहीं बोई जा सकी हैं जिनके पास सिचाई के साधन हैं। सामूहिक सिंचाई के साधनों तालाबों-बाँधों की स्थिति ठीक नहीं हैं। कुँओं का जल स्तर नीचे जा रहा है इसके साथ जहाँ रबी की बुवाई हो भी गई हैं ठीक से ठंड न पड़ने से फसल कमजोर है। यह स्थिति आए दिन क्यों बन रही है? इसके लिए हम भगवान को दोषी नहीं ठहरा सकते, दोषी मानव है। वनाच्छदित बुन्देलखण्ड में वनों का विनाश तीव्र गति से हो रहा है, मनुष्य की लालची प्रवृत्ति ने पेड़ों को काट तो दिया उसके एवज में नये पौधे रोपे नहीं जिससे पहाड़ नंगे हो गए। नंगे पहाड़ व सूखी नदियाँ भी खनन माफियाओं की मार से कराह रहे हैं। नंगे पहाड़ों को मशीनों से जमीदोंज कर कांक्रीट का शहरों में जंगल खड़ा हो रहा है, कुछ लोग धनाद्य बन रहे हैं। इसी तरह का रेत का खेल भी स्वार्थी तत्वों की साझीदारी से खेला जा रहा है, वनीकरण घटने, प्राकृतिक संसाधनों के बेशुमार दोहन के साथ वाहनों की बढ़ती अधिकता और उनसे निकलती जहरीली गैस ने प्राकृतिक मौसम चक्र को बदल कर रख दिया है। जिससे अवर्षा और अतिवर्षा की समस्या पैदा हो रही हैं। इस दुख की घड़ी में सत्ता भी किसान से हमदर्दी के नाम पर राहत राशि वितरण के नाम पर अच्छा खेल खेलती है। इसमें जिसे मिलना चाहिए उसे मिलता नहीं जिसे नहीं मिलना चाहिए उन्हें भरपूर दिया जाता है। इसके लिए ग्रामीण इलाके से जमीनी स्तर सक्रिय राजनैतिक शक्तियों का सत्ता की मशीनरी से ऐसा गठजोड़ हैं जिसे सामान्य आदमी तोड़ने में अपने को असफल पाता है। उसकी चप्पलें घिस जाती हैं किन्तु न्याय नहीं मिलता। इन परिस्थितियों के निवारण के लिए जमीनी स्तर पर सक्रिय रचनाकारों, शिक्षकों, बुद्धिजीवियों तथा समाज के जागरूक नागरिकों के दस्ते को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी पड़ेगी। लोगों को जागरूक करना पड़ेगा कि भैया, नए पौधों को रोपो, पुरानों को सहेजो। पानी का सही उपयोग करो, खेती में जैविक खाद का प्रयोग करो, मशीनरी का सन्तुलित उपयोग करो। गसाथ में अवैध खनन जैसे कालेकामों को रोकने हेतु एकजुट हो, तो हम आने वाली पीढ़ियों को सूखा, बाढ़ तथा अन्य प्राकृतिक असंतुलन की त्रासदियों में बचा पाएंगे, अन्यथा की स्थिति में नहीं।

बुन्देलखण्ड अँचल में भी आंकड़े बता रहे हैं कि बहुएं अवैध रूप से उड़ीसा, छत्तीसगढ़ या अन्य इलाकों से खरीदकर लाई जाने लगी हैं। यह एक चिंतनीय तथ्य है। बालिका भ्रूण हत्या, बेटों की वंशवृद्धि हेतु चाहत, लड़कियों के होने से विवाह में दहेज तथा दिखावा की समस्या बेटियों की संख्या को घटा रही है। बेटियों के साथ होने वाले दुर्व्यवहार भेदभाव और इनकी सामाजिक स्वीकृति अस्वीकार्य है। लड़की के पैदा होने पर घर में मातम की स्थिति बनना तथा बूढ़ी महिलाओं द्वारा ताने मारना अभी भी समाज में है,

इन स्थितियों को बदलने सरकारों के द्वारा प्रयास हो रहे हैं, कुछ स्थिति बदल भी रही है लेकिन यह नाकाफी है। बेटियाँ घर से बाहर निकलकर स्कूल, कॉलेज की देहरी तक पहुँच कर अपने को बेटों से बेहतर सिद्ध कर रही हैं फिर भी स्थिति वही बन रही है कि सवर्ण गरीब लोग उड़ीसा या अन्य प्रांतों से बहुएँ ला रहे हैं। कई घटनाएँ इनमें ऐसी भी आई हैं कि भाषागत नासमझी तथा पुरुषवादी सामंती सोच से ये पीड़ित महिलाएं भाग खड़ी हुईं और सामाजिक संगठनों की सहायता से पुलिस तक पहुँची हैं। इन्हीं के बरक्स यदि बुन्देलखण्ड में महिलाओं की स्थिति की चर्चा की जाए। तो स्थिति गंभीर ही नहीं, भयावह है। अभी भी परम्पराओं और कुरीतियों के नाम पर स्त्रियाँ शोषण की शिकार हैं। शराब खोरी, जुआ की लत तथा अन्य नशों का दुष्परिणाम परिवार के साथ महिलाएँ सबसे ज्यादा झेल रहीं हैं। बुन्देलखण्ड अँचल देश के अन्य अँचलों से पिछड़ा है, इसे जागरूक करना होगा। बहनों को चेतना होगा, शिक्षा ही वह दीप है जो इन्हें आत्मनिर्भर बनाकर सक्षम बनाएगा।

छुआछूत, जातीय श्रेष्ठता तथा सामाजिक स्तर पर भेदभाव बुन्देलखण्ड की एक अन्य बड़ी समस्या है। उसको बदलने के लिए वंचितों को अपने हकों के प्रति सचेत होकर संघर्ष का रास्ता आख्तियार करना होगा तभी वह समाज में बराबरी का दर्जा हासिल कर सकेगा। यहाँ साक्षरता तो फैल रही है किंतु सच्चे मायने में सही व गलत का निर्णय करने की क्षमता देने वाली शिक्षा की कमी है। इसके लिए जागरूक नागरिकों व समूहों की जिम्मेदारी बनती है।

बुन्देली की रचनाधर्मिता को समर्पित इस अंक में हमारे लेखकों व रचनाकारों ने नवीन विषयों का स्पर्श किया है। बालिका शिक्षा, पर्यावरण चेतना, वृद्धों की उपेक्षा तथा अन्य समकालीन विषयों पर लेखनी चली है। इस बार एक लघु उपन्यास 'बुन्देली में गुन अवगुन को गली में जिद्द' पहली बार छाप रहे हैं, जो डॉ. दया दीक्षित ने लिखा है जिसकी कहानी संभवतः लोगों को प्रेरित करे। डॉ. कन्हैया लाल अग्रवाल ने कालिंजर अभिलेख के द्वारा बुन्देलवंश की उत्पत्ति पर शोधात्मक ढंग से नए तथ्य पेश किए हैं। जिन पर चर्चा तथा आगे शोध अपेक्षित है। हमारे वरिष्ठ लेखकों का सहयोग हमें सदा की तरह मिला है। हम और आप मिलकर इस पत्रिका के माध्यम से एक ऐसा स्वावलम्बी व बेहतर बुन्देलखण्ड गढ़ना चाहते हैं जिसमें लोक के सत्भावों का संरक्षण हो, लोक संस्कृति की गूंज नवीन जीवन मूल्यों की ऊर्जा के साथ हो।

अंत में एक बात कहना चाहूँगा कि हम अपनी कलम की अस्मिता को खंडित न होने दें। यही लेखक व रचनाकार की सबसे बड़ी उपलब्धि होती है।

हर बार की तरह पाठकों से बेबाकी से उनकी प्रतिक्रियाएं आमंत्रित हैं।

(हस्ताक्षर) ठाकुर सिंह परमार

चिट्ठी मिली अपुन की

✉ 'बुन्देली बसंत' के सबई संपादक बुन्देली भाषा के अच्छे खासे जनइया हैं। सो अपुन जानतइ हैं कै बिंदी (आधा न औ चंद बिन्दी अनुस्वार) के अलग-अलग चिन्ह हैं। इन दोनों के उच्चारण सोउ अलग-अलग होत हैं अकेलें आज काल पत्र पत्रकन औ किताबन में जौ पढ़बे में आ रओ है कै चँन्द्रबिन्दी की जांगां अकेली बिन्दी (आधा न) कौ प्रयोग खूब डटकें हो रओ। ईपै अपुन कौ सोउ ध्याँन गओ हुइए।

पै ई कोद न तौ रचनाकारन ने कोशिश करी, ना सम्पादकन नें। जीसें बुँदेली भाषा अपाहिज सी होत जा रइ है। अनुस्वार (चँद्रबिंदी) तौ बुन्देली भाषा की मिठास मधुरता कौ आधार आय। अनुस्वार को प्रयोग न करबे से बुँदेली शब्दन कौ मूल उच्चारण विगरत जा रओ है।

जैसें हँस बोल लो कों हंस बोल लो, लिखो जेये तो पढ़े जेय जैसो अर्थ हुए ऊसो यानी ओ। हंस बोल लो। अँगर कों अंगर, अँगोछी को अंगोंछीं, उँगरिया कों उंगरियां, रुआँसी कों रुन्यासी, क्वाँरी कों क्वान्री पढ़ो जेय तो एक अर्थइ न कड़है औ अगर कड़ो तो गलत निकर है। अनर्थ हो जैहे। मूल उच्चारण भी विगर जैहै।

घर में लगी है आग घर के ही चिरागों से जौ कैबो बुंदेली भाषा के लाने सोरउ आना सई औ खरौ उतर रओ है। अचरज भरी बात जा है कै बुंदेली के रचनाकार खुदईं ई कोद ध्याँन् नइँ दै रए हैं। जोंन शब्द कों जैसो बोलवें ऊसइ लिखवें तौ कौनऊँ गड़बड़ होवे कौ डर नइँ रै जेय। मनमानी करवे बारन के कारन बुंदेली को रूप बिगर जैहै। औ ई के लानें हम सबइ जने दोषी औ गुनहगार ठँहराए जैहें। काए सें कै हमइँ बुंदेली के रखावे औ बचावे-बढ़ावे कौ झंडा लयें हैं।

थोरौ कओ भौत समजियो। जय बुंदेली जय बुंदेलखण्ड।

-सुरेन्द्र शर्मा 'शिरीष'

शुक्लाना मुहल्ला, छतरपुर (म.प्र.)

✉ 'बुन्देली बसंत' २०१५ के अंक को पढ़कर सुखद अनुभूति हुई हमारी बुंदेली संस्कृति, परम्परायें और रीति-रिवाजों से परिचित कराने वाली यह अद्वितीय पहल है। इसमें प्रकाशित कहानियाँ, लेख, गीत, कवितायें और अन्य स्तंभों का एक-एक मोती महत्वपूर्ण हैं। 'रामधई' ओ.पी. रिछारिया एवं 'ब्याह' डॉ. दया दीक्षित की कहानियाँ अच्छी लगीं।

-डॉ एन.के.सैनी

जिला मलेरिया अधिकारी, सागर

✉ 'बुन्देली बसंत' का अंक १६ प्राप्त हुआ यह काफी ज्ञानवर्धक तथा रोचकता से परिपूर्ण है, बुन्देलखण्ड की संस्कृति के विविध पक्ष इसमें उजागर हुये हैं। संपादक मण्डल ने काफी परिश्रम किया है। बधाई!

-डॉ. नागेश दुबे

डाक्टर हरीसिह गौर विश्वविद्यालय, सागर

✉ 'बुन्देली बसंत' २०१५ प्राप्त हुआ। आपकी संपादकीय महत्वपूर्ण है जिसमें बुन्देलखण्ड अशिक्षा के कारण लोग कुरीतियों, कुप्रथाओं एवं अंधविश्वास के शिकार हैं, जातिगत सामन्तवादी मानसिकता को भी आपने इस क्षेत्र के पिछड़े होने का कारण बताया है जो सही है। पंचायती राज की असफलता के लिए भी उपरोक्त कारक ही जिम्मेदार हैं।

बुन्देली बसंत बहुत ही महत्वपूर्ण पत्रिका है जो बुन्देलखण्ड की लोककला, साहितय एवं संस्कृति की गौरवशाली विरासत से समाज को परिचित कराने का काम कर रही है। अनेक आलेख शोधपूर्ण हैं जो शोधकार्यो के लिये प्रोत्साहित करते हैं। काव्य रचनाओं में भी बुन्देली की आंचलिक सुगंध है।

आचार्य भगवत दुबे

पिसनहारी मढ़िया के पास, जबलपुर

✉ पत्रिका में संपादकीय में बुन्देलखण्ड के विकास की चिंता स्पष्टतः रेखाँकित है। अशिक्षा के विषय में व्यवहारिक सुझाव ... धनिक सामन्त, राजनीति में पगी सामन्ती मानसिकता की ओर संकेत, सामाजिक संरचना के विघटन के प्रति चिंता की अभिव्यक्ति निश्चित रूप से सराहनीय है।

लेखन में पग पग पर प्रासंगिकता तथा बुन्देली भाषा की सुगन्धित बयार वातायन से आकर संपूर्ण कक्ष और आँगन-प्राँगण को महका देती है। लेखन निश्चित रूप से स्तरीय है, तथा बुन्देली बसन्त, ऋतुराज का राज साम्राज्य पूर्णतया स्थापित प्रतीत होता है।

इस स्तर की पत्रिका का अभाव, गुरसराय में सदैव अनुभव किया करता था। छतरपुर तो आने जाने का क्रम बना ही रहता है। यह मेरा शुभ संस्कार होगा। डॉ. रामशंकर द्विवेदी, डॉ. मोना जैन, डॉ. रामनारायण शर्मा का लेखन गवेषणा पूर्ण एवं श्रम साध्य है।

-श्रवण सिंह सेंगर

कैरोखर हाउस, गुरसराय
जिला-झाँसी (उ.प्र.)

✉ छत्रसाल कौ छतरपुर, दिन-दिन नामी होय।
ललित कला-साहित्य में, जगत बड़ाई होय।।
"बुन्देली उत्सव" मची बुन्देली की धूम।
राई नृत्य नूपुर बजैं, छननन छननन छूम।।
मात सारदा ने धरौ जब असीस कौ हाँत।
गीत-छन्द, कविता-कथा, लेख लिखे बहुभाँत।।
हिन्दी-बुन्देली सृजन की सेवा से प्रीत।
भाषा सरल-सुबोधनी, कही रीत उर नीत।।
बरस छियालिस हो गईं, बनौ रेडियो मीत।
ऋतु-त्यौहार-परम्परा के गाये हैं गीत।।
सन् उनहत्तर से जुड़े, जात हते भोपाल।
मामुलिया-सुअटा सजी लोकगीत की माल।।
"राव बहादुर सिंह जू बुन्देला" सम्मान।
कर-कमलन सें आपके, हमने पाऔ आन।।
"बुन्देली-उत्सव समिति" कौ मो पै आभार।
भूलत नईं भुलाए सें नर-नारिन कौ प्यार।।
"धन्नबाद" कैसें कहें, फूटत नइँयाँ बोल।
जौ आदर अनमोल है, कबहुँ न जाकौ मोल।।
है असीस 'ब्रजलता' की कीरति होय अनन्त।
नार नवेली- सी सजै, जौ "बुन्देली बसंत"

-श्रीमती ब्रजलता मिश्रा

झाँसी (उ.प्र.)

✉ 'बुन्देली बसंत' हस्तगत होते ही मैंने आद्योपान्त पठन कर लिया। अंक १६ मार्च २०१५ के इस अंक में सामग्री पठनीय और शोध्य है। मुझे इस अंक में जिन रचनाओं ने सर्वाधिक प्रभावित किया उनमें श्री रामस्वरूप पाण्डेय द्वारा लिखित उचक्कन की अथाई, श्री उमाशंकर खरे उमेश द्वारा लिखित मूरखन की अथाई, श्री आचार्य दुर्गाशरण शुक्ल द्वारा लिखित लबरन की बात, श्री महेश कटारे की गजलें, श्री प्रेम प्रकाश चौबे की गजलें, श्री प्रभु श्रीवास्तव की बुड़की और डॉ. रामनारायण शर्मा का आलेखर-पिसनारी जो इतिहास बन गई ने अत्यधिक प्रभावित किया। अन्यान्य लेखक भी बधाई के पात्र हैं किन्तु उपर्युक्त लेखकों को उत्तरोत्तर बधाई!

-टीकाराम त्रिपाठी
गोपालगंज, सागर

✉ 'बुन्देली बसंत' २०१५ का अंक हाथ में है। मुझे यह लिखते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि बुंदेली बसंत का प्रत्येक अंक अत्यंत सारगर्भित है और हर अंक अपने पहले अंक की तुलना में और पठनीय, विविध और प्रमाणिक होता है। इसके लिए आप बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में प्राचीन और नवीन का अद्‌भुत संगम देखने को मिलता है। यह बुंदेलखंड की परम्परा और आधुनिकता का साक्ष्य प्रस्तुत करता है। इस पत्रिका में लेखकों की उदात्त भावनाओं का सराहनीय समावेश होने के साथ ही साथ कुछ अत्यंत रोचक खण्ड है जो अनायास ही पाठकों का ध्यान अपनी ओर खींच लेते हैं। पत्रिका की रचनाओं से बुंदेलखंड के सौन्दर्य पर ही प्रकाश नहीं पड़ता बल्कि वहां की संस्कृति, साहित्य और कला की महत्वपूर्ण जानकारी भी हमें मिलती है। अंक वास्तव में संग्रहणीय है। इसके पीछे आपका अथक परिश्रम और सूझबूझ स्पष्ट परिलक्षित होती है। आपकी यह पत्रिका अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करे, यह कामना करते हैं।

-डॉ. मोना जैन
रायपुर (छत्तीसगढ़)

✉ 'बुन्देली बसंत' अंक १६, मार्च २०१५ का पढ़ने का सौभाग्य मिला। मन प्रसन्न हो गया। सच पूछो तो- मुस्कान, प्रसन्नता, हँसी-खुशी, हमारी आंतरिक-तृप्ति और आत्मीयता का प्रतिबिम्ब है, - पत्रिका ''बुन्देली बसंत''....।

इस अंक में- विशेष रूचिकर बन पड़े प्रसंग जैसे बुन्देली गद्य की अवधारणा, लोक नाट्य की परम्परा, बुंदेली लोकगीतों में नारी की मानसिकता, वीरांगना चम्पावती काफी दिलचस्प लगे। दूसरी ओर शिक्षित युवाओं को दिशा देने वाला विषय, लोक विरासत में, रोजगार की संभावनाऐं जैसे विचारणीय और मार्गदर्शक - उपयोगी सुलेख पढ़ने को मिला।

कहानी संग्रह में - उच्चकन की अथाई, बुन्देलखण्ड गौरव महाराजा छत्रसाल नाटक, डॉ. दया दीक्षित की कहानी - ब्याह और दस को नोट (शकूर मुहम्मद) - श्री लखन लाल पाल की कहानी - गँवार ने मन मोह लिया। काव्य खण्ड से - दो मिनिट का मौन, श्री हरगोविन्द विश्व, माटी मेरे सागर की, डॉ. वर्षासिंह, सच्चे भारत रतन- श्री श्याम बहादुर श्रीवास्तव जी की रचना साथ ही - बुन्देली गजलें, चौकड़िया - सभी ने इस अंक की शोभा बढ़ाई है।

अंत में - एक दिल की बात कहना चाहूँगा कि वर्तमान में - तमिल, तेलगू, उड़िया, कन्नड़, ब्रजभाषा और भोजपुरी ने अपनी भाषा और बोली के झण्डे गाड़ दिये हैं। फिल्म निर्माण हो रहा है। किन्तु बुन्देली में आज तक कोई फिल्म नहीं बनी है, यदि अपवाद स्वरूप कहीं प्रयोग हुआ भी है - तो उसने वह ऊँचाई नहीं प्राप्त की, जिसकी वो हकदार है। अतः हम सभी - बुन्देली प्रेमियों को इस ओर भी एक प्रयास करना चाहिये।

-ओ.पी. रिछारिया
७५, परकोटा वार्ड, सागर

✉ अपुन नें भेजी सादर भेंट।
'बुन्देली बसंत' की प्यारी भेंट।।
जामें-सबई-अच्छौ-अच्छौ।
२०१५-गेटअप-अच्छौ।।
हँसती मिली पुलकती भेंट।
अपुन ने भेजी सादर भेंट।।
बुन्देली लोकचित्र नीके।
संख्या बीसइ भी नीके।।
सम्पादकीय शब्दन में भारी।
लगै न्यारी न्यारी न्यारी।।
छपाई सुन्दर सीकर भेंट।
अपुन ने भेजी सादर भेंट।।

-डॉ. एल.आर.सोनी 'सीकर'
सीकर भवन, ठंडी सड़क, दतिया (म.प्र.)

✉ 'बुन्देली बसंत' बुन्देली साहित्य संस्कृति की अनमोल सम्पदा को सामने ला रही है। मैं इस पत्रिका को पढ़कर अभिभूत हूँ आप विद्वानों से शोध एवं चिंतन परक आलेख लिखाने में सफल हो जाते हैं। इसके लिये बधाई! शोधार्थियों को बुंदेली भाषा साहित्य और संस्कृति के लिये बसंत एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

-युगेश शर्मा
चूना भट्टी भोपाल (म.प्र.)

✉ 'बुन्देली बसंत' को अंक सोरा पाके भौत नौनो लगौ। ई अंक में बुन्देली गद्य औ बुन्देली पद्य दोऊ एनई छपौ है। 'इतिहास परम्परा और साहित्य' में डॉ. रामनारायण शर्मा जू कौ 'पिसनारी जो इतिहास बन गई' पं. हरिविष्णु अवस्थी जू कौ 'बुन्देलखण्ड में जल संस्कार' भौत गुरीले लेख लगे। ऊसै तो ई में बुन्देली गद्य में कहानी, लघुकथा, निबंध, संस्मरण, लोककथा, नाटक, समीक्षा, सबई कछु दओ गओ हतो, पर एक कमी खली कि बुन्देली में एकऊ गद्य व्यंग्य नई हतो।

-राजीव नामदेव 'राना लिधौरी'
शिवनगर कॉलोनी, टीकमगढ (म.प्र.)

✉ 'बुन्देली बसंत' के माध्यम से आपके प्रयत्नों से बुन्देली को एक दिशा मिल है। बुन्देली बसंत बुन्देली भाषा, साहित्य, संस्कृति और समाज के उन्नयन की दिशा में एक सुन्दर पहल है। यह पत्रिका दिनों दिन आगे बढ़ रही है और निखरती जा रही है।

बुंदेली की लुप्त हो रही अक्षय निधि को सामने लाने के इस अथक प्रयास के लिए आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। समय की दुरभि संधियों में आगे-बढ़ना, उससे प्रेरणा लेना बुन्देली संस्कृति की विशेषता है।

-डॉ. वीरेन्द 'निर्झर'
न्यू इंदिरा कॉलोनी, बुरहानपुर (म.प्र.)

बुन्देलों की वीरभूमि : बुन्देलखण्ड

-डॉ. यशवंत सिंह

कश्मीर यदि हमारे देश का स्वर्ग माना जाता है तो "बुन्देलखण्ड" हमारे देश का हृदय कहा जाता है। बुन्देलखण्ड का अपने अदम्य-साहस, शौर्य एवं पराक्रम तथा स्वतंन्त्रता की रक्षा के क्षेत्र में एक अलग ही स्थान रहा है। प्राचीन काल से मध्यकाल की दीर्घकालीन ऐतिहासिक परम्परा में यह भूभाग-चेदि प्रदेश (महाभारत काल में), दशार्ण प्रदेश (दस नदियों वाला प्रदेश), मध्यप्रदेश (मध्यदेश), जैजाकभुक्ति (चंदेलवंशीय प्रारम्भिक शासक जयशक्ति, जिसको जेजा और जैजाक भी कहा जाता था, के नाम पर भुक्ति अथवा प्रान्त), जुझौति, जुझारखंड, विन्ध्येलखण्ड (बुन्देलों के आगमन के साथ जो बाद में अपभृष्ट होकर वर्तमान नाम बुन्देलखण्ड कहलाया) आदि नामों से भिन्न-भिन्न कालों में जाना जाता रहा है।

'बुन्देलखण्ड' की धरा ऐसे-ऐसे वीरों का आविर्भाव हुआ है, जिन्होंने अपने प्रभाव से इतिहास और काल की दिशा ही मोड़ दी थी। जिस महान प्रतिभाओं ने इस भूमि पर जन्म लेकर बुन्देलखण्ड को वीर-प्रसवनी या वीर-प्रसूतिनी कहलाने में अभूतपूर्व भूमिकायें निभाई हैं, उनमें चंदेलवंशीय यशस्वी नरेशों-महाराजा धंग (950-1002 ई.), महाराजा गंड (1002 से 1019 ई.), महाराजा परमर्दिदेव उर्फ परमाल (1165-1203 ई.), एवं बुन्देला नरेशों-वीरसिंह देव (मुगल सम्राट जहाँगीर के समकालीन), चम्पतराय (मुगल सम्राट शाहजहाँ के समकालीन) एवं उनके यशस्वी पुत्र महाराजा छत्रसाल (औरंगजेब के समकालीन) के साथ महारानी लक्ष्मीबाई का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। चन्देलवंशीय परमर्दिदेव की सेना के दो वीर सेनानायकों-आल्हा एवं ऊदल को तो आज भी समस्त उत्तर भारत की जनता उनके शौर्य एवं पराक्रम के लिए श्रद्धा से याद करती है। श्रावण मास में बारिश की फुलझड़ी के बीच ढोलक की थाप के साथ समस्त उत्तर भारत में इन दोनों के शौर्य एवं पराक्रम की गाथा आज भी गायी जाती है, जिनको बुन्देलखण्ड में "आल्हा" के नाम से जाना जाता है।

बुन्देलों के पहले यहाँ आठवीं शताब्दी के लगभग चंदेलों का उदय खजुराहो और मनियागढ़ के समीप हुआ। कहा जाता है कि चंदेल लोगों का वंश चन्द्रमा से चला है। चन्द्रमा ने काशी के गहरवार राजा के पुरोहित की कन्या हेमवती से विवाह कर एक पुत्र उत्पन्न किया जिसने महोबा में अपना राज्य जमाया। उस चन्द्रमा के पुत्र का न्राम 'चंद्रवर्मा' था। यद्यपि चंदेलवंशीय राजा धंगदेव के एक शिलालेख के अनुसार इस वंश को चलाने वाला 'नन्नुक' नाम का एक पुरुष बतलाया गया है, पर कथानकों में चन्देल वंश के आदि पुरुष चंद्रात्रेय का ही उल्लेख आता है।

चंदेल वंश का अन्तिम महान शासक परमार्दिदेव (परमाल) हुआ, जिसके समय में सन् 1182 ईसवी में पृथ्वीराज चौहान ने राजधानी महोबा पर आक्रमण किया। पृथ्वीराजरासो, परमालरासो, आल्हाखण्ड आदि ग्रन्थों से परमर्दिदेव के राज्य पर पृथ्वीराज के आक्रमण तथा उसके पराजित होने का वर्णन प्राप्त होता है। इससे यह भी ज्ञात होता है कि आल्हा और ऊदल नामक चन्देल सेना के दो वीर सेनानायकों ने पृथ्वीराज के विरुद्ध लड़ते हुये अपनी जान गंवायी। लेकिन बुन्देलखण्ड में इस घटना पर लोकमान्यता कुछ दूसरी है, जिसके अनुसार आल्हा को मैहर की शारदा माँ से अमरत्व का वरदान प्राप्त था तथा वह माँ शारदा के समझाने पर युद्ध भूमि से अपने पुत्र इन्दल (इसको भी अमरत्व का वरदान प्राप्त था) के साथ कजली-वन को प्रस्थान कर गया। लोकमान्यता यह भी है कि आज भी आल्हा माँ शारदा को पुष्प अर्पित करने आता है, लेकिन उसको कोई देख नहीं पाता। महोबा पर पृथ्वीराज के आक्रमण का लोकसाक्ष्य बुन्देलखण्ड में अभी भी मौजूद है। महोबा व उसके आसपास के क्षेत्रों में 'कजली-उत्सव' 'श्रावण' मास की पूर्णमासी को न होकर उसके एक दिन बाद होता है। मान्यता यह है कि आल्हा ऊदल की अनुपस्थिति में पृथ्वीराज के सैनिकों ने एक दिन के लिये महोबा की 'कजलियों' को नहीं निकलने दिया था। कदाचित इससे परमर्दिदेव कालीन चन्देल राज्य की सीमा भी निर्धारित की जा सकती है। परमर्दिदेव के साथ ही चन्देलों की स्वाधीनता का अन्त हो गया लेकिन तेरहवीं शताब्दी तक चन्देल राज्य का अस्तित्व बना रहा। खजुराहो के विश्वप्रसिद्ध मन्दिर, कालिंजर का अभेद्य दुर्ग तथा महोबा के विशाल तालाब चन्देल राज्य की उपलब्धियाँ है। इसके बाद इनका स्थान कुछ समयान्तराल के बाद बुन्देलों ने ले लिया।

चन्देल राजा परमर्दिदेव के समय "गढ़कुंडार" एक किला था। चंदेलों के बिखरते ही महत्वाकांक्षी खूबसिंह खंगार ने स्वयं को गढ़कुंडार का राजा घोषित कर दिया। इसी समय बुन्देले भी बुन्देलखण्ड में अपना राज्य स्थापित करने में लगे थे, ये काशी के गहिरवार वंश की शाखा से सम्बंधित थे। उन्होंने पहले बुन्देलखण्ड में जालन प्रान्त के 'मुहीनी' नामक स्थान में आकर निवास किया था, यह स्थान बुन्देलों की आदि राजधानी है। बुन्देलों ने बुन्देलखण्ड में राज्य स्थापना के लिए पहले खंगारों से ही मुठभेड़ की। इनसे लड़कर राज्य लेने वाले बुन्देले राजा का नाम "सोहनपाल" है। इसके बारे में एक रोचक दस्तान है, जिसके अनुसार खंगार राजा खूब सिंह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र हुरमत सिंह खंगार गढ़कुडार का राजा हुआ। वह अत्यन्त ऐय्याश, अधर्मी और क्रूर था। उसके कारनामों से स्थानीय प्रजा, (जिनमें बुन्देला क्षत्रियों की संख्या अधिक थी), बहुत पीड़ित थी। सन 1288 ईसवी के लगभग यहाँ के निकटवर्ती राज्य महौनी से एक निष्काषित पुरुष सोहनपाल बुन्देला ने अपने निकटवर्ती राज्य का हिस्सा पुन: प्राप्त करने के लिए खंगार राजा से सहायता माँगी। खंगार राजा ने सहायता के एवज में यह शर्त रखी कि वह अपनी पुत्री का विवाह उसके लड़के से कर दे। बुन्देलों व उनके सम्बन्धियों, शुभचिन्तकों ने इसे अपना अपमान समझा और सभी ने मिलकर एक साजिश रची, जिसमें विवाह के बहाने खंगारों को बुलाकर उनको शराब पिलाकर मदहोश कर दिया गया, फिर सभी बुन्देला ठाकुर तलवार लेकर उन पर टूट पड़े और भेड़-बकरियों की तरह उनको काट डाला। खंगारों का विनाश करने के उपरान्त सोहनलाल बुन्देला गढ़कुँडार का राजा हुआ। गढ़कुड़ार पर अधिकार करने से बुन्देलों का प्रभाव आसपास के इलाके पर अधिक जम गया। सोहनलाल के उत्तराधिकारी गढ़कुँडार के निकटवर्ती भागों पर 1531 ईसवी तक गढ़कुँड़ार से शासन करते रहे।

इसी वंश के राजा रुद्रप्रताप ने अप्रैल 1531 में राजधानी 'ओरछा' राजवंश की नींव डाली। राजा रुद्रप्रताप की मृत्यु तक चीते से गाय की रक्षा करते हुई। उनके अनन्तर उनके प्रथम दो पुत्र- भारतीचन्द्र और मधुकर शाह क्रमशः गद्दी पर बैठे। बुन्देलों और मुगलों का संघर्ष यहीं से शुरू हुआ। कहा जाता है एक बार मधुकरशाह विशेष प्रकार का तिलक लगाकर अकबर के दरबार में गये, जिसे अकबर ने अपना अपमान समझा तथा उसने मधुकरशाह को देख देखने की इच्छा जाहिर की मधुकरशाह ने वापस लौटकर युद्ध की तैयारी शुरू कर दी, घमासान युद्ध हुआ, जिसमें दोनों पक्षों को क्षति उठानी पड़ी अन्त में दोनों पक्षों में समझौता हो गया। मधुकरशाह कृष्ण उपासक थे, जबकि उनकी महारानी गणेशकुंवर राम की उपासक थी। कहा जाता है कि पति द्वारा रामभक्ति का ताना देने पर रानी गणेशकुँवर अयोध्या गयी, वहाँ पर सरयू स्नान करते समय भगवान राम की मूर्तियाँ उनके आँचल में आ गयी, वापस लौटते समय उन्होंने पति मधुकरशाह से मूर्तियों के लिए मन्दिर बनवाने का सन्देशा भेजा। लेकिन ओरछा पहुँचने तक मन्दिर का निर्माण पूरा नहीं हो सका था अतः उन्होंने अपने रानी महल में ही भगवान राम की मूर्तियों को प्रतिष्ठित कर लिया, जिसे रामराजा मन्दिर के नाम से जाना जाता है।

मुगल शासक अकबर के शासन काल के दौरान उसके बागी पुत्र जहाँगीर (जो अकबर के बाद मुगल शासक बना) के कहने पर बुन्देला शासक वीर सिंह देव ने अबुलफजल की हत्या कर जहाँगीर की कृपा प्राप्त की थी। इस विषय में एक बड़ी रोचक कथा बुन्देलखण्ड के इतिहास से प्राप्त होती है, जिसके अनुसार कैसे दक्षिण से आती हुई विशाल मुगलसेना के भीतर घुसकर वीरसिंह बुन्देला ने अपने कुछ सौ सैनिकों के द्वारा ही अबुलफजल को मारने की एक योजना बनाई, जिसके लिए उसने ऊँचे सीगों वाले चार-पाँच सौ बैलों, जो कि बुन्देलखण्ड में बहुतायत से मिलते है, को अपने साथ लिया तथा उनको खूब खिला-पिलाकर तन्दुरुस्त कर लिया। इसके बाद उन बैलों को लेकर वीर सिंह देव अपने कुछ साथियों के साथ ग्वालियर की तरफ चल पड़ा। मार्ग में स्थापित मुगल-सैनिक-चौकियों में पूछताछ होने पर बताया कि वे तो बैलों के व्यापारी है। इस तरह वे लोग मुगल सेना के बिल्कुल नजदीक पहुँच गये। एक रात जब मुगल सैनिक नाच गाने में मस्त थे, वीरसिंह बुन्देला ने उन सभी बैलों का शराब पिलाकर मदहोश किया तथा उनके सीगों में मिट्टी के तेल से भीगे कपड़े लपेटकर उनमें आग लगा दी, इस तरह उसने सभी बैलों को मुगल पड़ाव की तरफ दौड़ा दिया। मुगल पड़ाव में अफरातफरी मच गयी, तम्बुओं में आग लग गयी व सैनिक अस्त-व्यस्त हो गये। इसी समय वीरसिंह बुन्देला ने पास के जंगलों में छिपे अपने कुछ सौ सैनिकों को लेकर मुगल पड़ाव पर आक्रमण किया तथा भयभीत अबुलफजल का सिर धड़ से अलग कर उसे इलाहाबाद के किले में जहाँगीर के पास भेज दिया।

वीरसिंह के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र जुझार सिंह गद्दी पर बैठा। मुगल सम्राट शाहजहाँ बुन्देलों को शक्तिशाली नहीं देखना चाहता था। अतः मुगल दरबार में जुझार सिंह के उसके छोटे भाई "हरदौल" के विरुद्ध कान भरे गये। हरदौल उस समय बुन्देलों में एक उभरता हुआ योग्य सेना नायक व संगठनकर्ता थे। उसके नेतृत्व में बुन्देलों को पूरी निष्ठा थी तथा वे बड़ी से बड़ी शक्ति का मुकाबला करने को तैयार थे। लेकिन चुगलखोरी काम कर गयी। जुझार सिंह न अपनी पतिव्रता स्त्री के चरित्र पर संदेह करके उसे अपने पुत्र समान देवर हरदौल को विष देने को कहा। हरदौल को जब यह मालूम हुआ तो उसने अपनी माता समान भाभी के सतीत्व की रक्षा के लिए स्वयं जहर पी लिया। बुन्देलखण्ड के लोकमानस में इस घटना के विरुद्ध बहुत तीव्र प्रतिक्रिया हुई, उनका अपने राजा जुझार सिंह पर से विश्वास हट गया। आज भी बुन्देलखण्ड के गाँव गाँव में हरदौल की स्मृति में चबूतरे स्थापित है। कोई भी मंगलकार्य शुरू करने से पहले हरदौल को याद किया जाता है। हरदौल एक तरह से बुन्देलखण्ड के गणेश देवता है।

बुन्देलों को विभाजित एवं कमजोर जानकर शाहजहाँ ने ओरछा पर आक्रमण कर दिया, जिसमें जुझार सिंह के परिवार को अत्यधिक हानि उठानी पड़ी। स्वयं जुझार सिंह कुत्ते की मौत मारा गया तथा उसे हरदौल के प्रति किये गये अन्याय का प्रतिफल मिल गया। ओरछा पर अब मुगलों का अधिकार हो गया। इससे बुन्देले प्रसन्न नहीं थे तथा चम्पतराय के नेतृत्व में मुगलों से संघर्ष जारी रखा। चम्पतराय व उसकी वीररानी सारन्धा की शौर्य-पूर्ण कथा बुन्देलखण्ड में श्रद्धा पूर्वक कही जाती है, इन दोनों ने मुगलों से संघर्ष करते हुए युद्ध-भूमि में अपने प्राण तयागे। इन्ही के वीर पुत्र छत्रसाल बुन्देला हुए जिनकी वीरता के बारे में बुन्देलखण्ड में एक कहावत प्रसिद्ध है-

"इत जमुना उत नर्मदा, इत चंबल उत टौंस।
छत्रसाल सू लड़न को, रही न काहू हौंस।।"

इन्होंने बुन्देलखण्ड को मुगलों से खाली करवाया तथा मराठा राजा छत्रपति शिवाजी से मित्रता की। कहा जाता है कि एक बार मुगल शासक औरंगजेब ने छत्रसाल की तलवार के वार का परीक्षण करना चाहा, छत्रसाल ने दरबार में ही तलवार से एक ऐसा तेज वार किया कि तलवार दरबार में खड़े एक खम्भे के आरपार चली गयी, जिसको देखकर सभी दंग रह्र गये थे। महाराजा छत्रसाल ने प्राणनाथ को अपना धर्मगुरु बनाया। महाराजा छत्रसाल और बाबा प्राणनाथ का बुन्देलखण्ड में उसी प्रकार का आदर है जैसे कि महाराष्ट्र में छत्रपति शिवाजी और समर्थ गुरु रामदास का होता है। छत्रसाल ने पेशवा बाजीराव (1720 से 1740 ई.) को अपना दत्तक पुत्र माना एवं पन्ना राज्य का एक तिहाई भाग उसे दे दिया। यहीं से मराठों का बुन्देलखण्ड से सम्बन्ध स्थापित हुआ।

अन्त में झांसी की वीर रानी लक्ष्मीबाई का जिक्र किये बिना बुन्देलखण्ड की चर्चा अधूरी होगी। उनके बारे में सुना जाता है-

"बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।"

महारानी लक्ष्मीबाई के शौर्य-पूर्ण कार्यो एवं महत्ता के विषय में हमीरपुर (उ.प्र.) के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. श्री रामगोपाल गुप्त के विचार महत्वपूर्ण है। एक बार गुप्त जी राजस्थान में किसी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी सम्मेलन में भाग लेने गये हुये थे। वहाँ पर राजस्थान की स्त्रियों के जौहर की अनेक गाथाएँ गुप्त जी को सुनाई गई तथा इसको वहाँ पर अत्यन्त वीरता-पूर्ण कार्य की संज्ञा प्रदान की गयी। इस पर गुप्त जी कहा कि हमारे यहाँ भी शत्रुओं के विरुद्ध अपनी वार लेकर रणभूमि में गयी व वहाँ पर शत्रुओं के दाँत खट्टे किये।

इस प्रकार एक वीरांगना की भांति हजारों को मारकर तब कहीं जाकर अपने प्राणों का उत्सर्ग किया। काश आपके राजस्थान में भी ऐसा ही कुछ होता तो आज राजस्थान का इतिहास दूसरा होता। सच में, बुन्देलखण्ड में रानी दुर्गावती व रानी लक्ष्मीबाई ने स्त्री होते हुए भी रणभूमि में ऐसे पुरुषोचित शौर्य-पूर्ण कार्य किये कि वीर-भूमि बुन्देलखण्ड की सार्थकता पूर्णत: सिद्ध हो गयी।

इस प्रकार सोन-बेतवा तथा नर्मदा-यमुना के मध्य फैले वृहद् पठारी भाग में अवस्थित बुन्देलखण्ड का स्वभाव भी स्थानानुकूल है- पाषाण की तरह कठोर, चिकना और नदियों की भांति तरल, सरल। कोमल और कठोर यहाँ का स्थायी भाव बन गया है। अपने आंचल में बहुरंगी, बहुआयामी लोकसंस्कृति को पल्लवित करने वाले बुन्देलखण्ड की की मिट्टी में जहाँ सुन्दरता की आभा है, वहीं शौर्य एवं पराक्रम की गाथा भी है। लेकिन, वर्तमान समय में इस भूमि के निवासी जीविकोपार्जन के लिए अपनी भूमि से महानगरों की ओर पलायन करने को मजबूर है। ऐसे समय में राजनीतिक लोगों द्वारा अपने निहित स्वार्थ को पूरा करने के लिए अलग बुन्देलखण्ड राज्य का मुद्दा उछालना निश्चित ही निन्दनीय तथा यहाँ के निवासियों की भूख-प्यास की मूल समस्या से ध्यान मिटाने का घृणित प्रयास मात्र ही है। जबकि इस समय बुन्देलखण्ड के चन्देलकालीन विशाल-तालाबों की खुदाई करके, उनका जीर्णोद्धार करने की जरूरत है, जिससे वर्षा के जल को पूर्णत: संरक्षित किया जा सके। जरूरत है बुन्देलखण्ड से गुजरने वाली नदियों के जल के अधिकारिक दोहन की, जिससे यहाँ के निवासियों की कृषि व पेयजल सम्बंन्धी जरूरतें पूरी की जा सके। 'जल ही जीवन है' यह उक्त बुन्देलखण्ड पर आज पूर्णत: चरितार्थ है। बगैर समुचित जल प्रबंधन के अलग बुन्देलखण्ड राज्य का निर्माण यहाँ के निवासियों के साथ छलावा मात्र होगा।

सहायक ग्रंथ-सूची-

1. बुन्देलखण्ड का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक अनुशीलन, डॉ. रामस्वरूप ढेंगुला, संचयन प्रकाशन, गोविन्दनगर कानपुर, प्रथम संस्करण-1987 ई.
2. बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, गोरेलाल तिवारी, नागरी प्रचारिणी सभा प्रकाशन, काशी (वाराणसी), प्रथम संस्करण-संवत 1990 वि. (1943 ई.)
3. "हरदौल" (ऐतिहासिक उपन्यास), हरप्रसाद शर्मा, अनामिका प्रकाशन, अतर्रा, जिला बाँदा (उ.प्र.) प्रथम संस्करण-अक्टूबर 1981 ई.
4. "गढ़कुंडार" (ऐतिहासिक उपन्यास), वृन्दावन वर्मा प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-2011 ई.
5. बुन्देलखण्ड का इतिहास, डॉं. मोतीलाल त्रिपाठी "अंशान्त" लक्ष्मीप्रकाशन, पुरानीनझाई, झांसी, प्रथम संस्करण 1991 ई.
6. चंदेलकालीन महोबा और जनपद हमीरपुर के पुरावशेष वासुदेव चौरसिया, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, मलिकपुरा, महोबा (उ.प्र.)
आभार-रविवार 19 जून, 1994 ई.
7. श्री उदयशंकर दुबे, साहित्य विभाग, हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग (इलाहाबाद) से प्राप्त बुन्देलखण्ड विषयक जानकारी।

-एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
मणिपुर विश्वविद्यालय, कांचीपुर
इम्फाल (मणिपुर) -795003
मो. नं. 09612169840

कछू बुन्देली कविताएँ

-रामस्वरूप दीक्षित

1. एक जने आये
वे हमाये दूद की मलाई काड़ लै गये
दूसरे जने आये
वे दूद लै गये
अब जे तीसरे जने द्वारें ठांड़े
वे हमाऔ पानी लै जावे के फेर में हैं

2. हमाये लिगां न घर दोर हैं
न जमीन जायदाद हैं
न ढोर बछेऊ हैं
न पइसा टका हैं
न उन्ना लत्ता हैं
एक वोट भर हतो
सो दोऊ नेता लै गये

3. हमने जियै वोट दये
वौ हमइ के गांव कौ आदमी हतो
लेकिन हमाये वोटन में
जाने ऐसौ का हतो
वौ अच्छौ भलौ आदमी नेता हो गओ

4. हमनें एक जनन सें कई
काये हो फलाने देखत में किले नौने लगत
वे बोले हओ
लेकिन वे देखतई के नौने आहें

5. नेता जी बोले
देखौ भइया हौ
अगर तुम हमें वोट नईं दैव
तौ हमाये देश की लुटिया डूब जै
हमने कई
लुटिया कितै डूबै
देश कौ सबरौ पानी तौ तुम पैलऊँ पी गये

6. एक रात कें हम खाट पै परे
जुंदइया ताईं देख रये ते
हमनें अपने बगल बालन सें पूंछी
काये भइया जुंदइया के बीच में
जौ करिया-करिया का है
बे बोले हमें तौ ऐसौ लगत
जैसें देश कौ कारौ धन ऐई में धरो होय

7. वैसें तौ वे भौत गम्मखोर हैं
अकेलें कोऊ उनके खिलाफ बोल जाये
तौ ऊकों मों नोंचवे खों
कुत्ता छोड़ देत

-सिद्ध बाबा कालोनी
टीकमगढ़ (म.प्र.)
मो. 9981411097

बुन्देली लोक संस्कृति में राम

-डॉ. दुर्गेश दीक्षित

राम और कृष्ण तो बुन्देल-वसुन्धरा के कण-कण में रमें हुए है। यहाँ के आस्थावान नरनारी राम के परमोपासक हैं। यहाँ की महिलाएँ राम के दर्शन के बिना जल ग्रहण नहीं करतीं। इतनी अटूट आस्था और विश्वास अन्यत्र दुर्लभ है। यहाँ के तीज त्यौहारों संस्कारों और परम्पराओं में राम की प्रधानता है। हर गाँव में राम जानकी-लक्ष्मण के मंदिर बने हुए हैं। जहाँ प्रातः और संध्याकाल दर्शनार्थियों की भीड़ उमड़ती रहती है। रामकी पूजा अर्चना भजन कीर्तन और जय जय कार में सारा बुन्देली परिवेश राम मय सा प्रतीत होने लगता है। हर गाँव में रामभक्त हनुमान के मंदिरों में मंगलवार और शनिवार को सुन्दरकाण्ड के पाठ के अवसर पर सारा वातावरण राममय हो जाता है। कितनी उमंग और उत्साह होता हैं लोगों के मन में उस समय। नवजात शिशुओं के नामकरण भी राम,लक्ष्मण,भरत,और सीता के आधार पर किये जाते है। ज्यादातर बुन्देलखण्ड में पुरुषों के नाम रामलखन रामशरन, राम सुमरन रामगोपाल, राममनोहर, रामदुलारे, रामसिरोमन, रामचरन, रामशिया, रामकूपाल, रामकिशोर, रामाधार, रामसजीवन, रामसिया, रामदुलारी, रामप्यारी, रामसखी, रामेश्वरी, रामतृप्ति आदि रखे जाते हैं। ऐसा लगता है कि धरती के कण-कण में राम का रूप समाया हुआ है।

यहाँ के त्यौहारों और पर्वो में भी राम की झाँकी दिखाई देती है। चैत्र शुक्ल की नवरात्रि के अवसर पर अनेक नगरों में राम जन्मोत्सव का आयोजन किया जाता है। उस समय नव-युवकों की लगन निष्ठा और भाव-भक्ति देखकर आश्चर्य होता है। सारा वातावरण राममय हो जाता है। महिलाओं के कलित कंठ से लोकगीत के मधुर स्वर फूट पड़ते है। ओरछेश महाराज मधुकरशाह की महारानी गणेशकुँवर राम भक्त थीं। वे अपने रामलला को लेकर अयोध्या से ओरछा के लिये पैदल चल दी। अनेक दिनों की यात्रा के बाद रामराजा को लेकर ओरछा लौट आई। इस घटना पर आधारित यह लोकगीत बुन्देलखण्ड में बहुत गाया जाता है इसः-

राजाराम खौं लैन गईं गनेश बाई, धन्न पूरब पुन्न की कमाई।
करकें चलीं प्रतिज्ञा मन में, धरकें ध्यान प्रभू चरनन में।
जोंलों करों नईं भोजन में, तोलों मंजु मूरत श्री रामजू की न पाई।
धन्न पूरब पुन्न की कमाई, डूबा सादों धरकें ध्यान।
तुम में बसे हमाये प्रान, गोदी में आ गये भगवान।
लगा छाती सों रामचन्द्र निकर आई, धन्न पूरब पुन्न की कमाई।

बुन्देलखण्ड के राजा कृष्णभक्त और उनकी महारानियाँ राम-भक्त हुआ करतीं थीं। हालाँकि टीकमगढ़ नरेश महाराज प्रताप सिंह जू देव की महारनी बृषभानु कुँवरि ने जनकपुर नेपाल में जानकी मंदिर निर्माण कराया था। जो अयोध्या के कनक-भवन की शैली पर बना हुआ है। यहाँ के सारे लोक संस्कारों में रास्त परिवार की झांकी दिखाई देती है। संस्कारों ऋतुओं और पर्वो के लोकगीतों में राम ही राम दिखाई देते हैं। संस्कार गीतों में जन्म संस्कार का प्रमुख स्थान है। इसमें रामजन्मोत्सव की ओर संकेत किया गया हैं। सर्व प्रथम महारानी कौशल्या की कुक्षि से राम का जन्म होता है। इस सोहर गीत के ये बोल सुनने योग्य है :-

भली भई कूख सिरानी कौसल्या महारानी।
राजा दसरथ के भये लाल चार।
चलो री सखि देखन चलिये।
रानी कौसल्या की कोख जुड़ानी।
होन लगे मंगल चार, चलो री सखि देखन चलिये।
ढिगधर भुअन लिपाये कौसल्या।
कलस धराये चार, चलोरी सखि देखल चलिये।
तीनऊँ रानी चौक में बैठीं।
कर सोलह सिंगार, चलोरी सखि देखन चलिये।
अवधपुरी की सब जुर आईं।
होन लगे नेंग चार चलोरी सखि देखन चलिये।
धूम मची है अवध गलिन में।

बजी बधइया दसरथ द्वार,चलोरी सखि देखन चलिये।

बुन्देलखण्ड में प्रसूता को चौक पूरकर पटापर बैठाया जाता है। जिसे शुभ सूचक माना जाता है। इस गीत में नगर-वासियों के आनंद और उत्साह का वर्णन किया गया है। यहाँ के संस्कारों में राम जन्मोत्सव के क्रियाकलापों का चित्रण है।

नामकरण संस्कार यहाँ का एक महत्वपूर्ण संस्कार है। पंडित गण ग्रहनक्षत्र और राशि का शोधन करके कुण्डली तैयार करते है। तदनुसार नामकरण किया जाता हैं। एक लोकगीत में उस स्थिति की ओर संकेत है :-

आज अवध में पंडित आये, दसरथ सुत के नाम धराये।
माथे तिलक देत रघुवर के, रामलला नाम धराये।
आज अवध में लखन, भरत शत्रुघन नाम धराये।
देवी -देवता सबई हरसाये, आज अवध में नर-नारी सज उठ धाये।
आज ललन के नाम धराये-अवध में, दुआरे-दुआरे बँधे बन्दनवारे।
कौसल्या दसरथ के सुत कहाये-आज अवध में.................

ये नामकरण का उत्सव है जो त्रेता युग में अयोध्या नगरी में हुआ था। आज भी यहाँ के ग्रामों में उसके अवशेष दिखाई देते हैं।

यहाँ के संस्कारों में कर्ण छेदन नाम का एक महत्वपूर्ण संस्कार है। महाराज दशरथ के चारों पुत्रों का कर्णछेदन होता है। इस लोक-गीत में उस स्थिति का चित्रण किया गया है। जरा देखिये।

मोरो भइया रोबत है हो राम-राम-राम कनछेदन होवत है।
तनकऊ नई सोबत है हो राम-राम-राम कनछेदन होवत है।
कहाँ से आये कनछिदिया, काहे से छेदत हो राम-राम.......
माने गाँव से कनछिदिया,आये सोने कील से छेदत हैं हो राम-राम.....
कान छिदाई का लैहो भइया, जल्दी बताओ का कहत हों ओ भइया
माने गाँव के घरइया तुमाये, हम तोरे देवर लगत हैं हो राम-राम......
पइसा धेला नई लैहो हो भौजी, गौती भतीजौ लगत है हो राम-राम....

बुन्देली संस्कृति में पारस्परिक प्रेम और संम्बंध निर्वहन पर विशेष बल दिया गया है। जन्म और विवाह बुन्देलखण्ड के ये दो महत्वपूर्ण संस्कार हैं और इन दोनों में राम के क्रियाकलापों को प्रमुख स्थान दिया गया है। वैवाहिक गीतों में राम और सीता के विवाह की झाँकी दिखाई देती है। राम की सगाई और सीता जी की गोदी भराई का चित्रण एक लोक गीत में किया गया है-

आज मोरे राम जू की पक्यात भई है।
सीताजू की आज ओली भरत है।
ओली भरत है पक्यात भई है।
माथे पै तिलक लगाओ लला राम जू।
सीता की बिंदिया चम चम चमकत है।
मोतिन माला रामजू खौ सोहे
सीता के अधरन नथ लटकत है
कानन कुंडल सोहैं राम लला खौं
सीता पग पायल छमकत है।

विवाह के अवसर पर बुन्देलखण्ड के हर घरके आँगन में आम-जामुन और पलास का हरा-मंडप निर्मित किया जाता है जिसके नीचे वर-वधू के सारे वैवाहिक कार्यक्रम सम्पन्न किए जाते है। एक लोकगीत में मंडप संरचना का चित्रण है :-

हरे बाँस मंडप छाये, सज रये वंदनवार भलेजू।
कौन लगाये हरे बाँस भलेजू,
मामा लगाये आमुन जामुन, बाबुल लगाये हरे बाँस भलेजू।
रुनक झुनक सीता मंडप में बैठी, आजुल लई हैं उठाये भलेजू।
कै बेटी तुम साँचे की ढारी, कै गढ़ी है सुगर सुनार भलेजू।
ना आजुल हम साँचे के ढारे, ना गढ़े हैं सुगर सुनार भलेजू।
माता की कुखियन जनम लये हम, रूप धरे भगवान भलेजू।।

महाराज जनक की धनुष भंगकी कठोर प्रतिज्ञा का स्मरण करके सीता जी चिन्तित हो जाती हैं। सीता राम के रूप से मोहित होकर उन्हें मन ही मन अपना पति मानकर अपनी सखी के समक्ष अपना मंतव्य प्रकट कर राम से कहने लगती हैं।

है पतरी कमर नाजुक बइयाँ धनुष कैसे टोरौ सइयाँ।
कोमल गात श्री भगवान, कर में सोहैं लाल कमान।
भारी महादेव कौ बान, हारे बड़े बड़े बलवान।
काहू जोधा सों धनुष तनत नइयाँ, धनुष कैसें टोरौ सइयाँ।
जो कउँ उनसें धनुष उठेंना, कैसउ उनसै धनुष तनेंना।
खाकैं जहर मरों मोरी बैंना, देवर लछमन की उम्मर लरकइयाँ।
धनुष कैसे टोरौ सइयाँ, मै तों हती प्रेम की प्यासी।
मैं हों रामचन्द्र की दासी, दुर्गालाल कटेरा वासी।
करों विनय औ परों मैं पइयाँ, धनुष कैंसे टोरौ सइयाँ।

राम जब दूल्हा बनकर राजा जनक के महल के सामने द्वारचार के लिए खड़े होते हैं। उस समय की शोभा का वर्णन करना कठिन हैं।एक बनरा लोकगीत के स्वर सुनने योग्य हैं-

बने दूला छवि देखौ भगवान की, दुल्हिन बनी सिया जानकी।
जैसई दूला अवध बिहारी, तैसई दुल्हिन जनक दुलारी,
जाबौ तन मन की बलिहारी, धूम छाई है डंका निसान की,
दुल्हिन बनी सिया जानकी, नारी मीठी गारी गावैं,
सबई बराती अति सुख पावैं, दशरथ खड़े-खड़े मुस्कावैं,
गारी गारई हैं गीता उर ज्ञानकीं, दुल्हिन बनी सिया जानकी
पंडित ठाँढ़े बेद उचारैं, राजा हीरा मोती वारैं।
हो रई मुहरन की न्योछारैं, माया लुट रई है हीरा की खान की।
दुल्हिन बनी सिया जानकी..........

समस्त वैवाहिक कार्य-क्रमों में राम ही राम दिखाई देते हैं। जेवनार के समय जनकपुर की नारियाँ मीठी-मीठी गारियाँ गाया करतीं हैं :-

मोरे राम जू सों करें ररियाँ, जनकपुर की सखियाँ।

या

जनकपुर की नार-नबेली हँस-हँस गीत सुनाबै गारी गाबैं जू।

या

लगत रहें नीकौ लाला आयें हते जा दिन सें।
अवध पुरी की नारि-नबेली, दूर रहें पुरुषन सें।
खीर खाय सुत जाये लाला उन्ने बड़े जतन सें।
उनें देखकैं नारि ताड़िका, दौरी आई वन सें।
कछू करत बन नई पायों तो। छेद दई बानन सें।

कंकन -छुराई के नेंग में भी राम की प्रधानता दिखाई देती हैं-

जौ ना होबै धनुष कौ टोरबौ,
कठिन-कंकन गाँठ छोरबौ।

बेटी सीता की बिदाई के अवसर पर उनकी माता और पिता आशीर्वाद देते हुए कहने लगते हैं :-

जाव-लली तुम फलियो, सदा सुहागिन रइयौ मोरे लाल।
सास-ससुर की सेवा करियों, ननदी के ऐंगर रइयौ मोरे लाल।
कोंना के रोयें नदी गंगा बहत हैं, कोंना के रोयें बेला ताल मोरे लाल।
माई के रोयें रोजंउ छतियां फटत हैं,
बाबुल के रोयें बेला ताल मोरे लाल।
कोंना के रोयें रोजंउ छतियां फटत हैं, कोंना के जियरा कठोर मोरे .....
बीरन के रोये छतियाँ फटत है, भौजी के जियरा कठोर मोरे लाल।
कोजौ कहैं बेटी रोजंउ आइयौं, कौ जौ कहैं दोई जोर मोरे लाल।
बाबुल कहैं बेटी रोजंउ आइयौ, माई कहै दोई जोर मोर लाल।
को जौं कहै बैना औसर पै आइयौ, भौजी कहैं कौना काम मोरे लाल।..

ये है माता-पिता और भाई-बहिन के सम्बंन्ध की स्थिति इस बुन्देलखण्ड में।

यहाँ की ऋतुओं और पर्वो के विभिन्न लोक गीतों में राम का स्वरूप दिखाई देता है। नव वधू का नाम धराई गीत देखने योग्य है।

अवध रानी जेजम बिछाओ फटकार कैं।
जनक लली जेजम बिछाओ फटकार कैं।
ठंडे से पानी गरम कर लाईं।
नई बहू बालम सपराओ पुचकार कैं।
रेशम की धोती घरी लये ठाँढ़ी।
अवधरानी धोती पहराओ पुचकार कैं।
सोने की थारी में भोजन परोंसे।
नई बहू बालम खौं जिमाओं पुचकार कैं।

बुन्देलखण्ड में सावन का महीना भक्ति भावना से परिपूर्ण, आराधना, आस्था, विश्वास और पूजन-अर्चन, भावना-भजन-कीर्तन का होता है। गाँव-गाँव में झूले के गीत गाये जाते हैं। जिनमें राम और कृष्ण की भक्ति-भावना प्रदर्शित होती है। इन सावन के गीतों को कजरी और कहीं ददरिया भी कहा जाता है जिनमें राम-लक्ष्मण और हनुमान की मनोरम झाँकी दिखाई देती हैं।

राम लयें गोली, लखनलयें बान, लंका की धूरा उड़ा रये हनुमान।
वनखौ निकर चले दोउ भइया।
आगे-आगे राम चलत हैं, पाछै सीता मइया।
सीता बिना मोरी सूनी रसुइया, लछमन बिनु ठकुरइया।

पावस ऋतु में सैंरे गाने का प्रचलन है। उस समय उनमें बहुत उमंग और उत्साह दिखाई देता हैं। गायक मण्डली के बीच खड़ा होकर-साखी प्रस्तुत करता हैं:-

ओरछे के गालो अरे राजा राम जू हो।
पन्ना के जुगल किशोर।
कुँड़ादेव के अरे कुण्डेसुर हो।
बौरी के पवन हनुमान।

साखी के समाप्त होते ही सैरुवा कूद पड़ते हैं और घंटों नचते रहते हैं।

फागोत्सव के अवसर पर रामालई फागें गाई जाती हैं जिनमें अवध की होली का चित्रण होता है।

राम लला, गोविंद लला, जा होरी खेलरये रामलला बुन्देली लोक संस्कृति में वैराग्य और क्षणभंगुरताको प्रमुख स्थान दिया गया हैं। जरा देखिये एक लोक भजन को:-

एक दिन पाले सुआ उड़ जैहैं, दस दरवाजे कौ पिंजरा बनों है।
कहाँ-कहाँ पहरों दैहैं, बालापन हँस खेल गवाँयें।
ज्वानी कौ रथ चढ़ जैहैं, आव बुढ़ापौ कपन लगी देइया।
जिहवा सै राम भज लैहैं, इक दिन उड़ जैहै गंगाराम।
खाली पिंजरा डरो रैहै, अंत समय रामई संग रैहैं
और कुछ संगै ना जैहैं, अटा-अटारी इतै धरे राने
कफन लौ संगै ना जैहै।......

भगवान तो भक्तों के बस में होते है। अपने भक्तों के कष्ट को दूर करने के लिये उन्होने अनेक रूप धारण किये थे। एक लोक-भजन में भगवान की भक्त-वल्सलता का वर्णन किया गया हैं।

मैनें कईअंक रूप धरेरी अपने भकन के लानें।
एक बार प्रहलाद के लानें चिटिया कौ रूप धरे री।
एक बार गज-ग्राह के लानें मैंने मछ कौ रूप धरेरी।
एक बार द्रोपदी के लानें, सारी कौ रूप धरेरी।
एक बार सवरी के लानें मैंने जूठे बेर खाये री।
एक बार अहिल्या के लानें, मैने राम कौ रूप धरेंरी।

बुन्देलखण्ड में फागोत्सव का विशेष महत्व है। इस अवसर पर नर-नारी मतवाले हो जाते हैं। ढोलक नगड़िया के स्वर में झूम-झूम कर फागें गाया करते हैं। फाग के पूर्व ख्याल गाने का प्रचलन हैं। एक ख्याल देखिए *गरजे हनुमान लंकाके हल गये कंगूरा।* ख्याल के बाद रामालई फागें गाई जाती है:-रामलला गोविन्दाललाजा होरी खेल गये रामा लला। बुन्देली संस्कृति के मूल आधार तो राम ही हैं। यहाँ के नर-नारी राम के आदर्शो पर चलने का प्रयास करते हैं। नारियाँ सीता के मार्ग का अनुशरण करती हैं। बाबा तुलसी सत्य ही कह गये हैं-

सिया राम मय सब जग जानी, करहु प्रणाम जोर जुग पानी।

-कुण्डेश्वर जिला टीकमगढ़ (म.प्र.)

कार्तिक गीत (कतकिया)

-श्रीमती ब्रजलता मिश्रा

बुन्देलखण्ड में कार्तिक स्नान कौ बड़ौ महत्व है। जौन साल पुरुषोत्तम मास या मलमास (अधिक मास) होत है, बई साल कार्तिक स्नान करौ जात है। हमाई बहुएँ (बहुएँ) बिटियाँ क्वाँर की सरद पूनें से लैकें कातिक की महारास की पूनें तक महँना भर कौ उपास (व्रत) उर पूजा-पाठ करत भईं कार्तिक अनाउती हैं। ब्रह्म मुहूरत में बे मिल-जुरकें नदी, ताल या कुआँ पै जाकें स्नान करतीं हैं घर सें जाबे-आबे में बे गोपियन की भावना सें भरे गीत गाउती हैं, जो कार्तिक के गीत या कतकिया के नाऔ सें जाने जात हैं।

ऊसें तौ तुलसी मैया बर हमेस पूजी जात हैं, पै कार्तिक में तुलसी पूजन कौ भौतइ महातम है। भोर उर संजा बिरियाँ तुलसी मैया की पूजा करत भईं बे जौ पारम्परिक कातिक-गीत (कतकिया) गाउती हैं-

तुलसा महारानी नमो-नमो।
हरि की पटरानी नमो-नमो।।
धन-तुलसा पूरन तप कीन्हों।
सालिगराम भईं पटरानी, भईं पटरानी नमो-नमो।
तपसी बेद आदि-ब्रह्मादिक,
सोचत फिरत महामुनि ज्ञानी, महामुनि ज्ञानी नमो-नमो।
छप्पन भोग छतीसउ बिन्जन,
बिन तुलसा हरि एक न मानी, हरि एक नमानी नमो-नमो,
सात खण्ड नौ दीप बखाने,
ढूँढ़त किरत साधु-मुनि-ज्ञानी साधु-मुनि-ज्ञानी नमो नमो
साखा सुघर मन्जरी कोमल,
स्रीपति चरन-कमल लपटानी, चरन लपटानी नमो नमो।

स्वरलिपि-कार्तिक गीत (कतकिया)

कहरवा:ताल (मध्यलय)

ग म
तु ल

स्थायी

गरेसानि	सारेगम	गरेगरे	सा-गम
साऽमहा	रा	ऽनीऽ नमो	ऽन मो
ऽहरि			
X	O	X	O
गरेसानि	सारेगम	गरेगरे	सा---
कीऽपट	राऽनीऽ	नमोऽन	मोऽऽऽ
X	O	X	O

अन्तरा

सारेगरे	सारेसाध	सासासारे	गमगरे
धनतुल	साऽपूऽ	रनतप	कीऽन्हऽ
X	O	X	O
पमपप	गरेगम	गरेसानि	सारेगम
साऽलिग	राऽमभ	ईऽपट	राऽनीभ
X	O	X	O
गरेसानि	सारेगम	गरेगरे	सा-गम
ईऽपट	राऽनीऽ	नमोऽन	मोऽतुल

विशेषः इस गीत के सभी अन्तरे इसी प्रकार गाये जाएँगे।

-केशव-कुल
352 नानक गंज

बुन्देली साहित्य में होली

-एन.डी. सोनी

ऋतुओं का प्रभाव प्राणी मात्र पर ही नहीं प्रकृति के समस्त अंगों पर दिखाई देता है। ऋतुएँ प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों का संकेत देती हैं। भारत वर्ष में बसंत ऋतु को ऋतुओं का राजा कहा राजा है। यूँ तो बसंत समूचे भारत को अपने आगोश में लेता है मगर उत्तरी और मध्य भारत बसंत के आनन्द से लबरेज रहता है। विन्ध्य पर्वत की गोद में बसा बुन्देलखण्ड बसंतोत्सव को विशेष रूप से होली के रंगोत्सव का पर्व मानता है इसलिए यहाँ की होली सारे देश में प्रसिद्ध है। होली के रंगों में सराबोर समाज की झलक बृज और बुन्देली भाषाओं के साहित्य में देखने को मिलती है। माव सुदी पाँचें यानि बसंत पंचमी शंकर-पार्वती की सगाई के रूप में बसंत के आगमन का सुखद अहसास कराती है। ठन्ड से ठिठुरे जीवन में उत्तरायण सूर्य की रश्मियाँ उमंग और आशा की किरणों से जीवन में शक्ति का संचार करती हैं। बसंत पंचमी को सरस्वती पूजा से ऋतु की शुरुआत कवियों को उद्वेलित कर साहित्य सृजन को प्रेरित करती है। यही कारण है कि बसंत या होली की कवितायें आनन्द से सराबोर होती हैं। फाल्गुन कृष्ण पक्ष के आखरी दिनों में शंकर-पार्वती को विवाह सूत्र में बांधती शिव रात्रि आनन्द का उद्घोष करते हुए बसंत को जवानी की दहलीज पर खड़ा कर देती है फाल्गुन पूर्णिमा को होलिका दहन के साथ ही होली के रंगोत्सव का ऐलान हो जाता है।

कवि और गायकों की शब्दों की पिचकारियों और हुरयारों की रंग भरी पिचकारियों व अबीर गुलाल के साथ ही कीचड़ व गोबर की धूम चैत की परमा (पहले दिन से) को बुन्देलखण्ड में दिखाई देती है। चैत की दूज और रंग पंचमी को रंग-गुलाल व अबीर का प्रयोग होता है। बुन्देलखण्ड में होली में गाये जाने वाले गीतों में फाग, ख्याल, रसिया, ठुमरी, दादरा आदि हैं जिनमें फागें सर्वाधिक महत्व रखती हैं। फाग लेखन का अगुवा ईसुरी को माना जाता है और वे फाग लेखन के सिरमौर भी माने जाते है। बसंत और होली पर ईसुरी की फाग माला में उनकी यह फाग सुमेरु जैसी है जिसे गायक होली पर प्रमुखता से गाते हैं। यथा-

"अब रित आइ बसंत बहारन, पान फूल फल डारन।
बागन बनन बंगलन बेलन, बीथन बगर बजारन।
हारन और पहारन पारन, धाम धवल जल धारन।
तपसी कुटिल कंदरन खोरन, गई बैराग बिगारन।
आये बौर मंजीरन ऊपर, लगे भौंर गुंजारन।
"ईसुर" कन्त अन्त हैं जिनके, तिनें देत दुख दारुन।"

उपरोक्त फाग में प्राकृतिक पर्यावरण और उसके प्रभाव का बहुत सुन्दर साहित्यिक वर्णन किया गया है जो बसंत का सजीव चित्र जैसा है।

कवियों ने होली पर जो गीत लिखे हैं उनमें अधिकांश: राधाकृष्ण को नायक-नायिका के रूप में लिया गया है। बुन्देली में "चन्द्रसखी" के रसिया बड़े ही मधुर हैं जिन्हें गायक होली में बहुत मनोयोग से गाते हैं। ऐसा ही एक रसिया जिसमें मदन मोहन की हुरयारी छवि का वर्णन है, यहाँ प्रस्तुत है-

"रसिया बनो मदन मोहन प्यारे।
फेंट गुलाल हाथ पिचकारी, युवती जन मोहन प्यारे।
पीताम्बर की कछनी काछे, क्रीट मुकुट कुण्डलवारे।
बाजत ताल मृदंग झांझ ढप, बीन चंग न्यारे।
"चन्द्रसखी" भज बालकृष्ण छब, तन मन धन तोपे बारे।"

वर्णन में कवियत्री ने बुन्देलखण्ड के पहनावे में फेंट और कछनी तथा यहाँ के वाद्य यंत्रो में झांझ, ढप चंग का प्रयोग किया है।

बुन्देली फाग साहित्य के कवियों में जिस त्रयी का विशेष योगदान है उनमें ईसुरी के साथ उनके समकालीन और घनिष्ठ गंगाधर और ख्यालीराम माने जाते हैं। बुन्देली चौकड़ियों में बुन्देली कहावतों और मुहावरों का प्रयोग उन्हें और सशक्त बना देता है। ऐसी ही मुहावरेदार फाग में गंगाधर ने किस चतुराई से नायिका की मनोभावना को चित्रित किया है वह द्रष्टव्य है-

"हम पै नाहक रंग न डारौ, नैयां प्रीतम प्यारौ।
अतर, गुलाल, अबीर मलौ ना, ना पिचकारी मारौ।
उर में उठें मदन की जोरें, नईं जरे पै जारौ।
अनुआं बिना मोय "गंगाधर", ऊसईं लगत छिनारौ।"

बिना किसी गलती के लिये अनुआं और चरित्र पर झूठे लांछन के लिए छिनारौ शब्दों का सटीक प्रयोग भाषा के प्रभाव को प्रतिपादित करता है।

कुछ समय पूर्व तक फागकारों के दलों का मुकाबला एक स्थान पर आमने बैठकर फागें गाकर सवाल-जवाब के रूप में होता था, जिसे फड़बाजी कहते हैं। अब इसका चलन नाम मात्र को है। ऐसे मुकाबलों में फागों में पहेलियां बूझी जाती थीं। पहेली की फाग का ऐसा ही एक नमूना ख्यालीराम की फाग में देखिये जिसमें बसंत के सुखद मौसम में पति के घर होते हुए भी नायिका सब सुख-साधनों के होते हुए क्यों दुखी है?

"आली! नहिं वियोग पिय केरौ, मलिन भयौ तन तेरौ।
सुख सम्पत ना ग्रहावली हैं, नहीं विधाता डेरौ।
ऐसी ललित बसंत अबाई, स्रबत समीर छहेरौ।
"ख्यालीराम" नायिका कौ दुख, कविजन करौ निबेरौ।"

पिछली शताब्दी में कुछ दशक पूर्व तक बुन्देलखण्ड में रंग बनाने के लिये सम्पन्न घरों या रजवाड़ों में केशर का और सामान्य घरों में पलाश के पुष्पों का प्रयोग किया जाता था। कृष्ण और राधा की होली में कवियों ने केशर रंग के साथ कंचन घट या पिचकारी का वर्णन अधिकतर किया है। सूरश्याम (सूरे तिवारी) की एक सुन्दर फाग का अवलोकन करें-

"चलिए खेलन होरी मोहन टेरत राधा गोरी।
सुन्दर रंग बना केसर कौ, भर-गुलाल की झोरी।
कंचन घट भर-भर कें डारत, मलत कपोलन रोरी।
"सूरश्याम"राधापुर वासी, सरन स्यामरे तोरी।"

कृष्ण और उनकी टोली द्वारा राधा और उनकी सखियों को रंग में सराबोर करके परेशान करते हैं। राधा व सखियाँ विनम्र विनती करतीं हैं कि हे कृष्ण मेरे ऊपर रंग मत डालो क्योंकि मैं तो तुम्हारे रंग में ऐसी रंगी हूँ कि इत्र जैसी महकती रहती हूँ। होली के ऐसे ही गीत की ये पंक्तियाँ कितनी मधुर लगतीं हैं-

"मोपै रंगा न डारौ श्यामलिया,
मैं तो ऊसइ अतर में डूबी लला। मोपै...
जो सुन पाहें सैंया हमारे, आउन न दैतें सिजरिया लला।"

यह गीत टीकमगढ़ के आकाशवाणी कलाकार स्व.विक्रम देव तैलंग के मुख से अनेक बार सुना था। विनती करने पर भी जब कृष्ण नहीं मानते और राधा व सखियों को अधिक तंग करते हैं तो सब ने योजना बना कर कृष्ण को पकड़कर नारी बनाया यह बात इस रसिया में हमें देखने को मिलती है। अवलोकन करें-

"रसिया खाँ नार बनाऔ री, रसिया खाँ..
काहू ने बेंदी, काहू ने बेसर, काहू नें चुरियां पैरायी री।
काहू ने लंहगा, काहू ने सारी, काहू नें अंगिया पैरायी री।
काहू नें माहुर, काहू नें मेंहदी, काहू ने बिरियां रुचवायी री।
रसिया खाँ नार बनाऔ री। रसिया खाँ .....

होली की हँसी-ठिठोली का यह गीत श्रीमती उर्मिला पाण्डे बड़ी तन्मयता से सुनाती रही हैं। इसमें बुन्देलखण्ड के पहनावे व श्रृंगार की झलक भी है।

श्याम जी तरह रामजी को भी होली में शामिल किया गया है।

"मिथला में आज मची होरी, मिथला में....
बाजत ताल मृदंग झांझ ढप बरसत रंग उड़त रोरी।
सूरदास प्रभु देख मगन भये सीताराम लगी डोरी।"

जब राम और कृष्ण होली खेलते हैं तो शंकर भोले क्यों नहीं खेलेंगे? उनकी होली तीनों लोकों में देखी जा रही है। शंकर जी की होली का आनन्द आप सब भी महसूस कर सकते हैं-

"होरी खेलत शंभु-भवानी, तीनऊँ लोकन जानी।
शंकर मस्त भाँग की धुन में, उनकी धुन में भुमानी।
शंकर नचें 'नारायण' देखें, देखें इन्द्र-इन्द्रानी।
रंग बरसावें देइ-देवता, शंख फूँक रये ज्ञानी।"

बुन्देलखण्ड में ननद-भाभी,देवर-भाभी और यार-दोस्तों के साथ होली खेलने का अधिक रिवाज है। ननद और भाभी के बीच होली का दृश्य एक चौकड़िया के माध्यम से मैंने भी अंकित करने का प्रयास किया है-

"हो रई फाग ननद-भौजी में, खिल रईं दोऊ जी में।
पैलां रंग ननद ने डारो, फिर डारो भौजी ने।
भौजी रंग कसेंड़ी डारी, ननद धरो हौदी में।
दोऊ सपर गईं सरबोरां, चैन न तौऊ जी में।"

नई बहू के लिये ससुराल में पहली होली बहुत महत्वपूर्ण होती है जब वह पहले-पहल पति, देवर, ननदों और नई सहेलियों के साथ होली खेलती है। ससुराल के इस अनुभव का वर्णन कौच क्षेत्र के श्री राधा चरन गुप्त "चरन" ने इस चौकड़िया में बड़े मनोहारी रूप में किया है-

पैलां परी सासरें होरी, रोरी सी भई गोरी।
रगड़ गुलाल लाल गालन में, मीड़ी मुइयाँ मोरी।
पकर उंगरिया कोंचा पकरो, फिर गगरी सी बोरी।
"चरन" सबई अंग रंग डारे, कितऊँ बची न कोरी।"

नई-नई शादी का जोड़ा उमंग और जोश में होली के समय ऐसी कोई हरकत न करे जो उनके कुल को बदनाम कर दे। कवि इन पंक्तियों में ऐसी ही ताकीद करता है-

"नई गोरी नये बालमा, नई होरी की झाँक,
ऐसी होरी दागियो, तोरे कुलै न आवे दाग।
समर कें यौरी करौ मोरे बालमा।"

इसके विपरीत स्थिति होती है जब गाँव की कोई दबंग औरत दादागिरी करते हुए आबड़ में आने वाले स्त्री-पुरुषों को बेधड़क होली में सतातीं सी चलतीं हैं। होली का यह रंग भी देखें-

"गोरी होरी में गर्रा रईं, चाये जियै सता रईं।
आबड़ जो बिद जात ओइयै, सांसऊँ चीं बुलवा रईं।
सराबोर तन, सराबोर मन, ओइ पै रसिया गा रई।
कत "विवेक" पिचकारी के संग, नैना सोऊ चला रईं।"

होली में पिचकारी एक प्रमुख अवयव है। पहले बुन्देलखण्ड क्षेत्र में पिचकारियाँ पीतल धातु की बनतीं थीं जो समय के विलीन होती चली गईं। अब भी सम्पन्न घरों में नमूने देखने को मिल सकते है। इसके पूर्व बांस की पिचकारियाँ बनती होंगी जिनकी झनक पीपल की पिचकारियों में दर्शाई जाती रही। होली के साथ पिचकारी का वर्णन भी कवि उमाशंकर नगाइच उमेश ने बड़ी सुन्दरता से किया है। कुछ पंक्तियाँ देखें-

"सुन्दर सुधातु की ढली है पिचकारी यह,
पोर बांस की है ये, सुषमा बगारती।
एक छेद से ही यहाँ, रंग रसधार बहे,
बांसुरी के सातों सुर, रंग रस ढारती।"

देवर के साथ होली का आनन्द उठा रही एक भाभी किशोर वय देवर की मीठी हरकत का वर्णन इस ख्याल गीत में कर रही है-

"मोरे देबरा लिलोर, गालन खाँ रोरी रगड़ रये।"

समय बदलने के साथ-साथ होली के जश्न को मनाने के तरीकों में भी बदलाव हुआ है। प्राकृतिक रंगों की जगह रासायनिक तरीके से बने रंगों और गुलाल में हानिकारक तत्वों का मिश्रण बढ़ा है। अबीर का चलन कम हुआ है और रंगों के कुम-कुमे अब देखने को नहीं मिलते। भाँग से ज्यादा शराब का प्रयोग भी बढ़ा है। मुख पर काले, सफेद और कसाई रंग के द्रव्य मले जाते हैं। मित्रों के बीच होली का मजा कैसे उठाया जाता है इसे कुण्डलिया छन्द में दिया जा रहा है-

"होरी की हुरदंग में, जो नहिं देवे संग।
ऊकौ मों करिया करौ, और पिया दो भंग।
और पिया दो भंग, होश ऊके उड़ जावें।
"नारायण" खुद नचें, ठुमक कें फागें गावें।
तब डारौ फिर रंग, हुमक कें मल दो मुइयाँ।
कोऊ चीन न पाय, घरै जब पोचें सइयाँ।"

होली ऐसा पर्व है जो तन और मन दोनों को एक समान रंगता है। होली के रंगोत्सव का आधार बसंत की रंगीली ऋतु है जिसकी सुरी-सुरी हवा तन-मन में सिहरन पैदा कर प्राणियों में आनन्द का संचार करती है। तन रंगने की सीमा भले ही होलिका दहन से रंग पंचमी तक हो लेकिन मन रंगने की सीमा पूरे बसंत भर रहती है। होली और बसंत के आनन्द को द्विगुणित करने का श्रेय काव्य साहित्य और उसके साथ संगीत व नृत्य कलाओं को जाता है। कवि दृश्य सौंदर्य के साथ कल्पनाओं के संगम से जिस सुहाने संसार की सृष्टि करता है, संगीत अपने सुरों और राग-रागनियों के सहारे वाद्ययंत्रों के सहयोग से प्राणियों को मोहित कर मधुर आनन्द लोक में ले जाता है। प्रकृति के

रंगीन बासंती पर्यावरण में फूलों की खुशबू के साथ जब श्रृंगार के गीत गूँजते हैं तो मनुष्य मदहोशी की दशा में पहुँच कर कुछ समय के लिए संसार के सारे दुःख भूल जाता है। यही होली का उद्देश्य है।

बुन्देली साहित्य में होली पर बहुत लिखा गया है। जिसे छोटे से आलेख में समेटना संभव नहीं है। होली और बसंत जहाँ आम आदमी को आनन्द की अनुभूति कराते हैं वहीं कुछ ऐसे प्राणी भी हैं जिन्हे बसंत की बहारें दारुण दुख पहुँचाती हैं। उन प्राणियों में विरहणी नायिकायें हैं जिनकी भावनाओं को भी कवियों ने बड़ी सशक्त भाषा में वाणी दी है। अन्त में बुन्देली के शिरोमणि फागकार महाकवि ईसुरी की एक सशक्त रचना के साथ इस आलेख को समापन की ओर ले जाना चाहता हूँ। रचना के भाषा सौष्ठव और विरहणी के मनोभावों की अभिव्यक्ति का अवलोकन करें-

"मद अब देत करेजे जारें, आइ बसंत बहारें।
सीतल पवन लगत है ऐसी, मनों अगन की झारें।
बोल कोकिला लगें तीर से, लेवें प्रान निकारें।
"ईसुर" पाती देव प्रीतम खाँ, धरखों बेग पधारें।"

होली हर वर्ष आती है और प्राणियों के जीवन में रस घोल कर चली जाती है। किसान प्राणपण से खेती में जुट जाते हैं और लोगों की क्षुधा की शांति के लिए अन्न उपजाते हैं। बसंत के बाद वर्षा की फुहारें पुनः रस घोलती हैं। ऋतुओं का क्रम चलता रहता है। आनन्द की आशा में आदमी गर्मी और सर्दियों के कष्ट भी सह लेता है। आनन्द और कष्ट का लय-ताल चलता रहता है, चलता रहेगा। साहित्य का भंडार भरता रहेगा।

संदर्भ ग्रन्थ-

1. बुन्देली का फाग साहित्य (श्यामसुन्दर बादल)
2. फाग साहित्य, म.प्रके जनपदों की फागें (सं. कपिल तिवारी)
3. ईसुरी (लोकेन्द्र सिंह नागर)

-राजमहल के पास, टीकमगढ़ (म.प्र.)
मो. 9993750271

बुन्देली और उसके कवि

-कुमारी क्षमा द्विवेदी

बुन्देली है खाँड़-सी, सहज सलौनी मान।
महुवा जैसी रस भरी, मदमाती गुन खान।।
पाटी ई की पाँच हैं, तद्भव वर्ण विचार।
बोलत में नीकी लगै बेतवती-सी धार।।
सुरबानी की पौत्तरी, हिन्दी तनया आय।
ओ जू चलबौ होय जू बुन्देलन कौं भाय।।
गद्य पद्य ई कौ प्रचुर, भरो काव्य भण्डार।
लोकगीत ई कौ करैं, फागन सें श्रृंगार।।
श्री गंगाधर ब्यास जू, ख्यालीराम महान।
फाग हजारन लिख गये कवि ईसुरी सुजान।।
झाँसी के अवधेश जू और हयारन मित्र।
फागें ओमप्रकाश ने गाईं परम विचित्र।।
पंडित गुण सागर तथा द्विवेदी कैलाश।
दीक्षित श्री दुर्गेश जू, जलज करें परकास।।
शिवानन्द जू मिसर भे बुन्देला उपनाम।
झण्डा गाड़ो जगत में भाषा कौ अभिराम।।
रामरूप पंकज तथा अनुरागी धर ध्यान।
लिख पायौ भारी सुजस धरती के भगवान।।
बुन्देली मानस रचो, भरो फाग कौ नीर।
देवीदीन 'दयालु' कवि हैं अति सरल सुधीर।।
रामस्वरुप 'स्वरुप' हैं, सेवढ़ा के कवि खास।
योगी श्री घनश्याम जू करें करैरा वास।।
कुंजीलाल पटेल जू और बहादुर सिंह।
निरभै होय दहाड़ रये, जैसे डाँगन सिंह।।
झाँसी वारे वत्स जू खण्ड बुन्देला गाय।
अमर भये ई जगत में बुन्देली अपनाय।।
शुक्ला दुर्गाचरण जू, औ हरिविष्णु महान।
बने प्रचारक कर रहे, बुन्देली गुणगान।।
श्याम बहादुर श्याम जू महाकाव्य रच धन्य।
शासन सें भये पुरस्कृत लिख हरदौल अनन्य।।
हैं कल्यानदास जू साहू, धर पोषक उपनाम।
नौनीं कविता लिख रये, बुन्देली कर थाम।।
सोनी नवल किसोर जू, हुइयौ नइँ मायूस।
उगौ बुन्देली काव्य में, बन सुन्दर प्रत्यूष।।
पंडित बाबूलाल जू मधुप बनें रस लेंय।
जैसी जाकी चाकरी, ऊसइ ऊखौं देय।।
श्री रतिमान तिवारि जू, काव्यसरोवर कंज।
वैदेही वनवास लिख लगा रहे हैं गंज।
गुरुवर रामस्वरुप जू, खरे खरे से जान।
बुन्देली बुन्देल की बता रहे हैं शान।।
बुन्देली कवि-माल के गुरिया मिले अनन्त।
लखन लाल दोउ डॉक्टर हैं सुमेरु वर सन्त।
भूल चूक मोरी करें क्षमा, सबइ गुणखान।
मैं तौ अबै अजान हूँ, कैसे करूँ बखान।।
जियत रई तौ पोउँगी, मनका इक सौ आठ।
मौंड़ी-मौंड़ा जौन कौ, नित्य करेंगे पाठ।।
बने प्रान्त बस एक है, हम सबकी अभिलाष।
खण्ड बुन्देल अमर हो, ऐसा है विश्वास।।

ग्राम जाजेपुरा पो.पचोखरा
जिला जालौन (उ.प्र.)
मो. 9454711182

खजुराहो की मूर्तिकला:विविध आयाम

-डॉ. मोना जैन

कहा जाता है कि इतिहास अतीत का आईना होता है लेकिन भारत में इतिहास अतीत का आईना नहीं, बल्कि तस्वीर है ..... एक ऐसी तस्वीर जिसमें न जाने कितने रंग भरे हुए है और न जाने कितनी रेखायें उकेरी गई। अपने अपने रंगों और अपनी अपनी रेखाओं के बीच इतिहास सृजन की इस अनोखी प्रक्रिया में अतीत की कुछ अत्यंत उत्कृष्ट और नायाब कृतियाँ हमारे पास सुरक्षित सहेज कर रख ली गई। उनमें से एक खजुराहो के मंदिर है।

भारतीय इतिहास के पन्नों पर चंदेल वंश का नाम स्वर्ण अक्षरों में जड़ा है। खजुराहो के मंदिर चंदेल कालीन शासकों की कला के नायाब हीरे है। 950 ई. से 1050 ई. के मध्य चंदेल शासकों के संरक्षण में पल्लवित वास्तुकला उतुंग मंदिरों के रूप में मुखरित हुई।

मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले से लगभग 27 मील की दूरी पर अपनी मंदिर संपदा के कारण खजुराहो न केवल संपूर्ण भारत अपितु पूरे विश्व में ख्याति लब्ध हैं। ब्राह्मण तथा जैन सम्प्रदाय से संबंधित यह मंदिर नागर शैली के समस्त समूहों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। मध्यप्रदेश के सघन वनों ने बाहरी आक्रांताओं तथा प्राकृतिक आपदाओं से इनकी पर्याप्त सुरक्षा की है। इसी कारण भारत के अन्य मंदिरों की तुलना में ये मंदिर ज्यादा सुरक्षित रह सके।

नौवीं शताब्दी ईस्वी के आरंभ में दक्षिण बुन्देलखण्ड में नन्नुक के नेतृत्व में चंदेल राजवंश के महत्वपूर्ण शासक हूए। नौवीं से बारहवीं शताग्दी तक का समय भव्य मंदिरों और कलात्मक मूर्तियों के निर्माण का युग कहा जा सकता है। बुन्देलखण्ड के आसपास के भागों में अनगिनत मंदिर और मूर्तिकला से संबंधित प्रचुर सामग्री यत्र तत्र मिलती है। चूँकि चंदेलों का राज्य जेजाक भुक्ति के नाम से प्रख्यात रहा फलतः इस युग की कला शैली का नाम भी उसके अनुरूप जेजाक भुक्ति शैली दिया गया। स्टैला क्रेमरिश ने इस कला को चंदेलकालीन कला का नाम दिया। खजुराहो की मूर्तिकला इस काल की कला का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। एक जनश्रुति के अनुसार खजुराहो में 85 मंदिर थे किन्तु अब केवल 25 मंदिर ही विभिन्न दिशाओं में विद्यमान है जो खजुराहो के आसपास फैले हुए हैं। खजुराहो किसी समय एक विशाल और भव्य नगर के रूप में प्रख्यात था। यहाँ चंदेल शासकों के द्वारा नागर शैली में बनवाये गये सुन्दरतम मंदिरों का समूह है। चंदेल शासक कला के बहुत बड़े संरक्षक थे और उन्होंने खजुराहो को विभिन्न मंदिरों से सजाया था। यहाँ के भव्य मंदिर अपनी विशालता एवं सुसंगठित वास्तु योजना, अतुल मूर्ति सम्पदा एवं उनकी विशालता की दृष्टि से नागर शैली के समस्त मंदिर समूहों में सर्वोच्च स्थान रखते हैं। विकसित शैली के सभी मंदिर तलच्छन्द एवं उर्ध्वछन्द में इस प्रकार विकसित हैं मानो उनमें एक लय ध्वनित हो रही है। खजुराहो के अधिकांश मंदिर पन्ना की खदान से उपलब्ध पीले एवं गुलाबी पत्थर से निर्मित हैं केवल ब्रह्मा तथा ललगुवाँ महादेव मंदिरों का निर्माण कणाश्भ से हुआ है।

खजुराहो मंदिरों को तीन समूह में बाँटा जा सकता है-

1. पश्चिमी समूह- पश्चिमी समूह में मंदिरों की संख्या सबसे अधिक हैं इनमें मुख्य मंदिर कंदरिया महादेव मंदिर, विश्वनाथ मंदिर, देवी जगदम्बी और चित्रगुप्त मंदिर है। ये सभी मंदिर अपने स्वरूप में अत्यंत विशाल हैं। इस समूह के अन्य मंदिरों में चौसठ योगिनी दूलादेव महादेव, नंदी, पार्वती, वराह, महन्तेश्वर मंदिर हैं। इस समूह के सभी मंदिर ब्राह्मण, धर्म, वैएणव, शैव, शाक्त और शौर्य सम्प्रदाय से संबंधित हैं।

2. पूर्वी समूह- इस समूह के मंदिरों को धर्म की दृष्टि से दो वर्गों में बाँटा जा सकता है-ब्राह्मण मंदिरों में और जैन मंदिर। ब्राह्मण मंदिरों में जैन मंदिरों में घन्टाई एवं आदिनाथ मंदिर, पार्श्वनाथ मंदिर आते हैं।

3. दक्षिण समूह- दक्षिण समूह में केवल दो महत्वपूर्ण मंदिर दूल्हादेव एवं चतुर्भुज या जटकारी मंदिर है। ये दोनों ही मंदिर ब्राह्मणधर्म से संबंधित हैं। इनके अतिरिक्त कुछ मंदिरों के भग्नावशेष भी उपलब्ध हैं।

कहा जाता है कि इतिहास अतीत का आईना होता है लेकिन भारत में इतिहास अतीत का आईना नहीं, बल्कि तस्वीर है ..... एक ऐसी तस्वीर जिसमें न जाने कितने रंग भरे हुए है और न जाने कितनी रेखायें उकेरी गई। अपने अपने रंगों और अपनी अपनी रेखाओं के बीच इतिहास सृजन की इस अनोखी प्रक्रिया में अतीत की कुछ अत्यंत उत्कृष्ट और नायाब कृतियाँ हमारे पास सुरक्षित सहेज कर रख ली गई। उनमें से एक खजुराहो के मंदिर है।

भारतीय इतिहास के पन्नों पर चंदेल वंश का नाम स्वर्ण अक्षरों में जड़ा है। खजुराहो के मंदिर चंदेल कालीन शासकों की कला के नायाब हीरे है। 950 ई. से 1050 ई. के मध्य चंदेल शासकों के संरक्षण में पल्लवित वास्तुकला उतुंग मंदिरों के रूप में मुखरित हुई।

मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले से लगभग 27 मील की दूरी पर अपनी मंदिर संपदा के कारण खजुराहो न केवल संपूर्ण भारत अपितु पूरे विश्व में ख्याति लब्ध हैं। ब्राह्मण तथा जैन सम्प्रदाय से संबंधित यह मंदिर नागर शैली के समस्त समूहों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। मध्यप्रदेश के सघन वनों ने बाहरी आक्रांताओं तथा प्राकृतिक आपदाओं से इनकी पर्याप्त सुरक्षा की है। इसी कारण भारत के अन्य मंदिरों की तुलना में ये मंदिर ज्यादा सुरक्षित रह सके।

नौवीं शताब्दी ईस्वी के आरंभ में दक्षिण बुन्देलखण्ड में नन्नुक के नेतृत्व में चंदेल राजवंश के महत्वपूर्ण शासक हूए। नौवीं से बारहवीं शताग्दी तक का समय भव्य मंदिरों और कलात्मक मूर्तियों के निर्माण का युग कहा जा सकता है। बुन्देलखण्ड के आसपास के भागों में अनगिनत मंदिर और मूर्तिकला से संबंधित प्रचुर सामग्री यत्र तत्र मिलती है। चूँकि चंदेलों का राज्य जेजाक भुक्ति के नाम से

प्रख्यात रहा फलतः इस युग की कला शैली का नाम भी उसके अनुरूप जेजाक भुक्ति शैली दिया गया। स्टैला क्रेमरिश ने इस कला को चंदेलकालीन कला का नाम दिया। खजुराहो की मूर्तिकला इस काल की कला का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। एक जनश्रुति के अनुसार खजुराहो में 85 मंदिर थे किन्तु अब केवल 25 मंदिर ही विभिन्न दिशाओं में विद्यमान है जो खजुराहो के आसपास फैले हुए हैं। खजुराहो किसी समय एक विशाल और भव्य नगर के रूप में प्रख्यात था। यहाँ चंदेल शासकों के द्वारा नागर शैली में बनवाये गये सुन्दरतम मंदिरों का समूह है। चंदेल शासक कला के बहुत बड़े संरक्षक थे और उन्होंने खजुराहो को विभिन्न मंदिरों से सजाया था। यहाँ के भव्य मंदिर अपनी विशालता एवं सुसंगठित वास्तु योजना, अतुल मूर्ति सम्पदा एवं उनकी विशालता की दृष्टि से नागर शैली के समस्त मंदिर समूहों में सर्वोच्च स्थान रखते हैं। विकसित शैली के सभी मंदिर तलच्छन्द एवं उर्ध्वछन्द में इस प्रकार विकसित हैं मानो उनमें एक लय ध्वनित हो रही है। खजुराहो के अधिकांश मंदिर पन्ना की खदान से उपलब्ध पीले एवं गुलाबी पत्थर से निर्मित हैं केवल ब्रह्मा तथा ललगुवाँ महादेव मंदिरों का निर्माण कणाश्भ से हुआ है।

खजुराहो मंदिरों को तीन समूह में बाँटा जा सकता है–

1. पश्चिमी समूह– पश्चिमी समूह में मंदिरों की संख्या सबसे अधिक हैं इनमें मुख्य मंदिर कंदरिया महादेव मंदिर, विश्वनाथ मंदिर, देवी जगदम्बी और चित्रगुप्त मंदिर है। ये सभी मंदिर अपने स्वरूप में अत्यंत विशाल हैं। इस समूह के अन्य मंदिरों में चौसठ योगिनी दूलादेव महादेव, नंदी, पार्वती, वराह, महन्तेश्वर मंदिर हैं। इस समूह के सभी मंदिर ब्राह्मण, धर्म, वैएणव, शैव, शाक्त और शौर्य सम्प्रदाय से संबंधित हैं।

2. पूर्वी समूह– इस समूह के मंदिरों को धर्म की दृष्टि से दो वर्गों में बाँटा जा सकता है–ब्राह्मण मंदिरों में और जैन मंदिर। ब्राह्मण मंदिरों में जैन मंदिरों में घन्टाई एवं आदिनाथ मंदिर, पार्श्वनाथ मंदिर आते हैं।

3. दक्षिण समूह– दक्षिण समूह में केवल दो महत्वपूर्ण मंदिर दूल्हादेव एवं चतुर्भुज या जटकारी मंदिर है। ये दोनों ही मंदिर ब्राह्मणधर्म से संबंधित हैं। इनके अतिरिक्त कुछ मंदिरों के भग्नावशेष भी उपलब्ध हैं।

सामान्यतः यह माना जाता है कि खजुराहो के मंदिर 950 से 1050 ईस्वी के मध्य निर्मित हुए लेकिन ये बात आलोचना की कसौटी पर खरी नहीं उतरती। कृष्णदेव के अभिलेखीय साक्ष्यों के साथ साथ विभिन्न मंदिरों के वास्तु शिल्प एवं अलंकरण के विकास का तुलनात्मक अध्ययन कर यह कहा जा यकता है कि अंतिम मंदिर 1100 ईस्वी के पश्चात् निर्मित हुआ था।

खजुराहो की संपूर्ण मूर्तियों को पांच वर्गों में बाँटा जा सकता है–

1. प्रथम वर्ग–में मुख्य देवी देवताओं की मूर्तियाँ हैं जो प्रायः समभंग मुद्रा में खड़ी हैं। ये मूर्तियाँ पूजा के लिये मंदिरों के गर्भगृह में प्रतिष्ठित हैं। प्रभामंडल से मुक्त इन देव मूर्तियों की पृष्ठभूमि में सहायक देवी देवताओं की मूर्तियाँ अंकित की गई हैं। इनमें विष्णु, शिव, सूर्य, गणपति, दुर्गा, महिसाषुर मर्दिनी की मूर्तियाँ आती हैं। खजुराहो मंदिरों (वैष्णव एवं सौर मंदिर) के गर्भगृह में स्थापित प्रधान देवता की प्रतिभायें अपने अंकन एवं प्रतिभा लक्षण की दृष्टि से अनुपम कृतियाँ हैं। चतुर्भुज मंदिर के गर्भगृह में स्थापित विष्णु की प्रतिमा अपनी भव्यता एवं विशिष्ट लक्षणों कें कारण आकर्षण का विषय है। इस मूर्ति में शिव और विष्णु दोनों देवताओं की विशिष्टतायें देखने को मिलती है। लक्ष्मण मंदिर के गर्भगृह में विष्णुके बैकुण्ठ रूप की मूर्ति स्थापित है जिसके कारण यह बैकुण्ठ मंदिर भी कहलाता है। वामन मंदिर में विष्णु के वामनावतार की अत्यन्त सुंदर चतुर्भुजी मूर्ति है, उनके मुख पर बाल–सुलभ भाव दिखाई देता है। सौर मंदिर चित्रगुप्त में सूर्य की मूर्ति स्थापित है।

2. खजुराहो की मूर्तियों का द्वितीय वर्ग सहायक देवताओं का है इनमें मारुत, दक्षिण पश्चिम में यम और निऋति तथा दक्षिण पूर्व में इन्द्र और अग्नि विराजमान है। सभी मंदिरों में ईशान देव त्रिभंग मुद्रा में स्थित हैं। सुडौल देह, जटामुकुट एवं आभूषणों से सुसज्जित स्मित मुख प्रदर्शित है। वाहन वृष उनके पार्श्व में अंकित है। कहीं कहीं एक उपासक भी अंजलि मुद्रा में उपस्थित है। इंद्र की देह सुडौल, सर्व आभूषणों से युक्त,स्मित भाव से परिपूर्ण है। वाहन ऐरावत उनके पार्श्व में तीन करों में वज्र, अंकुश तथा कमण्डलु है। अग्नि देवता का वाहन मेष पार्श्व में मुख पर मूछें अंकित है। पार्श्व में भक्त तथा अज अंकित हैं। यम के मुख राहवर से दो दन्त बाहर निकले हुए तथा उभरे हुए अंकित हैं। वाहन महिष पार्श्व में उपस्थित है। यम चतुर्भुजी अंकित है। उनके आयुधों में खप्पर मुण्ड अथवा पक्ष अंकित हैं। निऋति त्रिभंग मुद्रा में अवसन है। शीर्ष पर जटामुकुट अथवा केश सज्जा उर्ध्व है। पार्श्व में एक मानव आकृति अंकित है। वरुण के मुख पर शान्त भाव प्रदर्शित है वे चतुर्भुजी पाश, पदम, पुस्तक, ध्वज, कमण्डलु धारण किये हैं। वायु देवता की मुखमुद्रा शान्त एवं देहयाष्टि युवावस्था के अनुरूप सुगठित है। वे करण्डमुकुट तथा सभी आभूषणों से सुसज्जित हैं। उनका मृग पार्श्व में उत्कीर्ण है। कुबेर की मूर्तियाँ दो रूपों में अंकित मिलती है। दिक्पाल मूर्तियाँ प्रायः सुडौल और देहयष्टिवान है परंतु स्वतंत्र मूर्तियों में देवता महोदर एवं महाकाय दिखाई देते हैं। कहीं पर वाहन मेष तो कहीं पर यह आकृति श्वान या सिंह के समान दिखाई देती है। मूर्तियाँ खण्डित होने के कारण अस्पष्ट हैं। कही कहीं पर धन देवता के पार्श्व में निधि कलश प्रदर्शित किया गया है।

3. तृतीय वर्ग – की मूर्तियों में अप्सराएँ और सुंदर स्त्रियाँ हैं जिनके कारण खजुराहो की कला अमर है। ये मूर्तियाँ जंघाओं, रथिकाओं, स्तंभों, भित्तियों इत्यादि पर उत्कीर्ण की गई हैं। इन मूर्तियों में स्त्री–सौदर्य को विविध मुद्राओं और हाव भाव के साथ उत्कीर्ण किया गया है। कहीं ये देवताओं के पार्श्व में हैं तो कही हाथ में दर्पण, घट, पदम आदि लिये प्रदर्शित हैं तो कहीं विभिन्न नृत्य मुद्राओं में प्रदर्शित हैं।

कंदरिया महादेव मंदिर में आँख बंद किये हुए अत्यन्त शांत मुद्रा में खड़ी हुई दो अप्सराओं की मूर्तियों में नारी सौंदर्य अत्यन्त मनमोहक है। इसी प्रकार आदिनाथ मंदिर में नृत्यरत अप्सरा और पार्श्वनाथ मंदिर में आंखों में अंजन लगाती सुंदरी, पैर से काँटा निकलती सुंदरी नारी सौंदर्य के मनमोहक विविध रूप को उपस्थित करती है।

4. चतुर्थ वर्ग- में धार्मिक विश्वासों से असम्बद्ध मूर्तियाँ है जिसमें घरेलू विषय जैसे गुरु शिष्य, नर्तक, गायक दल, शिकार करते हुए, सेना प्रयाण तथा श्रृंगार भाव से युक्त स्त्री पुरुष मूर्तियाँ हैं। कंदरिया महादेव मंदिर के अधिष्ठान की रूप पटि्टकाओं पर गज, अश्व, योद्धा, आखेटक, नट, विभिन्न वादययंत्रों से युक्त संगीतज्ञ, नर्तक, नर्तकियाँ, भक्त, मिथुन आदि के नाना दृश्य उत्कीर्ण दिखाई देते हैं जिनकी मनोहर छटा दर्शनीय है। दूल्हादेव मंदिर में महामंडप के वितान पर बीस शाल भंजिकायें है तो अत्यंत मनमोहक हैं।

5. पंचम वर्ग - में पशुपक्षी, नाना अलंकरण, बेल बूटे, प्राकृतिक दृश्य रखे जा सकते हैं। शार्दूल अथवा पौराणिक पशु सजावट के रूप में प्रयुक्त किये गये हैं। वस्तुतः मानवीय रूपों के साथ साथ प्राकृतिक जगत के वृक्ष, वनस्पति, पुष्प लता एवं अनेक प्रकार के पशु-पक्षियों को भी खजुराहो की कला में स्वतंत्र स्थान प्राप्त हुआ है।

अंत में निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है कि खजुराहो के मंदिरों में इस प्रकार की आकृतियों एवं मूर्तियों के प्रदर्शन का प्रयोजन जीवन के महत्वपूर्ण पक्ष धर्म और काम का निरूपण कर सामान्य जन को एक साथ सांसारिक और आध्यात्मिक मन स्थिति में लाना और अन्ततः धार्मिक भावना में लिप्त करना भी यहाँ के शिल्पी का उद्देश्य हो सकता है। संरचना, भावों के अंकन और कलात्मक सौंदर्य की द्रष्टि से खजुराहो की मूर्तिकला भारतीय कला के इतिहास में अपना महत्वपूर्ण और एक अलग स्थान रखती है।

-सहायक प्राध्यापक

प्राचीन भारतीय इतिहास सं. एवं पुरातत्व

शा.जे.योगानन्दम छ.ग.महाविद्यालय

रायपुर छत्तीसगढ़

दो कवितायें

-चंद्रभान सिंह 'चंदर'

वृक्ष उपकार

विरछन सें लगत है जाँगन ताँगन नोनों
सब काऊ खों दें सुख जियें जे जोनों
है इन के त्याग की किसा अटपटी भैया
बोलें न बुरयं चाँय मारो इने कुलैया
चारउ पन काड़त कोऊ नइं पुछैया
चौमासो जड़कारो और खरी दुपैया
रयं हँसत सदां ना कभऊँ जान तइ रोनों 1

दुख सयें खुदइं दूसरन खाँ देतइ छैयाँ
बैरी तक खों जे करतइ नैयाँ नैयाँ
कट जाँय चाय फट जाँय तोउ सब खैयाँ
आदर सें बैठारें ओली के मैयाँ
ऐसो पर उपकारी कोउ भओ ना होंने...........2

भावइ भोगत भोगत इन के दिन बीते
अपने अँसुआ जे खुदइं विचारे पीते
अपजस ना मोल ले अपने जीते जीते
जे गार गारकें हियो देंय फल मीठे
दुनिया में सबसें करत प्रेम अनहोनों 3

अच्छे और बुरय में बनतइ जेइ सँगाती
जैसें दे दिया खों संग हमेसां बाती
मूरख मानुष खों तोउ सरम नइं आती
रोपत ना उलटे काटत दिन और राती
चंदर जब गातइ लगतइ भौत सलौनी.........4

बसीटी

ढूँड़ दओ मोरी मोड़ी खाँ तुमने जो लरका कारो
टीका देंव नईं में ई खाँ चाय कुलय्यन सें मारो
कौन जनम को बैर बहोरो हँसे देख बस्ती सारी
मैंदा कैसी धरी गकरिया मोरी पुनियाँ सुकमारी
जनम भरे लों कोसे हमखों तुमखों दे दे कें गारी
ऐसे लरका सें तो उसइं बैठी घरै रये कुआँरी
नेकउ सरम ना आई तुम खाँ गरे में जो डेंगुर डारो....1

तुमइं बताओ का लरका तूगय ते ई दुनिया भर के
ई सें नोंने लगत चैनुआँ देखत में चम्मोदर के
खा कें भाँग अफीम गयेते देखन दोरे ई वरके
जिये देख कें भगें पुरा के लरका वारे डर डरकें
लगे भूत सो मिलै गाँव के बाहर जो कऊँ उगरारों.......2

अच्छी करी बसीटी तुमने मोरे संगे पुरवारे
मोंसें कातन बनत ना कछुअइ आन दुआरे बैठारें
रैन के पुतरा कैसे लरका देख देख कइयक हारे
अच्छे जोरे तुमने समधी बिना पके जे कुड़आरे
पूरो कुटुम धरों हड़िया सो एक सें एक बनो न्यारो.......3

जाती बेरां तरन तरन कै कइती मैनें समझा कें
देखत सुनत में होवे नोनों चाय करत होवे फाँके
बोलो, काये बोलत नइयाँ कैसे रैगय गुपवाकें
एक कोद कोनें जा बैठे घूँटन मुड़िया ओंदाकें
समदी और समदिन को 'चंदर' को कर देवैव निपटारो...4

-नारायणपुरा, गुरसरांय

लुक लुक की बीमारी

-राजीव नामदेव 'राना लिधौरी'

हमाये इतै कछु दिनन से नये-नये कवि पैदा होन लगे, पैला से वे कविताई नई करतते पर जब सै सरकार ने उनै रिटायर्ड करदऔ तबसै वे सठिया गये और **"सरतारौ बानिया का करे"** की कानात को अपनारये हते, सौ कोनऊ ने उनसे कै दई कि कवि बन जाओ सौ उनने कई कि कवि तो जन्मजात होत है ऐसे कैसे बन जात हैं? उनने कई आजकाल तौ सबई जने कवि बन जात है कवि बनबे से ज्यादा ऊखौं दिखावों करवौ जरूरी है। वे ठलुवा तो हो गये हते सो उन्ने कोशिश करी तो कछु इताई कि कछु उताई की जोर-तोर के चार छः कवितायें बना डायरी धर लई, लो बन गये कवि। अब उने झट्टई अपनौ नाव कवियन में करवै की लुकी लुकी भई, जा एक भौत बुरई नई बीमारी पर गयी जौ उनकौ पीछो अबे लौ नई छोर रई। अब शहर में कितऊ भी कोनऊ साहित्यिक पिरोगराम या कवि सम्मेलन हुये जै साहब उतै जरूर पौच जेहे। उन्हें पैचानवे में कोनऊ परेशानी नई होत है, काइसै कै जै उतई मंच कै ऐंगरें ही लुकलुकात फिरत है। कछु नई तो तनक-तनक देर में मंच पै पौच कै माइक ठीक करन लगत है ऐसे लगत जैसे जै पिछले जनम में माइक सुधारवे के स्पेशलिस्ट भये हुये।

एक बैर का भओ कि शहर में एक बुन्देली पै कवि सम्मेलन हतौ अब ये लुक लुक साब तौ बुन्देली में तनकऊ नई लिख पातते, सौ उनकी इतै कविता पढ़वै की दार नई गलने हती, पर का करै, मजबूरी हती सौ जै सबसे पैला की लाइन में जगां अगेज कै सबसे पैला कुर्सी पै धररये। अब साब कवि सम्मेलन चालू भओ, सो जो इनै लुक लुक की बीमारी हती ऊकौ कीरा कुलबुलान लगौ सो इनै कछु ने सूजी, जै उतई से एक पैरे से पैराओ, भओ गजरा ढूंढ लाये और मंच पै चढ़ कै ऊ समय जौन कवि पढ़ रओ हतो उखौ पैरा दओ, और तारी बजान लगे जैसे कछु जग्ग जीत लओ हो, सौ कछु लोगन ने उनके देखा देखी सोई तारी बजा दई। अब उनकी लुकलुकी तनक कम भई सो जै अपनी जागा पै आकै बैठ गयें। आदा घंटे बाद इनै फिरकै लुकलुकी उठी, सौ जै फिरकै कऊँ से एक गजरा ढूँढ़ कै लाये और मंच पै जान लगे, सौ पछाई बैठे श्रोताओं में से कोनऊ ने जोर से कई-जौ कौ बब्बा। जौ भाई लुकलुकात फिररऔ, सौ बगल बारे ने कई सठिया गओ है दूसरे नै कई इतंई कौ नओ-नओ कवि बनो है सौ आज ईखौ पढ़बे नई मिल रओ, सो फरफरात फिर रओ और गजरा डार-डार कै अपनौ मन भर रऔ, एई बहाने से मंच पे जावे की लुकलुकी शांत कररओ। एकाद बेर फोटो सोई खिंच जात सौ जै ऊखां मड़वा कै अपने इतै घरे टांग लेत है और कत फिरत है कि हमने ऊके संगे कविता पड़ी हती वे तो हमाये मित्र है। अब फोटो देखवे वारे कौ का पतौ कि जा फोटो कैसे खिंची हती। जो बब्बा हर कवि सम्मेलन में जोई नौटंकी करत है हम तौ कई बेर देख चुके है। सबरै सुनवे वारे इन्है चीनन लगे है लगत है तुम नये आये हो ? एई से तुमै नई मालूम।

इन साब की लुकलुक की बीमारी खौ देख के शहर भर के कवियन ने इनकौ नाव लुकलुक कवि धर दओ। अब इन में एक विद्या तो जन्मजात हती सौ ऊकी दम पै और नैतन की चमचमाई करकै इतै उतै की बातें बना कें नेतन के हात पाव जोर कै कैसे भी पैसा ऐठ कै एकाध कवि गोष्ठी अपने घरे करा लई और उन्हीं नेतन खौ शाल श्रीफल सै सम्मान करदओ। शहर भर कै नेतन खौ सम्मान करकै जै अफरै नइयाँ सौ अब उनखै चमचन खौ सोई सम्मान करत जा रये। अब इतै जा सोसवे बारी बात है कि साहित्यिक गोष्ठी में नेतन कौ सम्मान करवै की का तुक है वे कुन अटल बिहारी है कि कवि है। जे तो साहित्य कौ "हीग कौ धमा" तो जानत नईया और सम्मानित हो रये, जै तो बोई बात हो गई कि मूरखन कै राज में "गधा पजीरी खा रये" लेकिन का करै चमचयाई में जो सब करनै पड़त है। अबे तक तो जा कानात सुनी ती कि "मुसीबत में गधे को बाप बनालओ जात है पर अब तो पैसन के लाने जी चाये खौ कछु भी बनालो"।

अबै तक तो साहित्यकार इन सबसे दूर रततै। साहित्यकारन खौ जो सब नोनो नईं लगत है, साहित्यकारन की तौ स्वाभिमान, इज्जत एवं प्रशंसा ही पूंजी रत है। साहित्यकार खौ मतलब होत है जो सबको हित करे वही साहित्यकार होत है जो नई कि केवल अपनौ हित साध लओ। नेतन की चमचयाई और लुकलुक करवो अपुन साहित्यकारन कौ नोनो लई लगत है पर का करै जमानौ सोई बदल रओ है। झटटई परसिधी पावे खौ जो शोर्टकट रस्ता है। कछुन ने ईखौं अपना लओ है।

अब लुकलुक साब खौ दो तीन साल कविताई करत भये हो गये सो उनने कवियन की कविता पढ़वे की नकल ,मंच की अदाये सीख लई वे अब कवियन में गिने जाने लगे और स्वयं खौ शहर खौ सबसे बड़ो कवि मानन लगे। वे अपने लुकलुकावे को कोनऊँ मौका हात से नई जान देत है। शहर में जब कभउ कौनउँ भी कवि सम्मेलन होत है और ऊ में कोनऊँ नओ कवि शहर में आवो तो वे एक डायरी लेके ऊकै इतै पौच कै ऊखों नाव पतौ और मोबाइल नंबर जरूर लिख्स लेत है और उये जब तक पेरत रत है जब तक कि वौ इने अपने इते एक बेर नई बुला लेत है। दोबारा उतै जावे की नौबत नई आत है। वे जान जात है कि जै कितै बड़े वारे हैं।

वे अब जब भी मंच पै जात है तो एक दो नई से उनकी लुकलुकी नई जात कम से कम छः सात कवितायें तो फटकार आउत है संचालक महोदय इनसे बैठवै की बिनती करत-करत थक कै गम्म खाकै बैठ जात। यदि जै कभऊँ कोनउ गोष्ठी कौ संचालन कर रये तौ फिर उनसे भगवान भी नई बचा सकत है, लुकलुक साब कि कछु कवितायें तो गोल्डन जुबली मना चुकी है फिर भी जै बड़े शान से ऊ कविता खौ ऐसे सुनात जैसे पैली बेर सुना रये हों।

उनकी देखादेखी कछु कवियन खौ सोई जा लुकलुक की बीमारी लग गई है। सौ भइया इनई जैसन लुकलुकन की लुकलुकी कम करवै के लाने जौ व्यंग्य लिखौ भऔ है। अब का करे जैसे कम्प्यूटर में बाइरस आ जात है बैसे अब साहित्य में सोई बायरस आन लगे है। यदि एंटीबाइरस अपने एगर धर लओ है ताकि इनके प्रभाव से बचत रये, लेकिन फिर भी कभऊँ-कभऊँ इनकी चपेट में सोई आ जात है। इनकी मीठी और चापलूसी की बातन में आ जात है। सो भइयाहरौ जा लुकलुक की बीमारी भौत खतरनाक है ईसै अपने खौ बचावे राखने है।

-नई चर्च के पीछे, शिवनगर कॉलोनी
टीकमगढ़- 472001

कन्या शिक्षा

बुन्देली कथा-

-श्रीमती लक्ष्मी शर्मा

बाबूजी अपनी बिटियां पे गुस्सा हो रये हते। उनकी बिटिया देवकी आंगे पढ़वे के लाने लगी हती। बाबूजी और आगे नें पढ़ाउन चाहतते। बाबूजी कहन लगे। अब तुम्हें और किल्लों पढ़ने है? हो गई पढ़ाई।"

"बाबूजी अबै हमें और आंगे पढ़ने हैं।"

"बस हो गई पढ़ाई, जित्लों पढ़ने हो सो पढ़ लओ है।"

रामप्रकाश की बिटिया बी.एस.सी. पास हो गई है। अब एम.सी.ए. पढ़न चाहत है, वे बाबूजी नईं पढ़ा रये। देवकी रोन लगी और अपनी मां से कन लगी-

"तुम जान के बाबूजी सें कहो के बे हमें आगे पढ़ लेन देबे।"

देवकी की माँ ने जान के रामप्रकाश जू सें कही " मोड़ी जब सें किलप रई आगे पढ़वे के लाने तो तुम हामी-काय नई भर देत हो।"

" अब तुम ऊ की सिपारिस ले कें आ गई। हम कै बेर कहें के अब हमें नईं पढ़ाने ? तुमें तो कछू अक्कल नइंया। देवकी के ब्याओ के लाने हमें तो अभईं लरका नईं मिल रओ है नईं तो हम अबई भांवरे पार देते। अबै और आंगे पढ़ा के का कर हैं?"

"अब बा पढ़न चाहत है, भीतरै रोबै लगी है।"

"अब हम जा कहत हैं कै देवकी छोटी तो है नईं, ब्याओ के लाने देवे कां नगद रुपैया चाने और दहेज सोई चाने। हम तो जा चाहत हैं, ब्याओ कर देवें। अब इत्तो तो पढ़ लओ है। हमें का नौकरी करवाउने है।"

"जब लौ लरका देख हो, परख हो, तब लौ तो बा अपनी पढ़ाई पूरी कर लेहें।"

"हमने तो चार-छः जनन के घरे देवकी के ब्याओ के लाने चिट्ठी पत्री डार दई हैं।"

"अब जैसो तुम्हें दिखाय सो करो? हमाई मंशा तो देवकी को पढ़ावे की है।"

देवकी के बड़े मामा कल्याण में नौकरी करत हैं। वे सागर स्टेशन से रेलगाड़ी से गुजर रये हते सो रामप्रकाश ने कही के इते उतर जाओ। तुमाई बैन तुम औरन के लाने खूबई हींड़ रईं हती सो इते उतर के सब से मिल जुर के चले जइयो।

सारे रामकुमार चौबे जू ने जीजा की कही मान लई और रुकबे के लाने गाड़ी से उतर के बैन के घरे आ गये। बैन ने भैया की खूबई आवभगत करी और उते के भौजी के भतीजे भतीजी के हाल-चाल पूंछे।

मामा के आये से देवकी को बड़ो अच्छो लगो और मामा सें तनक आसरो दिखाने देवकी आन कें मम्मा कों देख कें रोन लगी। मामा ने पूंछी " काय देवकी तुम काय रो रही हो कछु पिरा रओ है तुमाओ ? का बात है ? हमें बताओ? हमें रोउत मोड़ी-मोड़ा अच्छे नईं लगत हैं ?"

देवकी ने कही " मम्मा जी हमें आंगे पढ़ने हैं। हम और पढ़न चाहत हैं।"

बाबूजी अपनी बिटियां पे गुस्सा हो रये हते। उनकी बिटिया देवकी आंगे पढ़वे के लाने लगी हती। बाबूजी और आगे नें पढ़ाउन चाहतते।

बाबूजी कहन लगे। अब तुम्हें और किल्लों पढ़ने है? हो गई पढ़ाई।"

"बाबूजी अबै हमें और आंगे पढ़ने हैं।"

"बस हो गई पढ़ाई, जित्लों पढ़ने हो सो पढ़ लओ है।"

रामप्रकाश की बिटिया बी.एस.सी. पास हो गई है। अब एम.सी.ए. पढ़न चाहत है, वे बाबूजी नईं पढ़ा रये। देवकी रोन लगी और अपनी मां से कन लगी-

"तुम जान के बाबूजी सें कहो के बे हमें आगे पढ़ लेन देबे।"

देवकी की माँ ने जान के रामप्रकाश जू सें कही " मोड़ी जब सें किलप रई आगे पढ़वे के लाने तो तुम हामी-काय नई भर देत हो।"

" अब तुम ऊ की सिपारिस ले कें आ गई। हम कै बेर कहें के अब हमें नईं पढ़ाने ? तुमें तो कछू अक्कल नइंया। देवकी के ब्याओ के लाने हमें तो अभईं लरका नईं मिल रओ है नईं तो हम अबई भांवरे पार देते। अबै और आंगे पढ़ा के का कर हैं?"

"अब बा पढ़न चाहत है, भीतरै रोबै लगी है।"

"अब हम जा कहत हैं कै देवकी छोटी तो है नईं, ब्याओ के लाने देवे कां नगद रुपैया चाने और दहेज सोई चाने। हम तो जा चाहत हैं, ब्याओ कर देवें। अब इत्तो तो पढ़ लओ है। हमें का नौकरी करवाउने है।"

"जब लौ लरका देख हो, परख हो, तब लौ तो बा अपनी पढ़ाई पूरी कर लेहें।"

"हमने तो चार-छः जनन के घरे देवकी के ब्याओ के लाने चिट्ठी पत्री डार दई हैं।"

"अब जैसो तुम्हें दिखाय सो करो? हमाई मंशा तो देवकी को पढ़ावे की है।"

देवकी के बड़े मामा कल्याण में नौकरी करत हैं। वे सागर स्टेशन से रेलगाड़ी से गुजर रये हते सो रामप्रकाश ने कही के इते उतर जाओ। तुमाई बैन तुम औरन के लाने खूबई हींड़ रईं हती सो इते उतर के सब से मिल जुर के चले जइयो।

सारे रामकुमार चौबे जू ने जीजा की कही मान लई और रुकबे के लाने गाड़ी से उतर के बैन के घरे आ गये। बैन ने भैया की खूबई आवभगत करी और उते के भौजी के भतीजे भतीजी के हाल-चाल पूंछे।

मामा के आये से देवकी को बड़ो अच्छो लगो और मामा सें तनक आसरो दिखाने देवकी आन कें मम्मा कों देख कें रोन लगी। मामा ने पूंछी " काय देवकी तुम काय रो रही हो कछु पिरा रओ है तुमाओ ? का बात है ? हमें बताओ? हमें रोउत मोड़ी-मोड़ा अच्छे नईं लगत हैं ?"

देवकी ने कही " मम्मा जी हमें आंगे पढ़ने हैं। हम और पढ़न चाहत हैं।"

मम्मा ने कही " जा तो बड़ी अच्छी बात है के तुम्हें और आंगे की पढ़ाई करने हैं। हमें तो बड़ी खुशी भई के तुमाओ पड़वे में मन लगत है।" देवकी बोली "मम्मा बाबूजी कहत है कै अब हो गई पढ़ाई? अबै और कित्लो पढ़ हो। बे आगे पढ़वे की नाहीं कर रये हैं। आप उनसे के हो तो बे आपकी बात मान हैं।"

आप उनसे के हो तो बे आपकी बात मान हैं।"

बैन बोली"भैया तुम तनक जीजा जू से सम्मान के कहो तो हो सकत है के बे तुमाई बात मान जावें। ई की किलपना मों से देखी नई जा रई।"

भैया मनई मन भरी परेशान रहे के कैसे जीजा जू के लाने समझावे? वे तो अपनी बात कर हैं और वे ने माने तो हम का कर हैं। सब बातन को सोच विचार करत रये।

संजाबेरा जीजा जू दफ्तर सें आये। दोई जनों को मिलबो भओ। सबरी इते की उते की बातें भई, सबके हाल-चाल पूंछे। जीजी जू ने कही-

"तुमाय उते कल्याण में अच्छो लरका होय तो बताओ देवकी को ब्याओ करने हैं।"

भैया बोले"का कह रये हो जीजा जू, देवकी को ब्याओ ? अबै तो बा पढ़ रई है, अबै पढ़न दो। जब पढ़ जैहे फिर देख हैं।"

"अरे कैसी बात कर रये ? पढ़ाई जित्नी करने हती सो हो गई। अब और आंगे नईं पढ़ाने है। अब तो लरका देख कें ब्याओ करने है। अबै पढ़ाई में पैसा लगाओ फिर दान-दहेज में लगाओ। अब हम आंगे और नईं पढ़ाउन चाहत हैं।"

"आप ठीक कै रये हो वे हम कहत है के बिटिया कों पढ़ा-लिखा के अपने पांवन पे ठाड़ो करबो जरूरी है। पढ़ लिख जेहे तो खुदई कमाऊन लग है?"

"काय फिर ब्याओ कर है तो का बिना नगद रुपैया और दहेज के हो जेहे?

" बिटिया कों पढ़ लिख कें नौकरी से लग जान दो। फिर दहेज की चिन्ता नइयां। बिना दहेज के ब्याओ हो जेहे?

"जा का कै रये चौबे जू?अपनी बिटिया कोऊ ने बिना दहेज के ब्याही है?"

"हम सांची या कह रये जीजा जू फिर तो एक नईं चार लरका बारे ब्याओ के लाने ठाड़े दिखा हैं तुमाय सामने।"

"अरे भइया जे तुमाई बातें हैं। ऐसो कबहूं भओ है के बिना नगदी और दहेज के कोऊ लरका बारे ने अपनो लरका ब्याह दओ होय?"

"अब हम का कहें आप तो हमाई बात कों झूठी मानबे लगे हो।"

मामा ने कही"अभईं ब्याओ करने है का? रामप्रकाश त्रिवेदी जी बोले"हाँ अबै करने है कायसें अबै कम रुपैयन में ब्याओ हो जे है।"

"अब आप कहत हो के मोड़ी की जादा उमर नइयां सो अच्छो लरका मिल जेहे और दहेज कम देने पड़ है। मान लो आपको खात पियत नौकरी बारो लरका मिल जेहे तो आप किते कम में ब्याओ कर दे हो?"

"त्रिवेदी जी बोले"लाख दो लाख दहेज में और पचास साठ हजार ऊपर लग हैं और ब्याओ हो जेहे?"

मामा कहन लगे"जीजा जू हमाई बात सुनो अबै शादी ब्याओ के मुहूरत हैं और कॉलेज खुलवे सोई टेम है। हम तुमाई बात मानत हैं। आप ऐसो करो के लरका ढूड़ लो और शादी करो एक लाख रुपैया हमसे ले लो और ब्याओ कर दो। कुल मिला कें ढाई तीन लाख से ज्यादा खर्च ने करियों हमाई एक शर्त है?शर्त जा है के इत्ते रुपैयन में ब्याओ ने हो पावे तो आपको बिटिया को आंगे पढ़ानों पड़ है और पढ़ाई के बाद ई कों नौकरी सोई करन दियो। फिर देवकी की अच्छे लरका के संगे ब्याओ करबे की हम गारंटी देत हैं। शादी आप करियो जित्नी दहेज की मांग हुइये हम दे है जा हमाई बात पक्की रही।"

मामा चले गये। त्रिवेदी जी लरका की तलाश में लग गये। उन्हें एक मिडिल स्कूल में मास्टर को पतो परे। त्रिवेदी जी एम.ए. पास शिक्षक के घरे जानकें उनके पिताजी श्री श्यामलाल शुकुल से मिले, उनके लरका के संगै अपनी बिटिया के ब्याओ की चर्चा करी।

शुकुल जी कहत हैं " आपकी बिटिया बी.ए. पास सुन्दर है, हमाय लरका कों पसन्द आउत है तो हम शादी के लाने तैयार हैं।"

त्रिवेदी जी बोले "आप ओर बिटिया कों देख लो पसंद आहै।

शुकुल जी बोले " शादी तो आप अच्छी कर हो?"

त्रिवेदी जी ने हामी भर दई। शुकुल ने बताई इतवार के दिना हम लरका बिटिया और उनकी मां के संगे लड़की देखन आ है, और पसंद आ गई तो दूसरे दिना आपको जबाब दे देहें।

शुकुल जी परवार के संगे त्रिवेदी जी के इते लड़की देखवे आये। त्रिवेदी जी ने उनको खूबई सत्कार करे। सब औरें बिटिया देख गये। दूसरे दिना शुकुल जी ने त्रिवेदी जी कों अपने घरे बुलाओ और अपनी बात कही-

" आपकी कन्या सुन्दर है हम औरन को पसंद है। अब एक बात है, हमाय लरका की रिस्तेदारी में बात चल रई है हम तो आपके इते करन चाहत हैं। बे ओरे पाँच लाख दहेज में दे रये हैं, ऊपर को खर्चा अलग सें कर हैं? अगर आप इत्नोई दे दो तो आपके इते शादी पक्की समझो। हमाय लरका के लाने तो दस लाख तक मिल रये है वे हम दहेज के लाची नइयां।"

त्रिवेदी जी बोले"हम घरै चर्चा करकें आपकों बता हैं।"

घरे आन के सला भई। इतनो दहेज देबे की तो हिम्मत ने हती सो बात उतई खतम हो गई। दूसरो लरका रेलवै में क्लर्क को काम करत है। त्रिवेदी जी ऊ लरका के पिता से बात करत हैं।

ऊ लरका के पिता बड़े गरूर बारे हते बे कहन लगे"हमाओ लरका सरकारी नौकरी में है पूरे हिन्दुस्तान में घूमवे पास मिलत है। मुफ्त में इलाज होत है और सरकारी क्वाटर मिलत है। त्रिवेदी जी आप पन्द्रह लाख दे सकत हो तो हम लड़की कों देखवे आवै?"

त्रिवेदी जी तो सुन कें सट्ट मार गये और अपने घरै आ गये। आगें कछु कहबे की हिम्मतइ ने रही।

लरका बारे इत्तों मों बा रये थे तो त्रिवेदी जी ने सोची के मामा की कही मान के देवकी की पढ़ाई आंगे की करा देवें।
त्रिवेदी जी के मन में आ रई थी के जब हम देवकी से आंगे पढ़वे के लाने केहें तो देवकी कों कित्ती खुशी हुइये।

भगवान ने बहोतई अच्छो करे के हमें सारे चौबे जू ने अच्छी बात बताई। सही रास्ता सुझाओ और हमाई आँखें खोल दई।

देवकी सें बाबूजी ने कही"देवकी तुम आंगे पढ़वो चाहत हो सो पढ़ो। कॉलेज में अपनों नाम लिखा लो।"

देवकी सुन कें भोचक रह गई, अबै तो ब्याओ की चर्चा में लगे हते। लरका बारन के इते जाबो लगे हतो, जो कैसें हो गओ बाबूजी सांचऊं आगे पढ़ा हैं?

देवकी बोली"बाबूजी आप सच्ची कै रये हो, हम आंगे पढ़े? कालेज में नाम लिखा लयें? आप जा बात गुस्सा सें तो नईं कह रये हो?
माँ कन लगी" अरे तोरे बाबूजी तोहे आंगे पढ़ावे राजी हो गये हैं। तोरे बड़े भाग उनने हामी भर दई।"
देवकी बोली " बाबूजी आपने भोतई अच्छो करे के हमें पढ़वे के लाने कह दई। देखियो अब हम खूब मन लगा कें पढ़ हैं"

देवकी ने एम.सी.ए. पढ़वै के लाने कॉलेज में नाम लिखा लओ, और और कालेज पढ़न के लाने जान लगी। सुमित्रा और चित्रा कों लगे के बाबूजी देवकी जीजा कों आंगे पढ़ा रये हैं तो हम ओरन कों सोई पढ़वे मिल है।"

त्रिवेदी जी के घरे पन्ना बारी फुआ आईं हती। सब बातें होत रईं। जब उने पतो परे के देवकी कॉलेज में अबे और आंगे पढ़ रई है तो उने जा बात अच्छी नें लगी। बिटिया के ब्याऔ की चिन्ता हो गई।

फुआ ने कही "काय बहू कमला बिटिया को तुमें ब्याओ नईं करने का? देवकी कों पढ़ावे के लाने भेजन लगी हो ? और कित्तो पढ़ान चाहत हो ? लरका देख के ब्याऔ कर दो ? बिटिया स्यानी हो गई है?"
बहू कमला बोली " फुआ मोड़ी पढ़न चाहत हती खूबई रोउत किलपत रही सो फिर पढ़वे हामी भर दई।"

" काय रामप्रकाश मोड़ी " कहे कुआ में गिरने सो तुम हामी भर देहो। हमें का भैया तुमई भुगत हो? हमें तो देखें सुने को सुख है हमें के दिना जीने। अब तुमाई मोड़ी है जैसो तुम चाहो सो करो हम तो रीत की बात केहें?

रामप्रकाश जी बोले " फुआ हमने ब्याओ के लाने खूब लरका देखे पे बे इत्ती मांग करत हैं-के हम उन्को पूरो नईं कर सकत है। पढ़ लिख जेहे तो दहेज की मांग लरका बारे ने कर हैं। देवकी के ब्याओ की गारंटी देवकी के मामा ने लई है।
" अब तुमाये गारंटी दये लये ये कछूँ बिटिया दे-ब्याओ की उमर ने निकर जाये।"
फुआ की बातन से कमला कों बड़ो बुरओ लगो। बड़ो दुःखी मन हो गओ।

रामप्रकाश जी कमला से बोले" काय मों लटकाये हो,फुआ ने कही तो कन दो, बे बड़ी आंय बड़े-बूढ़न की चार बातें सुन लओ वैसे। पैले के और अब के जमाने में फरक है ले जा बात ने मान हैं तो का करिये। तुम उनसे कछु ने कइयो।"

देवकी बड़ी हुशयार हती। मन लगा कें पढ़त रही। देवकी की पढ़ाई पूरी हो गई और एम.सी.ए. पास हो गई। कछु दिनन में देवकी की नौकरी पूना में लग गई। देवकी अब कमाउन लगी। माया कों तो भारी खुशी भई के जीजा जू ने हमाई बात मान के देवकी कों पढ़ाओं और अब नौकरी सोऊ करन दई। देवकी अच्छी नौकरी कर रई है।

त्रिवेदी जी ने माया से कही" के अब हमनें तुमाई बात मान कें देवकी कों पढ़ा दओ है और अब नौकरी करकें अच्छो कमा रई है। अब तुम लरका देखो तो हम ब्याओ कर देवे।"

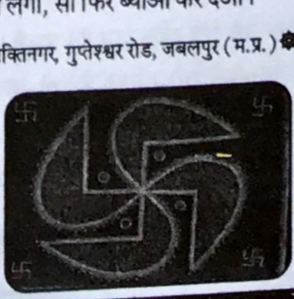
मामा ने शादी के विज्ञापन में देवकी के ब्याओ के लाने विज्ञापन दे दओ त्रिवेदी जी के घरे लरकाबारन के फोटो और सबरी बातन की चिट्ठी आउन लगीं। त्रिवेदी जी कों भारी खुशी हो रई थी, के लरका बारे उपत के चिट्ठी पत्री डार रये। बिटिया सें ब्याओ करन चाहत हैं।

सबकी सला से दिल्ली में अच्छी कम्पनी में नौकरी करत लरका विजय पाठक को पसंद करे। लरका के पिता शरद कुमार पाठक सें सबरीं बातें भई। पाठक जी ने दहेज के लाने साफ नाहीं कर दई। त्रिवेदी जी कों बड़ो अच्छो लगे।

देवकी और विजय पाठक को ब्याओ कड़े धूमधाम से भओ। सब जने ई ब्याओ की वाह वाही कर रये हते के पढ़ी लिखी नौकरी बारी बिटिया को कैसो अच्छो ब्याओ हो गओ बिना दहेज के।

रामप्रकाश त्रिवेदी जी ने सुमित्रा और चित्रा कों सोऊ खूब पढ़ाओ और जब नौकरी करन लगीं, सो फिर ब्याओ कर दओ।

1020 शक्तिनगर, गुप्तेश्वर रोड, जबलपुर (म.प्र.)



कवियन की पौ बारह

-सुरेन्द्र नायक

हमनें सुनो है कि बारा साल में तो घूरे के दिन भी बदल जात। फिर मैं तो इतनो ऐरो-गैरो भी नईं। आखिर हमऊ की तो कोनऊ हैसियत है, कोनऊ औकात है। मोय दूर से देखतई लोग उंगरिया से इशारो करत, अरे वो देखो पागल, वो टूटी चप्पल वालो, ए जोई तो है अपने शहर को नामी कलम घिस्सू। तुमई के फटे कुरता को न देखो। जो तो ई को ड्रेस कोड है, वैसे ही जैसे डॉक्टरन को ड्रेस कोड होत, बकीलन को ड्रेस कोड होत, डकैतन को ड्रेस कोड होत। वैसे बंदा है बड़ी किस्मत वालो। सरकार ने ई के लानें एक दिन अलग से बना रखो है, हिंदी दिवस, ई दिन ई की बड़ी पूछ होत है। अब जा की जैसी हैसियत, बाकी वैसी जुगाड़, ऊकी वैसी पूछ। कोऊ टी वी पे मटकत, कोऊ रेडियो पे खटकत, कोई सेमीनार में फटकत, कोऊ सरकारी आयोजनन में भटकत है। अब जो राज की बात है कि असली पूछ लेखक की होत है या प्रायोजक की। कैऊ बार तो एंकर दोऊअन पै भारी पर जात है, स्थानीय बाकी लोग आयोजनन में जुगाड़ भिड़ात है, शायद कितऊँ अध्यक्षता मिल जाये या कौनऊँ कवि गोष्ठी को संचालन मिल जाये। अगर कछु न हो पाये तो अपनी भड़ास निकारवे को मौका मिल जाये। कछु ऐसो न हो जाये कि पढ़ास रोग भीतरईं-भीतरईं पककें लाइलाज हो जाये। आजकल कवियन के बुरे दिन चल रये हैं। सुनवे बारे तो ऐसे गायब होत जारये जैसे शाकाहारी थरीया से मुर्गा। टी वी पे खूबसूरत गजल देखो भी और सुनो भी। ऐसे में कवि मंच पे बूढ़े खूसटों को कौन झेले?

सुनो है ई मौसम में लिक्खाड़ो की लंगूर जैसी लंबी पूंछ निकर आत है। तैसे सी-ग्रेड फिल्में होती हैं, वैसे ही सी ग्रेड कवि सम्मेलन भी होत हैं। वैसे तो कैवे के लाने वे भी अपने आपको अखिल भारतीय कहलाना ही पसंद करत हैं। इन आयोजनन में पूछ वाले नई बल्कि केवल पूंछ वाले ही बुलाये जात हैं। पहलो आयोजक पूंछ उमेठत है। महाकवि, हमाय आयोजन में पधारो, अध्यक्षता के संगे-संगे चाय की भी जुगाड़ है। तबई दूसरे आयोजक ने पूंछ को टेड़ी-मेड़ी करी और तुरूप चाल चलदई। राष्ट्रकवि तुम हमाय आयोजन में पधारो, तुमाओ संचालन पक्को, ईके संगे चाय-समोसा मुफ्त में राष्ट्रकवि के मों में चाय की मिठास घुलन लगत है। ई मौसम में सम्मान भी हाथ धो के पीछे पड़ जात है। जई बीच अबलो आयोजक आ टपकत है। खण्डाचार्य जू मोय पतो है कि आप आज के हिन्दी जगत के निराला हैं। आपकी पूँछ इतनी भारी है कि ऊ को अपय दोऊ हातन से भी नई मरोड़ सकत। ई से मैं आपकी पूंछ सहलावे के लानें एक बड़ी मल्टी नेशनल कंपनी को मक्खन लियाओ। आप इन छुट भैइयन के मकड़ जाल में न फँसो। आप हमाय आयोजन को धन्य करो। हमाई गोष्ठी में सामूहिक अध्यक्षता होगी मतलब सबई अध्यक्ष और सबई श्रोता। हमें पतो है आप बिना अध्यक्षता के कितऊँ नई आत-जात। सबई आमंत्रित कवियन को चाय-समोसा के संगे-संगे एक गिलास ठंडो पानी और एक लड्डू अलग से मिलवे की संभावना है।

वैसे तो हम़ाये शहर में एक से एक विलक्षण हिन्दी संस्थान हैं लेकिन समय की कमी के कारन में सिर्फ एक की ही चर्चा करूंगा। ई के अध्यक्ष हैं परम गुरू घंटाल फंडा श्री साहब अहा! जैसा नाम वैसे गुण। इन के ऐंगर ऐसे-ऐसे फंडें है कि बड़े बड़े डंडा श्री और झंडा श्री उनके आंगू मूड़ी झुकाउत हैं। जी दिन से फंडा श्री ने निराश कवि मंच को गठन करो, उनकी चौखट पे माथो टेकवे बालन की लाइन गई। विशेष अवसरनं पै तो कवियन की लाइन लगवावे के लानें उनें पुलिस की मदद लेने परत हैं। सौसौ जूते खाएं, तमाशा, घुस के देखें। ऊ चौखट को करिश्मा ही ऐसो है कि वहाँ से कोऊ खाली हांत नई लौटत।

निराश कवि मंच को गठन अन्यथा भी अत्यावश्यक था। शहर में कवि हो भी तो बहुत गए हैं। सुनो तो जोऊ है कि इतै के मसान में हर रात दिंगत कवियन को कवि सम्मेलन होत है और इस गंगा-जमुनी आयोजन में कई मरहूम शायर भी शिरकत करत हैं आगे हुआ यह कि एक दिन कविता के वायरस से बुरी तरह संक्रमित एक युवा कवि फंडा श्री की चौखट पे जा पहुँचा। के रिरियाओ, गिड़गिड़ाओ, है गुरुदेव हमाये पास न पूछ है, न पूछ है। अब हमाओ का हुये? फंडा श्री द्रवित हो गये। पहले जो बताओ कि तुम प्रगतिवादी हो या परंपरावादी, पोस्टरवादी हो या बकवादी? युवा कवि फंडा श्री के चरनन में लोट गओ। गुरु जी जो सब हम नई जानत। हम तो बस तनक-मनक कविता को चुरा लेत। फंडा श्री ने युवाकवि की पीठ थपथपाई। बेरी गुड, बेरी गुड, वैसे कविता तो हमऊ नई जानत और अगर जानतऊ होते तो का उखाड़ लेतो? रूस की क्रान्ति करा दे तो? फ्रांस की क्रान्ति कर करा दे तो ? खैर तुम कल के काव्य पाठ की तैयारी करो। और हाँ कल हमाये लाने भी दो चार कविताएँ तोड़ मरोड़ लियो। फंडा श्री अब और भी मूड में आ गये। देखो बेटा जो इंडिया है इंडिया, इते विचार को अचार नई खाओ जात। इते डालर को अचार खाओ जात है, पौंड को अचार खाओ जात है, लेकिन प्राय: रुपये के अचार से ही काम चलाने परत है। अच्छा अब तुमई बताओ, तुमने आज-तक कोनऊँ कविता में विचार नाम की चिरईया फड़फड़ात देखी है। जा डिश के देशी और विदेशी वर्जन तो अपय पुराने साहित्यकार पहले ही हजम कर चुके हैं। आज विचार को नई प्रचार को जमानों है। बस अपनो झुनझुना बजात रओ। सपेरा और का करत है? वैसे भी विचारन से पुरस्कार नई मिलत, हवालात मिलत है। पुलिस तुमाये ऊपर न जाने कौन से ऐरा-गैरा वादी होवे को आरोप

जड़ दे। भगवान ने मोय अक्ल बेवफूफी में खर्च करवे के लानें नई दई चाय जब खाली-पीली विचार करवे बैठ गये। जा तरीका सें तुम बेकार की उलझन में पड़ जे हो। बड़े बड़े संपादक तुमाये ऊपर ज्ञात स्त्रोतों सें अधिक चोरी को मुकदमा ठोक दे हैं। जाहिर है कि वे अपने से बड़े चोर को बरदाश्त कैसें कर सकत हैं। फिर झेलो मुकदमाऔर सी.बी.आई. इंक्वायरी। साहित्य में विचार घुसेड़वे की जुर्रत की की? तुमने जे विचार कां से चुराय ? कऊँ जे विचार कोनऊ विदेशी लेखक को तो नईया? जां के बाद जब ई.डी. और इंकम टैक्स की इंक्वायरी शुरू हुये तो तुमाई अक्कल की बक्कल उड़जे। और, तुम विचार करवे को दुष्परिणाम नई जानत। जैनेन्द्रजी ने विचार दओ, चाहिए पत्नी के साथ प्रेयसी भी। उनमें विचार दओ सो मर गये। का जरूरत हती उनें विचार देवे की ? भगवान जाने, उने प्रेयसी मिली कै नई।

लछ्छू असली साहित्यकार वो होत है जा को कोनऊ पागल कुत्ता ने न काटो होवे और वो स्वयं कुत्ता की तरह से दुम को हिलात हो। सीधा सा फंडा है, जो प्रतिपालेऊ सोई नरेश तुलसी बाबा ने झूठ तो लिखो नई हुये। मतलब जो पुरस्कार दे ऊके श्री पांव में तत्क्षण लोटपोट हो जाओ। बेटे भगवान ने जो गरदन झुकावे के लानें दई हैं। कटावे के लानें नई। अगर घीची ही न रे है तो माला का गिर है? और जोन घीची में माला न गिरे ऊ घीची को होवो का और न होवों का। युवा कवि को धैर्य डगमगाओ, गुरु जी मंच पे बकेती को मौका ? फंडा श्री कांइयापन से मुस्कुराये, लला तुम फिकिर न करो। अपने निराश कवि मंच को कवि सम्मेलन भी हिन्दी दिवस पे ही हुये जी में हर ऐरे-गैरे, नचैए-गवैए को अपनो हुनर दिखावे को मौका दओ जे। युवा कवि के मन में अगलो प्रश्न कुलबुलाओ और गुरू जी फंड को इंतजाम ? युवा कवि के बेतुके प्रश्न को सुन के फंडा श्री मुस्कुराये, अबे गधे, देखत नईया हमाये पास एक से एक मोटे बकरे अपनी घीची कटावे के लाने घूमत रत हैं। बस हमें जेब की औकात के हिसाब से भयंकर अतिथि, लट्ठमार अतिथि, टांग खेंचू अतिथि, जूता खाऊ अतिथि, जैसे तमगों से सम्मानित करने हैं। अपने पंकज कोंचवी ने का खूब कई-जो इस धरती के कलंक है, उनका द्वार द्वार अभिनंदन।

खैर जैसो भी हो, निराश कवि मंच को तमगा भिक्षार्थी समारोह बिना संसदीय भाषा के विघ्नपूर्वक सम्पन्न हुआ। ऊको समापन भाषण पढ़त भये आयोजन के सुपर-डुपर अध्यक्ष ने हिन्दी के सुखद भविष्य की परिकल्पना कछू जा तरा से प्रस्तुत करी- यू नो हिन्दी ऑफीसियल लेंग्बेज है। सैड न्यूज ये है कि हमारी हिंदी भाषा का तेजी से क्रियोलाइजेशन हो रहा है। दूसरी भाषा के शब्द हमारी भाषा को करप्ट कर रहे हैं। अंडरस्टैण्ड? हमें इस सिचुएशन को बोल्डली फेस करना है। तभी हम हिंदी लेंग्बेज को सेव कर पाएंगे। थैंक्यू। जय हिन्दी।

-प्रताप नगर कोंच

दो गजलें

-बिहारी दुबे

(1)

लै गओ, लै गओ, भैया लै गओ,
झपटो बाज, चिरैया लै गओ,
कैसी रुत आयी अबके सावन,
अंधड़ आओ मड़ैया ले गओ,
बस्ती-बस्ती कारिख फिर गई,
बादर आओ जुदैया लै गओ,
धार हठीली, नदिया गहरी,
मोरो बेटा फूटी नैया लै गओ।
ऐसौ पूत भओ कलजुग में
मैया छोड़ दुलैया लै गओ।
कैसो जुलम करो ई सूरज ने,
चंदा लै गओ तरैंया लै गओ,
खूबई हटकी, खूबई रोकी, धरकी,
पाई पाई ऐंच पिवैया लै गओ,
कितनौ विकट चुखरवा हो गऔ,
बिल में खेंच बिलैया ले गऔ
ऐसो दुष्ट बरेदी निकरो,
बछवा हाँको, गैया लै गओ,
सारी अकड़ धारी रै गई,
मुस्कें बाँध सिपैया लै गओ,
बोलो अब कीकी सैं बचिए,
चुटिया काट सगौ भैया लै गओ,

(2)

जा आसन फिर वा आसन हो गए,
भैया कैसे-कैसे योगासन हो गए,
थर-थर कांपै तन-मन ई ठर्रा में,
हम तो जैसे इंद्रासन हो गए,
जबसें जीते, दर्सन हों तरसे हम,
भैयाजी सरकारी रासन हो गए,
चले आम सें इमली लौ पौंचे, उनके,
बतकाए करत नेताजी के भाषण हो गए,
ईसें दिल्लगी ऊसें मस्करी,
भैया तुम तो निपट खबासन हो गए,
पीकें आऔ फिर ऐसी गदर मचायी,
तितर-बितर घर के बासन हो गए।
कुर्सी पै बैठे तौ आगो-पाछौ भूल गए,
मोरी मैया वे तौ अंग्रेजी शासन हो गए,
गली-गली में चीरहरण को नाटक,
देखौ कित्ते-कित्ते दुसासन हो गए,

मेनका टाकीज के पास,
बेनीसागर पन्ना, पिन-४८८००१

बलवीर की बहादुरी

-हरगोविन्द तिवारी

भौत समय पैल की बात है। रामपुर गांव में एक लंबरदार हते। उनकौ नाव हतो बलवीर लंबरदार। वे भौतऊ तेज, चतुर, बलशाली अर है तो भौतऊ प्रभावशाली मानष हते। असफेर भर में उनकौ खूब प्रभाव हतो। असफेर के सबई जनें उनकी खूब इज्जत करत ते अर दहशत मानत ते। असफेर भर में उनकी इतनी दहशत रात ती कै कौनऊं चोर-उचक्का अर रंड़्या-बदमाश तौ उनके सामूं आबे की हिम्मत नैं कर सकते तो। कायेकै बे चोर-उचक्का अर रंड़्या-बदमाशों खौं ताड़कैं तुरतई धर-धबोचत ते। सो ऐंसई एक बेर का भव कै एक दिना दिन डूबें उनकी बखरी के सामूं लगे एक खिन्नी के पेड़े के नैचें बने एक चौंतरा पै खन्नू, मन्नू, रन्नू अर छन्नू नाव के चार आदमी आकैं बैठ गये। अर बैठतनई बे अपनी-अपनी मूंड़न सें सुवापी छोड़ कैं खुजाउत भये आपुस में कछू बतयान लगे। ऐंसें बे चारई जनें उतै ऊ चौंतरा पै बैठकैं बतयात भये आपुस में कछू खुसुर-पुसुर कर रये ते। सो ओई बेरां रामपुर के लंबरदार बलवीर ने अपनी बखरिअई के बायरें बनें चौंतरा पै बैठें-बैठें उन चारऊ जनों खौं खुसुर-पुसुर करत भये देख लव सो उनें खुसुर-पुसुर करत भये देख कैं लंबरदार उनैं ताड़बे की कछू तरकीब घोकन लगे। इत्ते में कछू रात-सी हौन लगी तो कछू इंदयारौ-सौ हो गव। सो रात के इंदयारे में कोऊ खौं कछू दिखाई नैं रव तो, काये कै रात सोऊ इंदयारिअई हती। सो रात के इंदयारे में लंबरदार अपनी बखरी के चौंतरा पैं सें उठकैं मसकां-मसकां दबे-पांव चलकैं तुरतऊं खिन्नी के चौंतरा लौं जा पौचे। अर है सो बे उतई एक जांगां नैचें दुबक कैं बैठत भये उन चारई जनों की बातें सुनन लगे।

उन चारई जनों में खुसुर-पुसुर तौ चलई रई ती सो खुसुर-पुसुर करत भये खन्नू नें अपने संग बारन सें कई कै सबकी राय होये तौ जौन जा सामूं एक बखरी दिखा रई है ऐई में घुसकैं कछू देखो जाय। काये कै गांव भर में मोये तौ जाई बखरी सबसें नौंनीं अर मालदार दिखा रई है। ईसें हो सकत है कै ई बखरी में भौत कछू माल-पानी मिल है। ऐंसी कात भये खन्नू नें अपनौं एक हांत उठाकैं बलवीर लंबरदार की बखरी ताऊं इशारो-सौ करत भये अपने संग बारन सें फिरकऊं कई कै मोये तो ऐसें लगत है कै जा सामूं एक बखरी दिखा रई है ऐई में घुसकैं कछू देखो जाय। काये कै गांव भर में मोये तौ जाई बखरी सबसें नौंनीं अर मालदार दिखा रई है। ईसें हो सकत है कै ई बखरी में भौत कछू माल-पानी मिल है। ऐंसी कात भये खन्नू नें अपनौं एक हांत उठाकैं बलवीर लंबरदार की बखरी ताऊं इशारौ-सौ करत भये अपने संग बारन सें फिरकऊं कई कै मोये तो ऐसें लगत है कै जा सामूं बारी बखरी कौनऊं लंबरदार की होये। सो ऊके संग बारन नें अपनी-अपनी मूड़ें मटका-मटका कैं हामीं भरत भये ऊसें कई कै हव सांसऊं बखरी तौ कौनऊं लंबरदारई की आय। सो उनन की जे बातें जैंसई कैं लंबरदार बलवीर नें सुनी बैंसई कैं बे तुरतऊं सें उठे अर मसकां-मसकां दबे पांच चलकैं अपनी बखरी में जा पौचे। अर है सो बखरी में जाकैं उननें का करो कै अपनी बखरी के सब जांगां के दोरे अर खिड़कियन खौं बंद कर दव। अर है सो सब जांगां के खिड़की-दोरे बंद करकैं बे फिर अपनी बखरी की एक अटारी पै जा पौचे। अर अटारी पै जाकैं उननें फिर का करो कै अपनी अटारी की एक खिड़की खोल दई। ऐसें लंबरदार हते सो बे अपनी अटारी की एक खिड़की खोल कैं अपने एक कंदा पै तुबक अर दूसरे कंदा पै एक जबर जेवरा टांग कैं एक मियांरी पै जा बैठे। अर है सो उतई चिमानें बैठे-बैठे उन चारई चोर-उचक्का अर रंड़्या-बदमाशों के आबे की बाट में ऊ खिडकिअई ताऊं टक-टकी लगौ कैं तकत भये उन चारई जनन खौं इकट्ठौ पकरबे की कछू तरकीब घोकन लगे।

फिर का भव कै जैंसई कैं आधी-सी रात बीती सो बे चारऊ जनें ऊ खिन्नी के चौंतरा पै सें उठे अर हे सो लंबरदार की बाखरी लौं जा पौचे। अर उतै पौंच के जैंसई कैं उनन की नजरें लंबरदार की अटारी की ऊ खुली खिड़की ताऊं परीं सो ऊ खुली खिड़की खौं देख कैं उनन कीं बाछें खिल गईं। अर बे भौतऊ प्रसन्न होकैं लंबरदार की अटारी की ऊ खुली खिड़की में हुन घुसकैं भड़याई करबे कौ उपाव करन लगे। ऐसें भंड़्याई करबे कौ उपाव करत भये उनन नें का करो कै बे सब के सब ऊ खिड़की के नैचें ठाड़े होकैं एक के ऊपर एक चड़न लगे। ऐसें बे एक ऊपर एक चड़त भये खन्नू के ऊपर मन्नू, मन्नू के ऊपर रन्नू अर रन्नू के ऊपर छन्नू चड़त भये बे औरें एक के ऊपर एक चड़ गये। ऐसें एक के ऊपर एक चड़कैं छन्नू हतो सो बौ तौ अटारी की ऊ खुली खिड़की के बिलकुल लिंगई जा पौंचो। अब का है कै जबै जादां ऊँचे घर-मकान अर बखरी-बाखर नैं होबे करे। ऊ समय पै जादां सें जादां इत्तई ऊँचे घर-मकान अर बखरी-बाखर होबू करे कै चार जनें एक के ऊपर एक चड़कैं बड़ी असानी सैं कौनऊं घर-मकान अर बखरी-बाखर की अटारी के दोरे-खिड़की लौं जा पैंचबू करे। सो ऐंसई ऊ छन्नू हतो सो बौ तौ एक के ऊपर एक चड़कैं लंबरदार की अटारी की ऊ खुली खिडकी लौ जा पौंचो। ऐसें फिर छनूू नैं का करो कै ऊ तौ ऊ खुली खिड़की में हुन झट्टई सें घुसत भव लंबरदार की अटारी के भीतर जा पौंचो। अर है सो फिर अटारी में ठाड़ें होकैं ऊनें का करो कै झट्टई सें अपनी सुवापी कौ एक छोर अपने हांतन में पकरो अर दूसरो छोर खिड़की में हुन नीचें लटका दव। सो उनै पकरकैं ऊके सहारें हौलें-हौलें चड़त भव अर खिड़की में हुन घुसत ऊकौ दूसरौ संगी रन्नूअई अटारी के भीतर जा पौंचो। ऐसें अटारी में अब जे दो जनें जा पौचें। अर फिर जे दोई जनें अपने बाकी के संग बारन खौं अटारी के भीतर ल्याबे कौ उपाव करन लगे। अर है सो उपाव करकैं जौन तरां जे दोई जनें अटारी के भीतर जा पौचे ओई तरां उनके बाकी के संगी मन्नू अर खन्नुअई अटारी के भीतर जा पौचे।

ऐसें एक-एक करकैं छन्नू, रन्नू, मन्नू अर खन्नू जे चारई जनें ऊ खिड़की में हुन घुसत भये लंबरदार की अटारी के भीतर जा पौचे। अर है सो बे उतई अटारी में ओई मियांरिअई के नैचें एक जांगां लिंगई-लिगां अर आमूं-सामूं ठाड़े होकें लंबरदार की बखरी में सें सोने-चाँदी के जेवरात, पइसा-डब्बल, टका-कल्दार, मोरें-मूंगा अर पेटी-संदूक में धरो धन-डेरा चुराबे के लानें ठिया ढूंड़बे कौ गुनतारौ करन लगे। ऐसें बे चारई जनें उतै धन-डेरा चुराबे के लानें ठिया ढूंड़बे कौ गुनतारौ करत ऊ मियांरी के नैचें ठाड़ेई हते कै इत्तई में ऊ मियांरी

पै बैठे लंबरदार बलवीर नें का करो कै तुरतऊं अपने कंदा सें जबर जेवरा उतारकैं ऊमें एक बड़ी-सी सरक-पूंद बनाई अर है सो फिर उननें उन चारऊ जनों खौं ऊ सरक-पूंद के घेरा में लैकें जेवरा खौं खूब जोरसें झटकत भये उनन खौं ऊ सरक-पूंद में फँसे लव। सो उन चारऊ जनों की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई अर है सो उनन के नैचें हो हवा खिसकन लगी। ऐसें लंबरदार के जबर जेवरा की सरक-पूंद में फसें-फसें सिट-पिटात भये बे चारऊ जनें अपने-अपने प्रान बचाबे के लानैं इतै-उतै भगबे खां गड्ड-बड्ड भये कै जबई कैं लंबरदार कंदा सें तुबक उतार कैं एक हांत में तुबक लयें अर दूसरे हांत में जबर जेबरा की पकड़ बनायें तुरतई ऊ मियांरी सें नैचें कूंद परे। अर है सो फिर तुरतऊं उननें उन चारऊ जनों पै अपनी तुबक तान दई। अर है सो उननें फिर अपनी तुबक की जकड़ अर जबर जेवरा की पकड़ के बल उन चारऊ चोर-उचक्का अर रंड़्या-बदमाशों के हांत-पांव उनई की सुवा पियन सें बांद कैं उनैं जेवरा के बल उतई ओई मियांरी सें उल्टौ लटका दव। अर है सो फिर तुरतऊं उननें अपने कारंदा के मारपतन ई मामले की खबर राजा साब लौं पौंचा दई। सो ई मामले की खबर पाकैं राजा साब नें उन चारई जनों के लानें पकरबे खौं तुरतऊं अपने भौत सारे सिपाइयनों के लानें लंबरदार के इतै रगेट दव। सो राजा साब के सिपाइयन नें तुरतऊं दौरत भये जाकैं उतै लंबरदार की मियांरी पै उल्टे लटके उन चारऊ चोर उचक्का अर रंड़्या-बदमाशौं खौं पकर कैं बंदी बना लव। अर है सो बंदी बनाकैं सिपाइयनों ने फिर उनें खचोरत भये अपने संग ल्यान कैं राजा साब के सामूं ठांड़ौ कर दव। सो राजा साब नें उनन सें पूंछतांछ करत भये उनें चोरी-भंड़याई के जुरम में अपराद् करार दै दव। अर है सो फिर उन खन्नू, मन्नू, रन्नू अर छन्नू चारई चोर-उचक्का अर रंड़्या-बदमाशौं खौं राजा साब नें अपने राजसाई कारागार में डार दव। ऐई के सगैं--सगैं राजा साब नें लंबरदार बलवीर की बहादुरी पै खुश होकैं सारी जागीर इनाम में देत भये उनें खूब सम्मानित करो। किस हती तो पूरी भई कब प्यारे जा कैंसी रई

-इंदिरा प्रियदर्शिनी वार्ड, तिवारी मुहल्ला
शाहगढ़, जिला-सागर (म.प्र.)
पिनकोड- 470339
मो. 9993370274, 9981966788

दद्दा अब फुटबाल हो गए

-डॉ. महावीर प्रसाद चंसौलिया

लड़कन की खेंचा तानी में, दद्दा अब फुटबाल हो गए।
दो बीधा दद्दा को दइ ती,
बऊ खेंच उनसे जौ कई ती।
दो रोटी की तुम्हें जरुरत,
कहो राम अब बूढ़े हो गए।। दद्दा अब ...

मइना-मइना बँटे पिता जी,
पेण्डुलम से डुलें पिता जी,
कछूँ करन के अब तुम नइयाँ,
देखत में कंकाल हो गए।। दद्दा अब .....

कभऊँ बड़ी छोटी के पालें,
सबके अपने ढंग निराले,
हर मइनन की इते-उते में,
तन मन सें हलकान हो गए।। दद्दा अब .....

बड़े सकारें चाय माँगतइ,
छिन भोजन छिन पानी लेतई,
मोड़न को हैं रहत डाँटतई,
जी के तुम जंजाल हो गए।। दद्दा अब ....

पिरभू अब कब मइना जावे,
दद्दा छोटी के घर जावें,
मइना भर कों सोपत पावें, लड़कन के संग मौज उड़ावें,
बच्चन को अब काल हो गए।। दद्दा अब ......

(दद्दा)-सोचीती रोपी बगिया में,
महके हरे आम बौराएँ,
उछल कूदकें डारी-डारी,
नाती कोयल के सुर गाएँ।।
ईसुर बे दिन कितै खो गए।। दद्दा अब ....

सोची सुख सें कटें बचे दिन,
कुनवा के संग मौज मनाएँ,
रुखो-सूखो जो कछू प्रभु दे,
नाती पंती मिलि संग खाएँ।।
दिवा सुपन 'महावीर' हो गए। दद्दा अब ...

बहुएँ टीटुई सी टिटयाएँ।
लड़का कौवा से टर्राएँ।
पानी की आवाजें सुनकें।
नाती-पोते दौर लगाएँ।।
परवर्तन के जा पतझर में।
बगिया में अब ठूँठ हो गए।।
दद्दा अब फुटबाल हो गए।।

ग्रा.पो.बंगरा जिला जालौन (उ.प्र.)
पिनकोड- 285121
फोन.नं. 05168-284318

ग्यान की बातें

-डॉ. रामनारायण शर्मा

पात्र परिचय- पं. बलराम शास्त्री, आशा-समाज सेविका, अछरू-प्रौढ़ व्यक्ति, अन्य- गंगा, दुर्गा, सतिया आदि

दृश्य- 1 पं. बलराम शास्त्री के चबूतरा पै पुरखन कौ, लगाओ नीम के पेड़ की छैंया में बैठे गांववासी। ग्यान की शिक्षा कौ पाठ पढाउत पंडित जी उनें आखर कौ महन्त समझा रये।

पं. बलराम शास्त्री- (साफ-सफेद धोती कुर्ता में) भाइयों। अक्षर ग्यान भौत जरूरी है। कायसें का नात है कैं ''आखर-आखर'' रम रये ब्रह्मा-विस्नू-महेश''। सो हमें ई कौ ग्यान जरूरी है। जो मान्ष अक्षर ग्यान नईं राखत ऊके लानें जोई कत- कारौ अक्षर भैंस बराबर''। अपढ़ आदमी मूरख मानो जात। सो अपुन सबै अक्षर ग्यान कर साक्षर बनें। तबई अछरू कक्का बोल उठे।

अछरू- महाराज! ग्यान पावे को पढ़बो अरूरी होत? ऐसेई मनई ग्यान राखत जो आखर नहीं जानत।

शास्त्री जी-कक्का कोरौ ग्यान सें काम नईं बनत। पढ़े-लिखे सें ग्यान-ध्यान धर्म की पोथीं पढ़बे से ग्यान में बढोत्तरी होत। अब देखो अखबार में छपी रोज की खबरें अक्षर-ग्यान बारे समझ के काम करत! मौसम खेती-बाड़ी रोग-दोष कौ ग्यान सें हम-अपुन काम कौ सरंजाम देत।

अछरु- बात तौ अपुन की सोरा आना सई है। बरन हम जैसे बूढे ठाड़े अब अक्षर ग्यान कैसें करें। जौ तौ लरका-बारन के काजें सई होय। जो मदरसन में जा कें लिख-पढ़ लें। इनईं की पढ़ाई बमुश्किल हम झेल रये। हम एक लरका आगे की पढ़ाई करबे बड़े शहर जा रओ। अब अपुनई बताऐं कै खाबे पीबे कौ इन्तजाम केसे करें। फिरघर को काम कैसें चले। जीसें हमाये कुटुम्ब के पीवें ब्याव कारज और दुनियादारीं सब होत- फिर जो डर रत कै कम पढ़े लरका न घर के काम के न काज के रत। बड़े-बड़न नें कई थोरौ पढ़ो तौ हर (हल) सें गयो। ज्यादा पढ़ो तौ घर सें गयो।

शास्त्री ने अछरु की बातें सुनके समझाओ-

शास्त्री जी-कक्का अब जा सोच पुरानी हो गई। पैं लें तो हम तुमें बता दें कै अक्षर ग्यान की कौनऊ उमर नईं होत। स्वराज के पैले अँगरेजन ने हमें शिक्षा कौ ग्यान नई होन दओ। उनें डर हतो कै शिक्षा पाकें हम उनकी चाल-ढाल जान लें और उनें देश से निकार बाहर करदें। सो स्कूल कम हते और बाल-बच्चे कम पढ़तते। अब पढ़ाई लिखाई के साधन सुलभ हैं और लरका-लड़कीं सब पढ़-लिख कैं घर-समाज-गाँव व देश कौ नाँव ऊँचौं कर रये। पढ़े-लिखे लरका-बारे अच्छी खेती-बारी, बंज व्यौपार कर रये। आज लड़कियाँ पढ़ लिख कें बरोबर से घर व पति कौ काम सकत। शाम की बेरा परमेश्वर चौपाल पै आशा बहिन के संग पढ़बो-लिखबो सिखाउत। कल से तुमई पढ़ाई शुरू कर देअ। कानात है कै देर आये दुरूस्त आये। सो शुभ काम में देरी कैसी।

सबजन- हाँ कक्का तुमाये संगे हमई चलें। ग्यान की जोत जगरित करें।

सब लोग ऐई संकल्प से प्रस्थान कर गये।

दृश्य-2 भगोले माते कें 'सोहर' में इकट्ठी बउएँ-बिटियाँ और बड़ी स्यानी बैठी। तबईं आशा बैन आती हैं। सब उनें बैठावें को कहतीं। तबई पुरैतन बऊ सोहर गावे की कर्तीं।

पुरैतन बाई- काय तुमन कों सोहर नई आउत। सब की सब 'बौरू' बनी बैठीं। इतनो कै कें उननें शुरू करौ- घी बिन होम न होये ललन बिन सोहरे -महाराज।

तब नई नबेली दुलहिने सब गान लगी।

कौन घरै बैदई जिमरियां
कौन घर नारियल- महाराज
कौन की धनियां गरम से
कौन घर नारियल - महाराज

ननद गाती- भौजी रानी ने जाये नंदलाल
हमें तो लला देखने- महाराज

ई पुरैतन बाई नें डपट के कई- अरे भगोले की जनीं ने तो लड़की जाई। ई में नंदलाल कैसें भये। इतनो सुन आशा बड़ी बाई- लड़का-लड़की में अब कौनउँ फर्क नइयाँ। बच्चा चाहें लरका होय या लरकी, पैदा होबे में मंगल-गान तो गाये जात।

आशा- नई बाई। अब लिखी-पढ़ी लड़कियाँ बो सब काम कर रई जो लरका कर रये।

पुरैतन बाई-हम कछु पढ़े-लिखे तो नइयां, पै जमाने से चली आ रई बात कै रये।

आशा- बाई! पढ़बे-लिखबे की कौनऊं उमर नईं होत। अपुन संझा की 'प्रौढ़' शिक्षा कार्यक्रम में सीख सकतीं।

पुरैतन बाई-तो हमउँ पढ़-लिख सकत।

आशा- हओ बाई।

पुरैतन बाई-तो कल से हम आयें।

धीरे-धीरे बुलउआं बारी चली गई। परोस की सावित्री आशा ने कई-सावित्री बैन तुम सोई 'प्रौढ़-शिक्षा कौ लाभ उठाओ!

सावित्री- अरी जिज्जी हम तो लरक-दोंद में फँसे रत। ऊपर से घर बार को साज-संवार चूल्हों-आँगन सबई देखनें। सो टैम नईं मिलत।

आशा- टैंम तो निकारनें परत। तुम संझा कें 'प्रौढ़-शिक्षा कौ में अक्षर- ग्यान सीख लो। जीसें तुम अपने बच्चों कों लिखा-पढ़ा कें समझदार बना सकतीं।

सावित्री- सो तो है जिज्जी। हमाई डुकरिया (सास) आपई के कहो

में हाथ बँटा रई। अब 'प्रौढ़ शिक्षा' कार्यक्रम चल रओ जीसे बड़े-बूढ़े पढ़वे लिखबो सीख सकत। शाम की बेरा परमेश्वर चौपाल पै आशा बहिन के संग पढ़बो-लिखबो सिखाउत। कल से तुमई पढ़ाई शुरू कर देअ। कानात है कै देर आये दुरूस्त आये। सो शुभ काम में देरी कैसी।

सबजन- हाँ कक्का तुमाये संगे हमई चलें। ग्यान की जोत जगरित करें।

सब लोग ऐई संकल्प से प्रस्थान कर गये।

दृश्य-2 भगोले माते कें 'सोहर' में इकट्ठी बउएँ-बिटियाँ और बड़ी स्यानी बैठी। तबईं आशा बैन आती हैं। सब उनें बैठावें को कहतीं। तबई पुरैतन बऊ सोहर गावे की कर्तीं।

पुरैतन बाई- काय तुमन कों सोहर नई आउत। सब की सब 'बौरू' बनी बैठीं। इतनो कै कें उननें शुरू करौ- घी बिन होम न होये ललन बिन सोहरे -महाराज।

तब नई नबेली दुलहिने सब गान लगी।

कौन घरै बैदई जिमरियां

कौन घर नारियल- महाराज

कौन की धनियां गरम से

कौन घर नारियल - महाराज

ननद गाती- भौजी रानी ने जाये नंदलाल

हमें तो लला देखने- महाराज

ई पुरैतन बाई नें डपट के कई- अरे भगोले की जनीं ने तो लड़की जाई। ई में नंदलाल कैसें भये। इतनो सुन आशा बड़ी रई जो लरका कर रये।

पुरैतन बाई-हम कछु पढ़े-लिखे तो नइयां, पै जमाने से चली आ रई बात कै रये।

आशा- बाई! पढ़बे-लिखबे की कौनऊं उमर नईं होत। अपुन संझा की 'प्रौढ़' शिक्षा कार्यक्रम में सीख सकतीं।

पुरैतन बाई-तो हमउँ पढ़-लिख सकत।

आशा- हओ बाई।

पुरैतन बाई-तो कल से हम आयें।

धीरे-धीरे बुलउआं बारी चली गई। परोस की सावित्री आशा ने कई- सावित्री बैन तुम सोई 'प्रौढ़-शिक्षा कौ लाभ उठाओ!

सावित्री- अरी जिज्जी हम तो लरक-दोंद में फँसे रत। ऊपर से घर बार को साज-संवार चूल्हों-आँगन सबई देखनें। सो टैम नईं मिलत।

आशा- टैंम तो निकारनें परत। तुम संझा कें 'प्रौढ़-शिक्षा कौ में

अक्षर- ग्यान सीख लो। जीसें तुम अपने बच्चों कों लिखा-पढ़ा कें समझदार बना सकतीं।

सावित्री- सो तो है जिज्जी। हमाई डुकरिया (सास) आपई के कहो रई और राम-राम लिखन लगी। प्रधान की बउयें सोई अक्षर ग्यान सीख गई। सबसें चलबे की कै रईती।

। से केन्द्र में जा रई और राम-राम लिखन लगी। प्रधान की बउयें सोई अक्षर ग्यान सीख गई। सबसें चलबे की कै रईती।

आशा- तो तुमने का सोचो?

सावित्री- अब सोचने का है। कल से केन्द्र पै पौंच जैहों। आशा उसकी बात सुन खुश भई और 'प्रौढ़ शिक्षा' केन्द्र पै

डॉ. हरि की चौकड़ियाँ

-डॉ. हरिकृष्ण हरि

औठन लगी धनां कें लाली, को है जाकौ माली।
माथें बैदा चंदा सौ है, जूड़ा की लट काली।
झुमकी कांनन ऐसें लगतई, अभइ सुनारन ढाली।
हरिकृष्ण सज कें काँ जा रई, अबै उमर है बाली।।1।।

हम तौ कौरन कौरन झींकें, आ गए पउवा पीकें
घर में चून मांड़वे नइयां, जाउ मांगबे कींकें।
काम दंद की बात नकरतई, जा बैठत जिज्जी कें।।2।।

रखियों मात पिता खौ नौने, उरन कभऊ न हौंने।
जे पुरखा हैं देवन जैसे, चरन उनइ के धौंने।
घर में सदा उजेरो रउतइ, पूछत रहियों जौंने।
हरिकृष्ण जब तक साया हैं, नींद चैन की सौंने।।3।।

ऐसों कैसों जीवन जी रए, विषकी रोजई पी रए।
सद नइ पा रए गिर गिर पर रए, कोउ उन्है ना छी रए।
पर गइ लत रोजइ पोबे की, चीजें घर गिरमी रए।

बिटिया जग प्यारी जन जन में, भेद न रखियों मन में।
बेटा बिटिया दोऊ एक से, नहीं तौलियों धन में।
दोऊ कुल खौ तार देत हैं, अपना अपने पन में।
हरिकृष्ण प्यारी बिटिया को, मानिओ एक रतन में।।5।।

तन के अंग न कामै आँहै, आँखै नहीं चिताँ हैं।
जोर जोर कें जौन धरौ तौ, बौ धन नही बताँ है।
मौड़ी मौड़ा कहै कांन में, धरौ धराऔ काँ हैं।
हरिकृष्ण तुम बोल ना पै हौ, मन की मनइ समां हैं।।6।।

जग में कोऊ काऊ कौ नइयां, साँचे राम गुसइयां।
तेरे मेरे बनत सबइ जे, लयै फिरत है कइयां।
स्वाइत के सब रिस्ते नाते, घरवारी और सइयां।
हरिकृष्ण पैलऊ सें जानत, गै लये चरन गुसइयां।।7।।

-एकता नगर, उनाव मार्ग,
दतिया (म.प्र.)

लागे न जियरा हमार

-रामस्वरूप पाण्डेय

हम अपने स्कूल से जल्दी साईकिल भाँजत चले। कायसें कै अबै वे घरै नइयाँ। हम रोटी बना खा कें, सब छोड़-छाड़ के जल्दी स्कूल खों भग लेत। उर लगौरत के कऊँ ए.डी.आई. साव (सहायक शाला निरीक्षक) न आ टपकें। कौन ठिकानौं। जाकें बर्तन भाँड़े माँजने, झाराफूँकी करने। हम भुन्सारें कछु नईं करत। सब छोड़ देत। घरै पोंचकें देखौ कै सबरौ घर झकर पकर, बर्तन मँजे धरे! पौर दुवारौ सब झरौ फुकौ डरौ। हम समज गये कै वे आ गइं कुआंई। हम दबे पाउन भीतर घुसे। वे मडा में सें कड़ी। बोलीं आ गये। हमने कई, हवो। फिर वे हँस के बोली- आज तौ तनक जल्दी सें आ गये। हमने कई-भुन्सारें तौ अकेली रोटी बनाउत सौ स्कूलै चले जात। दिन बूड़ें आकें करत सब। भुन्सारें ठंड में को उठबै। ईसें जल्दी आ गये।

बे बोलीं- हम तौ देखकें रै गये। ओ भगवान! कैसो भिन्काँय दोआरो डारें। लोक लरकन कौ काम यैसौ आ होत। हम तौ देखें रै गये।

हमने हँस के कई - औ लुगाँन कौ काम ऐसौ आ होत, हम देख क रै गये। ऊसें हमें तुमाय आवे कौ अन्दाज हो तौ तौ सब करकें जाते। अब तुम बताव, तुम मायके सें जल्दी काय भग आई! का बात है। बे बोलीं अब फिर बताँय। हम तौ झूटौ बहानौ बनाकें, जबरजस्सीं जल्दी भग आय। काय, हमाव आबौ, तुमें अच्छौ नईं लगौ। पानी मानी पीकें, हम बायरें चौतरा पैं बैठकें ठलुअन सें गप्पें ठोकन लगे।

राते व्याई करकें उनने जल्दी काम निपटाव फिर कटुरिया में कुनकुनों तेल लैकें आ गई। बन लगी-कैसौ भोड़रों मोंडरौ आंग हो गव। काय कमऊं तेल नईं लगाउत। फिर तेल लगाउन लगीं। हम समज गये कै आज कछू न कछू खास बतकायै आ करने! जा ओइकी तैयारी आ हो गई। सोचन लगे कुजानें का गाज गिरने। तेल लगाकें तनक देर में वे बोलीं एक बात तौ बताव, तुम कौन मास्टर आ हौ, सांसी बताइऔ। हमने कई- कैसे मास्टर, मास्टर तौ मास्टर होत। जैसे जगतर में हैं ऊसई हम हैं। और कैसे होत! काय, का बात हो गई। हम समज नईं पा रये। जा तुम काय सें पूंछ रई। काय मास्टर होवौ ...... होत हमनें तो सुनी कै नौकरी करे तौ मास्टरी। औ गैल चलै तौ सड़की की।

अब बे बोलीं- जा कई, उतै घरै मायके में सब जनीं पौर में बैठीं तीं। इत्ते में हमाई बड़ी जिज्जी आ गईं। बातें होन लगीं, कबकी आ गई। दो तीन दिन में आज आ दिखानीं। का पावनें आय। जिज्जी बोलीं उनैं आ है इत्तौ टैम। हम तौ अकेलेई आ गये। भौत दिनन सें बैन सें नईं मिले ते। ईसें जबरईं आ गये। एकाद दिन में जें। जादा टैम नईयाँ। सब जनीं कन लगीं- बड़ी बिन्नूं के पावने बड़े अफसर तौ आ हैं। का विन्नूं सुनी बैंक के मैनेजर हैं। मोटर चपरासी बंगला सबई कछू है। फिर चर्चा चली- हल्की बिन्नूं के पावनें कया हैं, एक जनीं कन लगीं, काय तुमें पतौ नइयाँ- मास्टर तो आ हैं। एक जनन ने पूँछी- कौन मास्टर? सों बगल में बैठी पड़ी लिखी एक जनीं बोलीं एल.डी.टी. मास्टर हैं। सबनें पूछी - हम एल.डी.टी. में नई जानत तुम तौ पड़ीं हौ, खोलकें बताव। बे बोलीं- दो तरा के मास्टर होत- यू.डी.टी. और एल.डी.टी.। यू.डी.टी. अपर डिवीजन टीचर एल.डी.टी, लोवर डिवीजन टीचर। बड़े मास्टर और हल्के मास्टर ऊँचे मास्टर औ नैंचे मास्टर। फिर सबनें पूछी- कैसे ऊँचे कैसें नैंचे- वे बोलीं- जो बड़े स्कूलन में पड़ाउत, हैड मास्टर होत वे ऊँचे मास्टर और जो प्राइमरी में क कउआ कौ, ग गदा कौ पड़ात रह वें नैंचे मास्टर! फिर पूछी - तौ हल्की बिन्नूं के पाँवनें कौन मास्अर आ हैं। उनने कई प्राइमरी के, हल्के मास्टर। जा सुनकें हमाव मौं फक्क रै गव। हमें भाई बुरव लगौ। फिर सब जनीं कन लगीं। चलौ नौकरी तौ है। मास्टरी कौन बुरई। घर के घरै अच्छे हैं। गुजर बसर तौ चलतई जात। अपनी खेती पाती, ढोर बछेउ देख लेत। अच्छे हैं। चलौ, दोई बैनें मजे में हैं। मास्टरी कौन बुरई आ होत। कौनऊं भई। सबरौ बतकारौ सुनकें, हमें आग लग गई। सांसी कयें-हमें रात भर नींद नईं आई। फिर हमाव ऐसौ मन उचटौ कै कबै चले जाय। हमाई बैन ने, बड़ी जिज्जी नें हमे धोती साड़ी और सब सिंगार कौ सामान पाउडर वाउडर सब कछू दव, पै हमें कछू अच्छौ नई लगौ। एकई बात सोचत रये- कै सबजनीं का सोचतीं हुइयें ई सें आ पूछी, कै तुम तौ खुद बिलात पड़े। जित्ते हमाय जीजा ..... पड़े उत्ते इतौ तुम पड़े फिर ऐसै मास्टर काय बनें।

अरे मास्टर बनें तौ हैडमास्टर बनते, हल्के मास्टर काय बनें। हम चिंता में पर गये- अब हपै कैसें समझाँय। लुगान खों जौन बात भीतर बैठ जात,-बा फिर कैसऊं नईं निकरत। हमनें कई, मास्टर तौ एकइ आ हौत, कौनउं अंतर नइयाँ। तनखा सबखों बराबरइ मिलत। बड़न खों तनक जादा मिलत, बस। बे कन लगीं तनखा की बात नईं कै रये। हम तौ हल्के बड़े की बात आ कै रये। तनखा गई होरी में। पै इज्जत तौ होत। तुमाव जौ बछेड चराबौ हमें अच्छौ नईं लगौ। हम तो ज्यों की त्यों कै रय तब हमने समझाव- देखौ कछू दिनन में लिस्ट कड़वे बाई है। हम खुद बड़े मास्टर बन जें। हमाय संग के सब बन गये। हमईं रै गये। कायकै हम न हरजन हैं न आदवासी! सवण्र हैं।

हमनें सब कछू कई। तरा तरा सें समझाव, पै वे न मानी। बोलीं हमें तौ कछू ऐसौ बताव के तुम बड़े मास्टर बन जाव। कब तौ हम सोरा सुम्मवार कर लयें, संतोषी कौ शुक्रवार कर लयें, हनुमान जी को मंगलवार तयँ कै रैन की पूडी खांके .... कर लयें सूरज कौ ऐंतवार कर लयें। जो बताव सोउ करकें। हमका करें। हमने छाती सों लगा कें कई- तोई सों, हम झूटी नईं कैरये, कछू दिनन में हम बड़े मास्टर बने जात। तुम अकबकाव न।

हमें पतौ नइयाँ वे कौन कौन उपास करन लगीं। उनकौ मौ लटकौ सो लटकौ। एसौ धक्का सौ लगौ। पै हम का करें।

छः सात मइना हो गये। घरै डाकिया आव। एक सरकारी कागज दै गव। वे अकबका गईं। ओ भगवान का आफत आ गईं। कछू टंटौ तौ नोईं हो गव। जौ सरकारी कागज काय कौ आय। कागज लैकें, बगल में दुकान पै लै गईं। भइया पड़ियें, कायकौ कागज आय। वो बोली सरकारी कागज आय, हम नईं खोलत। बेई खोलैं वे मन मार के घरै आ गई। इत्ते में स्कूल की छुट्टी हो गई सो एक माटसाव कड़े। उनने बुलाकें कई- माट साव जो कागज पड़ियौ, कायकौ आय। उनने

खोलकें पडौ। फिर मुस्क्यान लगे। कन लगे पैलें चाय पियाव, कछु खुववाव तब बताँय। उननें कई- अब्बै खुआउत बतावतौ, ऐसौ का लिखौ कछुतौ कओ। वे बोली - भाई साव, बड़े मास्टर बन गये। यू.डी.टी. हो गये, अब वे हाई स्कूल में पड़ांय। कुण्डेसुर कौ हाई स्कूल कौ औडर हो गव। बी.ए.बी.एड् कौ लाभ मिल गव। तीन दिन में ज्वायन करनें। कागज देर सें मिलौ। सोमवार खों, कै मंगल खों ज्वायन कर लेवैं। दौर कें वे हलुवा औ चाय बना लियांईं। दिन बूडें हम स्कूल से आए। वे लहरया लहरया कें गा रईं तीं - तेरे बिन साजन, लागे न जियरा हमार। वे आकं लिपड़ गईं। आज इतने दिनन में हमें उनकौ चेहरा खिलौ मिलौ। हमनें कई आज तौ भौत खुश हौ, का बात हो गई। उनने तुरतईं आकें आडर बताव। हमनें पढ़ पढ़ कें सुनाव। हमनें कई, सोम्मआर खों चलें जैं। बे बोली- काल तौ हमें सत्तनारान बचावनें, फिर सोमवार खों जगदम्मा पूजकें कुंआँईं जिमावनें। मंगल खों चले जइयौ। हमें कई ठीक है। उनने सत्तनारान की कथा बचा लई। बामन जिंमा दये। फिर सुम्मवार खों गा बजाकें जगदम्मा पूजीं। पैड़ भर के गईं। कुँवाई जिमाईं। लौटी जोरे बुलउआ कराव, गावौ बजावौ भव। मंगल खों हम जल्दी उठे। सपर खोर कें पूजा करी। साड़े सात बजे की मोटर परकनेंती। झोला लगाव। उनने अदरैनी लुचईं बना के कलेवा धर दव। फिर आकें बोलीं- खुन्सचाइयौ न तौ एक बात कयें। हमने कई कव। एसें काय कै रईं। वे बोलीं हमने तुमाय बिना पूछे, जब तुम सो रये ते, तब टेलर खों बुलाकें ऊसें पइसा दै कैं कई कै तें अर्जेन्ट में खुदई बाजार से सफाई सूट कौ कपड़ा लै कैं सींकें दै जा। हम तोय अर्जेन्ट की सिलाई दें। सो वौ सींके, लोहा करकें दै गव। जौ सफारी सूट पैर लो। पजामा कुर्ता में जिन्दगी कड़ गई। अब तुम बड़े मास्टर बन गाये। चार जनन में उठने बैठने आय। जौ सूट पैर लो। तुमै हमाव कौल है। हमने कई- तोई सों हम पैर लै, पै इतै नईं पैरत, उतै जातन पैर लैं। गैल में धूरा चड़ जै। बे बोली- तौ पैर लियों - तुमै हमाई आँखन कौ कौल है। झोला लैं कें हम घर से कड़े कै भरी खेप मिल गई। हमनें एक कां टन्ना डारौ, ऊके पांव परे। चलौ सगुन हो गव। गैल में आदमी मिले, माटसाब कां की तैयारी हो गई। हमने सबसें कई हम यू.डी.टी. हो गये, बड़े मास्टर। गैल पर पांव पराई भईं। इत्ते में मोटर कौ होरन सुनानौ। हम भगे- चिल्लयानें रोकियो भैया, रोकियो मोटर ...... पै बा नई रूकी फूर्रर हो गई। हम देखत रै गये। अब हम पछतान लगे कै छैडी में होकें कड़ आउते तौ अच्छौ रतौ। सबने कई साड़े नौ पे दूसरी मोटर तौ है। बैठे-बैठे साड़े नो की मोटर दस बजे आई। फिर बैठे, टीकमगढ़ साड़े ग्यारा बजें पौंचे। एक बजे की मोटर से कुण्डेश्वर गये। वा सवारीं लेत लेत हरां हरां गई। डेड़ पौने दो बजे पौची। पौच के हमनें कुण्डेसुर के दर्शन करे फिर स्कूलै पाँचे। स्कूल बन्द मिलौ। हमनें पूंछी का बात है, इत्ती जल्दी स्कूल बंद काय हो गव। अबै तो तीन बजे हुइयें। चपरासी ने कई काल सें छिमाई परीक्षा है। रोल नम्बर चिपकाये। साहब पेपर कापी लैवे टीकमगढ़ चले गये। वे चले गये सो सबजनें चले गये। अब तौ काल आइयौ। अब हम अकबकानें - आज ज्वायन करबें की अंतिम तारीख हती। अब का करें। हमने चपरानी सें पूंछी काय मैया, प्रिंसपल साव कितै रत। चपरासी बोली वे तौ पुरानी टेरी टीकमगढ़ में रत। पेपर तौ काल आ गये ते। अब तौ घेरे मिलैं। हम अपनौ सौ, मौं लैकें टीकमगढ़ खों लौटे। फिर पुरानी टेरी में तलासौ जैसे तैसें उनके घर कौ पतौ चलौ। आगे शंकर जी के मंदिर नौ हेण्डपम्प हतौ सो हमनें कनेऊ करौ, पानी पीकें फिर उनकी खबर आ गई सो पजामा कुरता उतारकें झोला में धर लव औ सफारी सूट पैर लव। फिर प्रिंसपल के घरै गये। उनके बंगला के आंगे पोर्च में झूला पै एक बिटिया झूल रई ती औ, गा रई ती - तेरे विन साजना लागै न जियरा हमार हमनें ऊसैं पूछी - काय बैन कुण्ड्ेश्वर के प्रिंसपल कौ मकान जेऊ आय! बा दौर कें भीतर भगी औ कत गई, हओ जेऊ आय। तनक देर में भीतर सें प्रिंसपल साव कौ लरका आव। आउतन ऊनने दोइ हात जोरे औ बोले- आइये मैं आपकी प्रतीक्षा में ही था। आपने समय का ध्यान रखा। आइये, स्वागत है। ऐसौ कै कें वौ भीतर चलौ गव। हम सोफा पै बैठ गये। हमें तौ उनकौ बतकारौ समझ में नईं आव। ऐसौ कमरा सजौ अहा। एक लरका पानी धर गव। फिर चाय और बिस्कुट की प्लेट हमनें सोची- अरे, साहब तौ बड़े अच्छे हैं। ऐसौ ताव तौ कोउ दमाद को तक नईं लेत। हमनें चाय पीई, बिस्कुट खाय इतनें में भीतर सें साहब आ गये। हमने अपनी जेब में से ज्वायनिंग काड़ कें दई। जैसई उनने ज्वायनिंग खों खोल कें पढ़ौ। वे इकदम और बत्ती हो गये। लाल लाल आँखे काड़ के बोले। आपने अपना परिचय नहीं दिया। आप कहाँ से आये है? हमने हातजोर कें कई- साव, हमाव प्रमोशन हो गव। कुण्डेश्वर हाईस्कूल में आज ज्वायन करने हमें देर हो गई। भुन्सारे की पैली मोटर चूक गई। साव ..... प्रिन्सिपल साव बोले - यह स्कूल नहीं है, मेरा घर है, घर ! समझे। ऑफिस का काम ऑफिस में। आप जाइये। जाइये। हमने कई। साव हम स्कूल मे गये ते सो बौ बन्द मिलौ। बे बोले - हाँ, हाँ, बन्द मिला, तो आप ऊपर जाकर रिपोर्ट कीजिये, जाइये। हमनें फिर से कई- नई साव, हमाई पैली मोटर चूक गई, सो लेट आये। वे फिर बोले - हाँ हाँ आपकी मोटर मैने चुका दी। मेरी गलती थी। फिजूल बातें करते हो। हमारा दिमाक खराब न करें। आप जाये। हमनें फिर से कई साव - आज ज्वायनिंग की अंतिम तारीख है। वे फिर उखड़ के बोले - मैं ये सब बातें नहीं सुनना चाहता। हद हो गई। कितना धोखा देते हैं। आ गये अप टू डेट बनकर। निकलो ?

हम झकमार कें, अपनौ सौ मों लैकें बायरें कड़ आय। भाई बुरव लगौ। हमें अपनी गलती समज में नई आई। पैलें तौ हात जौरे। भाई अच्छे बोले। चाय पियाई। पतौ नईं फ़िर का हो गव। फिर तौ कुत्ता सो ललकारौ। हमाई एकऊ नई सुनीं। ऊसई उनसें गिलइयन डण्डौतें करीं। होरी में यू.डी.टी. होवौ। हम तौ एल.डी.टी. अच्छे हतै। अब घेरे मोरी सी छुराकें पोंचने। अब गाँव में सबसे का कें, उन देवी जी से का कें। कैसे मौ दिखाँय। एई चिंता में मुड़ी नैचायँ चले आ रये ते। इत्तै में एक जने हमाई बगल सें कड़ गये। तनक दूर जाकें लौटे औ बोले एजी सुनिये। हमने जानी और कोऊ खों बुला रय हुइयें, हमसें का काम। वे फिर बोले - मैं आपको बुला रहा हूँ, सुनिये। हम ठाडें हो गये। इत्ते में बेलियाँ आकें बोले- क्या आपका नाम जुगल किशोर है ? जुगल मैंने कहा - हाँ, आप कैसे जानत ? फिर बे बोले- क्या आपने हमें पहचाना नहीं। मैं हूँ तुम्हारा दोस्त सहपाठी, लल्ला यानी बृजभूषण। क्या याद नहीं है, भूल गये हमाई झक्की सी खुल गई। दौर कें लिपड़ गय, बारे लल्ला बारे भाई खूब मिले। भइया हमनें ध्यान नईं दव। हम नईं चीन पाय। हम कैसें चीनते, तुम तौ इकारे,

सूकड़ पापड़ दूबरे हते। अब तौ इतनें सलसला गये। अफसरई अफ़सर लग रय। बे बोले- लग नईं रये हैं। अब हम भोपाल में ज्वायन डायरेक्टर हैं। आपका क्या हाल है। हमनें कई- भैय्या हम तौ मास्टर हैं।

बे बोले- मास्टर, क्या बुरे हो, भारत के भाग्य विधाता। बचपन से आज मिले हो। भगवान ने अच्छे मौके पर मिलाया। याद हे, हमारी आपकी दांत काटी रोटी थी। न आप बिना हम रह सकते थे न हम बिना आप। एक साथ खाते, पढ़ते, सोते। एक बात बताओ - आप तो पढ़ने में होशयार थें। फिर आगे क्यों नहीं बड़े। आपको तो कलेक्टर बनना चाहिए था। खैर, मास्टरी अच्छी है। और क्या हाल हैं। आप तो कुछ बोल ही नहीं रहे हो। क्या हमसे नाराज हो।

हमनें अपने मित्र लछ्मा खें अकबार में भर लव, आंखन में अँसुवा आ गये। फिर हमनें कई प्यारे लल्ला हम कायसे नाराज हुइयें। हमें तौ बड़ी सुख मिलौ। भौत अच्छे मिले। इतै कैसे आय। बृजभूषण जी बोले- मैं यहाँ एक बच्ची देखने आया हूँ। एक प्रिन्सिपल साहब मेरे पास कई बार गये। उन्होंने बच्ची देखने का बहुत आग्रह किया। इसलिये आया हूँ। प्यारे मित्र, सच्ची बात तौ यह है कि हमने बड़े बेटे सुधीर की शादी इंदौर में की। बड़ी बहू कुछ भी करना नहीं जानती। दिन भर पड़ी रहती है। पत्र-पत्रिकायें पढ़ती है शायद चाय बनाना भी नहीं आता। इसलिये हमने सोचा कि दूसरे लड़के प्रवीण की शादी किसी देहात में करेगें। कम से कम हम दोनों लड़के प्रवीण को सीदी किसी देहात में करेगें। कम से कम हम दोनों को बहु का सुख तो मिले। बुढ़ापे में सहारा मिले। फिर मास्अर की लड़की अच्छी होती है। मेरी राय में तीन जगह शादी नहीं करना चाहिये। मैने कहा कौन-कौन। बो बोले- पुलिस वाले, नेताओ ओर अधिक धनी। इसलिये चला आया मास्टर की लड़की है, पढ़ी लिखी भी है। घर का सब काम करने में कुशल होगी। फिर आपका क्या ख्याल है? हमने कई - हम आपके विचार से सहमत है। फिर बे बोले- आज भगवान ने बड़ी कृपा की आप मिल गये।

अब हमारी जुम्मेदारी खतम। आपको ही निर्णय लेकर स्वीकृति देना है। चलिये मेरे साथ। आपका कोई बहाना नहीं चलेगा। मेरा आप पर पूरा अधिकार है मैं अपने मित्र की प्रेम भरी, बातें सुनकें उनके संगै लौट परौ। उन्होंने कहा- शायद यही है प्राचार्य का घर। लोगों ने यही बताया है। आप आगे चलें। वे रास्ते में खड़े होकर चारों ओर देखने लगे। मैने किवार खोले। हमें देखकें वे खिन्सया के बोले- अरे बड़े बेशर्म हैं आप फिर आ गये। इतने में ही उनका ध्यान हमारे पीछे खड़े हुये हमारे मित्र पर गया। वे दौड़ के उनके पाव परवे खों झपटे। उनने हात पकर लये। बड़े आदर से उनै भीतर लुवा गये। हमाय मित्र ने कई - चलिये साव। उनके संगै हम जाकें उनके बगल में बैठ गये। हमाय मित्र ने प्रिन्सिपल साव खों हमाव परचो दव। वे बोले- हम दोनों सहपाठी है, बाल सखा आज भगवान की कृपा से 20 साल बाद मिले हैं। संयोग की बात है। इसलिये मैं इनको पकड़कर लाया हूँ। अब मेरी जिम्मेदारी खतम हो गई है। बस इन्हीं को सब करना है। मेरे मित्र हैं। जौ सुनकें प्राचार्य जी ने जो स्वागत सामान मेरे मित्र के सामने रखो तौ सरका कें हमाय सामने रख दव। पाछे से दूसरी प्लेटें उनके सामने दई। फिर हात जोर कें बोले बड़ी कृपा की। आपकी प्रतीक्षा में ही मैं विद्यालय से जल्दी चला आया था। आज हमसे बहुत बड़ी गलती हो गई। मैने आपके मित्र के साथ अनजाने में दुर्व्यहार किया। मैं आप दोनों से हाथ जोड़कर क्षमा प्रार्थना करता हूँ। आप क्षमा करें। मित्र ने और हमने कहा- कोई बात नहीं, कभी कभी हो जाता है। चाय पानी, नास्ता के बाद भीतर से बेटी तस्तरी में पान लेकर आई। पान खाते हुये, हमने कहा- बैठो बेटी बैठो। क्या नाम है आपका ? कन्या ने कहा - मेरा नाम सुनीता है। प्रिसिन्सपल साहब ने कहा - यही है आपकी बेटी। बैसे इसने इन्टर पास किया है। प्राईमरी से इन्टरमीडियट तक थ्रो आउट फस्ट क्लास आती रही। यह सब चित्र सिलाई बुनाई इसी के हाथ की है। नास्ता भोजन तो ऐसा बनाती है कि क्या कहूँ। ये देखिये ये सब सीलें, प्रमाण-पत्र इसी के हैं। मैं इसी का बुना स्वेटर पहने हूँ। कार्यक्रमों में सदा फस्ट आती रही।

अपने मित्र के इशारे से मैंने कन्या से पूछा - सुनीता क्या तुम मानती हो कि कबीर दास जी निर्गुण विचार धारा के संत थे। सुनीता ने नम्रता से कहा- कवीर दास जी को निर्गुण विचार धारा के संतो में गिना जाता है, पर मैं सहमत नहीं हूँ। क्योंकि वह श्री रामानन्दाचार्य के शिष्य थे, जो सगुण भक्त के संत थे। यदि कबीर उनके शिष्य हैं तो उनकी विचार धारा गुरू की विचार धारा से अलग कैसे हो सकती है। हाँ उन्होंने मूर्ति पूजा के नाम पर पाखण्ड का विरोध अवश्य किया है, जो उचित था।

वे समाज सुधारवादी विचार धारा के भक्त थे। निर्गुणवादी नहीं। सुनीता के सार गर्भित मौलिक चिंतन के उत्तरं को सुनकर हमारे मित्र संतुष्ट हो गये। उन्होंने जेब में से डिब्बी निकाली और उसमें से अंगूठी निकालकर हमें पहनाने को दी। हमने कहा- आप ही पहनायें। उन्होंने कहा- हाँ मैं भी यह पहनाऊंगा। आप अंगूठी पहनायें। उन्होंने दूसरी डिब्बी निकाली। उसमें से स्वर्ण जंजीर को निकालकर पहना दिया। प्रिन्सिपल साहब की आँखें खिल गई। उन्होंने हाथ जोड़कर प्रणाम किया। फिर मेरे मित्र बृजभूषण जी बोले- ये मेरे मित्र जुगल किशोर जी ही इस विवाह की व्यवस्था के पूरे पूरे जुम्मेदार हैं। आप सारी बाते इनसें ही पूछ कर विवाह के कार्यक्रम को निश्चित करे लें। यह जैसा कहेंगे मैं स्वीकार कर लूंगा। हममें इनमें कोई भेद नहीं है। फिर बोले - अब मैं आज ही जाना चाहता हूँ। रात को नौ बजे के करीब मेरी ट्रेन है। कल जरूरी काम है। हमें आपका संबंध स्वीकार है। प्रचार्य जी ने कहा- बिना भोजन किये कैसे जाने देंगे। पहले चलकर भोजन तो कर लें। आपकी बेटी ने ही सारी रसोई बनाई है। चलें हम दोनों मित्रों ने भोजन किया। प्राचार्य जी ने हम दोनों को ही तिलक किया। मेरे मना करने पर भी नहीं माने। चरण स्पर्ष किया।

प्राचार्य के साथ मैं भी उन्हें ललितपुर स्टेशन तक एम्बेसडर से बिठाने गया। रास्ते भर प्रेम भरा वार्तालाप होता रहा। लौटकर आने पर प्राचार्य जी ने पुन एक बार मुझसे क्षमा याचना की। उन्होंने कहा - आप पिछले कल की तारीख में ज्वायनिंग लिख कर दे। कल गुरू नानक जयंती है। आप एक दो दिन बाद आ जाये। कोई बात नहीं। मैं सब कर लूँगा। दूसरे दिन सुबह मैनें नहाया धोया, नास्ता किया। इसके बाद मोटर से घर पहुँच गया। मैंने झोले को भारी देखों अरे, ई में काआ धरौ। खोल कें देखौ तौ मिठाई कौ डिब्बा धरौ तो। घरै पौंच के हम हरां हरां भीतर घुसे। पौर में से डेवड़ी में बिदी से देखौ। हमाव व्याव कौ चित्र टंगौ तो, वे ओइयै देखकें देखकें गा रईं तीं "तेरे बिन साजना लागै न जियरा हमार" हमनें धीरे से जाकें तुक मिला दई - तेरे बिन सजनी, लागे न जियरा हमार औ मौ में जवरजस्ती एक लडुवा ठूँस दव।

-सुभाष पुरम् कॉलोनी- टीकमगढ़ (म.प्र.)

बुन्देली नाटक-

पतीबिरता

-गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त

चंदा- ऐंसे ऐंसें एक हतो गंगू नांव कौ बरेदी। ऊ गांव भरे की गैयां, भैसियां उर ढोर बछेरूसबई चराउत्तो। जब ऊ हल्को सौ हतो, तबई ओकौ बियाव संतो के संगे ऐंगरेंई के गांव में हो गओ तो। बरेदी के संगी साती अपनी अपनी ससरारन की चरचा जब तब करें उन घरबारियन की उम्दा बातें बतायें। तौ गंगू सोचै-

गंगू- हमाव तौ सोई ब्याव भओ है, मनों दारी ससरार कौ पतौ अतौ कछू नैयां, कै कौन गांव खेरे में आय है। उर नें जानत आंव के मोरी ससरार भलां है कैसी? अब मोय सोई पतो लगाउनेंई परहे।

कड़ोरी- सो भैया, एक दिना ऊनें ब्यारी करी उर फिन रात कें अपनी मताई से बूजी--

गंगू- काअे बऊ, मोरी ससरार कितै आय है? सबरे संगी बतकाव करत अपनी अपनी ससरारन कौ, पै मोय तौ कछू पतौई नैयां?

छबीली- अरे बेटा तौरी ससरार तौ सोई भौतई नोंनीं है। उर बा ऐंगरई है, कऊं दूर थोरेई जानें तौय, ऐं नरवा के ऊपारई आय है। अब तौ बहू सोई बिदा लाक हो गई है।

गंगू- अच्छा, तौ का में सोई अपनी ससरार चलो जांव ? उर ल्यांव तुमाई बहू खों ? का कात तें, ऐं ?

छबीली- बेटा, ऐंसे भलौ और का हुइये, ऐं जा सौ तैनें मोरे मों की बात आय छीन लई, । अरे में तौ सोई कैबेई बारी ती।

गंगू- अरे बा, तौ फिन मैं ....

छबीली- और नई तौ का ? ऐं, अरे बहू घरै आ जैय तौ मोय सोई दो ठैयाँ तातीं तातीं रोटी दैहे। मैं उकी सार सार लगा देव करहों। तौय तौ जाओई पैये लेबे। तोरे बिरोबारी बारे तौ सबई ल्याये, एक तेंई रै गऔ।

गंगू- तौ लै आऊं मैं सोई, ऐं। उर अपनी ससरार सोई देख सुन लेंव, फिन में उन सबई जनन खों बताओं के मोरी ससरार सोई ऐंसी है। हां ?

छबीली- और नई तो का ? मैं त्यारी कर देंव, भुंसराँ चलो जइअे तें। पठौनी उर लिबौआ लैकें।

चंदा- गंगू बरेदी नें अपनी मताई सें सकारें पठौनी उर लिबौआ लअे उर उठकें चल दओ ससरार खों।

कड़ोरी- भैया चलत चलत गैल में उये एक नरवा परो। ऊ नरवा में एक गैया गिलाअे में गप कें फंस गई ती। गैया नें दूर सें तको के कौनऊं आ रव है, सो उये कछू आसा बंदी। सोची कै....

गैया- जो मनंस तना हांत लगा देय, तो मैं गिलाअे से निकर जैओं। भौत दार हो गई। मैंने तौ अपनी तागत भौत लगा लई, पै ई ख्वना सें अकेलो निकर पाबौ अब बूते के बायरें है।

कचरत भओ निकर गओ। गैया खों गुस्सा आई औनें बरेदी खों सराप दे डारी है-

गैया- लौट कें जंब तें जो नरवा पर करहै तौ तें अब बारा बरस के लानें ससरे गदा बन जैय। तोय इत्तई होंस नें रई, तैं मोय कुचर कें आय कड़ गओ। जा मोरी जाई सराप है, अब तोय।

कड़ोरी- बरेदी तो अपनी मौज में जा रओ हतो ओखों का पतौ कै का हो गव। बो अपनी ससरार पोंचों, सास नें तको कै दमाद आअे हैं सो कई...

दुरजी- चलो लल्ला भले आये। मैं सोचई रई ती कै समदन जू नें अबे लौ काअे नई पठेओ तुमें। आब बैठौ, और तौ सब राजी खुशी से है।

गंगू- हओ, का है कै में सोई अकेले जी कौ हों। बखत निकार कें आउनें परौ। बऊ नें जा पठौनी दई सो लेव अपन उर भेंटक्वार सोई कई। जे लिबौआ आयें लेव धर लेंव।

दुरजी- चलौ सबइ मैनें पा लऔ लल्ला, अपन सुक सें रऔ। पैली बेरां आअे हो, लिबाबे, सो कछू दिना तौ गोंतरीं करौ। 'मनई मन में' देखो समदन कितौ ख्याल रखत है, मोय पठौनी धर दई। भौतेई नोंने सुभाव की हैं समदन जू।

चंदा- बरेदी गंगू नें अपनी ससरार में दो तीन दिना गोंतरीं करीं। खूब खातरदारी भई। रोजई करैया छनकी। लुचई तिरकारी,पापर बरा मगौरा, दार-भात, कढ़ी, रायतौ, फुलका जित्तौ बनत कौ आय, कहाउत सो सास नें दमाद खों बना बना कें खुआव।

कड़ोरी- फिन एक दिना गंगू बरेदी ने अपनी सासे सें कई ....

गंगू- सान्जू, अब काल भुंसरां हम जाबे की सोच रअे हैं। सो बिदा कर दियौ। उर रात में जो कछू उठा धरी कन्नें होय सो कर लेव, तना सौकारूं कड़ जैंय, तौ अच्छौ रैअे। भौत दिना हो गअे गोंतरी करत करत।

दुरजी- अरे बेटा, और रै जाते दो चार दिना। मौय भौत अच्छौ लगो। तुमें देख कें तौ मोरे जी की आंखें जुड़ा गई।

गंगू- घरे देर सें पोंचहें तो मताई की फटकार सुन्नें परहे। अब हो तौ गअे इत्ते दिनां। उर उतै काम सौ सोई देखने है। ईसें तुम तौ दिन ऊगत बिदा कर दियो। अब नें रोकौ मोय, जान देव।

दुरजी- ठीक है बेटा, अच्छौ है अब तुम खबर दबर मोरी लेत रैओ में तुमें जबरजत्ती नें। हों त्यारी लगाअें देत हों।

चंदा- दूसरेई दिना गंगू बरेदी अपनी घरैनी सन्तो खों लैकें लौट रये ते। चलत चलत गैल में उनें बोई नरवा परो, जीमें गैया फंसी हती। ऊखों जात में सोई हालफूल हती। पैलऊ तौ जब ससरारे जा रव तो सो ऊकी खुशी ती उर अब लौटती बेरा में जा, के

धरबारी सन्तो नें कई...

सन्तो- अरें, जौ का कर रऐ हो तुम, ऐं। गैया खों कुचरत जा रऐ हो ? पाप लगहै। तना नेंचें तो सोई निरखत चलौ।

गंगू- ऐं! 'नेचें देखत भए' गैया, अरे रामराम, हे गऊ माता मोय छिमा करिओ। जौ तौ दारी मोसें का भूल बन गई, ऐं। गऊ माता जा तौ मोसें अनजानें में आय ऐंसो हो गओ, छिमा करिओ राम राम।

सन्तो- तना सुनों, गैया गिलाये में आय फंसी है। देखो तना हम इकी पूँछ पकर रऐ हैं, तुम सींग तरप पकर कें उठाव इयै, जीसें जा उठ कें निकर जाय। पतौ नई कित्ते दिनन की भूकी प्यासी हुइयै पनमेसरी।

चंदा- दोई जनन नें मिल कें तागत लगाई सो गैया उठकें ठांड़ी हो गई उर फिन बायरें निकर गई। गैया नें सन्तों खों आसीस दई के...

गैया- बहू तेनें मोय निकरवाओ है, सो तें सदा सुकीरऔ दूदों नहा पूतों फल।

फिन गैया सोचन लगी ......

गंगू बरेदी खों तो मैंने सराप दे दई, बा अब वापस तो हो नई सकत, मनों आदी हो जैय सो बरेदी छै साल खों गदा बनकें कें रैय, ईमें चूका नई पर सकत।

कड़ोरी- जैंसई उनोरों नें नरवा पार करो उर ढी पै चडे सो बहू नें का देखो के ऊकौ घरबारौ मानें गंगू बरेदी गदा बनत जा रऔ है। जौ देखतई बा एकदम सें कीक परी-

सन्तो- अरी री ई..... श्री मोरी बऊ ...... जौ का ..... जौ कायरी बऊ ....

चंदा- ऊकौ इत्तौ कीकबो भओ उर मांय गंगू बरेदी पूरौ गदा बन गओ। मनंसन नें सन्तो को किकयाबौ सुनों सो जौन आंजर पांजर मनंस हतो सो बै दौर परे। उर ऊके ऐंगर पोंच कें कन लगे...

काए बाई का बात है, ऐं ? तैं काअे आ किकयानी ? का भऔ ?

सन्तो नें उन्सें कछू नें कई बा चुप्पई चाप रई आई। सन्तो नें अपनों करौंजी कर लव ऊनें मनई मन सोची .....

सन्तो- 'खुदई सें' कऊं कोऊ खों अपनी बिपदा बताई उर आनें हंस दव तौ भलां अबाये सें फायदा का ? मनों पैलीं बेरां लौ मैं ससरार जा रई हों, नें कोऊ खों चीनों उर नें जानों, अरकऊं कोऊ पूछन लगो तो ओखों का जुवाब दैहों ? करमों की गत तौ देखो ?

कड़ोरी- सौ भैया, चलत चलत सन्तों नें ससरार की गेल नें पकर कें ऊनें दूसरी गैल धर लई। कछुअई दूर चली सो उयै एक गांव दिखानों,ऊ गांव के बायरें बड्डौ तला खुद रव हतो। ऊ तला भौत गिहरौ खुद गव तो, मनों पानीं नें कडो तो। तलवा खों देखन लगो। गेरऊ ऊनें निघा डारी, उर फिन राजा के ऐंगेरें पौंचे, उन्नें राजा खों चिन्ता में डूबो भओ तको, पै राजा की निघा जैंसई सादू पे परी सो कई ......

राजा- अबाई होय सादू महराज। बिराजो। क्यांय सें आय निकर परे, ऐं ?

सादू- अरे राजन, रमता जोगी, बहता पानी आय, कछू पतौ ठिकानों नईं रेत। सो अपनों सोई कौनऊ ठिया ठिकानों तौ है नईं, ज्यांय कौ मन भओ सो कड़ परे। अब देखों ने जात क्यांऊ और ते पै मुरक परे ईं कुदांई।

राजा- तौ का अपन अबै इतईं रैहौ कछू दिनन। कै क्यांऊं अन्ते आ जा रऐ हौ ?

सादू- जा तौ रओ तौ। पै मैने देखो के अपन नें इत्तौ उम्दा काम मनंसन के हित बारौ करो है। सो .....

राजा- करो तौ है सादू महराज, पै बिना पानी के तलवा सूकौ डरो है, बंडा सौ। इत्ती मैंनत की कछू फलिद्या ने भई ?

सादू- नईं, ऐसौ नैयां राजन । फलिद्या तौ हुइयै। भलाई बारी काम आय जौ तौ, पै तना ईमें पेंच है ?

राजा- कैंसो पेंच महराज ? कछू समज में नई आओ मोरी। मैंने तो सबई तरा के उपाव कर डारे। पंडतन सें पोथी पत्तरा सें दिखवा के पूजा पाट सोई करवा लई, पै अबै लौ तौ रत्ती भर फायदा नई दिखो, उर नें एक बूंद पानी की क्याऊं सें निकरत दिखानी ?

सादू- नई राजन, का है कै पानी तौ निकर सकत है। मनों तुमाये राज में कौनऊं एक पुरूस की नारी होय, मतलब के तन मन सें जौन बा एकई आदमी की होय। अपुन उयै चायं पति बिरता के लैव। काअे के ऊनें अपने जीवन में दूसरे के बारे में नें सोची होय। ऐंसी औरत जनी तलवा के ई पार सें ऊ पर लौ निकर जाय तौ तलवा में आपई झिरें फूट परहें। उर भौत पानी निकर आय।

राजा- ऐंसौ है का, तौ में जौ सोई उपाव करकें देखें लेत हों, अरे इत्ते खठकरम करे तौ जौ आर सई।

कड़ोरी- भैया राजा नें अपने राज की उर आंजर पांजर के राजन की औरतनखों बुलवाओं, उनें तला कें ईंपार से ऊपार निकरवाओ, मनों पानी नें निकरो। तौ राजा नें फिर और जौंन जैसें रे गअे होंय सो उनें जोरबे काजें डोंडी पिटवाई .....

राजा- जीके तलवा में सें निकरबे पै तलवा में पानी निकर आय तौ हम उये अपनों आदौ राज पाट दे दैहें। उर कजंत कोऊ ऐंसो आदमी हुइयै तो ओखों हम अपनी राजकुमारी कौ ब्याव कर देंय।

चंदा- भैया, तलवा पै अब तौ मेला सौ लगओ। भौत मनंस जुरे उर कुल्ल जनें ऊ तलवा में ई पार सें ऊ पार भअे। इत्ते पै सोई तलवा में पानी नें निकरो। सो

जनी नैयां जौन सांचऊं की पती बिरता होय।

कड़ोरी- फिन भौत मगजमारी करी राजा जू नें। सबई जेठे स्यानन सें राय सलाय लई। उर मनई मन सोची ...... के हम तो अपने बाप की बहोरह लयें, सों उन्नें फिन सिफाइयन से बूजी-

राजा- काओ अब अपने सा जें अब कौनऊं ऐसौ तौ नई बचो जौन ई तलवा में से नें निकरो होय ?

चंदा जा सुनतई एक सिपाई नें डारात डरात भवे राजा के ऐंगेरे जाकें कई .....

लटोरे- हजूर एक जनी मोरी समज में अबे बची है, बा अपने संगै एक गदा लुवांय है, बा नई निकरी ? अरकऊं हुकम हो जाय तौ जौ और उपाव कर लओ जाए।

राजा- ओखों अबै तक नई निकारो ? ऐं, सो जा सौ तुम औरन की गल्ती आय, ओखों अबई बुलाव। दौर कें जाव।

कड़ोरी- सिपाई सुनतई सें तुरत फुरत ऊ औरत जनी के ऐंगर जा पोंचो उन ऊनें ऊसें कई .....

लटोरे- बाई तना अपन चल कें तलवा में घुस कें ई पार सें ऊ पार निकर जाव, स्यात पानी सें तलवा भरे ?

सन्तो- भैया, मैं तो ऊंसई बिपत की मारी हों, मैं नई जांव, मोय का कन्ने, ऐं ?

लटोरे- ऐ बाई तोरे हा हा करत, पांव परत हों, चल नातर राजा कुजानें का जुलम जोतन लगे। सबई की भलाई बारौ काम आय जो तौ।

सन्तो- भैया, तें केत है तो ठीक है, पै हमाये आदमी सें बिना बूजें में तलवा में सें नें निर हों। चाय कछू हो जाय।

लटोरे- बाई तौ फिन पूँछ ले तें। तना जल्दी कर। तेंई अकेली आय रे गईं है। सबईं जनें तलवा में सें निकर गओ, पै कोऊ के निकरे सें तला में बूंद नईं कड़ी। हो सकत तौरे कड़े सें पिरभू किरपा हो जाय।

सन्तो- हओ, तौ में उन्सें पूजत हों तना ठैर जाव तुम।

लटोरे- हूँ मैं ठैरो हों, इतई आय रूको, अपन तना सौकारूं...

सन्तो- हां ..... 'गदा सें' अपन का कैत, ऐं ? तलवा में जाकें जा पर सें बा पार आय निकरनें है, निकरों के नई ? का कैत अपन ?

कड़ोरी- भैया, जैंसई सन्तो नें गदा के ऐंगरे जाकें ऊके कान में जा बात कई तौ गदा नें अपनी हांमी भरत भए मूँड़ हला दई।

चंदा- बस्स, फिन का तो। ओनें एक थारी में आरती धरी, अपने आदमी मानें गदा की पूजा करी, आरती उतारी उर ओखों आंगू करों। फिन जाकें तलवा के ए पार सें ओ पार निकरबे घुसी। सो भैया देखन बारे देखतई रै नये उर बा जैंसई आदे तलवा लो पोंची तौ .....

कड़ोरी- सांचऊं तलवा में गेरऊं सें झिरें फुट परीं उर इत्तौ जादां पानी भर गव कै उनोंरों खों निकारवें की दो दो पर गई। नांव डारी झट्टई सें उर पूरी भीर देखत के तला लबालब भर गओ।

चंदा- राजा तो भैया, फूल कें कुप्पा हो गओ। उर बे सन्तो के आंगूं हांत जोर कें कैन लगे ......

लाज राख लई। बेआ हमनें जो कछू कईं है सो बो मैं तुमें देहों।

कड़ोरी- फिन गदा की तरफ देख कें राजा नें कई ...... राजा जौ गदा संगै काय लुवाय हों बेटा ? जौ ...

चंदा- राजा सें सन्तो नें अपनी सबरी बिपदा सुना दई घर कई कै...

सन्तो- हजूर जै माय आदमी आयें। इनें छै सालन लौ दिन भर गदा बनें रेबे की सराप दई है एक गऊ माता नें। सो जै दिन भर तो गदा बनें रेत हैं उन आदी रात खों आदमी बन जात हैं।

राजा- ठीक है बेआ। फिकर नें करो। अब तुम औरें इतई रव।

सन्तो- हजूर की जैंसी मरजी। में तो जित्ते दिना की जा सराप उनें लगी है सो भुगत रई हों। इनकी देख रेख तौ अब मोई सों कन्नें है।

राजा- कौनऊं बात की चिन्ता नें करौ बेटा। दिन बीतत में झेल नई लगत। गिरह दसा आय कहाउत, जे कट जैंय। होनी खों तो बिधना लौ नईं मेंट सकत। पै हिम्मत मनंस खों नईं हारो चइये। बिपदा में जबर गांठ कौ घोंटा बांद कें चलौ, बस्स।

सन्तो हओ, ऐई सें तौ मैं इनें लयें गिन गिन कें दिन काट रई हों। अनै अपनेंई ते मैं तलवा खालें डेरा आय डारें हों। उर पती बिरता बारौ अपनों धरम निभा नईं हों।

कड़ोरी- राजा में सन्तों खों बादौ राज पाट दै दव उर अपनी राजकुमारी ओ गदा बनें भओ गंगू खों बिया दई दईं।

चंदा- राजा जू नें एक अलग बाखर बनवा दई, जी में संतो गदा उर राजकुमारी उतै रैन लगे। कछू दिनों में एक रात राजा आदी रात होतई देखवे गओ, तौ का देखत हैं....

कड़ोरी- कै बो गदा आदमी बन गव उर गदा कौ चोला जौन तो सो ऊनें उतई छोड़ दव। राजा नें ऊ गदा के चोला में आगी लगवा दई, सो बो बर गओ।

भुंसरा राजा की दामाद आव जौ गदा बन जात्तौ। सो ऊनें तको के गदा बारौ चोला तौ उतै हैई नैयां।

फिन ऊनें देखो कै राजा जू एक कुदांई ठाँड़े हैं सो ऊ राजा जू के आंगू हांत जोर कें ठाड़ौ हो गव। उर केन लगो....

गंगू राजा जू अबे तीनई मइना और बचे हैं। अपन नें जो काकर दव। ऐं। मोरी सराप पूरी ...

राजा- जो कछू होत है अच्छे के काजें होत बेटा। तुमें अब कछू चिन्ता करबे की जरूरत नैयां। गऊ माता भौत किरपालु होती। तुम औरन के कारन से तलवा में पानी भर गओ, सो मुतके जीव जन्तु ढो, बछेरू उयै पी पी कें असीस दैहें।

कड़ोरी- ई तरा सें गंगू उतै के राजा भओ, उनकी दो रानियां भई। दोई अच्छी तरा सें हिलमिल के गंगू के संगै चैन की बंसी बजाउन लगीं।

चंदा- तो देखौ के एक बरेदी की घरैनी नें कित्ती बिपदा झेल कें अपनों नेम धरम निभाओ उर एक उम्दा जीवन जिओ। सो औरत जनी खों चइओ कै बा ऐंसईं अपनों

दतिया जिले की मध्यकालीन अज्ञात महिला साहित्यकार

-डॉ. कामिनी

मध्यप्रदेश राज्य के उत्तरी भाग में स्थित दतिया वर्तमान में ग्वालियर संभाग के अंतर्गत एक जिला है। जिसमें तीन तहसीलें है- दतिया, सेंवढ़ा और भांडेर। साहित्य - सर्जना की दृष्टि से दतिया जिला समृद्ध रहा है। दतिया का अस्तित्व 20 अक्टूबर 1926 ई. से माना जाता है।[1] दतिया के संस्थापक बुंदेला शासक भगवानराय थे। यहाँ 322 वर्षो तक दस बुंदेला राजाओं ने शासन किया। दतिया स्थान- नाम के साथ 'दन्तवक्र' का नाम जुड़ा हुआ है। सिद्धपीठ पीतांबरा पीठ दतिया में तांत्रिक साधना का प्रमुख केन्द्र है। जिले की पुरातात्विक महानता आदि मानव के विकास काल तक जाती है। दतिया जिले में बुंदेली का पंवारी रूप व्यवहृत है।[2] दतिया जिले की संस्कृति समन्वय और सहयोग की संस्कृति है। यह क्षेत्र अनेक जातियों, अनेक विचारों और कई संस्कृतियों के समन्वय का क्षेत्र रहा है।[3] यह जिला दर्शनीय स्थलों से भरपूर है। दतिया जिले में साहित्य की परंपरा ओरछा की समृद्ध साहित्य परंपरा का परिणाम है।[4] साहित्य, कला, संगीत, धर्म और संस्कृति की दृष्टि से दतिया गले का हार है।

दतिया जिले का साहित्य विविधता पूर्ण है। यहाँ के साहित्य में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण सूत्र सुरक्षित है।[5] दतिया जिले की साहित्यिक उर्वरा भूमि में अनेक रचनाकार हुए है। जिन्होंने अपनी साहित्य- सर्जना से हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि की है।[6]

मध्यकालीन हिन्दी साहित्य को भक्तिकाल के नाम से अभिहित किया जाता है। हिन्दी भाषा और साहित्य की नींव में अज्ञात और अल्प ज्ञात महिला रचनाकारों का अवदान कम नहीं है।[7] रायप्रवीन, केशवपुत्र वधू , रानी कमल कुंवरि, प्रेमसखी, तीन तरंग, विलोचनयना, मधुरअली, हीराबाई का नाम बुंदेलखण्ड में सम्मान से लिया जाता है।[8] फूलमती ने स्त्री समाज के लिये समय-समय के गीत लिखे हैं जो अंचल में महिलाओं के द्वारा गाये जाते हैं-

ऊधौ जबसें स्याम सिधारे, बरसत नैंन हमारे।
अंजन थिर न रहत, अंखियन में, कर कपोल भये कारे।
उर की अंगिया कभऊँ न सूखत, बै रये नैन पनारे।
डूब रऔ ब्रज फूलमती, अब काये न आन उबारे।।

कृष्ण के विरह में ब्रज की जो दशा है, उसका सजीव चित्रण है। भक्ति काव्य की दृष्टि से महिलायें शीर्ष पर हैं। इसी क्रम में गणेश कुंवरि का नाम उल्लेखनीय है।

पासवान खवासिन- इनका वास्तविक नाम कनकलता था। इनका जन्म सं. 1929 सेहुड़ा के खवास (नाई) परिवार में हुआ था। दतिया नरेश भवानी सिंह को कन्हरगढ़ का किला बहुत प्रिय था। पुराने कागज पत्रों में सेंवढ़ा का पुराना नाम किन्नरगढ़ (कन्हरगढ़) लिखा हुआ मिलता है। महाराज भवानी सिंह राज्य व्यवस्था और शिकार के लिए यहाँ आया करते थे। यहीं कवियत्री कनकलता को 'खवासिन' पद रनिवासे में सम्मान सहित दिया गया था-

'कन्हरगढ़ अस्थान पै जुरौ संजोग सुदेश।
'पासवान' की लिखत मोहि लोकेन्द्र नरेश।।

इनकी रचनाये 'पदावली' 'तीर्थराज' 'जुगल सनेह प्रकाश', 'रसिक विनोद' , 'वनमाला', 'हित चरित्र', 'ब्रजभूषण', 'धन चालीसी' उनके जीवन काल में ही प्रकाशित हो चुकी थी।[9] उन्होंने बधाई, झूला, लावनी, गज़ल, पद, गारी, मल्हार, मंज, दोहा, सोरठा, चौपाई आदि छंदों का प्रयोग किया है। भाषा बुंदेली है। पासवान साहित्यकार के साथ-साथ एक अच्छी गायिका भी थी।

उदाहरण देखिये-

'मोर मुकुट सिर विराजै, बलदाऊ के भैया।
करत चरित सकल गोकुल में कंसै मार गिरैया।।
जमुना तीर कदम चढ़ बैठो, गोपिन चीर हरैया।
पासवान सेंहुड़े वारी कों दर्शन देव कन्हैया।।

x x x

रम्भा रति मेनका सची सी लगै पासवान।"
उपमा न और जिती सुषमा सबै निकेत।।"
कौन करै नारिनें की समता सरोज मुखी।"
रहत सरोज सर, तेरी समता के हेत।।"
धन्यधन्य कीरति किसोरी तन तेरो पाइ।"
सोरह सिंगार ते बड़ाई सब ही तें लेत।।"
औरन के पाइन में पायजेब जेबें देत।"
प्यारी तेरे पांय पायजेबन को जेबें देत।।"

चन्द्रकुँवर- इनका दूसरा नाम प्रेमकुँवर भी था। ये दतिया के राजा गोविन्द सिंह की रानी थीं। इनके द्वारा रचित कृष्ण भक्ति के पदों का संग्रह चन्द्रप्रकाश के नाम से प्रकाशित हो चुका है। इन्होंने सभी प्रचलित राग-रागनियों में पदों की रचना की है-

काम की जीभ से कोमल भीतर बाहर हेम रची मजबूती।
पीतम के पद के सहचारिन चारहु मुक्ति की चारू प्रसूती
जो प्रभु नाहिं मिलैं जो मिलैं तो मिलान कराहुं ज्योंवरदूती
चन्द्रकुंवरि की जान सुमाल श्री राधिका कृष्ण के पाँय की जूती।।

जसोदा- इन्होंने लोकगीत लिखे हैं। गाँधीवादी विचारधारा से प्रेरित हो विवाह के अवसर पर गाई जाने वाली गारियों की तर्ज पर गारियाँ लिखीं। जसोदा सन् 1935 तक वर्तमान थीं।[10] एक गारी देखिये-

डाँड़े पै डंका लागै री डांड़े पै।
भारतवासी सोय रये सब सिगरी दुनियां जागौ री।
हिन्दू मुसलमान दोउि सो रये गांधी गुनियाँ जागौ री।
धनी सोय, पै परौ गली में भूको भिच्छुक जागौ री।
सन्तोषी सब सोय रये पै, धन कौ इच्छुक जागौ री।
माते और महाजन सो रये, खितहर रिनियाँ जागौ री।
बूढ़े वर सो रये पै उनकी, नई दुलहनियाँ जागौ री।
घर के सो रये पै खटका में घर को मुखिया जागौ री।
कहें जसोदा सधवा सो रये विधवा दुखिया जागौ री।
डांड़े पै उंका लागैरी डांड़ पै।।

सोना दासी- इन्होंने कृष्ण भक्ति परक पदों की रचना की है। पद बहुत ही सुंदर है। नाम सोनादासी ही लिखा है। उदाहरण के लिये

एक पद प्रस्तुत है- विष्णुपद -

तुम बिन नाथ सुनै को मेरी।
हों नंदलाल बिहाल होत हों करत पुकार घनेरी।
काम क्रोध मद लोभ मोह बस रहत विषै रस घेरी।
ज्यों जानो त्यों पार लगावो, बूड़त नाव बिना गुन तेरी,
दूसरौ दीनबन्धु कहं पाऊं जाके सरन जाय यह चेरी।
सोना दासी तन ताप मिटै जब कोर कटाच्छ कृपा करि हेरी।।

सनकेश्वर क्षेत्र ऋषि-मुनियों की तपस्थली रहा है। यहाँ पर पुराण काल से लेकर वर्तमान तक कवियों के कंठ से सरस्वती की वीणा भी झंकृत होती रही है। दतिया जिले में महिला कवियित्रियों भी मध्यकाल से लेकर वर्तमान तक साहित्य सृजन करती रही हैं। कुछ अज्ञात और अल्पज्ञात कवियित्रियों के साहित्य के शोध की अभी और अपेक्षा है। इतना तो निश्चित है कि लोक की हलचल को लोकभाषा में ही महसूस किया जा सकता है। बुंदेली का काव्य सशक्त है। इस विकास की यात्रा में महिला साहित्यकारों का अवदान उल्लेखनीय है और शोध की संभावनायें लिये हुए है।

संदर्भ-

1. दतिया एक परिचय- डॉ. कामिनी, आराधना - ब्रदर्स कानपुर, सन् 1983, पृष्ठ 18-19
2. ग्वालियर संभाग में व्यवहृत बोली रूपों का भाषा वैज्ञानिक अध्यन- डॉ. सीताकिशोर, आराधना- ब्रदर्स, कानपुर 1996 - पृष्ठ 21
3. बुंदेली भाषी क्षेत्र के स्थान - अभिधानों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन - डॉ. कामिनी, आराधना - ब्रदर्स कानपुर, 1985, पृष्ठ 32
4. अक्षर अनन्य की काव्य भाषा - डॉ. सबीहा ताबीर, आशा प्रकाशन, कानपुर, सन् 2012, पृष्ठ 15
5. दतिया जिले में पत्र-पांडुलिपियों का सर्वेक्षण - डॉ. कामिनी डॉ. श्यामबिहारी, डॉ. सीताकिशोर, आराधना- ब्रदर्स, कानपुर सन् 1990, पृष्ठ 40
6. स्थानीय लिखित साक्ष्यों के आलोक में दतिया का ऐतिहासिक सर्वेक्षण - डॉ. महेद्र सिंह, जी.वि.वि. के लिये स्वीकृत शोध - प्रबंध, सन् 1999, पृष्ठ - 3
7. दतियाः उद्भव और विकास- संपादक के.बी. एल. पाण्डेय श्री श्यामसुंदर श्याम जन सहयोग एवं सामुदायिक विकास संस्थान, दतिया, सन् 1986, पृष्ठ 98
8. उरैन - डॉ. कांमिनी, आराधना - ब्रदर्स, कानपुर, 2013, पृष्ठ 149
9. बुंदेलखण्ड की साहित्य सर्जना- डॉ. किरन शर्मा, आराधना ब्रदर्स, कानपुर, सन् 2006, पृष्ठ 24
10. सनकेश्वर सुरभि - संपादक आचार्य गंगाराम शास्त्री श्री रावतपुरा सरकार, लोक कल्याण ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पृष्ठ - 8
11. उरैन - डॉ. कामिनी, पृष्ठ 38

शासकीय गोविन्द महाविद्याल
सेंवढ़ा (दतिया)

बुन्देलखण्ड की माटी

-पं. रामगोपाल प्रजापति 'अनजान'

बलहारी अनमोल सब्बता, संस्कार परपाटी कौं।
सौ-सौ बार नमन अपनी, बुन्देलखण्ड की माटी कौं।।

जे अखण्ड, पाबन धरती, भइया, बीरन नें जनम लऔ,
जब-जब जुद्ध भये हैं तब-तब, दुस्मन कौ संहार भऔ,
जबरई करी काउ नें ऊ कौं, भेज दऔ चौपाटी कौं।
सौ-सौ बार नमन अपनी, बुन्देलखण्ड की माटी कौं।।

बीर सिबाजी कौं सब जानत, दुस्टन कौं बेमान करौ,
छत्रसाल कौ छत्र अमर भओ, जीत कौ झण्डा रओ बहरौ,
लक्ष्मीबाई ने गोरन की, भुला दई करांटी कौं।
सौ-सौ बार नमन अपनी, बुन्देलखण्ड की माटी कौं।।

मात-सारदा बैरागढ़ की, मैहर जगत भमानी है,
बिन्धबासनी हमें बचावें, सबकी जानी-मानी हैं,
मिट जातीं बाधायें, भगते, भूत-प्रेत गौहाटी कौं।
सौ-सौ बार नमन अपनी, बुन्देलखण्ड की माटी कौं।।

चित्रकूट-बनवास, ओंरछा, रामलला बैठे देखौ,
ब्यास-कालपी, कालिंजर कौ, नीलकण्ठ मंदिर लेखौ,
कला देवगढ़, खजरहो की, देखौ पत्थर काटी कौं।
सौ-सौ बार नमन अपनी, बुन्देलखण्ड की माटी कौं।।

केंन, धसान, बेतवा नदियां, निर्मल धार बहाती हैं,
बिन्ध्याचल की अजब चोटियाँ, सबके मन कौ भाती हैं
जंगल में हम मौज मनाबें, खायँ दाल उर बाटी कौं।
सौ-सौ बार नमन अपनी, बुन्देलखण्ड की माटी कौं।।

मउआ-गुलगुच बेर इतै, झरबेरी, आम, खजूर फरे
मका, चना, बाजरा, गेऊ, दारन की फसलें लहरे,
हीरन की खानें भौतऊँ, देखौ सतना की घाटी कौं।
सौ-सौ बार नमन अपनी, बुन्देलखण्ड की माटी कौं।।

कैउ तरा के पथरा की, खाने, बालू भण्डार भरे,
गट्टी, चूना, मौरम है, सीमेंट चुर्क की नाम करे।
चटक गेउरी, चुनककरा, परखौ गौरा सिलबाटी कौं।।
सौ-सौ बार नमन अपनी, बुन्देलखण्ड की माटी कौं।।

सुकआँ-दुकआँ, राजघाट, उर्मिल ऊँचौ माताटीला,
पारीछा, गोबिन्द बाँद, बेला कौ ताल गहर लीला,
तालन में भोपाल ताल, 'अनजान' नई समराटी कौं।।
सौ-सौ बार नमन अपनी, बुन्देलखण्ड की माटी कौं।।

बलहारी अनमोल सब्बता संस्कार परपाटी कौं।
सौ-सौ बार नमन अपनी, बुन्देलखण्ड की माटी कौं।।

-अनजान साहित्य सदन, 1179,
राजेन्द्र नगर, उरई (जालौन) यू.पी.

बुन्देलखण्ड के मान्यदेव 'महादेव'

– डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त

मंदिर और सरितायें भारतीय संस्कृति की धरोधर हैं, प्रतीक है, पोषक हैं और इस संस्कृति के पावनत्व को प्रकट करने की मनोज्ञ माध्यम हैं। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह हमारी संस्ककृति के यह पाँच तत्व हमारे मंदिरों और सरिताओं से ही व्याख्यायित होते हैं।

बुन्देलखण्ड भारत का हृदय स्थल है। भारतीय संस्कृति के अङ्कुरण, पल्लवन एवं पोषण तथा सम्बर्धन की प्रक्रिया प्रमुखतया यहीं सम्पन्न हुई। राम और भरत के भ्रातृत्व की पावन धारा का स्रोत चित्रकूट इसी बुन्देलखण्ड की आत्मा के रूप में दिग्दर्शित है। पुरुषार्थ चतुष्टय- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्रदायी पावन 'रामचरित मानस' मानव जीवन का श्रेष्ठ उपादेय संविधान इस धरती के हरेक घर में प्रायः मधुरता से गाया जाता है। इसमें 'महादेव' निर्वाण या मुक्ति के साधन के रूप में निरूपित हैं। संपूर्ण रामचरित मानस में शिव शंकर महादेव का पुण्यपावन वर्चस्व सभी सुधीजनों के अन्त स्थल को आह्लादित का देता है। भगवान शिव की यह स्तुति उनके मानों साक्षात्-विग्रह को उन्मेषित कर उनकी संपूर्ण बह्माण्ड में व्याप्ति को प्रत्यक्ष करती है। यथा-

''नमामीशमीनशान निर्वाणरूपं, विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं, चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं।।
निराकार मोंकारमूलं तुरीयं, गिराज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं।।
करालं महाकालकालं कृपालं, गुणागार संसारपारं नतोऽहं।।

रा.च.मा. उत्तरकाण्ड, 107 दोहा के बाद

वेदों में भले ही इन्द्र, वरुण, विष्णु, अग्नि आदि देवों की स्तुतियाँ अनेक सूक्तों में उल्लेखित हैं, तथापि त्रयम्बक भगवान शिवपरक एक ही मन्त्र समस्त त्रितापों को नष्ट करने के लिये एवं संपूर्ण बाधाओं को निर्मूल कर मंगलमय मृत्यु प्रदान हेतु परम उपयोगी सिद्ध है। यथोल्लेख है कि-

''त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्।
उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।'' यजुर्वेद 3-60

अर्थात्- तीनों पावन दृष्टियों (अधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक) से युक्त रूद्रदेव शिवशंकर महादेव की हम उपासना करते हैं। वे देव जीवन में सुगन्धि (सदाशयता) एवं पुष्टि (सामर्थ्य) संरक्षक सत्ता का प्रत्यक्ष बोध कराने वाले हैं। जिस प्रकार पका हुआ उर्वारू (एक प्रकार की ककड़ी) फल स्वयं डण्ठल से पृथक हो जाता है, उसी प्रकार हम मृत्यु के भय से मुक्त हों। अमृतत्व से दूर न हों।

श्री रूद्रदेव शिवशंकर महादेव के इसी सुविग्रह के साक्षात्कार हेतु उनकी भौतिकसत्ता के लिये पुराणों में वर्णित उनकी मूर्ति (लिङ्गस्वरूप) की स्थापना प्रायः सम्पूर्ण भारत में प्रदर्शित हुई। द्वादशज्योतिर्लिङ्ग इसका प्रमाण है।

बुन्देलखण्ड में वर्तमान में प्रायः छब्बीस जिले समाहित हैं। यहाँ उन प्रमुख स्थानों का उल्लेख है, जहाँ महादेव के विग्रह एवं प्राचीन सिद्ध स्थान हैं।

1. खजुराहो का कन्दरिया महादेव का मन्दिर- छतरपुर जिला भले ही 'छत्रसाल' से प्रसिद्धि प्राप्त है, तथापि अपनी अनोखी वास्तुकला और अद्‌भुत मन्दिर तथा मूर्तिनिर्माण से खजुराहो ने भारत का नाम विश्व में विश्रुत किया। खजुराहो का कन्दरिया महादेव मंदिर 102 फुट लम्बा, 66 फुट चौड़ा तथा 101 (एक सौ एक) फुट ऊँचा प्रासाद कोटि का विशाल मंदिर है। इस मंदिर की निर्मित 7 से 10 शताब्दी ईस्वी मान्य है। इसकी निर्मित में सम्राट धंग (650 ई.) का विशेष योगदान था। इस शिव मंदिर का शिल्पसौन्दर्य इतना अद्‌भुत है कि इस शिल्प-सुरम्यता के समक्ष वासना कहीं टिक नहीं पाती। श्रृंगार पर यहाँ विरागी महादेव का प्रभाव स्पष्ट प्रदृष्ट है।

2. जटाशंकर- छतरपुर जिला में ही छतरपुर के समीप जटाशंकर नाम से सिद्ध शिवस्थान हे। यहाँ शिवजी का प्रत्यक्ष प्रभाव देखा जा सकता है। व्यक्ति का मन यदि पवित्र है, तो यहाँ शिवजी के दर्शन से एवं उनके सानिध्य से विचार के फल की हस्तामलक प्रतीति प्रत्यक्ष होती है। यह अनुभूत है, सिद्धि-प्रसिद्धि के साथ ही यह एक सुरम्य, शान्त एवं पावन रमणीय स्थल है।

3. कुण्डेश्वर महादेव मंदिर, टीकमगढ़- यह मंदिर भी पौराणिक एवं पुरातन है। पुराणों में इसका उल्लेख इसकी यशस्वी स्थापना का द्योतन कराती है। दर्शनीय होने के साथ-साथ यह आध्यात्मिक सुवृत्ति का भी उत्प्रेरक है।

4. तालवेहट (जिला-ललितपुर) के दो विशाल शिवलिङ्ग- 'तालवेहट' कस्वो के पूर्व में लगभग तीन किलोमीटर लम्बा और एक किलोमीटर चौड़ा बृहत सरोवर है। इसी तालाब के आधार पर तालवेहट का नामकरण हुआ। यहाँ तालाब के किनारे 'हजारिया महादेव' के विशाल लिङ्ग बने हुये हैं। यहाँ दो शिवलिङ्ग अत्याधिक दर्शनीय है। इन बड़े-बड़े शिवलिङ्गो कें चारों ओर सहस्त्रों छोटे-छोटे शिवलिङ्ग उत्कीर्ण हैं। यह चित्रण बड़ा अद्‌भुत, दर्शनीय मनोरम एवं आह्लादिक है।

5. दतिया के प्रसिद्ध महादेव मंदिर- दतिया एक पौराणिक नगर है। इसका संबंध महाभारत काल से है। प्राचीनकाल में दतिया राजा दन्तवक्त्र की राजधानी थी। महादेव दन्तवक्त्र का मंदिर दतिया का मुख्य मंदिर है। यह मड़िया के महादेव कहलाते हैं।

दतिया में पीताम्बरा पीठ के विशाल परिसर में भी महाभारत कालीन 'वनखण्डेश्वर' महादेव जी के दर्शनार्थ यहाँ आचार्य द्रौण पुत्र चिरजीवी अश्वत्थामा आया करते हैं।

अस्तु, दतिया नगर में सिद्ध महादेव विग्रह हैं। यहाँ अन्य अनेक महादेव मंदिर इस नगरी को महादेवमय बनाये हुये हैं।

शिव सच्चिदानन्द महादेव तो सर्वव्यापी हैं। भारत के उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम पर्यन्त महादेव की अक्षुण्ण प्रतिष्ठा व्याप्त है। बुन्देलखण्ड में विशेष रूप से अपनी जाग्रत ज्योति से श्री शिवजी के विशेष विग्रह दर्शनीय हैं। ज्ञान विज्ञान के पुरोधा कहे जाने वाले सर्व देवों में श्रेष्ठ महादेव ने चौदह माहेश्वर सूत्रों की उत्पत्ति कर इस धरा के मानवों के लिये ज्ञान-स्रोत प्रवाहित किया एवं सरस्वती का सारस्वत सार दिया। ऐसे महादेव से यह बुन्देलखण्ड धरा सुधन्या बनी हैं। देवाधिदेव महादेव हमारे लोककल्याणकारी यजनयाजन में सुदृष्टि बनाये रखेंगे, ऐसा पूर्ण विश्वास है। अन्त में यही कथ्य है कि-

''विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परा सुव।
यद् भद्रं तन्न आ सुव।। (ऋग्वेद 5-82-5)

अर्थात् आदि देव! आप हमारे संपूर्ण दुर्गणों को दूर करें। जो हमारे लिये कल्याणकारी हो, उसे प्रदान करें।

उद्योग विभाग के पास, सिविल लाइन्स दतिया (म.प्र.)

बुन्देली लोकगाथाओं में लोक जीवन

- डॉ. सीमा तिवारी

लोकसाहित्य से बिना नाता जोड़े हम किसी भी देश की संस्कृति की जानकारी प्राप्त नहीं कर सकते। हमारी संस्कृति का मूल उत्स लोक से ही प्रारंभ होता है। लोकसाहित्य में संपूर्ण जनता की चित्तवृत्तियाँ, आचार-विचार, रहन-सहन एवं रीति-रिवाजों का अभिज्ञान होता है। लोकसाहित्य में धर्मगाथायें, लोक कथायें, किंवदन्तियाँ आदि सम्मिलित होते हैं। इनकी पृष्ठभूमि में गीत-संगीत, नृत्य भाव भंगिमायें आदि उभरतीं हैं।

लोकगीत तथा लोकगाथायें प्रकृति के उद्‌गार हैं। प्रकृति जब तरंग में आती है तब वह गान करती है। इनका जन्म स्थान गाँव है, जिनकी वाणी में मस्तिष्क नहीं हृदय है। गाथाओं में मानव जीवन के सुख-दुख, प्रेम-करुणा, जन्म-मृत्यु, संतोष, त्याग, क्षमा, विश्वास है। डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल के शब्दों में "लोक हमारे जीवन का महासमुद्र है। उसमें भूत, भविष्य और वर्तमान सभी कुछ संचित रहता है। लोक राष्ट्र का अमर स्वरूप है।"[1]

वैसे तो संपूर्ण भारतभूमि में प्रकृति अपने अनूठे गान के साथ दृष्टिगोचर होती है, किन्तु बुन्देलखण्ड में यह अपने अद्वितीय वैभव के साथ स्वराट है। बुन्देलखण्ड का सामूहिक व्यक्तित्व लोकसाहित्य में ही अधिक प्रतिबिम्बित होता है। यहाँ के जंगलों, पहाड़ों, नदियों और सरोवरों ने शताब्दियों से उस रक्त को पैदा करने में सहायता दी है, जो बुन्देलखण्ड में लोकजीवन से जुड़े। लाला हरदौल लौकिक देवता माने जाते हैं। हरदौल की गाथा आज बुन्देलखण्ड में सर्वाधिक प्रचलित है। यहाँ की गाथाओं में लोकजीवन की झलक जन्म से मृत्यु पर्यन्त देखने को मिलती है यथा-

रैया की गाथा - *घरर-घरर नदिया बहे अरे रैया.....*
गोरी धन माव अनांय।
सपर खोर ठांड़ी भई,
सूरज की रफ लेय।
सूरज देव तुमतो बड़े,
तुमसें बड़ो नेयां कोऊ।
सपर खोर रानी घर गई,
सासों पलंग बिछाव।
कै तोरे मूड़ धमाकियो,
कै सिर आई ताप।
दूध दहेंड़ी सासों जम गये,
कुखियन जम गये नंदला।[2]

गाथा में रैया जब अपनी माँ के गर्भ में आये तब से गाथा गायन की शुरूआत होती है। सूर्य की आराधना तत्पश्चात उनके वरदान स्वरूप रैया का माँ की कोख में आना।

पैलो मास जब लागियो अरे बहुआ
मन काहे पै जाय...
मनई तो कईये कैथों पे अरी सासो
कैथ तो देव मंगाय।

इसी तरह से गर्भिणी के नौ मास तक की खाने के प्रति रुचि और फिर दसवें मास में रैया का जनम होता है। जन्म के पश्चात् होने वाले संस्कारों का क्रमवार वर्णन गाथा में हुआ है-

दैदो बुलौबा दाई खों अरे रैया,
कुंवर के नरा छिनाय।
काहे छुरा नरा छीनियों,
काहे खपर अस्थान।
सुन्ने के छुरा नरा छीनियो,
रूपे खपर अस्नान।
बंसापति के सूप सजाईयो,
गजमोतिन आखत डार।
कैओ तो बम्मन भाट सें,
कुंवर की घरी सुदाय।
अच्छी घरी तोरे कुंवर भये,
काहे तरे अस्नान।
नगर बुलौवा नोनी नोंतिया,
नगरों बुलौवा दुवाव।

इस तरह से शिशु का नाल छीना जाना, स्नान करवाना, पंडित से जन्म का मुहूर्त पूछना, सोहर गायन आदि अनेक लौकिक संस्कार संपादित होते हैं।

जन्म संस्कार के पश्चात् विवाह संस्कार आता है। बुन्देलखण्ड की गाथाओं में विवाह संस्कार के प्रसंग भी आये हैं-

बोले ने रनिया जा कहे रे,
मोरी अरज सुनो महराज।
बेटी सियानी हो गई रे,
लरका ढूढों मुलक परदेस।
नाउ वामन जिने पौचाये रे,
लरका ढूढ़े मुलक परदेस।
ढूढ़े लरका जिनखों मिले नैया रे,
वे लौटई तो आये मोरे राम।
केस तो ऊँछे जब नदिया पै रे,
जिनके बार टूट गये मोरे राम।
पत्ता तो टोरे जिनने माहुल कै रे,
और दुनिया बनाई मोरे राम।
केस बुआ दये जिनने नदिया में रे,
जब बिटिया सपर रई मोरे राम।
दुनिया उठा लई वारी बिटिया ने रे,
जब घर की पकर लई गैल।
बोली बिटिया अपनी माता सें रे,
माई सुनले हमारी बात।
ढूढ़ो तरयारे बारी नदिया कें रे,
जिनखों चलत लगे ने देर।

धर्मासांबरी को वर की तलाश की जाती है लेकिन वर नहीं मिलता। उँधर वर ने अपने बालों में कंघी की तो कुछ बाल टूट गये, उन्हें एक दौना में रखकर नदी में प्रवाहित कर दिये वह दौना धर्मासांबरी को मिल जाता है। उसके कहने पर वर की तलाश की जाती है और वर मिल जाता है।

ढोला मारू की गाथा में विवाह प्रसंग का क्रमवार वर्णन है-

आजई को मड़वा आजई को मायनो,
आजई की लगुन बरात।
आजई की लिख दे ऊबनी,

दूला अवै पौर के द्वार।

खुनिया कहे कै मैं बड़ी, मोसे बड़ो नैया कोऊ,

पैलें अंगना हम गढ़े, फिर हुइयें रजों कौ ब्याव

हरदी कहे कै मैं बड़ी, मोसें बड़ो नैया कोऊ,

पैले दूला हम लगें, फिर हुइयें रजो कौ ब्याव।

मण्डपाच्छादन के उपरांत लग्न, बरात, खाम गाढ़ना, फिर तेल, हल्दी चढ़ना, कंकन के उपरांत दूल्हा उपटन, बारात, द्वारचार आदि समस्त कार्यक्रम को गाथा में समाहित किया है।

विवाह में चढ़ाव, जेवनार, भांवर का चित्रण गाथाओं में आता है-

बेला आय बैठ मण्डप माँ, सखियाँ गावैं मंगलचार।

चढ़ो चढ़ाव नीक बेला का, जनवासे को लौटी बरात।

सुघरी पूंछ तुरत पंडत से, ब्रह्मे मड़वा दओ पठाय।

बैठे पण्डित दोई ओर के, वेद की वानी रहे उचार।

बिटिया आई सोमेसुर कें, जाको रूप दियो करतार।

पांय पूजकें पृथ्वीराज ने, कन्यादान करो हरषाय।

गांठ जोर नाउन ने दीन्हीं, आल्हा दीनों नेग चुकाय।

परे भाँवरे फेरे होवें, पण्डित वेद उचारत जायँ।

देख-देख ब्रह्मा के छव अब, सखियाँ कहें पुकार-पुकार।

नेंग चुकावन आल्हा लागो, सब नेगिन को दओ निपटाय।

दायज दीनों पृथ्वीराज ने, लीन्हों मलखे सब लदवाय।

भइ ज्यौनार छतीसों व्यंजन, मन माँ सबके सुक्ख अपार।

विदा होन के बेरा आई, बेला तुरतें भई तयार।

सोरा सिंगार वारा आभूषण, सखियन ने दओ रूप समार।

जितनी सखियाँ दिल्लीवारीं, सबसें भेंटी कंठ लगाय।

जायकें बैठी नये डोला माँ, जामे लागे बारह कहार।

खूंटा उतरे रावटियन के, ब्यौहारी जोधा तैयार।

ग्यारह दिन की जात्रा करके, पहुँचे नगर महोबे आय।

परछन करके मल्हना रानी, पहुँची मनियाँ मंदिर जाय।

हातो लगाओं या मंदिर में, फिर मलहन को दओ पहुँचाय।

सखियाँ आई दरग के महलन, गाउन लगीं मंगलाचार।

जैसो व्याव भयो ब्रह्मा को, ऊसई हमने दओ सुनाय।[4]

ब्रह्मा का बेला से विवाह हुआ विवाह में चढ़ावा से लेकर विदाई और बारात का महोबे पहुँचना, दुल्हिन का परछन करने का वर्णन है। विवाह वर्णन में विवाह के प्रत्येक कार्यक्रमों का चित्रण लोक कवि ने किया है।

जीवन के पथ के एक-एक मोड़ पर गाथाओं में नयी चेतना आई है। कर्मशीलता बुन्देली संस्कृति का अभिन्न अंग रही है। यहाँ की महिलायें कठोर श्रम करतीं हैं। संस्कारों के उपरांत पूरे वर्ष के तीज-त्यौहारों पर गीत गाने की परम्परा है। चैत्र से लेकर फाल्गुन तक के विविध त्यौहारों का वर्णन किया गया है।

श्रम विषयक चित्रण कारसदेव की गाथा में आता है-

बदल कें बेटी ऐलादी सोडा मैया सें रही बतराय,

मेरी मैया राजू बाबूल ने कूड़ा धौके,

भैया ने चराई धौरी,

मेरी मैया तुमने झांज नगर के करे पीसने

हमने करी तपस्या भोलानाथ

वारा बरसें मैया मैंने भोलानाथ ढ़ारे,

भोला जी सें हम ल्याये बरदान।[5]

जब राजू गूजर के परिवार पर मुसीबतों का पहाड़ टूटता है तब राजू गूजर राजा के यहाँ कूड़ा फेंकने का काम करने लगते हैं। सूरजपाल राजा की गायें चराने लगे। कारस की माँ सोडा राजा के यहाँ चक्की से अनाज पीसने का काम करती थीं। ऐलादी ने बारह वर्षो तक शिवजी की कठोर तपस्या की। जिसके फलस्वरूप उसे **कारस** जैसे भाई का वरदान भोलानाथ ने दिया था।

एक यौद्धा (रैया) जब युद्ध में जाता है तो जाने के पूर्व तैयारी दृष्टव्य है-

काहे तरें उपटन भये, अरे रैया,

काहे तरें अस्नान।

निमुआ तरें उपटन भये,

अम्मा तरें अस्नान।

नौवा के धोबें उनकी धोतियाँ,

बम्मन के तिलक लगायं।

सपरे खोरे रैया फिरें,

सूरज करें दंडोत।

सूरज देवता तुम तो बड़े,

तुमसें बड़ों नैयां कोऊ।

तुमसें बड़ी मोरी माय है,

राखे गरभ दस मास।

चढ़ गई तबली और तवा,

रंद गये मुठियक भात।

सोन के थार परोसियो,

रूपो कटोरन दूध।

जेलों मोरे रैया लाड़ले,

रन जूझन फिर जाव।

छककें रैया भोजन करें,

चावे सुपारी पान।

रैया युद्ध करने जाते हैं[6] तो उसके पूर्व वे उपटन, स्नान, पूजन करते हैं। रैया की माता ने उन्हें रुचिकर भोजन बनाया और रैया के समक्ष प्रेमपूर्वक परोसा। रैया ने भोजन किया और फिर जाने की तैयारी में लग गये। गाथा में गाथाकार ने छोटे-छोटे पहलु उजागर किये हैं, जिसमें बुन्देली संस्कृति एवं लोकाचारों की झलक दिखाई देती है।

इस तरह से बुन्देली लोकगाथाओं में लोकजीवन की विविधता के चित्र उकेरे गये हैं। इनके माध्यम से हमारे लोकजीवन का कोमल पक्ष व्यक्त होता है। यहाँ का सामूहिक व्यक्तित्व लोक गाथाओं के माध्यम से प्रतिबिम्वित होता है।

संदर्भ :-

1. लोकगीतें से मानवीय मूल्य और सामाजिक समरसता- डॉ. सी.पी.शुक्ल मढ़ई अंक 8 पृ.122 1996
2. रैया की गाथा - डॉ. ओम प्रकाश चौबे एवं श्री नंद किशोर तिवारी (चौमासा अंक 50) 2002
3. लोक आख्यान - (धर्मासांवरी) डॉ. ओमप्रकाश चौबे, पृ. 620 शासकीय केन्द्रीय मुद्रणालय भोपाल, 2008
4. बेला का विवाह- आल्हा खण्ड - 2001, चंदेलकालीन लोकमहाकाव्य, आल्हा प्रामाणिक पाठ प्रो. नर्मदा प्रसाद गुप्त
5. कारस देव की गाथा - श्री शरीफ मुहम्मद (चौमासा) अंक 36 पृ. 57
6. रैया की गाथा - डॉ. ओमप्रकाश चौबे एवं श्री नंद किशोर तिवारी (चौमासा अंक 50) 2002

-गुरू फर्श, बरियाघाट वार्ड,

सागर (म.प्र.)

जटवारा और दतिया का जाट कृषक समुदाय

- डॉ. रामस्वरूप ढेंगुला

उत्तर मध्यकालीन बुन्देलखण्ड के अंतर्गत, दतिया राज्य के अंग, कस्बा इन्दरगढ़ व थरेट के क्षेत्र 18वीं सदी में जाट सत्ता के प्रभाव क्षेत्र में आ गये थे। आज भी बूढ़े-बुजुर्गों द्वारा दतिया में कहा जाता है कि इन्दरगढ़ क्षेत्र के जाटों की शक्ति के कारण यहाँ का राजा इन्द्रजीत बुन्देला (1733-1762) दतिया से इन्दरगढ़ के रास्ते अपने क्षेत्र सेवढ़ा नहीं जा पता था। उल्लेखनीय है कि सन् 1767 ई. के जुलाई-अगस्त माह में तूफानी गति से भरतपुर के जाट शासक जवाहर सिंह ने बुन्देलखण्ड के भूभागों पर आक्रमण कर भिन्ड-अटेर से लेकर कालपी के भागों पर अधिकार कर लिया था। यह सारा क्षेत्र चंबल-जमुना और सिंध नदी से पोषित भूभाग था। इस समय जाट शासक ने दतिया के राजा शत्रुजीत बुन्देला (1762-1801) से भी कर के रूप में धनराशि वसूल कर ली थी। इसी समय के संक्रमण काल में जाट कृषकों और सामंतों ने गोहद व ग्वालियर के पिछोर क्षेत्र से आकर इंदरगढ़ और थरेट क्षेत्र के गाँवों में बसकर कृषि क्षेत्र में अच्छी प्रगति की थी। आज भी इन भागों में जाट कृषकों का दबदबा बना हुआ है, ये भाग सिन्ध नदी के समीपवर्ती है। सिन्ध नदी के पार करते ही ग्वालियर व भिन्ड जिले के भाग आ जाते है। अटेर के रास्ते चंबल के किनारे-किनारे धौलपुर की ओर भी इस काल का मार्ग गया हुआ था। धौलपुर निवासी और वहाँ के जाट शासको के प्रोहित रहे दुबे परिवार के लोग अठारहवीं सदी में अटेर और भिन्ड के बीच में स्थित परा गाँव से धौलपुर चले गये थे, इस गाँव में दुबे परिवार का उसी समय का सती का स्थान हैं। इस प्रकार यह जनता का गमनागमन दोनों क्षेत्रों में आपस में होता हुआ भी प्रकट होता है, कारण विशेष सत्ताधारी से जुड़े होना और क्षेत्रीय शांति-अशांति से रहता था। यह दतिया जिला वर्तमान में ग्वालियर व झाँसी के बीच स्थित मध्यप्रदेश का जिला है ओर रेलवे मार्ग से दिल्ली-मुंबई से सीधे जुड़ा हुआ है।[1]

बीरसिंहदेव चरित् में जाटों का विवरण-

महाकवि केशव मिश्र ने यह ग्रन्थ सन् 1607 ई. में लिखना प्रारंभ किया था, इस समय मुगल गद्दी पर जहाँगीर बैठा हुआ था, बीरसिंह देव बुन्देला जहांगीर के विशेष कृपापात्र थे उल्लेखनीय है कि बीर सिंह बुन्देला ओरछा के शासक सन् 1605 ई. में बनने के पूर्व दतिया जिले के छोटी बड़ौनी कस्बे के जागीरदार रहे थे। यह कस्बा उस समय वर्तमान दतिया नगर से बड़ा था और दतिया के क्षेत्र बड़ौनी जागीर में एक गांव के रूप शामिल थे। बड़ौनी के भाग सिंध नदी क्षेत्र के समीपवर्ती थे और सिंध नदी के पार पवाया का प्रसिद्ध क्षेत्र था, ये भाग वर्तमान में ग्वालियर जिले की भितरवार तहसील में है। पवाया से लेकर शिवपुरी की तहसील कोलारस और गुना जिले की तहसील आरोन के भागों में जाट, मैना अर्थात् मीणा और गूजर जातियों का निवास था। ये भाग वर्तमान राजस्थान के क्षेत्रों से लगे हुये हैं, तत्समय इन क्षेत्रों को जटकारा कहा जाता था। बीरसिंह देव के इन क्षेत्रों पर आक्रमण के क्रम में इन जातियों का उल्लेख आता है।

उदाहरण-

बस्यो त्रास नर वर प्रति मौन। केलारस जाकैं आरौन।

बहु रो सबरे मैंना मारि। डारे जाट सबै संहारि।।9।।

सकिले सिगरे मैना जाट। नहटा नाट गूजर जात।

मिल्यौ हसन खाँ जाइ पठान। अरु हरदौल पवार सुजान।।18[1]

ये क्षेत्र उस काल में मुगल अधिकार के थे और अकबर उस समय बादशाह था, ये उल्लेख सन् 1592-1600 ई. के बीच के हैं। उस समय जाट इन भागों में कृषक के रूप में रहते थे, क्योंकि इन लोगों के सैनिक प्रतिरोध का कोई उल्लेख इस समकालीन ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं है। महाकवि केशव के इस हिन्दी ग्रन्थ की ऐतिहासिकता पूरी तरह प्रमाणित हो चुकी है।[2]

दतिया का नृसिंह मंदिर-

इस मंदिर के वर्तमान महंत 50 वर्षीय मोहनदास जाट हैं और यह मंदिर दतिया शहर की प्राचीर के बाहर स्थित है। इस मंदिर की बनावट और ईटों के आकर से यह अनुमान होता है कि यह मंदिर 1850 ई. के आसपास कभी बना होगा। यद्यपि श्रद्धालुओं और मंदिरो के महंत का मानना है कि यह मंदिर ओरछा के शासक बीरसिंह देव बुन्देला (1605-1627) के काल में बना था। यहाँ के वर्तमान महंत मथुरा से 40 किमी. दूर स्थित नंदला बेरी गाँव के निवासी हैं और उनका यह कहना है कि यहाँ के सभी महंत जाट ही रहे थे। पर उनकी बात की पुष्टि अन्य स्त्रोतों से नहीं होती है, लेकिन यह सत्य है कि उनके पूर्व के महंत अमरदास (1903-1988) जाट थे। इस मंदिर के व्यय के लिये दतिया राज्य से जमीन भी लगी थी।[3]

महन्त मोहनदास की धर्मपत्नी गोरा, उत्तरप्रदेश के एटा कस्बे के पोडरी गाँव की रहने वाली है। गोरा के अनुसार गाँव में पर्दा प्रथा होती है और गाँव में लड़कियों को पढ़ाने का रिवाज आज भी नहीं हैं। महंत के अनुसार उनके गाँव के विवाद बुर्जुर्गों की मदद से आराम से निपट जाते हैं और गाँव में विवाह संबंधी एक भी सामाजिक विवाद कभी नहीं हुआ है। महंत छेंकुरे गोत्र के हैं और भरतपुर राज्य के मानसिंह और बच्चूसिंह का नाम उनकी जबान पर रहता हे, संभवतः ये दोनों भरतपुर के शासक ब्रजेन्द्र सिंह (1930-47) के भाई थे। गाँव में बच्चियों की शादियां 15-16 वर्ष की उम्र में हो जाती है।[4]

कुदारी गाँव का जाट समाज-

यह गांव कस्बा इन्दरगढ़ से थरेट मार्ग पर 11 कि.मी. दूर स्थित है, आज इस गांव में बीस घर जाट समाज के हैं। परंतु बताया गया है कि 1850-60 के आसपास इस गाँव में सौ घर जाट समाज के थे। उस समय के सारे जाट इस गाँव के नाले के आसपास बसे हुये थे, जिसे आज नरिया नाम से जाना जाता है, यह बरसाती नाला था, जो गर्मियों में खाली हो जाता था। इस गाँव के जाट समाज में एक प्रसिद्ध संत और सिद्ध पुरूष गुरू घासीदास हुये हैं, इनका इस गांव में चबूतरा भी है। पूरे गाँव के लोग, इन्हें देवता के रूप में मानते है, इनकी पूजा करते है, मनौती मनाते है, यहाँ कन्या भोज और भंडारा भी होता है। लगभग 150 वर्ष पूर्व ये घासीदास जी इसी गाँव में रहते थे और बताया जाता हे कि उन्होंने अपने योगबल से सूखे कुंये से पानी निकाल दिया था। गाँव वाले बताते हैं कि हम लोग इनकी पूजा करते रहते हैं, फलस्वरूप आज तक हम लोगों का एक भी चौपाया बीमारी

से नहीं मरा है। घासीदास जी खैरनार गोत्र के थे, कुदारी के आसपास के गाँवों जरोली, मलउआ, सिकरी, ऐरोनी, थरेट आदि में जाटों के घर बहुतायत से हैं।

इसी गाँव के निवासी लक्ष्मण सिंह जाट 80 वर्ष के हो गये है, वे स्वयं अनपढ़ है, परंतु उनकी स्वर्गीय पत्नी रामायण पढ़ लेती थीं। इनकी ससुरार बुन्देलखण्ड भूभाग के जालौन कस्बे के गाँव भिटारा में थी, इससे यह जानकारी मिलती है, कि वर्तमान के उत्तरप्रदेश के भाग जालौन कस्बे में भी जाट समुदाय के लोग 18वीं सदी के संक्रमण काल में कृषक-सैनिक के रूप में पहुंचे थे। लक्ष्मण सिंह दांदक गोत्र के हैं और राणा लिखते हैं, ये गोहद तहसील के जखारा गाँव से कुदारी आये ीं। इस गांव की जाट समाज की महिलायें भी भरतपुर के बच्चूसिंह का नाम लेती हैं, ये बात-बात में इस लोकगीत को दुहराती है-

मोटर धीरे से चलाइयो बच्चूसिंह बाहर आई मेवों की फौज। और आगे वहाँ की महिलायें, भरतपुर क्षेत्र के गाँवों में प्रचलित कहावत का उल्लेख करती हैं, कि ''बचाओं मेरी जान अल्ला भरतपुर वाले से।'' चूंकि मेवाती प्रदेश के मुसलमान लुटेरों से भरतपुर राज्य का 18-19वीं सदी में लगातार संघर्ष चला था। बुन्देलखण्ड के जटवारा भूभाग के गाँवों के जाट समाज की महिलायें इतिहास की उन परम्परागत बातों को लोक के माध्यम से ह्रदय में संजोये हुये हैं। लक्ष्मण सिंह जाट का भी कहना है कि उनके गाँव जखारा में पर्दा प्रथा थी, गाँव की कोई भी महिला गाँव में बगैर घूंघट डाले निकल नहीं सकती थी और पुराने समय में गाँव में लड़कियों को पढ़ाने का प्रचलन नहीं था।

कुदारी गाँव के 70 वर्षीय शोभाराम जाट, खैरनार गोत्र के हैं और इनके पूर्वज यहाँ ग्वालियर तहसील के गुड़ीना गाँव से आये थे। गुड़ीना गाँव में जाट समाज में बच्चियों को पढ़ाने का रिवाज नही है। उनके अनुसार पूरे गाँव में एक ही लड़की कक्षा छै पास कर पाई थी। शोभाराम के परदादा, हुकुमसिंह गोहद के जाट राजा की फौज में रहे थे। इनके अनुसार गाँव में जाट समाज एकजूट होकर रहता है, विवाद की स्थिति में समस्या बजुर्गो के माध्यम से आराम से निपट जाती है। शोभाराम की पत्नी 65 वर्षीय बिमला बाई का कहना था, कि ''गाँव के डुकरा-डुकरियों के सामने भी कोई बगैर घूंघट डाले नहीं निकल सकता था।'' बिमला बाई धौलपुर के गाँव जिगाईपुरा की रहने वाली हैं, उनके अनुसार हमारे समाज की एक महिला सन् 1852 के दौर में पति के साथ सती हो गई थी। गांव में इनका चबूतरा भी है, जिसकी पूजा पूरा गाँव करता है। बिमला की शादी 12-13 वर्ष की उम्र में हो गई थी, गाँव में अभी भी बच्चियों की शादी इसी उम्र में हो जाती है, शादी के बाद गौना जरूर 4-5 सात बाद होता है। इस क्षेत्र के गाँवों में पिपरमेंट और चावल की फसल अच्छी होती है। इस क्षेत्र के जाट कृषक पिपरमेन्ट को यही के प्लांटों में निकाल कर, उसके सोल्यूशन को ड्रमों मं भरकर उत्तरप्रदेश के उरई और कानपुर नगर में ले जाते हैं, इन नगरों में पिपरमेन्ट की बिक्री का अच्छा बाजार उपलब्ध है। यहां उल्लेखनीय है कि इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान जदुनाथ सरकार ने जाट कृषकों के विषय में लिखा है, ''ये कृषि कार्य में बड़े चतुर थे, इनकी संख्या बड़ी जल्दी बढ़ती जाती थी और इनकी जाति सचेत और सबल थी। इसलिये इन लोगों ने आलसी और असावधान पुराने जमीदारों को हटा दिया और स्वयं अधिकांश भूमि के स्वामी बन बैठे।[6]

इतिहास काल में जातियों का क्षेत्र बदल देना, अपना गाँव, घर छोड़कर सुदूर क्षेत्र में चले जाना आम बात थी। ब्रजक्षेत्र में 18वीं सदी में जाट सैनिक शक्ति के रूप में उभर कर मुगलों की नाक के नीचे उनकी सत्ता के प्रतिस्पर्द्धी बन गये थे। मुगलों ने भी जाट कृषकों और ग्रामीण महिलाओं को सताने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी, अनेकों महिलाओं ने इस दौर में विवश होकर जौहर, आत्मघात आदि कर अपने जीवन का बलिदान कर दिया था। ऐसे काल में भी जाटों के अनेक कृषक परिवार सुरक्षित क्षेत्रों में देशी राजाओं के राज्यों में चले आये थे। दतिया के राजाओं का ब्रजक्षेत्र से काफी करीब का रिश्ता था, यहाँ के बुन्देला राजाओं की तीर्थ यात्रायें बृजक्षेत्र में होती ही रहती थी और उनके अनेक जीवनीय संस्कार भी यहीं होते थे। इसलिये भी दतिया सहित बुन्देलखण्ड के अन्य भागों में जाट कृषकों का गमनागमन होता रहा था। इस समाज के इन क्षेत्रों में फैलाव का कारण सत्ता का प्रसार तो प्रमुख था ही, उसके अलावा नवीन कृषि क्षेत्रों की खोज और शान्ति की खोज भी एक बड़ा कारण थी। अन्य क्षेत्रों में बसकर जाटों ने सबसे अधिक सामाजिक योगदान कृषिक्षेत्र की प्रगति में ही किया है।[7]

निष्कर्ष-

1. कुदारी गाँव और इसके आसपास का जाट समाज अधिकाशतः ग्वालियर और गोहद के क्षेत्रों से यहाँ आया था और इस समाज में इन क्षेत्रों में कोई विवाह संबंधी सम गोत्र संबंधी कोई विवाद नहीं उभरा है, यहाँ का सामाजिक जीवन पूरी तरह शान्तिपूर्ण है।
2. गाँव में जाट समाज में पर्दा प्रथा होती है, बेटियों को पढ़ाने का रिवाज कम है, उनकी पढ़ाई अधिकतर प्राईमरी स्तर तक ही हो पाती है। शादी भी 15-16 तक हो ही जाती है।
3. गाँव में जाटों का कृषक समाज महनती है, उसने कृषि क्षेत्र में प्रगति की है। गाँव के लोकदेवताओं को पूजा जाता है और गाँव की समस्याओं के निपटाने में देवता से प्रार्थना करने पर उन्हें कृपा मिलती है।
4. ''हिन्दुस्तान में जाट सत्ता'' नामक ग्रन्थ में, वैंदल के वृतलेख के आधार पर डॉ. दलोश एवं डॉ. वीरसिंह ने, जाट सत्ता के इतिहास के तीन क्षेत्रवर्ग बताये हैं। 1. दिल्ली के आसपास। 2. दिल्ली से आगरा तक। 3. चम्बल से सिन्ध ग्वालियर तक।[8]

परंतु जटवारा क्षेत्र के सिन्ध नदी के पार पूर्व और उत्तर दिशा की ओर बुन्देलखण्ड के भागों, इन्दरगढ-थरेट से लेकर जालौन, कोंच, कालपी जमुना के किनारे तक के भूभाग में 18-19वीं में जाट सत्ता के बीज पड़े थे जिनके अवशेष आज भी फलीभूत हो रहे हैं।

बुन्देलखण्ड क्षेत्र के जाट इतिहास के विषय में अंतिमरूप से कुछ कहने के पहले हमें संपूर्ण क्षेत्र का सर्वेक्षण कर सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक इतिहास के पूरे तथ्य जुटाने होंगे।

संदर्भः-

1. डॉ. भगवानदास गुप्त, राइज एण्ड फाल आफ मराठाज् इन बुन्देलखण्ड (नेहा प्रकाशन, दिल्ली 1987) पृ. 139-142,

प्रतिपाल सिंह, बुन्देलखण्ड का इतिहास, भाग-12, (छतरपुर 2009) पृ. 133, सरकार, मुगल साम्राजय का पतन, भाग-2 (शिवलाल, आगरा, 1964) पृ. 320, अंधारे, मराठों के अंतर्गत बुन्देलखण्ड, (विश्वभारती नागपुर, 2010) पृ. 132

2. श्यामसुन्दर द्विवेदी सम्पा., केशव कृत, वीरसिंहदेव चरित् (मातृभाषा प्रयाग, संवत् 2013) पृ. 44-46, डॉ. भगवान दास गुप्त, मुगलों के अंतर्गत बुन्दे. के इतिहास-संस्कृति के हिन्दी साहित्यिक स्त्रोतों का मूल्यांकन (भावना, झांसी, 2001) पृ. 24--36, गोरे लाल तिबारी, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, (नागरी सभा, काशी, संवत् 1990) पृ. 153, ।

4. प्रभुदयाल, ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास, भाग-2 (राजकमल, दिल्ली 1966) पृ. 249, । नृसिंह मंदिर के मोहनदास जाट एवं उनकी धर्मपत्नी गौरा से लिया गया साक्षात्कार।

5. कुदारी गाँव के सरपंच केशव चौबे एवं इन्दरगढ़ के विनय गुर्जर के सहयोग से लिये गये साक्षात्कार।

6. सरकार, मुगल साम्राज्य का पतन, भाग-2, पृ. 285-86, ।

7. के.बी. एल पाण्डेय, दतिया उद्भव और विकास पृ. 103-107, प्रभुदयाल, ब्रज का सांस्कृति इतिहास, भाग-2, पृ. 249।

8. डॉ. वीरसिंह सम्पा., हिन्दुस्तान में जाट सत्ता, (राधाकृष्ण, दिल्ली 2001) पृ. 195-96, ।

-कुंजनपुरा, दतिया (म.प्र.)
फो. 07522-236136

दहेज

-दिव्य यादव

किया ठाट से ब्याह बहाया पैसा जैसे पानी।
अँगना की गहना थी बहना पिय घर पड़ी पठानी।।
कोमल कुसमित कलित कली सी कनक कलस सी काया।
सुरस स्वभाव सुबोधि सुशीला शुचि सनेह सुखदाया।
वर, वर के कर दयी सगाई जब यौवन गदराया।
दिया देहज बदा से दूजा रुपये दिये सवाया।।
बहिन विदा कर दी डोली में नैनन वरषे पानी।
अँगना की गहना थी बहिना पिय घर पड़ी पठानी।।
भकुर गयी कुछ नहीं दिया है ऐसी सास कसइया।
कभी बाप का ठठरा बाँधै कभी मारती भइया।।
नंद अलग रुतबा बगराबै बड़ी अरे की अइया।
चौथी चलहै तभी, घरै जब, फट-फट भरै रुपइया।।
मारैं पीटैं,कभी समय से दैंय न रोटी पानी।
अंगना की गहना थी बहना पिय घर पड़ी पठानी।।
चिठिया लिखी लिबा लै जाओ भइया विनय हमारी।
देर करी जीवित ना पाहौ अपनी बहिन दुलारी।।
आव जबाब जानकी बनकर रहना बहिना प्यारी।
प्राण पती को प्राण मानियो सास-ससुर गिरधारी।।
नंद तुम्हें ऑगन की तुलसा सेवा करो सयानी।
अँगना की गहना थी बहिना पिय घर पड़ी पठानी।।
बहू पीटवे ओखो खोजै धुकै सास नंदयाना।
चिठिया भेजी है भइया को पाया नया बहाना।।
किसका डर कानून जेब में घरै कचहरी थाना।
कहै नंद से सास अकड़के ढंग से इसे सिखाना।।
बोटी बोटी आज उड़ा दो जा खा खा गर्रानी।
अँगना की गहना थी बहिना पिय घर पड़ी पठानी।।
विनय बहू ने करी पीट लो का है भूल हमाई।
सुनकर सास और खिसयानी मोसों जीभ लड़ाई।।
डायन एक तेल मिट्टी को लेकै बहू भिजाई।
दूजी फौरन आग लगावै किर्री दिया सलाई।।
पाँवन सिर धर बहु गिगयानी उनने एक न मानी।
अँगना की गहना थी बहिना पिय घर पड़ी पठानी।।
तलफन लगी बहू मछली सी धू-धू जलरई ज्वाला।
चीख-चीख कर गिरी भूमि पर बिखरी जीवन माला।।
कन्या की किस्मत तो देखो कैसे माँ ने पाला।
हाय राख का ढेर हो गयी एक फूल सी बाला।।
हमें बचा लो, हमें बचा लो दारुण चीख सिरानी।
अँगना की गहना थी बहिना पिय घर पड़ी पठानी।।
आ भइया इतलाय करी है थानेदार है आया।
रिश्वत लैके आत्म हत्या कर ली यही दिखाया।।
गये अदालत मगर वहाँ भी हाथ नहीं कुछ आया।
पैसा पड़ो न्याय पर भारी हो गव केश सफाया।।
खोवा भर-भर बाँट मिठाई, सास नन्द हरषानी।।
अँगना की गहना थी बहिना पिय घर पड़ी पठानी।
सावन है राखी बहिनन से बंधा रहे हैं भाई।
आयी याद बहिन भइया को सूनी देख कलाई।।
घर-घर में छायी खुशहाली लोग रहे हरषाई।
एक अभागी हम दुनियाँ में ऑसू रहे बहाई।।
बहिन मार बे सुख से सोरय है धिक्कार जवानी।
अँगना की गहना थी बहिना पिय घर पड़ी पठानी।।
खौला खून भाई दुनिया का, हारे ही नहिं हारे।
हम रैं हैं दुनिया में या फिर रैंहैंगे हत्यारे।।
चलो राइफल कर में लैके आँखन में अंगारे।
बैरी को जउवा नहि छोड़ों पहुँचत ही सब मारे।।
बदला लैलव जब बहिना को तब छाती ठंडानी।
अँगना की गहना थी बहिना पिय घर पड़ी पठानी।।
ये दहेज का कोढ़ मेटिये बिटियाँ अगर बचानै।
नहिं तो सच्ची मानो सबको एक दिना पछतानै।।
बहू सास को माता माने सास सुता सी मानै।
नरक बने घर स्वर्ग बनेगें जे हम सबके लानै।।
'दिव्य' दहेज मानिये दुल्हन नर तन सब गुन खानी।
अँगना की गहना थी बहिना पिय घर पड़ी पठानी।।

-कोंच तिराहा,एट (जालौन)
उ.प्र. 285201, मो. 9450295164

भोला (बाबा) के गीत

- डॉ. एम.एल. प्रभाकर

बुन्देलखण्ड में कैऊ तियौहार मनाय जात, इनमें से बुड़की कौ जादई नौनो रूप देखवे मिलत काय सें कै बरसात के पछाऊँ किसानन के खेतन में उर्दा, मूँग, जुनई, बाजरा, धान पक जावे पर उनैगा कै घरन में आ जाय सैं खुशी कौ माहौल ऐनईं हो जात। जब घर में अन्न देवता आ जात, गलियन को कीचर गिलारौ सूक जात सो आवे जावे की सुबदा हो जात। ऐई समय जौ नौनो सौ तियोहार बुड़की आ जात, जियै कछू जने संकरात कत। ई त्योहार के आयसैं गाँवन-गाँवन कौ आवो जावो सुरू होवे से हमाय पुरखन ने एक दूसरे सैं मिलवें को समव समज कैं मेलन खौं भरवाबौ शुरू करो हुइयै सो ओई खौं हम सब जनैं आज मनाउत आ रयै ।

बुड़की के तेवहार आवे पै कैऊ जांगा नदियन तीरथन पै मैला भरत जितै घरभर खुशी के मारैं जल्दी-जल्दी तैयार होत और नदिया में सपरवे खौं जात, काय सैं कै जौ मानौ जात कै अबै तक के पाप धुब जैं। ऐसी केऊ मान्यताएँ मानी जात। कछू जनैं रिश्तेदारी में ससरारै समदियाने गडियाँ घुल्ला लैके जात। गडियाँ खुल्ला सक्कर खाँ पाग कै बनाय जात। गडियाँ-गाड़ी घाई घुल्ला-घोड़ा घाई बनाय जात।

जब मन में खुबई खुशी होत कैऊ जनैं सगै-सगै जात सो गावे कौ मन होन लगत जियै लोग और जनीं अलग-अलग झुण्ड बनाकैं गैल में गाउत जात, इन गीतन खौं मेला में जाकैं नदी में सपरत में नाव में मंदर में सब जाँगा गाय जात जिनै बाबा या भोला के गीत कय जात सो अपने सब जनैं पढ़ौ उर समझौ...

1. गनेश बाबा गजरा खौं बिरजे,
   वे तौ ठाड़े मलनियाँ के दोर हो - गनेश बाबा....
2. महादेव बाबा बड़े रसिया हो
   गौरा रानी खौं बगल में बैठाय हो ..महादेव बाबा ...
3. भजन की अरे बेरा भई रे
   बेरा भई रे पट खोलौ छबीले महाराज हो ...
4. भजन करौ सिया रघुवर के, सिया रघुवर के
   ऐसी देइरा न मिलनै बारम्बार हो .. भजन करौ...
5. भजन करौ सिया रघुवर के रे
   सिया रघुवर के रे बेई लगायँ बेड़ा पार हो ...
6. भजन बिना सूची देहिरा रे सूनी देहिरा दे
   हिरदे में बसा लो सीताराम हो ... भजन बिना ..1
7. राम नाम बसा समरो नहिं रे मोरे प्यारे
   करो न हरि सौं हेत
   वे जन ऐसे जायेंगे मोरे भइया
   ज्यों मूली कौ खेत रे। भजन करो हो ओ --
8. देहिया तो दुर्लभ भई रे मोरे प्रभु, अँगना भये है विदेस
   माई बाप बैरी भये रे स्वामी, लै चल अपने देस
   लगन मोरी तोई सै लगी रे ....
9. पीसत छोड़े पीसने रे मोरे प्यारे चुरत चनन की दार
   वारे छोड़े तालने रे मैया और कुटुम परिवार।
10. बलम तोरी आउती सुनी रे
    आउती सुनीरे कुअला पै छोड़ आई लेंज रे .. बलम ...
11. मिलन खौं तौ बैयां फरकै रे, बइयां फरकै रे
    दरसन खखौं तरस रये दोऊ नैन रे ... मिलन .....
12. निकर चलौ दैके टटिया रे दैकें टटिया रे
    मौड़ी-मौड़न के श्री भगवान हो ... निकर ....
13. अतर की दो- दो सिसियाँ रे
    दो-दो सिसियाँ रे पलकों पै धरी महकाय रे ...अतर की.....
14. लहरिया के जाड़े परे रे ... जाड़े परे रे...
    छतिया सैं लगालो महाराज हो .... लहरिया
15. बलम खौं ऐसे मिलौ हों रे
    ऐसे मिलौ हौं रे जैसे कत्था सुपारी बंगला पान हो ...
16. सड़किया पै तौ धूरा उडै रे, भज मेला में उड़त गुलाल हो
    सड़किया पै हो ..
17. सड़किया पै तौ औंदो डरौ रे, औदो डरौ रे ...
    सूदौ कर दे दमरूआ के बाप रे ...
18. बलम सैं तो ऐसी बिगरी ... रे
    मोरी कतरी सुपारी ना खाएँ रे ... बलम ...
19. कजरवा तैंने काय खौं दये रे ...
    काय खौं दये रे तोरे ऊँसई लगनियाँ नैन रे ...
20. कजल बिन सूनी अखियाँ रे
    सूनी अखियाँ रे, बिन बैंदी के सूने लिलाट रे ....
21. कजरवा तैनें काय खौं दये रे ..
    काय खौं दये रे, मोरी नइया पै घन घघरांय हो ...
22. नवइया में डूबत बची रे ..
    डूबत बची रे पतरइयाँ बलम तो रे भाग हो ..
23. नबइया वारौ नइया न खेबै रे
    नइया न खेबे रे मोरी गुइयाँ छिकी पैले पार हो ...
24. अबै के गये कब मिलहौ रे
    कब मिल हौ रे, मोरे जियरा तड़फ मर जाएँ रे ...
25. नजर के सामें चलियो रे
    सामें चलियौ रे, बिन देखै परत नइयां चैन रे ...
26. नजर सैं ओटैं रहियो रे
    ओटैं रहियो रे नातर मारौं कटारी हूल रे ...
27. नजरिया अरे तोरी परखों ना
    तोरी परखौं ना, घुँघटा में चला रई दोई नैन रे
28. घूँघट पट ऊँचे कर लै रे
    ऊँचे कर लै रे परदेसी सैं कर लै नैना चार रे ...
30. ककनवा की लम्बी खिलिया रे
    लम्बी खिलिया रे मोरे झूने उरज फट जायँ रे ....
31. ककनवा मोरे मायके के,
    मोरे मायके के - कौनऊँ दद्दा के लगे नइयाँ दाम रे ...
32. कगदवा की मोरी फरिया रे
    मोरी फरियारे-कर दीनी बमनवा खौं दान रे .....
33. कगदवा में लिख देती रे
    लिख देती रे घर होती कलम उर दोत रे ...

34. बंगलवा सुने डरे री
सूने डरे री भैरों लक्ष्ला उजारे बेला बाग रे ... बंगलवा
35. ननदिया तैं ना मरी रे
तैं ना मरी रे, तौ पै गुण्डा मरैं तौ हजार रै ....
36. ननद तो मोरी बटुआ सी रे
बटुआ सी रे, ननदोई है कोलू कैसौ बैल रे ...
37. वचन के अरे साँचे तौ कड़े री
साँचे कड़े री मझ मेला में गैलई मोरी बाँहरे ...
38. सपर लेव कासी जू की झिरियाँ रे
कासी जू की झिरियाँ रे, कट जैहें जनम के पाप रे ...
39. सपरवे खौं कासी तौ बनाई रे
कासी बनाई पूजवे खौं बनाए भोला नाथ रे ...
40. महादे बब्बा ऐसे भेटों रे
ऐसें भेटों रे जैसे भेंटे मतारी उर बाप रे ....
41. महादे बाबा बड़े बरदानी रे ...
बड़े बरदानी रे, वे तौ बूढ़े खौं बालक देय रे ...
42. महादे बाबा बड़े वरदानी हो
बड़े वरदानी सारी दुनिया बुला लई मड़दोर हो ...
43. खबर मोरी लयें रइयो रे
लयें रइयो रे कासी के बसइया भोलानाथ रे ..
44. तपस्या अरे गौरा ने करी रे
गौरा ने करी, संकर जी खौं लये हैं, मनाय रे ...
45. फूलन के दो-दो गजरा रे
दो-दो गजरा रे पैंरैया अकेले भोलानाथ रे ...
46. गुरज पै अरे गौरा को मायको रे
गौरा को मायको, भैरों लक्ष्ला की कहिये ससरार रे ..
47. नरमदा मैया उल्टी तो बहै रे .
उल्टी बहैं रे तिरबैनी बहैं रे सामुधार रे
48. नरमदा की झाँकी तो बनी रे-झाँकी बनी रे
बरकोटी के बने हनुमान हो
49. नरमदा मैया दूदन तौ बहै रे, दूदन बहै रे
तिरवेनी बहैं रे रसधार हो.....
50. नरमदा अरे माता तो लगै रे
माता अगै रे, तिरवेनी लगैं रे मोरी वैन रे.....
51. नरमदा की छिड़ियन पै रे छिड़ियाँ
छिड़ियन पै रे छिडियाँ गौरा रानी अना रई लंबे केस रे
52. नरमदा जी की लहरन में रे
लहरन में रे मोरे भींजे अँचलवा के छोर रे ...
53. नरमदा के हाथी दरवाजे रे
हाथी दरवाजे मोय विसरत नैयाँ दिन रेन रे ....
54. नरमदा के बोथा तो चड़े री
बोथा चड़े री, मोरी गुडयाँ छिकी पैले पार रे ...
55. लहर आवे वेला पुरहन की
बेला पुरहन की पुर वैया वसा दे भोलानाथ रे
56. खबर मोरी लयें रइयो रे
लयें रइयो, कासी के भोलानाथ हो
57. चलन -चलन सब कोऊ कहै रे
सब कोऊ कहै, चलवौ हँसी न खेल रे
साँची चलवौ ओई को, जी की गठियन चोखे दाम रे ..
58. चलन कहौ साँची कहियो रे
साँची कहियो, घर बाँदे कनक उर दार रे ..
59. कपट की बिरियाँ ना चावौ रे
बिरिया ना चाबौ रे, कली चूना में फट जै गाल रे ....
60. नचत आवे नीली बछेरी रे
नीली बछेरी, पतरैया बलम असवार रे ...
61. मलनिया टेरत आवे रे
टेरत आबै, माला लैलो छबीले भैरों लाले रे ...
62. राम नाम कहबू करो रे मोरे प्यारे
जब लौ घट में प्रान ।
कबहुँक दीनदयाल के रे मोरे भइया
झनक परेगी कान । भजन करो हो ...
63. जटाधारी झाड़ी में बसै रे
झाड़ी में बसै, जटासंकर अनोखी नीनौ धाम हो ...
64. जटन सैं तौ गंगा बहैं रे
गंगा बहै रे गऊ मुख सैं तौ निकरे नीको नीर हो ...
65. महादेव बाबा वन में बसैं रे
वन में बसैं, जितै नीके भरे जल कुण्ड हो...
66. सपर लो जटासंकर झिरिया रे
जटासंकर झिरियाँ कट जैहें जनम के पाप हो ...
67. भोले बाबा गुफा में बसे रे
गुफा में बसे, जितै नीके दिखैं भीम कुण्ड हो ...
68. लै लो कुण्ड की बुड़की रे
कुण्ड की बुड़की, जितै जुरत है भारी भीर हो ....
69. ग्यानी ध्यानी जोगी तो रमैं रे
जोगी तौ रमैं अपने माथैं लगायँ त्रिपुण्ड हो ...
70. हरदौल बाबा ऐसैं तौ पुजैं रे
ऐसौं तौ पुजैं, जैसे पुज रये जग में गनेस हो ...
71. हरदौल लाला विष तौ पिए रे
विष तौ पिए, वे तौ कर गये जगत में नाम हो
72. ओरछा की महिमा तौ बड़ी रे
महिमा तौ बड़ी , जितै ब्राजे हैं राजाराम हो ...
73. बेतवा के जल निर्मल रे
जल निर्मल, जितै हो गई रानी गनेश हो ...
74. जगत जाहर खजुराहो रे
खजुराहो, जितै देखैं पुतरियाँ नर नार हो
75. चंदेले राजा तौ ऐसे भये रे
ऐसे भये, जिनने पथरा में डारें जैसे प्रान हो....
76. जगत सागर गैरे तौ भरे रे
गैरे भरे जितै राजा भये छत्रसाल हो ...
77. कुण्डेश्वर की महिमा बड़ी रे
महिमा बड़ी-कूँड़े से उखरे भोलानाथ हो
78. कुण्डेश्वर तौ दिन-दिन बड़ैं रे

दिन दिन बड़ै, कूँडे की न पावैं कोऊ थाँय हो ...

79. महादेव बाबा बड़े रसिया रे
बड़े रसिया माई गौरा सैं जौरै बैठे गाँठ हो

80. कुण्डेश्वर की बुड़की लै लो रे
बुड़की लै लो, कट जैहे जम की फाँसी हो ...

81. बरायघाट की बुड़की लै लो रे
बुड़की लै लो, बैलगाड़ी सैं जा रय नर नार हो

82. भीमकुण्ड तौ गैरे भरे रे
गैरे भरे, जी कौ नइया ओर न छोर हो

83. चलौ भइया बाँदकपुर खौं रे
बाँदकपुर खौं, नन्ने बाबा के दरसन कर लेव हो

84. अनोखी बाँदकपुर की महिमा रे
बाँदकपुर की महिमा जितै जुरतई भारी भीर हो ...

85. चलौ रे भइया भेड़ाघाट खौं रे
भेड़ाघाट खौं जितै भक्तन कौ होवै बेड़ा पार हो ...

86. अँगनवा में वेदी तौ हुमी रे
वेदी तौ हुमी, भइया भौजी करत पूजा पाठा हो ...

87. अतर की दो - दो सिियां रे
दो सिसियाँ, इक संजा चढ़ावै इक भोर हो ....

88. छतरपुर में नीकौ लगै रे
नीकौ लगै, जितै महाराजा भये छत्रसाल हो

89. कुँवर दोई राजा दसरथ के रे
राजा दसरथ के वे तौ ऊबैं जनक जू के दोर हो ...

90. सुदिन कब हुई है रे
कब हुइहै, जब दरसन मिलैं राजाराम हो ...

– प्राचार्य, शास.स्व.महाविद्यालय, दतिया
मो. 9981943813

एक कहानी गाँव की

– डालचन्द्र अनुरागी

आम और मउवन के घने बगीचन में दुको पंडवाहर बरसाती नदी की कगार पै बसो दादौं, अहीरन की आबादी को एक मझोला गाँव। अहीरन के प्रधान, उनइ के सरपंच और बिनई में पंच। गाँव के दो बड्डे आदमी मदनगुपाल अहीर उर्फ मदना, दूसरे डिल्लीपत दउवा उर्फ डिल्लिया, गोरू, बकरियन की भरमार, दूध और खोवा कौ रुजगार। कछू खेतिहर जमीन, दस-पाँच बैलन की खेती वाले किसान जिमीदार कहाउत ते। डिल्लीपत गाँव के प्रधान, तौ मदनगुपाल गाँवके मुखिया, आपुस में अपनो-अपनो प्रभाव सो एक दूसरे सैं खुन्नस राखत ते। गाँव के छोटे व मझौला किसान इनकी लड़ाई के मोहरा। दोऊ एक दूजे कौं नीचा दिखाविन के लानै तरा-तरा के जतन करत रहात ते।

एक बखत की बात मदना मुखिया को मौड़ा अपने ढोर-बछेरू लैकैं हार के बजरा में चराउन लै जा रओ तो। गैल में डिल्लीपत प्रधान कौ खेत परत तो सो एक गइया दौर कें प्रधान के चनन के खेत में जा घुसी और दो-चार मूँ चरलये चना। जानवर की जात बिनै दोस्ट दुस्मन की का खबर। रखवारो चिल्लानो काये रे मौड़ा, तौहै दिखात नइया का गइया खेत में घुसी वीघा भरके चना चरगई। मुखिया को मौड़ा नथुआ नै कई काये खैं बकवास करत, मैंने दौरकैं भगा नई लई का जानवर ऑय कोऊ सिखाउत थोरी है। रखवारौ आखिर मुँय लगो हतो प्रधान कौ बोलो ठहर जा अवै तौहे मजा चखाउत ओर गाँव कौं दौर गओ। तनक कौ मनक बताओ दिल्लीपत प्रधान कौं। कही मदना के लरका नै सबरै जानवर जबरन घुसा दये खेत में, मौहै गारी गुसा करी अलग। प्रधान आग बबूला हो गये और बिन्ने चार लठैत दौरा दये। कितै एक कहाँ चार, बिन्नै मदन मुखिया के लरका कौं मार-मार कैं बिरिया सौ झौर दओ।

मुखिया कौं जैसई खबर लगी कि प्रधान ने मौड़ा कौ पिटवाओ है सौ विनउ के संगै चा-छै लठैत दौर गये हार कौंधी। जौ लौं वे पहुँचे तौ लौं सब मारिया इतै-उतै भग गये। वे अपने मौड़ा कौं लैकै जैरिया थाने गये और रपट लिखवा दई प्रधान के खिलाफ। डिल्ली प्रधान व कछु उनकी पालटी के लोग जहल चले गये। तीन-तीन साल की सजा भई उन्हैं।

एक दिना की बात डिल्ली प्रधान को मौड़ा ज्वानी को भरों बैलगाड़ी लैकै घर से निकरो, नये बछवा नभे थे गाड़ी में, दो-दो पेनियाँ मारी और दौड़ा दये। अगाऊँ एक बमीठौ परत तो गाड़ी कौ एक पहिया बमीठे पै चढ़ गओ गाड़ी उलट गई। प्रधान कौ अकेलौ पूत सन्ता गाड़ी के नीचें आ गओ। दबो-दबो अधमरौ हो गऔ गाँव में खबर लगी कि प्रधान कौ मौड़ा गाड़ी तरे दबकैं मर गओ। दोस दुस्मन सभी दौर परे बाहर गाँव। मदन मुखिया सबसे पैलाँ पहुँचे, गाड़ी सूधी कराई सन्ता कौ उठाकै अपनी गाड़ी पै धरो और सूधे ले गये हस्पताल। डाकघर साब एक मरीज कौं देख रयेते। मुखिया कौं देखतई बाहर आ गये, बोले मुखिया साव का भओ लरका कौं। मदन मुखिया बोले हमाओं तौ सही सलामत हे। डाकटर साब, यौं मौड़ा प्रधान जू कौ आय, गाड़ी के तरैं दब कैं धायल हो गओ है। जल्दी मरहम पट्टी करौं। डाकटर साहब कवउं मुखिया कौ देखन लगे। वे सोच रये ते कि दुस्मन कौ मौड़ा लैकैं आये मुखिया। इनके लरका की मारपीअ में प्रधान जी सजा भुगत रहे।

डिल्लीपत प्रधान अपनी सजा पूरी करके छूट कैं ओई दिना आ गये। घरै आकैं देखो आदमी तौ बौत है। पै हमाये जेहल सैं आबिन की खुशी नइयाँ काउकौं। बूझी क बात है जैसई पता चलो कि मौड़ा गाड़ी के तरे दबके घायल हो गओ, हस्पताल में परो। प्रधान जू लइयन पइयन हस्पताल को दौर गये, उतै बे का देखत है कि सन्ता के ऊपर हाँत धरै मुखिया साब नींद की छपकी लै रये। वे मौड़ा कौं छोड़ मुखिया साव के पावन पै गिर गये। दोउ जने के असुवाँ गंगा-जमुना बनकैं वह निकरे। जलमन की बुरई वई संगम में जानै कहां बह गई।

-उरई, जिला-जालौन (उ.प्र.)
मो. 8858914630

बुन्देली खेल गीत

- डॉ. वीरेन्द्र 'निर्झर'

बालकों के खेल गीतों में उनकी उमंगों, मनोदशाओं, भावनाओं और उनकी ऊर्जाशक्ति का सहज स्फूरण देखने को मिलता है। खेलों से शारीरिक स्वास्थ्य लाभ तो होता ही है मानसिक और बौद्धिक स्तर का भी विकास होता है। खेल यद्यपि मनोरंजन के कारक हैं, किन्तु बालकों में खेल और खेलगीत एक स्वाभाविक प्रवृत्ति के रूप में उनकी चपलता, नटखटपन, शरारतों और बौद्धिक सोच को भी अभिव्यक्त करते हैं।

बालकों के खेलों में उनके मन की उत्फुल्लता, उछल-कूंद,9 उनका तालमेल और टूटे-फूटे शब्दों में बँधे लयात्मक खेलगीत उनकी शारीरिक लोच और स्फूर्ति को गई गुना बढ़ा देते हैं। ये गीत या शब्द संयोजन सार्थक हों ऐसा आवश्यक नहीं है किन्तु कई बार इन गीतों में उनके जीवन के सहज क्षण, आगामी जीवन के अस्पष्ट चित्र या फिर कोई कथा आदि के संदर्भ अपनी धुँधली सी झलक प्रस्तुत करते हैं।

बालकों के बहुत से खेल गीतों से जुड़े हैं और बहुत से गीत हैं जो खेलों से जुड़ गए हैं। कुछ खेल और उनके गीत देखें-

मगर-मगर: इस खेल में एक लड़का मगर बनता है और दूसरे लड़के उसे घेर कर चतूतरों में चढ़ जाते हैं, मानो किसी तालाब या नदी के घाट पर खड़े हों। ऊपर खड़े लड़के मगर से पूछते हैं- मगर मगर कित्तो पानी। मगर बना हुआ लड़का अपने टखनों, कमर, छाती, गला आदि अंगों पर हाथ रखकर बताया है कि पानी यहाँ तक है और अंत में चोटी तक पानी आने की बात बताता है। बच्चे मगर को डूबा हुआ या दूर गया हुआ मानकर तालाब में नहाने के लिए कूंद पड़ते है और कहते जाते है- मगर मगर हम तेरी नदी में नहाये। मगर उन्हें पकड़ने को झपटता है। लड़के वहा से भागते हैं। इस खेल में जो लड़का पकड़ में आता है, उसे मगर बनना पड़ता है, और खेल पुनः दोहराया जाता है। इस खेल में दूसरों के छकाने की बाल प्रवृत्ति स्पष्ट है और सहज मनोरंजन भी।

1. **कित्तन कित्तन पानी-** इस खेल में दो-चार या कुछ अधिक लड़के गुप्फा(हाथ पर हाथ) बाँधकर खड़े हो जाते हैं तथा एक लड़का उस घेरे में बीच में रहता है। घेरे वाले लड़के घूमते हुए बीच के लड़के से प्रश्न करते है- कित्तन कित्तन पानी बोल बोल रानी। घेरे के बीच वाला लड़का अपने अंगों को छू-छूकर पानी की गहराई बताता है- जैसे मगर मगर खेल में बताते हैं- इत्तन इत्तन पानी। बाद में सिर तक पानी आने पर बीच वाला लड़का तटबंध तोड़कर निकलना चाहता है। वह घेरे को तोड़ने के लिए एक दूसरे से बँधी मुट्ठियों पर आघात करता है और गीत की पंक्ति कहता है- इस गली से निकलूँगा। सभी बच्चे बोलते हैं - ठाड़ा मूसर मारूँगा। बीच का लड़का घेरे को तोड़ना चाहता है और दूसरे उसे घेरा तोड़ने नहीं देते। मुट्ठियाँ कस जाती हैं। घेरे में लड़के घूमते रहते हैं और उक्त पंक्तियों को दुहराते रहते हैं। जहाँ से बंधन ढीला होता है बीच वाला लड़का वहाँ से घेरा तोड़कर भागता है। सब उसे छूते या पकड़ते हैं, जो पहले पकड़ लेता है उसे बीच में खड़ा होना होता है मानो वह सबका नेतृत्व कर रहा है। खेल पुनः चल पड़ता है। कुछ जगह बोल बोल रानी के स्थान पर घोर-घोर या गोर-गोर रानी पंक्ति बोलते हैं।

2. **धम्मर धम्मर होय मथानी-** खेल में दो बच्चे आमने-सामने खड़े होकर और एक दूसरे के हाथ पकड़कर दही बिलोने जैसा हाथों को आगे पीछे खींचते हैं साथ ही गीत को गाते भी जाते हैं- धम्मर होय मथानी, सेरक दूध पसेरक पानी। इस गीत में दूध में पानी मिलाने की प्रवृत्ति जहाँ दर्शित हुई है वहीं मक्खन या नेंनू निकालने में दूध के साथ पानी की अत्याधिक मात्रा की आवश्यकता की भी व्यंजना है। इस रूप में यह गीत मक्खन उठाने की पारंपरित विधि का भी द्योतक है।

पन्ना के श्री देवीदत्त चतुर्वेदी इस गीत को स्पष्ट करते हुए मानते हैं कि एक हिस्सा दूध में पाँच गुना पानी मिलाकर फेंटने से जो ऊर्जा उत्पन्न होती है वह स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है। बिना मिलावट का दूध गरिष्ठ होता है। डॉक्टर भी कम फैट के दूध के प्रयोग को वरीयता देते हैं। मैं इसे श्रीकृष्ण या बच्चों की मक्खन खाने की रूचि, शक्ति संवर्द्धन के प्रतीक और उसे बनाने की प्रक्रिया से जोड़कर देखता हूँ। इस खेल से जहाँ कमर और पुट्ठों का व्यायाम होता है वहीं गुणात्मक अंकों के प्रयोग की भी शिक्षा मिलती है।

3. ताते ताते माढ़े (भात), जूड़े जूड़े घैला- इस खेल गीत में दो बच्चे एक दूसरे का कान पकड़कर गोलाई में एक दूसरे को खींचते या हिलते हुए- जैसे चक्की पीस रहे हों- उक्त पंक्तियाँ दुहराते हैं। यह गीत भी स्वास्थ्य शिक्षा से जुड़ा है। पं. देवीदत्त चतुर्वेदी के अनुसार हमें सदा ताजा भोजन करना चाहिए और ठंडा पानी पीना चाहिए। इसी परिप्रेक्ष्य से मिलती हुई एक बुन्देली कहावत भी प्रचलित है- ठंडे नहाय औ तातो खाय, ती घर बैद कभऊँ ना जाय। बिहार में भी गरम खाय ठंडा नहाय तथा तातल खाय भरनींद सोवै, ताकर दुखवा वन बन रोवै कहावत ताजा खाना खाने और नींद भर सोने वाले को कोई बीमारी नहीं होती के अर्थ में प्रचलित है। संतोषी और सुखी जीवन के संदर्भ में कबीरदास जी इसी बात को - रूखा-सूखा खाय के ठंडा पानी पीव कहकर व्यक्त करते हैं।

इसी प्रकार बच्चों का एक और खेलगीत- **आले बाले चना चबाले, चौखरियन के कान कटा ले-** भी है। यह गीत भी ताते ताते माढे की तरह कान पकड़कर खेला जाता है। इस प्रकार के खेलों में बड़े लोग भी हिस्सा लेते हैं और गीत की समाप्ति में बच्चों को कुतकुताते हैं। यह बच्चों को बहलाने और हँसने-हँसाने का खेल है।

अटकन चटकन एक अन्य खेल है। इसे लड़के बैठकर खेलते हैं। इस खेल में दो से छै- सात तक बच्चे घेरा बनाकर बैठते हैं और अपने दोनों हाथों की उँगलियों को धरती पर टिका कर रखते हैं। अँगूठा भी जमीन पर टिका होता है और हथेली जमीन की ओर होती है। एक लड़का अपनी तर्जनी उँगली सभी की उँगलियों के पर्वों पर रखता हुआ गीत बोलता है-

अटकन चटकन/दही चटोकन
बाग फूले बगवारी के
आव रे, गाव रे
बाबा लाए सात कटोरी

एक कटोरी फूटी
बाबा की टाँग टूटी
मामा की बहू रूठी
कौन बात पै रूठी
मुंस कैं बैठी
कैसी बैठी
ठाई ठक्का/ ठाई ठक्का
चिन्टी के चिन्टा (चौमासा अंक ४१, सन् १९९६)

गीत बोलने वाला लड़का प्रत्येक बच्चे के उठे हुए कौंचों को गीत की प्रत्येक पंक्ति पर छूता है। जिस बच्चे का कोंचा (हाथ) वह छू लेता है वह बच्चा अपने हाथ के कौंचे को जमीन पर फैलाकर मुक्त हो जाता है। अंत के शब्द चिन्टी के चिन्टा पर वह हाथ उठाकर पूछता है कि तुम चिंटी हो कै चिन्टा। लड़के के जवाब पर वह चिऊँटी लेता है। सभी बच्चे खिलखिला उठते हैं। आदरणीय मनोज जी ने गीत में बाबा की सात कटोरियों की चर्चा न होने और गीत को हँसाने वाला कहकर बात खतम कर दी है।

डॉ. रामस्वरूप श्रीवास्तव स्नेही की बुन्देली लोकगीत पुस्तक में इस गीत की कुछ पंक्तियाँ अलग हैं

बाबा लाए सात कटोरी
एक कटोरी फूटी
मामा की बहू रूठी
काए बात पै रूठी
दूध दही पै रूठी
सासु के भयो लरिका
बिछादे रानी पलका (बुन्देली लोकगीत. पृ. ४५)

खेल में बाद में चिन्टी कै चिन्टा कहकर नोच लेते हैं। स्नेही जी मानते हैं गीत का वर्णन अनुकरणात्मक है। उनके अनुसार मामा की बहू के नाज नखरों की बात दैनिक निरीक्षण की बात है जिसे बच्चे देखते हैं। हिन्दी बाल साहित्य की रूपरेखा पुस्तक में डॉ. श्रीपाद ने इस गीत के दो पाठ दिए हैं पहला पाठ तो स्नेही जी के गीत से दूध दही पै रूठी तक समान है, किन्तु अगली पंक्ति दूध दही तो बहुतेरो/चींटी लैगो कै चींटा - है। दूसरा पाठ बहुत भिन्न हैं-

अटकन चटकन/ दही चटोकन
फूल-फूल फुलवारी में
बाबा जी की क्यारी में
बाब जी गए दिल्ली
ल्याये सात कटोरी
एक कटोरी फूटी
नेवल की टाँग टूटी।

बालकों द्वारा गाए जाने वाले खेलगीतों में पाठ भिन्नता है, कुछ पंक्तियों के विस्मरण, उनकी पूर्तियों, परिवर्तन, संवर्धन और कल्पनाशीलता से प्रादुर्भूत हैं। विद्धानों का मत है कि बालगीतों में कोई सार्थकता नहीं होती। बच्चे अपनी मर्जी से जो उनकी लय में आता है या जो उन्हें प्रिय होता है या जो वे देखते हैं उन संदर्भों को गीत में जोड़ देते हैं। यह कुछ हद तक बात सही मानी जा सकती है पर बालगीत भी सार्थक और साभिप्राय होते हैं। कालान्तर में विभिन्न बदलावों के होते उन पर न ध्यान देने के कारण अर्थों की खोज कठिन हो जाती है या दूसरे शब्दें में समाज उनके अर्थों और प्रयोजनों को भूल जाता है। यह सही है कि बालक उसे उसके अथ्र की मानसिकता से नहीं गाते। वे तो उसे लयात्मकता के उद्देश्य से प्रलाप रूप में ही गाते हैं। पर हमारे लोक कवियों और बुद्धिजीवियों ने बच्चों को संस्कारित करने के उद्देश्य से तथा खेलखेल में उन्हें बहुत कुछ सिखाने के लिए गीत रचे हैं। पं. देवीदन्त चतुर्वेदी, रा.पु.शि. पन्ना द्वारा उक्त गीत का जो पाठ और भावार्थ मुझे ज्ञात हुआ प्रस्तुत है-

इस खेल में दो से छै बच्चे तक घेरा बनाकर बैठते हैं और अपने हाथों की उँगलियों को खड़ाकर सामने हाथ उल्टे रखते हैं। एक लड़का अपनी तर्जनी अँगुली सभी की अँगुली के पर्वतों पर रखता हुआ कहता है- अटकन चटकरन, दही चटोकन (दधीच टोकन) / बाबा लाओ आँवरी झाँवरी / पट्ट गोला पानी पीजा/ ... जहाँ यह पंक्ति रुकती है उससे पूछता है - जो घोड़ा कहाँ से आओ। लड़का किसी भी शहर का नाम बताता है जैसे मुंबई, कलकत्ता आदि। पहला लड़का कहता है - हम पानी पीने नहीं देंगे। दूसरा - हम राजा से कह देंगे। पहला - अच्छा पी लो। इस प्रकार बारी बारी से सभी बच्चों के घोड़े पानी पीते हैं।

शब्दार्थ और भावार्थ - उक्त पंक्तियों के द्वारा जनकपुर में आयोजित धनुष यज्ञ की बात को खेल खेल में कहा गया है। अर्थात् जनक जी की यज्ञशाला में धनुष टूटने की बात रुकी है (अटकन- रूका है, चटकन-धनुष टूटना दधिच टोकन-दधीच की हड्डियों का बना धनुष)। इतने में विश्वामित्र (बाबा) लक्ष्मण (आँवरी-गौरांग, आँवला जेसे कसैले खट्टे) और राम (झाँवरी-श्याम) को लेकर आ गए। रामने शीघ्र ही (पट्ट) धनुष को चढ़ा दिया (गोला किया) जिससे आवाज हुई और धनुष टूट गया (पानी पीजा-मानो न टूटने की मर्यादा समाप्त हो गई) चतुर्वेदी जी का मानना है कि इससे बच्चों को कथा साथ टकार का विशेष ज्ञान कराया जाता है। घोड़ा कहाँ से आया प्रश्न द्वारा यज्ञ में आये हुये राजाओं के शहरों के नाम आदि के माध्यम से विभिन्न शहरों के नामों से परिचित कराना तथा खेल जिज्ञासा को बढाना है।

इसी प्रकार **एक दिया में सोरा बाती, मारो बान गिरा दो हाथी** गीत का भी अपना एक अर्थ है। सोरा बाती से तात्पर्य दस इंद्रियों तथा मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार जीव और आत्मा से है। ज्ञान इंद्रियों के द्वारा मन किसी वस्तु पर जाता है। चित्त ठहरता है, बुद्धि निर्णय देती है, अहंकार कर्मेन्द्रिय को प्रेरित करता है। कर्मेन्द्रिय उस वस्तु को किसी भी प्रकार से प्राप्त करती है, जिससे आत्मा को कष्ट होता है और जीव को पापादि का कष्ट भोगना पड़ता है। अत: ज्ञान रूपी वाण को मारकर इस संसार में मैं और मेरा के अहंकार रूपी हाथी को मार गिराओ और आत्मा को परमात्मा से जोड़ने की बात कही गई है।

खेल गीतों में कई बार उससे मिलने वाली शिक्षा या भाव प्रमुख होते हैं। **घोड़ा दीवान साही, पीछे देखो मार खाई** खेल में कपड़े की एक गेंद जिसमें रस्सी लगी रहती है को लेकर खेल खेला जाता है। कई बार बच्चे तौलिया में गाँठ लगा कर अथवा उसे ऐंठ कर कोड़ा बना लेते हैं और खेलते हैं। इसीलिए उक्त गीत में घोड़ा के स्थान पर कोड़ा शब्द भी बोला जाता है।

एक घेरे में सभी बच्चे बैठ जाते हैं। एक बच्चा बाहर रहता है और हाथ में गेंद या कोड़ा लेकर घुमाते हुए घेरे के बाहर घूमता है तथा गीत की पंक्ति दुहराता है- घोड़ा दीवान साही, पीछे देखो मार खाई और पीछे देखने वाले को वह मारता भी है। घूमते हुए वह किसी खिलाड़ी के पीछे गेंद या कोड़ा चुपचाप डाल देता है। यदि उसे पता चल जाता तो वह उस गेंड को लेकर घूमने वाले बालक के पीछे दौड़ता है और उसे कोड़ा मारना चाहता है। पहला बालक घेरे वाले बालक के स्थान पर दौड़कर बैठ जाता है। अब दूसरा बालक घूमने लगता है। यदि पीछे पड़े गेंद का पता जिसके पीछे पड़ी है नहीं चलता तो उसे घूमने वाला बालक निर्धारित संख्या में या कोड़ा मारता हैं और स्वयं घूमने लगता है।

तात्पर्य यह है कि हमें अपना कार्य शक्ति और बुद्धि के साथ करना चाहिए। दूसरों की बुराई नहीं देखना चाहिए। हमारा जो निर्धारित लक्ष्य हे उसकी ओर हम निरंतर बढ़ें। पीछे हटकर या देखकर हम आलोचना या समालोचना की अपकीर्ति से बचें। अन्यथा दण्ड के भागी होंगे।

खेलने में ही नहीं पढ़ने में भी खेल खेल में पढ़ाई के अंतर्गत जब लकड़ी की तख्ती में पढ़ाई होती थी तो पट्टी सुखाने का गीत लड़के गाते थे और पट्टी को हवामें झुलाते थे -

सूख सूख पट्टी
चंदन घिट्टी
राजा आए, महल बनाए
महल के ऊपर झंडी गाड़ी
झंडी टूटी/पट्टी सूखी

खेलगीतों के माध्यम से गिनती पहाड़े जैसे शीघ्र न याद होने वाले विषय सहज हो जाते थे। खेल-खेल में पढ़ने की इस प्रक्रिया में बच्चे को कुद भी रटना या पढ़ना भार नहीं लगता था और न आज की तरह अनावश्यक पुस्तकों का बोझ लादना पड़ता था। आज भी बालगीत बाल सुलभ जिज्ञासाओं के संपूरक और उनके ज्ञान को बढ़ाने में सहयोगी होना चाहिए। बुन्देलखण्ड के गाँवों में आज भी बहुत से खेल और खेलगीत प्रचलन में हैं। इन खेलों और गीतों का संकलन और संरक्षण आवश्यक है। इनके भावार्थों तक पहुँचने का प्रयास भी होना चाहिए।

-एम.बी.120, न्यू इंदिरा कॉलोनी
बुरहानपुर (म.प्र.)
मो. 9425951297

माणिक की तीन कवितायें

-भास्कर सिंह माणिक

बुन्देली माटी

है सब से नोंनी अपनी बुन्देली माटी
नईयाँ कोनउँ जा धरती की सार्नी
ई धरती पे रये राम जू वर्षन नों
हरदौल लला नें राखो पानी वर्षन नों
इते धरम की ध्वजा सदा फहरानीं नईया .....
ई धरती को पूजो केशव तुलसी नें
ई धरती पे गाई फागें ईसुरी नें
नाना कवियन ने र्बकी लिखी कहानी नईया .....
त्याग तपस्या की धरती भरम न कोऊ जानें
हीरा पन्ना पथरा उगले आदर नारी जानें
गाथा छत्रसाल चम्पत ने रचदई वीरानीं नईया .....
सारन्धा रानी, झलकारी ने दई ई पै कुर्वानी
अग्रेंजन नें इनकें आगे रण में माँगो पानी
पानीदार रओ इते को सदा सदा से पानी
नईयाँ कोनउँ जा धरती की सानी

पानी

घुमड़ कै बरसौ बरखा रानी
सूख रओ धरती कौ पानी
बूढ़े बारे मौन भय सब
सानी और विज्ञानी
कै उठो प्यासो जन जीवन
मेरी सुन लो राम कहानी
दिन में हा हाकार मचो है
रात की उड़ गई नींद सुहानीं
माणिक सूखे बाग बगीचे
जल बिन कैसे करुँ किसान

जी से होय गुजारो

ए जू कछु ऐसो कर लो जू, जी से होय गुजारो
चौपर खेले सें न कोऊ को, कोनऊ होय निदारो
जी जी नें जा खेलो, ऊ को घर हो गओ घूरो
जानें राजा रंक बना दये, ईसें करो किनारो। ए जू ......
चौपर के कारन भओ तो, द्वापर में महाभारत भारी
लाज बचा न पाये पाण्डव, द्रोपती माधवकृष्ण पुकारी
ई खेल के कारन ही तो, कोरव वंश मिटो तो सबरो
ए जू तुम ईं को छोड़ो, न नेकऊ सोचो और विचारो। ए जू..
धनीराम धनकोरे हो गये, सोचत सोचत आधे रे गये
दूनें के चक्कर में भईया, माणिक मों सुखाये रे गये
मेहनत मजदूरी सें लल्लू, पूरो कर रये काम अधूरो
बिटिया लरका को पढ़वाने, न तुम इनको भाग्य बिसारो। ए जू..
न काऊ के आंगू हांत फैलाये, सीना तानें बढ़तई जायें
पढ़े लिखे बिटिया लरका, श्रम से न नेकऊ घबरायें
बुन्देली माटी नें हरदम, दुश्मन को मूड़ उतारो
बुरी आदतें नाश की जड़ है, ए जू इनें बिसारो। ए जू..

-मालवीय नगर (बजरिया) कोंच
जनपद जालौन, मो. 9936505493

अन्तकाल पछताने

-शकूर मोहम्मद

पूस की हाड़फोर ठंड और अँदयारी रात ऊपर सैं माउठ के बादर जिते हाँत खौं हाँत न सुजाबे। गली खौरन में कुत्तन के भौंकन सैं भारी भियाँयदो लगवे। पूरे गाँव में सुआटे पर गए अकेले चिन्तामन के घर में चिल्लपौं मची ती।

आज संजा सैं चिन्तामन की तबियत नौनी नई हती। काल राते नावते बुलाकैं बैठक कराई। देवतन ने घटौइया बब्बा की खुटक बताई। चिन्तामन की जेठी ने कई कै, महाराज! हम कुन्नस मनाउत हैं, देवता बड़ी मुश्किल सैं बाचा लैं कैं माने, भभूत दई। भभूत के देतन चिन्तामन खौं आराम मिल गऔ। जी आदमी में उठवे बैठवें को हियाव नई हतो, काल पूरी रात नौने सोउत रय जीसैं घर के सबरे जनी मान्सन ने चैन की सांस लई।

आज बियाई की बेरा सैं फिर तबियत बिगर गई, स्वाँसा तेज चलन लगी। चिन्तामन को जी मछइया सौ तड़पबै अलायदो। हल्की दुलहया छाती खौं मलबै तौ धौर पावन खौं दबाबे, फिर बा बड़ी सैं बोली-जिज्जी! इनकी हालत जादाँ बिगर रइ हमाई मानो तो इनै अस्पताल ले चलौ। मौंगी रऔ ...। बड़ी चिल्ला कैं बोली। ले जा भभूत लगा दे। जिज्जी! अबै तो जे बोलत हते, अब बोलत काय नइयाँ? कफ गड़ रऔ न्यारो। हल्की रोन लगी।

बड़े लरका जगन खौं जगाओ, बो बड़ बड़ात आव उर बोलो, कै तुमने के माँरैं सो नई पाउत, रोज रोज की किल किल देखिओ जा कौनऊँ न कौनऊँ पै निजा जेय तब तुम सब खौ साता परै। ऊनै गोर करकैंलल्ला खौं देखो बे बोल नई रय, उनैं हाँपी चल रई। जगना खौं जादाँ समज तो नई हती पै, दुख पिराते खौ जानत बूझत हतो।

चूहा कि दौर मगरे नौ, सो दौरत गऔ उर रामदीन कक्का कौ दोरो खटखटाऔ। बे पौर में परे ते, बोले-को आय भइया! इत्ती रातैं। जगना ने कई के कक्का किबार तो खोलौ फिर बताउत। कक्का भले आदमी हते उनने झट्ट किवार खोल दय, कायरे जगना का बात है। इत्ती राते? काय? घरे तौ सब ठीक ठाक है। जगना ने लल्ला की हालियत की बात बताई।

रामदीन कक्का देवता आदमी हते पराई पीरा खौं जानत बूझत हते। झेल नईं करी उर अपने बड़े लरका खौं टेरो, कई कै ....टेक्टर ट्राली विदौलो उर चिन्तामन खौं सिरकारी अस्पताल पौचाने। रामजी ने देर नई करी उर जगना सैं कई के, देख भइया घबराने नइयाँ, अपन अबे पौंचत अस्पताले!

ट्रेक्टर में चिन्तामन की खाट डार दई। संग के लाने दोई घरेनी और जगना उन्ना लत्ता लै कैं चल दय। घर में रै गई ती चारई बिटियाँ उर आजी।

आदी रातें जे सब अस्पताले पौंचे। अस्पताल में देखों तो बीमार और तीमारदारन को आबो जाबो लगो तो। इनने चिन्तामन की खाट दालान में धर दई। बड़ी चिन्तामन के संग कैऊ बेर की अस्पताले आई गई हती सो जल्दी सैं ऊ टेबिल के पास पौंची जितै कम्पोटर सुजी, बोतले चड़ाउत रयें। कम्पोटर साब ओई बैंच पै परे डरे उर सोबे कौ जतन कर रयते। बड़ी ने हॉत सै हला दऔ बे ना चाउत भय उठ बैठे। बोले- कऔ का बात है ? जैठी ने चिन्तामन की खाट ताँई इसारो करत भय बात बताई। कम्पोटर ने कई कैं बाई, इने इते लियाओ फिर देखत का कैसो करनें। सबने हॉतई हॉत चिन्तामन की खाट खौं टेबिल के लिंगा पौंचा दऔ। कम्पोटर ने चिन्तामन की हालअ देखतन कई कै देखो बाई! तुमाव मरीज सीरियस जान परत, देखो डाक्टर साब खौं बुलारय बे का बताउत। डाक्टर खौं बुलबाऔ, तनक झेल में डाक्टर साब की अवाई हो गई।

डाक्टर के आतन सबइ जने दई देवतन खौं सुमरन लगे। डॉक्टर साव ने नबज देखी, आला लगाओ, आँखे फार के देखी। डॉक्टर साव कुर्सी पै बैठ गय। घर के सबई जने डाक्टर के मौं ताँई देख रय ते। डॉक्टर साव कुर्सी पै बैठ गये। घर के सबई जने डाक्टर के मौं ताँई देख रय ते। डॉक्टर ने गुस्सा होत भय कई कै, हूँ ? कछू देर नौ सन्नाटौ सो लग गऔ। डॉक्टर फिर बोले, मरीज की इतनी हालत बिगाड़ ली फिर अस्पताल की खबर आई। चिन्तामन की हालत चिन्ताजनक है। इनके दौनो फैफड़े डेमेज हो गये है, इन्हें तो बाहर ले जाओ। मैं अभी रिफर किये देता हूँ। अपने जाने का प्रबंध करो। बड़ी उर हल्की डाक्टर के पावन में जा गिरे। डाक्टर साव-। हमाई बाहर ले जावे की हिम्मत नइयाँ। हम तो इनके मारे नौने कै लुअे पिटे बैठे, घर में तौं भुँजी भाँग नइया, सोंने कैसी गिरस्ती इनके कारन सैं बिला गई। सौं हमने तौ भगवान के ऊपर छोड़ दऔ फिर हम उर हमाय वाली बच्चन को भाग अपुन तो इतई जैसो जो बने सो इलाज करो। अपुन खौं हम कौनई दोस नई दैयँ।

डाक्टर साब कछू सोसन लगे का करैं का न करैं, दूबरी उन दो असाड़ चरन गई दूर हार। कम्पोटर सैं कछू अंग्रेजी में बतकाव करने लगे। इन सब खौं उनकी बातैं पल्लै नई परीं।

मरीज खौं भर्ती करा दऔ झटपट इलाज होन लगो, बोतले चढ़ने लगी। कम्पोटर ने कई कै भगवान सैं बिनती करौ, उम्मीद कम है। भगवान चाय तौ कछू चमत्कार हो जाए। सबई जने कम्पोटर को मौ देखन लगे। उन सब की आँखन की डबइयाँ भर आई ती।

तनक झेल में चिन्तामन कौ कूलबो सुना परो। सुनके जगना पौंचो। उने कछू होस आओ तों लल्ला हराँ हराँ आँखें,मूंदे बुद बुदा रयते, हम किते हैं ? बड़ी ने सुनी उर दौरी अपने कान खौं उनके मौं के लिंगा कर दऔ। वे फिर फुसफुसाने, हम किते हैं ? बड़ी बोली- तुम बड़े अस्पताल में हो, अब तुम कौनऊँ चिन्ता न करो। तबियत नौनी भईजात, देखो बोतल चढ़बे सैं आराम मिलन लगो। चिन्तामन ने फिर कई कै काय खौं ? बड़ी .... । हमें तो घरें ले चलो हमाई इते सुजी छिछवाके काय खौं कुरदक्षना करा रई। हमैं अब बचने नइयाँ। बड़ी ने अपनी धुतिया के छोर सैं टेड़ो मौं करकै अँसुआ पौंछ लय। चिन्तामन ने कई कै देखो बड़ी, हमें हमाय करमन की सजा मिल रई, जैसी करनी, बैसी भरनी। हमने तुम सबखौं भौत दुख दय ......। चिन्तामन की आँखन से अँसुआ टपक गय। कफ गउ गड़ानो ठसका लगो फिर चिन्तामन गैर होस हो गओ।

इतने में कम्पोटर खौं टेरो उनने बोतल देखी चिन्तामन की नबज देखी फिर उन सबसैं कई कै घबराऔ नई इनके फैफड़न में ताकत नइयाँ येसो हो जात। पैलाँ सैं तो भौत आराम है, भुंसरा नो आराम कर

मिलो जात। कम्पोटर ने जगन खौं एक तरफ बुला कैं कई कै, देखो तुमाय मरीज खौं भरती कर दओ। इन्जेक्सन लग गय, बोतल चड़ गई, पलंग मिलगऔ, सब सेवा टाल हो गई। जगन कम्पोटर की जे बातैं सुनके हऔ-हऔ कत जा रऔ तो ऊने ऊतर ऊतर दऔ के साब! अपुन सब की कृपा भई सो सब नौनो हो रओ। कम्पोटर ने सरम टोर कै जब तुमाऔ सब नौनो हो गऔ तौ हमाय चाय पानी की व्यवस्था करो। जगन ने सुनी ऊकी डबइयाँ भर आई उर बोली, साब-। इते तौ अपुन औरें हमाय भगवान जैसे हौ हमाय लिंगा तौ बिस खाबै खौं टका नइयाँ। कम्पोटर साब ने सुनी उर नाराज मन सैं चले गय।

बड़े बुजुर्गन कै मौं से सुनत आरय कै जब आदमी को अन्तकाल आ जात तौ ऊके मन मस्तक में करमन को हिसाब किताव होन लगत फिर सोसन लगत कै हमने समय रैत इनपै सोसी होती तौ जे दुर्दिन न देखने परते। अब का इते तौ सबरी फुलवार उजर गई ती। जीवन के करमन की किसा फिलम की रील की नाई दिमाग में चलन लगत। सो चिन्तामन के असहाय सरीर उर चेतन मन में जीवन भर के खियाल प्याज की नाई परत दर परत कड़ने लगे।

चिन्तामन अपने बाप मताई कैं अकेली सन्तान हते। घर मैं भगवान ने सबेरे सुख ठूँस ठाँस कें भर दय ते। चिन्तामन के दद्दा घन्सू के पास दस एकड़ की किसानी, भैसें, गइयाँ घी-दूद की कमी कौनउ नई हती। घन्सू अरोस परोस में कन लगत ते कै हमें तौ अपने चिन्तामन खौं सोरा किलास नो पड़ाने ऊखौं तो हमें बड़ो अफसर बनाने चाय हमाई गिरस्ती बिक जाय। ऊखौं जानों पड़ने होबे पडबे, हमने उये चुन्नी दई।

चिन्तामन स्कूले पढ़बे जान लगे। स्कूल की दो-दो ड्रेसें ऊसमइया पै आदमी अपने मोड़ी मोड़न खौं लत्ता पैराबे के लाने सोसत हते। ठंडन में बिलेजर को कोट, कछू जने गाँव के चिन्तामन के जे ठाट-बाट देखकैं मनई मन कुड़त रबैं। चिन्तामन के मन में जा बात घर कर गई कै हम तो बड़े आदमी आँय। पड़बे लिखवे में बो हतो गदा।

घर के अकेले कुँवर, बाप मताई कौ लाड़, ताते पानी के सोंसबे बारे। न कोनऊँ काम न काज, स्कूले मन चाओ जावों, दिन भर आवारा सौंगरी बारन कौ संग, दिन में मैटिनी सो फिलम देखबो। जे सब काम चिन्तामन के ओर से चालू हो गय। बरया बटकैं आठ पास कर पाऔ। बर दिखाई होन लगी, आय दिना बिटियन बारे दोरे पै ठॉडे। बन्न बन्न को दहेज को लालच, नाते रिश्तेदारन कौ दबाव फिर घन्सू के मन में सोऊं दहेज की उर बहू की ललकना लगन लगी। एक दिना चिन्तामन की मताइ उर घन्सू ने सलाह कर लई के ना होय तो चिन्तामन को बियाव कर लो।

बियाव सुदवाऔ गऔ, नौनो गाजे बाजे सें भाँवरें परीं। भभूदरा सी बहू आ गई। दहेज के मारैं घर भरगऔ उर चिन्तामन भइया खौं आवे-जावे के लाने मोटर सायकिल मिली बा न्यारी। चिन्तामन के बाप-मताई खौं लगवे कै बहू खौं किते उठाएँ उर किते बैठायँ का खुआयँ उर का पियावँ। चिन्तामन कौ घर में बाप-मताई नाव न लेवैं, भइया कैकैं बुलावें। बियाव के कछू दिनन तौ पढ़बे लिखबे सैं नातों रओ फिर ऊने सुरत नई लई। बाप मताई ने सोस लई कै रैन दो नई पढ़त सो न पढ़बे अपने लिंगा इतनी घर गिरस्ती, भैसें गइयौ है, भौत है। इनसे अपनो मन समजा लऔ।

दिन मइया सालैं कड़न लगी चिन्तामन के नातन भई। बाप-मताई ने बेमन सैं खुसयाली मनाई। बऊकी तीमारदारी के लाने बड़ी सारी खों बुला लऔ। भइया चिन्तामन की संगत, कुसंगत में बदल गई। जुआ खेलबो उर दारू पीबे की खबरें मिलन लगी। बाप-मताई .... सो दैकें रे गय। अपनी जाँग उगारो उर अपनई लाजन मरो। भइया रोज घरे डट कैं पीकैं आन लगे।

समय कौ पइया घूम रऔ तो। जीजा सारी कौ हँसी मजाक पींगे मारन लगो उर ई हँसी मजाक ने सबई सीमा टोर दई जीसैं जो हँसी मजाक रिस्ते में बदल गाऔ। सारी ने पाँव पसार दय ऊखौं जीजा में अपनौ आबे बारो संसार दिखान लगो। समझावे बुझावे के लाने बऊ के बाप-मताई हितुआ नतैत बुलाय, बसरे जतन बेकार भय। सारी ने मरबे की धमकी दई सबके पावन के तरे की धरती सरक गई, फिर का ? चिन्तामन ने सारी खौं अपनी जीवन संगनी बना लऔ।

घन्सू कछू दिना तौ ठीक ठाक रय फिर कछू मनई मन रीने रीने रन लगे और इते चिन्तामन को पीबो पियावो बड़ गऔ। गाँव असपेर में चर्चा होन लगी, फिर का जिते लगे भाग उते लगे आग। घन्सू के भइया के सुदारबे के सबई जतन, समजाबो, बुजाबो, नावते, गुनिया, उर लालपुर की दवाई, दई देवतन खौं सुमरो फिर ढाक के बेई तीन पात। घन्सू बेथिया भर जोरबे तौ हाथ भर टूटबै। बऊअन ने खूब परबार बड़ाओ और देखत देखत गड़ाक मोड़ी मौड़ा आँगन में किलकाँन करन लगे। घर की सुख सम्पन्नता तार-तार हो गई। रोज-रोज की किलकांद सै घर तो घर गाँव परोस कौ सुख चैन छिन गऔ। जान-जान के चिन्तामन ने गिड़वाई में पाँव डार दऔ।

दारू से बड़े बड़न की गिरस्ती और तों और राजन के किला बिला गय फिर चिन्तामन की का औकात। हराँ-हराँ गानो- गुरिया गइयाँ भैसें बिक गई फिर खेत खरेना की बारी आ गई।

दिन-रात कौ घुनीतौ और लोक लाज के मारे घन्सू ने अपने कुआँ के नीम पै पगइया डार कैं गरौ फाँद लऔ और जो सब न देखने आबे सो अपनी आँखे मूंद लईं, न देखो न भौको। मताई को दिन रात रोबो, जीसें ऊकी दोई आँखे चली गईं। रोज की किलकिल सैं दोऊ बहुयें न्यारी हो गईं। न्यारे चूले परचन लगे, चिन्तामन खौं देखो तौ राँसा बना दऔ। बड़ी अपनी ताई तो हल्की अपनी ताई ताने।

खेत पटिया पैंला पट्ट धरे गय फिर जा नौवत आई कै उनै चिन्तामन ने टका-टका मैं बैचवों सुरू करदओ। काय सें बो भुन्सरा सैं दारू से कुल्ला करबै। कन लगत कैं जो न माने बड़न की सीक बौ लै खपइया माँगे भीक। भुन्सरा से एक नातन आजी खों डुरयाकें मंदिर पै छोड़ आवे जिते दिन भर माँगत चूँगत रय। जगना उर बड़ी मजूरी खौं जान लगे। चिन्तामन खौं देखो बो सूक ठठेरो हो गऔ। दिन रात खाँसी चलन लगी कभऊँ ताप तो कभऊँ कछू और जी सैं अचल सरीर हो गओ। ई दारू सैं हँसत खेलत परवार बरबाद हो गऔ।

चिन्तामन खौं खाँसी कौ ठसका आ गऔ, ऊकौ सपनौ टूट गऔं हाँपी बड़न लगी, साँस न समावे। बैचेनी सैं आखे बायरैं कड़ आईं। ऐसी हालत देखके बड़ी चिल्लानी, चिल्लाबो सुन कैं, कम्पोटर दौरत आय। उनने हालत देखी तो झटपट दो इन्जेक्सन और लगा दय। हाँपी रूकबे की बजाय बड़त जावे। डॉक्टर आय उनने आँखे देखी, नबज देखी, कछू नई कई उर चले गय। फिर एक घरीक बाद चिन्तामन की साँसे थम गई। मौं खुलो रै गऔ। कम्पोटर ने चिन्तामन के बदन पै चादरा डार दऔ। बड़ी, हल्की उर जगन घुट-घुट कैं रोबे के लाने मजबूर हते।

चिन्तामन खौं अस्पताल सै घरे भेजवे की तैयारी होन लगी।

-कुण्डेश्वर, टीकमगढ़ (म.प्र.)

बुन्देलखण्ड का विकास और स्त्री का कठोर यथार्थ

-डॉ. (सुश्री) शरद सिंह

कभी-कभी, एक कल्पित कथा-सा लगता कठोर यथार्थ......इस सत्य घटना की तह में बुन्देलखण्ड में स्त्री की दशा का सच निहित है ....

उन्नीस साल की एक लड़की, सांवली, दुबली और घबराई हुई। वह रेलवे स्टेशन में भटक रही थी। वह नहीं जानती थी कि कौन-सी गाड़ी कहां जाएगी। वह पढ़ना नहीं जानती थी। वह किसी से कुछ पूछ भी नहीं पा रही थी क्यों कि उसकी बोली-भाषा समझने वाला वहां कोई नहीं था। कुछ देर प्लेटफॉर्म पर भटकने के बाद वह एक कोने में बैठ कर रोने लगी। लोगों ने समझा कि वह पगली है। उसकी दशा भी उसे पगली सिद्ध कर रही थी। फटी-सी मैली साड़ी और उतारन के रूप में मिला हुआ ढीला ब्लाउज़। कुल दशा ऐसी कि मानो दस दिन से अन्न का दाना उसके पेट में न गया हो। एक कुली का ध्यान उसकी ओर आकृष्ट हुआ। तब तक वहां तमाशबीनों की भीड़ लग गई और कौतूहल जाग उठा कि यह युवती कौन है? वह स्वयं को लोगों से घिरा हुआ पा कर एक बार फिर घबरा कर रोने लगी। वह रोती हुई क्या कह रही थी कोई समझ नहीं पा रहा था। उसी दौरान कोई ओडिया सज्जन उधर आ निकले तब उन्होंने बताया कि वह आंचलिक ओडिया बोल रही है। फिर उन सज्जन ने उस युवती से पूछ-पूछ कर उस युवती की जो दुख भरी गाथा सुनाई उसने सुनने वालों के रोंगटे खड़े कर दिए।

वह युवती ब्याह कर लाई गई थी। किन्तु उसका विवाह वास्तविकता में 'विवाह' नहीं एक प्रकार का सौदा था जिसमें उस युवती तो दो समय की रोटी के बदले बेचा गया था।

अन्य प्रदेशों की भांति बुन्देलखण्ड में भी ओडीसा तथा आदिवासी अंचलों से अनेक लड़कियां को विवाह करके लाया जाना ध्यान दिए जाने योग्य मसला हैं। क्योंकि यह विवाह सामान्य विवाह नहीं है। ये अत्यंत ग़रीब घर की लड़कियां हैं जिनके घर में दो-दो, तीन-तीन दिन चूल्हा नहीं जलता है, ये उन घरों की लड़कियां हैं जिनके मां-बाप के पास इतनी सामर्थ नहीं है कि वे अपनी बेटी का विवाह कर सकें, ये उन परिवारों की लड़कियां हैं जहां उनके परिवारजन उनसे न केवल छुटकारा पाना चाहते हैं वरन् छुटकारा पाने के साथ ही आर्थिक लाभ कमाना चाहते हैं। ये ग़रीब लड़कियां कहीं संतान प्राप्ति के उद्देश्य से लाई जा रही हैं तो कहीं मुफ़्त की नौकरानी पाने की लालच में खरीदी जा रही हैं। इनके खरीददारों पर उंगली उठाना कठिन है क्योंकि वे इन लड़कियों को ब्याह कर ला रहे हैं। इस मसले पर चर्चा करने पर अकसर यही सुनने को मिलता है कि क्षेत्रा में पुरुष और स्त्रियों का अनुपात बिगड़ गया है। लड़कों के विवाह के लिए लड़कियों की कमी हो गई है। माना कि यह सच है कि सोनोग्राफी पर कानूनी शिकंजा कसे जाने के पूर्व कुछ वर्ष पहले तक कन्या भ्रूणों की हत्या की दर ने लड़कियों का प्रतिशत घटाया है लेकिन मात्र यही कारण नहीं है जिससे विवश हो कर सुदूर ग्रामीण एवं आदिवासी अंचलों की अत्यंत विपन्न लड़कियों के साथ विवाह किया जा रहा हो। यह कोई सामाजिक आदर्श का मामला भी नहीं है।

खरीददार जानते हैं कि 'ब्याह कर' लाई गई ये लड़कियां पूरी तरह से उन्हीं की दया पर निर्भर हैं क्योंकि ये लड़कियां न तो पढ़ी-लिखी हैं और न ही इनका कोई नाते-रिश्तेदार इनकी खोज-ख़बर लेने वाला है। ये लड़कियां भी जानती हैं कि इन्हें ब्याहता का दर्ज़ा भले ही दे दिया गया है लेकिन ये सिर नहीं उठा सकती हैं। ये अपनी उपयोगिता जता कर ही जीवन के संसाधन हासिल कर सकती हैं। इन लड़कियों के साथ सबसे बड़ी विडम्बना यह भी है कि ये अपनी बोली-भाषा के अलावा दूसरी बोली-भाषा नहीं जानती हैं अत: ये किसी अन्य व्यक्ति से संवाद स्थापित करके अपने दुख-दर्द भी नहीं बता सकती हैं। इनमें से अनेक लड़कियां ऐसी हैं जिन्होंने इससे पहले कभी किसी बस या रेल पर यात्रा नहीं की थी अत: वे घर लौटने का रास्ता भी नहीं जानती हैं। इससे भी बड़ा दुर्भाग्य यह है कि लौट कर जाने के लिए इनके पास कोई 'अपना' नहीं है। जिन्होंने इन लड़कियों को विवाह के नाम पर अनजान रास्ते पर धकेला है वे या तो इन्हें अपनाएंगे नहीं या फिर कोई और 'ग्राहक' ढूंढ निकालेंगे।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि ग़रीबी की आंच सबसे पहले औरत की देह को जलाती है। अपने पेट की आग बुझाने के लिए एक औरत अपनी देह का सौदा शायद ही कभी करे, वह बिकती है तो अपने परिवार के उन सदस्यों के लिए जिन्हें वह अपने से बढ़ कर प्रेम करती है और जिनके लिए अपना सब कुछ लुटा सकती है। लेकिन देह के खेल का एक पक्ष और भी है जो निरा घिनौना है। यही है वह पक्ष जिसमें परिवार के सदस्य अपने पेट की आग बुझाने के लिए अपनी बेटी या बहन को रुपयों की लालच में किसी के भी हाथों बेच दें। औरतों का जीवन मानो कोई उपभोग-वस्तु हो- कुछ इस तरह स्त्रियों को चंद रुपयों के बदले बेचा और खरीदा जाता है। इस अपराध का रूप 'विवाह' का है ताकि इसे सामाजिक मान्यताओं एवं कानूनी अड़चनों को पार करने में कोई परेशानी न हो।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि बुन्देलखण्ड ने अपनी स्वतंत्रता एवं अस्मिता के लिए लम्बा संघर्ष किया है और इस संघर्ष के बदले बहुत कुछ खोया है। जैसे शेरशाह सूरी और फिर मुगलों के समय अपने राज्यों की स्वतंत्रता के लिए बुन्देला राजाओं से संघर्ष किया और कालिंजर जैसे सुदृढ़ किले की प्रचीरों पर तोप के गोले की चोटें सहीं। अंग्रेजों के समय में हुए बुन्देला संघर्ष एवं स्वतंत्रता आंदोलन के कारण इस भू-भाग को विकास के मार्ग से बहुत दूर रखा गया। यहां उतना ही विकास कार्य किया गया जितना अंग्रेज प्रशासकों अपनी सैन्य सुविधाओं के लिए आवश्यक लगा। जब कोई क्षेत्र विकास की दृष्टि से पिछड़ा रह जाता है तो उसका सबसे बुरा असर पड़ता है वहां की स्त्रियों के जीवन पर। अतातायी आक्रमणकारी आए तो स्त्रियों को पर्दे और सती होने का रास्ता पकड़ा दिया गया। उसे घर की दीवारों के भीतर सुरक्षा के नाम पर कैद रखते हुए शिक्षा से वंचित कर दिया गया। यह बुन्देलखण्ड की स्त्रियों के जीवन का सच है। मानो अशिक्षा का अभिशाप पर्याप्त नहीं था जो उसके साथ दहेज की विपदा भी जोड़ दी गई। नतीजा यह हुआ कि बेटी के जन्म को ही पारिवारिक कष्ट का कारण माना जाने लगा। जब बेटियां ही नहीं होंगी तो बेटों के लिए बहुएं कहां से आएंगी?

बुन्देलखण्ड के विकास के लिए उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश दोनों राज्यों में वर्षों से पैकेज आवंटित किए जा रहे हैं जिनके द्वारा विकास कार्य होते रहते हैं किन्तु विकास के सरकारी आंकड़ों से परे भी कई ऐसे कड़वे सच हैं जिनकी ओर देख कर भी अनदेखा रह जाता है। जहां तक कृषि का प्रश्न है तो औसत से कम बरसात के कारण प्रत्येक दो-तीन वर्ष बाद बुंदेलखंड सूखे की चपेट में आ जाता है। कभी खरीफतो कभी रबी अथवा कभी दोनों फसलें बरबाद हो जाती हैं। जिससे घबरा कर कर्ज में डूबे किसान आत्महत्या जैसा पलायनवादी कदम उठाने लगे हैं।

उत्तर प्रदेश के सात जिलों और मध्यप्रदेश के पांच जिलों में फैला बुंदेलखण्ड आज भी जल, जमीन और सम्मानजनक जीवन के लिए संघर्षरत है। महिलाओं, दलितों और वंचितों की दुखगाथाएं एक अलग ही तस्वीर दिखाती हैं। क्या इन सबके लिए सिर्फसरकारें ही जिम्मेदार हैं अथवा बुन्देलखण्ड के नागरिक भी अपने दायित्वों के प्रति कहीं न कहीं लापरवाह हैं? यह एक अहम् प्रश्न है।

बुन्देलखण्ड में भी पिछले दशकों में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों का अनुपात तेजी से घटा और इसके लिए कम से कम सरकारें तो कदापि जिम्मेदार नहीं हैं। यदि कोई जिम्मेदार है तो वह परम्परागत सोच कि बेटे से वंश चलता है। या फिर बेटी पैदा होगी तो उसके लिए दहेज जुटाना पड़ेगा। बुन्देलखण्ड में औरतों को आज भी पूरी तरह से काम करने की स्वतंत्रता नहीं है। गांव और शहरी क्षेत्र, दोनों स्थानों में आर्थिक रूप से निम्न तथा निम्न मध्यम वर्ग के अनेक परिवार ऐसे हैं जिनके घर की स्त्रियां आज भी तीज-त्यौहारों पर ही घर से बाहर निकलती हैं और वह भी घूंघट अथवा सिर पर साड़ी का पल्ला ओढ़ कर।

जिन तबकों में शिक्षा का प्रसार न्यूनतम है, ऐसे लगभग प्रत्येक परिवार की एक ही कथा है कि आमदनी कम और खाने वाले अधिक। जिसके कारण एक अप्रत्यक्ष चक्र चलता रहता है - आर्थिक तंगी के कारण अपने बच्चों को शिक्षा के बदले काम में लगा देना इस प्रकार के अधिकांश व्यक्ति अकुशल श्रमिक के रूप में अपना पूरा जीवन व्यतीत कर देते हैं। ठीक यही स्थिति इस प्रकार के समुदाय की औरतों की रहती है। ऐसे परिवारों की बालिकाएं अपने छोटे भाई-बहनों को सम्हालने और अर्थोपार्जन के छोटे-मोटे तरीकों में गुज़ार देती हैं। इन्हें शिक्षित किए जाने के संबंध में इनके माता-पिता में रुझान रहता ही नहीं है। 'लड़की को पढ़ा कर क्या करना है?' जैसा विचार इस निम्न आर्थिक वर्ग पर भी प्रभावी रहता है। इस वर्ग में बालिकाओं का जल्दी से जल्दी विवाह कर देना उचित माना जाता है। 'आयु अधिक हो जाने पर अच्छे लड़के नहीं मिलेंगे', जैसे विचार अवयस्क विवाह के कारण बनते हैं। छोटी आयु में घर-गृहस्थी में जुट जाने के बाद शिक्षित होने का अवसर ही नहीं रहता है।

पृथक बुन्देलखण्ड राज्य की मांग करने वालों का यह मानना है कि यदि बुन्देलखण्ड स्वतंत्र राज्य का दर्जा पा जाए तो विकास की गति तेज हो सकती है। यह आंदोलन राख में दबी चिंनगारी के समान यदाकदा सुलगने लगता है। बुंदेलखंड राज्य की लड़ाई तेज करने के इरादे से 17 सितंबर 1989 को शंकर लाल मेहरोत्रा के नेतृत्व में बुंदेलखंड मुक्ति मोर्चा का गठन किया गया था। आंदोलन सर्व प्रथम चर्चा में तब आया जब मोर्चा के आह्वान पर कार्यकर्ताओं ने पूरे बुंदेलखंड में टीवी प्रसारण बंद करने का आंदोलन किया। यह आंदोलन काफी सफल हुआ था। इस आंदोलन में पूरे बुंदेलखंड में मोर्चा कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारियां हुईं।

आंदोलन ने गति पकड़ी और मोर्चा कार्यकर्ताओं ने वर्ष 1994 में मध्यप्रदेश विधानसभा में पृथक राज्य मांग के समर्थन में पर्चे फेंके। कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ा और वर्ष 1995 में उन्होंने शंकर लाल मेहरोत्रा के नेतृत्व में संसद भवन में पर्चे फेंक कर नारेबाजी की। तत्कालीन प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव के निर्देश पर स्व. मेहरोत्रा व वर्तमान बुमुमो अध्यक्ष हरिमोहन विश्वकर्मा सहित नौ लोगों को रात भर संसद भवन में कैद करके रखा गया। विपक्ष के नेता अटल विहारी वाजपाई ने मोर्चा कार्यकर्ताओं को मुक्त कराया। वर्ष 1995 में संसद का घेराव करने के बाद हजारों लोगों ने जंतर मंतर पर क्रमिक अनशन शुरू किया, जिसे उमा भारती के आश्वासन के बाद समाप्त किया गया। वर्ष 1998 में वह दौर आया जब बुंदेलखंडी पृथक राज्य आंदोलन के लिए सड़कों पर उतर आए। आंदोलन उग्र हो चुका था। बुंदेलखंड के सभी जिलों में धरना-प्रदर्शन, चक्का जाम, रेल रोको आंदोलन आदि चल रहे थे। इसी बीच कुछ उपद्रवी तत्वों ने बरुआसागर के निकट 30 जून 1998 को बस में आग लगा दी थी, जिसमें जन हानि हुई थी। इस घटना ने बुंदेलखंड राज्य आंदोलन को ग्रहण लगा दिया था। मोर्चा प्रमुख शंकर लाल मेहरोत्रा सहित नौ लोगों को रासुका के तहत गिरफ्तार किया गया। जेल में रहने के कारण उनका स्वास्थ्य काफी गिर गया और बीमारी के कारण वर्ष 2001 में उनका निधन हो गया। पृथककरण की मांग ले कर राजा बुन्देला भी सामने आए।

इस सारे आंदोलन एवं विकास की तमाम मांगों के बीच स्त्रियों के लिए अलग से कोई मुद्दा नहीं उठाया गया जिससे विकास की वास्तविक जमीन तैयार हो सके। यदि परिवार की स्त्री पढ़ी-लिखी होगी, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होगी तो वह अपने बच्चों के उचित विकास के द्वारा आने वाली पीढ़ी को एक विकसित दृष्टिकोण दे सकेगी। इसी विचार के साथ 'बेटी बचाओ' और 'बालिका शिक्षा' जैसे सरकारी अभियान चलाए जा रहे हैं। बस, आवश्यकता है इन अभियानों से ईमानदारी से जुड़ने की।

एक सर्वे के अनुसार प्रति हजार लड़कों के अनुपात में लड़कियों की संख्या पन्ना में 507, टीकमगढ़ में 901, छतरपुर में 584, दमोह में 913 तथा सागर में 896 पाया गया। यह आंकड़े न केवल चिंताजनक हैं अपितु ओडीसा से लड़कियों को ब्याह कर लाने की विवशता की जमीनी सच्चाई भी उजागर करते हैं। बेटे और बेटियों के के बीच के इस असंतुलित आंकड़े के होते हुए बुन्देलखण्ड की प्रगति के बारे में सोचना ही हास्यास्पद है। बुन्देलखण्ड का वास्तविक विकास तभी हो सकता है जब बेटियों के अस्तित्व को बचाया जाए और उन्हें एक गरिमापूर्ण स्त्रीत्व प्रदान किया जाए।

-एम, एक सौ ग्यारह, शांतिविहार,
रजाखेड़ी, सागर (म.प्र.)-470004
मोबाईल: 9425192542

गुन अवगुन की गली में जिद्द

-डॉ. दया दीक्षित

नरोत्तम रिछारिया छत्तीसगढ़ में रेंजर थे फॉरेस्ट डिपार्टमेन्ट में। जांबाज और बहादुर इतने कै अकेली दम पर जंगलों के जंगल कटवा डारे थे, और क्या मजाल कै एकऊ पेड़ या उसके मौटे मौटे डार डंगार इतै उतै हो पाउते! एक एक पेड़ की गिनती अपने सामने खड़े होकर कराते थे, और अपने अंगाऊँ ट्रकों में लदवा कें सरकारी गोदामों के लाने पठवा कें तब तक साथ रहते थे, जब लों गोदाम का सुपरवाइजर पेड़ों की गिनती करकें, बाकायदा लिखित रसीद उनके हवाले न कर दे। उनकी इस ईमानदारी और निश्ठा सें जहाँ सरकार उनैं बड़ा एहलकार बनाने की सोच रई थी, मई कछू ऐसे लोग हते जिनकी आँखों की किरकिरी थे रेंजर साहब! ऐसे लोगों में रेंजर साहब के ऑफिस के क्लर्क बाबू चपरासियन सें लें कें ठेकेदार, ब्योपारी और इनमें गसे फसे इनई जैसे बेइमान, रिश्वतखोर, मुनाफाखोर सामिल थे। रेंजर साहब की 'न खाएं न खान दैहें' वारी आदत इन लोगों के लानें बिस का कौर बन गईती। नामी ठेकेदार की हालत सांप छछूंदर की सी हो आई। जंगल कटान के ठेका लै तौ लयेते मगर काम सुरू कर पाउते, कै जौ नओ रेंजर आ गओ। कां तौ पैलां पाँचऊ उंगरियां घी में डूबी थीं, और अब तौ देख लो कै घी की को कय, पानी लौ न हतो, कै उंगरियां भींजई जातीं। सो सबरे लोभ के पूतरा बड़े हैरान परेशान।

इस नए एहलकार के पैलां जौन रेंजर साब हते, सो बड़े अच्छे थे न कभऊँ जंगलन तरपीं हेरे, हेरबे की को कय ऑफिस तक नहीं आउतते हफ्तन! बौ तौ जब ठेकेदारों खों बिल इल पास करावने होते थे सो कई टिरौअन के बाद साहब और बाई जी जीप में आएं, मिनट दो मिनट रुके, दसकत करे, और न कभी पेड़ों छालों से मतलब रक्खा। न जड़ी बूटियों सें और न जानवरों के चाम चर्म सें। हिस्सा कौ लिफाफ लओ, और मौज मजे की सैर सपाटों के लियें निकर गए.....। औ जौ रेंजर तौ बरगओ जंगलई में खूँटा गाड़ें रै गओ! सरकारी आवास में लौ नईं जात परमेसरौ। हफ्तन परनकुटिया में डरो रात ऐबी! अगर एसई हालत रई, तब तौ बड़ी मुसकल हो जैहे। सो एक दिना जुरमिल कें सबरे कुबड्डु इखट्टे भए। ठेकेदारों का सिरमौर दांगी मुहल्ला कौ पहलवान दादा लखनपाल दांगी, लकड़ियन की टाल बारौ बिलैया सदन को नत्थामल बिलैया, आरा मशीन कौ रमेसुर, ऑफिस बारौ हैड बाबू, मुंशी और चपरासी राजबकस। बड़ी देर लों पंचायत होत रई इन सबकी।

ठेकेदार दांगी बोलो हैड क्लर्क सें- भैया तुम तौ फाइलों के जानकार हौ, कुछ ऐसा बानक बनाऔ कै फाइलें दारीं भोपालई में अटकी की अटकी रै जांएं, न उतै सें कौनऊ ऑडर आहे, न जे इतै हमपै अत्त मूत पाहें। तुम कऔ तौ हमोरें भोपाल बारों के लियें कछू पइसा टका कौ इंतजाम करें!

हैडक्लर्क- ठेकेदार साब, समय ठीक नईं है अबै। करबे के लानें तो हम भोपाल के हैड ऑफिस खों ऐसौ कील दें कै फिर चाय मूँड़ पटक कें मर जाय जौ रेंजरवा, कछू न कर पाहै, फड़फड़ात रैजैहै, मगर जा जानें राऔ कै राजकाज कबै पल्टी खा जाय, कुछ पता नईं। अलग राज बनबे की तैयारी पूरी हो चुकी है, सो देख लइयो टीबी. और अखबारन में कौनउँ दिना, कै छत्तीसगढ़ अलग हो गओ मध्यपिरदेस सें! फिर तौ भैन..... कां की फाइलें और कां के काम! फिर तौ ससरी दौड़ई दौड़ हौनें कुल दिनन। इतें सें उतै, और उतै सें इतै। एइसें भौत संभर-संभर कें चलनें है अपन खों।

दांगी और बाबू में जे बातें हो रईंती, सब सुन रएते। मगर बिलैया सदन बारे बिलैया जू मनईमन गरया रएते दांगी खों। जब सें दांगी ने भोपाल वारों के लियें पैसा दैबे की बात कही थी, तबई सें बिलैया जू के जी में आगी सी बर गईती। काएसें कै पइसा तौ उनईं खों दैनें परतो, दांगी तौ आग लगा कें दूर ठाड़े होबे वालों में से है। खुद तौ एक छिदाम लों नई काड़त कभऊँ जां देखौ जाँ डंडा, बल्लम फटकारें रत! राजकाज में एसौ चलत क्याऊँ, जौ नईं जानत कै हर जांगां डंडा बल्लमों की फटकार काम नईं देत। उजड्डु ऐबी कऊँ कौ!

ब्योपारी कों कुछ सोचत देख कें हैडबाबू बोले- बिलैया जू! तुम काए चिमानें बैठे! का सोच रए! चिमाबे सें काम नईं चलनें सेठ जू! मुसकल बखत है अपनों!

बिलैया जू नें दीनता सें हाँथ जोर कें खीसें काड़ दईं अपनी, बोले- जई सोच रएेते कै मेल मुहब्बत सें काम निकारना जादा ठीक है। मुजान में तौ हमोरों को रेंजर साब की मालकिन सें मिलो चइये। वैसें भी जनी, लुगाइयन में दया-माया हिया हिलोर जादा होतई, सो स्यात् उनें अपुन औरन पै तरस आ जाय, और बिगरो काम बन जाय अपनों। आदमी चाय जितनों सेर होय बायरें, मगर अपनी घरैतिन के आगें एक नईं चला पाउत। चलता तो भैया जनियन कौ रत है घर में। रेंजर है तो मनई मानुस आखिर, अपनी जनीं की बात तौ माननेंई परै बायै।

चपरासी- जा तौ आप औरन नें भौत भली कई। काय मुंशी जू, आप की तौ चाय जब अवाई-जवाई होत रत बंगला पै, सो आप तौ जानतई हुइयौ कि मालकिन जू बड़ी सुकरतन हैं। मोरी फुआ उनके बासन भांड़े मांजबे जातीं हैं, सो बताउततीं कि मालकिन तीन तीन चार चार घंटा पूजा पाठ करती हैं, बिरित उपास हवन पूजनई में दिन कड़ जातई उनकौ।

मुंशी- हओ जू, जा बात तो है। बड़ी धरमिन करमिन हैं बाई जी। एक दिना मो सें कै रईथीं मालिकराजा, कै मुंशी,- "यहाँ तो बीहड़ जंगल और डांगें हैं। षेर चीता, हिरन, खरगोश तौ हमई नें खूब देखे इतै। आप लोग शिकार करने जाते हो। मृगछाला है मेरे पास, हाँ व्याघ्रचर्म (सिंहचर्म) नहीं है अभी तक, अब जब यहाँ आ ही गए हैं, तो ट्रांसफर होने से पहले एकाध व्याघ्रचर्म तो कम से कम होना ही चाहिये हमारे पास। सुना है सिंहचर्म की आसनी से साधना बड़ी जल्दी फलीभूत होती है, क्यों? ठीक कह रही हूँ। सो मैंने कई- हओ जू सरकार!

चपरासी- "आप औरें अगर उनके ढिंगां जाइ रये हौ, तौ फिर उनके लानें सिंह या व्याघ्रचर्म का आसन जरूर लँय जइयो। पूजा पाठ में लगबे बारी इसी चीजबसत कों उननें अगर ले लिया तो बस जान लो कै बन गओ सब काम अपुन कौ! कौनऊँ और चीज बसत, कै रुपया टका दै नईं सकत अपन औरें काए सें बा रिसवत कहायेगी और रिश्वत के नामई सें रेंजर खिसया जैहैं, मगर आसनी तौ आराम सें

चल जै, पूजा के सामान के नाम पर। सो जई ठीक है। मना भी न कर पायेंगे और लै भी लेंगे।'' तै हो गई कै कल दुपर में, सब जनें जैबी। दुपर में रेंजर साब कौ डर भी नइयां बे तौ बा समय अपनी कुरसी 'से' रये हुइयें मुर्गी के अंडों की नाईं। सो दुपर में जाना जादा ठीक है।

××××××

दूसरे दिना ठेकेदार दांगी और बिलैयाजू जेई दो जनें रेंजरसाब के इतै के लाने जा रएते। रमेसुर के इतै नतैत आ गएते सो बे उनई की सार समार में लगेते। बाबू मुंशी और चपरासी ऑफिस के आदमी थे, सो रेंजरसाब के डर के मारें नईं गए। रेंजर कड़क साहब है। जब सें आओ है, तबसें एक की मुअत्तली, दूसरे की बहाली, जौई रावला चला रओ है, भौत तेज है, सो जे औरें बैसें तौ ठेकेदार और ब्यापारियों के संग थे, मगर कन लगत कै घोड़ा की पिछाड़ी और अफ्सर की अगाड़ी अच्छी नईं होत, सो को अफ्सर या फिर उसकी जनीं के सामनें पर कें अपनी थुक्कम फजीती कराय।

दांगी और बिलैया जू जैसें जैसें साहब के बंगला के नगीचें पोंच रये थे, ऊसई ऊसई उनके जी में हौल सी उठ रईं थीं। का जानें मालकिन बाई जू का सलूक करें। कऊँ ऐसौ न होय, हमोंरों की मंसा भाँप जाँयें और गरयाउन लगें! कऊँ साहबई कों न दै बुलाएँ रिसा कें। औ लेयो जा आ गई उनके बगीचा की फटकिया। सकपकाने से बिलैया जू नें इसारौ दओ दांगी खों कै फिटकिया खोलौ! दांगी ने फटकिया खोली, दोऊ जनें बगीचा में धँसयाए। बगीचा खों पार करबे के बाद, ऐन बड़े बरंडा में आ गए जे औरें। बरंडा में साग सब्जी की डलिया और तखरिया बाँट लँय ढामची बारी डुकरिया बैठीती! जौन जनीं सब्जी बारी डलिया में सें छाँट छाँट कें तखरिया में उम्दा पके लाल टमाटर धर रईती, उसकी अपरूप छब देंख कें ब्यौपारी और दांगी दोऊ के दोऊ जनें निर्भूल से ठाड़े रै गए! जनी हती कै साच्छात, पैरें ओढ़ें महर महर करतीं दमकतीं वनदेवी! रंगत ऐसी गोरी पीरी ऊजरी ज्यों रैन की पिंडी। करिया विशधर से घुंघरारे कारे केषों में लाल फुंदने वारी बालों की लंबी चुटिया, भर मांग लाल लाल इंगुर भोंरा से कारे खुले खुले से तीखे नैन, सुकसारिका सी सुतवां नाक की उठान, दाँत ज्यों मकई के सफेद दाने, गुलाब की रंगत कों मात देते रसीले ओंठ, छब ऐसी नौनी जैसें कौनऊ कलेंडर में की देवी कलेंडर सें कढ़ कें इस बरंडा में उतरयाई होय, कै कौनऊ सजी बजी पुतरिया होय! अबै बे औरें कछू काते कै पुतरिया बोल पड़ी-

-''किससें मिलना है आप औरों को? पिताजी तौ अबै ड्यूटी गए हैं।'' बजाय उत्तर दैबे के इन औरन नें बड़ीं सकुच सें पूंछी-

''काए बिन्नू तुम को हौ?''

-''मैं रेंजर साहब की बड़ी लड़की उर्मिला!

-''बिन्नूराजा, हमोंरों खों साहब सें नईं मालकिन सें काम हतो। उनकी पूजा पाठ की चीज दैबे कों आए हैं, सो बिन्नू तुमाई बड़ी किरपा होय, तनक उनें बुला तौ दइयो बेटा।''

उर्मिला नें सुनी, कई तौ कछू न, मगर मुड़ी हिला दई जी कौ मतलब हतो- हओ, 'कै दैबी'! फिर उसनें टमाटर तुलवाए, डलिया सें बढ़िया ताजी टूटी धनियां की पत्ती लईं, रुमाल में सें कलदार निकारे, डुकरिया खों दए और भीतर खों चल पड़ी।

''ओ भैया, तना डलिया तौ उठवा लइयो'' ढामची बारी डुकरिया काँखती कूंखतीं उठत उठत बोली। ''हओ, बऊ''! दांगी नें कई औ आंगें बढ़कें सब्जी की टुकनिया उठाई और ढामची बारी के मूंड़ पै सधवा कें धरवा दई।

''जीते राऔ बेटा, भगवान तुमें सुखी राखै'' दांगी कों असीसें देती ढामची बारी डुको सब्जियन सें भरी, एन गरई टुकनियाँ धरें मुड़ी हलाउतीं उत्तै सें चली गईं। बिलैया जू नें दांगी कों ऐसें देखो, जैसें कै रये होंय कै जानें कितनी अबेरां निकरहें मालकिन! कऊँ एसौ न होय कै पूजा-ऊजा कर रई होंय तब तौ हो गई बेटा दो तीन घंटा की छुट्टी! सो चिमाने से दोउ जनें बरंडा के एक खंबा सें टिक कें बैठ गए। दांगी नें जेब सें कंघा निकारो और अपनी जुल्फें समारन लगे। बिलैया जू नें बैग में सें अपनी मैनपुरी निकारी, चुनौटी सें चूना निकार कें डिबिया बंद करी बैग में धरी, और गदिया पै तमाखू मीड़न लगे। मिड़ी भई तमाखू में हल्की फूँक मारकें चूना झरया दओ। बढ़िया साफसुथरी तमाखू वारी गदिया दांगी के आंगें कर दई।

''जै सिरी किस्न'' दांगी नें भगवान कौ नाँव लओ, फिर चुटकी में भरी तमाखू मुख में भरकें गुलगुलाउन लगे! बची तमाखू बिलैया जी नें ''जै सिरी क्रेस्न!'' उचार कें मुख में धर लई। जा बेरा उनकी मिची भई आँखें देख कें एसौ लगो, दांगी खों, जैसें बिलैया जू कों सातों सुक्ख मिल गए होंय! देखत जांए दांगी और सोचत जांय कै- अमल में भी इतनों सुक्ख आनंद होत बैन.....। ओ तोरी तमाखू की जै हो जाय पनमेसरी की! कुछ सोच कें तमाखू मों में भरें भरें बोले- ''हम तौ कभऊँ कभऊँ खात इयै, पै तुम तौ बिलैया जू अत्त करें बिल्कुल! मिनट मिनट पै तमाखू चइये तुमें, सो रात में कैसें सोउत हुइयौ? बिना तमाखू के कैसें चैन परत हुइयै काए सेठ जू? वैसे इसके जादा सेबन सें कर्क रोग हो जातई!

बिलैया जू- ''भैया, जौ जान लेओ कै रात में दो तीन बेर तौ आँख खुलतई है, सो सिरयानें धरी रत संजीवनी बुटिया! निकारी और खाई.....। और निराट सुद्ध तमाखू खाऔ अगर खेंतों सें निकरी- सो बा में नईं होत कैंसर फैंसर! कैंसर तौ होतई उन तमाखुअन के पैकटन सें, जिनमें विदेसों की निचुरी भई तमाखू होत!

'ऐं ऽ ऽ?' का कई? फिर कें कइयो तनक? दांगीं कों अचंभौ भओ!

बिलैया जू- कछू पता है, पैलवान जू तुमें देस दुनियां कौ, कै कुँआं के मेंढक मिदरवन की नाईं इतईं भर टर्रयात् फिरत। -अरे जे बिदेस बारे भौत उपद्री हैं, ससुर के इतै सें सुद्ध तमाखू लै जात, और फिर अपनी मसीनन सें पूरौ सत्त काड़ कें, बा निचुरी भई बेस्वाद, बिसैली तमाखू फिरकऊ इतै बेंच देत सस्ते मोल में। औ हमाए कसाई लोभी सेठ साहूकार माटी मोल मिली जई तमाखू कों ऐंन रंगदार खसबूदार बनाकें दिख लो कैसी रंग बिरंगी पन्नियन में भर कें बेंच देतई। जई हत्यारी तमाखू सें हो जात कैंसर फैंसर जैसे रोग दोग।

-हत्त तुमारन की! जान की कीमत पै पइसा कमा रओ अब तौ आदमी, करम पै हाथ धरें पहलवान जू के मों से निकरी!

××××××

ग्राम पंचायत की इस चरोखर में दिनभर गैया भैंसियन के, बुकरा बुकरियन के, बैल बछवन के झुंड के झुंड चरत रत ते, सो बा

टैम तौ दो एक दो एक बरेदी, आदमी मांस चाय जो देख ले। पै अब संजाबेरा कौ अंधयारौ हो चलोतो। ढोर डंगर लै कें बरेदी कब के अपने अपने ठौर ठिकानन खों निकर गये ते। क्योला सी करिया रात घिर रई थी। पेड़ों रूखों के पक्षी परेवा ऐसें चिमा गए थे घोंसलों में जैसें कऊँ बिला गए होंय। भांय भांय करत सुनसान में न आदमी न आदमजात! ऐसे निराट सूने में बरगद के नेंचें बिलैया जू घुग्घू से बने बैठेते! अच्छौ मूरख बनाओ ठेकेदार दांगी नें, कै तुम चलौ, हम दो मिनट में आ रए! अबै लौ ससुर केदार के दो मिनट नईं भए बैन....। न आउन दो। हमईं कब लों बैठे रांएं, चींटा चिटियन सें कटबे के लँए! जा सोच कें बिलैया बस उठई रए थे, कै मोटर साइकिल की फर्राटेदार आवाज सुना परी! बिलैया जू उठत उठत बैठ गए! दूर सें मोटरसाइकिल की लाइट के उजयारे में ठेकेदार दांगी, उसके साथ हैड क्लर्क और चपरासी इन तीनऊँ की तिगड़ी दिखा परी। तनकई देर में बरगद के नेंचें अब जे सब जन मिला कें चार जनें हो गएते।

कोऊ कछू कातो सुनतो, ई के पैलां ठेकेदार के मोबाइल की घंटी सुना परी, ठेकेदार ने मोबाइल निकारो जेब सें, और स्विच बंद करकें धर लओ जेब में।

बिलैया जू- तुम तौ जा बताऔ कै हमें ई डांग जैसी चरौखर में काए बुलालओ।

ठेकेदार- ई सें, कै अब का करें हमोरे! फिर बिलैया जू सें कन लगे कै तुमारेई सामनें रेंजर साब की जनीं नें का कईती, सुनी तौ हती तुमनें, बताऔ सुनीती कै नईं!

बिलैया जू- हओ, सुनी तौ एन हती, रेंजर साब की मालकिन तौ भौत सूधरी हैं, कैसी अच्छी तरां सें लै लईती आसनी अपन सें, बा तौ अगर मोंड़ी नें भांजी न मार दई होती, तौ कभऊँ न लौटाउतीं बे सिंहचर्म!

-'मैं तो सन्न रै गऔतो! छिन भर के लानें ऐसो लगो, जैसें महामाई खेल रई होय, कैसी रुआबदार कीक काड़ी थी मौड़ी नें- मम्मी, फेंकौ जा आसनी, पिताजी के आंगें न चली, सो तुमें पुटयाबे आ गए जे बनिया सूदखोर! फेंक मारौ इनके मों पै जा रिसवत!

-अपनें आगें चाये जो कछू करियो, पै जौ लों हम हैं, तौ लों किसी की मजाल नईं कै घर की इज्जत सें खिलवाड़ कर ले!

ठेकेदार दांगी- सांसऊँ ऐसई लगो, जैसें मोंडी न हो कें साच्छात चंडी, दुर्गा होय! परमेसरी तबईं षांत भई, जब मालकिन नें बड़ी दीनता सें हमोंरों सें कईती कै भैया आसनी तौ मुलक की धरीं धरीं सड़ रईं हैं, हमें का करनै, लै जाऔ अपनी जा मुन्यात!

-''सो भैया, अब तुमईं बताऔ कै का होंय चइये! रेंजर सें कैसें तो पटरी बैठै, औ कैसें अपने नोंन पानी कौ डौल बैठै! जौई, हाल रओ तौ कोंडियन के मुहताज हो जायेंगे अपन औरें, जमा जथा तौ जंगलन की कटाई खोंलों कम पर जै है!

××××××

उर्मिला-''देवीदीन! हमाए लानें चाय चढ़ाऔ जल्दी!'' पूजा पाठ में भौत अबेर हो गई आज तौ! देवीदीन नें चूले पै चाय कौ पानी चढ़ा दओ, और अदरक कुचरन लगो चाय में डारबे के लानें। ठंड शुरू हो गईती, उर्मिला मईं चूले लों बैठी तापन लगी!

-''दिन भर चाय, दिन भर चाय! आदौ दिन चढ़याओ, औ जौ चाय कौ रुजगार खतम नईं भओ आगी लगो!'' उर्मिला नें अम्मा की जा फ्टकार सुनी, रओ न गओ, बोली- हमें काए सुना रईं अम्मा, हम तौ सबेरें सें अबै पैली चाय पियेंगे! तुम जानती तौ हौ कि बिना पूजापाठ करें हम चाय नईं पीते!

अम्मा-''पऊवन पत्ती खतम हो जातई दिनभर घोर घोर कें पीबे में! जानें कितनी तिसना है बरगई!''

उर्मिला- ''अम्मा, हमाए पीछें काए परीं, सो का हम जानत नईयां, अगर कल आसनी लै लैन देते तौ भौत बढ़िया रतो, काए। आजई तुमें दिखा परी हमारी चाय! पैले न कई कभऊँ! जौ लों हम इस घर में हैं, तौ लों न चल पाहै कोऊ की मनमानी! जो न्याय की बात हुइयै बई करनै परै सबै!

अम्मा-''रंडी, हरजाई! हमें न्याव सिकै रई। अपने इतै जइये, सो जो जी में आय करिये, इतै हमाई गिरस्ती में लूहर न लगा! दो अक्षर का पढ़ गई, सेंटत नइयां! चुगलखोरन कऊँ की! बाप सें एक में चार मिला कें उनन की चुगली कर दई! और जैसई बाप, हम रोकतई रै गए, औ परमेसरे नें खड़ें खड़ें पुलस बुला कें मुसकें बंदवा दईं ठेकेदार और सेठ साहूकार की। असपेर भर में बदनाम हो गए! बिलैया जू और दांगी। हो गई तोरे जी में ठंडक! ढोंस ले चाय चबंदना गैलन ढकोसू।

उर्मिला- जो रिश्वत की पेशकश करेगा, एसई जेल की हवा खायेगा। पिताजी खों फंस रए थे, खुदईं फंस गए सारे जू! बुरऔ काम करहें, तौ बदनामी तौ हुइयैई। पिताजी तौ धमका भर रये थे, मगर विधायक चाचा नें तुरतई एक्सन लै लओ तौ का करते पिताजी और का करते हम! हमाए चाय पीबे में तुम अब एक आखर भी बोलीं अम्मा, तौ हम चाय नहीं पियेंगे।''

अम्मा- न, पी! तेहा तौ देखौ तनक बाई जू के?

-गुस्सा हो परी उर्मिला, देखौ अम्मा हम आखिरी बार कै रए, शांति सें चाय पी लैन दो, जादा न करौ!

अम्मा- का करहै तें, हमाऔ मों बांध रई, काए? तोरे डर परे का? हम कात कै न पी कभऊँ, बिल्कुल ना पी रंडी असल की होय तौ......।''

उर्मिला की आँखों में आँसू आ गए! सबेरे सें कितनी बार चाय बनी, सबनें कितनी कितनी बेर पी हमनें छुई तक नईं तब कछू नईं, औ हमाई बेरां पै पउवन पत्ती खर्च होबे की बात! जैसे हमईं पी जात होंय सबरी! ठीक है, अम्मा, अपने घर में चाय न पियन दो, करलो अत्त जब लौ बिदा नईं होत! अपने घरै चले जैबी, फिर गरयाइयो, कीखों गरयाहौ! नईं पीनें तुमाई चाय, छोड़ दई आज सें, लेओ। बनी बनाई चाय उसनें वाशबेसिन के पास नरदा में फेंक दई, और कभी इस घर में चाय न पीने की सोंह उठा लई! बिल्कुल पक्की सोंह! उए एकदम सें मासाब की बातन की खबर हो आई। नंदलाल मासाब जई तौ सिकैउतते। कक्षा पाँच में थी उर्मिला। मासाब की एक एक बात ध्यान सें सुनतती खासकर उनकौ बौ दोहा- ''गुन के गाहक सहस नर, बिनगुन लहै न कोय, जैसें कागा कोकिला, सब्द सुनै सब कोय।'' और दूसरी बा चौपाई- ''रघुकुल रीत सदा चलि आई, प्रान जांय पर वचन न जाई!'' कितनी अच्छी तरां सें समझाउतते बे। उनकी बातों का सार जई तौ था कै जनीमांस की पूँछ उनके गुनन के कारन

होती है। सो मनुख कों सदा अच्छे कामों की पिरतिज्ञा करो चइये। बैसें भी अच्छे काम, औ अच्छे गुन सबै नीके लगत हैं। उर्मिला कों याद हो आई उन बहनजी की बातें, और कैनात जौन बे कक्षा में चाये जब कतीतीं कै काम प्यारौ होत, चाम प्यारौ नईं होत।

सो तुमोरों कों मेहनत सें जी न चुराना चाहिए। चाय पढबो लिखबो होय औ चाय घर बार के काम दंद. ...। जानें का का सोच रईती उर्मिला। ठीकई तौ है चाय कौन अच्छी चीज आय। बुरई है जा लत। छोड़बे की सोंह उठाकें अच्छौई करो। कुल्ल टैम तौ चाय बनाबे पीबे मेंई लग जात। अम्मा बिचारी कों ऊसई दोश दै रए हम।

तब सें आज कै मईना हो गए, उर्मिला नें चाय नईं पी, तौ फिर नईं पी! बैन, भइया, नौकर, चपरासी, रेंजरसाब और स्वयम् उर्मिला की अम्मा ने लौ मनाओ पथाओ, कै हाड़ कपाबे बारी ठंड में चाय न छोड़ै, पी लै, मगर उर्मिला तौ फिर उर्मिला! सीधन में सीधी और जिद्दन में महाजिद्दन, एक तौ जल्दी कछू ठानतीं नईयां और ठान लई तौ फिर करकें छोड़नै.......। सुरू की आदत है।

××××××

आज बिदा हो रईती उर्मिला! पावने महराज तीन दिना सें मेलेते! खूब खातिरदारी आदर सत्कार करो रेंजर साब नें। उनकी जनीं नें कौनऊँ कोर कसर नईं छोड़ी पावनन के मानपान में। भाँत भाँत के विंजन! कलेवा में अलग, दुपर में ब्यारी में अलग कभी पक्की तौ कभी कच्ची रसुइयां! उतै जैंबे बैठें पावने, औ इतै बरन बरन की गारीं गब रईं।

– चाँवर छानों, गौहूँ फटकों,
मोरे मन में जा आई कै समधी खों उठा कें दै दै पटकों
एक दार, दो दार, तीन दार.......
बड़न के रावला मस्ता दिवाने........

माँय बिदा के लानें नाउन भाभी उर्मिला कौ उपटनों कर रईती, और नांय बाहर बारे मुलाकाती बरंडा में बिलैया जू, रमेसुर और ठेकेदार दांगी उर्मिला सें मुलाखात के लियें बैठेते। भलाऊँ रिसबत के लानें जेल काटीती, मगर आज दुगनी तिगनी दीनता, दया माया सें जे औरें उर्मिला सें भेंट के लियें आए थे! आपुस में बातें हो रईतीं! बातें भी रेंजर और उनकी बिटिया उर्मिला के बारे में थीं।

बिलैया जू– भैया, हमें तौ चपरासी राजबकस की फुआ नें बताईती भीतरी बातें, नईं तौ का पता परतो! फुआ हमाए इतै सोऊ घिनौची भरतीं हैं। बिनईं ने बताओ कै है तौ कम उमर की, पै भौत गुनी है उर्मिला, उसी नें कई थी रेंजर साब सें, पिताजी मँहगाई बढ़ रई है, तौ उसी हिसाब सें ठेका भी नए दामों पै उठना चाहिये था, ठेकेदार खों भलाऊँ एक पइसा की बचत न होए, मगर उसकी गांठ सें भी न जाए! मजूरों की मजूरी तौ निकरै कम सें कम!

–आप सोच कें देखौ, हम गलत नईं कै रए! बे औरें तौ जेल में पिड़े, काम तौ फॉरेस्ट डिपार्टमेन्ट कौ रुक रओ है! परेसान आप भी हौ इसके कारन! हम तौ पिताजी, आप से कहेंगे कै आप प्रति पेड़े पर पाँच रुपये की बढ़त पर कटाई का ऐलान लिखित कर दो, और मेठ, मजूरों, सुपरवाइजरों से मौखात कै दो कै छालों, खालों, जड़ी बूटियों पर उसी का हक, जिसको मिल जाँयें, फिर देखियो आप, कै एकई दिना में आप सें आप कितेक मजूर मांस जुड़ने लगेंगे। पिताजी काम एसौ करें चहिये कि सरकार और कामगार दोउअन कौ फायदा होय! और अफसर एहलकार भी चैन की बंसी बजाय।

–आप तौ राउंड लगाते ही हौ, हम भी एक दो बार चकफेरी लगाऐंगे!

ठेकेदार दांगी– सांसऊँ भैया, रेंजर साब और उनकी बिन्नू नें तौ हमोंरों को बचा लिया, हमोरें जेलई में पिड़े रै गए, और रेंजरसाब नें स्वयम् सामनें हों के जंगल कटवाया, मजूरनन नें सोऊ संग दओ, जौन मजूर हमोंरन के सामने नखरयाते थे काम न करतते, बेई बैन.... अकेलें दस दस आदमियन कौ काम, उठा रए थे, सो देख लो, हर्रा लगो न फिटकरी औ रंग ऐन चोखौ! सैकड़ों का नईं हजारों का मुनाफा हुआ!

बिलैया जू– दिन दिन भूखी प्यासी रई मौड़ी, मुस्तैदी सें देख रेख की जंगलों की कटान की! बाप बिटिया ऐन सोंनें से खरे, हरिच्चंद के कुटम के, मुनाफा की गड्डी की गड्डी पकरा गएते रेंजर साब, रमेसुर और दांगी की जनियों को। मजूरी चुकाबे के लियें लएते हजारों और लौटाफेरी में दये लाखों।

रमेसुर– सात जनम लै लें, फिरऊँ इनके ऋण सें उऋण नईं हो सकते अपन औरें, काए बिलैया जू? जे औरें न होते, तौ कौन गत होती अपनी? बिक जाते, तऊ न मजूरी निकर पउती जंगलों की! बिलैया जू– साँसी कै रए हौ सेठ जू! रेंजर साब ने तौ धमकाने के लियें पुलस बुलाईती, मगर विधायक नासपरे नें बरत आगी में अपनी रोटीं सेंकीं। याद करौ, जौई विधायक हतो, जिसनें अपन औरन खों धमकाओतो कै अगर चुनाव कौ चंदा न दओ तौ बा गत बनाऊँगा.....कै सात पुश्तें याद रक्खोगे। सो देख लो, मौका मिलतई कैसो डसो करियाकाटे नें।

भीतर द्वारे सें बाहर आउतीं उर्मिला खों देख कें, सब जनें एकदम सें अकबका कें ठाड़े हो गए! समझ नईं पर रई, कै का और कैसें कँय!

रमेसुर– बिन्नू राजा, हिरदँय सें असीस है बेटा, जाँ जाऔ, मई राज करौ उजयारौ फैलाऔ!

ठेकेदार दांगी– बेटा, जैसौ तुमनें और साब नें निभाओ, हमोरें उससें कभी उऋण नईं हो सकते! हम तौ बिना मोल बिक गए बेटा, तुम्हारे किसी लायक नईं, फिरऊँ कभी बेरा बखत हमें याद कर लइयो, रोंम रोंम सें तुम्हारे कर्जदार हैं!

बिलैया जू– बेटा रिसपत नोंईं, जा समुज लो कै हमोरें घर गाँव के चचा ताऊ हैं तुमारे! बा जौन कलुरिया ठाड़ी बेटा, सो तुमाए लानें है। चाय अबै हँका लँय जाऔ, औ चाय पाछें लै जइयो, और अकेली कलुरिया नईं, उसके संगै बरेदी भी। खर्च खूँट तनखाय सब हमारी तरफसें। सुरहिन गऊ सें कम नइयां हमाई कलुरिया औ सूधरी इतेक कै बच्चा लौ दूध उतार ले।

उर्मिला नें सबकी बातें सुनी। एक तौ बिदा कौ बखत, घर गाँव छुटने की पीर, दूसरें नैनू सौ मुलामियत बारौ कोंरौ जी, आँखन सें अँसुआ ढरक परे। भरे गरे सें बोली– चाचा ताऊ तौ हौई आप हमारे। कौनऊ गल्ती हो गई होय तौ......। इससें जादा बोल न पाई उर्मिला, आंगे की बात हिचकियन में रै गई। बिलैया जू नें आंगे बढ़ कें मूंड पें हाथ रक्खो, पीठ थपथपाई! आँखें तौ उनकी का सबकी भरीतीं। सबई जनें बेटी बिटारुअन के बाप थे आखर! पाँव छुए मोंड़ी के, गाँठ बाँधबे

कें लँय रुपया हाथ में रक्खे और भरी आँखों भरे जी सें बाहर जाबे के लानें चल पड़े।

××××××

बोलेरो की पीछे बारी सीट पै बैठी उर्मिला नें घूँघट माथे तक करकें सड़क किनारें लगे बोर्ड खों देखो- पृथ्वीपुर!! अच्छा, तौ अब तनकई दूर रै गओ टीकमगढ़! उर्मिला खों याद आई कै जब ब्याऔ की बिदा में पैली बार आईती सो, बगलगीर नए नवेले दूल्हा नें जई बोर्ड पढ़ कें कहा था-''घंटाक की रस्ता और रै गई, घर की!''

ब्याऔ की बिदा में केवल तीन रोज रईती टीकमगढ़ में! चौथे दिना देवी देवता पुजनें थे, लेकिन कारन ऐसे बने कै बजाए देवी देवता पुजबे के, चौथी की बिदाई हो गई! उर्मिला जैसी गईती, ऊसई चलीं आई कोरी कोरी! पुरा पाले की भावज भौजाइयन ने कैसी गत बना दईती बोल कुबोलन भरे हंसी मजाक सें। पुरा पाले की याद सें एकदम सें बाबुल के घर की याद हो आई! मगर राजकुंवर से वर को पाने की प्रसन्नता भी कम नई थी। मिलन की हौस फूल सें धक धक होने लगी। परीक्षा चल रई थी उपेन्द्र की। सो बे तौ बनारस में ही थे। बिदा कौ महूरत सुद कें आ गओतो। सो ससुरारियों के संग बिदाई हो गईती। चलौ कछु नइयां मईना भरे की बात है बस। फिर तौ पूरे दो मईना की छुट्टी है उपेन्द्र की.....। दो महीना लौ दिन रात कौ संग साथ रैहै हमाऔ उनकौ....। इसके आंगे की सोच कें जी एकदम सें इतनी तेजी से धड़कन लगो, ज्यों रेल चल परी होय....। अजब हालत थी। एक आँख में दुक्ख और दूसरी में हास! सुख दुख में डूबती उतराती उर्मिला नें ससुरार की देहरी पै पाँव रक्खे!

समय की चाल किसनें जानी, कै आबे बारे दिन सुदिन थे कै दुर्दिन थे कै हिम्मत हौसले के दिन थे। उर्मिला बड़े घर की बेटी थी, बाप रेंजर थे और ननियाउरे की, बिजावर में सैकड़ों एकड़ खेती पाती के अकेले बारिस थे। अपनी काश्तकारी की टक्कर के धनीमानी दस गाँवन की महाजनी बारे 'प्रसिद्ध नारायण सौनकिया' के बड़े लरका उपेन्द्र सें उन्होंने उर्मिला का ब्याह किया था। उपेन्द्र बनारस के बी.एच.यू. सें बी.टेक. कर रए थे। पहला सेमेस्टर हो चुका था, जबकें उर्मिला बी.ए. के पहले साल की परीक्षा दै चुकी थी। हालांकै रेंजर इतनी कम उमर में ब्याह के पक्ष में न हते, मगर सौनकिया जी खों अबेर बर्दाश्त नहीं थी फिर उर्मिला की अम्मा कों भी उतावली कम नई थी, सो ब्याऔ हो परो। बड़े बाप की बेटी उर्मिला अब इस बड़े घर खानदान की बहू थी। इयै समय कौ फेर ही कहें कै ससुर सौनकिया जू की आन गाँवों लों फैली महाजनी में न जानें किसकी नजर लग गई। ऐसौ डाकौ परौ कै डांकुअन नें छला मुदरी तक न छोड़ी। दुधारू ढोर तक हाँक लै गए। हरवाहों, चरवाहों और आज्ञापालकों को न जानें कौन सी जड़ी सुंघाई कै नषे में सोउत के सोउत रै गए। सौनकिया जू खों बन्दूक की नोंक सें जगाया। उनई की शिनाख्त पै राई रत्ती सब बाँध लओ। पसेरियों सोना और मनों चाँदी के साथ जैसें भाग्यलक्ष्मी रूठ कें चली गई उनके घर सें। एक तौ डांके की मार, दूसरे लैनदारों की फौज की फौज घर घेरें खड़ी। अब का होवै राम! दुख, अपमान और सदमे की हालियत! सौनकिया जू इस आग में ऐसे जले कै उनके प्राण पखेरुओं नें काया कौ संग छोड़ दओ।

नई गौनियाऊ बहू उर्मिला के सगुन सात लौ पूरे नई हो पाए, कै आफ्तों के पहाड़ टूट परे! सास पैलऊँ न हतीं। ससुर मरे सौ जंजाल छोड़ कें। पति भतार के बाद अब बई तौ हती बड़ी इस परिवार में। तीन ननदें और दो छोटे छोटे देओर। एक नंदबाई तौ उर्मिला जितनी ही थी और दूसरी तीन चार साल छोटी थी। तीसरी ननद थी छः साल की, देवरों से डेढ़ दो बरस बड़ी। फिर जुड़वां देवर थे। तेरईं में सबरे रिष्तेदार जुड़े। रिष्तेदारन की भली चलाईं, खाईं गकरियां गाए गीत, जे चले चैतुआ मीत। तेरईं खाई, घड़ियाली अँसुआ बहाए और दुनियांदार बन कें चले गए। कंगाल, कच्ची गिरस्ती में कोऊ काए खों हाथ डारतो? दिन दिन भर पुलस बारों के संगै कोऊ काए खों खुपड़िया खबाउतो! कन लगत कै सुख के सब साथी, दुख में न कोय! सो ओई हालत इतै हती। करो तौ कोऊ नें कछू न पै जो उर्मिला नें करो, उससें सब नातेदार उर्मिला कों भांत भांत सें गरया गए। मगर उर्मिला ने उफतक नई करी, षांत बनी रई। जई सोच कें, कि उसनें जो किया, वह ठीक था। ससुर के क्रिया करम छोटे देओर से करवाए, उपेन्द्र खों खबर नई दी, अगर उपेन्द्र आउते तौ उनके पूरे साल की मेहनत पै पानी फिर जातो, साल भर में लगे धन पईसा की बर्बादी होती सो अलग, ऊसई अब तौ पइसन के लाले हते। जई सब सोच कें उसनें उपेन्द्र खों अच्छी बुरई कैसऊ खबर नई दी।

रेंजर साब नरोत्तम रिछारिया जू बिटिया पै परी इस विपद सें भौत विचलित बेचैन थे। दमाद की पढ़ाई तौ अबै षुरुअई भई है, न कोउ घर कौ रखैया, न दिखैया, न खिलैया का हुइयै राम मोंड़ी कौ! कैसें रै पाहै, कैसें कटेगी जिंदगानी उसकी। हमनें भी तौ कसर नई लगाई, काए आ गए बातन में? अगर उर्मिला की अम्मा की न मानते, सौनकिया जू की न सुनते, तौ बिटिया कौ ऐसौ भाग न फूटतो। घर में रैकें आराम सें नोंनें पढ़ लिख रई होती. ....। ओ मोरी पुतरिया.....। हिलक हिलक कें रो परे रिछारिया जू.....। जी हतो कै उमड़ उमड़ कें बायरें आ रओतो! संजाबेरा हो रईती। आकास में सूरज नारायण डूब रयेते, और इतै रेंजर साब कौ जी डूब रओतो बिटिया की सोच सोच कें।

××××××

रेंजर साब अपने ननयावरे बिजावर में लिवा ल्यायते उर्मिला और उसके ससुरारियन कों। चैत के मईना भर बे इतईं रत। बलकें कभऊँ कभऊँ तौ पूरे दो मईना लग जात उनें। जेई छुट्टी चाय भलाऊँ लै लेबें बे, पै इसके अलावा पूरे साल में उननें कभऊँ छुट्टी नई लई, उर्मिला के ब्याव तक में नई। अबै भी वे विजावर में हते, जब डाके की खबर मिलीती। स्वयम् टीकमगढ़ खों निगबे सें पैलें उननें घरै खबर करा दईती कै सब जनें बिजावर चले आयें। सो उर्मिला की अम्मा भर आ पाईतीं, उर्मिला के भैया बैनन के इम्तहान चल रये थे, सो उनें बिलैया जू की जनीं अपने इतै लिवा लै गईंती।

मुश्किल सें दोइ तीन दिना कड़ पाए हुइयें, कै लैनदारों की आमद होन लगी, जिनकौ गानों गुरिया, पइसा टका जमीन जायदाद फंसीती सौनकिया जू के इतै, उनोंरन नें धरती आकास एक करकें पता लगाई लओ कै सौनकिया जू का परिवार बिजावर में है! सो अब तौ लैनदारों की आमद नें रिछारिया जू की देहरी खूँद खाई। ज्वाब देत देत रिछारिया जू की नाक में दम हो गई। इसकौ उपाय उनें जेई जँचों कै ननयावरे की करमटिया बारी जांगा बेंच कें मोंड़ी के मूँड़ पै धरो कर्जा

उतार दें। मगर रिछारिया जू की जनी नें आड़े हाथन लओ रिछारिया जू खों। बोली- जेई ठरगा जू बचीं अकेली सो इनई खों गहा दो जमीन जायदाद बाकी मौड़ा मोड़ियन खों धतूरौ खबा दो। ''खबरदार, जो तिल भरी जिमीन जांगा भी इतै सें उतै करी।''

खूब किलकिल दांती भई। उर्मिला के दुक्ख कौ पारावार नई। इतनी उमर हो गईती, मताई बाप के बीचां ऐसी रार लड़ाई इससें पैलें उसनें नई देखीती। आज उसी के कारन इतनों कलेस हो रओतो। बाप कौ तौ नई, मगर मताई कौ मन उर्मिला सें जैसें फिर सौ गओतो, खिंची खिंची सी रान लगी उर्मिला सें। बोल बतकाव भौतई कम हो गओ मताई बिटिया में। उर्मिला की बड़ी नंद खों भी बिनई कहें, सबरी बातें समुझ में आ गई। मगर करती का। मन मसोस कें रै गई। उसकी जई कोषिष थी कै छोटे छोटे भैया बैन ढंगढौरे सें राएँ ऐसी कौनऊ बात न हो परै जिससें उर्मिला भाभी कों हमोंरों के कारण नीचौ देखने परै। उसकी खुद समझ में नई आ रई थी कै भाभी की अम्मा पिताजी कौ कलेस कैसें खतम होए।

भौत सोच विचार के बाद उर्मिला नें अपनी नंद सें राय सलाय करी। और उस पै अमल की तैयारी भी।

××××××

न चाहत भयें, रिछारिया जू खों उर्मिला की बात माननेंई परी। और चारा भी तौ नईं हतो कछू। उर्मिला नें भौत समझाई कि- ''पिताजी, हम जो कै रए बई में आपकी औ हमाई सबकी भलाई है। अम्मा अनयाव की नईं सांचियई तौ काती हैं। अगर हमई अकेले होते आपकी संतान तब तौ ठीकई ठीक हती, मगर आंगे और भैया बैनें हैं। उनके कल की चिंता आपकों करनेंई परहै।

सो ऐई सब सोच कै हम कें रए आपसें कि टीकमगढ़ की हमाई जमीन जांगा, घर मकान बेंच कें हमाऔ कर्जा चुकवा देओ, और जो कछू बच राय सो कुंडेष्वर के पास में रैबे की जांगा, भलाऊँ चाए दो कमरा होंय, लिबआ देओ। काएसें कै कुंडेष्वर तरपीं हमाई ससुरार की कुछ खेती पाती है।''

रिछारिया जू नें बज्र की छाती करकें बिटिया की कई करी। टीकमगढ़ में जां कुंडेष्वर में उर्मिला के सासरे की तरपीं खेतीबाड़ी हती मई एक अधबनो मकान लैकें मरम्मत करा दई। उनके रोकत रोकत पै उर्मिला नें जाबे की ठान लई। उसकौ तौ एक एक छिन कैसौ पहाड़ की नाईं बीत रओतो इतै। दुनियादारी की रीत और बात व्योहार के जहर कों उर्मिला सें न लीलत बनै न उगलत। बाह री दुनियादारी! चारई दिना में घर गाँव की बिटिया सबयार बायरें की कर दई। जब सगी मताई तक अपनी न भई तौ पुरापाले की को कय। भाँत भाँत की बातें नांय मांय सें उर्मिला के कान छेदन लगींतीं कै बड़ी बिटिया भौतई असगुनियाऊ निकरी, कै पांव धरतई सासरे कौ खोज मिटा दओ, सब कुछ स्वाहा कर दओ, कै सासरे बारे कौरन के मुँहताज हो गए, कै अब बाप के टुकड़ा टोरबे के लानें बिन्नू सासरे के कुटुम के संगै बाप की छाती पै होरा भूंजबे आ गई। उर्मिला के लियें अब इतै रैबो दुसवार हो गओ। विधना के लेख को मिटा सकत, पै ब्याऔ होतई, का बिटिया के लिये घरगाँव ई तरां से पराऔ औ बेदर्दी हो जात! सासरे पै बिपत का उर्मिला नें बुलाईती, फिरकाए सब उए कोसने दै रएते।

रिछारिया जू नें उर्मिला कों समझाबे में कोर कसर नईं रक्खी, ऊँचनीच समझाई, कई कै छोटे छोटे बच्चों और सियानी होती लड़कियों संगै इस तरां सें अकेली रहना ठीक नईं है। खतरा और परेषानियों के सिवा कुछ नईं मिलना है। मगर उर्मिला थी तौ उन्हीं की संतान। बाप के गुन और जिद् उसमें भी थी। स्वाभिमान कूट कूट कें भरा था। थकहार कें रिछारिया जू नें भरे मन सें बिटिया की बिदा करी, बे तौ खुदई जा रएते छोड़बे। मगर उर्मिला नें जा कह कें उनके पाँव रोक दए कै खेत खरयान की बेरा में माटी कौ डीला तक काम में लै लओ जात, इस बखत नई, खरयानों उठबे के बाद भलाऊँ आप हमौरों को देखबे तकबे आ जइयो।''

भरे मन सें रिछारिया जू नें घर गृहस्थी की छोटी बड़ी चीज बसत के संगै अपनों सबसें विष्वास बारौ आदमी बल्ले बब्बा, जिसनें उर्मिला कों गोदी में खिलाओतो, उसकों भी उर्मिला के संगै पठै दओ। रिछारिया जू नें भौत कछू दओ, मगर जब वे नोटन की गड्डी दैन लगे, तब उर्मिला नें नई लए पइसा, मना कर दई। बोली- पिताजी आपनें सब कछू तौ दओ है, कुछ कमी नई रक्खी। बीजबाड़ी सें लैकें अनाजपानी ओढ़ना बिछौना....। अब हमें भी मेहनत करकें कमाउन खान दो, आफ्त बिपत में तौ तुम हौई हमारे लियें। थैली रख लो, जब जरूरत हुइयै सो लै लैबी। कुछ हम पर भी विष्वास करौ पिताजी आपका नाम नहीं डुबाऐंगे। भरे मन सें उसनें अम्मा सें भेंट करी, पिताजी कों प्रणाम करकें गाड़ी में बैठ गई। नई कटीली और ऊबड़ खाबड़ राहों पर आंगें बढ़ रईती गाड़ी।

××××××

दोई चार दिनन में उर्मिला और उसकी बड़ी नंद नें मिलकें नए घर की साज समार कर लई। घर गिरस्ती संगोबे में पुरा पाले की दमेलन जिज्जी और उनके बड़े लरका कमलकिशोर नें इनोंरन की खूब मदद करी। बीजबाड़ी, हरवारे के इंतजाम सें लैकें जोत बखर के लानें टैक्टर नहर के पानी की इमदाद दई। और लो, खेतन में जिठऊ फसल मुस्क्यान लगी.....। दिन बीतत का देर लगत। सो एक दिना भोर भुनसारे उपेन्द्र के पांव घर के खुले आंगन में परे....। सब भइया बैनें और स्वयम् उर्मिला उपेन्द्र सें चिपट कें खूब रोये। रोउत किलपत उनकी हिलकियां बंद गई। उपेन्द्र स्वयम् भी खूबई खूब रोए, धारोंधार अँसुआ कड़ परे उनके....। मुसकल सें शांत हो पाए सबरे।

जब सें उपेन्द्र इतै आएते तबई से रीने रीने से थे। काए न होते, विधना नें हँसत खेलत परिवार कों ऐसी मुसीबत में डार दओ....। बे तौ एसे हो गए निर्जीव से, ज्यों माटी कौ पूतरा! न हँसें बोलें, न कऊँ आएं जाएं न पुरा पाले सें मतलब न भैया बैनन सें और न अपनी दुलैया उर्मिला सें। बस जी डारें पलका पै परे रत! भौत कैबे सुनबे पै उर्मिला के संगै दो एक बेर खेतन तरपीं गए, मगर वहाँ की हरयाई, पुरवैया, पाखी पखेरू, बेलरूखों सें उनकौ मन तौ न बदलो, हाँ जा बात जरूर जम गई कै कंकड खंखड़ और काँटों गोखरुओं सें भरी इस जमीन पर अब कभी पाँव नईं रक्खेंगे......।

इसमें उनका दोष भी नईं। बाप के राज में करीं जमीन सें कभी वास्ता नई पड़ा, राजकुवंर की सी जिंदगानी रही थी, सो उसी की आदत थी। उपेन्द्र उन लोगों में से था जो आदतों के गुलाम होकर जीते हैं! होबे के लानें तौ उर्मिला भी अपने पिता के इतै राजकुंअरी की सी षान मान सें रई थी, मगर उसके जीवट का पानी कुछ और ही था,

खुद्दारी और स्वाभिमान की पुतरिया थी उर्मिला! अगर ऐसी न होती तो उजाड़ घर खेती कों ऐसौ चमन न कर पाउती! बा तौ रात दिन पल छिन खेती पाती, घर गिरस्ती नंद देवरों की चिंता फिक्र में जैसे दिमानी सी हो गईती न अपने तन की होंस न खैबे पैरबे बनाव सिंगार की चिंता.....। ऊपर सें दिनोंदिन बढ़ रई उपेन्द्र की चिड़चिड़ी बातें, रार लराई....। मगर उर्मिला जा सोच कें गम खात रई, कै अबै घाव नओ है। पिता के न रैबे कौ सदमा है, दुक्ख है, ऐसे में लराई कौ ज्वाब लराई सें नईं प्रैमनेंम से दओ चइये, मगर प्रैमनैम करत करत पै फिर फिर फज़ीहत की बातें। ऐसीं कै उर्मिला की रुबाई छूट परै उन बातों घातौं सें। सुरत सेज पै बेस्वा की नाईं उर्मिला चाय जितनौ रिझाबे की कोसिस करै, मगर उपेन्द्र की बिसैली बातें....कै कैसी बेसरमाई सूझ रई तुमें, कै औरत के नाम पै कलंक हौ, कै सरम नईं आउत, कै हटौ इतै सें, भागौ......कभऊँ तौ पलका सें ढकेलई दैबें उपेन्द्र.. ...उर्मिला कौ जी टूँक टूँक हो जाय, मारे गुस्सा कें दिमाक की नसें तड़कन लगैं, मगर क्या मजाल कै बन्दी नें उफतक करी होय! इस सबके बावजूद भी।

उर्मिला जितनों नैंगर जाएं, उतनई बेरूखाई में उपेन्द्र बाए अपने पास सें दूर भगा दें। बात बात पै भैया बैनन तक खों बेमतलब आँख दिखाएँ, मारकुटाई कर दें.....। न भैया कौ ख्याल न बैनन कौ... न उनसें किसी भी तरह कौ मेलमिलाप! दिन महीना एसई कड़त रए। अब उपेन्द्र के बनारस जाबे सें पैलें उर्मिला नें कई भी थी कै बच्चों के एडमीशन करायें जाएँ मगर आज कल, आजकल में टिरकाउत रए औ देख लो कै बिना कछू करें धरें बनारस के लानें आज फुर्र सें उड़ गए। उर्मिला नें फसल बेंच कें पइसन कौ इंतजाम करो, उपेन्द्र के खर्च खूँट लिखा पढ़ी के लानें पैसा दएते, और बालकों के नाम विद्यालय में लिखवा आई। कैसऊँ सही, अब फिरकऊँ मजली औ छोटी नंद समेत जुड़वां देवरों की छूटी पढ़ाई शुरू हो गई! पढ़ैया बालकों के पाँवन में पाठशाला की गैल की धूरा लगन लगी।

××××××

बैसें तो बल्ले बब्बा कौ खूब मन लग गओतो इतै। कुंडेश्वर की तीरथन की नाईं सुद्ध अपरूप छटा, खुलो खुलो सौ हरियाई हार कौ माहौल, सीधे सज्जन गाँव बारे, पढ़ी लिखी समुझ बारे मनई मान्स! औ सबसें बड़ी बात खेतों पर एकछत्र स्वय्म कौ राज! उर्मिला, गोदी खिलाई मोंड़ी, उनई सें पूँछ पूँछ के इंच इंच जमीनजांगां के कामों में पग धरतींतीं, बल्ले बब्बा खों और क्या चहिये! बालब्रम्हचारी पैलवानी के सौकीन बल्लेबब्बा हते तौ सत्तर की उमर के, मगर हिम्मत, मेहनत और पराक्रम के कामन में अच्छे अच्छे ज्वानन सें चार गोड़े आगें.....। उपेन्द्र तौ उनै फूटी आँखन न सुहाउतते मौड़ी की बेकदरी पै बल्ले बब्बा हाथ मल कें रै जाऐं अगर दमाद की पदवी न होती उपेन्द्र की तौ कब की उनकी घिची मसक दई होती बल्ले बब्बा नें। खून के अँसुवा पी कें रै जाँयें बिचारे। उर्मिला कों औलाद सें जादा चाउतते! उसकों अपने हाथों बड़ा किया, सूखे गीले सें मताई की नाईं बरकाउत रए! उसकी सांस सें, उसकी आवाज बोली सें, उसकी चाल सें, उसकौ मुख देख कें बल्ले बब्बा उसकी पीर जान जाते थे, इतनों तौ उर्मिला की अम्मा भी न जानतींतीं उर्मिला कों, भलाऊँ मताई थीं। उर्मिला कौ दुक्ख सुख बब्बा कौ निजु सुक्ख दुक्ख हतो।

– बल्ले बब्बा, राम राम!

को आय, कलुरिया खों दुह रए बब्बा नें बिना देखें पूछी!

हम आंयं बब्बा, बिलैया सदन बारे.......।

–''ओ ऽऽ महराज! भली अवाई भई, बैठौ-बैठौ म्हाराज, खटुलिया डार लो, दोई चार घेंटें रै गईं.......। बल्ले बब्बा नें दूध दुहत कई।

जल्दी जल्दी दूध दुह कें बाल्टी भीतर धरन गए बब्बा! उर्मिला सें कैबो नई भूले कै छत्तीसगढ़ बारे बिलैया जू आए हैं, लाव लस्कर लै कें।

''बिन्नू, तुम निकरयाऔ बायरें! चाय पानी की, हल्की बिन्नू औरों सें कै देओ!'' इतनी बता कें बल्ले बब्बा तुरंत बायरें कड़याए। अबलों बिलैया जू, ठेकेदार साब, टाल बारे दांगी जू सब जनें खटुलिया पै बैठ गएते। उनके ऐंगर धरती पै बैठ गए बल्ले बब्बा!

बिलैया जू– ''भैया, राई भरी मोंड़ी पै तौ भौत विपत पर गई। हमोंरन खों तौ अब पता चल पाई असलियत! बा, भी, रेंजरसाब के जरिये पता नईं परी, बौ तौ ठेकेदार जू के घर सें जाती रती हैं, रेंजरनी के पास। सो जनी नें जनी कों पूरी हालियत बताईती। मैं तो भैया सुनतईं भगो चलो आओ! कत जांय और द्वारे की खुलत किवरियां देखत जांय। उर्मिला द्वारे सें बायरें आ रईती।

–''कक्का राम-राम, उर्मिला नें घर की ड्योढ़ी सें बायरें आउत हाँत जोड़ दये अपने। रामजुहार करी, बिलैया जू और उनके संगातियों कों। ''खुसी राऔ बेटा!'' कह कर अवाक रै गए बिलैया जू! खटुलिया सें उठ परे एकदम! एकीएका चीन्ह न पाएते! उर्मिला होई गईती ऐसी, अब पैले वाली उर्मिला कां रैगईती! बिलैया जू का, कोऊ और भी होतो तौ न चीन्ह पाउतो! कां तौ फुल्वारी सी मोंड़ी की अपरूप छब, चंदा सौ उजयारौ मुख, रैन की पिंडी सौ सुबरन, नैनू सी कोंरीकाया...... और कां जौ झाँवरौ कुम्ल्यानौ चोला, ज्यों हरी भरी फसल कों पाला मार गओ होय! मक्खन सी मुलामियत बारी उर्मिला के हांत हड़ीले हो गएते, उंगरियां ऐसी गठीलीं करीं ज्यों घुंईयन के करिया गट्टा होंय! मैली कुचैली फटी धोती! रूखे सूखे से जटा जूट से बने बार.....। नंगे कान, सूनौ माथौ.....हॉतन में घिसी घिसाईं सी बेआब चुरियां.....देखतईं देखत जी उमड़याओ, आँखों में अंसुआ भरयाए। रुबाई रोकें न रुकी.......फक्क कें रो परे बिलैया सदन बारे नगरसेठ! रोउतईं रोउत बोले– ''बेटा का कर लओ जौ तुमने। तुम तौ ऐसी न हतीं बिन्नू! का गत हो गई हीरा सी मोंड़ी की....!

उर्मिला का काती! गंगा जमुना बह रईती आंखन सें! बिदा हो कें जिस दिन सें ससुरार में पांव दओ, ओई दिना सें सुख-साके बिला गएते! विधना की मार, आदमी कौ कसाईपना, खेती बारी के सौ टंटा, धन पइसा की कमी रूखी सूखी रोटी..... घर के बालकों की सौ सौ मांगें.....अभाव के भारी बुजवा से पहाड़.....इनई में दिन कड़ रएते मोंड़ी के उनईस साल की छोटी सी उम्मर और दुख के अगम पहाड़ दिलासा दैबे बारौ कोऊ नईं.....पिताजी तौ जब सें ढकेल कें गए, तबसें एकऊ बार न आए...!

बिलैया कक्का के रूप में जैसें बाप भईया आ गए होंय ससुरार में.....! उर्मिला तौ भूलई गईती कै उसके लियें भी कोऊ में हिया हिलोर हो सकत। मायके में पिताजी और माताजी में छिड़ी जंग

सें जा बात जाहिर हो गईती कै इनोंरन नें दूसरे घर में बिदा करबे के संगै, अपने दिल सें भी बिदाई कर दईती उर्मिला की....। मगर जे दांगी कक्का, नगर सेठ..... का जे बाप भाई थे..... नहीं बाप भाई नहीं थे, जे तौ उर्मिला के गुनन के हाथों बिकबे बारे सज्जन हितूमीत थे उसके.....। अपनों सें भी बड़े अपने, आत्मीय.....।

भाभी, ओ भाभी! बुत सी बनी उर्मिला कों झकझोर कें बोली नंद! कैसी सिरिंन की नाई हो गई। उठौ, चाय देओ सबकों! नंद ने चाय की टिरे उर्मिला के हाथों में पकड़ाई और बल्ले बब्बा कों आड़े हाथ लओ- काए बब्बा, सुआ कैसे हेर रए चिमाने से, जौ न बनो कै कका औरन के हांत मुख धुवआउते, निखरारी खटुलिया पै उन्ना कपड़ा कै चादर बिछा देते..... सो आंहां...... लगे अंसुआ ढारबे, जनीं की नाईं। एई पै बड़े पहलवान बने फिरत..... काए बब्बा?

नंद के प्रबोध सें जैसें झपकी सी खुली बब्बा की हड़बड़ाने से जल्दी सें उठ कें भीतर गए, तुरतईं नई जाजिम एक दूसरी खटुलिया पै बिछा दई, हांत जोर कें बोले- ''म्हाराज, आप औरें ई पै पौढ़ो! उर्मिला बेटा चाय पिबा सबकों। फिर उसके हाथ सें खुदईं चाय की टिरे लै कें चाय के कप दए सबकों..।

बिलैया जू नें चाय कौ कप खटुलिया के नेंचें धरो, थैला सें साफिया निकारी, खटिया सें उठ कें हाथ मुँह धोए.....पोंछे....फिर बैठ कें चाय पियन लगे.....। माहौल पैलऊँ सें गमगीन हतो, कोऊ कछू न बोलो। चुपचाप चाय पी रए थे सब जनें।.

××××××

बिलैया जू कौ आबो अकारथ नईं गओ। इतै सें जातईं उननें सबसें पैलां बौ इंतजाम करो, जिसके लानें उर्मिला सें उननें कईती। सो देख लो पन्द्रइया नई कड़ पाई कै एक दिना भोर भुनसारें एक हाँतीडाला में ऐन अच्छी नसल की तीन पंजाबी जर्सी गैंया बछवन के संगै ठाड़ीतीं उर्मिला के द्वारे। इतनौ भर नईं ठेकेदार दांगी नें बरेदी भैया सोऊ भेजेतो संगै। मुलू नांव है बरेदी भैया को। रेखें फूट रई हैं, मगर अखेल बछवा सौ ज्वान जमान आदमी की उन्हार लयें बिल्कुल। मुलू खें करिया अक्षर भैंस बराबर भलाऊँ है, मगर दिमाक भौत तेज है। बुराई एकई है उनमें कै सीधी सटाक बात करबे बारे हैं, बुरई लगै, सो एन लगत राय। जब बल्ले बब्बा और उर्मिला बिलैया जू और ठेकेदार दांगी की बातन की सुरत करकें आपुस में उनकी टेक और आन मर्जाद निभाबे की बातें कर रएते, सो पैलां तो मुलू सुनत रए फिर एकाएक बोल परे- ''उनौरन नें एसान नोईं करो, अपनी विपदा आ टार दई बिन्नू तुमें गउएं दान करकें। बिलैया जू कों मारकेस लगेते, सो पंडित जू नें दान पुन्न की कईती, बई दान पुन्न आय जौ! सांसी बात सटोले कांय, सबके जी सें उतरे राँय! सो हमें कौनऊ फरक नंई परत। अपुन खों तो सई कानें खुस रानें.....।

मुलू की बातन पै बल्ले बब्बा खूब नरयांने बिलैया जू पै। मगर उर्मिला इतनी हंसी कै पेट पिराने लगो बा कौ! और मुलू तौ अकबकानौ सौ रै गओ। उए ऐसी उम्मीद नईंथी, उसनै तौ जा सोची थी कै खरी खोटी बातें सुनकें जे औरें उन औरन की टटरी डूंड़ा बारन लगेंगे....। मगर गजब! बिन्नू पै तौ उल्टौ असर भओ, ऐसी ठठा कें हंसी जैसें मैने कौनऊ हंसी ठट्टा की बात करी होय।

××××××

उर्मिला तेज दिमाक की लड़की थी, दोई दिना के भीतर उसनें कमल किशोर के संगै डेरी जाकें बात कर लई, सो अब नोंनें तीनऊँ गैयन कौ दूध डेरी जान लगो। उर्मिला की सांस में सांस आई। बालकों की पढ़ाई के लानें उसनें ट्यूसन लगा दई। दो साल कैसें कड़ गए पता नईं परी। उपेन्द्र कौ बनारस में ऐसौ जी रमो कै गर्मियन तक में नईं आए लला। मुलू की बल्ले बब्बा सें ऐसी गसी फंसी कै बे तौ इतईं के हो कें रै गए। ठेकेदार दांगी कौ आदमी आउततो बीच में, बई मुलू कों आधी तनख्वाह दै जात! आधी मिलत मुलू के बड़े भैया कों, उसकी तैनाती ठेकेदार के इतै घर की चाकरी में है।

××××××

दिन ऐसई गीले तींते कड़ रएते। उर्मिला जी जान सें खेती में लगीती। उसनें कभऊँ खेत रीते खाली नईं छोड़ते। तीनऊँ फसलें उठाउततीं। बड़ी नंद ललिता, भौजाई के कंधा सें कंधा मिला कें काम करती थी। बिषाखा कौ इंटर हतो जा साल! देओर अबै चौथी किलास में थे उनसें बड़ी किसना पाँचवीं में पढ़ रईती।

चैत का महीना था। उर्मिला कों सांस लैबे तक की फुरसत नहीं थी। खेतों में कटाई लगी थी। खरयाने में लांक धरी जा रई थी। आबे के लानें तो थ्रैसर भी आ सकत तो मगर उसमें एक तौ किराऔ जादा लगना था, दूसरे भुसा की भी हानि थी, और जई भुसा पूरे साल चलावनें परत तौ, सो इतै उतै सें दो जोड़ी बैलन कौ इंतजाम कर लओतो उर्मिला नें। रास कों देखत भंए कम थे बैल, दांय नईं हो पा रईती, और पकी फसल जादां देर कै जादा दिना खेतन में ठाड़ी एक तरां सें खतरे की घंटी जैसी थी, आसमान कौ क्या भरोसा, कबै पथरा ओला बरसाउन लगै! अब दिन रात कौ काम हतो जा बेरां। रात के दो दो पहर कड़ जातते उर्मिला के, मसां कें आँख लगी, कै छिन भरे में फिर उठ बैठती थी, घड़ी भर रात सें पैलें। चैतुअन कों उसनें खेतों में ही बसावट दै दईती। चैतुआ अपनी महुआ के मद जैसी गरबीली मालकिन की चुस्ती फुर्ती और मीठे सुभाव के सम्मोहन में बँधे ऊसई करते थे, जैसा मालकिन चाहती। कोऊ फसल की कटनी करै, औ कोई बैलन खों जोत कें दाँय करें। उनकी जनीं उड़ावनी करतीं, उसेंड़ा देतीं और सोने जैसी रास कों बोरों में भरतीं भरवाउती उर्मिला गाड़ी में लदवा कें घरै पठवा देतीं। जो बैल रात में दांएं में चलते थे, उन्हें दिन में छुट्टा खोल दिया जाता था मुसीका लगाकें, जिससे वे फसल न चर पाएं। रात दिन एक करकें जैसें तैसें फसल गब कें घर आ गईती। उर्मिला अबै चैन की दो सांसै भी न लै पाईती कै उपेन्द्र की बीमारी की खबर नें उसें भीतर तक हिला दिया। अबै तौ उनके परचा सुरू भएते! मगर आफ्त का समय देख कें आउत कभऊँ? घर में एक टका नईं। पढ़ैया बालकों के इम्तहान चल रए हैं, उनकी देखभाल और पढ़ाई के संगै विशाखा कों एक पल की फुरसत नईंयां। ललिता रातदिन छाया की तरियां उर्मिला के संगै घर बायरें के काम निपटाउती हैं। उनईं खों भेजो जा सकत बनारस। मगर किराए कौ का हुइयै? फिर, खाली किराए सें का? थोड़ौ भौत तौ खर्चा पानी दैनेई परहै। जानें कै दिना लग जायं उतै? उपेन्द्र के पास भी तौ पईसा नई है, दो ट्यूसनें न कर लेते तौ साग भाजी कैसें चलती? कमरा कौ किराऔ कां सें देते?

कैबे के लानें तौ फसल घरै आ गई है। मगर, जई अन्न पूरे साल भर कौ आधार है। नौ प्राणियों के खाने, पहरने, पढ़ने, लिखने,

हारी बीमारी कौ दारोमदार जई अन्न है। आफ्त विपत तीज त्योहार के अलावा बीजबाड़ी और खेती पाती के लानें चाय मजूरमांस होंय औ चाय खाद-पानी.....सब इसी अन्न सें लगे हैं। चौमासे में जब गल्ला मँहगौ हो जात, तब उर्मिला इस अन्न कों बजार के लानें निकारती है, बौ भी क्रम क्रम सें, एकदम से नईं। अबै तौ चैत कटई रओ है; नओ अन्न आ गओ बजार में, सो भाव भी मद्दौ है। नए अनाज की आवक में दाम भौत जादां गिर गए हैं। सो गल्ला तो अबै नईं बेंच सकत। फिर का करें? कां सें ल्याएं खर्चा पानी? सोच सोच कें हार गई उर्मिला, लेकिन कुछ समझई में नई आ रओ कै का करिये? ललिता देख रई थी कै दो दिना सें भाभी भौत जादां परेशान हैं, भैया की बीमारी की खबर सें ललिता भी कम अनमनी नहीं थी, फिरऊँ बोली उर्मिला सें- ''हमाई जान में तौ तुम गल्ला बेंच कें बब्बा के संगै चलीं जाव बनारस! इतै तौ हम हैंई, सो समार लेंगे सब।'' नंद की बात सुन कें जैसें कछू सूझ परी उर्मिला कों सो तुरंत बोली- ''लली, गल्ला बेंचबे में अबै कुछ नई धरो। हम झांसी वाली के घरै जा रए। दोई जोर तीन तीन किलो दूध बांधने की कैबे। उनईं सें पेशगी लयं आयेंगे मईना भरेकी।

नौदेबन में महामाई ढारबे गएते हम, सो उतई झांसी बाली मिलीतीं। दूध की बात खास उनई नें चलाईती। उर्मिला की बातें सुनकर ललिता का मुख आशा से खिल पड़ा, दौनऊँ हाथ जोर कें माथे सें लगाते बोली- ओ मोरी महामाई तोरी जै हो परमेसरी सहाय हो जा हमोंरन कीं। झांसी बाली, भाभी की बात मान जाय माता, उसकी बुद्धी में विराजौ भुवनकिसोरी महारानी!''

माता सहाय भई, कै प्रकृति, कै बिधना कै उर्मिला के भाग्य की रेखा.... जौ तौ नई पता, मगर हाँ झांसी वाली मान भर नई गई, उसनै तड़ापड़ दो मईना कौ एडवांस सोई पकरा दओ उर्मिला कों। झांसी वाली अपनी परोसन उर्मिला कों भौत मानती थी। वह उर्मिला के बात व्योहार सें, उसके काम सें हद सें जादा प्रभावित थी। पढ़ी लिखी उर्मिला उसकी लड़कियों और बालकों को समय असमय पढ़ा देती थी। फिर, झांसी वाली नें फुग्गादार बिलाउस और घेरदार फिराकें बनाना भी तौ उर्मिला सें ही सीखा था। उर्मिला की सिलाई मशीन देख के उसनें भी अपने घर में मशीन मंगवाई थी। वह बरहमेस उर्मिला कौ मौ तकत रतती। पइसा टका तौ उर्मिला कों वह ऐसें भी दै सकती थी, वह तौ जादा देना चाहती थी, मगर उर्मिला तौ कछू दूसरे पानी की थी, यह झांसी वाली अच्छी तरां सें जानती थी, सो जितेक उर्मिला ने कए, उतेक रूपया उसनें ऊए दै कें बिदा करो।

घरै रुपैया लै कें आईं उर्मिला, औ उननें ललिता के हांथ पर धर दिये। घर की देहरी के पास बैठी गैया देख कें उसकी आंखें भरयाईं। पासई बंधों सफेद रंग कौ बछवा अपनी बड़ी बड़ी पानीदार कजरारी आँखों सें गैया की तरपीं देख कें रंभा रओतो! दोहनी की टैम हो गईती अब! उर्मिला नें बब्बा कों आवाज दई। बब्बा आए, इषारौ समुझ कें बछवा की रस्सी खोल दई। रस्सी खुलतईं साथ बछवा उल्हरत कूँदत फंदत गैया लौ पोंच गओ। गैया, बछवा कौ मुख माथौ जिभिया सें चाटन लगी। परम संतुश्ट हो बछवा नें अपना मुँह गैया के थनों में लगा दिया! गैया पन्हा गई! बब्बा नें बाल्टी उठाई दूध दुहन लगे। ललिता भीतर सें पीतल की बाल्टी और नपना लै कें धर गईं। उर्मिला कौ जी हिलोरें लैन लगो। एक हूक सी उठ परी करेजे में। बालकों की परीक्षाएँ चल रही हैं। पढ़ाई लिखाई बारौ सबसें गाढ़ौ समय! गरए भारू दिना! मगर आज सें घर का घी दूध बंद। बालक क्या सोंचेंगे। सूखे मुँह बच्चा कैसें पढ़ाई कर पायेंगे। हल्की बिन्नू किसना बिना दूध के रोटी कौ कौर नईं धरती मुँह में।

उर्मिला स्वयं मठा रोटी चाव सें खाती है। ललिता विशाखा दही में धनियां मिर्चा डार कें भरपेट रोटी खा लेती हैं। अभावों की आग में झुलसते घर में एक यही तो अमृत था! मिठाई, खटाई, लुनाई था। भोजन का संग साथ था, बिना इसके कैसें पार पड़ेगा। कितनों बचहै, कितनों उतरहै गैया में! दुबाई हो चुकी थी। उर्मिला नें तीन सेर दूध नाप कें धर दओ पीतर की बाल्टी में अलग करकें। अब तौ लो आधेक सेर दूध बचो।

उर्मिला- बल्ले बब्बा, पीतल बारी बाल्टी कौ दूध झांसी वाली के इतै दै आओ! बब्बा- ''हओ बिन्नू राजा। उनके इतै आज कछू कारज है का?'' बब्बा नें बाल्टी उठाउत पूंछी उर्मिला सें। उर्मिला उसांस लै कें बोली- कुछ नइयां बब्बा। आज सें शाम सबेरे कौ दूध बंध गओ उनके इतैं! तुम दूध दै कें आओ। बस्स। ललिता कों टीकमगढ़ बारे लाल डब्बा में बैठारबे जाना है तुमें। बनारस की गाड़ी मईं सें मिलेगी विशाखा कों।

बल्ले बब्बा- ''ओ बेटा! सियानी समानी मौड़ी कों अकेलें भेजने में कौन सी अकलदारी है? औ फिर अब रात कौ टैम। अंधेर न करौ बिन्नू! बब्बा नें समझाओ बाए।'' उर्मिला- ''नईं बब्बा, लली के जायें बिना काम नईं बन सकत। रास अबै ऐसई धरी है, बंडा खाली करकें, पूरौ गल्ला भरवाउनें है। हम हिल नईं सकत इतै सें। जनीं का जातीं नईयां अकेलें! अब तौ अपना राज है। फिर जब घर में जनीं के अलावा मानुश नईयां तौ किसकों पठा दें! जी कड़ौ कर लो बब्बा! अगर बदी होनें है, तौ का घर और का बाहर! जब रात रात भर हम दोउ जनीं परीं रईं खरयाने में, तब डर न हतो का? समय देख कें चलना सीख लो बब्बा! पुरानों जमानों नइयां अब नओ जमानों है।''

बब्बा, दूध की बाल्टी उठाउत बोले- ''जैसी तुम कऔ सो ठीक है बेटा!'' हमतौ बूड़े पुराने हैं, बेटा, नई चाल का जानें, कह कें झांसी वाली के इतै चले गये।

xxxxxx

तीन मईना लग गए उपेन्द्र कों ठीक होबे में। ललिता के संगै इतई घरै आ गएते उपेन्द्र। बालकों के रिजल्ट देख कें उर्मिला विशेष प्रसन्न थीं। मंझली नंद विशाखा नें जिस जिम्मेदारी सें घर की सम्हार करी थी ऊसई जिम्मेदारी सें अपनी पढ़ाई करी। किस तरां सें झांसी बारी की बिटिया की किताबें लै कें उसनें पढ़ाई की! न पूरी किताबें, न स्कूल! प्राइवेट इंटर के इम्तहान में बैठी। उसकी मेहनत कौ रंग प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो कें सामनें आ गओ है। पढ़ाई में तौ हल्की बिन्नू किसना भी अव्वल आई अपनी किलास में। रुपया पैसा की चाय जितेक कमी बेसी पर जाय, मगर अपनी दोनों नंदों की पढ़ाई पर उर्मिला कौ खास ध्यान है। बड़ी पै तौ बस नईं चल पाओ! एक तो बिरोबरी की उमर, उस पर लली कौ पढ़बे में दीदा नईं नवत बिल्कुल। काम चाए जितेक करा लो। तबईं तौ बनारस सें आ कें एकई रट लगाएं है- ''कै बस्स अब हो चुकी विशाखा की पढ़ाई पूरी, अब इनै भी घर बाहर के कामों में लगाऔ! भौत पढ़ चुकीं अब कछू काम धाम

भी सीखें खेती किसानी के। जादा पढ़कें कौन लाट कलक्टर बननेंइनें! उपेन्द्र भी हाँ में हाँ मिला रए हैं। जितनी जादा पढ़ेगी, उतनई जादा पढ़ो लिखो वर तलासने में मुसीबत हुइयै। सो अब पढ़ाई बंद, घर कौ काम देखें। उर्मिला चुप रै जातीं हैं सुन कें।

××××××

उपेन्द्र के पूरे पाँच साल बीते थे बनारस में! उसको यहाँ बिल्कुल अच्छा नईं लगता था! उर्मिला के भौत कैबे सुनबे पै खेतों की तरपीं भी गए उपेन्द्र, मगर जिन खेतों में उर्मिला को जीवन दिखा परता था, वायु के जिन झकोरन में हुलसता पवन देखती थी, रूखों के कोरेपत्तों और कोंपलों के साथ मदमाते पवन की छेड़छाड़, चुहल देखती थी, जिसमें उसे बसंत, सावन, फागुन दिखा परते थे, जिन गैया बछ्वन की धवल सफेद रंगत और उम्दा काठी में उसे विधना कुम्हार के खेल खिलौनों का गैरबनावटी सौंदर्य, मोहनी भाव भंगिमा दिखा परती थीं, जहाँ के स्वच्छ निर्मल नीर की लहरों में उसे मल्हार सुनाई परता था, मईं उपेन्द्र खों यहाँ बेरौनक सन्नाटा और सुनसान के अलावा कुछ सूझत न हतो। ढोरन के गोबर की बदबू सें दम सी घुट रई थी। उसकौ सुकुमार षरीर पूरे खेतन कौ चक्कर लगाबे में ही थक हार गओ। उसकौ मन न लगो, और घरै लौटयाओ। अबै बनारस सें आँएं हफ्ता दस दिन भी पूरे न हो पाएते कै उसकी तबियत ऊबन लगीथी। घर के अभाव, गरीबी को उसनें अब निकट सें देखा। छोटे भैया बैनन के तन पै एकई कपड़ा कैऊ दिनन लों रत है, न बे रोज नहांए धोएं! गंदे संदे मैले कुचैले घूम रए तौ घूमई रए, न बालों में तेल, रूखे सूखे से हांथ पांव मुँह! दंत मंजन था, मगर कभऊँ करते थे, कभी उसमें भी नागा। पीरे पीरे दाँत! उर्मिला के पैरों में बिंबाई फ्टी थीं उनकी गहरी दरारों के रूखे, नुकीले, खुरदुरे किनारे उसे रात में भौत गड़ते थे। तभी उसकौ ध्यान पत्नी के पैरों तरपीं गओतो। दो दो दिना बाल तक न काढ़ती। गाढ़े की रंगीन किनारे की मारकीन की कंट्रौल बारी धुतिया। हाथों में मोटी मोटी मटमैली चुरियां न इतर न फुलेल न काजर न टिकुली- पत्नी के इस रूप सें ऊए वितृष्णा सी हो गई। एक वे थीं जो उससे ट्यूशन पढ़बे के लानें आती थीं।

सुंदर और छब न होबे के बावजूद उनके बनावसिंगार की बनक उनें सुंदर बना देती थी। इतै तौ भोजन भी बिल्कुल बेस्वाद। चना जवा और बिर्रा की रूखी मौटी रोटी उससें खाई न जाती थी। सब्जी, तौ बजार सें आती ही नहीं थी। खेतों कछुवारे सें जौन आ गई सो आ गई। खैबे पीबे कौ जौ राग ठेठ गंवई। उपेन्द्र की जीभ षहर के स्वाद चख चुकी थी। अब उसखों भोजन सें भी बिरक्ति हो गईती। वह स्वयम् खों अपने ही घर में अंजान अजनबी सौ लग रओतो। इस पै सबसें बड़ी चिंता कै नौकरी ढूंढ़े नईं मिल रई। जहाँ उसकी निगाह परती, मईं उसे बेबसी, बेकली, बेकारी दिख परती थी। सोउत जगत एक विचित्र सौ खालीपन और उदासी ऊए घेरें रत बिरोबर। पत्नी इसकी इस हालियत कों देख देख कें चिंतित परेषान हो उठती। बात करबे की कोशिश करती, तो वह झटक देत है! उर्मिला को तब भी मलाल नईं। सोचती थी कै बीमारी के बाद चिड़चिड़ाहट बढ़ जाना स्वाभाविक है। इतनों तौ उर्मिला जानई गईती कै पढ़े लिखे पति की तासीर खेती किसानी जैसे मौटे कामन सें मेल नईं खाती। न ही उसे घर, घर जैसौ लगता है। भौत सोच बिचार के बाद उसनें कमल किशोर सें इस संबंध में बात करी।

कमल किशोर पढ़े लिखे संस्कारी युवक हैं। परोपकारी और नि:स्वार्थ- सेवाभाव के कारण टीकमगढ़ और आसपास के क्षेत्र में उनकी विशेष प्रतिष्ठा है। समय के एक एक पल कों पकड़ने, इस्तेमाल करने में उस्ताद हैं वे। तुरंत समुझ गए कै उर्मिला क्या चाहती है? उसनें उर्मिला को समझा बुझा कें, आश्वस्त करकें घरै भेज दओ। दूसरेई दिना कमल किशोर, उपेन्द्र में अच्छी दोस्ती सी हो गई। उपेन्द्र के मन कों अपना यह पढ़ा लिखा पड़ौसी खूब जमा। अब तौ उपेन्द्र उसके यहाँ सें भांत भांत की किताबें ल्या कें पढ़ने लगे। कभऊँ आर्य समाज की, कभऊँ युगनिर्माण योजना हरिद्वार की, कभऊँ विवेकानंद और गांधी की तौ कभऊँ शरतबाबू और रवीन्द्रनाथ टैगोर कीं। जे किताबें उसे अभिभूत कर देती थीं। घर के बच्चों की शैतानी हल्ला गुल्ला उसके पढ़बे में जब बाधा डालता था, तब वह बुरई तरां सें उनकी कुटाई पिटाई कर देता था, उस समय तौ क्रोध में जौन चीज हांत में आई, बई दै मारी। बिना बाप मताई के बच्चा रोउत किलपत उर्मिला की गोदी में दुबक जांएं। उर्मिला की ममता में उनें मां बाप कौ दुलार और सुख मिल जाता था। कभऊँ कभऊँ तौ उर्मिला बच्चों का पक्ष लैकें लड़ पड़ती थी उपेन्द्र सें। आगबबूला हो कें उपेन्द्र उसखों खूब बुरई भली कन लगै। इधर कछू दिन सें तौ बौ कछू जादई कसाई हो गओ। जहर बुझी बातों के तेज नुकीले नेजों से बुरई तरह छेदता था उर्मिला कों।

एक दिन उपेन्द्र, कमल किशोर सें कुछ किताबें ल्या कर पढ़ रहा था। बच्चा बैसें तौ उसके सामने मुँह तक नहीं खोलते थे। उसके आतंक सें भयभीत रहते थे। मगर उसकी गैरमौजूदगी में जैसें उन पै सें कर्फ्यू सौ हट जाततो कुछ टैम के लानें! इस टैम की कीमत वे पहचानते थे। सो एक दूसरे कों टीपें मारना, मुँह बिराना, गाना, चिल्लाना, लड़ना भिड़ना, खेलना कूदना शुरू हो जाता। उस दिन उपेन्द्र के आने की आहट बच्चों खों नईं मिल पाई। वे अपने पूरे रंग में थे। इतै अपने कमरा में बैठे उपेन्द्र खों पढ़ने में बाधा पौंच रई थी। तनक देर तौ वह चुप रहा। फ्रि एकीएका उठकर उस जगह जा पहुँचा, जहाँ बालक पूरे मगनमन सें अपने बालपन में लीन थे। अचानक अपने सामनें भैया के रूप में साक्षात् काल कों देख कें सन्न रै गए। मगर अब तक तौ भद्दी गारियों के संग लात घूँसा, थप्पड़ बरसन लगे उन पै। मार सें बिलबिलाते भाइयन कों देख कें हल्की किसना कीक परी। उसे कीकत देखकें उपेन्द्र की गुस्सा सातवें आसमान खों पोंच गई। दांत मिसमिसाकें दौर परो किसना की तरपीं- सुगरिया तें काए चिल्लयानी! बीता भरे की बिसात तौ देखौ, भौत सगी बन रईती इनकी काए, ले ऽऽ अब चिल्ला, कस कें कान उमैठे, पीठ पै घूंसई घूंसा......कसकें एक लात मारी- दुबरी पतरी छटांक भर की किसना समर न पाई, गिर पड़ी, ड्योढ़ी सें सिर टकरा परो, खून बहन लगो...... ।

उर्मिला पीछे बारे कमरा में कुछ काम कर रईती। रोबे चिल्लाबे, लद्द भद्द गिरबे की, घूंसों थप्पड़ों, गारियों की आवाज सें उर्मिला कों भान हो गओ कै पति, बच्चों के लियें यमदूत बन गओ है। झटके सें हाथ का काम छोड़ कें भगी चली आई आँगन में, रोते कलपते बालकों के सिर आपस में भिड़ा रओतो कसाई, जानवर की नाईं। मईं मूंड़ में खून बहाउत खड़ी हल्की बित्रू कों देख कें उर्मिला के

तनमन में आगई तौ लग गई। उसका सारा शील, नम्र सुभाव कापूर हो गया, बच्चों और पति के बीच दोऊ हांथ फैला कें दीवार की नाई खड़ी उर्मिला ने पति कों आड़े हांथन लओ।

-"तुमाई नास हो जाय पड़वा जू, दम होय तौ अब मारौ इनें। नासपरे जू हम सब मिल कें मारेंगे तुमें। मूक गैया न समझ लइयो, सेरनी बन कें कलेजा चीर देऊँगी, जो अब कौनऊ ऐबी ने हांत लगाओ मोरे बच्चों पै। राई रत्ती सें कैसे पूरा करकें खिलाती पिलाती हूँ, सो इसलिये नई कै तुम सांड़ की नाई सीगें मार कें अधमरौ कर दौ।"

ईपै तौ उपेन्द्र की गुस्सा इतनी बढ़ी जैसें आग में घी डारे सें आगी और भड़क जाय। बोल रएते कै दहाड़ रएते उपेन्द्र- "तुझे क्या हक्क है गमरिया, हमारे बीच में बोलने का। पच्छ तौ एसें लै रई जैसें पेट सें काड़े होंय। कुल दिना सें ठुकी नईयां, सो भौत गर्रा रई, काए?

उपेन्द्र की जहरबुझी बातें सुनकें रै न पाई उर्मिला मारे गुस्सा के खून खौल रओतो। खौलन मुँह सें निकरी- "किस हक्क की तुम बात कर रए! कभी पूछा कै भैया बैनन के का हाल हैं? का खा रए? का पहन रए? कैसें रै रए? पईसा कितै सें आ रओ? तुमनें लई कभी खबर? हमसें हक्क की बातें कर रए.....? हाँ हमनें पहराया उढ़ाया है, खबा पिबा रए, पढ़ा रए हैं हमारा पूरा हक्क है इन पर। पेट सें नई काड़े तौ का भई, सेए, पाले तौ हमई नें हैं! जसोदा कों दुनियां जानत, देवकी खों किसने जानों? ठीक सें रऔ यहाँ, कायदे सें, जौ बनारस नई, टीकमगढ़ है।"

पत्नी की बातों से आगबबूला हो कें उपेन्द्र आपा खो बैठो। तड़ातड़ घूँसा दए, मिला मिला कें ऐसें लातें मारीं कै उर्मिला भुई पै गिर परी। कचरी की नाई खोंदन लगो कसाई- और मौं चला ससरी! ले ऽऽ अब इन बापन कौ और पच्छ ले पतुरिया.....रंडी.....।

गैरहोंस उर्मिला कों जिंदा न छोड़तो, अगर मुलू बीच में न आ जातो। उसनें करें कें उपेन्द्र कों पकड़ कें एसौ झटका दओ कै बरंडा के खंबा सें टकरात बचो उपेन्द्र, मुलू के हाथन में पैनियां थीं, बई मुगदर की नाई घुमा कें उसनें ललकारो- मताई कौ दूध पियो होय, तौ चला अब हाथ। जियत न छोड़हों, भलाऊँ चाय फंसी हो जाए! भौत हो गई इज्जत बैन.....ऐसी पींठ पुजाई करूँगा कै हा हा दईया करहौ, हो गए जीजा? औ काए के जीजा? जीजी कों मारबे बाला सुंगरा...कभी हमारा जीजा नई बन सकता.....। बायरे सें बल्ले बब्बा चुपचाप आए, और मुलू कौ हाथ पकर कें लै गए बायरें..।

मताई दाखिल भाभी की ऐसी दुर्गत देख कें बच्चा बिलख कें लिपट परे उससें। मारे डर कें जोर जोर सें रो रए थे। ललिता और विशाखा भाई की करतूत देख कें ओंठ भींचे खड़ी थीं। उनकी आँखें क्रोध सें अंगरा सी लाल हो गईती। किसना कों उठा कें उसके मूंड़ में दवाई लगाई उनने। उपेन्द्र तौ ई तरां से हांत झार कें खड़े भए, जैसें कुछू भओअई नइयां। चाय की तलब लग रईती उनै, कमरा में जा कें पैंट बुशर्ट पैरे और कमल किशोर के इतै खों निंग दए।

××××××

घर में उपेन्द्र कौ पद भलाऊँ कर्ता और मुखिया कौ हतो। मगर लच्छन ऐसे कड़े कै घर भर की मुश्किल हो गई। उर्मिला की तौ सबसें जादा मुसीबत। बजाय संग सहयोग के उपेन्द्र नें उसके लिये नित नई परेषानियां बढ़ा दईतीं। बालकों के एडमीषन तौ जैसे तैसे कर्जा काड़ कें हो गए ते, मगर विशाखा कौ बी.ए. में प्रवेष नईं हो पा रओतो, फर्म तक के लिये पईसा नहीं थे। फीस तौ दूर की बात थी। दो गैंया ग्याउन हतीं, सो दूध की इनकम भी न कछू सी थी। खेती भलाऊँ 'उत्तम' साधन है, मगर इसकों साधबे के लँय खाद पानी निरैया गुड़ैया, बखरैया... .का का साधन नई चाउनें आउत, जे का फ्री में मिल जात! पईसा कौंड़ी की तंगी, उस पै उपेन्द्र कैसऊँ नईं चाहत कै लली का बी.ए. में दाखिला हो। एकई रट कै- "यह लड़कों के साथ नहीं पढ़ेगी! भले घरन की बिटियन कों यह षोभा नई देता कि बड़ी उमर तक क्कांरी रयें या लरकन के संगै पढ़ाई लिखाई करें.....।"

उपेन्द्र सें ऐसी बातें सुन कें उर्मिला नें भी जबाव दओतो खरौ- "तुम्हारे संगै बनारस में का लड़कियां नईं पढ़ती थीं? उपेन्द्र नें उसी बेशर्मी सें सुना दओ- 'पढ़ती थीं, उनई के लच्छन देख कें कै रए। पढ़ाई के नाम पर लली अब घर सें नईं निकरेंगी।"

पति की इस बात का उसनें जमकर प्रतिकार किया था। जरूर निकलेगी लली, और पढ़ेगी भी। अपनी बैन पै इतनों भरौसौ नईयां। लाख जमानों बुरऔ है पै, अगर हम बिगड़ना नईं चाहते तौ किसी की क्या मजाल कै बिगाड़ पाये। हमें अपनी विशाखा पै पूरौ भरोसौ है।

इस बात के चार रोज बाद झांसी वाली दमेलन जिज्जी की दो बिटियां उर्मिला सें पढ़बे के लाने आईं। उर्मिला नें उन्हें कमरा में बैठार कें कई- 'बेटा तुमोंरों को कका जू पढ़ायेंगे, बैठो इतै, वे आ रए हैं।" दोनों बिटियां खटिया पै बैठी रईं। उर्मिला, उपेन्द्र के कमरा में जा कें बोली- कमला किशोर दद्दा के इतै सें बिटियां आई है पढ़बे, उन्हें पढ़ा दो। बालकों की फीस और डिरेस के लँयें हमनें पइसा उधार लएते, सो तबई कईती दमेलन जिज्जी नें कै हमाए घर की मोंड़ियन कों ट्यूशन पढ़ा दो, तौ जिंदगी बन जाय उनकी। पास हो जैहें। नातर परसाल और आसों की तरां फिर कऊँ फैल कड़ जायेंगी।"

पत्नी की बातन सें उपेन्द्र ऐसें उचके, जैसें बरत आगी पै पांव पर गओ होय। दांती पीसत बोले- 'रंडी, हरामजादी क्यों कराया तूने एडमीषन बोल।" इतनी कस कें चिल्लयाने उपेन्द्र कै उर्मिला के कानों के पर्दे ही फट गए होंय जैसे। चिल्लयाने भर नईं उपेन्द्र जा सोच कें एकदम सें बेकाबू हो गए कि इस गँवार औरत नें मेरे घर में ही मेरी हुकूमत नई चलन दई।" साली समझती क्या है अपने आप को तू?

अँय, इतनी जोर सें उसनें उर्मिला कौ हाथ मरोड़ दओ कै दबाउत दबाउत पै उसकी चीख निकर परी। पराए घर की मोंड़ी पौर में बैठीतीं। वह एकदम सें निकरी, समझ गईती कै इस वक्त यहाँ रुकेगी तौ गारी बातें और मार खायेगी। मगर जब लों बाहर निकरती तब तक तौ मोंड़ीं उसकी चीख सुनकें कमरा के बायरें आ गईतीं। उर्मिला कों देख कें पूंछन लगीं- "काए, चाची काऽ हो गओ, काए चिल्लया रईतीं तुम।"

उर्मिला- अरे बेटा कछू नईं। नासपरो कनखजूरा चढ़ रओतो बांह पै। देख कें जान निकर गई हमाई। बेटा, भौत बुरा चिपटता है। मांस में गड़ कें रै जात ठठरीबरो।" उसनें आउत भए उपेन्द्र कों जरती आंखों देखत भए बिटियन खों जवाब दओ।

मोंड़ी- अच्छा चाची हम कल्ल पढ़ लेंगे। आज लली के

संगै गुट्टा खेल लैन दो। भौत दिनन सें नईं खेले। मम्मी कै रईती कै तुम भौत बढ़िया खेलती हौ। हमाए संगै खेल हौ चाची! हमारा गुट्टा छत कों छू के गदेली पै आता है। हमोरें नदिया सें संगमरमर जैसे चमकीले गुट्टा चपेटा ल्याए हैं। कल हमारे साथ खेलना चाची! उर्मिला- हओ बिन्नू कल्ल खेलेंगे अपन औरें। अबै तुमाए ककाजू आ गए, सो पैलां उनसें पढ़ौ लिखौ, पाछें खेलकूंद करियौ।

××××××

विशाखा कों प्रवेश मिल गओतो कॉलेज में। मेहनती थी विशाखा। उर्मिला और ललिता कों भरसक घरेलू काम छूने नईं देती थी। नौ प्राणियन कौ खैबो पीबो, उनके कपड़ा उन्ना फींचबों, घर की झाड़ू बटोरू, चौंका बासन सब करकें जाती थी। कॉलेज नगीचें नईं पाँच मील दूर हतो। पढ़बे के संग संग उसनें पन्द्रह अगस्त, छब्बीस जनवरी के उत्सव में भी हिस्सा लओ! चाय गीत प्रतियोगिता होय चाये भाषण, विशाखा सबमें अव्वल! पूरे कॉलेज में उसके गुणों की धूम हती।

कमल किशोर नें जब जे बातें उपेन्द्र सें बता कें कई- "कि यार बनारस में रहकें तौ तुम सच में प्रोग्रेसिव हो गए हौ, नातर अपन औरन में कुआ है ऐसौ जीदार जो अपनी मोंड़ियन खों लरकन के संगै पढ़बे की छूट दै दे। तबईं तो अपनी बिटियां आंगें नई बढ़ पाउतीं। भौत पिछड़ापन है यार हमारे यहाँ। हमारी लड़कियों को मौका नईं मिल पाता अपनी काबिलियत दिखाने का नईं तौ बे लड़कों से कम नईं, जादा ही काबिल निकरेंगी। भाभी सें पता चलीती कै तुमईं नें एडमीषन कराओ बैन कौ। और अब देख लो, कै उसके संगै तुमाऔ नाम भी उजागर हो रओ। अगर तुमने छूट न दई होती, तौ एक भौत अनियारी प्रतिभा सामनें आ भी न पाती।"

अपनी तारीफ सुन कें उपेन्द्र गदगद हो गए। बोले- भाई, हम तौ लड़कियों को पढ़ा लिखा कर काबिल बनाने के पक्ष में हैं। विशाखा जितना चाहेगी, उतना पढ़ा कर रहूँगा। तुम्हारे आर्यसमाज का प्रभाव इतना तो मुझ पर पड़ा ही है। आर्यसमाज हो या युग निर्माण योजना या कौनऊ दूसरौ कल्यानकारी मिषन सब मेलजोल और समानता की बात करते हैं। सबई में समय, विचार और वाणी पर संजम की बात है, इनके भीतर जो भी जायेगा उसके लोक परलोक दोनों सुधर जायेंगे। अपनी ही कही गई बातों सें चमत्कृत से हो गए उपेन्द्र, छिन भरे कों जैसें चेतना में उजयारौ सौ मिलक परो।

कमल किशोर- यार, तुम लोक परलोक की कै रए! कुछ लोग तौ परलोक, धर्म और ईसुर में विष्वासई नईं रक्खत बे कत कै जिसे देखा नहीं है, जो है ही नहीं अस्तित्व में, धर्म उसी को पाने की बात करता है। कैसा प्रखर और तगड़ा तर्क है।

उपेन्द्र- औरों की छोड़ौ, तुम तौ अपनी बताऔ, तुमाई का राय है! कमल किशोर- भैया जिनें ईसुर के बारे में संका है, हमाऔ उनसें जई कहबो है कै चाय सब पीते हैं, मीठी लगती है, अब ढूँढ़ौ ऊमें चीनी षक्कर कौ अस्तित्व! सांस लेते हौ, ढूँढ़ौ हवा का अस्तित्व! अगर अस्तित्व नहीं है, तौ क्यों नहीं हवा को, चीनी को नकार देते हो! दोस्त, इतना आसान नईयां अपने बनाबे बारे कों जान लेना। बस जा समझ लेओ कै जो उसकों जान लेता है, फिर उसके लियें कुछ भी जानना कठिन नईं है। मैं तो धर्म के उस रूप को मानता हूँ, जिसमें वह कहता है कि अपने जैसा दूसरों को समझो। जो तुम अपने लिये चाहते हो, बिल्कुल वैसा, बिल्कुल वही दूसरे के लिये भी चाहो।

××××××

दुख सुख की धारा में रोउत हंसत जिंदगी चल रईती। विशाखा कौ बी.ए. हो गओ। ललिता के ब्याऔ की उर्मिला नें तब सोची, जब पुरा पाले बारन नें कैबो षुरू करो कै बिटिया कों का जिंदगी भर इतईं बैठा कें रखने हैं! दिन दिन बढ़त उम्र दिखा नई परत का? दो चार साल और कड़ गए, तौ कोऊ गुड़ लगांए न पूछहै! दुहाजू तिहाजू वर लों ढूढ़ै नईं मिलनें फिर। उर्मिला कों अब फिक्कर भई। उपेन्द्र सें कई उसनें। मगर चिकने घड़ा पै कौनऊ उसर नईं। उर्मिला भी पीछे पर गईं सोच रईती कै इतना तौ करेंगे उपेन्द्र, बहन के हाथ पीरे जरूर करेंगे और चाय कछू करें या न करें। मगर जब भी उर्मिला नें ब्याव की बात चलाई, उपेन्द्र उतै सें उठकें चले गए। एक दिना फिरकऊँ उर्मिला नें कई, जैसई उपेन्द्र उठन लगे, ऊसई आंगे बढ़ कें उर्मिला नें जबरिया बैठार दओ, बोली- "उठ उठ कर भगबे में का समझदारी? कुछ करनें धरने से काम बनेगा! कुछ तौ तुमनें भी सोची हुइयै? बताउत काय नईयां?"

उर्मिला के इस आचरण से उपेन्द्र बर से गए। तोरी इतनी हिम्मत, मुझसें जबरजस्ती करेगी सुंगरिया? जा नईं करता ब्याऔ? किस कुत्ते को पकड़ ल्याऊँ हरामजादी, कि चलौ हमाई बैन सें गाँठ जोर लेओ। नईंतर जोरू हमें मारडारेंगी! मैं कितना जब्त करूँ, क्यों बार-बार मेरे सामने आती है? मैं तुझसे बात तक नहीं करना चाहता! तो फिर तू मुझे क्यों कोंचती है! क्यों कोंचती है ऽऽऽ पतुरिया ऽऽऽ पूरी ताकत सें उसनें उर्मिला के दोनों गाल उमेठ कें कई।

अपने गाल छुड़ा कें फटी आँखन सें उर्मिला उपेन्द्र खों देखती बुत सी बनी रै गई। उसकी का गल्ती हती? जई कै उसनें बैन के ब्याऔ के लाने कईती? ईमें का गलत है, बैनके ब्याऔ की चिंता वौ नईं करहैं तो को करेगा? और फिर वर का आजई मिल जै है? ढूढ़नै नईं परै, मेहनत मषक्कत नईं करनें परहैं? जब भी उसनें बात चलाई, बजाय कछू कैबे सुनबे के बायरें चले गए घर सें, ऐसें होत क्याऊँ औसर काज? तौ का ललिता ऐसई बैठी रै जैहें? अकेली जेई बिन्नू तौ नईयां चार बच्चा और हैं, कैसें निपटेंगे ब्याऔ काज? उपेन्द्र कैसी पढ़ाई पढ़कें आए बनारस सें? अपनी कौनऊ जिम्मेदारी कौ इलम नईं। न घर, न खेत खरयान, न बजारहाट। न नोंन तेल सें मतलब, न बालकों की पढ़ाई लिखाई सें। बात बेबात मारापीटी। बाप मताई के घरै तौ कोऊ हमाए नाखून लौ नईं छू पाओ और इतै....। कैसी थी औ का तौ हो गई अब। मायके की याद सें अँसुआ रोकें न रुके। तरबतर हो गई हथेली। धोती के पल्ला सें आँखें पोछतीं अपने दुखत गालों पै हाथ फेरती फिर रो परतीं उर्मिला.... फुटबाल समझ लई हमें। हांथ सें पांव सें जाँ पाई उतईं ठोकर लगा दई। का करिये हम? कैसें पार पाएँ। हांथ जोरें कन्या बैठी है, का उसके हाथ पीरे न हुइयें। का ऐसई रह जायेगी अभागिन! बिना बाप मताई की मोंड़ी......। दुख और चिंता के मारें उर्मिला कुम्लया सी गई। चुपचाप जा कें अनाजघर में बैठ गई। जई उसकी षरणस्थली है! एकांत की षांत जांगां में इतै जी जुड़ा जाता था उसका। यह उसकी आरामगाह भी थी। थकीहारी होती थी, तौ मौका पा कें इतै आ जाती थी। गेंहूं के बंडा सें पींठ टिका कें बैठी थी। आंखों

सें अँसुआ ढरन लगे। जानें कितेक देर रोउत रई उर्मिला जानें का का सोच रईती कै मूड़ पै कोमल सी चीज कौ परस लगो बाए। मुड़ी घुमा कें देखो तौ ललिता ठाड़ी दिखा परी। बोली- ''हमें नहीं करनें ब्याऔ तुम ब्याब करकें कितेक सुक्ख पा रईं, सो हम देख रए हैं। हमें नईं चहिये ये सुख। भैया तौ बिल्कुल कसाई हो गए भाभी, तुम न होतीं तौ का होतो हमोंरन कौ, कैसें जीते जाने कौन दषा होती हमारी! भाभी हमई के लानें भैया ने ऐसी दुर्गत करी तुमाई, हम ब्याह नईं करेंगे, जान दै देंगे भाभी हम.....।''

उर्मिला कुछ न बोली। ललिता के कंदा सें मूंड़ी लगाएं बैठी रई देर लौ। फिर उठी, आंगन की मोरी पै जा कें मों हाथ धोए। उसनें सोच लओ। ऐसें काम न चलहै अब। भौत सहन करो, ओई कौ नतीजा है जौ सब! जब देखौ तब रुई की नांई धुन देत कसाई। काए है एसो जौ! खुद तौ कौनऊ उद्यम करत नईया, हमई कितनों पिसें गिरस्ती के जंजाल में, अकेले कहां कहां मोर्चा लै सकत, ललिता आज हैं, कल पराए घरै चलीं जैहें, तब का हुइयै राम? आखिर का कमी है हममें? जौ कसाई काए हमाए संगै ऐसौ व्यौहार करत! बजारहाट, पुरापाले के लोग इतनों मान पान और प्रतिश्ठा मानते हैं सो क्यों? गुणों के कारण ही तौ! मगर घर कौ आदमी! ऊए तौ हरेक बात में नीचौ दिखाबे में भौतई मजा आउत है। जा जीवन भर की समस्या है। ऐसी समस्या जिसकौ हल किसी के पास नईयां। तौ का करें फिर? गृहस्ती और बच्चों को छोड़ कें भग जाएं का इतै सें। सबरौ टंटा पटा जाय। मगर का मैं इनें अतपर में छोड़ कें जा सकती हूँ? का इन सबसें मुख मोड़ सकती हूँ? तब फिर का करें? हे ईसुरनाथ तुमई सहाय हौ बताऔ का करिये हम?

एकाएकी मन में से जैसें दूसरी उर्मिला निकर कें एन एकदम आँखों के सामने खड़ी हो गई, बिल्कुल परछांई की नाईं। औ परछांई बातें कर रही है, कै प्रबोध दै रई- ''तनक सोच कें देखौ उर्मिला कै जिस आदमी की निठुरताई सें तुम दुखी परेषान हौ, अगर बौ ऐसौ कसाई न होता? बल्कें तुमारौ मान-पान करतो, तुमसें हिया हिलोर प्रैम नैम करतो। तुम अगर दिन कती तौ दिन कातो और रात कतीं तौ रात कहकें तुमारी मानतो, सुनतो। अटूट लगन अगम प्रैम रखतो तुम्हारे लियें...। औ अगर कौनऊँ दुर्घटना हो परती, जिससें वौ पागल या बौरा हो जातो, मानसिक संतुलन खो देतो, या याददाष्त खो देतो या उसके हाँत पाँव टूट जाते और अपंग असहाय हो जातो, तौ का तुम उसकों छोड़ देती? भग जातीं? उसकों सहारौ आसरौ न देतीं? नईं, तब तुम न उससें दूर होतीं, न भगतीं, बल्कि उसकौ संग साथ देतीं, उसकी हर जिम्मेदारी कों अपनी समझ कें निभाउतीं। तौ बस अब तुम जौई समझ लेओ कै आदमी एकदम सें पागल या अपंग या असहाय हो गओ। हाँ जौई समझ लो तुम! ऐसे असहाय लोगन पै जनी मांस दया माया रखते हैं। इनसें कौनऊ तरां की उम्मीद नईं रखनें तुमें। बल्कें इनपै दया करनें है। हाँ जई ठीक ह। समझ लो कै एक बच्चा और बढ़ गओ। अब हुषियारी सें निपटनें है इनसें। जिस तरां सें अपने बलबूते घर गिरस्ती चलाई है सो आंगें भी चलाउनें परहै। बच्चों के ब्याऔ कारज की दुनियांदारी और ब्योहार तुमई खों बरतनें हैं।

जे सब बातें सोच कें उर्मिला के दुखी मन कों बेहद षांति मिली। उठी और आंगन के नरदा पै हांत मुख धोए। जी साजौ भओ तौ खेत खरयान दिखान लगे। कुछ सोच कें उर्मिला खेतन तरपीं चल पड़ी। रस्ता में कमल किशोर दिखा परे। देखतई साथ जैसे कछू बात याद आ गई।

उर्मिला- ''काए भैया, ऐसी कौन सी अनहौनी बात कै दई हमनें, कै छिपत से फिर रए हौ? सियानी बेटी बिटारू के वर के लानें तौ मनुख मांस चिरई चिरवन तक सें पूँछ लेत। सो जई सें हमनें तुमें ललिता के लानें लरका बताने की कई थी। तुम ऐसे छिपे छिपे फिरहौ, अगर जा मालुम होती, तौ तुमसें कभऊँ जा बात न चलाउती?''

उर्मिला की बातें सुन कर कमल किशोर तनक देर लों कुछ सोचत रए फिर बोले- ऐसी बात नईयां भौजी! हमें सोई चिंता फिक्र है। मगर इस काम में सबसें बड़ी बाधा तुमारे पतिदेव महराज हैं। आजकल जितनों लालची और भिकमंगा बांमन है, उतनी दूसरी जात पांत नईयाँ। तुमारे ही नातेदार नतैती में कत फिरत कै उपेन्द्र जैसे निखट्टू ठूंठ के घर में कौनऊँ बौरानों मांस हुइयै, जो षादी सगाई करबे की सोचहै। भुंजी भांग तक नईया उपेन्द्र के पास! दान दहेज की बात तौ कोसन दूर है...।

-''अब तुमई बताऔ कै ऐसी हालत में हम किससें और किस हैसियत सें बात करें। जबकें ललिता जिस घर में जायेगी, मई उजयारा हो जायेगा। खंडहर भी महल हो जैहें। ऐसी सुकरतन बिटिया है, कै माटी छू लै तौ सोना बना दे! हमें तौ भौत अच्छी लगत मोंड़ी।''

- भाभी हम तौ आर्यसमाजी हैं, और युग निर्माण सें जुडे हैं। जातपात में कतई विस्वास नईया हमारा। अपने भैया छोटू कों आंगे करकें उसके लियें ललिता कौ हांत मांग रए!

- तुमोंरन नें तौ देखो है बाए! सीधा सज्जन है। आढ़त के ब्योपार में वारे न्यारे हैं उसके। सबसें बड़ी बात, हमाए कहे में है अबै।

- तुमोंरें आपस में सलायसूत करलो। जिस सीजन में कऔ, उसी में ब्याह कर लेंगे। मंदिर में भांवरें पड़ जायेंगी। भाभी, हम छिप नईं रए थे। तुमसें जई सब कहने का मौका ढूंढ़ रएते। कैबे के लानें तौ उपेन्द्र सें भी कह सकतते मगर हमें तुमई जादा जँची जा बात के लियें, सो तुमई से कैबो जादा ठीक लगो। चलें अब!'' राम-राम भाभी!

कमल किशोर की राम राम कौ जवाब उर्मिला नें हाथ जोर कें दओ। कमल किशोर की एक एक बात राईरत्ती सच्ची थी। धन की कमी के कारण गिरस्ती ही मुसकल सें चल पा रईती। बच्चों की पढ़ाई लिखाई के लाने कभऊँ सोने तौ कभऊँ चाँदी की चीज बसत गिरो रक्ख कें काम चल पाउत तो। हमेशा नौ नगद तेरह उधार की परी रत। सो ऐसें में ब्याह कारज के लानें किस जतन सें पैसा कोंड़ी जोर पाउती उर्मिला। दान दहेज की तौ बातई न पूछौ, कछू हैइयई नईयां, दैबे के लैंयँ। ऐसे में दहेज के लियें मों बांए लरकावारों को वह दै भी का सकत? हजारन की रकम कां सें ल्याएं। नाऊ बब्बा नें जौन दो चार घर बताएते, उनके भाव तौ आसमान छू रए थे।

उर्मिला सोच रईती कै कमल किशोर तौ साच्छात देवता हो गए। ललिता के लानें। अपने कमासुत भैया के लियें ललिता का हांथ मांगते हैं। आखर ऊँच-नीच की सब बातें सोचबे के बादई जौ फेंसला लओ हुऐ उननें। बामन की बिटिया सें ब्याव का तूफन न मचा दैहे पूरी बनिज बिरादरी में। इस गाँव के बनियों नें बामनन कों भिखारी सें

जादा नईं समझो कभऊँ! सई भी तौ है, इनईं बनियों के बल पै जानें कितने पंडित पुरोहित पल रए गाँव भरे के! बनियों की जजमानी कर करकें पनपा है बाभन यहां। उनईं नें पार लगाई है इनकी नैया....।

– अगर कमल किशोर बिरादरी सें रार मोल लै सकत, तौ हम काए नईं? आखर बिरादरी दारी ने दओ का है हमाए परिवार कों। कौन सौ आसरौ कै कौन सौ सहारौ? न बीजबाड़ी सें न धनधान सें और न तनमन सें।

– कैसी बिरादरी है जा, बिगरत काम तौ बनाएगी नईं, मगर बनत काम बिगारबे के लैंय बिल्कुल तैयार बैठी रत! लड़की क्वांरी बैठी है, जा तौ बिरादरी नें कई खूब व्यंग सें, बातन घातन सें, मगर लरका किसी नें नईं बताओ।

– उपेन्द्र के निठल्लेपन की तौ सबनें बदनामी करी, मगर काम धंधा कभऊँ कोऊ नें नईं सुझाओ! चूल्हे में गई ऐसी बिरादरी...।

– जब उसे हमारी सुध नईं, तौ हमें का परी कै हम इसे सोच कें दूबरे होंएं!

उर्मिला ई बारे में जितनों सोच रईती, उतनई कमल किशोर की बातें उसकों जँचती जा रईती। कदम खेतन तरपीं सें घर तरपीं मुड़ गए। उसनें घरै पोंच कें द्वारे की सांकल बजाई। द्वार ललिता नें खोले। भाभी कों देख कें अकबका सी परी। अबै तौ गईयई भर हतीं खेतन तरपीं.....और इतनी जल्दी तड़ापड़ी में वापिस....? कऊँ कौनऊ बात तौ नई हो परी....। अबै कछू पूंछन न पाइती कै उसनें देखा, उर्मिला आँगन दालान पार करकें बंडा बारे कमरा लौ जा रईती...। बिना कुछ कँए ललिता नें भी मई की गैल धरी! कमरा के किवाड़े भिड़ेते। उसनें देखो कै उर्मिला गेंहुअन वारे बंडा सें पींठ टिकाएं बैठी है। गहन गंभीर सोच बिचार में। आँखें मिची हैं।

ललिता– "भाभी का सोच रईं? का बात है? ऐसी काए बैठी इतै?

उर्मिला–"कमल किशोर मिलेते रस्ता में?"

उर्मिला के मुख सें कमल किशोर कौ नांव सुनकें धुकधुकी होन लगी ललिता कों। इतनों तौ पतौ हती कै उसके ब्याव की बात चलाईती भाभी नें उनसें। जरूर उननें आज कौनऊँ गहरी बात कही है! उसकी व्याकुलता बढ़ गई। ऐसी का बात हुइयै? धड़कनें काबू में न हो पाईंती कै भाभी नें उससें सीधें सीधें पूछ लई– "कमल किशोर कौ छोटू, बई जौन आढ़त पै बैठत है! कैसौ लगत तुमें?"

अगर तुम राजी हौ, तौ तुमाऔ ब्याव हो सकत उससें। लली, सई सई बताना बिल्कुल? जा बखत चाए हमें बैन समझ लो, चाए भाभी औ चाए गुंइयां।

– स्वयम् कमल किशोर इस संबंध कों स्वीकार कर चुके हैं। जातपांत की परवा न करकें। जब उननें नई करी, तौ हम काए करें। हमें भी बिरादरी खों लै कें चाटनें नईंयां।

– घर, घराना, लरका सब कुछ हमाऔ तुमाऔ देखो भालो है! फिर, न कौनऊँ दान दहेज न खर्चापानी। बे तौ दो कपड़ों में बिदा कराबे की कै रएते। बोले चाए आर्य समाज सें करलो चाहौ तौ गायत्री परवार के सामूहिक ब्यावन में कर लो। एक छिदाम कौ खर्च नईं।

– बिन्नू, अगर तुम जा के लानें, राजी हो जाऔ, तौ बिरादरी का दुनियां भर सें लड़बे कों तैयार हैं हम।" ललिता सांस रोकें सुनत रई, फिर धीरे सें बोली– "भइया सें पूँछ लेयो।" उर्मिला– "भैया सें का पूछनें, फिरऊँ उनसें भी पूंछ लैहें, पैलां तें अपने मन की बता बेटा।" ललिता– हम का बताइये, जैसौ समझौ, ऊसई करौ। छोटू में सज्जनता, शराफत है, घर गांव कौ है, हमई का, जीकौ ब्याव भी उससें हुइयै बई लड़की 'सुखी रैहे। भाभी, बड़े भाग सें मिलत छोटू जैसौ घर–वर। हमें तौ सुरुईं सें अच्छे लगत, पै का पतौ छोटुअई हमें नापसंद कर दें तौ?"

उर्मिला– छोटू के मन में तुमारे लाने जौन बातें हैं, उनकौ इलम है कमल किशोर कों, जई कारन सें उननें ब्याव की बात चलाई है, सैन संकेतों में बे जता चुके हैं कै छोटू अलावा ललिता के, आन मोंड़ी सें संबंध नईं जोड़ेंगे, भलाऊँ क्वांरे रै जांयें फिर।

××××××

ब्याव काज की बाते तै हो गईं। ब्याव आर्यसमाज के मंदिर में गायत्री परिवार वारों की मौजूदगी में हुइयै। कुल मिला कें पाँच जोड़ों का ब्याव है। पाँचऊँ ब्याव आन जात बारे हैं। दिन में हवन पूजन के संगै बैदिक रीत सें विवाह सम्पन्न होंगे। इतनों बढ़िया वर और वह भी अपने ही घर गाँव पुरा पड़ौस कौ! इतईं मायकौ, इतईं ससुरार! ललिता की खुसी कौ ओर छोर नईंया।

××××××

उर्मिला चाय कौ कप पकरा कें बोली उपेन्द्र सें– "आज सोमवार है, एतबार कों आर्यसमाज मंदिर में सामूहिक ब्याह हो रए! कमल किशोर नें अपनी ललिता कों माँगा है छोटू के लियें। दान दहेज कुछ नईं लगनें! बढ़ियल घर वर है। हमनें तौ हाँ कै दई। ठीक रैहै न? अपन औरें मंदिर में पाँत दैं देंगे ब्याव की।

का कै रए तुम?

लुगाई के मुख सें कड़े एक एक आखर भाला बर्छियन की नाईं गड़ परे उपैन्द्र के दिल दिमाग में। तन बदन में आगी लग गई। आवेष में आकें उसनें चाय कौ कप जमीन मैं दै पटको। खटिया सें उठा, उसका भरपूर थप्पड़ उर्मिला के मुख पर उंगरियन की उल्हार छोड़ गया– "मैं घर का मुखिया! साली मुझसें पूछें बिना तैनें उस खसम के संगै मिल कें जौ गुल खिलाओ। हमाई नाक कटाबे कौ पूरौ इंतजाम? काए? मगर मैं तुझे ही नकटी बना दूँगा साली! और कमल किशोर बौ आस्तीन कौ सांप! बड़ी जात में ब्याव करकें ऊँची समाज में जाबे कौ सपनों देख रओ! साले आ रए अबईं तुमाए पास! तुमाऔ गर्राट उतारबे कों!

–"देखता हूँ, कैसें होता है ब्याव!" मारे आवेष कें उपेन्द्र के नथुना फूल पिचक रएते। आँखें और मुख लाल भभूका हो रओतो। दाँत किटकिटा कें उस तरफदौरो, जाँ ललिता बैठी बैठी साग काट रईती। उसका हांथ पकर कें घसीट ल्याओ आंगन में। फिर तौ लातन घूंसन सें मार मार के अधमरी कर दओ बाए। क्रोध लावा बन कें फूट रओतो मों सें– "हरामजादी, तेरे कारन हमाई बदनामी हुइयै? तेरे कारन? औरत जात ससुरी मार डारूँगा तुझे।" फिर ललता खों कड़ोर कें कमरा में ढकेल दओ। कुंडी लगा दई। अल्मारी सें तारौ उठा कें कुंडी में लगा दओ। "ले हरामजादी मर एईमें। अब जौ कमरा तबई

खुलहै, जब ऐईमें डरी डरी तें मर जै है। इसीमें हग, इसी में मूत और जई अपनी नार में भर ठूँस!''

ललता तौ ऐसी हो आई ज्यों कुटत पिटत गैया डकरा में रंभा रई होय- ''भैया ऽऽऽ! ओ भैया! नई भैय्या हम नई करेंगे ब्याव! भैया.... छोड़ देओ! हिल्कियन के मारें सांस नई लै पा रई मोंड़ी, थूंक लार फिचकुर मुख सें निकर कें फर्श और कपड़न कों गीले कर रएते, पिसाब छूट परीती....तऊ....हाहा दैया करत गिगया रईती भैया खोल देओ ऽऽ तारौ..... भाभी ऽऽऽ बचा लो भाभी ऽऽऽ!

और भाभी! उर्मिला! संड मुसंड पैलवान सें उपेन्द्र सें कैसें पार पाउती? ललिता कों बचाने छुड़ाने में वह भी कम नई कुटी पिटी थी। तारौ लगा कें कुची जेब में धरत उपेन्द्र हिंसक हमलावर पषु की नाईं झपटो उर्मिला पै। मगर उर्मिला अब चौकन्नी थी। दौड़ के उसनें दालान में रक्खो मूसर उठा लओ- ''खबरदार नासपरे! हमाई तरपीं आए, तौ इसी मूसर सें कैंथ की नाईं खुपड़िया फोर डारूँगी! निर्लज्ज! पापी! मार तें मोए! तबई मार पाहै, जब जिंदा बचहै! हम पूछत हैं- 'का कसूर है हमाऔ? का कसूर है उस मोड़ी कौ? ठठरी बँधे, खा-खा कें गर्रा रओ, मुझ पै लांछन लगाता है नीच, तोरी करतूतें सब पता हैं हमें। बनारस में तैनें कितनियन के संगै करिया मों करो है, एक एक बात हिरदय में गड़ी है मोरे। बा बीमारी तोए कैसें और किन एबन सें भई कलंकी, सो सब हमें पता है! जिन गुंडों के संगै तैनें मिल कें मजा लूटो, उनई की घरवारियन नें तोरे एक एक लच्छन बताएते कुलच्छी। आ अब, मार मुझे! देखों, कै कितनी ज्वानी चढ़ी है तोए? आ तोरी ज्वानी निपटा देंओं मैं?

उर्मिला के खुलासों सें सनाका सौ हो परौ उपेन्द्र के जी में। कुछ देर लौ उर्मिला के रौद्ररूप कों देखत रओ चुपचाप! फिर तेजी सें अरगनी पर सें पैजामा कुर्ता उठाए पैरे। तैयार हो कें बायरें कड़ गए! घर के सन्नाटे में उसकी धमकी अबै लों धमक मचाए थी। जात जात कै गओतो उर्मिला सें कै असल बाप कौ हुइयों, तौ तोरौ एसौ करिया मों, करहों कै तैं तौ तें पूरी बिरादरी तक न भूल पायेगी सात जनम लों। जा रए, तुंमाए बाप के पास। उस लखमीचंद को बताऊँगा, यह जो जात कुजात का दलिद्दर बाँध रई है मेरे घर में, यह मेरे जीते जी नहीं हो पायेगा, ले जाओ मेरे घर सें इस कुलच्छन कों। अपने घर में घड़ी भर भी इस छूत कों बर्दाश्त नहीं कर सकता।

xxxxxx

उर्मिला नें सिर झटकार कें इस धमकी सें अपनों पीछा छुड़ाओ। बाहर वाली पौर सें दरबान कक्का कों आवाज लगाई। दरबान कक्का फफक-फफक कें रो रएते। बल्ले बब्बा की नातेदारी सें थे जे। पैंला बल्ले बब्बा के संगै लगेरतते रेंजर साब लों। जब सें बल्ले बब्बा इतै टीकमगढ़ आएते, तबसें उनकौ मन भी नईं लगो फिर! मनमौजी आदमी! सो जे भी कड़याए इतई! बल्ले बब्बा और मुलू खों तौ खेत खरयानई से टैम न मिलततो, सो बब्बा नें उर्मिला सें कै सुन कें इतई घर में उसकी तैनाती करा दईती। खेती किसानी कौ काम! जित्ते आदमी होंय, उतनई कम, गल्ला कों मंडी लै जाबो, तुलवाना, बिकवाना बोरी फ्टीयन में धरना, भरना, कछुवारे की साग भाजी की बेंच.....तमाम काम थे दरबान कक्का के जी खों, उस पै मौका बखत खेतों की चाकरी भी....। बल्ले बब्बा की नाई, दरबान कक्का की आँखन की पुतरिया थी उर्मिला! गोद खिलाई मोंड़ी! और आज जा दसा हो रई......। मगर उर्मिला विचित्र है, खुद चाय कछू कै ले, मगर क्या मजाल कै कोऊ दूसरौ एक बोल तौ बोल दे उपेन्द्र के खिलाप! जंगली बिलैया की नाईं मों नोचबे तैयार उर्मिला....। उर्मिला नें जैसई आवाज दई, तैसई दरबान कक्का हाजिर हो गए उसकें ठिगां, बे तौ जैसें इसी इंतजारी में थे कै मौड़ी कबै उनें बुलाए, औ कब बे भीतरै आंएं.......।

दरबान कक्का की मदद सें कैसऊँ उर्मिला नें कमरा कौ तारौ टुराओ! कक्का तारौ टोर कें खड़े भयेते कै उर्मिला नें उनै बाहर जैबे कौ इसारौ दओ। स्वयम् किवाड़े खोल कें कमरा के भीतर गई। पेटीकोट बिलाउस पैरें ललिता कौनें में खड़ी थी। धोती कमरा की छत की बीम के कुंडा में फंसीती। पल भरे में उर्मिला समझ गई, कै का होबे बारी हतो। सोच कें जी कंप गओ उसकौ। मगर प्रकट में बोली- ''साड़ी कौ फंदा हम बनाएं दैरए, अगर तुमसें नई बन पा रओतौ! हमाएं करे धरे पै ऐसी आगी छुवावनें हती, तौ बता तौ देतीं, हम काए इतनी मेहनत करते! कुटते पिटते। हमें का मालुम था, कै जिसके लियें हम इतना सोच गएते, उसकी नजरों में हमारीं कोंड़ी भर इज्जत नईंयां।

-बिन्नू इतने बिराने तौ गैलघाट के जनें तक नई होते जितनी तुम निकरीं। इसके आंगे वह कुछ और कती, कै ललिता दौर कें लिपड़ गई उर्मिला सें। रोउतई रोउत बोली- ''हम का करें भाभी, घर को कलेष मिटाबे कौ एक जई उपाय हमें समझ में आओ सो.....।''

उर्मिला उसके सिर और माथे पर ममता सें हांत फेरत रई। फिर बोली- काए बिन्नू तुमनें जे क्यों न सोची कै तुमाए ईतरां सें जान दै देबे में कितनी बदनामी होती। बड़ौ भैया बाप दाखिल होत सो उससें जो हो गयो बा पै घूरा डारौ।

अकसेर वारी मट्टी कौ तेल डार कें बर गईती, सो कितनों थूंको तो, सबनें। कौन कौन सी अनहोंनी नई कईती, सो का तुम नई जानतीं? औ तुम तौ बिन्नू कितेक भागमान हौ कै घरबैठें तुमें इतनों बढ़िया घरवार मिल रओ। सज्जन खानदान है। और तुमें का चहिये। सुन लो लली, दुनियाँ चाहे इतै की उतै हो जाये, हम तुमारा ब्याव झांसीवारी के छोटू सें करकें रहेंगे! बामन बनिया में का फरक! आग लगै ऐसी जात कुजात में! हम नई मानते ऐसी बातों को।

-लली, तें जिंदगी भर सुख सें रहैगी वहाँ! चल उठ, धुतिया पैर। मों हाथ धो लै बेटा। सपाटे सें चाय बना। अपन मिलकें पियेंगे। आज नई तौ कल, तुमारे भैया भी मान जैहें, देख लइयो।

xxxxxx

जे जाते क्वांर के दिन हते। कार्तिक की आगौनी में हवा वायु सीरी और फिज़ां सरस हो चलीती! षरद के चंद की स्वच्छ निरमल, चाँदी सी उजियारी तेरस की रात थी। बालक खा पी कें सो गएते। ललिता, उर्मिला देर तक उपेन्द्र के बारे में बतकाव करत ऊँघन लगीतीं। दरबान कक्का आज खेतों वाले घर कों चले गएते सोबे। दो दो गैंया ग्यावन थीं एक संगैं, जानें कबै ब्या परें, सो बल्ले बब्बा नें दरबान सें कै दईती, जौ लों गैंया ब्या न जांयं, तौलों बे इतईं सोएं-परैं।

xxxxxx

लगभग एक पहर रात कड़ गईती। पूरौ घर गाढ़ी नींद में सो रओतो। एकीएका द्वारे की कुंडी जोर सें बजी। एक बार..... दो बार।

''कौ है'' उर्मिला की नींद में डूबी आवाज कड़ी। चारपाई सें उठ परी।

''हम हैं बेटा उर्मिला, खोलौ किबाड़े।'' आवाज अमृत बन कें परी उर्मिला के कानों में। हें ऽऽऽ जे..... तौ पिताजी आए हैं......। अलसाने सरीर में बिजरी दौर परी होय जैसें। फुर्ती सें उर्मिला नें द्वार खोला। कितने सालों बाद पिता कों देख रईती, सामनें बिल्कुल प्रत्यक्ष। पिता की छत्रछाया में उसे सुक्खई सुक्ख मिला था। अपार सुख। हर फरमाइस पूरी। लाड़ दुलार की मूर्ति थे पिता। भूल सें भी बिटिया के पेट का पानी तक नईं डुलने दिया कभी! और बई बिटिया कों ससुरार के नाम पै का मिलो? पहाड़ से लंबे भारी दुक्ख, अभाव, जिम्मेदारी....कलेस ...यातना....संघर्श...। अचानक पिता सें लगकें भरभरा कें रो परी उर्मिला। हिलकियां बंध गईं। रोउतई रोउत बोली- ''हमाई खैर खबर नईं लई। बिल्कुल बिसरा दई हमें। जा न सोची कै हम कैसें जियत हुंइयैं...? पिता जी ऽऽऽ।

रेंजर नरोत्तम रिछारिया अडिग खड़े थे। सन्न से। बिटिया की हालत तौ बे भौत पैलां सें जानते थे, उनसें कछू भी नईं छिपोतो। गोरी नारी भरी पूरी उर्मिला के आंग में हड़रई हड़रा बचेते, देह ढकर ढकर हो रईती, उसकी जीर्ण षीर्ण हालत देख कें बाप कौ जी टूंक टूंक हो गओ। बे बोलवो चाउतते, बिटिया कों दिलासा देबो चाह रएते, मगर जी भरयाओतो, मुख सें बोल नई कड़ रएते। उन्हें पता थी कै बोल नईं पायेंगे ई बखत! कौनऊ तरां सें रुबाई जब्त करें रए। बाप कै बिटिया कोऊ सें कछू कत सुनत नई बन रईती मौन कौ सन्नाटा खिंच कें रात के अंधयारे खों और गहरौ कर रओतो। कुछ देर की षांति के बाद पिता की आवाज सुना परी, वे पूछ रएते- दरबान कहाँ है बेटी। उत्तर में उर्मिला नें दरबान के खेतों की तरफजैबे कौ कारन बता दओ। फिर उठी और पिता के सोबे की विवस्था लगाउन लगी।

xxxxxx

रेंजर नरोत्तम रिछारिया की नींद खुली तब रात के तीन बज रएते। बे सोबे की कोषिष कर रएते मगर नींद उचट गईती। बे इस चिंता में हते कै बिटिया कौ संकल्प और निर्णय सासरे, मायके के दोई कुलन की आबरू कों खाक में मिला दैबे के लाने उतारू है। नाते रिष्तेदार का कैहें? चुप नईं बैठेंगे, उनका जीना मुहाल कर देंगे। लरका बिटियन के ब्यावकाज के लाले पर जैहें। बिरादरी बारे जात बाहर करेंगे सो अलग! लोग थूकेंगे। नाम धरेंगे। जे सब बातें उर्मिला ने काए नईं सोचीं? का अपनी जात में कौनऊ मोंड़ा न हतो, जौन कुजात में मरबे गई बिन्नू? रेंजर जितनों सोचें, उतनई उरझत जायें। बेकल हो कें करोंटा बदल रयेते, जब कल कैसऊँ न परी सो उठ बैठे खटिया सें। दमाद पासई में सो रओतो, खटिया की चर्र मर्र सें उसकी नींद टूट गई। सो उठकें बैठ गओ। रेंजर नें दमाद कों उठत देख लओतो सो बोले कै उर्मिला कों बुला ल्याऔ बेटा उपेन्द्र! रेंजर ना भी काते तौ भी उपेन्द्र जौ तौ जानतई थे कै जादा सें जादा दो या तीन घंटा और रुकेंगे पिताजी। तब तक बातचीत हो जाओ चहिये, साफसाफ इस पार या उस पार! उसकी रात भी आँखों में कटी थी अब लों। सो बौ तौ बैसें भी उर्मिला कों उठाबे के लंय जान चाउततो। गए उसके ढिंगां, उर्मिला बेसुध हो कें सो रईती, जा देख कें ईरखा सें उसके तन बदन में आगी लग गई- इज्जत आबरू सें खिलवाड़ करकें कैसी सो रई रंडी मा......। आंगें बढ़ कें उसनें एक लात मारी उर्मिला की पीठ पै। अचानक प्रहार सें एकदम सें बिलबिला कें उठ परी उर्मिला, उपेन्द्र कों खड़े देख कें जान गई कै इसी ऐबी नें सोउत परें मारो हमें। कुछ कै पाउती, इसके पैलां उपेन्द्र नें एक और लात उसके मुख पै मारी- ''उठ हरामजादी! निकर मोरे घर सें। जा बाप के संगै मर। जां करिया मों करनें होय सो कर, अपनों और अपने बाप कौ!

दमाद कौ चिल्लाबौ सुन कें रिछारिया जू मईं आ गए। रोउत किलपत बिटिया कों छाती सें लगा लओ। बिटिया की दीन असहाय दसा नें उनके पूरे क्षोभ और क्रोध पै पानी उड़ेल दओ। रोउत मोंड़ी कों मोंगाउन लगे। भौत सबर करकें, बड़ी हेज और मुलामियत सें बोले- 'उर्मिला चलौ बेटा इतै सें। हम तुमें यहाँ नईं छोड़ेंगे। जिस घर में कदर नईं, वहाँ रुकना दुष्वार है। बेटा जैसीं तुम पैलां थीं हमाए लानें, ऊसई अबै हौ। करन दो इनै जो जे करबो चाउत हैं अपने भैया बैनन के लानें। किस हक सें तुम उनके ब्याववर कर रईती। जिसकौ हक है उन पै, ओई खों करन दो। चलौ, उठौ, देर न करौ, आज जरूरी काम है बेटा हमें, बड़े एहलकर आ रए हैं निरीक्षण के लानें....। जल्दी करौ, उठौ, सपाटे सें तैयार हो जाऔ।''

अब लौं उर्मिला कछू शांत हो गईती। बखत के फेर नें ऊए कुछ दुनियादारी और बात व्योहार के संगै खूबई कर्मठता सिकै दईती। साहस और संयम की संपत्ति भी विधाता नें जी खोल कें बख्शी थी उसे। उर्मिला धीरें मगर दृढ़ आवाज में बोली- ''पिताजी, अगर हमें आपई के संगै जानै होतो, तौ जिद्द करकें हम इतै ससुरार आउतेई काए खों? और आपखों अगर बड़ी चिंता हती हमाई और हमारी ससुरार की, तौ आपई तलासें देते ललिता के लानें घर वर? छोटी बैन के लानें तौ आप आकास पाताल एक करकें लरका ढूंढ़ रए हैं, उनई में सें एकाध बता देते? तब न आई हमाई सुध? इतने सालन में कितनी बार आए हैं आप हमें देखबे? हम जी रए कै मर रए, कितनी परवा करी आपनें? सो ऐसौ है पिताजी, कै आप जाऔ! ड्यूटी और घरबार देखौ। हमनें तौ अब जौन सोच लई, सो बई करकें रहेंगे! झूठी इज्जत और जात बिरादरी की खातिर न हम नंद कों जिंदगी भर कुवांरी बिठा सकत औ न दानदहेज के लोभी कसाइन के हांथन में गऊ जैसी मोंड़ी दै सकत! और फिर इतै तौ लरका बिटिया एक दूसरे के मनमाफिक हैं!

– पिताजी, कमल किशोर जैसौ सज्जन और तरक्की सोचबे बारौ कौन सौ घर है अपनी बिरादरी में, बताइयो तौ तनक।

– औ सुन लो इस घर सें हमें कऊँ नईं जानें! जियें जानें होय सो ऐन चलो जाय। सुन लो जा भी कै किसी नें मोरी बनत बात बिगारबे की कोशिश करी, तौ खड़े खड़े पुलिस बुलवा ल्योंगी! कोरी धमकी नोंई जा! न मानौ तौ कर कें देख लो। फिर जा भी देख लइयो कै का गत बनत है!

उर्मिला की बातन की बारूद सें उपेन्द्र आपा खों कें उर्मिला की घिची दाबन लगो। मुस्कल सें रेंजर नें बीच बचाव करो। बोले- 'हम चले जायं सो जैसौ चाय करियो उपेन्द्र, फिर तुमें रोकबे बारौ कोऊ नईयां। इतनी इज्जत राख लो बेटा, हमाएं अंगाऊँ एसौ न करौ! कोऊ किसी कौ भाग नईं बदल सकत। जितनों बनो सो समझा दओ।

– मगर मोंड़ी महाजिद्दन है। जन्म की एसई है। जो ठान ली सो ठान ली! बौ तौ तुम न आउते हमारे ढिगां तौ काए खों हमें इतै आउनेंतो औ काए खों जे रावला देखनें परते।

– इतै कोऊ किसी सें कम नईंयां। सो जी के जी में जैसी आय, करै। हमाए लेखें तौ आज सें मर गई उर्मिला! घर खानदान की नाक कटा दई तैंने मोंड़ी। चाय जियै चाये मरै, ढूंकने तक नईं आऊँगा।

– न आदमी की माननें न बाप की! बस जो औरयाई सो औरयाई। जई सें कई जात है कै औरयाई सो औरत। हमारा तुमारा नाता खतम आज सें।

क्रोध सें थरथराते पंडित नरोत्तम रिछारिया बिटिया कों अत्पर में छोड़ के चलते बने, कत गए– अब चाय ब्याव करौ नंदों का, चाय बेंचों चाय बेस्वा बनाऔ, चाए होरी मे पबरौ.....हमसें कौनऊँ मतलब नइयां।परोसी के घर में ई भोर भुन्सारे की बेरां रेडियो बज रओतो स्यात। गाना आ रओतो – सुख के सब साथी, दुख में न कोऽऽऽय.....मेरे राम....तेरा नाम इक सांचा दूजा ना कोए!

एक लंबी सांस कढ़ी, उर्मिला के मुख सें निकर परी,– हे राम! हे ईसुरनाथ, हम तौ इतनों जानत कै नीयत हमाई सच्ची है, सो सहाय करियो पिरभू अब तौ तुमई हौ जीवन आधार....बाप मताई हितू मीत सब कुछ!

××××××

पिताजी आए! भौत दिनन बाद मिलन भेंट भई जैसें पवन झकोरा आ कें जी जुड़ा गओ होय! जैसें सुख स्वपन पूरौ देखई न पाई और अधबीचां आँख खुल गई! खेल खतम! अब तौ हम हैं और मकरी की नाईं मुसीबतन कौ मकरजालौ! उर्मिला जानतती कै अब महाभारत होबें सें बच नईं सकत! एकाएक उसे कुछ सूझ परी, सो तुरंत उठी और खेत की गैल धरी बा नें। उपेन्द्र देखई न पाए! बे तौ गुसलखाने सें ऐसें निकरे, ज्यों षिकार कों देखत सूंघत सेर निकरो होय जंगल सें। मगर शिकार गायब! इतै कितै हती उर्मिला..। एक भद्दी सी गारी दई उपेन्द्र नें और बीड़ी सुलगाउन लगे...।

××××××

उर्मिला मानबे कों तैयार नईं थी। मगर बल्ले बब्बा, मुलू और दरबान इस पर अड़ गए कै अगर उर्मिला नें उनकी कई न करी तौ तीन के तीनऊँ इतै सें चले जायेंगे हमेशा के लानें।

बल्ले बब्बा– बिन्नू राजा, नीत सुनीत की जुगत निकार कें, अब पाछें न फिरौ। बेटा ऊसई करौ, जैसौ सोची है तुमनें। दुख विपद की घरी में नीतमान होबे में हुसयारी है।

दरबान कक्का– बेटा गोदी खिलाई मोंड़ी हौ तुम, सांसी मानौ कै इसमें कौनऊ खतरा नइयां। हम जानते हैं कै दमादराजा कितने ऐबी हैं, मगर आँख की पुतरिया की नाईं तुम उनें चाउती हों। बेटा हम उनकौ ख्याल राखेंगे, बिस्वास करनें आउत अपने हितू मीतन कौ। घबड़याबे सें काम नईं चलनें न रोबे गाबे सें। करबे सें होत काम। सोचबे सें नईं। हमोंरन खों अपनों काम करन दो, औ तुम अपनों काम देखौ।

मुलू– जिज्जी, सांची कै रए, तुमारौ मुख देख कें रै जात मोरे हांतपांव, नातर अब लौं बैन... कों कब कौ ठिकानें लगा देतौ! हमोंरन की कई न मानहों तौ रामदई, जीजा की घिटी दबा कें कौल पूरौ करहों, चाय फिर भलाऊँ जेहल हो जाय सास की।

उर्मिला खुद भी जानतती कै सिवाय इनोंरन की बात मानबे के और कौनऊ चारौ भी नइयां। मंगल होई चुकौ। अब कै दिना रै गए ब्याव के.....। हे राम..... हम का करिये, जौन हंसवृति तुमनें दई, सो उसी सें हमें जा जुगत फुरी। और अब जई करनें परहै....।

××××××

अखबारों की हैडलाइन बनी है ललिता और छोटेलाल दमेले की षादी। आर्यसमाज और युग निर्माण योजना बारन नें मिलजुल कें एकई मड़वा तरें ऐसे जोड़ों के ब्याव करवाए हैं, जिनमें जात-पांत की बातें दूर दूर तक नईयां। और तौ और दूरदर्षन कौ नओ चैनल षुरू भओ है डी.डी.टू. सो उसके रिपोर्टर उर्मिला कौ इंटरव्यू लैबे आए हैं। अचकचा सी परी उर्मिला! उसनें तुरंत कमल किशोर कों दै बुलाओ। कमल किशोर जब आए, सो अखबारन कौ गड्डा कौ गड्डा भी ल्याये अपने संगै। आज इस दहेज विरोधी, जात पात विरोधी, ऊचनीच विरोधी ब्याव अभियान कौ प्रचार करकें मीडिया नें अपनी पुनीत पावन जिम्मेदारी निभा दई।

अखबारों में विवाहित जोड़ों के संगै उर्मिला औरन की कई फोटू छपी थीं। वर वधून के मातपिता की भी। उर्मिला कों अंदाज नईं हतो कै उसकी सोचविचार का इतना महत्वपूर्ण सामाजिक स्तर होगा। वौ तौ जब कल पंडाल में नगर के बड़े बड़े प्रबुद्ध और गणमान्य लोगों नें अपने विचार रक्खेते, तब समझ में आईती कै उसका निर्णय कितना क्रांतिकारी है। नगर प्रमुख नें जनसभा में कईती– उपेन्द्र सौनकिया और उनकी पत्नी उर्मिला सौनकिया तथा इनकी प्रेरणा लेकर कमल किशोर के संग संग जिन लोगों नें जाति और दहेज का विरोध करकें अपनी संतानों के ब्याव किए हैं, उननें सामाजिक समरसता को रोपा है, मेल मुहब्बत की मिसाल जगाई है। मानव मूल्यों को चरितार्थ किया है। नगर महापालिका आप सबका अभिनंदन करती है......।

अब उर्मिला कों लगो कै उसके एक सत्कर्म का इतना बड़ा मानवीय लोकपक्ष भी है। युग निर्माण शक्तिपीठ के प्रमुख नीलेष तिवारी इस आयोजन की इतनी बड़ी सफ्लता से अभिभूत थे बोले– उर्मिला बेटा खेती बारी के कामन सें थोड़ौ टैम निकार कें अपने समाज कों अच्छाइयों और रचनात्मक कामों सें जोड़ौ।

उर्मिला– नगर महापालिका बारे, हमोरों का अभिनंदन करेंगे। अगर आप बुरा न मानों तौ हम कुछ कँएं! नीलेश– हाँ, हाँ कऔ! कऔ का कै रईं!

उर्मिला– अबै भी जातपांत इतनी जादा है, कै नब्बे परसेंट लोग ऐसे ब्यावन कों हेलमेल को मनईमन अच्छौ नईं मानत। आपकी पर्व उत्सवों की सभाओं में नगर के बड़े बड़े उद्योगपति, डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, षिक्षक, बैंकबारे और अमीर गरीब भारी तादाद में जुटते हैं। आप समाज की हर जात की इस भारी सभा में जब इन जोड़ों और इनके अभिभावकों का अभिनंदन, सम्मान कराओगे, तौ एक तरां सें उसी में इनें सामाजिक स्वीकृति तौ मिलेगी ही, इनका मान पान देख कें लोग सोचने पर मजबूर हो जायेंगे कै यह हिम्मतवाला और जिंदादिली का काम बे भी करें, उन्हें भी बड़े बड़े लोगन सें सभाओं में यह यष और सम्मान मिले....। न धन का खर्चा न बेकार की अपमानजनक दौड़धूप वरवधू कों ढूढ़बे के लियें।

उर्मिला की बातें सुन कें तिवारी जी गंभीर हो गए। दुवधा में पर गए। बे सोच रएते कै आन जात में ब्याव अच्छी निगा सें नईं

देखो जात। अबै जौ चलन में नईं आओ। इसका पैमाना भौत न्यून है। उननें अपनों संकोच सामनें रक्खो- हमारा मतलब था कि अभी सम्मान करना जल्दी होगी, चलन थोड़ा और बढ़ने दो।''

इस पै उर्मिला नें तुरंत कई- वा, तिवारी जी, चलन बढ़ाबे के लानें तौ अभी उनका अभिनंदन बेहद जरूरी है। अबै उनें विरोध बहिश्कार कौ, सामाजिक स्वीकृति न मिलबे कौ खतरा है। जई मौका है उनके कामों के औचित्य कों सिद्ध करबे कौ बाद में तौ जब चलनई ही चल जायेगा, तब आप द्वारा किया अभिनंदन कौन सौ बड़ौ महत्व रखहै, अलावा खानापूरी के!

उर्मिला की एक एक बात में दम थी। उनोंरन नें आपस में विचार करो। औ लो, तै हो गई कै सबकौ अभिनंदन सम्मान तौ होगा ही, अभिभावकों के साहसी, हिम्मती और जिगरे बारे इस काम के लियें उनें जातिभंजक सामाजिक संरक्षक की उपाधि भी दी जायेगी.....।

अबै उर्मिला कल की इन सब बातन कों और और सोच पाउती, कै बीचई में कमल किशोर नें टोक दओ- टी.वी. बारे जल्दी मचा रए। चलौ बायरें चलिये, इंटरव्यू दैबे।

××××××

ब्याव हो गओ। अखबारन में टी.वी. में निकर गओ। ललिता, दमेले परवार की लक्ष्मी बनकें दोउ कुलन में उजेरौ करन लगी। ललिता की याद करकें उर्मिला के अंसुआ कड़ परे। उसनें अँसुआ बहन दए। रो लैबे सें जी हल्कौ हो गओ। उए षांति और संतोश था, होंस भी कि बस एइ तरा सें विशाखा और निपट जांएं। उपेन्द्र की याद हो आई। पेट में वायगोला सौ उठ परो। हौलदिली सी उपजयाई। सोच रईती कै उपेन्द्र जानें किस रूप में लेंगे जे सब बातें....। उसनें उपेन्द्र के संगै जो किया था बौ अच्छा था या बुरा सो नईं जानती। उस समय तौ उए और उन सबकों जई उपाय सबसें मुफीद औ सुविधा जनक लगोतो। सो मिलजुल कें कर भी डारो। पिता के क्रुद्ध हो कें बापिस जाबे के बाद उर्मिला कौ मन कई कई तरपीं गओतो। ऐसौ का जतन होय, कै ललिता कौ ब्याव निर्विघन हो जाय। कुबड्डु पति परमेसुर कों कैसें राजी करै, बौ तौ हांतई नईं धरन देत। उसनें तौ सरग पाताल एक कर दएते सुनई कें। उसका जातिगत अहंकार, खोकली रईसी कौ दंभ, निर्द्वन्द उद्दंडता कभऊँ राजी न हुइयै! तौ फि़र का करै? का आनगाँव जा कें ब्याव करयाए? का कमल किशोर कों सब सांची सांची बता दे? अपनी और अपनी नंद की पींठ, मों, हांतन की बे चोटें दिखा दे, जौन उपेन्द्र नें मार मार कें दईं हैं? का करै? सोचत सोचत उए जौन, जुगत सूझी सो उसनें दोऊ नंदों और बह्ले बब्बा औरन खों बता दई। सबनें एक सुर सें उसकी जुगत कों करणीय और उचित बताओ। रोउत मन सें उर्मिला कों भी माननेंई परी। दिन कड़ गओ बई सब में। रात भइ। बुद्धवार की रात।

जुगत के हिसाब सें भाड़े की गाड़ी आई, आधी रात। गैरहोषी की दवा के कारन नींद में बेसुध उपेन्द्र की आँखें, मुख, हांतपांव बांध कें अच्छी तरां सें ऊपर सें चदरा उढ़ा कें, दरबान कक्का नें अपनी बलिश्ठ भुजाओं सें उठाया और गाड़ी की पीछे बारी सीट पै पार दओ। खुद भी बैठ गए। जात जात इतने ऊँचें सुर में बोले कै डिराइवर अच्छी तरां सें सुन ले। उए सुना कें उर्मिला सें बोले- ''बिन्नू फिक़र न करियो, मैं अपने गुरु परमेसुर जू के जग्ग की भभूत लगवाहों इनें तीनऊँ संझा। उसी में दमादराजा की जूड़ी उतर जायेगी। दवाई चलई रई है। चारेक दिना बाद तुम खुदई आना कार लै कें, चाय एई गाड़ी लै कें डिराईबर जू के संगै। सो हम लोगन कों लुवा ल्याइयो।

-अच्छा बिन्नू जात हैं अब, आ तोरे चरन छू लों। आदर के संगै उसनें उर्मिला के चरन छुए।

योजना के मुताबिक दरबान कक्का उपेन्द्र कों अमरकंटक के जंगलों तरपीं लै कें चले गए। दरबान कक्का का गांव निपट देहात था। पचास-साठ संगोत्रिय सजातियों कौ टोला सौ हतो जौ जटेवरा गाँव! औसर काज, जचगी, त्योहारन में आन गांव सें बसोर नाऊ, ढीमर, धोबी, कुम्हार जैसी जातें अपने जजमानन के घर कमाबे आउत रत तीं।

खेती किसानी ही जीवनयापन कौ मुख्य साधन हतो जटेवरा में। खेती किसानी या फि़र आसपास के क्षेत्रों में चोरी डकैती। चूंकि जटेवरा के चारों तरपीं घनी डागें थी। इतनी घनी कै कऊँ कऊँ तौ दिन औ रात कौ पतई नईं परततो। हिंसक जानवर चाय जब निर्द्वन्द हो कें गाँव में घुस परते थे। सो बस, इसी कौ लाभ उठाकें हर घरबारों के पास लाइसेंसी थी।

दरबान कक्का के घर में परिवार के नाम पै उनकी आँधरी बूढ़ी मताई और एक बड़ौ भैया, बस जेई दो जनें थे। ब्याव उननें करो नईं, सो उनकौ अपनों कुछ नईं, जो थे सो मताई भैया थे। गाँव भरे में जा धारणा थी कै बड़ौ भैया कौ संग साथ डाकुअन के गिरोहबारों से है। लिहाजा, गाँव के लोग इस परिवार सें वास्ता रखबे में घबड़ाते थे। उनमें यह विस्वास भी पैठ गओतो कै बड़ौ भैया असगुनया है, जबई तौ तीन तीन ब्याव करे, मगर एकऊ लुगाई न बची। तीनऊँ मर गईं कै जानें नट्या नें मार डारीं।

दरबान कक्का जब घरै पोंचे सबेरौ होबे में कुछ देर बची थी। चारों तरपीं भांय भांय करत अंधयारौ हतो। गाड़ी घर के बाहर भरभरा कें रुक गई। ड्राइवर लघुशंका के लियें चलो गओ। दरबान कक्का नें दियासलाई की तीली जरा कें रोशनी में घर कौ द्वार देखो, कुंडी पै हांत धरतईं किवाड़े खुल परे, वापस गाड़ी की तरपीं लौट कें उपेन्द्र कों बांहों में भरकें उठाओ औ बायरें बारे कमरा में पड़ी खटिया पै दै पटको।

''ओ तोरी नास हो जाय, कुड़िया जू! रातों रात जौ धन दौलत कमा कें, मोरे घर में न पटक ठठरी बँधे। उतईं मर, जां तोरे बे, डांकू बाप रहत हैं। मोए दिखात नईयाँ, तौ का सुनातई नईयां?

– लड़ सें तैंने जिस बोरा भरी कमाई खों पटका है, सो ऐन सुना परी मोए।'

दरबान कक्का समझ गए कै बड़े भैया के धोके में मताई कहनी अनकहनी सुनाउत जा रई है मोए....। न जानें कितनी देर लों बर्राती रहेगी क्रोध में। जा सोच कें बे तुरंत मताई लौ पोंचे बोले- बाई, मैं आओं गिदन्ना। अपने मालक के दमांद कों संगै ल्याओ हों। जूड़ी में उन्मादी हो गएते। बिन्नू कों परेसान करतते सो में इतै लुवा ल्याओ हों। चार-पाँच लांघनें कर लैहें, सो साजे हो जैहें। उतै तौ खा रएते और गर्रा रएते।

बूढ़ी माँ टटोलत टपटेरत दरबान कक्का के पास आई।

उसकी आंधरी आँखों में अगर कोउ देख पाउतो, तौ देख लेतो जा बखत, कै अपने लाल, गिदन्ना की अवाई सुनकें ममता कौ सागर उन बूढ़ी आंखों में लहरियां लै रओतो। उसें अपनी कूँखपोंछी इस छोटी औलाद गयादीन सें विशेष हिया हिलोर थी। मारें लाड़ के गयादीन कबै गिदन्ना हो परे, जौ न मताई नें जानी न पूत नें। कन लगत कै प्रेम नैम की भाखा एसई होत अटपटी सी।

××××××

उपेन्द्र कों आज जटेवरा में चौथा दिन था। जब उसकी गैरहोंसी टूटीती, तब उसनें स्वयम् कों इस अपरिचित अंजानी जगह में खंडहर जैसी इस पौर में पाया था। होसई उड़ गएते उसके। कुछ्ख देर तौ एसई परे रएते। फिर हिम्मत करें बायरें निकरे, दरबान कक्का दिखाने। दरबान कक्का नें उनें बायरें आउत देख के कई– ''दमादराजा कछू दिनन मोरे गांव में रै लो, कुंडेश्वर और टीकमगढ़ सें दाना पानी उठ गओ तुमारौ!''

छिन भरे में उपेन्द्र को उसकी बात कौ सार समझ में आ गओ। उसनें आव देखा न ताव, पास पड़ो पथरा उठा कें दरबान कों दै मारो। -''साले दो कौड़ी के कमीन, तोरी जा मजाल'' कहत उसने लातों का वज्रप्रहार दरबान के कूल्हों पै किया, दरबान कक्का औधें मों गिर परे। जानें पथरा लगोतो या कुछ और दरबान के माथे सें भल भल खून कड़न लगो। चुपचाप उपेन्द्र की गारी बातें सुनत रओ। उपेन्द्र कौ गरयाबो बंद नई भओ। दरबान चुपचाप उठो, घर के भीतर पौर सें कड़कें आंगन पार रसोई में गओ। रसोाई की दालान में जेठे की दुनाली टंगीती। दरबान नें उठाई। बायरेंआकें सीधे उपेन्द्र पर तान दई। बोले– दमादराजा न जौ टीकमगढ़ है औ न तुमाऔ बनारस! कोऊ जान भी न पाहै, औ तुमें ठिकानें लगा कें इनई डांगों में फेंक दूँगा। उर्मिला बिन्नू सें कै दैबी कै हमोरि सोउत रै गए, और सिंह खेंच लैगओ लला कों।''

दरबान की आँखिन में मौत देख कें उपेन्द्र भय सें ऐसे चुप भए कै उदिना सें उनकौ बोलई नई कड़ो। जैसे मौनव्रत लै लओ होय। दो दिन बीत गएते उसके पेट में अन्न कौ दाना नई गओतो। दरबान उए भूखन मारबे पै उतारू था। दरबान कों फूटी आँखन नई सुहाततो उपेन्द्र। राजकुंअरि सी पली बढ़ी उर्मिला कों अपनी गोदी में खिलाओतो दरबान कक्का नें। हीरा सी मोंड़ी की बेकदरी करबे बारे उपेन्द्र सें उसकों ह्रदय सें घृणा थी। बस उर्मिला कौ मौं देख कें रै जातती, नईतर कब कौ यमलोक पठै देतो। पूरे दो दिना तक उपेन्द्र घर के बायरें की कुइया कौ पानी पी पी कें रए। तीसरे दिना दुपर कों बेला भर दाल और चनाजवा की चार रोटीं थाली में धर कें दरबान कक्का नें उपेन्द्र के अंगाऊँ धर दईं। मगर उपेन्द्र नें हांत तक न लगाओ। उसका यह रुआब दरबान कक्का कों जैसें मों चिढ़ा गओ। उननें भी सोच लईती कै अब अन्न का एक तिनूका तक इसके आंगें न डारहों।

××××××

उपेन्द्र सपने में भी न सोच सकतते कै ऐसी अनहौनी हुइयै, उसके संग! और करबे बारे को? उसके अपने कहाबे बारे सजन संगाती? कैसे अपने आँय जे? अपने आदमी करत ऐसी जानलेवा करतूतें? अबै और कुछ सोचते कै सुना परी अपने मन के भीतर सें-

''मगर जा तौ बताऔ कै आज जिनें अपनों कै रए, उनखों कितनें अपनों कितनों सगो समझो तुमनें?''

अंतरमन की जा बोली सुनकें जैसें उपेन्द्र खों झकझोर दओ होय कोऊ नें! जा तौ सौ परसेंट साँची थी कै उपेन्द्र नें तौ अत्तई मचा दओ। इतनी बेपरवाई तौ कोऊ गैरन की नईं करत, जितनी उपेन्द्र नें अपनों के संगै करीती! आज पैली बार उसनें परिस्थितियों पै गौर किया। इन तीन दिनों के एकांतवास में अब उसें सोचबे का मौका भी भरपूर मिला। क्या सच में कभऊँ कभऊँ विवेक जाग्रत हो कें बुराइन कौं देखन लगत? क्या सच ही एकांत कभऊँ कभऊँ अपने मन की कंदरा खोहों में उतर कें उचित अनुचित कौ ब्यौरा रखबे बारौ सचेतक बन जातई? क्या वाकई हम शांतित और नीरवता के घने आगोष में आत्मचिंतन पर बाध्य हो जाते हैं, स्यात् हाँ! तबईं तौ जो कछू उपेन्द्र नें कभऊँ नईं सोची बई बातें उसके मन मस्तिष्क में अनायास आउती जा रईं हैं।

– क्यों वह आज लौं स्वयम् खों लखमीचंद की औलाद मानत रओ! क्यों वह अपने आप खों रईसजादा मान कें घर बार खेती पाती बाहर भीतर के कामन की अनदेखी करत रओ? क्यों वह पत्नी, भैया बैनन की जिम्मेदारियन सें दूर भगत रओ? उर्मिला किस तरां सें गिरस्ती चला रई है? अनथक काम करती है घर में और खेतन में भी! उसकी मदद सहायता तौ दूर उल्टे गिन गिन कें उसके अच्छे कामन में भी खोटई खोट निकारत रओ। उर्मिला खेतन में खून पसीना एककरत रई, रात कों रात और दिन कों दिन नहीं समझो उसनें कभऊँ। न खैबे की सुध न पीबे की, न पैरबे की न ओढ़बे की अपने सरीर कों कभी सरीर नई समझा उसनें।

जौ सब की के लाने करत रई है, मोरे भैया बैनन के लानेंई तौ! बाप मताई बनकें उनकौ पालन पोशण कर रई है। हमनें करोई का है उनके लँए, उनकी पढ़ाई लिखाई कपड़ों लत्तों या किताबों के लँय? करबो तौ दूर उल्टे उनें आँखन नईं देखो कभऊँ! ऐसे काय हो गए हम? ढोरन की नाई मार मार कें उनकी चमड़ी उघेड़बे में हमें षरम न आई। खुद तौ एक तिनका लौ नई टोरो उनकी खातिर, औ जौन अपनी आतमा अगोरें दै रई उनके लानें, उसकी का गत बनाई हमनें, बाप तक खों लुवा ल्यायेते उए ठबेरबे के लँए! सौ अडंगा लगाए बैन की पढ़ाई लिखाई में! एक बा बिचारी उर्मिला है, जिसनें हर अच्छे काम कौ सिरमौर हमई खों बनाओ पुरा परोस और समाज के सामने!

जब पुरा पाले नें बैन कों कॉलेज में पढ़ाबे के लाने उसकी तारीफकरी, उसकी प्रगतिशीलता की सराहना की, तब कितनों प्रसन्न भएते हम! मगर इस सराहना का असली हकदार हम थे या उर्मिला? और तब भी हमाई आँखें न खुलीं, उल्टे दंभी और बन गए अपनी झूठी प्रोग्रेसिवनेंस के। कहाँ सें है हम प्रोग्रेसिव? जाति कौ अहंकार कौन सी प्रगतिशीलता है? लुगाई और फूल जैसी बैन कों निर्ममता सें मारना पीट पीट कें चुटहिल कर देना! बहिन कौ होत ब्याव रोक देना! वाह! उपेन्द्र तू कितना बड़ा प्रगतिशील है? निर्लज्ज, पत्नी के दम पर कौर तोड़ने वाला दंभी! तें आखिर किस काम के लानें जिंदा है? पत्नी कों सताबे के लानें? या भैया बैनन पै आतंक जमाबे के लानें। विशाखा किस तरां सें ट्यूशन पढ़ा के पढ़ रई, जौ नई दिखात तुझे? बच्चे एकई निक्कर में पूरी साल बिता देत हैं, फट्ट जातीं तऊ नईं बदलत, जौ सब तुमें नईं दिखा परो कभऊँ? उल्टी जा सोची तैनें कै मैले कुचैले रैबे घूमबे की बुरई आदतें हैं इनन में। आवारा हैं जे। अभाव तोए काए न

दिखाने? घर भर खेतों की करिया माटी रगड़ कें सपरत है, मगर मंहगे साबुन की बट्टी तुमारे लानें धरी रत! क्रीम पाउडर ऊपर सें। घर भर कड़ुआ तेल लगाएं रत है। कपड़ा उन्ना सोड़ा में धोए जात हैं, भौत भई तौ रीठा सें। अपनी सजधज की टीपटाप सें आंगें, तुमाई आँखन कों जौ सब काए नईं सूझ परो। काए तुम जौ सब नई समझ सके? इसलिये कै तुझे कभी चिंता नई रई इनकी। न आत्मीयता न प्रेम मुहब्बत न हिया हिलोर।

पराए घर की राजकुंअरि सी नाजों पली लड़की नें पत्नी बनकें तुमाए घर के दलिद्दर अभावों को गहना समझ कें अंग सें लगा लिया! और तुझे उसके पांव खुरदुरे...... ओह! नीच.... तू नें कितनी कितनी जगहों पै उसका अपमान किया है। उसके पत्नीत्व को ठोकर मारी है.....।

मारें ग्लानि और क्षोभ कें उपेन्द्र कौ करेजा फटन लगो। अँसुवन की गंगा में नहाता उसका मन निर्मलता का वरण कर रहा था। न जानें कब लौ उपेन्द्र कुइया के नेंगर ठाड़े घने पेड़ के नेंचें रोउत रए.....जानें कबै खटिया लों आए जानें कबै उनकी आंख लग गई।

××××××

उर्मिला पहर भर रात रहत कड़ परीती गाड़ी में जटेवरा के लानें। ड्राइवर चूंकि मार्ग जानई चुकोतो, सो उनोंरन खों इतै लों आउतन में कौनऊ परेसानी नई भई। गाड़ी घर सें कछू दूरी पर रुकी। उर्मिला नें मईं सें उपेन्द्र कों देख लओतो। उपेन्द्र अबै लों पेड़ की छाया में सो रएते। पति के दंभी क्रूर जिद्दी सुभाव के कारण उर्मिला कम चिंतित नई थी। सो वह पूरी तैयारी सें आईती। जिन अखबारों में ब्याव की प्रसंसा थी, समाजसुधार की बातों के लियें उपेन्द्र सौनकिया और उर्मिला कों सम्मानित करबे की तिथियाँ दई गईतीं। जिनमें नगर प्रमुख और बड़े बड़े गणमान्य लोगन नें इनोंरन के इस काम की सराहना की थी, बे सब अखबार उर्मिला अपने संगै ल्याईतीं।

इनें लै कें उर्मिला पेड़ के नेंचें गई, जाँ उपेन्द्र सो रए ते। मलिन मुख, बढ़ी भई डाढ़ी मैले कुचैले कपड़न में लस्त से परे उपेन्द्र कों देख कें उर्मिला कौ जी भरयाओ। स्वयम् कों संयम में करकें समारो। कुछ देर लों खड़ी रई। फिर हिम्मत करकें आगें बढ़ी और सोउत उपेन्द्र के माथे मूंड़ पै उंगरिया फेरन लगी।

मूंड़ माथे पै उंगरियन की कोमलताई बारे परस सें उपेन्द्र की नींद टूट गई। उर्मिला कों ई तरां सें सामनें देख कें एकदम सें भरोसौ नईं भओ। कऊँ जगती आँखों बर्रोटन में तौ नईं खिंच परे हम। आंखें झपका कें उसनें अपने गाल पै चौंटिया लै लई। मगर सत्य सामनें हतो। अबै कछू बोलते उपेन्द्र कै उर्मिला नें हांत के अखबार बढ़ा दये 'पैले इनकी खबरें पढ़ लो। बाद में जो मनै आए, बई करना। मैं ठुकने पिटने के लियें तैयार हो कें आई हूँ तुमाए नगीचें।''

भरे मन से उर्मिला के हांथन सें अखबार की कटिंग लै कें चुपचाप पढ़न लगे उपेन्द्र। एक के बाद एक खबरों पर उनकी नजरें दौर रईती, और उर्मिला की आँखें उपेन्द्र के मुख के आउत जात रंगों, चढ़ाव उतार पै लगीतीं। मगर जब उसनें देखी कै उपेन्द्र की आंखन में अविरल अश्रुधार बह रई है, तौ जानें काय उसकी आंखें भी भरयाईं। रुवाई रोकें न रुकी, उसके भी अंसुआ कड़ परे। इतने दिनन कौ परिताप अंसुअन में बहन लगो। फूट फूट कें रोती उर्मिला की हिल्कियन कों सुन कें उपेन्द्र नें आंगें बढ़ कें उसके अंसुआ पोंछे। रुंधे गरे सें भौत हिम्मत करकें बोले- उर्मिला अपराधी तौ हम हैं, तुमाए औ पूरे परवार के। रोंयें तौ हमें चाहिये अपने पापों के लियें। हम तौ माफी माँगबे तक के हकदार नईं, कौन सौ मों लै कें तुमसें आँखें मिलाएं।''

उर्मिला अकबकानी सी उपेन्द्र की बातें सुन रईती। उसकों बिस्वासई न हो रओतो कै सामनें खड़ौ आदमी उपेन्द्रई आएं कै कोउ और? जड़ सी हो गई बिल्कुलई।

घर के भीतर सें निकरत दरबान कक्का नें दोउ आदमन कौ बतकाव सुन लओतो। खुसी खुसी बाहर आ कें बोले- बिन्नूराजा मैंने भोजन तैयार कर लओ। भीतर चलौ, दमादजू के संगै जैं लो! डिराईबर साब के लानें इतईं बायरें लंय आउत हम।

भोजन करने के बाद उर्मिला और उपेन्द्र टीकमगढ़ के सफर पै चल परे। उर्मिला सोच रईती कै गुन औगुन के गैल गलियारों के बीचों उसके सुखी दाम्पत्य के सफर की शुरुआत होई गई। मगर कितनी रोमांचक, मार्मिक और संघर्षभरे दिनों के बाद।

एसोसिएट प्रोफेसर
128/387 वाई-वन ब्लॉक,

बिटिया हमें बचाने

- डॉ. वर्षा सिंह

आज करो संकल्प सबई जन
बिटिया हमें बचाने
मोड़ा के चक्कर में पड़े के
मोड़ी नईं गंवाने।

मोड़ी भले ब्याव होबे पे
होत पराए घर की
मन में जोत जलाए पर वो
मां-बाबा के दर की

अपना लो बिटिया ख़ों भैया
करो न कोऊ बहाने।

कन्या जनम होय से पूरे
घर उजियारो छाए
लछमी चरन पड़े से मानो
डर अंधियारो जाए

कन्या देवी को सरूप है
चलियो, पांव पुजाने।

बिटिया को पढ़बे दे, भैया
रोक लगइयो नाए
बिटिया पढ़हे, आगे बढ़हे
ऊंचो नाम कमाए

बेटा-बिटिया भेद ने करियो
आए नए जमाने।

-एम १११, शांति विहार कॉलोनी
मकरोनिया, सागर (म.प्र.)

एक अल्प ज्ञात शायर: जनाब अब्दुल रहमान ''मंजर''

-हरिविष्णु अवस्थी

अमरोहा जिला मुरादाबाद में जन्में जनाब अब्दुल रहमान जी "मंजर"अमरोही का जन्म उन्नीसवीं शती के अंतिम दशक के लगभग हुआ था। तत्कालीन ओरछा राज्य (बुन्देलखण्ड) के बजीर (प्रधानमंत्री) जनाब अब्दुल जमा खाँ बजीर उद्दोला आपके दूर के संबंधी थे। उनके माध्यम से आपका टीकमगढ़ (जो ओरछा राज्य की राजधानी था) आना हुआ।

आप सन् 1915 ई. में सवाई महेन्द्र हाई स्कूल टीकमगढ़ में पर्सियन टीचर के रूप में नियुक्त हुए थे। संस्था में अध्ययनरत छात्रों के मध्य आपका बहुत सम्मान था। संस्था के शिक्षक भी आपका बहुत आदर करते थे।

सन् 1930 ई. में ओरछा नरेश प्रताप सिंह जू देव के दिवंगत होने पर उनके पौत्र श्री वीर सिंह जू देव "द्वितीय" ओरछा के सिंहासन पर बैठे। वीरसिंह स्वयं अच्छे लेखक एवं साहित्यानुरागी थे। इस कारण राज्य के अधिकारी, कर्मचारी गण भी साहित्य की ओर उन्मुख होने लगे। "मंजर" साहब भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। उन्होंने भी शायरी करना आरम्भ कर दिया। वह अपनी रचनाएँ अपने छात्रों को ही सुनाकर संतोष कर लिया करते थे।

सन् 1931 ई. की घटना है। एक दिन ओरछेश वीरसिंह जू देव सवाई महेन्द्र हाई स्कूल टीकमगढ़ में पधारे। उन्होंने छात्रों से पूछा आप में से कितने छात्र कविता कर लेते हैं? सभी छात्र चुप। एक छात्र ने साहस बटोरकर कहा-श्रीमान् हम लोग तो कविता करना नहीं जानते। हमारे मौलबी मंजर साहब जरूर कविता करते हैं और हम लोगों को सुनाते हैं। आप कहें तो उनकी जो कविता हमें याद हो गई है वह सुनायें। महाराज ने कहा। अवश्य सुनाओ। छात्र ने मंजर साहब की निम्नलिखित कविता उन्हें सुनाई-

नज्म-जो ऊँचों को नीचा दिखाती है रोटी। तो नीचों को ऊँचा बनाती है रोटी।।
बुढ़ापे में आँखें लड़ाती है रोटी। जबानी का आलम दिखाती है रोटी।।
अछूतों को कुरसी दिलाती है रोटी। शरीफों से जूते गठाती है रोटी।।
न उस्ताद कोई न शार्गिद कोई, मदरसों में मढ़ती पढ़ाती है रोटी।
हो मंदिर का पंडित, कि मस्जिद का मुल्ला, निगाहों को सबकी लुभाती है रोटी।।
तिजारत, जिराअत, इबादत, रियाजत, हर इककाम हमको सिखाती है रोटी।
पहाड़ और जंगल में इन्जन की सूरत, धुऐं कैसे कैसे उड़ाती है रोटी।।
जहाज और साइकिल, रेल और मोटर, हमारी सबारी को लाती है रोटी।।
किसी को सलाम और हम लोग करते, हमारे सरों को झुकाती है रोटी।।
कहीं डैम हम हैं, कही फूल हम हैं। खितावात क्या क्या दिलाती है रोटी।
जो हैं नाकबाले जो है, बात बाले, उन्हें उगलियों पर नचाती है रोटी।।
बहुत कर चुके वस्फ (तारीफ) रोटी का "मंजर" उठो हाथ धोलो बुलाती है रोटी।

छात्रों द्वारा मंजर साहब की यह नज्म सुनकर ओरछेश बहुत प्रसन्न हुए। ओरछेश ने "मंजर" साहब को अपने दरबार में बुलाकर उन्हें स्वर्ण पदक देकर सम्मानित किया तथा उन्हें "राजकवि" (शायर) का दर्जा दिया गया। ओरछेश के राज कवियों में मंजर साहब इकलौते शायर थे।

मंजर साहब किसी भाषा विशेष से बंधे हुए नहीं थे। वे अपनी रचनाओं में उर्दू, फारसी की शब्दावली के साथ शुद्ध संस्कृत निष्ठ हिन्दी, बुन्देली एवं अंग्रेजी भाषा के शब्दों का धड़ल्ले से प्रयोग करते थे। दृष्टव्य है-

लैकचर में अपने कहने लगे एक लैक्चरार।
है इंडिया के लोगों पै कैसी है खुदा की मार।।....

मंजर साहब ने उमर खय्याम की रुबाईयों का तरजुमा "इक्सीरे खैयाम" नाम से किया था। जो प्रकाशित हुई थी। एक बानगी देखिये-

खून लाखों का किया, चरखे सितम ईजादने
हर शगुफ्ता फूल को फेंका जमीं पर नोच के
अए सनम अच्छा नहीं, हुस्नो जवानी पर गुरूर
बाग में कितने ही गुन्चे बिन खिले मुरझा गये

"गरीबों की दुनिया" शीर्षक से प्रकाशित आपकी कृति की एक रचना "गरीबों की दुनिया" प्रस्तुत है-

मगर हाँ न बदली, न बदली, न बदली
गरीबों की दुनिया, गरीबों की दुनिया।
बदलने को दुनिया में क्या क्या न बदला
कलीसा न बदला कि कावा न बदला
मगर हाँ न बदली न बदली गरीबों की दुनिया-

"आपकी याद में" शीर्षक से आपकी एक और अन्य कृति प्रकाशित हुई थी जो अब उपलब्ध नहीं है। चौथी कृति है, 2/3 दो बटा तीन। यह कृति 25 फरवरी सन् 1950 ई. को प्रकाशित हुई थी। इस कृति का नामकरण इसी शीर्षक की रचना के आधार पर रखा गया है। रचना की कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत है-

इन हसीनों से रहो रस्म बढ़ाने के लिए
1/3 मुहब्बत हो तो जर 2/3
क्यों न औरत से सिवा मर्द को हासिल कमाल
जबकि खुद लफ्जे हुनर ही में है नर 2/3
मरने बाले हैं सभी, कौन है दुनिया में उमर
खुद अमरशब्द में मौजूद है मर 2/3
दिल दिया होश दिये जान है बाकी "मंजर"
कर चुका इश्क में बरबाद मैं घर 2/3 ....

टीचर (अध्यापक) होना उस जमाने में तो बहुत इज्जत वाली बात थी। लेकिन उसमें ऊपरी कमाई की कोई गुंजाइस नहीं थी। अपनी बेगम को माध्यम बनाकर उन्होंन लिखा-

इससे अच्छा था खटाई बेचते बनकर कटैल
पड़ गई नाहक गले ये टीचरी बनकर चुड़ैल
उम्र भर बनते रहे लेकिन वहीं के है वहीं
ये हमारे मास्टर साहब हैं या कोल्हू के बैल
अगर होते पुलिस के इन्सपैक्टर तो मजा होता
तुम्हारी जेब पुर होती मिरा बटुवा भरा होता....

पेशियाँ बढ़ाते बढ़ाते और लोगों को यह बताते-बताते कि आप की अर्जी पेशी में हैं, पेशकार का तकिया कलाम ही "पेशी में है" हो गया था। इस पर मंजर साहब ने कितना सुन्दर व्यंग किया है-

पेशकारों की जबां पर चढ़ गया पेशी में है
पूछिये कुछ भी कहैंगे वरमला पेशी में है
पूंछी वाइफ की खबर तो उसको फायल जानकर
बोले हाँ कल ही रखा पेशी में है
कुछ न पूछां हमने उनसे की फकत जैराम जी
बोले जी हाँ आपका कागज रक्खा पेशी में है

दारूखोरों पर व्यंग करते हुए उन्होंने लिखा-

दाम देकर जब पियेगें होश में आ जायेंगे

मुफ्त की मिलती है जब तक सूझती है मस्तियाँ

भारत के धर्म निरपेक्ष संविधान की धर्मनिरपेक्षता पर व्यंग करते हुए वह लिखते है–

क्यों न लौटें रिन्द मयखाने में मस्तो वेखबर
खौफ मस्जिद का रहा है न अब कुछ मंदिर का डर
गैर मजहब है हुकूमत, और मुल्क आजाद है
आओ "मंजर" मौलवी पंडित, को रख दें ताक पर ।.....

इसी पर एक व्यंग और देखें–

तौर ये अच्छे नहीं हैं कीजिये हजरत मुआफ
रस्मे उलफत है जवां पर और दिल में इख्तिलाफ
बरकते क्या पूछते हो, राजनीतिक दौर की
रह गया कानून लेकिन हो गया इन्साफ साफ ।.......

सरकारी नौकरशाह भली भांति जानते हैं कि अपने किसी उच्च अधिकारी को डाइरेक्ट ऐपलीकेशन देने पर उसे कितना परेशान किया जाता है। मंजर साहब ने उस समय की स्थिति पर व्यंग करते हुए लिखा है–

मांगी दुआ तो बोले मुझसे वजीरे आजम
देता है तू खुदा को डाइरेक्ट एप्लीकेशन ।.....

थैंक्स या थैक्यू बोलने का प्रचलन उस समय बहुत ही कम था। अंग्रेजी जुवा आज की तरह लोगों पर हावी नहीं हुई थी। आज तो बात बात में थैक्स या थैक्स यू बोला जाता है। मंजर साहब का थैक्स यू पर एक करारा व्यंग देखें–

घास का तिनका उखाड़े, आप या खोदे पहाड़
दोनों की उजरत यहाँ पर है बराबर थैंक्यू।
है यही काफी उन्होंने नज्म सुनकर कह दिया
दिल हमारा कर दिया खुश तुमनें "मंजर" थैक्यू।।

महफिल में शाइर या तबाइफ की मौजूदगी जरूरी मानते हुए मंजर साहब ने दोनों पर करारा व्यंग करते हुए लिखा–

शाइर ने एक रोज किया मुझसे ये गिला
दुनियाँ में कद्रदानी हमारी नहीं जरा
रखते हैं हम जुबान में अपनी वो जोर शोर
चियूटी को बातों–बातों में रखदे बना के मोर
चूहा न जिसने मारा हो कोई मकान में
रुस्तम बनाके उसको दिखा दे जहान में
राई में हम पहाड़ की शौकत दिखाते हैं
जरौं को आफताव की सूरत बनाते हैं
जिस वक्त हम प्रेम की मस्ती बहाते है
अच्छे भले जवानों को मजनूँ बनाते हैं
लूली सी लोमड़ी को बनाते है शेर हम
जौरे सुखुन से करते हैं शेरों को जेरहम
इस पर भी कद्र कुछ नहीं अपनी जहान में
लाता नहीं है कोई हमें कुछ ध्यान में
करती हैं मगर चैन ये पिशबाज वालियां
होती है उनकी लाख तरह कद्र दानियां
हालांकि ये जलील है मक्कार बेवफा
लेकिन जमाना उनपे हैं जीजान से फिदा
मैने कहा कि दोनों के अच्छे चलन नहीं
वो बेबफा हैं आप हैं झूठे जनावे मन
फिर भी मगर है दोनों से दुनिया की दिल्लगी
महफल में कोई चाहिए रन्डी हो या कवी।

एक नजर हाकी मैच के ऊपर भी। जिसमें खिलाड़ियों का ध्यान हार–जीत की तरफ नहीं बल्कि खेल के बाद मिलने बाले रिफरैशसमेन्ट की ओर होता है।

इकरोज मैच हार के गोलर ने यूं कहा
किस्मत का आज पांसा हमारी पलट गया
मैंने कहा कि आपने सबकर लिये जतन
रक्खी कसर न कोई भी लेकिन जनावे
हारो कि जीतो मैच में इससे गरज है क्या
हिस्सातो मिल ही जायेगा रिफरैशमेन्ट का.....

आदमी होना तो खुदा की देन है किंतु आदमीयत तलाशना मुश्किल है

सामने आकर अदब से बोला वो मर्दे गरीब
प्यास की सिद्दत से बाबूजी हूँ मरने के करीब
बोले बाहर बैठ क्यों खाता है मेरी खोपड़ी
पानी पिला देंगे जब आयेगा कोई आदमी
सुनके वह कहने लगा, पानी मुझे पिलवाइए
आप ही कुछ देर को अब आदमी बन जाइए।

अंत में एक और चुभते हुए व्यंग का आनंद लीजिये। जिसमें मंजर साहब ने खुदा को भी नहीं बख्शा:–

मांगी किसी कुम्हार ने इकरोज यूं दुआ
घोड़ा मिरे पड़ौसी का मर जाय ए खुदा
घोड़ा तो खैर थान पर जिंदा बंधा रहा
लेकिन गधा कुम्हार का अफसोस मर गया
ये देखकर कुम्हार निहायत खफा हुआ
रखकर जिगर पै हाथ कहा बाह रे खुदा
करते हुये खुदाई तो मुद्दत गुजर गई
लेकिन तमीज घोड़े गधे की नहीं हुई।

हिन्दुस्तान, पाकिस्तान का बँटवारा होने पर सन् 1947 ई. में उनका बेटा अब्दुल मन्नान तो पाकिस्तान चला गया किंतु मंजर साहब टीकमगढ़ में ही बने रहे। 26 जनवरी 1950 को गणतंत्र दिवस घोषित हो जाने पर "मंजर" साहब ने लिखा था–

हो जाने पर "मंजर" साहब ने लिखा था–

सारी तारीखों की ये सरताज छब्बिस जनवरी।
कर रही मजदूर को महराज छब्बिस जनवरी।।..

अपने बेटे के बुलाने पर मंजर साहब पाकिस्तान चले गये। यहाँ टीकमगढ़ में उनके विशेष अजीज जनाब वहीद "हिलाल" जो उनके शार्गिद भी रहे से उनका पत्र व्यवहार चलता रहा। पत्र ब्यौहार बंद हो जाने पर यह मान लिया गया कि वह दिवंगत हो गये हैं।

मंजर साहब भले ही अब इस दुनिया में नहीं है लेकिन उनकी स्मृतियाँ आज भी टीकमगढ़ तथा उनके सम्पर्क में रहे लोगों के दिमाग में ताजा हैं। मंजर साहब केवल शाइर ही नहीं एक अच्छे कहानीकार भी थे। उनकी कहानियाँ "वीर बुन्देल" मासिक पत्र में समय–समय पर प्रकाशित होती रहती थी।

–अवस्थी चौराहा, टीकमगढ़ (म.प्र.)
मो. 09407873003

बुन्देली लघु नाटिका-

नरबलि

-अजीत श्रीवास्तव

पात्र- औघड़ बाबा, उसका चेला, ग्रामीण

(दृश्य- औघड़ बाबा हवन वगैरह रख बैठा है चेला हाथ जोड़े है। ग्रामीण आता है)

ग्रामीण- "औघड़ बाबा की जय हो" (प्रणाम करता है)

औघड़ बाबा-(नाराज होकर)"दूर दूर मूरख, औघड़ को सोना-चांदी से काम। चेला खों दै दो।"

चेला- (पोटली लेकर) "सबरे सोना चांदी के गाने धर दये? पत्थरा कितेक धरे"

ग्रामीण- "एक किलो पथरा धर दये पुटइया में, और किलोअक सोना-चांदी के गाने हैं"

औघड़ बाबा-"तुमाये सोने के जेवरन के जोर सें सबरी चाँदी सोने की हो जै है, और पथरा, चाँदी में बदल जै। जा पाँच हजार रूपया पूजा खों ले आ, इसमें सिद्धी और डालना पड़ैगी।"

ग्रामीण- "माराज दो हजार पाछले सोमवार खों तो हम मुसकल सें दे पाये ते।"

औघड़ बाबा- (रौद्र रूप कर चीखकर)"अनिष्ट हो जै है, पूरौ परिवार जल कै मर जै है मूरख, उन दो हजार रूपइया सें तौ पाकी किरिया कर दई ती। अब तुम पाछें हटे तौ पिसाच तोये बरबाद कर देगा। तुमाई जुम्मेदारी...।"

चेला- "दादा,ई किरिया में एक तौ पड़ौ नई, और गर पड़ौ तौ तौ पूरी करों नई तौ बरवाद हो जै हौ, राधेश्याम था एक, बीचई में, अधूरा काम छोड़ दओ सो सात दिना में घर में आग लगी, लुगाई-लरका सब जल मरे, राधे की मोटर से टक्कर भई, हाँथ गोड़े फट गये (बिचारौ भिखारी हो गऔ।)"

ग्रामीण- (डरकर)"हम इंतजाम करत, जमी गानै धर कैं रूपइया लात।"

चेला- "जाऔ बाबा, झटटऊँ जाऔ, समय बरबाद ना करौ, जा लेओ पुटइया ।"

औघड़- "जा पुटइया खो लियो ना, जैसो बताओ है कि आधी रात कें पीपल के पेड़ के नीचे गाढ दइयो, जी दिना पइसा लाहौ, ओई दिना सिद्धी तुमें दैहों सो ऊये जमीन पै ऊपर सें छिड़क दइयो। आगले सोमवार खों गढ़ा खोद सोना काढ़ लइयो।"

(ग्रामीण दण्डवत कर जात है)

चेला- "बाबा पुटइया तौ बदल दई ती (वैसी दूसरी पोटली दिखाकर) पइसा भी और लै आ है, लेकिन पोल खुलेगी तो पुलिस में रपोट जरूर कर है, कऊँ जेल न हो जाय।"

औघड़- "मूरख, जेल तौ ऊ ये आ जानै। गढ़े धन कै लालच में आँधरौ तो गऔ, आजलौ काऊ खों ना तौ गढ़ौ धन मिलो है, ना कोऊ ढूँढ़ आ सकत अब अगली बेर ऊँ सै बलि आ चढ़ बाने ।"

(दृश्य-द्वितीय)

(ग्रामीण रोता हुआ आता है)।"

ग्रामीण-"काँ गये बाबा, अरे हम तौ लुटाये, बरबाद हो गये, घर जिमी बैल तक बिक गये, गानै पथरा हो गये।"

(औघड़ बाबा, चेला का प्रवेश)

औघड़ बाबा-"का रे, पागल हो गऔ का। हमाये जिन्न-पिशाचन खों झूठौ कै रऔ, का-S-S हो गऔ।"

चेला- "ई के बरबादी के दिन आ गये।"

ग्रामीण- "हम तुमसैं पाँच हजार की सिद्धी की शिशी लै गयते, उये जमीन पै डार दऔ तौ। सोमवार खों पुटईया खोद कैं काड़ी, सो पथरई पथरा कड़े।"

औघड़ बाबा- (आँख बंद कर, खोलकर) ऐसौ होई नई सकत या भैरौ, या भैरवी, का हो गऔ तौ, हम झूठे पड़रये हैं-ऐं.... अच्छा... ऐसों आ हो गऔ

(हवा में बात करता है)

औघड़ बाबा-"मूरख आदमी,तुमने सिद्धी की शीशी खों कपरन में घुवा दई ती, ये ई सें अनष्ट हो गओ, भूमि खफा हो गई - दुष्ट, जौ तुमने का करो, अब तुमाई मौत निश्चित है।"

ग्रामीण- (घबराकर, पांव पड़कर)"हम का करैं ..... अब।"

औघड़ बाबा-"सुनरे जा शिशी ले, जौ औघड़ी अमृत आया पुटइया बैसई रात कै गौड़ कै अपने हल्के मौड़ा की ओई जमीन पै बलि-चढ़ा दो, औ सुन बच्चा की लाश पै जौ अमृत छिड़क कें दो बूँद मौं में डार दइयो वौ जिंदा हो जै है, फिर भुनसारे सूरज ऊगवै के पैले सात पीपर के परकम्मा करके गढ़ा सें पुटइया काढ़ लइयो, सबरौ सोना बन जै है। पै ध्यान रखियो उन्ना-कपड़ा सें शिशी न छू पाय।"

ग्रामीण- "लेकन....माराज एकई मौड़ा है हमाये?।"

औघड़ बाबा-"बाबा के बचनन पै विश्वास नईयां, शंका कर रऔ, मै अबई करिश्मा दिखायें देत।"

(इधर-उधर गिरता-पड़ता है)

चेला- "मूरख, बाबा खों गुस्सा आ कर रऔ, क्षमा माँग जल्दी,जैसो कऔ है कर, नईं तौ पिशाच खा जै तुमै अबई।"

(ग्रामीण हा हा कर क्षमा माँग लोट कर जाता है)

(दृश्य तृतीय)

चेला- "बाबा, ऊ गाँव बारे खों तो पुलस पकर कें ले गई, अपने मौड़ा की हत्या कें जुरम में, अब मजा आ गऔ।"

औघड़ बाबा- अपन भी निकल लो, अगले ठिकाने....। अब बौ कभऊँ धन-गाने माँगवे नईं सकत, पै पुलस से बचवौ जरूरी है, सब बाँध कैं कड़ चलो जल्दी।

चेला- "नौनी कई, अब निकल चलो पतरी गली सें।"

खास बात जौ हती

-दिनेश चन्द्र दुबे

जा कालौनी में हमाये एक दोस्त हैं। केन्द्रीय विद्यालय में प्रिंसपिल होकें रिटायर भये ते। हमसें उमर में सात आठ साल बड़े हैं। तीन मईना कनाडा रैके लौटे अबई। परौ हम कुर्सी डारे, जा मुर्दा कालौनी में बैठे ते। बोले दुबे जी एक बात मानौ का? हमने पूछा तौ बोले अगर उमर बढ़ाने है तौ तुम लिखवौ जिन छोड़ियो।

बात मन खाँ अच्छी लगी ती पर सवाल बेर बेर उठ रऔ तौ मन में कै आखिर लिखें तौ लिखें का ? लिखवै लाख अब बचौई का है ? जिन्दगी में हजारन विचार घूमतरत।

लेकिन जौ सोच कैं जरूर दिमाग चकचकयात कै मान्स के मन की वौ कौन सी खोह है जौन में, वर्षन पुरानी,छोटी छोटी बातें कऊँ दुकी रती और पतौ नई कै उनमें सै कौन सी बिल्कुल गैर महत्व की बात कबै एरदम साफ उझर कै तुमाये सामने ऐसी आ ठाड़ी हुयै कै तुम चाओ तौ भी घंटन तुमै बा बात के संगै चिपकायेई रै।

अब आपई कओ, जौ कौनऊ ऐसी बड़ी भारी ज्ञान की बात हती जौन दादा ने बताई ती कै...... । दादाय मरैई कम से कम पच्चीस साल तौ होई गये। पर .....तब हम जज हते। दतिया में दादा के पास छुट्टी में आये ते। खाना खाँ के उठेई ते कै दादा (पिता) बोले भईया एक बात गांठ बांध लो। खाना खावे के बाद पेशाब करने जरूर जाव करे।

आज असल में खाना खाकै जूठी थाली बाहर रख कै लौट रये तै पेशाव लग याई। और यादन के जंगल में सै तब के दादा जाने कबै चित्र घांई लिख गये। दूबरे पतरे,छोटे कद के दादा। गोरे चिट्टे । हमने उनै कभऊँ बीमार होत भऔ नई देखौ। पार परत कै अस्सी की उमर में जब हम सुसनेर (जिला शाजापुर म.प्र.) में मजिस्ट्रेट हते एक दिन अचानक बिना खबर के दरवाजे पै आ ठड़े भयेते। दादा तुम कौन खास बात भई का कै तुमै आने परौ, बिना कौनऊ तार,फोन के। पतौ हो तौ गाड़ी वारे सै कह देते और..... । तब सुसनेर के लाने उज्जैन सै बस पकरने परतती।

खास बात हती जौ कै मन भड़भड़ाओ कै दिनेशा कैसें नौकरी के संगै, पांच पांच मोड़ी मौड़ा पाल रऔ हुये बिना मताई के। तनक देख तौ आये। और हमें अब कामई का बचौ। रिटायर हो गये। और तुमें खबर करके आउतें तौ बस बारौ किराये के पईसा नई लेतौ। रस्ता भर चाय पानी पूछत आउतौ सो अलग। मुफ्तखोरी, बेईमानी हमें जनम भर नई सुहाई तौ अब का सुहाय जब सातऊ बाल बच्चा ठिकाने लगा दये। फिर तुमसै कछू जादई प्रेम लगत मन में। स्याद जासै कै हमने ई तुमै ऐसी जगां व्या दऔ जां..... । तुमाई मताई न होती तौ का पाल सकत ते हम तुम सब खौ। हम तौ उनके कर्जदार है कै....... ।

दादा पढ़े लिखे कितेक हते मालुम आप लोगन खौ? मैट्रिक हते केवल। रिजाल्ट निकरौ, तौ कें, दतिया मराज के दरबार कौ दीवान एन उद्दीन को कारिंदा द्वारै ठाड़ो होगओ तौ "मराज, भगवान दास के नतीजा की खबर दरबार में लग गई है। गणित में अब्बल नम्बर आये सुनी हुयै। बुलाऔ है नौकरी लगावे।"

गोविन्द दास दुबे, हमाये दादा के दादा तब नाकेदार हते। भारी प्रसन्न। लै कै पौचे दादाय। दादा हो गये मास्टर । सात रुपैय्या मईना पै। रिटायर भये तब डिप्टी इन्सपेक्टर आफ स्कूल्स हते। सुनाउत रतते किस्सा अम्माय के आज उनै दया आगई एक बच्चा पै तो कालई सैवाय मास्टर बना दऔ नारहट के एक स्कूल में । आठमी पास हतौ।

स्मृतियन कौ जौ टूंका जाने कबै धीरें से सरक याव, अखबार पढ़त पढ़त कै वई उत्तर प्रदेश में जाँ झांसी में दादा नौकरी करतते,अबै चपरासियन की जगा निकली ती 3681। पांचवी पास हौ वौ और साइकिल चलावौ आंय चइये तौ उम्मीदवार खाँ। समाचार पढ़कै नौकरी के लाने दरखासें पौची तेइस लाख विश्वास करै कोऊ। और विश्वास कर कोऊ जौ भी कै चपरासी बनवे तैयार लोगन में दो लाख सै ज्यादा हते एम.ए.,बी.ए. और ढाई सौ से ज्यादा डाक्टरेट लये ते लड़का दादा आज जिन्दा होते तौ कितेक हंसते।

धर्मराज युधिस्टिर से यक्ष ने पांच सवाल पूछेते पैलौ जीवन कौ सबसे बड़ौ सच का है ? दूसरो सबसै तेज गति काय की है? धर्मराज कौ सही उत्तर हतौ मृत्यु और मन की। सब जानत कै राजा होय या रंक एक दिना मर है जरूर। और तेज से तेज वाहन जहाँ सबसे कम टैम में नई पौच सकत वां मन तत्काल पहुँचाकर पलभर में सबकुछ चित्रघाई लिख देत।

मन ने दादा खौ कैसौ ला ठाड़ौ करौ। ऐसा लग रऔ जैसे कै..... लेकिन काये? सोच रये तौ दादा की उमर के आस पास खड़े आज हम जैसे उनसे आंखें नई मिला पा रये । काये बतायें ? हटाये अपने चेहरे पै से नकाब? हमाये पांच बच्चा हैं। एक मौड़ी छिंदवाड़ा, थाई। एक सागर। एक.. लेकिन आज तक बिलकुल फुर्सत होने के बावजूद, कारें गैरिज मे ठाड़ी होने के बावजूद आज तक, जा हम, कऊँ नई पाये। कारण जा घर में चोरी न हो जाय। बहानौ जौ। जबकि असल कारण है जा घर में सर्वसुविधायें जोर लई। नंगे फिरौ चाय कपड़ा पैरों कोऊ ऊकैया नईयां। जा असली कारण सें। और अपेक्षा करत हम सबसै, कै सब हमें याद करें जिन्दा रत और मरबे के बाद। दादा घाई।

समय बदल गऔ। सब जानत। जितेक तन्खा मिलत ती वासै जादां तौ पेशनें मिल रई आज। हमने साड़े तीन रुपैया कौ एक शेर घी खुद खरीदो। अम्मा मगवाउत ती। जब हम छोटे हते। दुर्गी मिठया के यहां सै। और प्याज मिल रई साठ रूपैया की एक शेर। घी मिल रऔ पान्सौ रुपैया कौ एकसेर।

दादा कतते भैया अगर तुमै उमर बढ़ाने तौ हमेशा जा दिमाग खौं खाली नें जिन छोड़ो सोचवे। खाली दिमाग हमेशा बुरई चीजन की तरफ लै जात।

दादा अस्सी की उम्र तक बिना चश्मा के टाइम्स ऑफ इंडिया पढ़त ते। मै इस वक्त आज का नईदुनिया पढ़ रहा हूँ। पढ़कर चकित हूँ। ऋतिक रोशन और सुजैन के बाद अब रणवीर शौरी और कोकणा सेन का रिश्ता तलाक के द्वार पर है। तरंग 20 सितम्बर 15 के इसी अंक के पृष्ठ पर दिल्ली में कभी 3 अदालतें विवाह प्रकरणों की हौ वौ लिखौ है, नई आज 10 अदालतन कौ होवां छपौ। वे यह सब अगर

पढ़ चुके होते तौ हमसे जरूर बतियाते। कारण हमाये खुदई जज रयै सै। पर हमाऔ मत जानके के पैले अपनौ फैसला सुना देते जौ सब जासै हो रऔ कै औरतें अब आदमी की गुलाम नईं नईं पइसन कीं। खुदई कमा रईं पैलें आदमी जो लिया के धरदेते तौ वौई बनत तौ घर में। पर अब...। और जब सोचबे बैठो मन तौ लगत केवल दादा कौ विचार सई है टूटत भये घरन के कारनन में।

उफ! कितेक बातें हैं। कभऊ खतमई नइ होती। लगत जौ है कै आदमी जिन्दारत उलझौई रत, कभऊ जां में कभऊ वां में।

हमैं याद है कै दादा डायरी लिखत ते। जब मरे तौ पसासन छोटी बड़ी डायरी उनके ऊपर वारे कमरा में एक लैन में वर्षवार टिकी मिली ती। पतौ नईयां कबै हममैई जौ आदत पर गई ती। आठ दस साल से हमऊ एक बडी मोटी-कांपी में जौन दिना कौनऊँ असाधारण घटना घटत वाय ऊपर तारीक और टैम डार कै लिखत जा रये। असल में हमाई जिन्दगी में कछू घटनायें ऐसी घटी है जिन्हें हम खुदई विश्वास कभऊ कभऊ नई कर पाउत कै जौ ऐसौई भऔतो। मुश्किल जौ आई तो ऐसी कांपी बनावे की कै अगर बाय नोट न कर लऔ हो तौ आज हम कोऊ खै सुनावे बैठें तौ वौ गप्पई मान। जा बैरें मन कर रऔ कै ऐसी कछू घटनायें नाम, रिश्तेदार,खोलई डारै। जो हुये सौ देखें।

पर नई भैया। हिम्मत नई पर रई। गांधी जी तक की हिम्मत तौ परी नई हती। अपनी आत्मकथा में सब कुछ सच्ची कैवे की। यां छोटी मौढ़ी की एक बात कौध याई दिमाग में एक बेरे ऐसौई झुम्का और चढौ तौ तब वाँ बिटियां से राय लई तो। बोली ती पापा गांधी जी नेई अपनी आत्मकथा तब लिखी तो जब वे महात्मा गांधी कहान लगे ते। आप तौ वैसई सच्ची बोल कै वैसई विलात नुकसान उठा चुके और ज्यादा की तैय्यारी जिन करौ।

तौ मोढ़ी की सीख मान हम। हाँ आठ साल की डायरी अबै पलट कै आज देखी तौ एक एक घटना कौ चित्र सौ लिख गऔ।

पर पूरी डायरी कौ सार यदि तुम हमसें पूछौ तौ जानत कै हम का कै? जौ कै जा दुनियां में आ कै वाय समझाबे के बाद हम जा नतीजा पै पौचे के हमै तो अपनन सै ज्यादा खुशी, सुक्ख परायन ने दऔ।

अच्छौ रऔ जौ कछू संस्मरणनुमा, रचना हमनें अपनी मातृभाषा बुन्देली में लिखवे को फैसला करौ। अपनी बात कैवे के लानें, बुन्देली शब्दन की कमीवेशी तौ परख गई। अबई तौ निपटौ दसवां विश्व हिन्दी सम्मेलन। हिन्दी की क्षमता डाक्टरी, इंजीनियरी की पढ़ाई के लाने कसौटी पर कसौटी पर कसी गई तो। ऐसैई बुन्देली की जरूरतें समझ लो। कई बेरे बाद में शब्द मिले भी। लेकिन नई बदल रये काय कै विशुद्ध बुन्देली के संगै, हिन्दी हौय सें पाठक बढ़त।

तुमने ठीक कई ती मिश्रा जी। यह सब लिखबे में कई दिना पतेई नईं चले कबै निकर गये। और ....

-68 विनय नगर-1, ग्वालियर-12

गुँजी ठोक दो

-डॉ शिवाजी चौहान 'शिवा'

सब मिलकें गुँजी ठोक दो, आतंकवाद अजगर में।
सुरसा कैसो मों बाँये जो, घूमत दुनिया भर में।।
सब खों सैंगो लीलत, बूढ़ौ हो चाहे बारौ।
जाके मारें सब हड़ गए ,बचावे की बिदी निकारौ।।
नईं सम्पट सोरा कर दै, कोऊ कितऊँ न जीवित रैहै।
बहुरुपिया बन सब जागां लख लियो दरौ सो दै है।।
कऊँ गोला बनकें बरसे, कऊँ आतम घाती हमला।
आराम हराम करै जो, दुनियां खों दै है दहला।।
जौ दबे पाँव आउत है, घाती जौ घात लगावै।
फिर बड़े नेह सें आकें, लोगन में घुलमिल जावें।।
मेलन रेलन बाजारन जां, होबें खेल तमासे।
मईं पोंच धमाकौ करतई, करवाबै झगड़ा झाँसे।।
कऊँ अपनी-अपनी ढपली, औ राग अलापत रै हौ।
कोरे के कोरे रै हौ तुम, कछूँ नहीं कर पै हौ।।
सपनन में द्रुपद सुता को, उए चीर बनन ना दइयो।
फिस टाँय टाँय न होवै, मन में जा सोचें रइयो।।
सब स्वारथ के हैं साथी, न कोउ सहारौ दे है।
तारियाँ बजाकें जगती हम, सबकी हँसी उड़ै है।।
जा आतंकी अजगर कौ, मिलकें करिया मों कर दो।
मों दुचल खाल खों खैंचौ ऊके भीतर भुस भर दो।।

-शब्द शिल्पी,
पूर्व उपप्रधानाचार्य गुरसराय
झांसी उ.प्र. मो.नं. 9005320134

चरणों में

-सरोजा शिल्पी

मातपिता के चरणों में, ईसुर ने स्वर्ग बनाओ।
उनके आशीषन सैं गुंइयाँ, सबरो जग हरयाओ।।
मातपिता न होते तौ जा, दुनियाँ न बस पाती।
धरती माता जो न सेती, तौ दुनियाँ मर जाती।।
गंगा मइया तृप्त करैं, नर्मदा ने हमें बसाओ।
मातपिता के चरणों में, ईसुर ने स्वर्ग बनाओ।।
खुद भूखे रै पिता पालवैं, सुसंस्कार में ढालैं।
माँ रातैं काटैं जग-जग कैं, सब खौं रोज संभालें।
मातपिता के रूप में ईसुर, खुद दुनियाँ में आओ।।
मातपिता चरणों में, ईसुर ने स्वर्ग बनाओं।।
मातपिता की छाया में जौ, सबरौ जगत समाबै।।
गीली माटी सैं शिल्प गढ़न की, कला भी बेई सिखावैं।।
उल्टी धारा में खैने है, कैसें अपनी नाओ।।
मातपिता के चरणों में, ईसुर ने स्वर्ग बनाओ।।
उनके आशीषन सैं गुंइयाँ, सबरो जग हरयाओं।।

-एफ-७, गीत बंगले, दुर्गेश विहार
जे.के. रोड, भोपाल (म.प्र.)

बुन्देली लोक पर्वों में निहित वैज्ञानिक चिंतन

-डॉ. कविता सिंह

हमारा देश भारत अपनी विविधता में एकता के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यहाँ अलग-अलग प्रांतों की अलग-अलग सभ्यता और संस्कृति है। बोली-बानी, पहनावा, रहन-सहन, खान-पान, सब भिन्न है। इसके विपरीत हम भारतवासी एक दूसरे से जुड़े रहते हैं। तीज त्यौहारों की चर्चा करें तो वह तो वर्ष भर ही मनाये जाते है और साथ ही लाते हैं हर्ष, उल्लास, एक दूसरे के साथ खुशी साझा करने का अवसर।

भारत का हृदय प्रदेश है- हमारा मध्यप्रदेश और बुन्देलखण्ड अंचल मध्यप्रदेश व कुछ भाग उत्तरप्रदेश से मिलकर बना है। बुन्देलखण्ड में बारह महीनों तीज त्यौहारों का मौसम बना रहता है। ये त्यौहार आते हैं और सामाजिक एकरूपता, आपसी प्रेम व सौहार्द्र का संदेश लाते है। क्या बड़ा और क्या छोटा? क्या स्त्री और क्या पुरुष ? सभी के लिए त्यौहार मनाने की प्रसन्नता लगभग एक जैसी ही होती है। सिर्फ देवी-देवता ही नहीं, हमारे यहाँ प्रकृति का पूजन भी किया जाता है। वृक्ष, पशु, पक्षी सभी हमारे यहाँ पूजनीय हैं और इन सब के पीछे धार्मिक आस्था तो होती ही है, साथ ही उसका वैज्ञानिक आधार भी होता है।

आइए हम शुरुआत करते हैं चैत्र मास की प्रतिपदा से जिसको हम भारतीय अपना नया वर्ष मनाते हैं। चैत्र मास में ऋतु परिवर्तन का समय होता है। बसंत ऋतु से ग्रीष्म ऋतु का। इस समय हमारे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है क्योंकि हमारे शरीर को मौसम के अनुरूप ढलने में कुछ समय लगता है। ऐसे में नवदुर्गा का पर्व आता है चैत्र के महीने में। हमारे बुन्देलखण्ड में मान्यता है कि नौ दिनों तक उपवास करके देवी आराधना की जाए और जो लोग व्रत करते है, वे नौ दिनों तक नंगे पैर रहते हैं। पैरों में जूते चप्पल नहीं पहनते। अपनी अपनी शारीरिक शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार उपवास रखते हैं लोग। कई लोग केवल फलों का सेवन करके व्रत रखते है तो कई सिर्फ एक समय का भोजन करके। इन सब के पीछे वैज्ञानिक तर्क निहित है। चूँकि इस समय हमारी पाचन शक्ति भी क्षीण हो जाती है और व्रत करने से हमारे पाचन तंत्र को बल मिलता है। फलों का सेवन करने से हमारे शरीर में बिटामिन्स की कमी की पूर्ति हो जाती है और हमारा मन मस्तिक स्वस्थ रहता है। चूँकि व्रत उपवास आध्यात्मिक रूप से, धार्मिक रूप से संबद्ध है तो इससे हमें आत्मिक बल भी प्राप्त होता है और हमें मानसिक शांति का अनुभव होता है। मानसिक तनाव कम होता है, रक्त संचार नियमित होता है और पाचन क्रिया तो दुरुस्त होती ही है। नंगे पैर चलने से एक्यूप्रेशर द्वारा हमारे शरीर को लाभ मिलता है। वैशाख के महीने में आता है- अक्षय तृतीया का पर्व जिसे हम बुन्देलखण्ड में अकती के नाम से ज्यादा जानते है। इस दिन गुडड्डे गुड़ियों का ब्याह रचाया जाता है। देओल का भोग प्रसाद लगाया जाता है उसे बाँटा भी जाता है मित्रों, रिश्तेदारों के बीच। काठ के या मिट्टी के गुडड्डे गुड़ियों का ब्याह बरगद के वृक्ष तले रचाया जाता है। यह पर्व हमें याद दिलाता है हमारे वृक्षों की। उनसे मिलने वाली प्राणवायु की। आज ही के दिन मिट्टी के घड़ों का पूजन करके उन्हें पानी से भरा जाता है। यह पर्व हमें स्मरण कराता है कि अब ग्रीष्म ऋतु का आगमन हो चुका है। मिट्टी के घड़ों का जल शरीर को शीतलता प्रदान करता है और गर्मी को कम करता है। साथ ही गर्मी से जुड़ी हुई और शारीरिक समस्याओं को दूर करता है। जैसे हथेली, तलवों की जलन, मूत्र से जुड़ी हुई समस्याऐं आदि। अकती के दिन सत्तू का सेवन किया जाता है। सत्तू सेहत के लिए बहुत फायदेमंद है। इसको खाने से लू लगने का खतरा कम हो जाता है। पलाश के पत्तों से दोने बनाए जाते हैं जिनसे पानी पीने से भी लू का भय नहीं रहता। श्रावण का मास भगवान शिव को समर्पित महीना है। भगवान भोले शंकर की आराधना की जाती है। उपवास रखा जाता है। वैज्ञानिक भी मानते हैं कि सप्ताह में एक दिन का व्रत उपवास स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम माना जाता है। बरसात के मौसम में संक्रमण की संभावना कई गुना बढ़ जाती है। इसीलिए हिन्दुओं में इस पूरे महीने मांसाहार का सेवन निषिद्ध रहता है। इस वैज्ञानिक तथ्य को हमारे यहाँ धर्म से जोड़ दिया है। क्योंकि व्यक्ति धर्म के नाम से कहीं न कहीं भय रखता ही है। और यह हमारे स्वास्थ्य के लिए अच्छा ही है। हम बात करते हैं भारत के महापर्व दीपावली की जिसमें पूरे घर की साफ-सफाई की जाती है। तरह तरह की रोशनी से घर को जगमग किया जाता है। क्योकि देवी लक्ष्मी को साफ-सफाई बहुत पसन्द है। जो जगह जितनी अधिक साफ-स्वच्छ होगी, माता लक्ष्मी वहीं वास करेगी। यह तो सर्वविदित है कि साफ-सुथरी जगह पर रोग, दुख, दारिद्रय नहीं आ सकते। साफ-स्वच्छ वातावरण में कीटाणुओं के लिए जगह नहीं रहती। सफाई करने में मकड़ी के जाले, मक्खी, मच्छर, छिपकली, आदि जीव जन्तु घर से चले जाते हैं। और हवन पूजन करने से, धूपबत्ती, कर्पूर का धुँआ करने से वातावरण में व्याप्त रोग फैलाने वाले सूक्ष्मजीवों का नाश हो जाता है और घर परिवार में आपसी प्रेम, सुख, शांति, स्वास्थ्य और समृद्धि का वास बना रहता है। पूजा में घंटी और शंखनाद का भी बड़ा महत्व है, इनकी ध्वनियों से भी सूक्ष्म कीटाणु खत्म होते हैं और एक धनात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है जो मानसिक तनाव को कम करती है। दीपावली मे दिए जलाने का महत्व है। दिया एक प्रतीक है कि कैसे अंधकार पर विजय प्राप्त की जा सकती है। स्वयं जलकर आसपास को प्रकाशित करना। तमसो मा ज्योतिर्गमय को चरितार्थ करता है दिया। हम अंधकार से प्रकाश की ओर जायें। दीपावली के एक दिन पहले दीपावली मनाई जाती है जिसे हम नरक चतुर्दशी और रूप चतुर्दशी भी कहते है। इस दिन तेल, उबटन किया जाता है। इसके पीछे वैज्ञानिक कारण निहित है कि शीत ऋतु में त्वचा में शुष्कता बढ़ जाती है। दीपावली के नौ दिनों के बाद आता है आँवला नवमी का पर्व जिसे हम बुन्देलखण्ड में इच्छा नवमी कहते है। इस दिन आँवले के वृक्ष का पूजन किया जाता है। आँवला हमारे आयुर्वेद में एक जाति महत्वपूर्ण औषधीय वृक्ष के रूप में विख्यात है। इसमें प्रचुर मात्रा में विटामिन सी पाया जाता है जो नेत्र ज्योति तेज करने, बालो को काला करने और पाचन संबंधी विकारों को दूर करने में उपयुक्त होता है। ये पर्व हमें स्मरण कराता है अपने वृक्षों के प्रति नतमस्तक होने का। वृक्ष हमें प्राणवायु देते है, फल फूल देते है, छाया देते हैं। इमारती व जलाऊ लकड़ी देते हैं। औषधि प्रदान करते है तो हमारा इतना तो उत्तरदायित्व बनता ही है कि हम ऐसे वृक्ष देवताओं को नमन करें,

उनका पूजन करें और साथ ही उनको संरक्षित करने का संकल्प लें। इसी तारतम्य में मुझे स्मरण होता है दशहरा का जिसमें सभी वृक्ष का पूजन किया जाता है। वट सावित्री व्रत का जिसमें बरगद के पेड़ को पूजा जाता है। पीपल का वृक्ष एक मात्र ऐसा पेड़ है जो रात्रि में भी ऑक्सीजन प्रवाहित करता है। हमारे हिन्दू धर्म में ऐसे अनेक वृक्ष है तो धार्मिक और वैज्ञानिक महत्व के है। केले के वृक्ष का पत्ता लगभग हर पूजा में उपयोग होता है क्योंकि केला भी अनेक गुणों से भरपूर है। आंवला नवमी के दो दिन बाद आती है-देव प्रबोधिनी एकादशी जिसे हम बुन्देलखण्ड में ग्यारस या ग्यास कहते है। ऐसी मान्यता है कि चार महीनों के विश्राम के बाद आज के ही दिन भगवान जागते हैं और सभी मंगल काजों का शुभारम्भ आज ही से हो जाता है। एकादशी के दिन पूजा में बेर, मकोई, मूली, सकला, सीताराम, चने की भाजी, सिघाड़े का प्रसाद लगाया जाता है। यह शरद ऋतु के आगमन का समय होता है। मान्यता है कि आज के बाद से ही इन खाद्य पदार्थों का सेवन किया जाना चाहिए जो कि विज्ञान की दृष्टि से सर्वथा उचित है क्योंकि इन खाद्य पदार्थों के पाचन के लिए अब शरीर की पाचन शक्ति सुदृढ़ हो जाती है।

शरद ऋतु में मकर संक्रांति का पर्व मनाया जाता है जब सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायन होने लगता है। सूर्य का मकर राशि में प्रवेश होता है। इस दिन तिल के प्रयोग का बहुत महत्व है। तिल का दान किया जाता है, तिल से स्नान किया जाता है। खिचड़ी का दान का भी महत्व है। खिचड़ी स्वास्थ्य की द्रष्टि से बहुत ही सुपाच्य व स्वास्थ्यवर्धक होती है। सर्दियों में त्वचा में शुष्कता बढ़ जाती है, तिल के उबटन से त्वचा में नमी आती है और सौंदर्य में वृद्धि होती है। संक्रांति में घर घर तिल गुड़ के लड्डू जरूर बनते हैं और भी तरह तरह के पकवान जिनमें गुड़ की प्रमुखता होती है। इसका वैज्ञानिक कारण स्पष्ट है कि शीत ऋतु में गुड़ और तिल जैसी गर्म चीजों का सेवन सर्दी से बचाव करता है। इस प्रकार हम देखते है कि ये सभी पर्व केवल अंधविश्वास नहीं है वरन इसके पीछे स्पष्ट वैज्ञानिक कारण निहित है।

-रामाडा होटल के सामने,
खजुराहो छतरपुर, (म.प्र.)

सुगम जी की तीन गजलें

महेश कटारे सुगम

(१)

जनता भूखी प्यासी रैहै कओ भैया
कब तक जा बदमाशी रैहै कओ भैया

कब तक घेरें रैहें दुःख डर तकलीफें
कब तक घोर उदासी रैहै कओ भैया

फसलें कब तक सूखी रैहें खेतन की
कब तक धरती प्यासी रैहै कओ भैया

मनमानी अब कब तक चलहै पैसा की
मेहनत कब तक दासी रैहै कओ भैया

चेंटी कब तक रैहै सबखौं बीमारी
कब तक जुर और खांसी रैहै कओ भैया

जूता कब तक राज करैगौ मुखिया कौ
कब तक तांसा तांसी रैहै कओ भैया

(२)

तुम तौ हौ सौंधी सौंधी सी
कच्ची अमियाँ की लोंजी सी

जी के तुम आ जात सामनें
ऊ खौं लगत चकाचौंधी सी

लरम-लरम सीं सुघर देह है
लचकत है पाला पौनी सी

धुतिया ऊपर कमर दिखा रई
चांदी कैसी करधौनी सी

देखत तुमें होश उड़ जावें
होंन लगत है अनहौनी सी

(३)

भूखन खौं दुत्कार भगा रये शरम करौ
पथरन खौं तुम खीर चढ़ा रये शरम करौ

अम्मा दद्दा भूखे बैठे हैं घर में
पुण्य कमावे तीरथ जा रये शरम करौ

धरम करम इमान टांग दऔ खूंटा पै
पैसा खौं कैसे भैरा रये शरम करौ

बच्चा भूखे रो रये हैं फुटपातन पै
कुत्ता घर में बिस्कुट खा रये शरम करौ

माया मोह छोड़वे की बातें कर रये
खुद लालच में डूबत जा रये शरम करौ

बाँध कें पथरा पेटन पै हम सो रये हैं
तुम दारू मुर्गा पी खा रये शरम करौ

रैवे खौं घर नईयाँ कैउ गरीबन पै
काय बड़े मंदर बनवा रये शरम करौ

मिल नई पा रऔ दूध ज़रूरत वारन खौं
दूध सें तुम मूरत सपरा रये शरम करौ

पैसा खौं का सँगै सरगै लै जैहौ
जो नोटन के बिठा लगा रये शरम करौ

बिना दवाई मर गऔ जो बीमारी सें
सुगम ओई की तेरईं खा रये शरम करौ

-काव्या, चंद्रशेखर वार्ड
बीना, जिला-सागर (म.प्र.)

बुन्देली गीतों में श्रीराम

-डॉ. (श्रीमती) गायत्री वाजपेयी

आस्था एवं विश्वास के प्रतीक मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम का जीवन भारतीय वांड्मय का अनुपम व अद्वितीय अधिष्ठान है। रामकथा एक ऐसी संजीवनी है जिसका पान कर जनजीवन प्राणवान है। श्रीराम केवल ब्रह्म, ईश्वर, अखिल ब्रह्माण्ड नायक ही नहीं है वरन् भारतीय जन-जन के हृदयमन्दिर में विराजमान एक ऐसे आदर्श प्रतिमान हैं जो पग पग पर उन्हें प्रेरणा प्रदान करते हैं। वे लोकाभिराम हैं।

लोकाभिरामं रणरंगधीरं राजीवनेत्रं रघुवंश नाथम।
कारूण्यरूपं करुणाकरं तं, श्रीरामचन्द्र शरणं प्रपद्ये।।[1]

आज जब संकट की घनघोर घटाएँ चहुँओर घिर आयीं हैं, जनमत की पवित्रता दूषित की जा रही है ऐसे कठिन समय में लोकाभिराम मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम का चिंतन, मनन एवं गुणानुवाद कल्याणकारी है उनका भूलोक पर अवतार ही रावणत्व को समाप्त करने के लिऐ युग युगान्तर से चिर प्रतीक्षित है। आदिकवि वाल्मीकि से लेकर अद्यतन अनेकानेक सन्त महात्मा एवं महाकवि इस भारत भूमि पर अवतरित हुए और उन्होंने अपनी अमृतवाणी से जीवनोद्धारक रामकथा का गानकर लोकोपकार का पुनीत कार्यकर जीवन को कृतार्थ किया। बुन्देली धरा भी इस योगदान में पीछे नहीं है। लोकवि ने भी श्रीराम के जीवन चरित्र की सुन्दर झाँकी बुन्देली गीतों में बड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ अंकित की है। शोधालेख में बुन्देली गारी गीतों में वर्णित राम चरित्र पर विचार करना ही अभीष्ट हैं। बुन्देलखण्ड में विवाह के अवसर पर गारियाँ गाने का प्रचलन है। गारी गायन की यह परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। त्रेतायुग में महाराज दशरथ को भी राम विवाह के समय जनकपुर की महिलाओं द्वारा सुनाई गयी गारियाँ अत्यन्त प्रिय आनन्द प्रदायक लगी थीं। इन गारियों की सबसे बड़ी विशेष्ता यह होती है कि ये प्रेमातिरेक से आपूरित अत्यन्त मधुर होती है, जो देने वाले और सुनने वाले दोनों को अच्छी लगती हैं। राम विवाह के अवसर पर गायी जाने वाली गारियों का स्वाभाविक चित्र कवि शिरोमणि तुलसीदास एवं केशवदास जी ने इन शब्दों में प्रस्तुत किया हैं-

पंच कवल करि जेवन लागे। गारि गान सुनि अति अनुरागे।
जेंवँत देहिं मधुर धुनि गारी। लै लै नाम पुरुष अरुनारी।।[2]

आचार्य कवि केशव ने तो रामचन्द्रिका में गारियों की रचना भी की है। जब जनकपुरी के राजभवन में समस्त पृथ्वी के राजा महाराजा व अन्य लोग भाँति-भाँति के अन्न से बने हुए सुस्वादु भोजन करने लगे तब जनकपुरी की नारियाँ अनेक प्रकार की रहस्यपूर्ण गारियाँ देने लगी। केशव दास जी लिखते हैं-

अब गारि तुम कहँ देहि हम कहि कहा दूलह राम जू।
कछु बाप प्रिय परदार सुनियत करी कहत कुबाम जू।।
को गनै कितने पुरूष कीन्हें कह सब संसार जू।
सुनि कुँवर चित दै वरणि ताको कहियत सब व्यौहार जू।।[3]

लोक कवियों ने विवाह के अवसर पर गायी जाने वाली सरस, सुमधर एवं भावाभिव्यंजक गारी गीतों की रचना की है। जिसमें राम के रूप, शील व सौन्दर्य का बड़ा ही सुन्दर चित्रण मिलता है राम जन्म के रहस्य को उद्घाटित करती यह मधुर गारी दृष्टव्य है-

तुम्हारी लीला है अपरम्पार हो, श्याम छलिया हो बड़े।
तुम तो कौशिल्या के जाये, जग में दसरथ लाल कहाये।
तुमको खीर खाय के जाये, जाके चार भाग करवाये।
बाकी सब रानिन मिल खाये, राजा तनक काम न आये।
देखो ऐसे हैं तुम्हारे काम हो, श्याम छलिया हो बड़े।
मुनि इक विश्वामित्र कहाये, सबकी सभा सकल सजाये।
मुनि जब मुख से स्वाहा लाये, सब मिल निसचर धूम मचाये।
उन सब यज्ञ विध्वंस कराये, तबहि मुनि ने ध्यान लगाये।
चल आये अवधपुर नृप द्वार हो, श्याम छलिया हो बड़े।
फिर तुम विश्वामित्र संग आये, उनने फिर से यज्ञ रचाये।
निसचर फेर सकल घिर आये, तुमने क्षण में मार हटाये।
मुनि के पूरण काज कराये, नभ से सुमन देव बरसाये।
तहँ मारी ताड़का नार हो, श्याम छलिया हो बड़े।
फिर तुम मिथला नगर सिधारे, मग में गौतम नारि उधारे।
पीछे जनक नगर पग धारे, लागे बालक संग तुम्हारे।
तुमने हाट बाट पगधारे, घायल नैन बान कर डारे।
मोहे सकल नर नारि, हो श्याम छलिया हो बड़े।
गवने पुष्प लेन फुलवारी, जहँ पर घूमत जनक दुलारी।
उनकी शोभा अपरम्पारी, सखियाँ चन्द्रवदन उजियारी।
पूजन जात गिरीश कुमारी, उनसे कीन्ही वहाँ चिन्हारी।
चले गुरू की भय उर धार हो, श्याम छलिया हो बड़े।
सुन्दर भूमि बनी मषशाला, बैठे गुरू युत जहाँ कृपाला।
वहाँ पर जुरे अनेक भुपाला, जिनकी शोभा अमित विशाला।
सबके मन पावन जयमाला, पर न टरयो धनु शम्भु कराला।
गये भूप हिय हार हो, श्याम छलिया हो बड़े।
सोचहि जनक नगर नरवारी, सुकृत जाय या सुता कुमारी।
यह सुन सीय मातु मनहारी, सिय मन दुःख भयो अति भारी।
गुरू की आज्ञा प्राय खरारी, क्षण में तोरयो धनुष पुरारी।
आयी सिय माल उर डारी हो, श्याम छलिया हो बड़े।[4]

त्रिलोक के अधिष्ठाता श्रीराम सभी के मन को मोहने वाले हैं। गुरु विश्वामित्र की आज्ञा प्राप्त कर वे महाराज जनक के सुन्दर बगीचे से गुरु के पूजन अर्चन हेतु फूल चुनने के लिये गये हैं। वहाँ जगत जननी जानकी जी भी माँ के आदेशानुसार गौरी पूजन के लिए सखियों सहित पधारी हैं। पुष्प वाटिका में राम-सीता के मधुर मिलन एवं परस्पर अनुरागमय समर्पण का सजीव चित्रण लोक कवि ने इस गारी गीत में किया है-

सुघर बगीचा जनक राम के सुन्दर विपुल सुहाईजी।
फूल टोरन गए दोनों भाई विश्वामित्र पठाई जी।
गिरजा पूजन चली जानकी संग सखिन सुकमारी जी।
गिरजा पूज सिय यही मनावे राम भुजन पर होय सहाई जी।
देख राम के रूप जनक बेटी कोटिन भानु लजाये जी।
धन्य धन्य मिथलापुर बासी जिन ऐसे दर्शन पाये जी।
तुलसी दास भजोभगवाने सीतापति मन भाये जी।[5]

राम-लक्ष्मण की रूप माधुरी अनोखी हैं जिसे निहारने हेतु जनकपुरवासी गृह कार्य बिसार कर गलियों में निकल आये हैं। नगर की नारियाँ झरोखों से राम लक्ष्मण के मनोहर रूप को निहार रही है सभी इस युगल रूप को अवलोक कर स्वयं को कृतार्थ अनुभव कर रहे हैं। आपस में सभी कहते हैं कि इस अनुपम शोभा के आगे करोड़ों कामदेव की छवि फीकी है। चार भुजाधारी विष्णु, चार मुख वाले ब्रह्मा, पंचमुखी त्रिपुरारी एवं अन्य देवों की छवि भी इनकी मनमोहक छवि के समक्ष फीकी है। अवधपति महाराज दशरथ के राजकुमार तथा विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा करने वाले ये कौशिल्या नंदन ही जनक नन्दिनी के लिये उपयुक्त वर है। निश्चय ही मिथिलापति जनक जी राम के रूप को निहारते ही अपना प्रण त्याग देगें। नगरवासी परस्पर चर्चा करते हैं कि महाराज जनक ने मुनि विश्वामित्र सहित उनका आदर सत्कार किया है। लेकिन उन्होंने अपने संकल्प का त्याग नहीं किया है, परन्तु हमारा मन कहता है कि सीता को श्रीराम ही धनुष तोड़कर वरण करेंगे। यथा-

कि एजू राम लखन गुरू आयसु लेकर जनक नगर पगधारी।
कि एजू बालक वृद्ध तरूण नर नारी धाये काज बिसारी।।
कि एजू निरख्ख सहज सुन्दर दोऊ भाई इकटक रहे निहारी।
कि एजू नारी भवन झरोखन लागी मोही रूप अपारी।।
कि एजू इन सम काम कोटि छवि नाहि आयसु करहि विचारी।
कि एजू विष्णु चार भुज विधि मुख चार पंचाचन त्रिपुरारी।।
कि एजू अपरदेव अस कोऊँ नाहिं सखि छवि को अनुहारी।
कि एजू एक सखी बोली मृदुवानी सुनिये बचन हमार।।
कि एजू अवधनगर दसरथ नृप बालक कौसिक मख रखवार।
कि एजू कौसिल्या सुत राम सलोने गोरे लखन कुमार।।
कि एजू राम रूप मिथिलापति देखत प्रण तज वरै कुमारी।
कि एजू मुनि समेत सादर सनमाने प्रण नही तजत भुवार।
कि एजू फूलमती वर तव मिल है सीतहि टौरैं धनुष पुरारि।

धनुष यज्ञ शाला में गुरू विश्वामित्र जी के साथ दोनों बालक श्यामवर्णी राम और गौरवर्णी लखन जी पधारे हैं। देश देशान्तर से पधारे समग्र राजाओं के मध्य उनकी शोभा अनुपम है। सभी राजागण धनुष तोड़ने को उतावले हो रहे हैं, लेकिन वे तोड़ना तो दूर धनुष को हिला भी नही सके। गुरू आज्ञा से श्रीराम ने धनुष तोड़ दिया है, चहूँ ओर हर्षोउल्लास छा गया है। जानकी जी ने उन्हें वरमाला पहनाकर वरण कर लिया है। लोककवि गारी के माध्यम से इस अतिसुन्दर प्रसंग को इन शब्दो में व्यक्त कर अपनी वाणी को धन्यता प्रदान करता है-

धनुष यज्ञ शाला में मुनि जी आये दो बालक आये।
साँवरे रघुराई गोरे लक्ष्मन है भाई शोभा बरनि न जाये।
तीनऊ लोक की दिखाई धन्न उनकी माई जिनने गोद खिलाये।
जुरी जनक राज की सभा बिराजे महाराज आये।
लंकापत राजा धनुष टोरबे के काज कोपकर उठाये।
धनुष चले न चले धनुष यज्ञ शाला में मुनि जी आये।
आये लंका के रावन गर्ज तर्ज न समाये धनुष तबने न जाये।
रूप भयावने दिखाये हार खाके बैठे जैसे सरबस गमाये।
धनुष रघुवर ने टौर डारे, जाको सबद भयो भारी।
सुख पावे नर और नारी नाचे गावे दे दे तारी
हरी की कृपा भई सो फूल बरसाये।
आई जानकी माई रघुवर के दोई हाथन में माल सुहाई।
सरम के मारे पहरायी न जाई, रघुवर रूप मन भाये।
खुशी होके विशाल सबरे गाजे सुलतान रघुवर रूप मन भाये।

महाराज जनक की प्रतिज्ञा पूर्ण हो गई। राम-सीता का विवाह सम्पन्न हो रहा है। श्रीराम दुल्हा बने हैं और जनक नन्दिनी जानकी दुल्हिन बनी है। उनकी शोभा देखते ही बनती है। श्रीराम और जानकी की जोड़ी एक दूसरे के अनुरूप है। सभी की अभिलाषाएँ इस युगल रूप को निहार कर जनक सहित सम्पूर्ण पुरवासी आनन्दित हो रहे है। मंगल गीत गाये जा रहे हैं। चहुँ ओर आनन्द की बर्षा हो रही है। इस अनुपमेय अवसर की शोभा पर सर्वस्व न्यौछावर है। लोककवि इस दृश्य को इन शब्दो में प्रस्तुत करता है-

बने दूल्हा छवि देखो भगवान की दुल्हन बनी सिया जानकी।
जैसई दूल्हा अवध बिहारी तैसई दुल्हन जनक दुलारी।
जाऊँ तन मन सो बलिहारी, मनसा पूरी भई सबके अरमान की।
ठाढ़े राजा जनक के द्वार संग में चारउ राजकुमार।
दर्सन करते सब नर नार, धूम छाई है डंका निसान की।
सखियाँ फूली नहीं समावै दसरथ जी को गारी गावें।
दसरथ खड़े खड़े मुसकाबें, गारी गाती हैं गीता और ज्ञान की।
सिर पर किरीट मुकुट खौं धारे, बाँखें बारम्बार सँबारें।
हो रही फूलन की बौछारे, सोभा बरनी न जाय धनुष बान की।
कहें जनक दोई कर जोर, सुनियो अवधकिशोर।
मौपे साधे न सध है जल पान की, दुल्हन बनी सिया जानकी।

दशरथनंदन श्रीराम जनक नन्दिनी सीता के विवाह हेतु मण्डप सजाया गया है। मण्डप स्थापना हेतु बड़े बड़े संत आये है। चन्दन के सुन्दर खम्भे बनाए गये हैं जामुन के पत्तों से उसे आच्छादित किया गया है। चारों ओर खूबसूरत झालर लगाई गयी है। चन्दन के चोंक पूरे गये हैं। मण्डप के मध्य राम-सीता की सुन्दर जोड़ी सुशोभित हो रही है। तीनों लोक में मंगल बधाई बज रही है। देवगण पुष्प वर्षा कर रहे हैं जिसकी सुगन्धि मिथिलानगरी में सुवासित हो रही है। दुल्हा-दुल्हिन की अनुपत शोभा को निहार सुर, नर, मुनि सभी आनन्दित हो रहे हैं। गारी गीत में इसका सुन्दर वर्णन इस प्रकार हुआ है-

मोरी भँवर कली जनक सुता के मण्डप साजन सन्तन भीर चली।
रुच रुच चन्दन खम्ब बनाये जामुन छाई भली, मोरी भँवर कली।
हँस मोर बिच बिच बैठाई सपरा गंगा चली, मोरी भँवर कली।
चन्दन चौक पुरे वसुधा पर सोहत छैल छली, मोरी भँवर कली।
तीन भुवन में बाजी बधैया आसन झुण्ड खिली, मोरी भँवर कली।
दौर पड़े देवगन दरसन को लेके सुमन डली, मोरी भँवर कली।
बरसत सुमन है मिथिलापुर में महकत गली गली, मोरी भँवर कली।
उँन्हे सब मिल संग छ्व्य छवि निरखत ठाड़ी जनक लली, मोरी भँवर कली।

कन्यादान का मांगलिक एवं पुण्यदायक सुअवसर भी आ गया है। महाराज जनक जानकी जी के हाथ पीले कर कन्यादान का सुकृत्य सम्पन्न कर रहे हैं। इस अवसर पर गुप्तदान अथवा गौदान का विधान है। प्रत्येक पिता अपनी सामर्थ्य के अनुरूप गौ एवं धनादि दान देता है इस अवसर पर महाराज जनक भी गौदान कर रहे है। उनके द्वारा

कामनेधु के सदृश्य गाय दान दी जा रही है। उनकी गौशाला में असंख्य गायें है उसमें से सर्वाधिक सीधी और दुधारू गाय दी जा रही है। वह ऐसी हो जो उनके दूध दुहते समय दुहइया को पैर न मारे, बछड़े को खूब दूधपान करावे, घी की कभी कमी न पड़े, सोने से उनके सींग मढ़े हों तथा पीताम्बर की झोल डली हो। साथ ही दूध दुहने के लिए कंचन का पात्र भी हो। लोक रचनाकार ने इन मधुर भावनाओं को गीत में इस तरह संजोया है-

ऐसी दइयो जनक जू गाय तुम्हारे यहाँ कौन गाय की कमी।
बाँधत छोरत न फुसकारे, न कहूँ लात दुहइये मारे।
आकर बछरा खूब चुखावे, घी की कमी कबहूँ न होय।
सोने से दोऊ सींग मड़ा दो, पीताम्बर की झूल डरा दो।
चाँदी चारऊ चरण मंड़ा दो संगे कंचन दुहनियाँ होय।[१०]

कन्यादान हो चुका है। अब श्रीराम सीता की भाँवरे पड़ रही हैं। सभी नारियाँ मंगलगीत गा रही हैं। जगत के पालक श्रीराम दुल्हा बनकर महाराज जनक के द्वार पर पधारे हैं। हे सखी। उनके बड़े भाग्य हैं जो सिया जी सुन्दर-सी दुल्हिन बन गई हैं। महारानी सुनयना का हृदय आनन्द से भरा हुआ है। हर्षाभिभूत हो श्रीराम के चरण पखार रही हैं। हाथी, घोड़ा एवं अन्य साम्रगी दी जा रही हैं। वर-वधु ने अन्न, जल, सम्पत्ति,सुख शांति, संतति, ऋतु एवं मित्रता के लिए सप्तपदी की है। सिया राम मण्डप तले बैठे हैं। सुर- नर- मुनि सभी हर्ष से पुष्प वर्षा कर रहे हैं-

राम सीता की परती भाँवर बैठी नारी गावै गारी
दूल्हा बने जगत करतार आये जनकराज के द्वार।
उनके सखी बड़े हैं भाग, सिया सुन्दर-सी बन गई दुल्हनियाँ,
खुसी छाई सुनैना भारी जाके रघुवर चरण पखारी।
खुसी छा रही जनक दुलारी हाथी, घोड़ा पँखारे कई गाड़ियाँ पारी
प्रभु संग भाँवर सात, सीता उन्हें दई सो पात दशरथ फूले नहीं समात।
जनक राज रचाये ज्योंनारियाँ,हो रही सुमंगल मूला,
बैठे सिया राम दोऊ झूला, बरसे प्रभु के ऊपर फूला।
राम कृष्ण ने बना दई कई गारियाँ।[११]

श्रीराम लक्ष्मण जनक लली सीता जी को ब्याहने के लिए आये है। हाथी, घोड़ा, ऊँट, पालकी एवं रथ पर उनकी सवारी हैं। जनक राज ने उन्हें जनवासे में डेरा दिया हैं। सखियाँ जनवासे में उन्हें आमंन्त्रित करने गई हैं वे सखियों से कुछ कहते नहीं है केवल मुस्कुरा कर पान सुपाड़ी लेते हैं। सखियों को उन्होंने अबीर गुलाल से रंग दिया हैं। उनकी रेशमी अंगियाँ और साड़ी खराब हो गई है। सभी सखियाँ उनके समक्ष हाथ जोड़कर खड़ी हैं बार बार उनके चरणों की बलिहारी जाती हैं। गारी प्रस्तुत है-

रामलखन व्याहन को आये सीता जनक दुलारी जू वे हां हां वे हूं हूं वे..
हाथी घोड़ा ऊँट पालकी रथ बग्घी अस्वारी वे....................
डेरा जनवासे में दे दये बाजे अवध बिहारी वे....................
फर्स गलीचा बिछे अनेकन धूम मची है भारी वे.................
कुछ न कावे मन मुस्कावे देवे पान सुपारी वे.....................
ले गुलाल सखियन खाँ घाले निरदय निपट अनारी वे............
नसा दई रेसम की अंगिया रन बन हो गई सारी वे..................
ठाड़ी सब नारी कर जोरे चरनन की बलिहारी वे..................[१२]

महाराजा जनक व सखियों का आमंत्रण स्वीकार कर बारात भेजन हेतु जनक जी के राजभवन में पधार चुकी है। महाराज जनक सभी के चरण प्रक्षालन कर आसन-प्रदान करते है। चतुर रसोइयों द्वारा विविध प्रकार के व्यंजन बनाये गए हैं। निपुण परसइयों द्वारा परोसा जा रहा है। राजा दशरथ समाज सहित सुस्वादु भोजन कर आनन्दित हो रहे हैं। पाक कला के मर्मज्ञ लोककवि ने गारी में भाँति भाँति के व्यंजनों का उल्लेख किया है, जो दर्शनीय है-

सहित समाज चले मिथिलापति जनवासे पगधारी जी।
गुरु नृप के पद बन्दन करके विनय अपारी जी।
कृपा बेनि अब करिये राजन भोजन की तैयारी जी।
आई बरात चरण नृप धोये पीढ़न पै बैठारी जी।
हरित मणिन के पत्तल परसे जल कंचन की भारी जी।
चतुर सुआर परोसन लागे नाना विधि तरकारी जी।
आलू, भटा, तुरइया, परवल, भेड़ा, घुइयाँ, न्यारी जी।
मैथी, नौरपा, पलकी, केला, कमलगटा रसकारी जी।
मूरी, सौफ, करेला, कुलफा, खरबूजा रूचिकारी जी।
राम करेला, घिया, भसीड़े, गोभी, ककरी न्यारी जी।
चौरइया, सकसा की भाजी लौकी, सेम नियारी जी।
निम्बू, आम, करोदा, सूरन, और कटहल भारी जी।
बास, करील,मुरार लभेड़े, बड़हल अड़ियां न्यारी जी।
अदरख मिरचा और बनाई सिरका केर अचारी जी।
लौकी,भतुआ बनो रायतो पौदीना कौ न्यारी जी।
अदरक किशमिश धना छुहारे औ मिर्चे कारी जी।
साँभर, चीनी मसाला सुन्दर इमली रस में डारी जी।
हीराबाई चटनी औरहु जो हैं पाचनकारी जी।[१३]

विवाहोपरांत अयोध्या नरेश दशरथ वर-वधु सहित अवधपुर आ गये है। वहाँ भी समस्त लोकाचारों एवं लोकरीतियों को सम्पन्न कराया जा रहा है। प्रमुदित कौशिल्यादि माताएँ अति उमंगित हैं। उनके हृदय में प्रेम का सागर लहलहा रहा है। वे राम से पूछती हैं- बेटा। तुम्हारी ससुराल कैसी है? राम जी उत्तर देते हैं कि सास हमारी साक्षात गंगा और जमुना की तरह पवित्र हैं, ससुर जी तीर्थराज प्रयाग की तरह पुनीत हैं। साले हमारे घोड़ों में घूमते हैं, सलहजें रसोई तैयार करती हैं। माँ! तुम्हारे मन्दिर में जिस प्रकार पुतरियाँ बनी है वैसी तुम्हारी बहू है। माता कौशिल्या यह सुन कहती हैं बेटा। हमने तुम्हें जन्म दिया, पालापोसा लेकिन चार दिन ससुराल में रहे तो वहाँ की प्रशंसा करने लगे। श्रीराम जी कहते हैं यदि यह बात है माँ तो मैं पिता दशरथ जी की शपथ लेता हूँ अब कभी ससुराल नहीं जाऊँगा। इस पर माँ कौशिल्या कहती हैं, बेटा। मैं तो परिहास कर रही थी तुम तो प्रतिदिन ससुराल जाओ। मां बेटे के इस हास परिहास को लोककवि ने अत्यन्त सरसता के साथ गारी गीत में प्रस्तुत किया हैं-

हँस हँस पूछे मात कौसिल्या बेटा कैसी बनी ससुराल।
सास हमारी गंगाजमना ससुर है तीरथ धाम।
सांसे हमारी अधिक पियारी देती हैं दूध बियारी।
सारे हमारे घुडला फिरावे सरहजें तपें रसोई।
जैसी मात मढ़ भीतर लिखी पुतरिया वैसी है बहु तुम्हार।
नौ दस मास बेटा गरभ में राखो बरस दसक लौ सेये।

तीन दिन खों बेटा गये ससुरारे सो जाय सिराही ससुरार।
दुहाई खैचौ पिता दसरथ की अब न जैहौं ससुरार।
अपने राम से ररी करत हो बेटा नित उठ जैऔ ससुरार। १४

अवध के राज भवन का यह हास परिहास तथा हर्ष उल्लास अल्प समय में ही विषाद में परिणित हो जाता है। महारानी कैकई द्वारा महाराज दशरथ के पास धरोहर रूप में सुरक्षित दो वरदान-प्रथम राम को चौदह वर्ष का वनवास तथा द्वितीय भरत को अयोध्या का राज सिंहासन माँगा जाता है। इस प्रसंग को मुखरित कर लोक कवि लिखता है-

मत छोड़ो अयोध्या हम कैयाँ सुनो तो सुकमारी सैयाँ।
जब मोरे पति मधुवन को जाते संग में लक्ष्मन देवरा जाते।
उन बिन कहो हम कैसे रहते घर में जियरा लेत भवकैयाँ।
कैकई पापिनी ने मतिदीनी दसरथ की सुध बुध हर लीनी।
वन की पिता ने आज्ञा दीनी, रानी कौसिल्या के जिय धीरज नैयाँ।
ठाड़ी सोचे सुमित्रा मन में दोनों छौना गये मधुवन में।
अब सुत लौटें कौन दिनन में बारी सिया की उमर लरकैयाँ।
रथ को ठाड़ करो भगवान सीता बैठ गई जटयान।
गाड़ी रोक लेव घनश्याम बोली साथ में नाथा निवाहो हम कैयां।
मत छोड़ो अयोध्या हम कैयाँ सुनों तो सुकुमारी सैयां। १५

जिस अयोध्या के राजप्रासाद में आनंद सिन्धु हिलोरें ले रहा था वहाँ भयावह स्तब्धता छाई हुई है। सम्पूर्ण नगर शोक के सागर में डूबा हुआ है। माताएँ जल बिन मीन की भाँति तड़प रही हैं। सभी परस्पर यही कह रहे हैं। श्रीराम लक्ष्मन वन जा रहे हैं कोई उन्हें समझा बुझा कर रोक ले क्योंकि उनके बिना अयोध्या सूनी हो जायेगी। सीता जी के बिना रसोई सूनी हो जायेगी। यह दुःख असहनीय है। वन के भीषण दुःख, ग्रीष्म का ताप और पावस की बरसात ये कैसे सह पायेगें। लोक कवि कहता है-

वन को चले दोनों भाई इन्हें समझाओ री माई।
आगे आगे राम चलत हैं पींछे लक्ष्मन भाई।
बीच जानकी अति छवि सोहे सो यह देख न जाई।
भीतर मात कौसिल्या रोवे बाहर लक्ष्मन माई।
दसरथ जी ने प्राण तजें हैं सो दुःख सही न जाई।
राम बिना मोरी सूनी अयोध्या लक्ष्मन बिन ठकुराई।
सीता बिना मोरी सूनी रसरेई सो दुःख सहो न जाई।
सावन गरजे भादों लपके पवन चलत पुरवाई।
कौन बिरछ तरे भींजत हुइहें ऐसो दुख सह्यो न जाई।
चौदह बरस राम घर आये घर घर बजत बजत बधाई।
माता कौसिल्या आरती उतारे सोभा वरन न जाई। १६

वन मार्ग पर जाते हुये राम, लखन और सीता के दर्शनार्थ लोग अपने गृह कार्य छोड़कर निकल पड़ते है। उनके रूप सौन्दर्य एवं सुकुमारता को निहारते हैं उनका नाम एवं ग्राम जानना चाहते हैं। समस्त घटना प्रसंग जानकर शोकाकुल हो उठे हैं। यथा-

कि ए जू राम लखन सिय जिन सुधि पाई उठ धाये नर नारी।
कि ए जू वैस किशोर देख अति सुन्दर इक टक रहे निहारी।
कि ए जू धन धन मात पिता जिन जाये धन धन भाग हमार।
कि ए जू नाँव गाँव बूझत सखी सचमुच आपुस करहिं विचार।
कि ए जू बृद्धन जुगित राम पहिचाने दसरथ राजकुमार।
कि ए जू सकल कथा तिन सबहि सुनाई उपज्यो सोक अपार।
कि ए जू तेहि अवसर इक तापस आयो तप बन तेज अपार।
कि ए जू हीरा राम लखन जू देखी नैयन मग उर धारी। १७

वन मार्ग पर अज्ञात तपस्वी का श्रीराम के दर्शनार्थ आने का उल्लेख मानसकार तुलसीदास ने भी किया है यथा-

तेहि अवसर एक तापसु आवा। तेज पुँज लघुबयस सुहावा।।
कवि अलखित गति बेषु विरागी। मन क्रम वचन राम अनुरागी।। १८

श्रीराम के कार्य ही स्तुत्य हैं। जब मन, वचन और कर्म में ऐक्य स्थापित कर कार्य किये जाते हैं तो सद्‌चरित्र का निर्माण होता हैं तथा यश की प्राप्ति होती है। श्रीराम के कार्य ऐसे ही हैं। उनके समस्त कार्य लोकहितार्थ एवं लोकोद्वारक हैं। लोक कवि गारी गीत में उनके इन्हीं कार्यो का स्मरण करता हुआ लिखता है-

दशरथ राज दुलारे जू कौसिल्या के प्यारे जी।
विश्वामित्र की आज्ञा खातिर आय भये रखवारे जी।
लड़े आय मारीच सुबाहु दोनों राक्षस मारे जी।
राजा जनक के धनुष यज्ञ में जनकपुरी पग धारे जी।
गौतम ऋषि की नारि अहिल्या बाको छिन में तारे जी।
टोर धनुष एक ही छिन में जय जयकार पुकारेजी।
लै जयमाल सिया पहिनाई रहगये सब कोई ठाड़े जी।
परसराम को क्रोध भयो है आये सभा मँझारे जी।
हाथ जोड़कर जनक राम जी कोमल वचन उचारे जी।
व्याही सिया अवध में आ गये भये आनन्द अपारी जी।
मात-पिता की आज्ञा पाली वन को तुरत सिधारे जी।
पुत्र शोक में प्राण त्याग दै दसरथ स्वर्ग सिधारे जी।
हरी सिया रावण ने वन में हो गये दुःख अपारे जी।
हनुमान सुग्रीव मिले हैं फिर बाली को तारे जी।
खोज लगाकर महावीर जी लंकापुरी पगधारे जी।
सेत बाँध रामेश्वर आये सेना पार उतारे जी।
एक लख पूत सवा लख नाती रावण वंश उजारे जी।
रावण मार सिया घर लाये देवन काज सुधारे जी।
पलट ओट न हुइयो स्वामी इन नैयनन के तारे जी।
गोपीनाथ पार कर दीजै देके तपक इसारे जी। १९

श्रीराम चरित्र सिन्धु हैं। आदिकवि वाल्मीकि से लेकर आज तक रामकथा के रचियता कवियों ने रामचरित्र को लोकानुरूप प्रस्तुत किया है। श्रीराम के चरित्र की उदारता, विशालता एवं कृपालुता निराली हैं। उनकी आचरण संहिता अनुपम एवं अद्‌भुत है, जो राज्याभिषेक की खबर सुन कर न हर्षित होते हैं न वनवास की दुःखद सूचना उन्हें म्लान कर सकी। दोनों ही स्थितियों में वे एकरस हैं। आनन्दस्वरूप श्रीराम सुख और दुख दोनों में एक समान हैं। इस मंगलदायिनी छवि का स्तवन करने हुए तुलसी लिखते है-

प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा न मम्ले वनवास दुःखतः।
मुखाम्बुज श्रीरघुनन्दनस्य मे सदा अस्तु सा मंजुल मंगल प्रदा। २०

श्रीराम की आदर्शानुप्रेरित ये सुनीत लीलाएँ आज की उपभोक्तावादी संस्कृति में फँसे मानव को दिशा निर्दिष्ट करने में अत्यन्त सहायक हैं। आज के स्वार्थी, परिग्रहलिप्त, राग द्वेष के दल दल में आकंठ डूबे

मनुष्य को उनका त्याग, समर्पण, सेवा, प्रेम, सार्वभौमिक तथा सार्वयुगीन हैं। वे कल भी जन-जन को लुभाती थी और कल भी लुभाती रहेगी। इस तथ्य को स्वीकार करते हुये राधारी सिंह दिनकर ने स्पष्ट उद्घोष किया है " साहित्य में तो राम की महिमा अत्यन्त प्रखर हो उठी तथा पूरे भारतवर्ष की संस्कृति दिनों -दिन राममयी होती चली गयी।" [२१]

भारतीय धर्म और संस्कृति में श्रीराम का स्वभाव और प्रभाव ऐसा रचा बसा है कि राम के बिना जीवन जीवन नहीं, आत्मा, आत्मा नहीं। राम तो एक शक्ति हैं जो प्राणी मात्र में रमण करती है। उनका चरित्र एवं लीलाएँ मननीय, चिंतनीय एवं अनुकरणीय है जो युग-युगान्तर से जन मन को रिझाती रही हैं। लोककवि तो श्रीराम की लीलाओं पर स्वयं को न्यौछावर ही करने को तत्पर है -

तुम्हारी लीला को जाऊँ बलिहारियाँ प्यारे श्रीराम जी लला।
तुम्हरे क्रीट मुकुट सिर राजे कानों में कुंडल छवि छाजै।।
उर में माल विशाल बिराजै देखत वदन मदन मद लाजै।।
तुमको सम्भू हिय बिच धारियाँ प्यारे श्रीराम जी लला।।
तुमने प्रबल निसाचर मारे, महि के सारे भार उतारे।।
सुन्दर देवन काज सम्हारे, ऋषि मुनि संकट विकट निवारे।।
तुम्हरे यश को सो वेद उचारियाँ,प्यारे श्रीराम जी लला।।
वन में मुनि के संग खरारी, कीन्ही उनकी मख रखवारी।।
तारी मग में गौतम नारी, फिरतीं जनक पुरी पग धारी।।
तुमने मोही जनकपुर नारियाँ, प्यारे श्रीराम जी लला।।
अब तो सिया सहित सब भाई, संगै हनुमान सुखदाई।।
मेरे हृदय बसो रघुराई, विनती वंश गोपाल सुनाई।।
तुम्हरे चरणों पै तन मन बारियाँ, प्यारे श्रीराम जी लला।।[२२]

सन्दर्भ :-

1. रामरक्षास्तोत्र- श्लोक, 32
2. गोस्वामी तुलसीदास- श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड चौपाई,1, 6 , दोहा , 329
3. केशवदास-रामचन्द्रिका, छठाप्रकाश पद सं 29
4. निजी संग्रह 5. वही 6. वही 7. वही
8. वही 9. वही 10. वही 11. निजी संग्रह
12. वही 13. वही 14. वही 15. वही
16. वही 17. वही
18. गोस्वामी तुलसीदास-श्रीरामचरित मानस, अयोध्याकाड्ड चौपाई 7,8 दोहा 110
19. निजी संग्रह 20. गोस्वामी तुलसीदास-श्रीरामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड श्लोक सं. 2
21. रामधारी सिंह दिनकर-संस्कृति के चार अध्याय पृष्ठ 105
22. निजी संग्रह

-प्राध्यापक (हिन्दी), श्री कृपानिकेत आदर्श नगर,
हायर सैकेण्ड्री स्कूल 01 के पीछे,
छतरपुर, मध्यप्रदेश

गम खायें अब सार

-सन्तोष कुमार पटैरिया

भैया गम खायें अब सार, कै लड़वो है बिल्कुल बेकार
बिक जे हे सबरो घरबार, भार जो इतनो पड़ जैहे।
कोट कचहरी चक्कर कर्जा भौतई चढ़ जेहे
मान जा तें मोरी, न दइये फिन खोरी
लड़तन लड़तन मोरे मालक, सबइ छोड़ कें चल दए।
राई राई मोड़ी मोड़ा कैसउ मोसे पल गए।।
कै रुक जेहे सब काज, गूँगे हो गए सबरे साज
गाँव में गुण्डइ को है राज, गाज गिर रई है सीधन पै
आ गई रखवारी है अब तो नठयन गीधन पै
मान जा ओ हीरा, होत ही मे पीरा
आधे बीघा के पीछें अब बीघन धरती जेहे।
का खेंहे जे लरका बच्चा की के द्वारे रेहे।।
गाँव में कर लेते पंचात, उते न ऊँची छोटी जात।
न डिल्ली सो ऊँचो सुनात, बात वे साँची जानत हैं।।
उनके सामू सबइ मड़इ जे, खोरी रानत हैं।
पंच परमेसर है, न्याव के जे बर हैं
जीने मुड़या लई अनीति की, सुख सें न रे पेहे।
ऊपर बारो देख रओ है, उनहाँ दण्डइ देहे।।
रावन भोत हतो हरसात, कंस ने भोत करो उत्पात।
भृगु ने हरि हाँ मारी लात, मात जा तोहाँ समझा रई।
समय मिलो न पछतावे हाँ, वेलइ मुरझा गई।।
सन्तोष से घर में राने, दो रोटी कम खाने।

-रत्नम् ज्वेलर्स
सराफा बाजार महोबा
दूरभाष- 09956959270

बुन्देली गाँव

-भानुप्रताप शुक्ला 'भानु'

नगर नहीं ये! मगर सभी जन, कर्मठ, सीधे सच्चे हैं।
लिपे-पुते, सुथरे मिट्टी के, घर, मंदिर सब कच्चे हैं।।
'लोक संस्कृति' कला आदि के, दीप यहाँ पर जलते हैं।।
यहाँ! सुवह से, नित संध्या तक, खेतों में हल चलते हैं।।
इनके! श्रम ने ही युग युग से, कोटि कोटि जन पाले हैं।।
हरे भरे खेतों से मण्डित 'अपने गाँव' निराले हैं।।
रहन-सहन, जीवन सादा, पर गहनज्ञान चिंतन मन में।
सुख, सुशान्ति, संतोष छिपा है, यहाँ! अतुल हर जन जन में।।
बट, पीपल, नीमों, की छाया में चलते इत न्यायालय।
छीर-नीर से, प्रथक प्रथक ही होते हैं, निर्णय-निर्भय।।
समझा-बुझा अनेकों उठते, झगड़े झंझट टाले हैं।
हरे भरे खेतों से मण्डित 'अपने गाँव' निराले हैं।।

संदीप साहित्य सदन, कंचनपुरा निवाड़ी
जिला-टीकमगढ़ (म.प्र.)

दिन डूबे लो

-ओ.पी. रिछारिया

दादा परमलाल खों अपनी घरबारी गायत्री की खूबई खबर आ रई ती, आज अगर मोड़ा सूरज की मताई गायत्री जिन्दा होती तो वे सब काम काज सँभार लेतीं।

जब बहू सोना ने पैली बेर बिटिया खों जनम दओ तो- ओ बखत तो ठंडी सांस लै कें सबर कर लई ती। कछू बात नईयाँ। भगवान लरका दूसरी बार जरूर दे है। मौड़ी कौ नाव- "सुरीली" धरो हतो।

ऐसी का जानत ते कै दूसरी बार "बहू " की घरी आबे के पैलाँ गायत्री खुदई-भगवान खो प्यारी हो जै हैं। आज सुरीली ग्यारा बरस की हो गई। भगवान ने बड़ी दारें तो सुनी है, कहूँ ऐसों नें होए-कै दूसरी बार सुरीली की बैन "रसीली" आ जावें ।

बस एई घुना बीती में दादा परमलाल हैरान- परेशान से रैन लगे। बेटा सूरज और बहू सोना के संगे रह कें ऊसें तो दादा खों कछू- कष्ट नई भओ। बहू तो हाथों में लएें रैत है। सूरज खेत जावे के पैलें-दो बातें दादा से कर कें मिल के जात है।

एक दिना परमलाल ने ठान लई कै आज तो सूरज सें खोल कें कहें देत के भैया आँगे वंश चलाने होए तो चुपचाप बहू खों जिले शहर में लुवा जाओ और जाँच करा लियाओ।

अगर गर्भ में लरका है तो ठीक है बिटिया होए तो अलग करो टंटो।

सूरज जैसई खेत जावे खों पनईये पैरन लगे तबई परमलाल ने टोक दओ। और अपने मन की बात कै दई। सूरज कम पढ़ो लिखो तौ हतो मनो समझदार हतो। ओने दादा से साफ के दई। भगवान ने ग्यारा साल बाद सुनी है, अब जो है सो अच्छो है। सोना उम्दा सें सूरज जावै जाई भोत है।

दादा खों तो मानो करेजे में आग सी लग गई। ओई दिना सें लरका-बहू सें खुनसिया गए। सीधे मों बातई न करें। वे जान गए कै लरका-बहू बाल-बच्चे की जाँच करावे न जे हैं।

ज्यों ज्यों बहू के दिन बढ़ रऐ ते त्यों त्यों घर के काम काज की अट्टस आन लगी। एक दिना की बात है-सुरीली - अपनों स्कूल को बस्ता आँगे धरें - स्कूल कौ होम बरक कर रई ती संगे संगे टी.वी. पै करटून देख रई ती। दादा जी तो गुस्साने से हतेई, सुरीली खों दौर परे-हाँ। जा पढ़ाई आ हो रई है-काये ?" टी.बी. देख रई कै पढ़ रई है? सुरीली ससरया सी गई। - दादा ने रिमोट उठा कें समाचार लगा लऐं। तबई टी.बी. में प्रधानमंत्री जी कौ संदेश आ गओ -"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" -। सुरीली हँसन लगी...। बोली-ले दादा बे कै रऐ टी.बी. में बेटी पढ़ाऔ हम तौ पढ़ई रये हैं - ठीक है न ....?

परमलाल गुस्सा में दौर परे-कल से स्कूल जावो बन्द। घर को काम शुरू करो। - मताई पे तो "कछू होत नईयाँ..। ऐसें में तुम रोटी बनाओ, - पानी भरो, झारा बटोरी सब करो। हो गई पढ़ाई - मढ़ाई।

सूरज ने जा बात थर के भीतर आत-जात सुनी सो उन्हें करेंट सो लगो। रती भरी मौड़ी से कें त के पढ़ाई बंद करो। घर को काम करो? दादा खों न जाने काय कौ किरोध भरो है। सूरज सबर को घूँट पी के रे गओ। फिर दादा सें, धीरे सें बोलो-घर के काम के लानें- परबतिया बाई सें कै दई है। बा समार ले हैं....? चिन्ता नई करो। "काय रे परबतिया तुमाऐ बाप को धरात् है का? मुफ्त में काम कर दे है....? हम एक डब्बल न देन दे हैं.... ।" परमलाल तो बिफरया परे और बोले- "सुरीली की पढ़ाई बंद। घर के काम कराओ अब। कौनऊँ नौकरानी नें लग हैं।" सूरज नेंची-घीच करें भीतर आ गऐ। सोना ने बातें सुन लई ती। सो बोली अबे हाल घड़ी में- सुरीली खों स्कूल ने पौचाओ। घर कों काम काज सीखन देओ। फिर दादा को गुस्सा शान्त हो जै है फिर देख हैं।"

धीरे धीरे दो हफ्ता हो गए। मोड़ी स्कूल नई गई...। सो एक दिना माधुरी बहिन जी स्कूल सें सीधी सुरीली के घरे आ गई।- सुरीली को हाल -चाल पूछो। दादा घरे हते नें। सोना ने रो-रो कै सब बातें सुनाई।- माधुरी बहिन जी कहन लगी हम जाने के मौड़ी बीमार तो नई हो गई ? चलो खबर ले आऐं। इतें तो बात कछू और निकरी।

सोना बोली "का उपाओ करें बहिन जी बताओ।" माधुरी हँसन लगी। केन लंगी "उपाओ तो है, मनों सूरज-भैया खों, और तुमें-हमाओ संग देने पर है, तो हम गैल निकारें। सोना बोली "बताओ तो कैसो संग देने ?" माधुरी बहिन जी बोली "बस ठीक है, - तुमें कछू नई बताऐं। -सूरज भैया खों कल स्कूल पौंचा दइयो।"

बात आई, गई हो गई। तीन-चार दिना बाद सोना ने पति देव से पूँछी ...."स्कूल गऐ ते के नई ? का कई माधुरी बहिन जी ने ?"

सूरज बोले - "हल्ला ने करो। कछू नई कई। उनके कैबे से का होत..... ? बहिन जी को कैबो है, - कै सुरीली - को नाव कटा कें शहर में लिखवा देओ। कोनऊँ रिश्तेदार के घरै छोड़ देओ।"

सोना बोली-जा इत्ती-सी बात बहिन जी हमें नें बता सकीं।- हम नई छोड़ें मौड़ी खों कोऊ के भरोसे...।

एक दिना दादा दहलान में बैठे बकौड़ा की रस्सी भाँज रऐ ते - इतनई में दो सिपाही थाने से आऐ और चिल्ला के बोले - "सूरज कहाँ है?"

दादा ने-रँस्सी मई फेंकी और-दरोगा के आँगे ठाँड़े हो गऐ "बोले"- का बात है साब, सूरज हमाओ मौड़ा आय.....? दरोगा बोले-बाहर बुलाओ सूरज खों,ओई से काम है। गर्राहट उतार दे हैं।

दादा बोलो -"का बात है ? कछू टंटों बिदो लऔ मौड़ा ने ...... ? हमें तो बताओ.......?"

"गिरफदारी का वारंट है, जल्दी बुलाओ।" दरोगा गरजे दादा-चकरया गऐ। हॉथ-पाँव फूल गऐ। हिम्मत करके बोले- "साब काय को वारंट है ? मामलो का है?"

दरोगा बोले- "दो दिना पैलाँ-सूरज शहर गओ तो-उते एक प्राइवेट डॉक्टर से मिल कें अपनी घरवारी के गर्भ में जो बाल-बच्चो है। ओ के लिंग की जाँच-करवावे खों-फार्म भर कें आओ है...। जो अपराध है। डॉक्टर ने थाने में रिपोर्ट कर दई है। जल्दी बुलाओ - किते है, सूरज ?"

दादा घबरा गऐं.... हाँथ पाँव जोड़न लगे "सूरज घरै नइयाँ

साब। ओं की गलती माफ कर देओ।

दरोगा बोले-"परमलाल बल्द मिहीलाल कौन है?"

दादा बोले-"हमाओ नाम परमलाल है।"

दरोगा बोले-"आप थाने चलिऐ। क्योंकि आपने दबाव डाला था, जाँच के लिऐ............? अभी चलिऐ मेरे साथ।"

दादा-परमलाल-पैरों पर गिर पड़े और बोले-"हम से भूल हो गई साब माफ कर देओ।"

सोना -भीतर से बोली-साहब हम कोई जाँच नहीं करवा रए हैं...। हमाऐ पति ने अगर-कोनऊ डॉक्टर सें-चर्चा करी होए तो हम माफी माँगत है। गलती माफ करो।"

दरोगा ने कहा-"आपको और दादा जी को अभी थाने में जाकर ब्यान देना पड़ेगे-चलो मेरे साथ।

तभी सुरीली सामने आकर कहती है-साहब हमें स्कूल जाना पड़ता है। हमारे दादा जी को छोड़ दो नहीं तो हमें स्कूल छोड़ने कौन जाऐगा।

दरोगा-सोच में पड़ गया। थोड़ी देर बाद बोला-"ठीक है। अगर तुम स्कूल जाती हो, तो मैं तुम्हारे दादा जी को नहीं ले जा रहा हूँ। मगर तुम्हारे पापा को नहीं छोडूँगा....? वो तुम्हारी मम्मी की जाँच करवाना चाहता है।

परमलाल ने दरोगा के पैर पकड़ लिऐ और बोले "सूरज और बहू दोनों कहीं नहीं जाऐगें.....? न कोई जाँच कराएगे...... हम आपसे जौ -वादो कर रए हैं साब.......।"

दरोगा बोला-"मगर आप खों तो लरका चायनें तो?" अरे आहाँ साब। वा हमाई भूल हती.....। - अब भुनसारे को भूलों दिन डूबे लों घर आ जाये तो वो भूलो नई कहात् साब माफ कर देओ।" दादा ने कहाँ। "ठीक है।" कहते हुऐ दरोगा और सिपाही चले गऐ।

दादा परमलाल की जान में जान आई।

कछू दिना बाद- सूरज सें सोना खों पता चलो के असल में दरोगा जी माधुरी बहिन जी के भैया हते। बहिन जी के कैबे से झूँठो वारंट लियाऐ हते। जां सूरज और माधुरी बहिन जी की गुबरमुँदी चाल असल चाल हती।

जब एक दिना बहिन जी घरै आई तो सोना से बोलीं "तुमाऐं ससुर खों "दिन डूबे लो-ठिकाने पे, हमईं लुवा लियाऐं ते। कओ कैसी रई?"

-रिछारिया घाट,
परकोटा, सागर (म.प्र.)

लघु कथा

महेश कटारे सुगम

रेलगाड़ी सरकन लगी ती लकडियन के गट्ठा खौं भीतर सरका कें मिंदिया अपनी फूली सांस पै काबू पान लगी और सँगै सँगै उन सवारियन खौं आशीषत जा रई ती जिननें लकड़िया कौ गट्ठा चढवावे में ऊखों सहारौ दऔ तौऐ वीरो राम तुमाओ भलौ करैदूध करूला करायै भगवान तुमाये पुतरन खौं ख़ुशी राखवै ईशुर

मिंदिया रोज़ कोउ कोउ खौं ऐसेंई अशीषत हैण् कोउ कोउ खौं गरयात है जब कोउ ऊखौं रेल के डिब्बा में लकडियन कौ गट्ठा नईं धरन देतए और वा पलेट फारम पै ठाड़ी रै जात और रेल चली जात है एतौ वा उनें खूबई गारीं देत है नासमिटे ठठरी के बंधे ल खौं अपने बाप की जागीर समझत हैं रिज़र्व शब्द सें तौ ऊ खौं घिनापन सौ लगत है जी डिब्बा में जाओ उतइ सें चिल्ल्यान लगत हैं रिर्जब रत है दूसरे डिब्बा में जाओ दुत्कार कें भगा देत हैं ए और वा एक डिब्बा सें दूसरे तीसरे चौथे डिब्बा में भगत फिरत हैण्तौ ऊ खौं ऐसौ गुस्सा आत है कै इन रिजरब वारन कौ मौ लोंच लेवै पैसा की दम पै पूरी गाडी रिजरब करा लेत हैं इत्ती लम्बी गाडी में दो डिब्बा आंगें और दो डिब्बा पाछें ऐसे होत हैं जो रिजरब नईं होत बस सो उनमें भीड़ इत्ती होत है कै पाँव धरवे तक खौं जगा नईं रेत

दस्सू ! बैठ जा मिंदिया ने अपने मौड़ा खून बैठवे कौ इशारौ करौ दस्सू गट्ठा पै बैठ गऔ मौड़ा के लिगा बैठवे के लानें जैसेंई ऊ नें अपनी धोती संवारीएवा धक्क रै गयी किनारी के ऊपर धोती फट गयी ती वा उतरौ मौ लै कें सोचन लगी

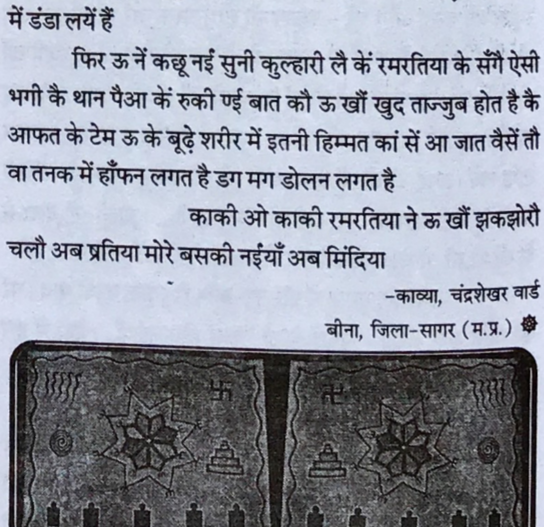
मईना भर तौ भऔ नईयाँ अबै और धुतिया में खौंप लग गयी कत्ते जतन सें ओढ़त पैरत है साबन सोडा कौ तौ मौ तक नईं देखन देत उन्नन खौं जब जाकें साल भर तक चला पात है ऊ खौं पतौ है कै साबन सोडा कपड़न खौं चुन चुन कें खा जात हैं ऐई सें वा सपरवे के बाद धुतिया खौं खूब पानी में फिलोर फिलोर कें धोत है

धोती कैसें फटी वा सोचन लगी हो सकत खाट में बीद कें फटी होय ए कै सोत में एनईं तर ऐसौ तौ आज तक नईं भऔ कै ऊ की धुतिया फ्ट जाय और ऊ खौं पतौई नईं परैण्ऊ के सोच नें करोंटा लऔ एहो न होय किबरिया में बीद कें फटी है और तबई ऊ की सुर्त जग गयी वा जब एक उखरे सूखे पेड़ पै कुलारी चला रई ती तबई रमरतिया नें ऊ सें आकें कई हती कै गिरन्टी आऔ है तोय कैसें पतौ मिंदिया फुस फुसाई फुलिया खौं दिखानौ है खाकी कपड़ा पैरें हैं हात में डंडा लयें हैं

फिर ऊ नें कछू नईं सुनी कुल्हारी लै कें रमरतिया के सँगै ऐसी भगी कै थान पैआ कें रुकी एई बात कौ ऊ खौं खुद ताज्जुब होत है कै आफत के टेम ऊ के बूढ़े शरीर में इतनी हिम्मत कां सें आ जात वैसें तौ वा तनक में हाँफन लगत है डग मग डोलन लगत है

काकी ओ काकी रमरतिया ने ऊ खौं झकझोरौ चलौ अब प्रतिया मोरे बसकी नईंयाँ अब मिंदिया

-काव्या, चंद्रशेखर वार्ड
बीना, जिला-सागर (म.प्र.)



पंचायती अटका (चटकौआ)

-डॉ. दयाराम वर्मा 'बेचैन'

समाज में कछू परम्परागत रूप सें आने पर अटका चले आ रये जो केवल बूड़े लोगन के पास मिलत उर वे भी कछू जानकारन नों। इन अटकन सें बड़ी-बड़ी पंचयातें टूट जात्ती। तौ कछू बानगी के रूप में ज्ञान से लबालब भरे जे अटका अपुन बाँचौ। वैसे आज पंचयातन कौ महत्व तौ भौत कम गऔ फिर भी इन अटकन में ज्ञान तौ भरौअई है।

1. **अबै कछू और बदी**- एक पंडित जी कौनऊ गाँव से पंडताई करकें अपने घरै पैदल आ रये ते। रसता में कौनऊ गाँव कौ मरगटा परत्तौ। वे पंडित जी उतै हो निकरे। उतै एक मुरदा जल रओ तो। तनक नजर उताँय गई तौ उनै ऊ मुर्दा की मुड़िया चिता पै सें अलग ढड़कतन दिखानी। ऐंगर हतेअई, सो पंडितजी ने तनक रुक कें बिना डराँय बा मुड़िया देखी। तौ ऊ मुड़िया पै लिखो तो- "अबै कछू और बदी"। बस फिर का हतो विद्वान पंडित ने बा मुड़िया छेवलइया के पत्ता टोर टार कें उनमें लपेड़ लपाड़ कें अपने झोला में ठूंस लई। मन में जा सोसी कै देखो जे कै अब ई मुड़िया खाँ और का बदी? घरै पौच कें वे अपनी ढुरऊ बखरी में गये उर तनक ऊँचे आरा में तनक अँदयाये में बा मुड़िया रख दई। मई नाद में पानी भरो तो सो सपर खोर कें, टीका मंदिरा लगा लगू कें घरै पौंचे उर जा बात की हवा-अपनी पंडतानी खाँ नई लगन दई। रोज उसार पात खाँ जाय उर प्राईवेट रूप से देख लेवें। को गौर करै चार दिना बीत गये। पंडितानी रोज की तरां ढोर बछेउअन खाँ पानी प्यावे सानी धरवे जात्ती। पाँचये दिना पंडितानी की नजर मुड़िया पै पर गई। उन्नै जाने का का मन में सोसी। पंडितानी ने आव देखो ना ताव उर बोंड कें बा मुड़ी गिरा लई उर पंडित खाँ बिना कछू बजै बताय ऊ मुड़ी खाँ कुचर कुचरू कैं ढुरऊ बखरी के नरदा में तनक गैरे खाँ गाड़ दई। उर सपर खोर कें अपने घरै आ मई। अब पंडित तौ अपनी डूटी लगाँय ते कै हम देखे ऊ मुड़ी खाँ और का बदी? जैसई बे ऊ आरा ना पौंचे तौ उतै बा मुड़िया नई हती। तुरतई सोसी, कां गई राम। को लै गओ का भओ ऊ कौ? मन मैं गोड़ गथन्ना करत, बड़े उलायते अपने घरै आये उर पंडतानी सें टपाक सें बोले। तुमनें ऊ बखरी में एक मान्स की मुड़ी देखी का? ऊ आरा में धरी ती। पंडितानी नें सारी बात बता दई। ऊ मुड़ी कौ अपुन खाँ का बान्नै तो। बस पंडित मनई मन जान गये कै जेई आय बदी ती, सो हो गई। मुड़ी की इतेक दशा और होने ती। अपुन पड़कैं गुनकैं समाज कें बताव कै जौ चटकौआ ऊटका अपुन खाँ कैसो लगो?

2. **सांसी कयें मौसी कौ काजर**- ई कैवत चटकौआ कौ कैवो सुनवौ तौ चाय जौन गाँव में सुनवे खाँ मिल जै। अकेलें ई कौ मतलब हजार में एकाद आदमी जानत हुयै। मैंने तौ कैऊ जनन सें पूछी परन्तु वे नईं बता पाये। हमाये रिश्तेदार एक भौत पुराने हते। अब बे नइयां, उसें हमें ईकौ इथयास बताओ तो। कौनऊं गाँव में एक लरका अपनी मौसी के इतै रात्तौ। मौसी विधवा हती उर ऊकी उम्मर ज्वान हती। लरका खां कछू समाज में बैठे उठे से ज्ञान हो गओ तो। मौसी अपने मन में सोचती कै हमाव बेनौता तौ अबै कछूअई नई जानत। एक दिना की बात है कै सपर खोर कें मौसी नें पटियां पारी चुरिया तौ पैरे अई हती। सजी हती कछू और सजन लगी। उन्नै कटीलौ बड़िया काजर लगा लऔ तौ ऊ लरका की अकल में पथरा पर गये। उयै चैन ना परो उर मौसी से घर पूछी, काम कै उयै राई ना आई। बोलो-मौसी। मौसियां तौ हेई नइंया, जौ कटीलो काजर की के लाने लगाउतीं। बस कातनई मड़वै आग लग गई। पैले तौ गाल पै चटाक उड़ौ तमाचा। एक चनकट में का ताव ठंडया गओ। मौसी खां बुदइया मिल गई तौ ऊनें धान सी कूटी। मौड़ा खाँ भटा सौ सुजै दऔ। दै रापटें थपड़े, बुदइयां। ई लरका नें कई ती कै सासी कयें मौसी कौ काजर। मतलब सांसी बात सटोले कये सो सबके मन से उतरे रयें।

3. **घी देतन नर्रयात**- ई चटकौआ में भी बड़ौ मजा है ई में जो प्रेम भाव छिपो वौ देखौ अपुन। एक पंडित जी नें अपने जजमान के घरै कथा बाँची। जजमान के इतै भैसें हतीं। घी-दूध की कमी ना हती। बखर कौ मौका, तनक जांगा बखरवे रै गई सो घर वारौ अपनी जनी सें कै गओ कै पंडित जी खाँ शुद्ध घी के भोजन कराइओ। पैलां कौ घी खुआवनें। पुत्र मिलै। ऊकी जनी नें घी में भोजन बनाये। घी शक्कर चांवर,वरा, दम से खुआये। पंडित जी डिड़क गये। उन्ने सोसी कै पौर में खाट बिछी तनक लोट लगा लें करयाई सुदी कल्लें। को कयै वे लटकतनई मौं बाकैं सौ गये उर घुरकन लगें। इतेक में घरै ऊकौ पती आ गओ। ऊनें देखो कै पंडित जी तौ मौं बांय। होय न होय जनी नें घी कम खुआओ। बोलो घी खूब परसो हतो कै नही। पत्नी ने जबाब दओ-खूब तौ खुआव। सूदौ सादौ आदमी बोलो-अबै कसर रई। ल्या -परछा। ऊने करछली मंगा कें परछा में सें घी धरकें उर चूलें में कड़का के मन में सीसत जात कै सात पैरी के पुरेत हैं, प्रेमी हैं। ऐंगर जाकें उनके मौ में बौ गरम घी करछली से उड़ेल दओ। ओंठ, मौं और जीभ भुँज गये। पंडित फरफरा कें उठो उर बुलबुलात चिल्लयात भगो। पछाऊँ से जजमान और कड़को घी लयें दौरत जा रओ। सीन देखवै लाख हुयै। काउ ने पूछी, पंडित जी काय चिल्लाय रये। जजमान बोले- घी देतन नर्रयात। हम जौ घी लयें फिर रये पांछू। तब सें जौ चटकौआ आनों चल गऔ कै घी देतन नर्रयात।

4. **छै लरका सतायें संतोष-तौ गदा मारे कौ कछू नैयां दोष**-

ई चटकौआ में पंचयाठी पक्षपात कौ वरनन छिपो। जे चटकौआ आने अटका कौनऊ भी जात बिरादरी के सहारे बने। कछू लरकन ने हार में एक गदा देखो। ऊके संगै खेलन लगे, बैठन लगे ऊपै। जब गदा खां गुस्सा आई सो ऊने दुलत्तू फटकार दई। लरकन नें गुस्सा हो कें दै पथरा उर डंडा गदा खाँ मार डारो। गांव में पंडित जी खां खबर पौंची। लरकन के बाप पौंचे 'महाराज ई पाप से दूर करवे कौ उपाव पत्रा में देखौ। पंडित जी नें पत्रा देखकें बताओ कै भौत पुत्र धरम कन्ने। गंगा स्नान कन्ने। भागवत बचावने को गौर करें, पंडित जी ने पचास हजार कौ खर्चा करीबन बता दऔ। पाँच छैः लरकन पै। एक आदमी ने उन लरकन से पूछ लई ती कै पंडित जी के लरका संतोष तौ खुद हते। गदा के मारवे में। पंडित जी से कई 'महाराज। अपने संतोष तौ खुद हतें'। पंडित जी की आंखे खुल गई।' बोले ठैर जाव, ठैर जाव, । पत्रा देख रये फिरके। हाँ हाँ सुनो-छै लरका सातयें संतोष तौ गदा मारे कौ कछू नैयां दोष। तब सें जौ चटकौआ चल गऔ।

-ग्राम व पोस्ट स्यावरी
(मऊरानीपुर) जिला-झाँसी (उ.प्र.)

सगुनियाँ

-डॉ. सुरेश पराग

छोटू जब स्कूल चलो गओ तब सगुनियाँ अपनी बीमार बाई के ऐंगर जाकें उनके बारन की उरम्मी लटें सुरझाउन लगी। बाई ने सगुनियाँ के हाँत पकर कें रोको- पैले कछू खा लो बिन्नू, सेवा तो बाद में भी हो जैहे।"

बाई अबै हमें भूक (भूख) नई लगी, तनक देर में खा लेवी। पैलाँ तुमाए बार धो दयें, भौत मैल भर गओ इनमें। "बाई ने भौत रोकी अकेलें सगुनियां न मानी, ऊने पानी गरम करो, बाई के बार धोए लटें सुरझाईं फिर तौलिया लाके बार पोंछन लगी।"

"सगुनियां तुमने ऊ जन्म में बडे पाप करे हूँ हैं, जीकी सजा में तुमें जो सब भोगने पर रहो है।"

"बाई ....? तुम जब देखो तब ऊ जनम औ पाप-पुन्न को हिसाब लैकें बैठ जाती? फिर जब हम छोटे हते तब तुम सोई हमाए बार धोकें सुखाउततीं ओर कितनों ख्याल राखत तीं कै हमाए मूँड पैं तनक सी खरोंच तक न आउन पावै।

"वो तो सब ठीक है पै......?

"पै-वै.. कछू नईं....... सगुनियाँ ने बाई खाँ,बीचई में रोक दओ, बार अच्छे सें सुखा कें तोलिया से बाँधे। फिर गरम गरम खिचरी लाकें, अपने हाँतन से खबाउँन लगी।"

"तुम भी तो खालो।" बाई ने कही।

"खा लेवी, पैला तुम खालो फिर हम सोई खा लेवी।"

पैं हम एक हाँत से खा सकत हैं बिन्नू, एकई अंग में तो लकवा लगो है, एक हाँत चलत है, लाव देव हम अपने हाँत से खा लेवी। तुम सोई खा लेव। भौत टेम हो गओ।

"बाई जब हम तुमाई सेवा करियत हैं तब हमें भौत चैन मिलत, खुसी भी होत, तुम हमसे हमाई सेवा को मौका काए छीनों चाहतीं।

बाई के लाख मना करवे के बाद भी सगुनियां ने उनें हाँतन से खवाओ, पानी पिबाओ, मों पोंछों दबाई दई फिर खुद खा कें, चौका बासन करो, और बाई की खटिया के ऐंगर, दरी बिछाकें पढ़वे बैठ गई। सगुनियां अब सोला साल की हो गई है, जब बा पाँच साल की हती तब ऊ के बाबू और बाई गाँव छोड़ के साग-सब्जी को धंधा करबे शहर में आ गए ते।

वे जैसे-तेसें एक झुग्गी बस्ती में झुग्गी बना के रहन लगे ते। सगुनियां के बाबू आसपास के देहातन से सब्जी ले आउत्ते और बाई हाँत ठेला में धरकें कालोनियन में बेचवें चली जात ती, संझा के स्कूल सें लौट के सगुनियां सोई बाई के संगै चली जात्ती।

शहर में आवे के पाँच साल बाद उनके छोटे भईया कौ जनम भओ, तब सगुनियाँ पाँचवी क्लास में पढ़त ती। सगुनियाँ के बाई-बाबू की बड़ी साध हती शहर में रेह कें सगुनियाँ खाँ अच्छी शिक्षा दिवाएँ और पढ़ा-लिखा के अच्छी नौकरी करा हैं। अकेले ऊपर वारे खाँ उनकी जा योजना मंजूर न हती।

कुसंगत में परकैं ऊके बाबू खाँ सराब की लत लग गई, फिर घरै लौट कें बाई के संगे मार पीट लड़ांई झगड़ा होन लगौ। रोज की किल-किल और मार-पीट सगुनियां की बाई सहन न कर पाई, ऊहे लकवा मार गओ। जैसें तैंसें प्रान तो बच गए, पै डाक्टरन ने कै दई अब जब तक वे संसार मे रैहैं खटिया में जिन्दगी कट है।

बाई के खटिया पकड़वे के बाद बाबू की सराब की लत और ज्यादा बढ़ गई। गारी देवो मार पीट करके चिक-चिक करवो जोन बाई के संगे होत तो वो अब सगुनियां और छोटू के संगै होन लगो। अकेलें जो भी जादा दिन तक न चल पाओ। एक दिन जब बाबू सराब पी कें घरै लोट रहे ते। तब वे सड़क पै बेहोस हो कें गिर परे और कौनऊं कार के तरे दब के उनके प्रान पखेरू उड़ गए।

सगुनियां और छोटू भौत रोए किलपे कैसउ जैसउ झुग्गी वालन नें उनको क्रिया करम कराओ। जब घर की पूरी जिम्मेदारी, सबरो भार सगुनियां के ऊपर आ गओ, सगुनियां ने भी अपनो करतव्व निश्चित कर लओ, बाई की सेवा करने, छोटू खाँ पढ़ावे सब्जी बेच कें घर के खरचा चलानें और अपनी पढ़ाई भी पूरी कन्ने।

सगुनियां ने किताब से नजरें उठाई तो देखो बाई की आँखन सें टप टप करके अँसुअन की धार लगी है। सगुनियाँ बाई की आँखन से अँसुआ पोंछ कैं कहो- बाई तुम ऐसे रो हो तो हम परीक्षा की तैयारी कैसे कर पावी। तुमें पता है न हमें दसवीं की परीक्षा अच्छे नंबरन से पास कन्ने।

" बिन्नू हू राओ नईं चाहत अकेले विधाता ने तुमाए संगे जोन अन्याय करो है, ऊहे सोच के ओर तुमाए धीरज खाँ देख के हमाए अँसुआ निकर परत।"

तुम ऐसो न सोचो करो, भगवान ने हमाए संगे कोनऊँ अन्याय नई करो। हमने किताबन में पढ़ो है, भगवान जीसें बड़े बड़े काम लओ चाहत है, वे ऊकी बड़ी परीक्षा भी लेत हैं। वे हमाई परीक्षा ले रहे, उनई ने हमें धीरज दओ, हम उनकी परीक्षा में पास होकें बड़े काम करो चाहत, अकेले तुमाए अँसुआ हमाओ धीरज टोर देत। बाई तो ऐसे रो हो तो हम हार जेबें। सगुनियाँ ने बाई की आँखन के अँसुआ, अपने दुपट्टा से पोंछ दए।

का करें बिन्नू? मताई कहाए न, तुमें जनम दओ है, सो तुमाओ दुख देखो नई जात।

" ओर हम तुमाई आँखन में अँसुआ नई देख सकत तुम रो हो तो हम रूठ जैबी।"

सगुनियाँ ने बाई खाँ दवाई देकें पानी पिलाओ, तब तक छोटू स्कूल सें आगओ। ऊके लानें चाय बनाई फिर साइकिल रिक्शा पै बैठ कें सब्जी बैचबें चली गई।

झुग्गी बस्ती के ऐंगर-पास की कालोनियन में ऊके ग्राहक बन गये ते, सब सगुनियाँ के आवे को इंतजार करत्ते। सगुनियाँ, पैलां से, तोल कें सब्जी के पेकेट बना के धर लेत्ती। अपने ग्राहकन खाँ सब्जी दई और अगले दिना की सब्जी को आर्डर लओ और आठ बजवे के पैला घरै लौट आउत्ती। बाई खों दवाई, ब्यारी कराई फिर छोटू को होमवर्क कराओ, ऊके बाद अपनी पढ़ाई करवे बैठी, छोटू के सोबे के बाद सोई, और भुँसरिया में चार बजे उठ के फिर काम में लग गई। एई, सगुनियाँ की दिन चर्या हती।

छोटू तो अपनी दीदी खाँ कौनऊँ देवी को औतार मानत हतो। एक दिना उने सगुनियाँ से पूंछी दीदी तुम इतनें काम करती तो भी कभऊँ थकती नइयाँ और रोज भुँसारे से उठ जाती हो।

" छोटू भुँसारे को समय ब्रम्ह मुहूर्त " कहाउत है। जो समय पढ़ाई के लाने सबसे अच्छो होत। हमने तो किताबन में जो पढ़ो है कि, विवेकानंद,गांधी जी जैसे महापुरूष भुँसारे से उठकें अपने काम में लग जात ते, एई से वे इतने बड़े बड़े काम कर पाए।"

"तब तो हम भी भुंसारे से उठो करबी।"

"हओ, ईसाल से नई आँगत की साल से तुमें भी उठाओ करबी। अबै तुम छोटे हो।"-

"अग तो हम पाँचवी पढ़न लगे। अब काये के छोटे। हम तो कालई सें उठबी। हमें सोई बड़ौ बनने। बड़े काम कन्ने।"

हमें दोई जनन खाँ बड़ो बनने, बड़े काम कन्ने। हमें दुनियाँ खाँ बताने है कि झुग्गी झोपड़ी में रेहवे वारे गरीब लड़का-बिटिया भी भौत आँगे जा सकत।

एक दिना छोटू ने पूँछी " दीदी तुमाए भीतर इतनो ज्ञान कहाँ से आओ, तो सगुनियाँ ने कही, हमाए टीचरन ने दओ, हमने जौन पढ़ाई करी ऊ किताबन सें सीखो।"

"कोर्स की किताबन सें कैसें सीखो?

"सीधी बात है हमें जोन पढ़ाओ जात, ऊहे ध्यान सें सुनो चाहिए, फिर सोचो चाहिए जौन पढ़ाओ गओ वो काए पढ़ाओ गओ, और फिर ऊपै अमल करो चाहिए जैसे रानी लक्ष्मी बाई, दुर्गावती, चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह ओर चाहे, रामचन्द्र जी, कृष्णभगवान, सीता जी, अनुसुइया जी, इन सब के विषै में जोन हमें पढ़ाओ जात, हमें उसे सीख लओ चाहिए। हमाए स्कूलन में जोन अच्छी अच्छी बातें दीवारन में लिखी रहती उने भी ध्यान सें पढ़ो चाहिए। हमने एक जंघा पढ़ो-"पुस्तकें मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र होती हैं।" बस हमने ओई दिना से किताबन सें दोस्ती कर लई। तुम सोई बड़े हो कें किताबन से दोस्ती करियो, इनई से तुमाए भीतर धीरज ज्ञान, संयम, न्याय, सब के लाने दया, ममता, ओर अपने देश के पर्यावरण खाँ सुधारवे की समझ आहे ओर एक दिना तुम देश में अपनो नाँव कमा हों।"दीदी तुम जैसो कहती हो हम ऐसई करबी। हम तुमाओ मन की हर बात पूरी करबी। हम बड़े बनके दिखाबी " आत्म विश्वास से भरे दस साल के छोटू की आंखे चमक उठीं।

"हमें भी तुमसे जाई उम्मीद है। हमे दोई जनन खाँ मिलके भारत माता की उम्मीदें पूरी करने। ईको मान बढ़ाने। भौत अच्छे-अच्छे काम कन्ने।

बाई-दोई भैया-बैन की बाते सुनकें पुलक से भर जात ती। ऊकी आँखन सें खुसी के अँसुआ निकर परत ते। सगुनियाँ, कहती बाई तुम रोती काए हो? बाई कहती-विन्नू जे तो खुशी के अँसुआ आँय इने रोकबो हमाए बस को नइयाँ। अकेले बिन्नू तुमाए ज्ञान की बातें सुन के हमे डर लगन लगम तुमें कोऊ की नजर न लग जाय।

सगुनियाँ हँसन लगी-नजर लगवे को जमाना गओ बाई। आदमी अपनें काम में इतनो उरझो है कि उहे-नजर उठावे की फुरसत नइयाँ।

"तो बिन्नू, सँभर के रहियो, संसार में खराब में लोगन की कमी नइयाँ।"

"तुम ई की चिन्ता छोड़ दो बाई, हमाए संगे लक्ष्मीबाई की करवाल, चौबिस घंटा रहत।" सगुनियाँ हँस के सब्जी वेचवें चली गई।"

कछू दिन में परीक्षाएँ आ गई। छोटू और सगुनियाँ ने पूरे मन सें तैयारी कर के परीक्षा दई, और जब रिजल्ट निकरों सगुनियाँ ने मध्यप्रदेश में पैलो स्थान पाओ। छोटू भी अपनी क्लास में नम्बर एक पै रहो। पर उनकी जा खुसी देखवे के पैलाँ उनकी बाई भी उनको संग छोड़ के चली गई ती। छोटू -भौत रोओ-" हम अनाथ हो गए दीदी। हमाई बाई की छाया भी हमाए ऊपर से उठ गई।"

रोवे को मन तो सगुनिया को रहो तो, विलख-विलख के, चिल्ला-चिल्ला के रोबे, भगवान से कहे-तुमने हमाओ बीमार बाई की सेवा को सुख भी छुड़ा लओ पै सगुनियाँ ने अपने दुख-भीतर पी लओ, ऊहे लगो के हमाए रोएं छोटू की हिम्मत और टूट जैहे। उने मनई मन जो भी निश्चय करो के भगवान हमाई चाहे जितनी कठिन परीक्षा लेय, हम हिम्मत न हारबी। हमने कर्म की गेल में आगे बढ़त रेहबी। आगे बढ़वे वालन के ऐंगर बैठकें रोबे की फुरसत नई होत। दुर्गावती और रानी लक्ष्मीबाई अगर रोबे बैठ जाती, तो इतने बड़े काम कैसे कर पातीं। सगुनियां ने सोई मनई मन निश्चय करो कै हम भी कभऊँ न रोबी।

छोटू-विलख रहो तो-"हम अनाथ हो गए, दीदी हम अनाथ हो गए"

"अबै तुम अनाथ नईं भये छोटू तुमाई दीदी तुमाए संगे है। जो रोबे को समओ नइयाँ छोटू। हमें बाई को संस्कार करने है। और सच्ची बात तो जा है, छोटू वे जितने कष्ट में हती उनें हमाओ संग छोड़ के तो जानई तो आज के चार दिन बाद। सगुनियां ने छोटू के मूड पै हाँत फेरो और अंतिम संस्कार की तैयारी में लग गई।"

झुग्गी -बालन ने सगुनियाँ खाँ ढाढ़स दओ औ अंतिम संस्कार में सहयोग करो। फिर सब अपने अपने काम में लग गये। संझा के जब सगुनियाँ औ छोटू घर में अकेले रै गये तो छोटू फिर दुखी हो गओ-अब का करती दीदी। इत्ते बड़े संसार में अपनों कोउ नइयाँ सब के दादा-दादी, नाना-नानी, मम्मा-माई, होत अपनो तो कोऊ नइयाँ।

देखों छोटू अपने गिरधर महाराज की एक कुण्डलिया पढ़ी ती, वे कहते है-" बीती ताहि विसार दे, आगे की सुध लेय।"

और रहीम जी ने कही है-

जैसी परै सो सहि रहै, कह रहीम यह देह।

धरती पर हूँ परत है, सीत अरू मेह।।

सो, हमें आगे की सोचने पाछे की नइं। तुमें अपने पढ़ाई पूरी कन्ने और हमें भी। हमें दोई जनन खाँ कछू ऐंसौ करके दिखाने कि हम अनाथ लड़का-बिटियन के लाने मिसाल बन जाँय।

अब तुमाई जुम्मेदारी और बढ़ गई तुमे खुद खाँ भी संभारने ओर हमें भी। तुमे हमाई कमजोरी नइं ताकत बन्ने।

एक बात की और गांठ बांध लो, रोबे से और हाँत -पै हाँत धर कें बैठबे से कछू नइं होत। सफलता उनई खां मिलत जानें ठोकर खा के गिरत ओर फिर समर के आगे बढ़त।

"सांची कै रई दीदी-छोटू अपने अँसुआ पोंछ के खड़ो हो गऔ। अपनी प्यारी सी दीदी के गरे में बाहें डार दई हम तुमाई कमजोरी नइं ताकत बनवी।"

सगुनियां ने खुद खाँ भौत संभारो पै ऊकी आँखन से अँसुआ टपक परे।

" अब तुम काए रोती? " छोटू ने दीदी के अँसुआ पौछ दए।

"छोटू जे दुख के नइं खुसी के अँसुआ आँय इने रोकबो हमाए बस में नइयाँ।

आगे चलकें सगुनियाँ ने समाज सेवा करकें देश में बड़ो नाव कमाओ ओर छोटू पढ़ लिख के कलेक्टर बनो, जी की ईमानदारी बड़न बड़न की मिसाल बनी। वे झुग्गी बालन भर की नई पूरे प्रदेश आरै देश की प्रेरना बनी। भगवान ऐसे बाल-बच्चे सब खो देवे।

-देवेन्द्रनगर पन्ना म.प्र.

मो. 9406744415

गये परदेसै सइँयाँ

–ग्यासीराम गुप्त 'भरत'

कैसें काम चलै अब गुइँयाँ गये परदेसै सइँयाँ

(1)

पति हमाये पानीपत पौंचे धंधे पै टिकिया के
जई सारग में करनें पीरे हात बड़ी बिटिया के
छैः महिना की कै गये ते अब हो रई साल कढ़इँयाँ
कैसें काम चलै ....

(2)

एक हात सें कैसें होवै ग्रस्ती और किसानी
हार कों देखत फिर घर भिनकत मोय बड़ी हैरानी
घर में फिर रईं इतै विलइँयाँ खेतन घुस रईं गइँयाँ
कैसें काम चलै ....

(3)

देख हमाई सूनी बगिया सुआ करें मनमानी
बिठुआँ काम किसानी हो रओ खेतन लगने पानी
प्यारी धरती पानी माँगै कोऊ देबा नइँयाँ
कैसें काम चलै ....

(4)

मौका देखें आँखें सेंकें सँटा और उचक्का
खेत परौसी करैं मसकरी रसिया रामू कक्का
सूनी गलियन रडुआ लग रये खेतन लगीं चिरइँयाँ
कैसें काम चलै ....

(5)

बंद करैं मोबाइल बैठे कारन समझ न आवै
कैसें मिलै संदेसौ, अँदेसौ रह रह एक सतावै
अनहोनी ना होय पिया संग भर भर आँय तलइँयाँ
कैसें काम चलै ....

(6)

बिच्छू बने विछौना बहना डंक निरंतर मारें
लेत करौंटा रैन निकरतई दुख की लगीं कतारें
दिन तौ कैसेंऊँ निकर जात है रातन तकत तरइँयाँ
कैसें काम चलै ....

(7)

पाँत, भागवत और बुलउआ में हमाइमईं बातें
मौ मटका कैं हँसी उड़ावै अपनी सब भूलीं औकातें
जात पाँत कौ पतौ न इनकौ जे मोल की आई लुगइँयाँ
कैसें काम चलै ....

(8)

हमकौ नैकऊ लगै न नौनौ बिना तुमाये बालम
राई रत्ती तुमें पतौ है आलमपुर कौ आलम
तिल कौ ताड़ बनायें ताड़का कछू हैं ऐसीं लुइँयाँ
कैसें काम चलै ....

(9)

बनो डाकिया आज कबूतर फिर सें कला दिखा दो
लैकें जाओ संदेसों मोरौ सोऊत सजन जगा दो
सुखी जो चाहो अभईं लाड़ली लौटो लईयाँ पइँयाँ
कैसें काम चलै ....

(10)

पिया हमाये घरै बुला दो मातु रतनगढ़ बारी
भान तुमाये कथा करैहों और चढ़ैहों वारी
अरज हमाई पूरी करियो परों तुमारी पइँयाँ
कैसें काम चलै ....

(11)

भई दाहिनी सिंग वाहिनी हो रये सगुन सुहाने
नख सें सिख सिंगार समारों सपनिन पिय बतराने
नीलकंठ अँगना में डोले बोलें सगुन चिरइँया
कैसें काम चलै ....

(12)

सूदौ हो गओ बाम बिधाता फरकत बाम आँख बामा की
मदन बदन में सर संधानें बज रई रणभेरी कामा की
तीनौं बजौ मुबाल धना कौ सुन लई राम गुसइँयाँ
कैसें काम चलै ....

(13)

आजईं आजें आठ बजे नों पिया उतै सें कै रये
खुसी के मारें मृगनैनी कैं झर झर असुआ बह रये
अंग अंग हँस रऔ गोरी कौ दमकत लाल मुनइँयाँ
कैसें काम चलै ....

(14)

जगदम्मा मइया नें जैसी रिती हमाई फेरी
ऐसेंई सबकी बनक बनइयो महर नजर हो तेरी
पिया न जइयो अब तुम घर सें गोरी डार कहै गलबहिंयाँ
कैसें काम चलै ....

(15)

सुन कें बातें अमईं धना कीं नाचैं मन मोरा मोरा सौ
जिनके घर में ऐसी रानी बोई सुखी है साँसौ
जाके घर में प्यार की दौलत कोऊ लगत फिर नइँयाँ
सबरे काम चल रये गुइँयां आमे लौट घर सइँयाँ

–आलमपुर (भिण्ड) मध्यप्रदेश

बुन्देलखण्ड में समय जानने की विधियाँ

-डॉ.देवदत्त द्विवेदी

प्राचीन काल सें आदमी अपने सबइ काम प्रकृति के सहारे सें करत आय हैं। हजारन साल पैलाँ जब आदमी ने समय के बारे में सोचो समझो हुइयै, समय की कीमत खों पैचानों हुइयै तब आदमी खों समय (बखतबेरा) जानबे की जरूरत समझ में आइ हुइयै। तबै कछू जनबा आदमन ने अपनी सूझ बूझ सें दिन औ रात खों जाँचो परखों, कै दिन औ रात होबे के बखत में थोरौ-भौत अन्तर आ जाय। वै दिन औ रात कौ सम्पूरन (कुल) समय सदाँ एकइ रत है। प्रकृति के धरती पै अपने पक्के नियम और क्रिया कलाप हैं। ई सें प्रकृति पै आदमी कौ अटूट विश्वास बनों कै संसार बदल जाय, पै प्रकृति के करता-धरता सूरज, चन्दा, तारे और ग्रह-नक्षत्र नइँ बदल सकत हैं। साकार की पूजा (मूर्ति पूजा) खों लोक में सब सें जादाँ महत्व मिलवे कौ एक कारण जोइ है, कै जब सूरज भगवान, पवनदेव, बरुणदेव, अगनदेव, आदि साक्षत दिखा रये और आदमन के सबइ काम चला रये तौ फिर उनें बनाबे बारे और चलाबे बारे अन्तरयामी भगवान तौ इनसें बड़े कहाइ कहाय।

हराँ हराँ जब आदमी ने हर तराँ कौ विकास बिस्तार करो, सो आपसी बेभार के काम काज के लाँने दिन औ रात कौ समय बताबे की जरूरत आँन परी। जैसें आबे जाबे कौ समय बाल बच्चन के जनम कौ समय, शादी ब्याव कौ समय आदि। तौ आदमी ने ऊ बखत समय खों जानवे के लानें गुन चुन कें सूरज, चन्दा और तारे तरइयन की गति खों आधार बनाकें समय कौ निरधारन करौ। तबइ सें समय बताबे बारी सबसें छोटी इकाइ चली घरी (घड़ी) और आदमी दिन और रात कौ समय येइ घरी सें मानन लगे औ बताअन लगे। जैसें घरी भर दिन चड़ें, कै दो घरीं रात गयँ आदि। येइ घरी के अन्दाज से धीरें धीरें आदमी ने एक एक घरी के समय बोधक शब्दन (बाक्यन) की रचना कर लइ, जो आज के एक एक घन्टा के बराबर हैं। जैसें दिन की शुरूआत कौ समय बतावे बारौ सब सें पैलौ शब्द है भुन्सारौ याने कै करीब 5 बजे ब्रम्ह मुहूर्त कौ समय। दिन के 12 घन्टा के बारा समय बोधक नाँव हैं। 1-भुन्सारौ 2-अँदयाइ या दिन ऊबत 3-दिन चड़े 4-घरी भर दिन चड़े 5-दो घरीं दिन चड़े 6-कोंरे दुपरै 7-दुपरै (दोपहर) 8-दुपर लौटें या दिन लौटें 9-छरछरात दिनें 10-दिन छित 11-घरीक दिन रयँ 12-झुली परें।

येइ तराँ से रात कौ समय बताबे बारे नाँव हैं।

1. अबेरी बेरा (गौधूलि) 2- दिन डूबे 3- संजाबेरा या दिया उजरें 4- लौलइया लगें 5 दो घरी रात गयँ 6-आदीरात 7 तरा ऊमें 8 तरा डूबें, 9 पसर की बेरा 10. धरीक रातरयँ, 11 झुका-झुके, 12- बड़ी भौर या मौं अँदयारे

बुन्देली के क्षेत्रिय रूपन के अन्तर सें बोलबे में कछू कछू फरक परत है, पै पूरे बुन्देलखण्ड में अपनी बोली बानी में जा बुन्देली प्राकृतिक घड़ी चल रइ है।

ऊ समय के साहित्य में सोइ समय खों घरी (घड़ी) के रूप में गिनबे और समय बोधक शब्दन के प्रमाण मिलत हैं। जैसे -

एक घरी आदी घरी-आधे में पुन आध।
तुलसी संगत साधु की-कटैं कोटि अपराध।।
सूरज की मुरक गई कोर-भई संजा बेरा।
भर दुपरे आ गव री -तकौ जो बैरगिया।।

जब पत्रा पंचाँग नइँ बनेते, तौ जनबा आदमी सबइ काम घरी बेरा बताकें करत कराउत हते। महाभारत कौ इतनों बडौ युद्ध सूरज की (दिन की) दशा देख कें शुरूँ होत तौ और खतम करौ जात तौ। येसइ जब राजा दशरथ ने अपने जेठे कुंवर श्री रामचन्द्र जू के तिलक कौ मुहुरत बताबे खों अपने कुल गुरू बशिष्ठ जू सें निवेदन करौ, तौ उनने का कइ कैसौ सोदन करौ जा बात सोउ ध्यान देबे बारी है। रामचरित मानस के अयोध्या काण्ड कौ दोहा है-

बेगि विलम्ब न करिय नृप-साजिय सबुइ समाज।
सुदिन सुमंगल तबहि जब-राम होय युवराज।।

कैबे कौ मतलब जो कैई में कउँ नइयाँ कै मंगलवार खो सबेरे दस बजें कौ मुहूरत अच्छौ है। ई सें जो साबत होत है कि जबै भी सब काम दिन घरी सें होत रय हैं।

बुन्देलखण्ड में तौ आला ऊदल के जमानें सें समय के अन्दाज बारे शब्दन की चलन के प्रमान मिलत हैं। दिन निकरबे सें दिन डूबे बे लौ की घड़ी सूरज की उरइयाँ (धूप) सें औ रात होबे पै चन्दा तारे निकरबे डूबबे सें सही समय कौ अन्दाज लगाव जात रव है। कैउ जनें तौ अपने आँगन में कै द्वारे के ऐंगर आसपास एक बेर चीनों (निसान) लगा लेत ते कै इतै लौ उरइयाँ आइ तौ इत्ते बजे, इतै सें आँगे इतै लौ पोंची तौ इत्तै बजे। आज हर गाँव में विज्ञान का बोल बाला हो गव है। गाँव गाँव घड़ी, रेडियो, टी.बी, मोबाइल पोंच गये हैं, पै गाँव खेरन के किसान मंजूर अबै लौ अपनौ काम-धाम करबे खों, हार खेत पै जाबै आबै खों, भैंसन गइयन की पसर चराबे खों, हार खेत पै जाबे आबे खों, बाइ पुरानी परम्परा अपनायँ जा रये हैं। जा बुन्देलखण्डी प्राकृतिक घड़ी हिरात जा रइ ती येइ सें ई खों खोज कें लिखो गव है कै अब जा लिखी धरी रै है और कभऊँ भी कोउ भी जेठे स्यानन की जा पुरानी घड़ी देखे बाँचै।

-उत्कृष्ट विद्यालय के सामने
बड़ामलहरा जिला छतरपुर म.प्र.
मो. 9584219296

बेद कही सो लोक नै गाई

-आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल

दादुर मोर पपीहन के बोल सुनावो अब बंद हो गओ है। आसमान सें कारे कजरारे बादर बिदा हो गये है। तला तलैयां और नदियन को जल दरपन सो निरमल हो गओ है। सो ई दरपन में चन्दा जू अपनो नौनो सो मुखड़ा देख देख कैं खिल रये है। जो सब देख कें धरनी माता फूली नईं समा रई है। बेला जुही की का कहें कांस नौ फूल गये है। सबई प्रसन्न है। सारस के जोड़ा अपनी खुसी की चौंच ऊपर उठा कें मुनादी कर रये है बे कह रये है के भैया जो भूखे टूटे होवे बे इते पधारें और इन गदरारी धान की बालन की परसादी पावें और जा भूम के गुन गावें। जुनैआ खिलखिला कें कह रई है के आज सरद की पूनौ है। ऐसी नौनी सरद की रात कों देख कें कभऊं किसन कन्हैया जू को मन डोलौ तौ और फिर ब्रिन्दावन की भूम में जमना जी के किनारें गोपियन के संगे रास रचाओ तो।[१]

जमड़ार के किनारें धान के एक खेत में ऐसी खिली जुनैया में ननद भौजाई खिलखिला रई है। एक कह रई है के हिली-मिली दो बालें आई और दूसरी पूछ रई है के का भर लिआई ? बोलो का भर लिआई ? और दोउ खिलखिला कें चुप हो गई है वे कछु सोचन लगी है। और हम सोच रये है के ऐसी कौनउ सरद पूनौ की रात हती जबै ऋषि गित्समद (गृत्समद) जू ने विचार करौ हुहे। कहत है के वे ऋषि जू हते तो मानुस पे देवतन के संगे उठत बैठत ते। देवतन के राजा इंदर जू महाराज के हितू मीत हते। वे ऋषि महाराज अपनो मनचाहो रूप धर सकत ते और जिते चाहे उते जा सकत ते। उनको ज्ञान अपरम्पार हतो। उन ऋषि महाराज ने ई पूनौ को नाव "राका" धरो तो। [२]राका को मतलब होत है सुख देवे वारी, धन सम्पत देवे वारी। उन ऋषि महाराज ने भौत खोज करी ती।

उन गित्समद जू ने बताओ है के जा रात देवी है। जा सरद की पूनौ की रात ऐसी देवी है जो मांगवे वारन खौं वीर, गुनी, ज्ञानवान संतान देत है[३] फिर आंगे चल कें अंगरा ऋषि जू ने बताओ है के जा पूनौ की रात ऐसी उसी नईया। जा रातन में सबसे पैलें पूजवे जोग है। जा पूनौ जग्ग की शक्ति है। जो जाये पूजत है उनें जा पूनौ एसी धन सम्पत और वैभव देत है जो घटवे को नाव नई लेत सदां बढ़तई रत है।[४]

जा नई बात कौ पतो दूसरे ऋषियन को लग गओ। ऐसी खोज जो सबकों हितकारी होवे बा छिपत तो है नईया। जरत दिया खौं डलिया से ढांक कैं कब नौ गुपत राखो जेहे। ऊको प्रकास तो बाहर निकर हैई और सबकों दिखेहै। सो जा बात फैल गई। सबके काम की जा बात हती सो ऋषियन ने फैला दई। ऋषियन ने नौनी बातन खौं ग्यान बिग्यान की बातन खौं जनता में खूब फैलाओ है। कहानियां बना कें सुनाई है। सो जा की सोउ कहानियां बन गई। कहत है के- सीता माता पे जब बिपदा परी भावई में सीता महारानी खों राम जू और लखनलाल खौं राजपाट छोड़कें बनवास भोगने परो तो। वे तीनउ जनें अबध सी नगरी को छोड़कें इते अपने बुन्देलखण्ड में चित्रकूट में कामतानाथ परवत के उपर कुटिया बना कें रये ते। जा बुन्देली भूम को गुन है के इते सब सबखौं अपनो मानत है। भूम सबखों चैन में राखत है, सबई की मदद करत है। सो इते सीता जू महारानी की वा विपदा के दिनन में चित्रकूट वासियन की घरवारियन नें खूब सेवा करी ती। घर घाँई राखो तौ। इतै जब सरद की पूनौ परी ती तो सीता जू खों उनन ने इते ब्रत कराओ तो और कथा सुनाई ती। गऊ के दूध को एक आहार औंटा कें ऊके तीन भाग बनाये ते एक भाग पति खौं एक भाग सखी खौं और एक भाग चंद्रमा की पूजा कर कें प्रसाद के रूप में ग्रहन करौ तौ।

जब वे इतै की भूम खौं छोड़कें डन्डकारत्र वन (दण्डकारण्य) में पौंची तीं तौ उनने अपने देउर लक्ष्मन जू से जा बात कही के ऐ लखन जू आज सरद की पूनौ है हमाओ व्रत है अब भैया ! कैसो करे का करे ? लखन लाल जू ने समझाओ तो के भौजी ! अपन पै विपदा परी है सो विपदा को धरम पालौ। हम कितउं से तीन फल लै आउत है सो उन तीन फलन में से एक फल पति खौं एक फल सखी खौ दे दियो और एक फल बचै सो आप ले लिऔ। वे तीन फल लै आये सीता जू ने व्रत करौ अब सखी ढूढ़ी कै जो कथा सुने जी खौं फल देवें। वन में ढूढ़ी वन में सखी कौं धरी। वे आंगे चली उतै कुआ मिलौ। कुआ पै चार जनी पानी भर रई तीं। सीता जू ने उनसें बिनती करी बैन हमाई कथा सुन लो हम व्रत कर रये है। उनन नें टका सो जबाब दै दऔ "जाओ जाओ ! हमें कथा सुनवे की फुरसत नईयां जी खों फुरसत होये ऊखों अपनी कथा सुनाओ आंगे जाओ"। बिचारी सीता जू आंगे चली।

एक कुआ मिलौ ऊपै एक नई बहू अपनौ मटका धरें ठाड़ी ती सीता जू ने उसे कई सो बा सीता जू खौं देख कें हंसी पसीजी बोली " बेन हम बनत है तुमाई सखी। सुनाओ हमें कथा"। सीता जू ने ऊखौं कथा सुनाई परसाद में एक फल दऔ। सीता जू अपनी गैल गई और वा बहू पानी भरकें अपने घरे आई। बहू खों सास ने देखो सो बा बहू तो जगर-मगर हो रई ती गरे में सोने कौ हीरन जड़ो हार, कमर में करधनी और पांव भरी पायलें। सास चिल्लानी " अरी बहू ! जे कौनके उठा लिआई ? अपन गरीब है पै अपन चोर और बदमास तौ नईयां। तैने काउ की चोरी करी है और नई करी है तो अन्याओ जरूर करो है। निकर हमाये घर सें "। बहू ने सास से बिनती करी के हमाई बात तो सुनो और फिर रो रो के पूरी बात सुनाई। पै सास नई मानी बहू खौं लेंके सीता जू नौ पौची। सीता जू नें सास को समझाओ कै जा तुमाई बहू पूनौं के व्रत में हमाई सखी बनी ती। हमने ईके संगे सरद पूनौ माई की पूजा करी ती ईखौं परसाद में एक फल मिलौ तो। पूजा की बेरां ईके मन में कछु अभलाषा हुहै सो सरद पूनौ माई की कृपा से वा मन की अभिलाषा पूरी हो गई। जौ ब्रत को फल है सो ईखों मिलौ है। तुम हंसी खुसी अपने घरै जाओ आनंद मनाओ। डुकरो बहू खों लेंके अपने घरे आई और ओई दिना से उनके दिन फिर गये।

लोक ने मानो है के सरद की पूनौ सब कछू देत है। बेद ने बताऔ है के सरद पूनौ मन चाही अभिलाषा पूरन करवे वारी है फिर पुरान कैसे पीछे रहते। व्यास जू महाराज नें पुरानन में सरद पूनौ की महमा खूब बखानी है उनने महाभारत में गाई हैं बताई है कै जब पाण्डवन पै भाबई परी ती तब उने ऊ विपदा के दिनन में वन-वन फिरने परौ तो। बनवास के दिनन में उनें एक ग्यानी मुनीसुर धौम्म (धौम्य) मिले ते। सरसुती नदी के तीर पै मुनी जू नै पाण्डवन खौं

बताओ तो के सरद पूनौ की रात पूरे सालभर में सबसे पुन्नयाउ रात होत है। जा रात खों चन्दा जू अपनी पूरी सोरा कला से खिलत है, सो वे सबकी अभिलाषा पूरी करत है।[५] सो फिर उन सबन नें उतें सरसुती जू के किनारे रात खौं सरद पूनौ को व्रत करौ तौ उनखौं फल मिलो तो सबई जानत है कै पाण्डवन की महाबली कौरवन पे जीत भई ती और राजपाट मिलौ तो।

लोक ने खूब विचारो है जब उनखौं विचार में जो अच्छो लगो ऊखौं मानो है। वेद ने बताई ती, पुरानन ने गाई ती सरद की महमा सरद पूनौ की बढ़ाई सो जा की जानकारन ने जांच करी और फिर मानी। बड़ी समझदारी से बनो है जो परब। वेद बताउत है के कुआंर और कातक मईना बल देत है, जीवन देत है और फूर्ती देत है।[६] इन कुआंर कातक के सूरज महाराज पालत है पोसत है ।[७] सो सरद रित खौं वेद ने देवतन की "हबी" बताई है।[८] हबी देवतन खौं प्यारी होत है पोसत है पालत है। सो जा रित जा तरा सें पालवे पोसवे बारी है। फिर पूनौ की महमा तौ कानौं कहें। वा तौ केउ पुरखन ने बखानी है।

जो पूनो को व्रत चलौ सो अबे नौ चल रऔ है। गांव में चलत है, नगर में चलत है, पुरवा में और खिरकन में जिते जिते दूध मठा को सुभीतो होत है, उते की बहुयें बिटियां आज नौ जा व्रत खौं करती है। ऊ जमाने सें आज थोरो रूप बदल गओ है जैसे व्रत की कथा बदल गई है। परसाद बदल गओ है। बिनती के बोल बदल गये है। पै सिरधा, विसवास और परिवार के प्रेम कौ भाव नई बदलो है अबे नौ जैसे कौ जैसो बनो है।

परसाद बदल गओ है, पैले व्रत होत तौ गउ के दूध से काये से के चंद्रमा जू खौं गउ कौ दूध भौत प्यारो है। सो पेलै जा व्रत में एक आहार गउ के दूध से करो जात तौ और अब गउ सें भैसें बढ़ गई है सो अब गैया भैसियां जी को मिले तीकों डेढ़ पाव खोआ और डेढ़ पाव शक्कर ऐसे तीन पाव के तीन लड्डुवा बनाये जान लगे है। एक पति खौं, एक गरभवती सखी खौ, और एक बचौ सो परसाद में लऔ। फिर जरूरत बदली सो परसाद बदल गऔ। अब बनन लगे छः लडुवा एक पति खौ, एक सखी खौ, एक गरभवती खौं, एक मंदर मे, एक ग्वाल वाल खौं, एक बचो सो परसाद में ग्रहन करो जान लगो है।

कथा बदल गई है। सीता महारानी जू तो अब बीते जमाने की बातन में रह गई है। नई नई कहानियां बन गई है पै बातें बेई है। कभउं बुड्डा बुढ़िया है, और कितैउ डुकरा डुकररियां है, इत्तौ फरक आ गओ है।

एक हतो बुड्डा और बुढ़ी बे कैसउ अपनो पेट पाल रये ते उनकें संतान नईं हती। परिवार ने जो कछु घर में बासन भाँड़े हते सब हथिया लये। बिचारे बुड्डा बूढ़ी खौं घर से निकार देऔ। वे दोउ जने मुहल्ला परोस के और कछु गांव के भले आदमियन के आसरें एक झुपड़िया में जिन्दगी के दिना पूरे कर लगे। एक दिना बूढ़ी डुक्को ने अपने घरवारे से कही के तुम दिनभर हाथ पे हाथ धरे बैठे रत हौ कछु माला फेरो, भजन करो सो मन अच्छो रैहै। खाली बैठे से पुरानी बातें याद आउती है और मन खराब होत है। बुड्डा ने जबाब दओ- "हम का करें ? हमाओ मन तो भजन में लगत नईया सो चलो अपन कितउं तीरथन चलें।" डुकरिया ने बात काटी "हमाये तो पांव चलत नईयाँ हमें कितउं जाने नईयाँ हमाये तो सबसे बड़े तीरथ जे तुलसा माई है। तुमें जाने होय सो जाओ, मईना भर में लौट आईओ। हम कैसउ करकें एक मईना भर काट लेहै।

बुड्डा तीरथ जात्रा पै गओ। रसता में एक गांव मिलौ संजा वेरां होवे वारी हती। गांव के बाहर कुआ पे चार बिटिया घर बना रई ती। बे खेल खेल में अपनो घर बनाउती और फिर ऊखों मिटा देती। पे एक बेटी घर बना कें मिटाउत नई हती। बुढड्ढ देखत रऔ। बूढ़ी आंखन मैं अनभव की आंच होत है। खरे खोटे की परख होत है सो ऊने कछु परख लओ। बुढढा ने बा बेटी से पूछी "बेटी ! जा बताओ, तुम घरघूला मिटाउती काय नईयाँ ?" "बिटिया बोली बाबा जू हमाऔ काम बनावो है सो हम बना रये।" और फिर हँसन लगी। बुड्डा ने बिटिया से कही "बेटी हम तीरथ जात्री है। सूरज डूब रये है। हमें रात विश्राम करने है हमें अपने घरे ले चलो "बिटिया हंसी खुसी बूड्डा कौं अपने घरै लुबा गई। बिटिया के बाप नें वुड्डा की तीरथ जात्री जानकें खूब सेवा करी। बुढढा सवेरे आंगे चलवे खौं तैयार भऔ तो बिटिया के बाप ने पूंछी " महाराज अपन की तीरथ जात्रा कबै पूरी होने है ?" बुढढा बोलो " भैया ! तुम चाहौ तो जा जात्रा आज पूरी हो जेहै नई तो अबै चलहै। "बिटिया के पिता ने कही "आप ब्राह्मन देवता है तीरथ जात्री है हमाये अतिथ है हमें आग्या देऔ। आपकी कौन बात पूरी करें ?" बुढढा ने कही " भैया हमायें एक लरका है "सत्तन"। बौ काषी जू में पढ़ रऔ है। ऊके बियाओ के लाने हम बिटिया ढूंडवे निकरे ते सो तुमाई बिटिया हमें नौनी लगी है। अब बात तुमाये हाथ में है।हम तुमाई बिटिया कौं अपने बेटा के लाने माँगत है विचार कर लो?"

बिटिया के बाप ने थोरो विचार करो फिर बोलौ " आप देवता है, हमाये द्वारे मांगने बन के पधारे है हम गरीब जरूर है पे हम नाँईं नई कर सकत। हमें आपकी बात मंजूर है।" बुड्डा की बात पूरी हो गई सो फिर वो ठहरौ ओर बोलो "हमाई एक बात और तुमें पूरी करने परै। बियाओ तो हम करहे चिंता करने नईया। पै लरका पढ़के सालभर बाद आहे, सो बियाओ 'फेंटा कटार' से हुहै।" बेटी के पिता ने देर नौं विचार करो। लरका काषी जू में पढ़ रओ है तो बड़ौ पंडित बनहै सो ऊने हां कर दई। पंडित खौं बुलाकें लगुन पक्यात और बियाओ को महूर्त निकरवा लऔ।

बुड्डा ने घरे आकें अपनी घरवारी से कई " सुनती हो ! तुमाये लरका को बियाओ है महमान आ रये है तैयारी करौ।" बुढ़िया चिढ़ के बोली "तुमें ठिठोली सूझी हैं जब अपने बच्चा भये नईया, तो बियाओ कौन को आगओ ?" बुड्डा नें बुढ़ियो खौं डांटो। सब बात सुनाई डुकरिया ने बात मान लई। ऊ दिनां शरद की पूनौ हती। बुढ़िया ने मनई मन में बिनती करी के हे पूनौ माई मैने जबसे होस संभारो है तबसे तुमाओ व्रत कर रये है। मैने कभऊँ मौ नई खोालो है कछु मांगो नईयां तुलसी मईया गवाह है इनके सामने व्रत करो है सो अब लाज राखने है। डुकरा तो सठया गओ है। अब आपई खौं पार लगाने है। हमें विसवास है के आप हमाई सहायता करहें। और फिर बुढ़िया अपने काम में लग गई। मुहल्ला परोसियन ने मदद करी कैसऊ के "फेंटा कटार" से बियाओ हो गओ।

अब बुढ़िया के घर में नौनी रैनू कैसी पुतरिया छनकीली बहू आ गई। आंगन में छमाकौ परो उजयारो सो हो गओ। मुहल्ला परोसियन

खौं अच्छो लगो पे घर घराने के लोगन कौ पेट पिरानौ। दुनिया को नियम है के घर घराने के लोग जब अपने घराने के काउ खौं बढ़त देखत है तो ऊपर से खुषी दिखाउत हैं और भीतर पेट में उरद चुरत है। सो ऐसोई डुकरो के संगे भओ।

कछु दिनन बाद एक दिना बहू खौं अकेली पाकें एक घराने की डुकरिया आई और बहू से कछू चुगली कर गई। वो बहू से कै गई के बेटा तुमाई सास के कौनउ संतान नई भई है सो जौ सब झूठमाठ को खेल बनाऔ है। तुमाई जिंदगी बरबाद कर दई है जा ने। काल के दिना शरद की पूनौ है सो तुमाये सास ससुर चौक में बैठें। सरद पूनौ की कथा हुहै। फिर तुमें बे लडुआ देहैं सो तुम उनसे तब कहिओ के जैसै जोड़ा से आप दोउ जनें बैठे हो ऐसई जोड़ा से जब हम दोउ जनै बैठे तब लडुआ लेहै। जा बात कै के डुकरिया चली गई। बहू ने दूसरे दिना सास ससुर सें जब वे चौक में बैठे तब जा बात कही। अब बुड्ढा बुढिया खौ हेरन लगो और बुढ़िया बुड्ढा खौं हेरन लगी फिर बुढ़िया ने आंखे बंद करीं। उतई तुलसी जी नौ पूनौ माई को ध्यान करो और सत्तन बेटा को नांव लेकें बुलाऔ। तीन बेर बुलाओ, सो तीसरी बेरां पूनौ मईया की किरपा से सोबरन सौ रूप धर कें प्रभू आगये। बुढ़िया और बुड्ढा के पांव छुये और फिर हंसत मुस्क्यात बहू के पास बैठ गये। बुढ़िया ने बेटा और बहू खौं असीस दऔ। बहू की ओली में प्रसाद को लडुआ धरो। शरद पूनौ माई की किरपा भई और ऊ दिनां सै उनके दिन फिरे। ऐसेई दिन सबके फिरै।

शरद पूनौ की जा एक कथा है ऐसीं केई कथा गांवन खेरन में आज चल रई है पै कथा के बाद जो पूनौ माई से बहुये बिनती करती है ऊ बिनती के बोल अनोखे है। ऊ बिनती में बुन्देली बहू की अन्तस की अभिलाषा और संस्कार जो भीतरै छिपे रत है बे बाहर प्रकट हो जात है। हमाये ऋषि मुनी बूढ़े पुराने जा बता गये है के शरद पूनौ माई ऐसी सम्पत देती है जो घट कें जानत नईया और उत्तम होत है सो फिर जे बुन्देली बहुयें मांगवे में कमी काय करें ? बे पूरे उछाह से अपनौ जी खोल कैं पूनौ मईया से मांगती है- 'अन्न मांगे, धन मांगे, मांग भर सिंदूर मांगे, ऐड़ी भर माहुर मांगे, हाथ भर चूड़ी मांगे, हाथन भर मेहंदी मांगे, माथे पे बिंदी मांगे, गरे भर हार मांगे, लाल चुनरिया मांगे, गोदी भर लालन मांगे, पुन्न धरम खौं कन्या मांगे, सात भैया सात भौजाई मांगे, कौसिल्या सी सास मांगे, जसरथ से ससुर मांगे, लछमन से देउर मांगे, बालमकुन्द सो भतीजौ मांगे, अपने पिया खौं राज मांगे, पई-पाहुने मांगे, और दोरे भर पनैयाँ मांगे।'

जा कथा जो बूढ़ी करै, बैकुण्ठ जाये, ज्यान जवान करे सो गोदी में लाल खिलाये, क्वांरी करें सो मनचाहो घर-वर पाये। बोलो पूनौ मईया की जै जै जै।'' झप्पी सी खुली पे आंखे खुल नई पा रई है, जुनैया खूब खिली है, सियात रात कौ दूसरो पहर हो रओ है। ऐसे में उपाध्या जू महाराज की बातें याद आ गई। बे कहत ते के वेद और लोक अलग-अलग नईया। जो वेद में है सो लोक में है, जो लोक में है सो वेद में है। जो लोक में नईयाँ सो वेद में नईयाँ और जो वेद में नईयाँ सो लोक में नईयाँ। काय से के वेद मन में रहत है जा बात वेदई कहत और डंका की चोट पे कहत है। सो मेरो मन आनंद में मगन हो गऔ। बाहर जैसी जुनैआ हमाये भीतरें खिल गई। वे ननद भौजाई अबे नौं खिलखिला रई है एक कह रई है के ''हिली-मिली दो बालें आई'' और दूसरी पूछ रई है के ''का भर लिआई ? बोलो ना का भर लिआई ?''
और हम मनई मन गुनगुना रये है-

''हिली-मिली दो बालें आई वेद कही सो लोक ने गाई।।

टिप्पणी-

1- भगवानपि ता रात्रिः शरदोत्फुल्लमल्लिकाः। वीक्ष्यरन्तुं मनष्चक्रे योगमायामुपाश्रितः।। (श्रीमद भा0 10/29/1)

2-3 राकामहं सुहवां सुष्टती हुवे श्रृणोतुनः सुभगा बोधतु त्मना।
सीव्यत्वपः सूच्याच्छिद्यमानया ददातु वीरं शरदाय मुक्थम।।
(ऋग्वेद 2/32/4)

4- पौर्णमासी प्रथमा यज्ञियासीत् अह्नां रात्रिणाम् अति शर्वरिषु।
ये त्वं यज्ञैः यज्ञिये ! अर्चयंति अमी ते नाके सुकृतः प्रविष्टः।।
(अथर्व 7/80/3)

5- तेषां पुण्यतमा रात्रिः पर्वसन्धौ स्म शारदी।..........
पुण्यकृद्भिर्महासत्वैः तापसैः सह पाण्डवाः......................।।
(महाभारत व. प. 3/182/16)

6- इषष्चोर्जष्च शारदावृतु................ (तै. स. 4/4/11)
इस और ऊर्ज शरद ऋतु के दो माह हैं। इष = क्वांर और ऊर्ज= कार्तिक का महीना। इसका अर्थ है बलवान और ऊर्ज का अर्थ है स्फूर्ति, जीवन, प्राण।

7- क्वांर के सूर्य पूषा और कार्तिक के सूर्य का नाम पर्जन्य है। (विष्णु पुराण 2/10/11-12)
............शरद हविः (यजु. 31/14) - शरद ऋतु हवि है।
हविः = जीवं वै देवानां हविः अमृतं अमृतानाम् (ष. ब्रा. 1/2/1/20)

8- शिव संकल्प सूक्तः- (यजुर्वेद 34/4)

-नूतन विहार कॉलोनी टीकमगढ़ (म.प्र.)

बुन्देली चौकड़ियाँ

-रामानन्द पाठक 'नंद'

नामी बुन्देलखण्ड को पानी, नइंयां ई की सानी।
धन्य ओरछा नगर हतीजा, बुन्देली रजधानी।।
विरसिंह देव राजा हो गय, सूर, वीर, उर, दानी।
कैरय 'नंद' सवई ने ई की, महिमा खूब बखानी।। (१)

हो गये छत्रसाल बलधारी महापुरुष औतारी।
चम्पतराय के कुंवर लाड़ले जन्म मोर पहाड़ी।।
नगर छतरपुर बसा दऔ है इन पे हम बलहारी।
कैरय 'नंद' मुगल सेना ने इनसे मानी हारी।। (२)

भैया नइयां कोउ पुछइया, मच रऔ हाहा दइया।
महगांई बढ़रई सुरसा सी, लगौ शनीचर ढइया।।
सूखा परो न जमों तिनूका भूखन मररई गइया।
'नंद' कहे अब जां तां देखो होरई खा खा खइया।। (३)

कैरय आज सभा में गाके अपनी फाग बनाकें।
हीरा जैसो जनम गमाओ का कहो अब जाकें।।
नौने काम करे न एकऊ जारय पाप कमाकें।
कीरा बनो काउ नरदा के आज 'नंद' जू भाकें।। (४)

-ग्राम व पोस्ट नैगुवां, जिला टीकमगढ़ म.प्र.
मो. नं. 9755554351

हरदौल

-डॉ. जे.पी. रावत 'जगदीश्वर'

इसी नगर के प्रांगण में विषपान किया हरदौल ने,
भाभी के हाथों विषखाया, वीर रतन अनमोल ने।
बुन्देलों के स्वाभिमान को समय लगा जब तौलने,
वीर भूमि में बुन्देलों का खून लगा तब खौलने।
गॉव-गॉव में बने चौंतरा, हम सबके संरक्षक हैं,
जिनकी शिक्षा और नीतियां, आज स्वयं ही शिक्षक हैं।
सकल लोक में रमे देवता वीर बुन्देला लासानी,
दुष्टों के संहारण को वे बने हुए तक्षक हैं।
सात धार सरजू सा बहता जहॉ बेतवा का पानी,
जहॉ जामनी जीवन रेखा तुल्य सदा जाती जानी।
जिसके संगम स्थल पर संतों के रमते डेरे हैं,
जलचर थलचर नभचर और उभयचर जहॉ बसेरे हैं।
कर विषपान बने विषपाई हाय लला हरदौल ,
नृप जुझार के मन में की नें बै दइ विष की बौल ?
कहें जुझार नृपत, रानी सें हरदौले विष दे देना,
पतीवृता नारी के लानें, जेठ हमारौ है कहना।
हिलकी दै दै रानी रोये, निकरे न मुख सें बैना,
रानी ऐसे रोय जैसे ताता बिन बिलखै मेना।
हा-हा करत हजारी विनती करबै सौ-सौ कौल
नृप जुझार के हिरदय की वे बै दइ विष की बौल ?
देउर हमारे, जी खो हमने पालो पुत्र समान,
प्रान पियारे लाला कैसे करहौ तुम विषपान ?
का कैहे संसार कै पापिन, कुल्टा बनी भुजाई है,
भैया बनो कुलैया, काटै जैसे गरौ कसाई है।।
कैसे तजै ह्दय कौ हीरा, ललित लाल अनमोल
नृप जुझार के हिरदय की वे बै दइ विष की बौल ?
लगा दाग प्रदूषण का है, धरती की चूनर धानी में।
काहे रूठे स्वामी हमसे ऐसौ का अनुआ हो गओ,
वीर बुन्देलन की मति मारी कइ भाग उनकौ सो गओ,
काहे मारन चाहत भ्रत, जो बॉको वीर बुन्देला है,
चुगल खोर ने चुगली कीन्ही जा सें भओ मन मैला है।
कुमड़ा घॉई काय लला खों हॅसिया से रये पौल,
मृत जुझार के हिरदै कीने बै दइ विष की बौल ?
बोल नृपत जुझार भिड़ो है, तुमरी देवर से टांकौ,
पेड़ तुमारौ पति परमेसुर वीर बुन्देला रन बॉको।
कैसे जहर देव तुम ऊखों जो प्रानन सें प्यारौ है,
बॉका और मताई को जौ नाटक रचो न्यारौ है।
इतनी सुनतन रानी के तन खून गयौ है खोल,
मृत जुझार के हिरदै कीने बै दइ विष की बौल ?
रानी बोली अगन परीक्षा लै रय जो जो तुम कोरी,
मैंने तुमरे संग जीवन की जियन जोरिया है जोरी,
करकें भ्रम्मा, विश्वास श्वांस की जुरी डोरिया है होरी,
खेलौ न जौ खेल, विनय मैं करूँ तुम्हारे करजोरी,
कपट तराजू में सनेह सुत कौ काहे रस तौल,
नृप जुझार के हिरदै कीने बै दइ विष की बौल ?
प्रान अगर हरदौल त्याग दय, हात कछू फिर न आहै,
सिर धुनस कें पछतैहौ, पांछी न वापस पिंजरा पर है।
भैया के विन सूनी हो जै, सकल ओरछा रजधानी,
रानी हठ ठानी, राजा ने बात नहीं बिल्कुल मानी।
डिगै प्रतिज्ञा न जुझार की, जाबै काहे पृथ्वी डोल,
नृप जुझार के हिरदै कीने बै दइ विष की बौल ?
कंचन थार सजो रानी ने, रुच-रुच खीर बनाई न्यारी है,
परसो भोजन स्वयं, विचारी नारी की लाचारी है।
अपने हातन जहर मिलायो, पतिव्रत धरम निभायो है,
धन्य-धन्य बुन्देलखण्ड कौ जस जग भर ने गायो है,
छल और कपट के पट रानी ने झरपट दीन्हे खोल,
नृप जुझार के हिरदै कीने बै दइ विष की बौल ?
भोजन भये हरदौल लला के रानी के अॅसूआ ढारे,
गिरे थार में, भौजी बोली, देवर तुम मोरे-मारे।
करौ न तुम जौ भोजन भर ई में हमने जहर मिलायी है,
अपने कुल पै मैंने लाला, अनमिट दाग लगायो है।
गरौ रूंधो रानी मैया कौ, बोल न आवे बोल,
नृप जुझार के हिरदै कीने बै दइ विष की बौल ?
ऐसौ प्रेम भुजाई, भैया कौ न कोउ, पा पातौ,
लरका और मताई कौ जौ जनम-जनम कौ नातौ।
ऐसी कै कें खान लगे विष, हॅसत-हसत में भोज किये,
मूड़ धरी मॉ की ओली में लाल चले मनमाज लिये,
नीलकण्ठ वन प्रान पखेरू, उड़े छोड़ कें चोल,
नृप जुझार के हिरदै कीने बै दइ विष की बौल ?
बिलखत गैल-गॉव की रैयत, छाती कूट मूड़ मारै,
मौत सुनत मातम छा गओ है, घर बसरीस, द्वारे-द्वारे।
वीर लला हरदौल हमारौ, परम हितेषी नैंया जू,
मॉ की ममता नेह बहन कौ, कुँवर कन्हैया नैंया जू।
रूक हरीरे सूके बदन धसक गय हते सुडौल,
नृप जुझार के हिरदै कीने बै दइ विष की बौल ?
अजर-अमर हरदौल देव हैं, जब तक बहै जमुन जलधारौ,
बने चोतरा, मड़िया लग रये हाते, लै के नाम तुम्हारौ।
अमर प्रेम देवर भौजी कौ, बुन्देलन की बानी कौ,
तेज कभउें न उतरैगो, बुन्देलखण्ड के पानी कौ।
जगदीश्वर हरदौल चरित्र के रस में विष न घोल,
नृप जुझार के हिरदै कीने बै दइ विष की बौल ?

म.प्र. राज्य जैवविविधता बोर्ड,
26 किसान भवन, प्रथम तल,
अरेरा हिल्स, भोपाल

धार्मिक अनुष्ठानों हेतु एक पवित्र जल स्रोत- चौपड़ा

-डॉ. सफ़िया खान

चन्देला एवं बुन्देला वंश के शासकों ने अपने राज्य को हर दृष्टि से समृद्ध बनाने के प्रयास किए। स्थापत्य कला, चित्रकला एवं अन्य सभी प्रकार की ललित कलाओं से सुसज्जित करके इस क्षेत्र को एक अलग पहचान दी जिस पर प्रत्येक बुन्देलखण्डवासी आज गर्व करता है। चन्देलों द्वारा निर्मित खजुराहों के मन्दिर शिल्पकला के आलीशान हस्ताक्षर हैं जबकि उनके द्वारा निर्मित असंख्य देवालय उनकी गौरवशाली गाथा कहते नहीं अघाते। इनका अनुसरण करते हुवे बुन्देला शासकों ने इनके कार्यों को न केवल आगे बढ़ाया बल्कि तकनीक एवं तकनोलोजी की दृष्टि से विकसित भी किया। 1531 ई. में ओरछा में राजधानी स्थापना के पश्चात् राजा मधुकर शाह एवं वीरसिंह जूदेव के समय निर्माण के क्षेत्र में क्रान्तिकारी विस्तार हुवा। एक साथ कई मंदिरों, महलों, किलों, हवेलियों एवं मठों का निर्माण हुआ। चतुर्भुज मंदिर, लक्ष्मी मंदिर, राजमहल एवं रामराजा मंदिर आदि शिल्पकला एवं स्थापत्य कला की दृष्टि से तत्कालीन तकनोलोजी के प्रतिनिधि दस्तावेज हैं। ओरछा का राजमहल एवं जहांगीर महल आलीशन एवं भव्य हैं। जहांगीरमहल वीरसिंह जूदेव द्वारा निर्मित महल का परिमार्जित एवं विकसित रूप है।

बुन्देलखण्ड को सुसज्जित एवं वैभवशाली बनाने में दोनों ही राजवंशों का अद्वितीय एवं अविस्मरणीय योगदान रहा लेकिन कोई भी राजवंश महान कहलाने का अधिकारी तभी होता है जब उसके द्वारा जनहितार्थ किए गए कार्यों की कसौटी पर वह सही उतरता है। इस दृष्टि से जांच करने पर दोनों राजवंश खरे उतरते हैं। जनहितार्थ कार्यों में धार्मिक या आध्यात्मिक एवं भौतिक अर्थात् दैनंदिन आवश्यकताएं सम्मिलित होती हैं जिनमें पीने एवं धार्मिक कार्यों के लिए पानी की पर्याप्त उपलब्धता, सिंचाई की सुचारू व्यवस्था, शुद्ध वातावरण की व्यवस्था एवं बाहरी आक्रमणों से सुरक्षा आदि प्रमुख होते हैं। इन सभी क्षेत्रों में दोनों राजवंशों ने समर्पण भाव से कार्य किए जिसके साक्ष्य बुंदेलखण्ड की धरा पर आज भी दृष्टिगोचर होते हैं।

जल प्रबंधन के मामले में दोनों राजवंशों के शासकों ने असंख्य जलस्रोतों का निर्माण करके नए कीर्तिमान स्थापित किए थे। उनके द्वारा निर्मित बांध, तालाब, कुएं, बावड़ियां एवं चौपड़े आदि आज भी उनकी कीर्ति बयां करते हैं। इसी प्रकार शुद्ध वातावरण हेतु जगह-जगह बाग-बगीचें लगवाए एवं बाहरी आक्रमणों से जनसामान्य की सुरक्षा के लिए शहरपनाह का निर्माण करवाया एवं विशालकाय दरवाजे बनवाए जिनकी सुरक्षा एवं निगरानी के लिए सैनिक टुकड़ियां नियुक्त की गई, ताकि बिना इजाजत के कोई प्रवेश न कर सके।

पूर्व में आए जल-प्रबंधन के बारे में विद्वानों एवं गजेटियर लेखकों ने इन स्रोतों के बारे में बहुत विस्तार से लिखा है। श्री काशी प्रसाद त्रिपाठी ने तो समस्त प्रकार के जलसंग्रहण के माध्यमों के बारे में एक पूरा ग्रन्थ ही लिखा है।[१] इसके अतिरिक्त, श्री हरीविष्णु अवस्थी ने भी काफी विस्तार से अपने एक शोध आलेख में इन साधनों के बारे में वर्णन किया है।[२] इसके अलावा अन्य लेखकों ने भी आलेख लिखकर इस जानकारी को व्यापकता प्रदान की है।[३] लेकिन किसी ने भी जल-संग्रहण के एक साधन का जिक्र तक नहीं किया है सिवाय एक विदेशी स्थापत्य कला के इतिहासज्ञ के।[४] लेकिन उसने भी केवल उसका जिक्र भर किया है उसके निर्माण के उद्देश्य के बारे में उसने अनिश्चितता जाहिर की है। जल-संग्रहण की इस इकाई का नाम है चौपड़ा।

चौपड़ा शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है चौकोर। जल-संग्रहण की ऐसी कोई भी इकाई जो सामान्यत: आकार में चौकोर होती है वह चौपड़ा कहलाती है। मेरा मानना है कि जब सर्वप्रथम इस प्रकार की इकाई बनाने की योजना बनाई गई होगी तब इसका आकार चौकोर रखा गया होगा, जिसके आधार पर इसका नामकरण आकार के आधार पर चौपड़ा हो गया होगा लेकिन बाद में इसके आधार में परिवर्तन होने पर भी यही नाम प्रचलन में रहा होगा।

लेकिन प्रश्न यह उठता है कि जब वर्षा एवं भू-जल के संचय के लिए विभिन्न प्रकार साधन उपलब्ध थे तब एक नवीन प्रकार के माध्यम की क्यों आवश्यकता हुई? चंदेला एवं बुन्देला शासकों ने बड़ी संख्या में तालाब, सागर, कुएं एवं बावड़ियों के निर्माण करवाए जिनमें वर्षा एवं भूमिगत जल का संचय किया जाता था तब चौपड़ा क्यों बनवाया? इसके निर्माताओं की इसके निर्माण के पृष्ठभूमि में क्या उद्देश्य थे? इन उद्देश्यों का अनुमान लगाए बिना इस बारे में पुख्ता तौर पर कुछ कह पाना कठिन होगा।

एलिकी जान्नस एवं जिएन्राइन अयूबोयर ने खजुराहों में अध्ययन के दौरान एक चौपड़ा देखा तब उन्होंने अपने ग्रन्थ 'खजुराहो' में इसके बारे में लिखा कि " यह चित्रगुप्त के उत्तर-पूर्व में स्थित एक छोटा तालाब (जंदा) है। उन्होंने स्मारकों के लिए नियुक्त अधिकारियों के हवाले यह बताया कि इन दो खड़े तलों के अतिरिक्त इस लघु मण्डप पर दो अन्य भी थे।" इस कथन के पश्चात् लेखक द्वय लिखते हैं कि ऐतिहासिक एवं शिलालेखीय अनुपस्थिति में इस बात का अनुमान लगाना खतरनाक होगा कि यह किस उद्देश्य के लिए बनाया गया? यह किसको समर्पित है? किस देवालय या देवालयों से सम्बद्ध है? ये सारे प्रशन अनुत्तरित हैं।

लेखक आगे लिखते हैं कि अगर कोई चौपड़ा तालाब के रास्ते की ओर जाएं तो उसे यह नजर नहीं आएगा क्योंकि यह काफी नीची सतह पर है ऐसा लगता है कि एक गहरा गढ्ढ़ा है लेकिन फिर भी उनके अनुसार देखने योग्य है।

दोनों लेखक ऐतिहासिक एवं शिलालेखों की अनुपस्थिति के कारण से इसके निर्माण के उद्देश्यों, इसके समर्पण एवं देवालय से सम्बद्धता के बारे कुछ कह पाने में असमर्थता प्रकट करते हैं। लेकिन राय इनसे भिन्न है। जल-संचय की यह इकाई ही स्वयं में एक प्रामाणिक साक्ष्य है। परिस्थितियों के पर्यवेक्षण एवं विवेचना के आधार पर इस जल-भवन के निर्माण के उद्देश्यों एवं इसकी सम्बद्धता का एक मोटा अनुमॉन लगाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त एक अन्य मार्ग भी है जिसके माध्यम से भी पता लगाया जा सकता है वह रास्ता है बुन्देलखण्ड के अन्य क्षेत्रों में निर्मित चौपड़ों की जानकारी संकलित करके उनके तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा हम किसी एक सर्वमान्य निष्कर्ष तक पहुंच सकते हैं। चौपड़ों के निर्माण के स्थान,

उसके आसपास निर्मित अन्य प्रकार के भवनों-देवालयों, जलाशयों, बावड़ियों, कुओं एवं महलों आदि की सम्पूर्ण जानकारी संकलित करने के पश्चात एक सुव्यवस्थित अध्ययन किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त एक बाह्य साक्ष्य का भी उपयोग करके किसी निष्कर्ष के समीप पहुंचा जा सकता है। किसी अन्य क्षेत्र में इसी प्रकार जलकुंड या भवन की तुलना इन चौपड़ों से करके निश्चित तौर पर कुछ कहा जा सकता है।

मुझे अपने सर्वेक्षण के दौरान चार चौपड़े देखने को मिले हालांकि संख्या इससे भी अधिक हो सकती है। अब जब इसके महत्व का पता चला है तो मैं और अधिक खोजने का प्रयास करूंगी। अब तक जो मैंने देखे हैं वे निम्न हैं:

खजुराहो का चौपड़ा:

जैसाकि यह ऊपर कहा गया है कि जल-संग्रहण की यह इकाई चित्रगुप्त मंदिर से 200 गज की दूरी पर उत्तर-पूर्व में स्थित है यह एक भूमिगत ढांचा है। जल तक पहुंचने के लिए इसमें चारों तरफसीढ़ियां हैं।इसके मध्य में एक मंडप है जो किसी पवित्र हिन्दू चिन्ह के समान प्रतीत होता है। इसके ऊपर का भाग टूटकर गिर गया है जो मेरे अनुमान के अनुसार शिखरनुमा ढांचा रहा होगा। इस सम्पूर्ण ढांचे की चौड़ाई एवं लम्बाई 16.40 × 16.40 मीटर है जबकि इसमें स्थित की 4.0×4.0 मीटर है।

यह मंदिर परिसर की चारदिवारी से थोड़ी दूरी पर स्थित हैं जैसा कि सर्वविदित है चंदेला शासकों की राजनीतिक राजधानी महोबा थी जबकि खजुराहो को सांस्कृतिक केन्द्र को दर्जा प्राप्त था। इस वंश के शासकों ने यहां मंदिर समूह निर्माण करके तत्कालीन समय में स्थापत्य कला जगत में क्रान्ति का सूत्रपात किया एवं आध्यात्मिक संसार में नवीन चेतना एवं जागृति पैदा की।

महोबा का सूरजकुंड:

महोबा में राहिल्या सागर के समीप जल-संग्रहण इकाई एक स्थित है जो सुरजकुंड के नाम से जाना जाता है जो ग्रेनाईट पत्थर से निर्मित अत्यन्त आकर्षक है। चौकोर आकार धारण किए यह भी एक प्रकार की वेदिका प्रतीत होता है। हालांकि इसको कहते कुंड हैं लेकिन वास्तव में यह भी एक चौपड़ा ही है। इसमें सतह से ऊपर एक या डेढ़ फुट की पत्थर की दीवार है जिसमें प्रवेश के लिए खाली स्थान छोड़ा गया है जिसके दोंनो तरफआले छोड़े गए हैं जहां हो सकता है किसी समय मूर्तियां लगी रहीं होंगी। इसमें पांच या छह तल नीचे की ओर हैं जिसमें उतरने के लिए प्लेटफार्म हैं जिसमें अलग-अलग पत्थर की सीढ़ी हैं जिसके माध्यम से हम नीचे पानी तक पहुंचते हैं। इसमें आज भी पानी है इसलिए इसकी गहराई का अनुमान नहीं लगा पाना कठिन है।

अकौना कुंड(महोबा):

महोबा में एक चौपड़ा और देखने को मिला है जो अकौना कुंड के नाम से जाना जाता है। इसका नामकरण इसके स्थित होने के स्थान अकौना नामक गांव के कारण से पड़ा है। इस इकाई का निर्माण भी चंदेलों के शासनकाल में हुवा प्रतीत होता है लेकिन इसकी परिकल्पना अन्यों से नितान्त भिन्न है। इसके चारों तरफप्लेटफार्म से उठी हुई पत्थर की दीवार बनी हुई है जिसमें ताक हैं। चारों ओर प्लेटफार्म हैं एवं पानी तक पहुंचने के लिए दो ओर सीढ़ियां बनी हुई हैं। इसकी कुल लम्बाई एवं चौड़ाई 20.0 × 16.76 है जिसका तात्पर्य है कि चौरस न होकर आयताकार है। स्थापत्य कला की दृष्टि से भी यह एक साधारण ढांचा है।

पन्ना का चौपड़ा:

पन्ना में एक अत्यन्त सुन्दर बैजू मंदिर है जिसके परिसर में ही जल-संग्रहण यह ढ़ांचा स्थित है जो आकार में चौरस न होकर आयताकार है। पानी तक पहुंचने के लिए एक ओर सीढ़ियां हैं। इस इकाई की एक ओर विशेषता है इसके प्लेटफार्म पर एक हौज या कुआं है जिससे पानी खींचा जाता है।

छारद्वारी(ओरछा)का चौपड़ा:

ओरछा में छारद्वारी में स्थित हनुमान मंदिर के संमीप एक चौपड़ा स्थित है जिसमें आज बिल्कुल पानी नहीं है। यह मान्यता है कि इस देवालय एवं जल-संग्रहण के ढांचे का निर्माण महाराजा झूझार सिंह जूदेव के समय में हुवा था। यह ढांचा खुले मैदान के मध्य में स्थित है। यह अन्य सभी प्रकार के ढांचों से भिन्न है। इसमें पानी तक पहुंचने हेतु एक ओर सीढ़ियां बनाई गई है।

पानी का स्रोत एवं इसकी सम्बद्धता:

यह निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि नहीं था इसलिए भूतल से भी पानी नहीं आता था तो यह जानना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है कि इसमें पानी कहां से आता था। यह सोचना भी व्यर्थ ही नहीं बल्कि अनैतिहासिक भी होगा कि इसमें पानी ऊपर से डाला जाता था। तत्कालीन समय में यह कल्पना से परे की बात थी। मैंने अपने सर्वेक्षण के दौरान इनके निर्माण के स्थान या इसकी अवस्थिति की पारिस्थितिक जांच करने का प्रयास किया अर्थात् उसके आसपास के क्षेत्र में कितने प्रकार के जल-संग्रहण के साधन हैं। इसकी पुष्टि एक दो उदाहरणों से की जा सकती है। सर्वप्रथम खजुराहो को लिया जा सकता है। चन्देलों ने अपनी सांस्कृतिक राजधानी में पर्याप्त जल आपूर्ति हेतु कई विशालकाय तालाबों के निर्माण करवाए जिनमें मुख्य थे - शिवसागर, निनौरा तालाब, थनेराताल एवं देवधर आदि। इन विशालकाय तालाबों के निर्माण से क्षेत्र के भूजल स्तर में कापी बढ़ोतरी हुई। पानी सतह के समीप आ गया। इसी प्रकार इसी वंश के शासकों ने अपने राज्य की राजधानी महोबा में भी कई जलाशयों का निर्माण करवाया जिनमें मुख्य थे: राहिल्या सागर, विजय सागर, मदन सागर, कीरतसागर, दिसरापुर सागर एवं कल्याणसागर आदि। इन जलाशयों के अतिरिक्त कुओं एवं बावड़ियों का भी निर्माण हुवा। इनके निर्माण से खजुराहो के समान यहां का भूजल स्तर भी सतह से कापी समीप आ गया। ऐसा सभी स्थानों पर निर्मित चौपड़ों या कुंडों की स्थितियां रहीं होगीं।

इन चौपड़ों का न तो कोई जलआवक क्षेत्र नहीं था और नहीं वे किसी नदी नाले से जुड़े थे जिनसे इनमें पानी आ सके तो फिर इसमें पानी आने के स्रोत के बारे में प्रश्न उठना स्वाभाविक है। इन सब जल-इकाईयों में तालाबों, झीलों, बांधों एवं बावड़ियों से रिसा भूतल का पानी आता था। राजस्थान के जोधपुर में झालरा इसी प्रकार का जल-कुंड या जिसमें भूतल से रिसकर पानी आता था।[५] यह एक अजीब तकनीक थी कि इन जलाशयों के रिसाव के पानी को इस

प्रकार के चौपड़ों या कुंडों में एकत्रित करना जल के उपयोग का बेहतरीन उदाहरण कहा जा सकता है। इसके अतिरिक्त आसमान से बरसती बूंद के माध्यम से भी इसमें पानी आता था लेकिन यह नगण्य था।

यहां इस जिज्ञासा का उठना भी स्वाभाविक है कि इस प्रकार के जलसंग्रहण का उद्देश्य क्या रहा होगा? इसके लिए यह अनुमान लगाया जा सकता है भूतल से आए पानी को सम्भवत: रिस कर अधिक पवित्र माना जाता रहा होगा जिसे धार्मिक अनुष्ठानों एवं पूजा अर्चना के लिए उत्तम मानने का विश्वास एवं धारणा रही होगी। यही कारण है कि ये मंदिरों के सम्बद्ध हुवा करते थे अर्थात् उनके समीप ही अवस्थित होते थे। मेरे इस अनुमान से विद्वानों की असहमति हो सकती है। लेकिन मैं अपने अनुमान की पुष्टि के प्रमाण तलाशती रहूंगी।

संदर्भ-

1. काशी प्रसाद त्रिपाठी, बुन्देलखण्ड के तालाबों एवं जलप्रबन्धन का इतिहास, नई दिल्ली
2. हरीविष्णु अवस्थी, 'बुन्देलखण्ड में जल प्रबंधन की परम्परा', जूनी ख्यात, अंक 1 (15) 2011 श्रीडूंगरगढ़ पृ. 23-51
3. सफिया खान, 'पूर्व उपनिवेशकालीन बुन्देलखण्ड में जल-संरक्षण: एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण', संधान 7-8 पृ. 133-39; अन्य आलेखों के लिए संधान-7 देखें।
4. एलिकी जन्नास एवं जीएन्राइन अयूबोथर, खजुराहो, द हेग, 1960
5. डाईंग विजडम, अनिल अग्रवाल एवं सुनिता नारायण, दिल्ली, 2005, पृ. 124

-ओरछा, जिला-टीकमगढ़ (म.प्र.)

काय परलोक बिगारो

-मुक्ता प्रसाद गुप्त 'रत्नेश'

भइया काये बिटिया मारो, काय बनें हत्यारौ।
हत्या करबौ महापाप है, वेदन माँहि उचारौ।।
बिटिया होत सदा हितकारी, निज हिय जाकों धारो।
बेटा से बेटी शुभकारी, दोए कुल करत उजारौ।।
भ्रूण हत्या न करो कराओ, मानों कहौ हमारौ।
मूरख के सँग मत बन मूरख, मत निठुराई धारो।।
बुरे कामहि मत बनो सहायक, धूर्तन कौ धुतकारो
डटकर विरोध करो सवला बन का कर पती तुम्हारौ।।
रणचँडी तू बनजा अवला व्यर्थन न असुँआ ठारो।
सवला बनकर तू दिखलादे, रक्षक वंशी बारौ।
मत अपनी तुम शक्ति हटाओ, नारि नारि मत मारो।।
बिटिया न हो कैसे जग चलिहै, जाकों मनहि बिचारों।
मध्यप्रदेश को लोकप्रिय शासन, बिटियन देत सहारो।।
अब न बोझ रहेगी बिटिया, गूँज रहो नभ नारो।
करत लाडली लक्ष्मी योजना, घरन घरन उजियारो
कँय रत्नेश पतित मत होरे, काय परलोक बिगारो

-आलमपुर जिला-भिण्ड (म.प्र.)

कोख की पुकार

डॉ. कृपालु वर्मा

तिल तिल रात खौफ में बीती , भानु उदय भओ भुंसारो
रोय रोय बिटिया कोख में बिलखे , पापा मोको ना मारो
मेरी नानी की बिटिया गर ,इस दुनिया में ना होती
तो तुमरे घर आँगन में भी, खुशहाली कैसे होती
कहाँ से आस लगाते पापा , पुत्र प्राप्ति के लाने
अम्मा तुमरी पूजती पथरा, तुमाय ब्याव के लाने
कथा भागवत कहूँ पै करती, खोटती कहूँ जवारो
रोय रोय बिटिया कोंख में बिलखे, पापा मोको ना मारो....1

सोचो पापा सास तुमारी गर , बिटिया मरवा देती
यही सोच हर माँ रखती तो , बंजर हो जाती खेती
कैसे सजती मौर शीश पै , कैसे तुम दूल्हा बनते
करते किससे ब्याह और , किस द्वारे रमतूला बजते
हर बिटिया जननी होती है , कहाँ गओ ज्ञान तुमारो
रोय रोय बिटिया कोख में बिलखे, पापा मोको ना मारो....2

आज पुत्र के भूत तुमारे सिर , चढ़ कर के बोल रहे
वृद्धापन में दैहैं आसरे , ऐसे सपने तौल रहे
हमहु तुमे सहारो दैहै , गरे डार गलबहियाँ
सोच त्याग दो हमें जनम दो , मेरी प्यारी मैया
चौका बर्तन सबई करहैं , झार है रोज दुआरो
रोय रोय बिटिया कोख में बिलखे , पापा मोको ना मारो....3

भईया घर को उजयारो तो , मैं रौनक आँगन की
दीवाली को दीप भ्रात तो , मै राखी सावन की
मरे में पानी दे पुरखन को , जिन्दा में भूकन मारे
जबई आसरे लायक हो गये , लै बहुअन हो गये न्यारे
हम सेवा जी जान से करहैं , मानो कहो हमारो
रोय रोय बिटिया कोख में बिलखे , पापा मोको ना मारो....4

अरज हमारी सुन मैया मोय , और कछु है नई केने
भइया की जैजाद से मोको , फूटी कोड़ी नई लेने
हाथ उठा के जो दै दैहो , बाई हमारो हिस्सा
दादी से सुन लिया करूंगी, परियों वाला किस्सा
घर के सबरे काम काज में , दैहो तुमे सहारो
रोय रोय बिटिया कोख में बिलखे , पापा मोको ना मारो....5

मैं ना रही फिर किसका तुम , कन्या दान करोगे
बोलो फिर किस मान्य पक्ष का , तुम सम्मान करोगे
इस सुन्दर सी कायनात की , मै ही स्रष्टि अचल हूँ
आसमान से नहीं गिरी , तुम दोनों का प्रतिफल हूँ
बिधि रचो विधान पिताजी, उको नाई बिगारो
रोय रोय बिटिया कोख में बिलखे , पापा मोको ना मारो....6

-नया रामनगर, उरई, जिला-जालौन (उ.प्र.)
मो. ९५९८४७७३९५

एक अज्ञात रचना जो दृष्टकूट दोहों से युक्त है

-मनमोहन पाण्डेय

संस्कृत के उद्‌भट विद्वानों एवं सरस्वती के वरद पुत्रों की नगरी बिजावर में साहित्य का प्रचुर भंडार अप्रकाशित है। इस अमूल्य संग्रह में पैंतीस दोहों की एक छोटी सी रचना प्रस्तुत कर रहा हूँ। महाकवि सूरदास जी के दृष्टकूट पदों की शैली में निम्नलिखित दोहे भी विद्वानों की विद्वता को झकझोरते हैं। प्रस्तुत अट्ठाईस मात्र उत्तर लिख रहा हूँ। कुछ दोहों के अर्थ जो अस्पष्ट एवं दुरुह हैं उन्हें विद्वान पाठक स्वयं प्राप्त करने का प्रयास करें। कवि का नाम एवं जन्म स्थान अज्ञात है, हो सकता है दृष्टकूट दोहों में निहित हो।

1. बन्दहुँ श्री गुरुवर विमल रामचन्द्र धरध्यान।
वाणी वीणाधारणी, बसहु कंठ में आन।।1।।

2. पुनि बन्दहु संकट हरन, पवन तनय बलधाम।
भक्त शिरोमणि, शान्तिवर, रामदूत अभिराम।।2।।

3. रच पेंतीसी दुख दलन, सुफल करहु कपिनाथ
मुहि अधार इक रावरो, विनवहुँ पद धर माथ।।3।।

4. वर माँगत वर पै गई वर पाये तत्काल।
वर पाये वेवर भई, कहु सखि कौन हवाल।।4।।
उत्तर-कैकयी

5. भूमि वसन रिपु शब्द सुनि, गयो कंथ तज मोय।
रवि सुत वाहन तासु रिपु भोर मिलाउँ तोय।।5।।
उत्तर-अहिल्या का इन्द्र के प्रतिवचन

6. पैल लाल पीछे हरौ, फेर लाल जो होय।
सौ हमको पठवाइयौ, देस तुमारे होय।।6।।
उत्तर-अनार

7. चार चरन आधी भुजा, जाके अंग न शीश
ताकौ वाहन भेजिये, यही बड़ी बकसीस।।7।।
उत्तर-मोटरकार

8. पाँच पुरुष की नायिका, आठ नार कौ कंत।
ता विच हमको राखियो, तौ तुम पूरे संत।।8।।
उत्तर-मन एवं आत्मा का समन्वय

9. निसि दिन पानी में रहैं, नहीं हाड़-उर मास
काम करै तरवार कौ, फिर पानी में बासउ।।9।।
उत्तर -गोंच

10. पतिवरता पति सँग परी, पतिवरता है सोइ।
एक छोड़ सोरा करै पूर पतीव्रत सोइ।।10।।
उत्तर-सेर की 16 छटाकें

11. आठ नयन दस चरन हैं पाँच शीश जिव चार।
आठ पाँव के चलत हैं, पंडित लेव विचार।।11।।
उत्तर-अरथी

12. सिवसुत माता नाम के अक्षर चार सुदेस।
मध्य के अक्षर छोड़के भेजा करौ हमेस।।12।।
उत्तरपाती-

13. दाता दानी शूर कवि, मंत्री वैद्य निधान।
ये नौ निर्भय चाहिये, जामन,जुवा,किसान।।13।।

14. शिव सुतवाहन बैठके, चली पिया के भौन।
रवि सुत वाहन देखकें, भगी सो कारन कौन।।14।।

15. ज्यों मीड़ त्यौं त्यौं तुरिय, बिन मीड़ें ना जाय।
अरे राम जौ का भओ, देखत भीतर गओ।।15।।
उत्तर-सुई डोरा

16. हथयारन जैसो लगे ये अक्षर वाके तीन।
आदि कौ अक्षर छोड़के, व्याह राम को दीन।।16।।
उत्तर-सिया

17. शंकर के सिंगार में चार वर्ण गिन लेव।
दो अक्षर को छोड़ के, हमें कृपाकर देव।।17।।
उत्तर-पत्र

18. ब्रह्मा घोड़ा हरि खुरी, बासुक कसे पलान।
चंदा सूरज पावड़े चढ़ गओ चतुर सुजान।।18।।
उत्तर-अज्ञात पखवाड़ा हो सकता है।

19. चूक गई कुबला गिरी, नहीं सहारौ कोय।
ज्यों ज्यों भीजै कामरी, त्यों त्यों भारी होय।।19।।

20. असन बसन दृग तज दियौ, नहि सरीर कौ चाम।
जब तन बेतन खाँ तजौ, क्यों न तजै सुत बाम।।20।

21. दीर्घि सुत सुत के दस दये, मोती सुत के बीस।
दूजा भृगु ने ना दई कहों देंव बकसीस।।21।।

22. क्षीर सिंधु के भवन में युगल चरन कौ बास।
तासुत, तासुत, तासुता ता में करत निवास।।22।।

23. अहि अबला की एक गति, अहि से कहिन अहीर।
अहिक जात वाचा बँधे, वाचा करै अहीर।।23।।
उत्तर-अहीर केवल वादा करता है।

24. बात गई सो सब गयो, धोये ना काजर जाय।
रेख लगी सो लग गई, जनम जिंदगी राय।।24।।
उत्तर-कलंक का दाग नहीं छूटता

25. तनकी शोभा वस्त्र है, मुखकी शोभा पान।
घर की शोभा कामिनी, जग की शोभा भान।।25।।

26. अजा सहेली तासु सुत, ता जननी भरतार।
ता पत्नी के बंधु बिन सूनो सब संसार।।26।।

27. मान सरोवर में रहे जड़ चेतन दो जीव।
आदि अनको तरन कौ मध्य नाव तुलसीप।।27।।

28. कोंड़ी से हीरा भये, हीरा से भये लाल।
आधे भक्त कबीर है, पूरे भक्त कमाल।।28।।

नोट- जिन दोहों के उत्तर नहीं दिये गये हैं, वे पाण्डुलिपि में अस्पष्ट व अज्ञात हैं।

-मऊ चुंगी नाका, सुधा सागर रोड
टीकमगढ़ (म.प्र.)
फोन नं. 9425877388

बुन्देलखण्ड में धर्म का स्वरूप

-डॉ. श्रीमती प्रमोद पाठक
डॉ. पुष्पा दुबे रावत

बुंदेलखण्ड में वैष्णव, शैव, बौद्ध जैन, शाक्त आदि विविध धर्म प्रचलित रहे। बुंदेलखण्ड अनेक धर्म प्रचलित रहे, किंतु लोक धर्म का स्वरूप अपना विलग महत्व रखता है जो लोक से उत्पन्न होता है। वह किस सम्प्रदाय या धर्म में बंधा नहीं रहता वरन् विविध धर्मो के आत्मसात करता हुआ अपने स्वरूप का निर्धारण कर लेता है और यही लोक धर्म कालांतर में संस्कृति एवं सभ्यता के निर्माण बीज बिन्दु का कार्य रहता है। लोक हित या लोक उपयोगिता लोक धर्म का मानदण्ड है। जो लोक के लिए उपयोगी है लोक में कोंपल की तरह फूट पड़ता है जो अनुपयोगी है वह पीले पत्ते की तरह झड़ जाता है। लोक धर्म को न तो कोई स्थापित करता है और न कोई संचालित उसके न कोई धर्मग्रंथ होते है न कोई धर्माभिलेख/लोकधर्म लोकहित के लिए लोक से उत्पन्न लोक मान्य धर्म है। लोक की आस्था विश्वास और मान्यता पर ही लोक में जीवित रहता है वही लोक की आत्मा है और लोक संस्कृति का अंतरंग भी वही है।

सामूहिकता और समन्वय इस लोकधर्म की सबसे बड़ी शक्ति है। मनुष्य की चेतना के विकास के साथ लोक धर्मो के स्वरूप का निर्धारण आरंभ हो गया था क्योंकि मनुष्य समूह में रहता था इसलिये धर्म का निर्धारण में समूह के अनुरूप हुआ कालांतर में एक समूह कई समूहों से जुड़े तब लोक धर्म का स्वरूप वृहद आकार लेने लगा।

प्राचीन ग्रंथों से साक्ष्य मिलते है कि रामायन काल तक बुंदेलखण्ड आर्येतर पुलिंदों, निषादों शबरों आदि आदिवासियों का निवास स्थान रहा है। इस कारण इस प्रदेश में लोकधर्म में इन वन्य जातियों की धार्मिक मान्यताओं का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। गुफा-युग में धर्म सामुदायिक का उनके आध्यात्मिक न होकर जागतिक थे। उनकी आराधना का उद्देश्य विपदाओं से रक्षा एवं सांसरिक सुखों की प्राप्ति था। उसकी उपयोगिता ही देवत्व की कसौटी थी। आग जलाकर चारों ओर घेरा बनाकर नाचना जाना मानो अग्नि को प्रसन्न करना था। इसी तरह गुफाओं में अपने मन की कोई आकृति या चित्र बनाकर उसे रक्षा का प्रतीक मान लेना था। गुफाओं में इस तरह के विचित्र मानवी चित्र मिले हैं जो देवत्व की प्राचीनतम अवधारणा के प्रमाण लगते है।

नदी घाटी सभ्यता के विकास के साथ कृषि युग का आंरभ हुआ पशुपालन की प्रथा उपयोगिता की दृष्टि से बढ़ी इस समय विपत्तियों से बचाने के लिये जल, नदी तथा यक्षादि की देवत्व मिली। इस जनपद की आदिम जातियों शकर और पुलिंद देशभक्त थी। चूदेवी की पूजा इस समय प्रचलित हुई। जातकों में वर्जित भूत-प्रेत तंत्रमंत्र जादू-टोना भी इसी युग की देन है।

कालांचर में आर्यो की आश्रमी संस्कृति और वैदिक धर्म का प्रवेश वन्य जातियों के लोकधर्म के लिए एक महत्वपूर्ण घटना थी। राम की चित्रकूट यात्रा के पहले यहां वैदिक धर्म के प्रतिष्ठा पर आचार्य कृषि चरनों के द्वारा धार्मिक मूल्यों का प्रसार करने लगे थे। दक्षिण की जातियां उनसे विरोध मानती थी उत्तरांचल से ब्राम्हण क्षत्रिय वैश्य दलों ने धीरे-धीरे बसना शुरू कर दिया। इस प्रक्रिया में वैदिक देवता और मान्यताएं लोक में घुलमिल गई। आर्यो के श्रेष्ठ देवता इन्द्र आँधी, तूफान, वर्षा, बिजली के देवता होने के कारण लोक देवता बनवाएं।

कालांतर में यक्ष की पूजा इन्द्र की भांति इस अंचल में प्रचलित हुई भरहुत के प्राचीन शुंग कालीन स्तूप में अंकित यक्ष नागकालीन मूर्तियों से स्पष्ट होता है कि इस जनपद में ईशा की पांचवी यदी तक यक्षर पूजा प्रचलित रही।

ईसा की 10वी, 11वी शती में 'गोटें' अहीर और गूजरों के विशिष्ट लोकगीत प्रचलित हुए उनमें चबूतरों में त्रिभुजाकार की मढ़िया और आसपास शिव की बटैया स्थापित होने लगी जिसे शैव धर्म की प्रतिष्ठा के प्रमाण मिलते है। इसी समय लोकदेवी देवताओं के रूप में मरई माता, खेर माता, शीतला माता भुइयां रानी, शीतजा माता, जल अग्नि, सूर्य, भैरव इष्ट देव, नागदेव, महादेव के रूप में पूजे जाने लगे।

नागों और वाकाटको ने लगभग 600 वर्षो तक शिव और उनके मंडल नाग थे। उनकी आराधना का उद्देश्य विपदाओं से रक्षा एवं सांसरिक सुखों की प्राप्ति था। उसकी उपयोगिता ही देवत्व की कसौटी थी। आग जलाकर चारों ओर घेरा बनाकर नाचना जाना मानो अग्नि को प्रसन्न करना था। इसी तरह गुफाओं में अपने मन की कोई आकृति या चित्र बनाकर उसे रक्षा का प्रतीक मान लेना था। गुफाओं में इस तरह के विचित्र-मानवी चित्र मिले हैं जो देवत्व की प्राचीनतम अवधारणा के प्रमाण लगते है।

नदी घाटी सभ्यता के विकास के साथ कृषि युग का आंरभ हुआ पशुपालन की प्रथा उपयोगिता की दृष्टि से बढ़ी इस समय विपत्तियों से बचाने के लिये जल, नदी तथा यक्षादि की देवत्व मिली। इस जनपद की आदिम जातियों शकर और पुलिंद देशभक्त थी। चूदेवी की पूजा इस समय प्रचलित हुई। जातकों में वर्जित भूत-प्रेत तंत्रमंत्र जादू-टोना भी इसी युग की देन है।

कालांतर में आर्यो की आश्रमी संस्कृति और वैदिक धर्म का प्रवेश वन्य जातियों के लोकधर्म के लिए एक महत्वपूर्ण घटना थी। राम की चित्रकूट यात्रा के पहले यहां वैदिक धर्म के प्रतिष्ठा पर आचार्य कृषि चरनों के द्वारा धार्मिक मूल्यों का प्रसार करने लगे थे। दक्षिण की जातियां उनसे विरोध मानती थी उत्तरांचल से ब्राम्हण क्षत्रिय वैश्य दलों ने धीरे-धीरे बसना शुरू कर दिया। इस प्रक्रिया में वैदिक देवता और मान्यताएं लोक में घुलमिल गई। आर्यो के श्रेष्ठ देवता इन्द्र आँधी, तूफान, वर्षा, बिजली के देवता होने के कारण लोक देवता बनवाएं।

कालांतर में यक्ष की पूजा इन्द्र की भांति इस अंचल में प्रचलित हुई भरहुत के प्राचीन शुंग कालीन स्तूप में अंकित यक्ष नागकालीन मूर्तियों से स्पष्ट होता है कि इस जनपद में ईशा की पांचवी यदी तक यक्षर पूजा प्रचलित रही।

ईसा की 10वी, 11वी शती में 'गोटें' अहीर और गूजरों के विशिष्ट लोकगीत प्रचलित हुए उनमें चबूतरों में त्रिभुजाकार की मढ़िया और आसपास शिव की बटैया स्थापित होने लगी जिसे शैव धर्म की प्रतिष्ठा के प्रमाण मिलते है। इसी समय लोकदेवी देवताओं के

रूप में मरई माता, खेर माता, शीतला माता भुइयां रानी, शीतजा माता, जल अग्नि, सूर्य, भैरव इष्ट देव, नागदेव, महादेव के रूप में पूजे जाने लगे।

नागों और वाकाटको ने लगभग 600 वर्षों तक शिव और उनके मंडल नाग ने रामकृष्ण, शिव, देवी, हनुमान का महत्व एकरूप होकर बना रहा।

राम की उपासना ने समाज में नया आदर्श स्थापित किया जिसका प्रमुख आधार बना तुलसी का रामचरित मानस। लोक जीवन में राम और कृष्ण देवी-देवता घुल मिल गए लोकगीत उस समय में प्रमाण है। हरदौल और दूल्हादेव की स्थापना इस समय बुंदेलखण्ड में प्रतिष्ठित हुए हरदौल वीरता और उदस्त प्रेम के प्रतीक बनकर प्रतिष्ठित हुए वही दूल्हादेव विवाह के वरदाता के रूप में पूजे गए। सती चबूतरे पति-पत्नि के पवित्र प्रेम के प्रतीक बनें।

मध्य भाग में भक्ति दो तरह की रही एक व्यक्ति केन्द्रित जिसमें अपने परिवार, पति, संतान, धन संपत्ति की भावना रहती है। दूसरे वंश जाति, समाज, गांव और देश कल्याण से जुड़ी होती है। व्यक्तिगत धर्म के लिए गणगौर, बटसावित्री, ससमी, भाई दोज, मकर संक्रांति आदि समाज के लिए कुल देवता कारसदेव, खेरे की देवी, दशहरा होली, कुइयां रानी आदि। इस समय उपासना की विधियां पुरानी की कुछ नई रीतियां भी जुड़ी। पत्र, पुष्प, नारियल चढ़ाकर पूजा की पूर्णता होती है। वही पुरोहितों ने वैदिक कर्मकांड पद्यतियों को अपनाया। उत्तरमध्य युग में लोकधर्म पतनशील हो गया। भाग्य पर भरोसा रखने के कारण लोक चेतना का ह्रास हुआ।

1840 ई. में बुंदेलखण्ड में आजादी के लिए संघर्ष आरंभ हुआ। जैतपुर के राजा पारीछत ने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई आरंभ की। पारीक्षत के असफल होने पर 1942 में सागर जिले में विद्रोह की आग भड़क उठी। 1840 ई. से 1857 ई. तक हरबोलों ने वीर रस परक गाथाएं गा-गाकर जनता में संघर्ष के लिए तैयार किया और 1857 की लड़ाई ने लोक चेतना ही बदल दी। इस समय लोकधर्मी दृष्टि इतनी व्यापक हो गई कि हिन्दू-मुसलमान भेदभाव भूलकर देश की आजादी के लिए एक साथ लड़े।

इस समय ब्रम्ह समाज के संस्थापक राजाराम मोहन राय ने सभी जातियों को पूजा करने का अधिकार देने की बात कही। स्वामी दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना कर समाज को कर्मकांड और अंध विश्वासों से बाहर निकालकर ज्ञान को महत्व दिया। स्वामी विवेकानंद ने शिकागो के सर्वधर्म सम्मेलन में हिन्दूधर्म पर अद्वितीय भाषण देकर भारत के रमन विज्ञान की श्रेष्ठता सिद्ध कर दी। और रामकृष्ण मिशन की स्थापना कर मानव धर्म का संदेश दिया। लोककवि ने यहां लोकधर्म का संदेश दिया।

दीपक दया धरम कौ जारौ, सदा रात उजियारौ
धरम करै बिन करम खुलैना, बिना कुची ज्यों तारौ।

समूचे बुंदेलखण्ड पर इस चेतना का प्रभाव पड़ा और मानवधर्म की श्रेष्ठता सिद्ध हो गई। कर्मकांड का महत्व कम हुआ।

बीसवीं शती के चौथे दशक से पुनः परिवर्तन दिखाई देता है। आजादी की दूसरी लड़ाई इस समय लोगों में संघर्ष की ऊर्जा देती है तो वही अंग्रेजों, सामंतों और उनके कारिंदों का भय लोगों के उत्साह को कम करता है। फिर भी ''भैया ई सुराज के लाने तन-मन से लग जानें।'' से स्पष्ट होता है कि स्वराज प्राप्ति के लिए कृत संकल्पित हुए। लोक धर्म में कर्मकांडों के स्थान पर बौद्धिकता आई। लोक धर्म परिवर्तनशील है। आज बुंदेलखण्ड में एक तरह भागवत धर्म की प्रतिष्ठा हो रही है तो वही मानस में निर्धारित जीवन मूल्यों की विजय दिखाई देती है। फिर भी पहले की अपेक्षा कर्मकांड की प्रतिष्ठा वैदिक धर्म के अनुसरण पर हो रही है। सामूहिकता केवल राजनैतिक स्तर पर दिखाई देती है। वैयक्तिक स्तर पर परिवार टूट रहे है। जीवन मूल्यों के स्थान पर खोखला और दिखावापन अधिक प्रश्रय पा रहा है। अर्थ की प्रधानता ने स्वार्थ परायणता को प्रबल किया है, इसलिये धर्म का अनुसरण सामूहिक होते हुए भी वैयक्तिक होता जा रहा है।

संदर्भ ग्रंथ:-

1. बुंदेलखण्ड की लोक संस्कृति का इतिहास
2. चंदेल और उनका राजत्वकाल
3. बुंदेलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास पं. गोरेलाल तिवारी
4. हरबोलों की कविताई डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त

-नरसिंहगढपुरवा, छतरपुर (म.प्र.)

खजराहो जाहर भओ

-आचार्य भगवत दुबे

खजराहो जाहर भओ, रति-अनंग कौ गाँव
शंभु जटाशंकर दयें, छतरपुर में छाँव
चन्देले राजा रये, मूर्तिकला मर्मज्ञ
जिनने आमंत्रित करें, कलाकार सर्वज्ञ
अद्भुत है रति-मदन के, शिल्पित काम प्रसंग
देखनवारो खों मथै, मन में धँसे अनंग
खजराहो में रति-मदन, रय संभोग निमग्न
कर दई औरंगजेब ने, वे समाधियां भग्न
देख इतै के शिल्प खें, चकित होय संसार
खजराहो में धर दओ, मानो स्वर्ग उतार
इतइ मतंगीसुर रयें, बाँकों है शिवपिण्ड
खजराहो कौ विश्व में, ऊँचौ है शिवलिंग
टीकमगढ़ के पास है, अछरु कौ दरबार
अश्रु वहां शाकाम्बरी, बैठी रूप सँवार
जहाँ रामराज बसैं, राजमहल के पास
देत सलामी ओरछा, प्रभु राजा खें खास
प्रभुवर राजा राम खें, देत नरेश सलाम
देत सलामी तोप की, प्रभु खें करन प्रणाम
चन्देलों को राज रओ, शिल्पकला सम्पन्न
खजराहो के जौड़ कौ, दिखै न मंदिर अन्न
काव्य, शिल्प, साहित्य की, उन्नति भई अपार
बुन्देलों के राज्य में, भव वैभव विस्तार

पिसनहारी-मढ़िया के पास
जबलपुर (म.प्र.) 482003 म.प्र.
मो. 9300613975

हमारी दीवानगी के शिकार ईसुरी

-पं. गुणसागर ' सत्यार्थी '

बेशक ईसुरी हमारी बहुमूल्य विरासत है, अस्मिता है। ईसुरी ने अति प्राचीन भाषा बुन्देली को गौरवान्वित किया है। ऐसे बुन्देली के महाप्राण ईसुरी पर हमें गर्व है, जो होना ही चाहिये। पर खेदजनक स्थिति यह बन गई है कि ईसुरी के प्रति हमारी आज सिर्फ दिवानगी ही यत्र-तत्र-सर्वत्र बिखरी-बिखरी पड़ी है। ईसुरी का यथार्थ जानना हमारे लिये गैर जरूरी हो गया है। ईसुरी का यथार्थ उनकी जीवनी में, उनकी कर्म भूमि के परिवेश में और उनके समय की देश-काल परिस्थितियों में गहरे धस कर ही समझा जा सकता है। लगभग एक सौ वर्ष पूर्व सन् 1909 ई. में ईसुरी लम्बी बीमारी के कारण अपनी पुत्री गुरन की ससुराल-वर्तमान महोबा जिले के धवार नामक ग्राम में दिवंगत हुये। यह कोई लम्बा समय नहीं है, फिर भी ईसुरी की जन्म तिथि के बारे में हमारे विद्वान एकमत नहीं रहे-

1. बाबू कृष्णानन्द गुप्त ने ईसुरी का जन्म 1891 विक्रमी लिखा है।
2. पं. गौरीशंकर द्विवेदी ने 1881 विक्रमी लिखा।
3. पं. श्यामसुन्दर बादल ने 1896 विक्रमी लिखा।
4. प्रो. श्री चन्द्र जैन ईसुरी का जन्म 1895 विक्रमी लिख गए। और
5. मिश्र बन्धुओं ने तो 1920 विक्रमी लिखा है।

इसका कारण यह है कि शोध के नाम पर सभी ने घर बैठे टेबिल वर्क ही किया है। औरछेश महाराजा वीरसिंह जू (द्वितीय) के खर्चे पर ईसुरी की फागों का संकलन टीकमगढ़ में बैठकर किया गया। ईसुरी की जन्मभूमि मऊरानीपुर के निकट मैढ़की नामक ग्राम है। उस समय आवागमन की सुविधा से मऊरानीपुर का क्षेत्र ही टीकमगढ़ के लिये सुविधाजनक था। अत: पैसे के लालच में मऊरानीपुर क्षेत्र जो अपने समय में फड़बाजी के लिये प्रसिद्ध था, वहीं के फगुवारे अनपढ़ ग्रामीणों ने टीकमगढ़ पहुँच कर जैसा जो अन्दाज से बता दिया वैसा ही लिख दिया गया। उसे प्रमाणित नहीं माना जा सकता। चूँकि ईसुरी की फागों लिखवाने के लिये उन्हे पैसा दिया जाता था इस लिये ज्यादातर फागें उन्होंने स्वयं पढ़कर ईसुरी के नाम की छाप लगा लगाकर लिखवाई है। यह मैं इस आधार पर कह रहा हूँ कि ईसुरी के जन्म के साथ उनकी माँ श्रीमती गंगा सिधार गई और कुछ ही दिन बाद पिता भोले अड़जरिया तिवारी भी सिधार गये। शैशवकाल में ही ईसुरी वर्तमान महोबा जिले के ग्राम लुहरगुंवाँ कौनियां अपने मामा पं. भूधर नायक के यहां पहुँच गये थे। मामाजी ने ही उन्हें पाला-पोसा, पढ़ाया-लिखाया, और बाल्यावस्था में ही नौगांव छावनी के निकट ग्राम सीगोन में उनका विवाह कर दिया था। मऊरानीपुर और लुहरगुवां-कौनिया के बीच धसान नदी बहती है। धसान नदी को पार करते ही मऊरानीपुर क्षेत्र की भाषा एकदम बदल जाती है। ईसुरी जन मऊरानीपुर के क्षेत्र में रहे ही नहीं तो वहां की भाषा की छाया भी उनकी फागों मे पड़ना संभव न था। जबकि टीकमगढ़ में संकलित फागों मे ज्यादातर फागों पर सिर्फ मऊरानीपुर क्षेत्र की ही भाषा का प्रभाव है और वे सारी की सारी फागें केवल फड़बाजी से संबंधित भी है। जबकि ईसुरी का फड़बाजी से किंचित संबंध नहीं रहा।

आज मऊरानीपुर क्षेत्र के लोग यह कह सकते है कि ईसुरी मैढ़की से शैशव काल में चले जरूर गये थे। परन्तु बाद में वे यहाँ बराबर आते जाते रहे थे और उनका संबंध पूरी तरह से विच्छेद नहीं हुआ था। इस प्रकार के कथन को सही इसलिये नहीं माना जा सकता है कि उस समय में तो जिस गांव में लड़की का विवाह होता था उस गांव का पानी तक मायके वाले नहीं पीते थे। तन वृद्धावस्था में जन ईसुरी एकदम असाध्य हो गये और बीमारी ने उन्हें झकझोर कर रख दिया तब वे अपनी जन्म भूमि मेंढ़की अथवा बाल्यकाल की क्रीड़ा भूमि लुहरगुवाँ-कौनियां क्यों नही गये ? यदि उनका अपना कोई यहाँ था और उनका वहाँ आना-जाना रहा होता तो अवश्य वे वहाँ जाते। वे तो मजबूरी मे धवार गए और अगहन बदी सप्तमी1966 विक्रमी 1909 ई. को दिवंगत हुये।

दीवानगी के कारण ईसुरी की जीवनी के साथ छेड़ छाड़ की गई और उनकी फागों में मिलावट की गई। तब निश्चित ही यह कहा जा सकता हैकि ईसुरी आज हमारी दीवानगी के शिकार होकर बुन्देली के महाप्राण कवि से फड़नाज होकर रह गये है। दीवानगी में मिलावट की हद हो गई कि उन्हें ऐसी नकली फागें रचकर स्वतंत्रता आन्दोलन का राष्ट्रीय कवि तक बना दिया है ? हाल ही में ऐसी ही एक महत्वाकांक्षी पुस्तक "नीके बोल बुन्देली के" मेरे दृष्टि पथ में आई है। इस पुस्तक के पृष्ठ क्रं 85 से 89 तक के पृष्ठों पर बुन्देलखण्डी ग्रामीण बोली मे लिखा आलेख- *"ईसुरी की फागन के दो रंग"* पढ़ा इसके लेखक है- *श्री प्रेमप्रकाश चौबे कुरवाई, विदिशा (म.प्र.)* इस लेख में लेखक ने लिखा- "एक जगाँ हमने पढ़ौ तो, एक गुनीजन लिख रये ते कै ईसुरी ने अंग्रेजन के बारे में कछू जादां नई कई। सो जा साँसी नौईं हमें एक मऊरानीपुर के बुजुर्गबार नें एक दिनां दो चौकड़ियां ऐसी सुनाई कै वे दो चौकड़ियां सौ के बरोबर सी लगत है।-"

"ठठरी बँधवै इन गोरन की, ऐबी बरजोरन की।
बनकें साँड़ चरत है खेती, इन छुट्टा ढोरन की।
लूट-लूट के पोलौ कर रये, इन डाकू-चोरन की।
कात ईसुरी तेरईं होनै, इन हराम खोरन की।। "

दूसरी चौकड़िया देखौ-

"कर रये हैं भौतई मनमानी, इन पै परै भुमानी।
हुकुम चलत है ऐसे जैसे, परमेश्वर की बानी।
अबतौ इनकी करतूतन से, रैयत भौत अद्यानी।
कात ईसुरी खा नई प रये , सुख से रोटी-पानी।"

इस लेख में ऐसी ही चौकड़ियां फागों के उदारण दिये गए है। जिनमें न तो ईसुरी की भाषा है न शिल्प। कहीं कहीं तो छन्द दोष भी है जो ईसुरी की असली फागों में किचिंत नहीं होता। परन्तु चौबे जी का उदाहरण देखें-

"ठीक ठाक अब सब हो जै है, समय बदल अब जै है।
जोन सल्तनत जुल्म करत है, बौ कैसे रै पै है?
जी ने पेड़ बमूरा बो दये, आम कहाँ से खै है?
ईसुर रो रो के कै रये है, जल्द दिया बुझ जै है।"

"जनता अब स्वतंत्रता चा रई, अंधन से अकुला रई।
कैसें देवता जे अपनौं, सब खां जेई समा रई।
मारें मारें सबई खां अबतौ, एकई बात दिखा रई।
ईसुर रो रो भारत माता, भौतई रुदन मचा रई।।"

इन उदाहरणों को देखकर मेरे मन में अनेक प्रश्न क्रौंध गए-

1. यह कि क्या इनमें ईसुरी की भाषा व शिल्प
2. "ईसुर रो रो भारत माता, भौतई रूदन मचा रई। मै रोने की पुनरावृत्ति करना ईसुरी के स्वभाव में कही पाया गया? फिर रुदन कोई कीचड़ नहीं जिसै मचाया जाये। ईसुरी ऐसी गलत और बेतुकी बातें कैसे दे सकते है?
3. ईसुरी के रचना काल व उस समय की देश काल परिस्थितियों में क्या भारत में साहित्यकार स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़ गये थे? हाँ 1857 की गदर अवश्य चर्चाओं में रही लेकिन इस प्रकार की राष्ट्रवादी धारा तो 1915 के भी बहुत बाद में शुरु हुई थी। जबकि ईसुरी 1909 में ही सिधार चुके थे।

हमें ईसुरी के नाम से स्वतंत्रता आन्दोलन से प्रभावित राष्ट्रीय विचारधारा वाली पंक्तियों को पढ़ने या सुनने से पहले ईसुरी के समय और उसके वर्षो बाद का ऐतिहासिक परिवेश भी समझ लेना चाहिये। अतः सच झूठ की तो राम ही जाने, लेकिन लोग आज भी यह बात कहते है कि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने जन गण मन अधिनायक वाला गीत उस युग में पंचमजगर्ज के सम्मान में लिखा था। तात्पर्य यह है कि उस जमाने में राष्ट्रीय विचार धारा भारतीय साहित्य में आई ही नहीं थी। तब तो देश के बड़े बड़े नामधारी कवि लिख रहे थे-

"प्रबल प्रतापी धीर-वीर, भारत के प्यारे,
अय-जय पंचमजार्ज श्रेष्ठ सम्राट हमारे।
साम्राज्ञीयुत सदा प्रेम से जीते रहिये,
सुधा प्रेम-पीयूष निरन्तर पीते रहिये।"

यह राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त की तब की पंक्तियां है जब देश में राष्ट्रवादी कविता का दौर शुरु ही नहीं हुआ था। राष्ट्रीय आन्दोलन की आंधी तो बाद में गांधी जी लेकर आये। तब ईसुरी जा चुके थे और जो लोग जीवित थे उन्होंने अपना पुराना रंग-ढंग आमूल-चूल बदल दिया था। जबकि राष्ट्रकवि गुप्त जी स्वयं अंग्रेज लॉट साहब के दरबार में कविता पढ़ने महुँचते थे। गुप्त जी का एक पत्र जो उन्होंने प्रवास पर गये अपने अत्यन्त आत्मीय गुरुतुल्य मुंशी अजमेरी जी को चिरगांव से दिनांक 30.07.1918 को लिखा था, देखें-

भाई अजमेरी जी,

मै झांसी से आ गया। लॉट साहब का दरबार देख आया। कोई 300 आदमी थे। व्याख्यान हिन्दी-उर्दू में हुये। विषय नहीं कुछ लोगों को इनाम मिली। ग्वालियर की पुलिस को मन्नूलाल डाकू के पकड़ने के बारे मे सुनहरी तलबार और तमंचा आदि दिया गया, इत्यादि। मुझे कविता पढ़ने का सौभाग्य नहीं मिला। मैं देर से पहुँचा। वहाँ यह सोचकर कि शायद मैं न आऊगा, दूसरा प्रबन्ध हो गया था। अब तुम उस कविता को कहीं मत पढ़ना, न सुनाना। एक खास कारण है।

रामकृष्ण जी को टैक्स्ट बुक कमिटी वाली दान की याद दिलाना। मैं उन्हें पुस्तक भेजता हूँ। और लिखने लायक हाल लिखना। तहसीलदार साहब से मेरा प्रणाम कहना।

पता - Munshi Ajameri ji

तुम्हारा
S/o G.P.Gurcharan Niwas

हस्ता.

• मैथलीशरण

Tehsildar
Nanpara P.O.
(Behraaich)

यह 1918 का देश काल था, जबकि ईसुरी उसके बहुत पहले 1909 में सिधार चुके थे। कवियों-लेखकों की कलम पर स्वतंत्रता आन्दोलन का अन्तर 1925 के बाद ही आया लेकिन यह हमारी दीवानगी ही कही जायेगी कि हम मिलावट का घोल मिलाकर ईसुरी को राष्ट्रीय धाराओं से जोड़ने का प्रयास कर रहे है। महत्वाकांक्षी सम्पादक अपने संकलनों में ऐसे अप्रामाणिक लेख छाप रहे हैं। इससे न तो बुन्देली भाषा-साहित्य का भला हो रहा है और न ही ईसुरी का। फिर ईसुरी उस समय बगौरा जैसे ग्राम में रह रहे थे जहाँ उस समय आवागमन के साधन भी सुलभ न थे। वहाँ जमींदारी के माहौल में राष्ट्रीय विचारधारा की हवन पहुँचाने की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। अतः जहाँ बैठे ईसुरी के द्वारा "जनता अब स्वतंत्र चा रई, बंधन से अकुला रई।" जैसी पंक्तियाँ लिखी जाना न तो स्वाभाविक है और न ही विश्वसनीय भाषा और उसका शिल्प भी ईसुरी का नहीं जान पड़ता।

हाँ, यह अवश्य माना जा सकता है कि ईसुरी का रचना काल नहीं था जब 1885 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का वर्चस्व समाप्त हो चुका था और 1877 में इग्लैण्ड की महारानी बिक्टोरिया भारत की साम्राज्ञी हो गई थी। तभी उनकी ओर से लार्ड डफरिन (1884-1888) ने जो पहले वायसराय थे उन्होने यहाँ रेल चलाने का सपना देखा था। फलस्वरूप इण्डियन मिडलैण्ड रेल्वे कम्पनी ने झांसी से बांदा होते हुये मानिकपुर तक भी रेल लाइन बिछाई थी। उस समय रेल की पटरियों के नीचे सारबू के स्लीपर लगाये जाते थे। बुन्देलखण्ड में साखू नहीं पाया जाता, इसलिये उनके विकल्प में महुये के स्लीपर लगाये गये। उल्लेखनीय है कि उस समय बुन्देलखण्ड के लोग दोहरी गुलामी भोग रहे थे- एक तो सामन्तो की गुलामी और दूसरी अंगेजों की। बुन्देलखण्ड के सामन्त एवं जमीदारों के लिये तो मानो अंग्रेज परमपूज्य थे जिनका हुकुम बजाने वे सदैव तत्पर रहते थे। अंग्रेजों ने हुकुम दिया कि महुआ काटे जाये और सामन्त खड़े हो गये महुओं की युद्ध स्तर पर कटाई करवाने के लिये ईसुरी ने देखा कि उनके ग्राम बगौरा के इर्द गिर्द महुआ काटा जा रहा है। देखकर वे पीड़ा से छट पटा गये कि महुआ तो यहां के गरीबों का पेट पालने वाला वृक्ष है, यह कट जायेगा तो गरीब क्या खाकर जियेगे? उस युग मे विरोध करने का साहस कोई नहीं कर सकता था। लेकिन ईसुरी कोई फड़वाज फगुवारे तो थे नही, वे तो अपने युग के प्रगतिशील

जनवादी कवि थे । वे चुप नहीं रह सके। चुप रहते कैसे? जब छतरपुर नरेश ने उन्हें अपने राज्य का राजकवि बनाने की पेशकश की पेशकश की थी तो उन्होने उसे ठुकरा दिया था। उन्हें न सामन्तो का भय था न अग्रेजो का विचारणीय है कि छतरपुर नरेश को अपने राजदरवार में राई का नाच नहीं करवाना था जो किसी फड़नाज फगुवारे को राजकवि की पदवी दे रहे थे। सामन्तों व अंग्रेजों का यह जनविरोधी कार्य देखकर ईसुरी ने जरूर यह फाग लिखी थी-

"इनपै लगे कुलरियाँ घालन, महुआ मानस पालन,
इनें काटवौ नइँ चइयत तौ, काट देत जे कालन।
ऐसे रूख भूँख के लाने, लगवा दये नँद लालन।
जे कर देत नई सी ईसुर, मरी-मराई खालन।।"

निश्चय ही यह ईसुरी के देश काल परिस्थिति से मेल खाने वाली चौकड़ियाँ है और ईसुरी की भाषा व शिल्प यथावत इसमें देखा जा सकता है। यह न तो राई की बेढ़नी के गाने की चीज है और न ही फड़वाजी की प्रतिस्पर्धा जीतने वाली साधारण फाग। इसमें ईसुरी के वर्षो बाद गांधी की आँधी वाला राष्ट्रवादी रंग भी नहीं है। यह सब देखकर हम इस निष्कर्ष पर पहुचँते है कि मैढ़की या मऊरानीपुर क्षेत्र के लोगों ने बगौरा वाले ईसुरी की जब ख्याति सुनी तो उनके मन में ईसुरी के प्रति सिर्फ स्वत्व मोह ही नहीं जागा बल्कि ईसुरी के प्रति वे ऐसे दीवाने हो गये कि टीकमगढ़ नरेश के पैसे के लालच में अपनी फड़बाजी वाले हल्के फुल्के स्तर की फागें भी वे लोग ईसुरी के नाम की छाप लगाकर गाने लगे। उनकी दीवानगी ने ही एक बुन्देली भाषा साहित्य के महाप्राण कवि को बलात घसीटकर अपनी फड़नाज बिरादरी में समेट लिया। निश्चय ही मऊरानीपुर वाला रंग ईसुरी का यथार्थ नही हैं।

ईसुरी को ईसुरी की कर्मभूमि के क्षेत्र से खोज निकालने का कार्य पं. श्यामसुन्दर बादल ने अवश्य किया और शोध प्रबन्ध उन्होने 1960 के लगभग लिखकर प्रकाशित किया। पर वह पर्याप्त नहीं कहा जा सकता जबकि वह यथार्थ के निकट अवश्यहै लेकिन मऊरानीपुर के प्रभाव से अछूता नहीं रह सका। पश्चात डा. नाथूराम चौरसिया ने ईसुरी को पी.एच.डी. हेतु अपना शोध का विषय बनाया और जीवनी से संबंधित प्रामाणित साक्ष्य उन्होंने जुटाये। उन्होने ईसुरी की हस्तलिपि एवं जन्म कुण्डली भी खोज ली जिसके अनुसार ईसुरी का जन्म चैत्र सुदी दसवीं 1898 विक्रमी को होना प्रामाणिक है, क्यों कि उस संवत का पंचांग खोजा गया जिसमें चैत्र सुदी दसवी को गुरूवार का होना ईसुरी के शिष्य वामर अली की इन पंक्तियो से मेल खाता है।

"गुरु नें जैसो हमे बताऔ, फाग बना के गाऔ।
संवत अठरा सौ अन्ठान्वै कौ संवत जब आऔ।
चैत्र सुदी दसवी दिन गुरू को भोले ने सुत पाऔ।
गंगा उर उपजे ईसुर, वामर सवाई सराऔ।।"

डा. लोकेन्द्र सिंह नागर ने भी ईसुरी की कर्मभूमि के निकटवर्ती ग्रामों की खाक छानकर ईसुरी की प्रामाणिक रचनाओं का संकलन किया है। उनकी उस खोज यात्रा में उन्हे भी ईसुरी के जन्म संबंधी यह दोहा प्राप्त हुआ-

"संवत् अट्ठारा सौ अन्ठान्वै, दिनाँ हतौ गुरूवार।
चैत्र सुदी दसवी रही, लऔ ईसुर औतार "

कुल मिलाकर हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि ईसुरी पर शोध कार्य नये सिरे से गहरे पैठकर होना चाहिये। यह शोध कार्य मैढ़की-मऊरानीपुर के फड़बाजी के वातावरण से दूर रहकर ईसुरी की कर्मभूमि के क्षेत्र में ही करना होगा। जहाँ शोधार्थी गहरे पैठकर ईसुरी की खोजें। दीवानगी ने न तो ईसुरी का भला किया है और न ही बुन्देली भाषा साहित्य का।

-ज्योतिकलश, कुण्डेश्वर

बुन्देली गीत

बसन्त-बहार ...

-स्वतंत्र प्रभाकर रावत

आई बसन्त -बहार, अनौखी छाई छटा।
करत प्रकृति सिंगार, अनौखी छाई छटा।।
फागुन कर रव जादू-टोनों, जौ हैरौ ताँ नोनों नोनों।
चन्दा चाँदी सी बिखेराबै सूरज बरसा रव है सोनों।।
फगुनी बहत बयार अनौखी छाई छटा। आई बसन्त बहार ....
फूल हँसें, कलियाँ मुस्काबैं लूम-लूम का-का बतयाबें।
भौरन के दल गुन गुन कर रए, जैसें राग-बसन्ती गाबें।
झूमत अमुआ डार अनौखी छाई छटा। आई वसन्त बहार ....
आमन के अब भाग जगे हैं, महुआ बेर हिया उमगे है,
गायें पात नये मस्ती में, डारन-डारन मौर लगे है
भौंर करत गुँजार, अनौखी छाई छटा। आई बसन्त बहार ....
कूक रही कोयलिया कारी, महक रही है क्यारी-क्यारी
बगियन-बगियन धूम मची है, जबसें रितुआई मतवारी
आ गव अजब निखार,अनौखी छाई छटा। आई बसन्त बहार ....
गेंदा फूले, चम्पा महकें, वन-बागन में पंछी चहके,
जड़ कारे की भई विदाई, जाँगन-ताँगन टेसू दहके
महक उठे कचनार, अनौखी छाई छटा। आई बसन्त बहार ....
खेतन नें पैरो है गानों, फसलन कौ केशरिया बानो,
हरियल से अंचरा से झाँकत बालन को जौबन गदरानों
हरिया करत विहार, अनोखी छाई छटा। आई बसन्त बहार ....
कऊँ कऊँ घामों, कऊ है छाया, बदली है धरती की काया
हैरौ तो जादू सौ हो गव- अद्‌भुत है ईसुर की माया
लीला अपरम्पार, अनौखी छाई छटा। आई बसन्त बहार ....
"भए परदेशी कंत हमारे, मरे जात विरहा के मारे
हँसी-ठिठोली करै सहेली, ताने से मारें गैलारे
विरहन करत पुकार, अनौखी छाई छटा। आई बसन्त बहार ....
सबइ जनें मिल खुशी मनावैं, हिल-मिल गीत प्यारे के गावैं
जे नौने दिन आए न आए, पल-पल कौ आनन्द उठावैं
जीवन के दिन चार, अनौखी छाई छटा। आई वसन्त बहार ....

सम्पर्क - प्रभाकर ऑफसेट प्रिन्टर्स
कड़ा की बरिया, छतरपुर (म.प्र.)
मोबा. 07747963596

ब्याव संस्कार गीतन की मिठास

डॉ. श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम'

सीदी सादी बिना छल कपट दुराव जीमें बनावटीपन कतई ना होबे ऐसी बोली जावे वाली बोलियन और भासन कों लोक साहित्य नाँव दओ जात है। ईमें हमाए-तुमाये सबई के जीवन के सुख-दुख, इच्छा-अनिच्छा, आशा-निराशा, हँसबो-रोबौ, खुशी,तुनक-तैस, भलाई-बुराई, सबकौइ इस्थान रहत है। लोक बोलियन उर भासन में मनुष्य जात की सभ्यता और संस्कृति के उग्रौ और उन्सार कौ पतौ चलत है।

लोक साहित्य मुख्य तौर से हमें दो रूपन में देखें मिलत है- पैलौ गद्य में और दूसरौ पद्य में। बैसे तौ इन दोऊ रूपन कौ भौत बड़ौ बिस्तार है,अब हमें अपनी बात पै आने , सो हम अपुन कौ ध्यान उतैई मुरकायें चाँ उतसो आओ इतैं। पद्य में गीत और उनऊं में ब्याव संस्कार के गीत न की तौ कानेंई का है, सबरे जानत कै कितेक प्यारे उर मिठास भरे होत हैं। नेंक सबर करनें पर है हम उनकौ मीठौ रस औरन कों चखैहैं जरूर।

बुन्देली लोक गीतन की बजनदारी कौ कारन है ऊकी अपनी कहानी और बरतनी। ई कैनी उर बरतनी में नेंचे लिखे गुन बिसेसता बुन्देली लोक गीतन में देखबें को मिलत है। और साहित्यकारन नें जा बात कही है

1. इन गीतन के रचनाकरन कौ अता-पता नँइँ मिलत। उक दूसरे से सुनकें जाने उर उपयोग में लये जात।
2. जे काऊ एक के हाँत के बने नँइँ होत। ऐसें मानौ कै जे गींत कैउ जने मिलकें रचत है।
3. एकदम सरल, सीदे निरछल बिचार बाले होत है जे गीत।
4. इन लोक गीतन में अपने क्षेत्र कौ असर होत भये दुनिया भी में इनकी मान्यता होत।
5. इन गीतन में संगीत-गायकी अबसइँ होत है। जे दोऊ चीजें, लै और रस तौ इनमें प्रान मानो।
6. बुन्देली लोक गीतन में टेक कों बेर-बेर अन्तरा में जोरबौ देखौ जात लोगन के और रिस्तन के नाँव जोर-जोर कें गीत कों बढ़ाये जाबे की परिथा देखी जात है।
7. ज्यादातर अपन औरन के रोजमर्रा के ब्यौहार और बिचारन के सम्बंध में बात कही जात।
8. पुराने बुन्देली गीतन में छन्द, अलंकार और राग-रागनियन की भौत कमी देखी गई है, पै ऐसौ पूरी तरा नँइँ कहौ जा सकत काये सें कै कहूँ कहूँ इनऊँ कौ जोगदान देखबे में आउत है।
9. बुन्देली लोक गीत सिच्छा और ग्यान से भरे-पूरे होबे के संग संग ऐसौ रस बरसाउत है कि बैरागी मन बालेऊ लोग झूम उठें।

इनई बिसेसतन के कारन बुन्देली लोक गीतन की आजऊँ पेंचान खतम नँइँ भई और न कभऊँ हुये। अपने बुन्देलखण्ड में कइयकन तरा के बुन्देली बानी में ।

गीत सुनबे कों मिलत है। भोर सें लैंके रात लों के गीतन कौ जा भाषा बानी में ठट्ट लगौ है। खेती-किसानी,रितू,त्यौहार के अलग-अलग जात के, बच्चन के खेल के, भजन आद के गीतन की धुने इतै गूँजती रातीं हैं।

मेंनत कौ काम गाँवन में आदमीं-जनियें खेतन में, घर में गीत गा-गा के करत है जी के कारन उनें बौ मेंनत कौ काम नें कउँ नँइँ अखरत। इन गीतन मे फसल की बाऊनी-लाऊनी, पुर चकिया आदि के गीत आऊत हैं। किसान मजूरदार और मेंन्ती लोग लुगाइये रोज के काम से हारे-थके अपनी थकान मिटावे के काजें बड़े मौज सें मिलजुल के जे गीत गाउत है। इन गीतन में झूला, आल्हा, भुजरियाँ, मल्हार, तीजा, नौदेवी के-अचरी, लाँगुरिया, दिवारी,मलमास होरी की फाग, तीजा गीत, जात गीतन में कन्हौआ, गोंटे लँहगी, हरगंगा आदि गीत है जो समै समै पै गाये जात हैं। मोड़ी-मोड़न के खेल गीत हैं- चन्दा-तरइया,नौरता, झिंझिया-पिसुआ, संजा लोई, कबड्डी आदि। तरा के बुन्देली गीत गावत है वै हम इतै संस्कार गीतन में ब्याव संस्कार गीतन की बात करें चाँउत।

बैसें तौ हजारन कोस में पसरे बुन्देलखण्ड के सबई संस्कार गीतन कों नेंक से ठौर में समेंट धरबौ भौत टेड़ी खीर है। बुन्देली भाषा एक भौत बड़े क्षेत्र की मालकिन है। बिलात तरा से बोंली जात है। बुन्देलखण्ड में डँघाई, भदावरी, चौरासी, जटवारे सबई की बोली चलन में है। ब्रज और अबधी भाषा तक पै बुन्देली कौ भौत कब्जा देखबे कों मिलत है। ऐसोई गीतन पै लागू होत है।

हम इतै बुन्देलखण्ड के प्रमुख क्षेत्र जालौन, हमीरपुर, झांसी, ललितपुर, भिण्ड, ग्वालियर, दतिया, आदि और ऊके समीपवर्ती क्षेत्र में पिरचलित संस्कार गीतन में सें ब्याव संस्कार गीतन की कछू झलक इतै दिखाउत हैं। ब्याव संस्कार बैसे तौ कन्या और बर पच्छ दोऊजन के इतै (कछू-कछू संस्कार कम जादाँ होत है पै हम इतै ऐसे ब्याव संस्कार का रकेमन को लिख रये जो दोऊ लँग होत हैं। और उन संस्कार सम्बंधी ब्याव गीतन की मिठास चखाबे के लानें उनके संझेप में नमूना प्रस्तुत करत है।)

ब्याव संस्कार के कार्यक्रम और उनके गीत:

सगाई, तिलक, लगुन, तेल-तिलाई, मण्डप, उबटन, कंगन बँधाई, बन्ना बन्नी की सजावट, बारात की सजावट, और प्रस्थान, शेहरा, करहिया, देवतन कौ सुमिरन दर आबाहन, बारात आगमन, टीका, चढ़ावा, पाँव पुजाई, कन्यादान, भाँवर, कुँवर कलेवा, ज्यौनार, सारी-सरहज ठिठोली, गारी, बिदाई, परछन (लरका-बहू लैबौ), साखेचार, सुहागरात आदि सब इस्थलन के रीत है पै इनके अलावा गौरईयां का कार्यक्रम के गीत होत हैं जिनमे सिंगार रस कूट-कूट के भरौ होत, जैसें माटी-मिथौरी, द्वार पूजा, द्वार रुकाई, भात, गूँज छुराई, कंगन छुराई, गुरहत्थी (जोगी-जिन्दा) आदि के गीत

कछू ब्याव संस्कार गीत:

ज्यादातर सबई गीत तिरियँई गाउती हैं।

ब्याव गीतन कौ भौत बड़ौ घरानौ है। चिटी भरे टेंम में सबसें परचै कराबौ। अत: दुल्लभ काम है। ई कारन कछू मुख

मुख इस्थलन (ठौरन) के गीतन सें इतै परचै कराउत है।

लगुन गीत:

जब बर के घरै लगन आउत है बिटिया बालिन की तरफे सुर में गाउती हैं-

सें तब लुगाइयें बड़े नोंने और मीठे सुर में गाउती हैं-

"रघुनन्दन फूले ना समायँ, लगुन आई हरे-हरे,
लगुन आई मोरे अँगना,
आजुल सज गये, बाबुल सज गये, सज गये सब परबार,

रघुनन्दन तौ ऐसें सज गये, जैसे श्री भगवान,
लगुन आई हरे-हरे, लगन आई मोरे अँगना,
चाचुल सज गये,वीरन सज गये, सज गये सब परबार।।
रघुनन्दन......
मामुल सज गये, मौसुल सज गये, सज गये सब परबार।।
फूफुल सज गये, जीजुल सज गये, सज गये सब परबार।।
रघुनन्दन रघुनन्दन तौ ऐसें सज गये जैसे श्री भगवान ।। लगुन आई हरे-हरे"

माटी मिथौरी गीत

ब्याव में चूल्हे मड़वा के नेंचें की छोटी हबन के लानें बरोसी बनाबें के लानें मटटी खेतन सै लैबे औरतें जाती है। तब माटी खुदाई से संबंधित सिंगारिक गीत गावत हैं-

"गाँव में आओ मट खुदना रे।
बहना की खोदी अपनी भौजी की खोदी,
अम्मा की खोदी भौसरिया रे।
गाँव में आओ मट खुदना रे।।"

तेल चढ़ाई गीत-

"काये के तेल-फुलेल, काये कीं दो कलियाँ,
सरसों के तेल,फुलेल, चम्पे की दो कलियाँ,
चढ़ गव तेल फुलेल, महँक रइँ दो कलियाँ
बहुरिया ने तेल चढ़ाव, सुरेस लाला बालइयाँ
लल्ला बेटी ने तेल चढ़ाव, बिरन लाला बालइयाँ।।"

बन्ना गीत-

"बन्ना मेरौ पूनों जैसौ चाँद, रहै जग में उजयारौ रे।
बन्ना के बाबुल सजें बरात, तौ सजना थर थर काँपै रे।।
बन्ना कें बाजै तबल निसान, पतुरियाँ छम छम नाचें रे।"

बन्नी गीत-

"मेरी लाड़ो रूप सरूप, सांवरे हरे हरे, सांवरे बर पाये।
द्वारे सें लाड़से के आजुल सों उठ बोले-बर कों देव लौटाय,
भीतर सें बे लाड़ो बोली-मरो जहर-बिस खाय,
भाँवरियाँ मोरी, हरे हरे, भाँवरियाँ मोरी जई सें परें।।"

बन्ना गीत-

"सजत संजा हो गई महराज।
अबेरे बन्ना काए सजे महराज।।
बन्ना के बाबुल कौ भारी परबार,
सजत संजा हो गई महराज।।"

बारात जाबे के बाद सिंगारिक गीत- कजरौटा

"सबरै तौ गए है बरातै, रे कजरौटा।
बे तौ सुरेन्द मड़िया घर रये, रे कजरौटा।
अपनी अम्मा के चेरे... अपनी जोरू के चेरे,
अपनी अहना के चेरे, रे कजरौटा।।"

गौरइया गीत (सिंगारिक) :

"गौरइया असल छिनार, हरामजादी गौरइया।।
जे कुसमा बारे की छिनार हराम जादी गौरइया।।
दूला की बहना है असल छिनार, हराम जादी गौरइया।।"

सजन भेंट गीत-

जब बारात बिटिया बाले के हाँ पोंच जात-समदी भेंटत-मसखरिये

"भेंट लेव भड़ुआ, भेंट लेंव, तेरौ जरम में सुधर जाय।
उत कौ बरतया ऐ सौ बनौ, बैहड़ कौ गोहदुआ,
हमरौ घरतया ऐसौ बनौ, गोकल कौ कनइया,
भेंट लेव मुच्छड़ भेंट लेव।। ते रौ... ।।"

साजन संबंधी गीत-

"सीस नबें परबत नबें, जब साजन आबें।
समदी कौ माधौ तब नबै जब साजन आबें।।"

जेंवनार गीत- बरतया जब भोजन करत हैं तब गबत हैं।

"मो पै बन न सकी जेंवनार, गरीबी मोरी, हरे हरे, गरीबी देखें रइयो।
तुमरें समदी बाग-बगैचा, हमरें बिरवा एक,
हमरें बगीचा एक है समदी
बउ की फट गई डार, गरीबी मोरी, हरे हरे, गरीबी मोरी देखे रइयो।।"

भमरकली जेंवनार गीत-

"मोरें को को नोंतें आओ, मोरी भमरकली
मोरें मौछू नोतें आये मोरी भमरकली।
उनकों आदर कर बैठारौ मेरी भमर कली।
उनको पूरी कचौरी परसौ उनको चटनी सब्जी परसौ,
उनकों लड़ुआ पेरा परसौ उनको हँसिया लेव पिटाय....
उनके हिजरा कर पौचाव मोरी भमरकली ।।"

सिंगारिक गीतः (जेंवनार समै)-

"लिल्ली सी घोड़ी, राजा नीम सें बधाई, चलौ देख आइयें।
बे किसना की बैना जू गई ती बजार, उनकों चार मिले यार,
उनके मीड़ लए अनार, चलौ देख आइयें।।"

भाँवर गीत : (कन्यादान)-

"बिच गंगा बिच जमना, देत कुंआरिन दान।
बैठे बबुल उनके देत कुआरिन दान।।
ढूँड़ी-भेड़ी जिन दिओ बाबुल जनम अखारात जायँ,
दीओ असल कलुरिया, सोने के सींग मड़ाय।।"

बिदाई होकें बारात बापस घरै पौचत है, तब उतै लरका बहू, भूमियाँ ग्राम मे देवी-देवताओ पूजें जात, लरका बहू संगै लै जाके। तब जनिये गाउती हैं देवी मंदिर पै-

"कैसें कि दरसन पाऊँरी, माई तेरी सँकरी देहरियाँ।
सँकरी देहरियाँ, मइया लाल किवरियाँ, खोलौ कि दरसन पाँउरी,
लाल धुजा फैराऊँ री मइया तेरी संकरी देहरियाँ।
मइया के द्वारे पर दुलहिन पुकारे,
देओ असीस घर जाबुरी, मैया मेरी...."

घरै बधाई गीत होत है जिनतें बर बधू को सिंगार रस में सराबोर कर दैबे बोले गीत गाये जात है। जिनें सुनकें बूढ़िन पै तक ज्वानी सन्ना उठै। ऐसे है हमारे रस और ओज भरे बुन्देली गीत।

-1001, श्रीवास्तव निलयः चुर्खी रोड बघौरा
उरई जालौन उ.प्र. 285001, मो. 07408439308

प्रतापरूद्र की कालिंजर प्रशस्ति और बुन्देलवंश

-डॉ० कन्हैयालाल अग्रवाल

यह प्रशस्ति एक विशाल आयताकार बलुआ शिलाफलक पर अंकित है। कालिंजर दुर्ग में कोटितीर्थ नामक सरोवर के पूर्वोत्तर कोण में स्थित तथाकथित इस्लामशाह मस्जिद के भीतरी भाग में मेम्बर के समीप एक प्रवेश द्वार की पूर्वी भित्ति में यह अभिलेख तिरछा लगा है। तिमिराच्छन्न स्थान में आड़े ढंग से शिलाफलक लगा होने के कारण इस प्रशस्ति का वाचन अत्यन्त कठिन है। लेख का लगभग 45 से०मी० दायां भाग उक्त मस्जिद के फर्श पर गड़ा होने के कारण तथा कुछ भाग में क्षरण प्रारम्भ हो गया है। अत: इसकी विधिवत छाप अथवा छायाचित्र लेना कठिन है। शिलाफलक की लम्बाई 187 से० मी० चौड़ाई 92.6 से०मी०और मोटाई 12 से०मी०है।

24 पंक्तियों का यह अभिलेख उत्तर मध्यकालीन नागरी लिपि के सुन्दर अक्षरों में अंकित है। विभिन्न पंक्तियों के अक्षर असमान हैं। प्रथम पंक्ति के अहार 10 से० मी० आकार के हैं। किन्तु पन्द्रहवीं पंक्ति के अक्षरों का आकार 30 से०मी० है। अभिलेख टंकण सम्बन्धी अशुद्धियों से मुक्त नहीं है। प्रशस्ति में 40 श्लोक हैं। इसमें से केवल 10 श्लोक पूर्ण है और शेष 30 श्लोक अपूर्ण होने के कारण उनका सम्यक् अध्ययन अथवा मूल्यांकन संभव नहीं है। प्रशस्ति की भाषा प्रांजल और प्रवाहमयी है। ऐसा प्रतीत होता है। कि प्रशस्तिकार काव्य मर्मज्ञ था। भाषा-शैली की दृष्टि से यह कृति निस्सन्देह उत्तर मध्ययुगीन संस्कृत काव्य का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

राजनीतिक इतिहास- विवेच्य प्रशस्ति की रचना महाराजाधिराज प्रतापरूद्र देव के शासनकाल में हुई थी। इस प्रशस्ति के अतिरिक्त उसका कोई अन्य अभिलेख अभी तक प्राप्त नहीं हुआ। अत: इस प्रतापरूद्र देव तथा उसके पूर्वजो का अभिज्ञान एक श्रमसाध्य समस्या है। पूर्व मध्यकाल में मध्यभारत चन्देल, कलचुरि, परमार और चौहान आदि राजवंशों द्वारा शासित हो रहा था। अधिकांश विद्वान मानते हैं कि कालिंजर पर शेरशाह के आक्रमण के समय तक यही चन्देलों का शासन था और उनका राजा कीरतसिंह यहां का शासक था। किंतु विवेच्य प्रशस्ति में जिन राजाओं के नामों का उल्लेख है, उनके नाम चन्देल वंशावली में उल्लिखित नामों से मेल नहीं खाते। अत: प्रस्तुत प्रशस्ति में उल्लिखित शासकों के नाम चन्देल शासकों की वंशावली से सर्वथा भिन्न होने के कारण इतिहासकारों के उपर्युक्त मत का समर्थन नहीं होता। अत: प्रशस्ति में वर्णित राजा प्रतापरूद्र देव बुन्देल वंश से सम्बन्धित है। विभिन्न स्त्रोतों से ज्ञात बुन्देल वंशावली इस प्रकार है।

वीरसिंह देव चरित के अनुसार बुन्देल वंशावली

वीरभद्र
↓
राजावीर
↓
करण (काशी)
↓
अंर्जुन (महौनी)
↓
सोहनपाल
↓
सहजेन्द्र
↓
नौनगदेव
↓
पृथ्वीराज
↓

मेंदनीमल — राजसेन — पूरनमल→

मेंदनीमल
↓
अर्जुनदेव
↓
मलखान
↓
प्रतापरूद्र (1486 ई०)

कविप्रिया के अनुसार बुन्देल वंशावली

वीर (अवध)
↓
करण (काशी)
↓
अर्जुनपाल (महौनी)
↓
सोहनपाल (गढ़ कुण्डार)
↓
सहजेन्द्र
↓
नौनिकदेव
↓
पृथ्वीराज
↓
रामसिंह
↓
रामचन्द्र
↓
मेदिनीमल
↓
अंर्जुनदेव
↓
मलखान
↓
प्रतापरूद्र

छत्रप्रकाश के अनुसार बुन्देल वंशावली

वीरभद्र-इसके पूर्व हुए राजाओं का उल्लेख नहीं किया जा रहा।

पंचमसिंह (हेमकरन)
↓
वीर
↓
करण
↓
अंर्जुनपाल
↓
सोहनपाल (सहनपाल)
↓
सहजेन्द्र
↓
नौनिकदेव
↓
पृथ्वीराज
↓
रामसिंह
↓
रामचन्द्र
↓
मेंदनीमल्ल
↓
अंर्जुनदेव
↓
मलखान
↓
प्रतापरूद्र

लछमनसिंह गौर द्वारा उल्लिखित वंशावली

हेमकरण 1105-1128 ई. महौनी जगम्मनपुर के बुन्देल शासक
वीरभद्र 1128-1144
करनपाल 1144-1169
किन्नरशाह 1169-1187
शोनकदेव 1187-1209
नानकदेव 1209-1216
सोहनपाल 1216-1254
अभयभूपति 1254-1272
अर्जुनपाल 1272-1288
वीरपाल 1288-1308

सोहनपाल 1308-1316 गढ़ कुण्डार के बुन्देल शासक
सहजेन्द्र 1316-1340
नौनकदेव 1340-1364
पृथ्वीराज 1364-1396
रामसिंह 1396-1432
रामचन्द्र 1432-1441
मेंदनीवाल 1441-1494
अर्जुनदेव 1494-1525
मलखान सिंह 1525-1558
रूद्रप्रताप 1558-1588

ओरछा गजेटियर के अनुसार

हेमकरन (पश्चिम)
वीरभद्र 1701-1087 ई.
करणपाल

कर्न्नरशाह 1112-1130 | सौनक 1130-1152 | नौनकदेव 1152-1162 | वीरसिंह

सोहेनपाल 1169-1197 | अभयपति 1197-1215 ई.

अर्जुनपाल 1215-1231 ई.
सोहनपाल 1231-1259 ई.

सहजेन्द्र 1259-1283 ई. | रामसिंह

नौनददेव 1283-1307 ई.
पृथ्वीराज 1307-1339 ई.
रामसिंह 1339-1375 ई.

रायचंद्र 1375-1394 ई. | मेदिनीमल 1394-1437 ई.

अर्जुनदेव 1437-1468 ई.
मलखान सिंह 1468-1501 ई.
रुद्रप्रताप 1501-1531 ई.

बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, पृ० 383-84

गोरेलाल तिवारी

पंचम सिंह (हेमकरन)
↓
वीरसिंह
↓
करनपाल
↓
अर्जुनपाल
↓
सोहनपाल
↓
सहजेन्द्र
↓
नानकदेव
↓
पृथ्वीराज
↓
रामचन्द्र
↓
मेदिनीमल
↓
अर्जुनदेव
↓
मलखान
↓
रुद्रप्रताप 1486-1531 ई.

भारतीचन्द्र | मधुकरशाह | उदयाजीत | कीरतशाह | भूपतशाह | अमानदास | चन्द्रदास | दुर्गादास

(दुर्गादास:) घनश्याम | प्रयागदास | भैरवदास | खण्डेराव

विभिन्न स्त्रोतों से ज्ञात वंशावलियों की तुलना

प्रशस्ति	वीरसिंहदेवचरित	कविप्रिया	छत्रप्रकाश
क्षत्र	–	–	–
नानंग	–	–	–
द्रोणपाल	सोहनपाल	सोहनपाल	सोहंनपाल
सुबन्धु	सहजेन्द्र	सहजेन्द्र	सहजेन्द्र
–	नौनगदेव	नौन्रिकदेव	नौन्रिकदेव
महाराज भोज	–	–	–
पृथ्वीचन्द्र	पृथ्वीराज	पृथ्वीराज	पृथ्वीराज
अर्जुनदेव	अर्जुनदेव	अर्जुनदेव	अर्जुनदेव
पुरुषोत्तम	मलखान	मलखान	मलखान
प्रतापरुद्र	प्रतापरुद्र	प्रतापरुद्र	प्रतापरुद्र

वंश

वीरसिंह चरित में बुन्देलों को सूर्यवंशी बताया गया है।[१]
केशवदास ने लिखा है-

अवधपुरी तब ऊजर भई। सबै सदेह राम संग गई।
कुशस्थली कुश बैठे जाइ। आसमुद्र पृथ्वी के राइ।।22
कुश के कुल को एक कुमार। आनि धरयो काशी भुवयार।
देरिन रूप गुन शील समाज। ताकहं पुरजन दीनी राज।।23

अर्थात् अयोध्या उस समय निर्जन हो गई जब वह सदेह राम के साथ स्वर्ग चली गई अतः कुश अपनी राजधानी कुशावती में रहने लगे। कुश के ही वंश में एक राजकुमार ने (वीरभद्र) काशी आकर राजपद ग्रहण किया। उसके रूप, गुन, शील और समाज को देखकर वहां की जनता ने उसे काशी का राज्य सौंप दिया। कुश सूर्यवंशी थे। अतः उनकी सन्तान से चला बुन्देला वंश भी सूर्यवंशी हुआ।

छत्रप्रकाश में बुन्देला वंश का वर्णन इस प्रकार किया गया है-

रामचन्द्र के पुत्र सुहाये, कुशा लव भये जगत जे गाये।
कुश कुल कलस भये छवि छाये, अवधपुरी नृप घने गनाये
X X X
विहंगेस नृप के भये, कासिराज सिरताज
अवधिपुरी ते उमड़ि जिन, कीनौ कासीराज।।[२]

अर्थात रामचन्द्र के लव और कुश नामक दो पुत्र हुए। कुश कलस नामक पुत्र हुआ, जिसने अवधपुरी (अयोध्या)में शासन किया। इसी कुल में विहँगराज हुए और विहँगराज के पुत्र काशिराज हुए जिन्होंने अयोध्या छोड़कर काशी पर राज किया।

कुण्डलपुर अभिलेख[३]में छत्रसाल बुन्देला को काशीश्वर का वंशज बताया गया है। काशी पर गाहड़वालों का राज्य था। अतः छत्रसाल स्वयं को गाहड़वाल वंश से अपना सम्बन्ध स्थापित करते है। किन्तु गाहड़वालों के उद्गम के सम्बन्ध में ठीक-ठीक कुछ ज्ञान नहीं है। अभिलेखों में वे स्वयं को सूर्यवंशी अथवा चन्द्रवंशी उद्घोषित न कर केवल क्षत्रिय कहते हैं। गाहड़वालों के आधुनिक वंशज गहरवार हैं और मिर्जापुर में कंतित रियासत का क्षत्रिय कुल स्वयं को गाहड़वाल कहता है। इस वंश के भाटों की कल्पना से गाहड़वाल राजा दिवोदास के वंशज है और शनि की दिशा रोकने के कारण उनका नाम ग्रहवर पड़ा, जो कालान्तर में बिगड़कर गाहड़वाल हो गया।[४]

यह केवल कोरी कल्पना प्रतीत होती है।

विश्वेश्वरनाथ रेउ[५] का विचार है कि गाहड़ का अर्थ पराक्रमी है। सी. वी. वैद्य[६] के अनुसार दक्खिन में गाहड नामक स्थान से आने के कारण इनका नाम गाहड़वाल हो गया है डा० मोतीचन्द[७] का कथन है कि संभव है वे किसी आदिम जाति के रहे हों और राजसत्ता प्राप्त कर लेने पर ब्राह्मणों को दान दक्षिणा देने के कारण क्षत्रिय बन गये हों। विशुद्धानन्द पाठक[८] का मत है कि मिर्जापुर की पहाड़ियों के निकटवर्ती क्षेत्र में रहने वाली किसी पर्वतीय जाति ने काशी के निकट राज्य का निर्माण किया और कालान्तर में कन्नौज को अधिकृत कर गाहड़वाल वंश के रूप में प्रसिद्ध हो गये। डा० रमाशंकर त्रिपाठी[९] का कथन है कि पहले यह एक अज्ञात गण जाति थी। जो कालान्तर में धर्मरक्षक के रूप में इतिहास में प्रसिद्ध हो गई। कुछ अभिलेखों में वे स्वयं को सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी क्षत्रिय कुल का उल्लेख करते है।[१०] यह बड़े आश्चर्य की बात है कि कोई राजवंश सूर्य और चन्द्र दोनों राजबंशों से किस प्रकार सम्बन्धित हो सकता है अतः वि०सं० 1176के मदनपाल और गोविन्दचन्द्र के रहन ताम्रपत्र[११] के "आसीदशीतद्युति वंशजातः क्षमापाल मिलासु दिवं गतासु "का गलत अर्थ लगाया गया है। इसमें जात और क्षमापाल के मध्य विसर्ग का प्रयोग नहीं किया गया, जिसके कारण श्लोक का अर्थ बदल गया है कि कुछ अभिलेखों में गाहड़वालों को सूर्यवंशी न बताकर किसी सूर्यवंशी शासक को पराजित कर शक्ति सम्पन्न होने का द्योतक है। यही कारण है कि कुछ अभिलेखों में गाहड़वालों को केवल क्षत्रिय कहा गया है।[१२]

कालिंजर की प्रतापरुद्र प्रशस्ति[१३] में उल्लिखित आदि पुरुष पुराण-पुरुष सोमपायी अत्रि का अभिज्ञान ऋषि से करना संभव है। अत्रि से उत्पन्न क्षत्र अनेक शास्त्रों के ज्ञाता थे। चन्देलों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में भी कहा गया है कि पुराण-पुरुष से मरीचि और अत्रि की उत्पत्ति हुई और अत्रि से चन्द्रात्रेय का जन्म हुआ, जिन्होंने चन्देलवंश की स्थापना की।[१४] इस प्रकार अभिलेखों में बुन्देलों और चन्देलों की उत्पत्ति एक जैसी है और दोनों राजवंश स्वयं को चन्द्रवंशी होने का घोष करते हैं।

उपर्युक्त वर्णन से प्रकट होता है कि साहित्यिक स्रोतों में बुन्देलों को सूर्यवंशी और अभिलेखों में चन्द्रवंशी बताया गया है। गाहड़वाल स्वयं काशीश्वर का वंशज होने का उल्लेख करते हैं क्योंकि काशी गाहड़वालों की राजधानी थी, अतः बुन्देले भी उनसे सम्बंधित प्रमाणित होते हैं। इस प्रकार गाहड़वालों की तरह बुन्देले भी न तो सूर्यवंशी हैं और न ही चन्द्रवंशी बुन्देलों के सूर्यवंशी होने की मान्यता बहुत बाद की है।

<u>जाति</u> प्रशस्ति में बुन्देलों की उत्पत्ति आदिपुरुष पुराण पुरुष सोमपायी अत्रि से बताई गई है। श्रीमद्भागवतपुराण[१५] के अनुसार अत्रि ब्रह्मा के मानसपुत्र हैं और चक्षुभाग से उनकी उत्पत्ति हुई है। उनकी गणना सप्तर्षियों में की गई है और उन्हें प्रजापति भी कहा गया है इस प्रकार बुन्देलों का ब्राह्मण होना प्रमाणित होता है। प्रतापरूद्र की प्रशस्ति से भी यह तथ्य प्रमाणित होता है कि द्रोणपाल (सोहनपाल)ने ब्राह्मणों की रक्षा के लिए क्षत्रिय धर्म स्वीकार किया था।[१६] इस प्रकार बुन्देल ब्रह्मक्षत्र प्रतीत होते हैं।

<u>बुन्देलों की वंशावली</u> विभिन्न स्त्रोतों से ज्ञात बुन्देलों की वंशावली में एकरूपता नहीं है। वीरसिंहदेव चरित, कविप्रिया, छत्रप्रकाश और ओरछा गजेटियर में वर्णित बुन्देल वंशावलियों में न्यूनाधिक भिन्नताएं हैं। इसी प्रकार प्रशस्ति में वर्णित वंशावली भी बिल्कुल अलग है। इसमें क्षत्र नानंग, द्रोणपाल, सुबन्धु, महाराज भोज, पृथ्वीचन्द्र, पुरुषोत्तम,

अर्जुनदेव और प्रतापरुद्र देव के नाम मिलते हैं। किन्तु प्रशस्ति में उल्लिखित समस्त राजाओं एवं व्यक्तियों का अभिज्ञान संभव नहीं है। तो भी, इसमें कुछ राजाओं की पहचान बुन्देल वंशावलियों में वर्णित शासकों से की जा सकती है।

कालंजर प्रशस्ति	वीरसिंह देव चरित	कविप्रिया	छत्रप्रकाश
क्षत्र	-	-	-
नानंग	-	-	-
द्रोणपाल	सोहनपाल	सोहनपाल	सोहनपाल
सुबन्धु	सहजेन्द्र	सहजेन्द्र	सहजेन्द्र
महाराज भोज	-	-	-
पृथ्वीचन्द्र	पृथ्वीराज	पृथ्वीराज	पृथ्वीराज
पुरूषोत्तम त्रिलाकदेवी	मलखान	मलखान	मलखान
प्रतापरुद्र	प्रतापरुद्र	प्रतापरुद्र	प्रतापरुद्र

उपर्युक्त तालिका से प्रकट होता है कि प्रशस्ति की वंशावली साहित्यिक स्त्रोतों से ज्ञात वंशावली से मेल नहीं खाती। किन्तु प्रशस्ति का कुछ भाग दीवाल में दबा होने के कारण पढ़ा नहीं जा सका। अत: संभव हैं उनसे कुछ और नाम ज्ञात हो सकें।

बुन्देल राजपूतों की उत्पत्ति-अनेक राजपूत वंशों की भांति बुन्देलों की उत्पत्ति इतिहास की एक जटिल समस्या है। कालिंजरप्रशस्ति के श्लोक क्रमांक 6में उल्लिखित आदि पुरुष पुराण-पुरुष सोमपायी अत्रि का अभिज्ञान ऋषि अत्रि से किया जाता है। अत्रि से उत्पन्न क्षत्र अनेक शास्त्रों का ज्ञाता था। श्लोक क्रमांक सात केअनुसार क्षत्र का पुत्र लक्षण न केवल दया, दान, शौर्य, विद्या आदि गुणों से युक्त था अपितु वेदत्रयी का भी जानकार था। श्लोक क्रमांक नौ के अनुसार उसके वंशज मातृशर्मा और महाशर्मा धर्मनिष्ठ होने के अतिरिक्त न्याय, वेदान्त एवं मीमांसा के भी ज्ञाता भी थे। श्लोक क्रमांक दस के अनुसार नानंग वेदों का ज्ञाता था। श्लोक क्रमांक बारह के अनुसार द्रोणपाल ने ब्राह्माणो की रक्षा के लिए ब्राह्मणत्व का त्यागकर क्षत्रियत्व स्वीकार कर लिया। अत: उपर्युक्त साक्ष्यों के अनुसार बुन्देलों की उत्पत्ति ब्राह्मण वर्ण से प्रमाणित होती है।

इतिहास में वर्ण परिवर्तन, जाति परिवर्तन अथवा धर्म परिवर्तन कोई असामान्य घटना नहीं है। सैनिक वृत्ति से अनेक ब्राह्मण परिवारों ने राजसता पर अधिकार किया है। सिंध का शासक चच ब्राह्ममण था,जिसने अरब सेनापति अब्दुल अजीज को 711 ई० में मार डाला था, [१७] मुहम्मद बिन कासिम द्वारा पराजित सिंध का शासक दाहिर भी ब्राह्मण था। [१८] हेंगसांग [१९] ने चिचिटो के शासक को ब्राह्मण बताया है। पूर्व मध्ययुग में अनेक ब्राह्मण कुलों का वर्ण परिवर्तन हुआ। मालवा के परमार वशिष्ठ गोत्री ब्राह्मण थे। [२०] चौहानों, [२१] मुहिलों, [२२] मण्डोर के प्रतीहारों [२३], पल्लवों [२४] और कदम्बों [२५] की उत्पत्ति ब्राह्मण वर्ण से हुई। इसी परिवर्तन के कारण ब्राह्मक्षत्र की अवधारणा का विकास हुआ। गुहिलों, सेनों और परमारों को अभिलेखों में ब्रहमक्षत्र कुलीन कहा गया है। इस प्रकार जो ब्राह्मण , शासक अथवा सैनिक बन गये और क्षत्रिय कहलाने लगे। अत्रि स्मृति एवं मिताक्षरा में इन्हें क्रमश: क्षत्र-ब्राह्मण और राज ब्राह्मण कहा गया है। तत्पश्चात इन्हें ब्रहमक्षत्र भी कहा जाने लगा।

पूर्व मध्ययुगीन सभी राजवंशों का क्षत्रित्व सर्वथा असंदिग्ध नहीं है। उल्लेखनीय है कि घटियाला अभिलेख [२६] में प्रतीहारों के मूल पुरुष हरिश्चन्द्र को ब्राह्मण कहा गया है। इसीप्रकार सोमेश्वर के बिजौलिया अभिलेख [२७] तथा सुन्धा पहाड़ी अभिलेख [२८] में चाहमान शासक सामन्तराज को विप्रश्री के गोत्र में उत्पन्न बताया गया है। यह भी उल्लेखनीय है कि परमार वाक्पति द्वितीय के राजकवि हलायुध [२९] ने अपने आश्रयदाता नरेश गुंज का ब्रह्मक्षत्र कुलीन कहा है और इसी प्रकार चाटस् अभिलेख [३०] गुहिलों को तथा बल्लालचरित [३१] सेनों को ब्रह्मक्षत्रकुलीन कहता है। पल्लवों [३२] और कदम्बों [३३] की उत्पत्ति भी ब्राहमण वर्ण से हुई है। मत्स्यपुराण [३४] में ब्रह्मक्षत्र परम्परा की ओर संकेत करते हुए कहा गया है। कि ब्रह्मक्षत्र की योनि कलियुग में राजाओं की क्षेमकरी संस्था बनकर देवर्षियों द्वारा सत्कृत होगी। उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यह असंभव प्रतीत नहीं होता कि कतिपय ब्राह्मण कुल राजसत्ता से सम्बद्ध होने के कारण क्षत्रियवर्ण में सम्मिलित हो गये। इस प्रकार जो ब्राह्मण शासक अथवा सैनिक बन गये, वे क्षत्रिय कहलाने लगे।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि बुन्देलों की उत्पत्ति का सूर्य अथवा चन्द्रवंशी सिद्धान्त ऐतिहासिक साक्ष्यों से अप्रमाणिक प्रकल्पित और तथ्यहीन है। यह सिद्धान्त उनके नाम के साथ परवर्ती काल में जोड़ा गया। इसी प्रकार उनका जातिगत बुन्देला नाम का उल्लेख प्रतापरुद्र की प्रशस्ति में न होने के कारण परवर्ती प्रतीत होता है। इस क्षेत्र में विन्ध्यपर्वत श्रृंखलाएं फैली होने के कारण यह विन्ध्येलखण्ड कहलाता था, जो विकृत होकर बुन्देलखण्ड कहलाने लगा और यहां पर शासन करने वाला राजवंश बुन्देल वंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

संदर्भ:

1 वीरसिंहदेवचरित, 2, 22-23

2 छत्र प्रकाश, पृ० 3-4

3 'श्रीमहाराजाधिराज काशीश्वर श्री छत्रसालस्य' दमयन्ती दर्पण, पृ० 37-

4 राजबली पाण्डेय, गोरखपुर जनपद और उसकी क्षत्रिय जातियों का इतिहास पृ 217-18

5 राठौडों का इतिहास, पृ० 16

6 हिस्ट्री आफ हिन्दू मेडिवल इण्डिया, खण्ड 3, पृ०217 तथा आगे हिन्दू भारत का अन्त पृ० 334 तथा आगे।

7 काशी का इतिहास, पृ० 113

8 उत्तर भारत का राजनीतिक इतिहास, पृ 349

9 हिस्ट्री आफ कन्नौज, पृ० 297-98

10 मदनपाल का रहन ताम्रपत्र, इडि० एण्टि, खण्ड 18 पृ०15 इंहिक्वा, 1949, पृ० 32-34

11 वही, खण्ड 18, पृ० 15.

12 गोविन्दचन्द्र का दान बुजुर्ग ताम्रपत्र, एपि० इडि०, खण्ड18, पृ० 218-23 चन्द्रदेव का चन्द्रावती ताम्रपत्र वही खण्ड,14, पृ० 193.209,कुमारदेवी का सारनाथ अभिलेख, वही पृ० 318-19 जयति गाहड़वाले क्षत्रवंश प्रसिद्धेउजनि नरपतिश्चन्द्र नामा।

13 पुराणपुरुषध्यानैक धीमान भूदत्रिः सोम पवित्रिताधरपुटः क्षत्र्याहृयो भूत्ततः प्राग्धारा, खण्ड 9, पृ 152 पं० 3

14 मोतीचन्द्र, काशी का इतिहास, अध्याय 13.26. एपि.इण्डि. , खण्ड 9, पृ० 210

15 अक्ष्णोडत्रि, 3.12.24

16 द्रोणपालो नरपालरत्नम्। क्षमं ब्राह्मण रक्षायांक्ष्माय क्षात्रं महन्मह श्लो.।12

17. इलियट-डाउसन, खण्ड, पृ० 131, 182

18. ब्रिग्स, फिरिश्ता, खण्ड, पृ० 15

19. वाटर्स, खण्ड 2, पृ०251

20. वाक्पति द्वितीय के राजकवि हलायुध ने अपने आश्रयदाता नरेश को ब्राह्मण कहा है- ब्रह्मक्षत्र कुलीनः समस्त सामन्त चक्रनुत वर्णः। सकल सुकृतैक पुञ्जः श्रीमान मुञ्जनिश्चरं जयति।। पिंगलसूत्र वृत्ति, अ० 4 पृ०, 49,4:13

21. अर्ली चौहान डाइनेस्टीज, पृ० 9 तथा आगे।

22. इंहिक्वा०, खण्ड 28, पृ० 93 तथा आगे।

23. विप्रः श्रीहरिचन्द्राख्यः पत्नी भद्राच क्षत्रिय।
तास्यां तु ये सुता जाता प्रतीहारांश्च तान् विधुः।। एपि०इडि०, खण्ड 18, पृ० 95

24. जायसवाल, हिस्ट्री आफ इडिण्या, पृ० 225

25. एवि० इडि०, खण्ड 16, पृ० 272, खण्ड 20, पृ० 133

27. वही, खण्ड 9, पृ० 70, श्लो० 4

28. विप्र श्रीवत्सगोत्रेऽभू भूदहिच्छत्रपुरे पुरा।
सामन्तों अनन्त सामन्तः पूर्णतल्ले नृपस्ततः।। वही, खण्ड 9,पृ०79

29. ब्रहमक्षत्रकुलीनः समस्त सामन्तचक्रपूत चरणः।
सकलसुक्रतैकपुंजः श्रीमान मुंजश्चिरं जयति ।।4. 19. पिंगलसूत्रकृतिपुंज, अ० 4, पृ० 49

30. इंहिक्वा , खण्ड 28, पृ० 93 तथा आगे।

31. बल्लाल चरित, पृ० 36.

32. जायसवाल हिस्ट्री आफ इण्डिया, पृ० 225,

33. एपि० इण्डि०, खण्ड 16, पृ 272, खण्ड 20, 133.

34. ब्रह्मक्षत्रस्य योनिवशी देवर्षि सत्कृतः।
क्षेमकं प्राप्य राजानं संस्था प्राप्स्यति वैकलौ ।50. 88.

-ट्रेजरी रोड, पलटन मस्जिद
के पास, नौगांव (छतरपुर)
Mob. 9424911221

एक पाठकीय प्रतिक्रिया

-डॉ. महेन्द्र सिंह तोमर

बुन्देली बसन्त पत्रिका का १६ वाँ वार्षिक अंक डॉ. बहादुर सिंह परमार, द्वारा मुझे उस समय समीक्षार्थ भेंट किया गया, जब में दिनांक 03.04.2015 को बसारी ग्राम में आयोजित बुन्देली ख्याल साहित्य के प्रवीण मनीषी सेठ राघवदास निवासी गुरसराय के सम्मान समारोह में उपस्थित होने जा रहा था।

पत्रिका का आद्योपान्त अध्ययन करने पर पाया कि सभी श्रेष्ठतर मनीषियों ने गद्य व पद्य के नायाब नमूने प्रस्तुत किये है। कुछ आलेख बुन्देली विभाषा में दृष्टिगत हुए। खड़ी बोली के लेखकों ने अपनी अपनी गद्यात्मक शैली को जितना मुखर किया है, उसको चिंतन का अद्वितीय स्वरुप कह सकते हैं इस संदर्भ में यहाँ यह कथन समीचीन होगा कि यहाँ डॉ. रामनारायण शर्मा जैसे विद्वान लेखकों की कलमें साकारतः अवतरित हुई हों, उस पत्रिका के संयोजन की महिमा मीमांसा करने का अभिप्राय शेष नहीं रहता है।

सारभूत लेखों व रचनाओं से ओतप्रोत यह पत्रिका स्वयं में एक अनूठी राष्ट्र धारा की पत्रिका है। इस का आवरण पृष्ठ अत्यंत मनोहारी है। जहाँ आलेखों के वाक्य-विन्यासों में चिंतन छवियों की उपस्थिति लेखकों के अंतर विभाविम्बों को स्पष्टतः रूपायित करती है, वहीं मनोहारी अभिव्यिक्तियाँ कितनी सरस व सौम्य है कि वे पाठकों के रसासिक्त ह्रदय को रसाभूत कर देती हैं।

पत्रिका के अवलोकन दौरान पं. राजकुमार पुजारी कृत लामगीत से मैं इतना अभिभूत हुआ कि मेरी ह्रदय वीणा का प्रत्येक तार झंकृत होने लगा था। यह मात्र एक उदाहरण है। वैसे पत्रिका में नामित सभी मनीषीगण काव्य अंतरिक्ष के आलोक पुंज नक्षत्र हैं। सभी मनीषियों द्वारा प्रकट किये गये अंतः उद्‌गारों में आलंकारिक आभा प्रदीप्तमान हैं।

लोकनाट्य की परंपरा नामक शीर्षक से माननीय श्री अजीत श्रीवास्तव एडवोकेट टीकमगढ़ ने अनूठे प्रश्नों को उदभूत कर प्रत्युत्तरों से समाधनित भी किया है। उल्लेखनीय है कि सभी साहित्यकारों की गुणावली का विवेचन कर पाना संभव नहीं है। केवल यही कहा जा सकता है कि सभी गुणीजनों की भाववलियों में चिंतन की सुगंध आलोड़ित है जिस सें ऐसा प्रतीत होता है कि मानो काव्य का अंत भाग वैभिन्नय छंद पुष्पाकों के रसों से सारगंधित हो उठा हो।

विशेष बात यह है कि इस के मात्र आवरण पृष्ठ के ही अंतः भाग पर विज्ञापन का स्वरुप परिलक्षित होता है जिससे यह स्वमेव प्रमाणित है कि पत्रिका का उददेय अर्थोपार्जन नहीं बल्कि साहित्य के सृजन व समर्पण का भाव निहित है।

अनुक्रमाणिका इस तथ्य को स्पष्ट निरूपित करती है कि बुन्देली को खड़ी बोली के समानान्तर खड़े रखने का उपक्रम किया गया है। पत्रिका के अंत में प्रस्तुत संस्था की साफ सुधरी छवि की गवाही तथा पदाधिकारियों की प्रगाढ़ संनिष्ठा की ओर भी पावनतम संकेत दे रही है।

अंत में, निम्न दोहा सेवार्पित है-

पावनतम अनुध्येय जब-रखे समर्पण पाँव।
तब ही जन कल्याण तल-बसे मार्दवी गाँव।।

निदेशक, सौरभ साहित्य संस्थान उ.प्र.
गुरसराय, जिला-झाँसी

हनुमत प्रसाद रचित हनुमान अष्टक

डॉ. उदय शंकर दुबे

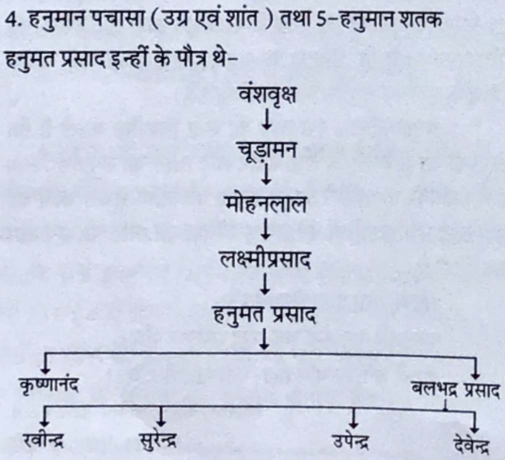
बुन्देलखण्ड भारत का हृदय स्थल है। यह क्षेत्र ऋषि-मुनियों की तपस्या स्थली है। आदि कवि बाल्मीकि का आश्रम इसी क्षेत्र में है। गोस्वामी तुलसीदास को पवित्र चित्रकूट अत्यंत प्रिय था- "अब चितु चेलु चित्रकूटहि चलु तथा सब दिन चित्रकूट नीको लागत "। अपने निर्वासन काल में स्वयं मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने बारह वर्ष तक चित्रकूट में निवास किया था। इसी पवित्र भूमि पर त्रेता युग की सबसे बड़ी धर्मसभा जुटी थी जिसमें अयोध्या राज्य शासन का निर्णय हुआ था। संभवत: यही कारण है कि बुन्देलखण्ड के कवि पंडितों ने समय-समय पर रामकथा और हनुमान से संबधित छोटे-बड़े बहुत से ग्रंथों की रचना की । रामकथा लेखन की यह परंपरा आज भी जीवंत है।

गोस्वामी तुलसीदास के पश्चात् बुन्देलखण्ड के बहुत से कवियों ने पवन पुत्र हनुमान की यशगाथा का वर्णन किया। यही कारण है कि आज हमें बुन्देलखण्ड के कई कवियों द्वारा रचित हनुमत काव्य ग्रंथ प्राप्त है। इन कवियों ने विशेषरूप से हनुमत पंचक, हनुमत सप्तक, हनुमत षोडशी, हनुमान अष्टक,हनुमत पचीसी,हनुमान पचासा, हनुमान शतक, हनुमान विरुदाबली हनुमत पताका नामक ग्रंथों की रचना की। बुन्देलखण्ड स्थित चरखारी राज्य के निवासी हनुमत प्रसाद ने संवत् १९५७ वि. सन (१९००ई.) के लगभग हनुमान अष्टक नामक ग्रंथ लिखा, उनका यह ग्रंथ अपने ढंग का अनूठा ग्रंथ है। इस अष्टक में कवि ने हनुमान का यश वर्णन करने के साथ काग मैथुन दर्शन के कारण होने वाले पाप (दृष्टि दोष) के निवारण की प्रार्थना की है।

कवि हनुमत प्रसाद मिश्र चरखारी के प्रसिद्ध कवि आचार्य मोहनलाल मिश्र के वंशज थे। मोहनलाल मिश्र का समय संवत 1839 वि. से लेकर संवत 1944 वि. तक मान्य है। ये कवि होने के साथ तंत्र-मंत्र के आचार्य थे। इनके द्वारा हनुमान से संबंधित कई ग्रंथ उपलब्ध हैं। लिखेगए

1. हनुमत अष्टक, 2-हनुमत रोग हरण षोडशी,3-हनुमत पचीसी
4. हनुमान पचासा (उग्र एवं शांत) तथा 5-हनुमान शतक

हनुमत प्रसाद इन्हीं के पौत्र थे-



चरखारी राज्य की ओर से मोहन मिश्र को गुरुदेव की उपाधि मिली थी। अत: उनके वंशज अपने नाम के साथ गुरुदेव शब्द प्रयोग करते आ रहे हैं। (दृष्टव्य-बुन्देलखण्ड के अज्ञात रचनाकार-लेखक-डॉ० गंगाप्रसाद गुप्त बरसैंया, सहयोगी-उदयशंकर दुबे सार्थक प्रकाशन-100 ए गौतमनगर-नई दिल्ली, सन् 2002 ई. में पृष्ठ-125-143 पर प्रकाशित श्रृंगार सागर के रचायिता मोहन लाल मिश्र: समय और साहित्य।)

हनुमत प्रसाद रचित हनुमान अष्टक में दो दोहा और आठ कवित्त छंद कुल मात्र दस छंद हैं प्रथम दोहे में कवि ने हनुमान की यशगाथा का वर्णन किया है तथा कवित्त छंदों में हनुमान के ऐश्वर्य और वीरता का बखान करते हुये-"दोष काग मैथुन कौ दूर कीजे, यह वर दीजे हांत जोर सीस नाऊं मैं "। की याचना की है। अंतिम छंद में ग्रंथ की फलश्रुति का कथन है-

यह अष्टक हनुमंत कौ पढ़ै सुनै नर कोय।
ताहि काग मैथुन जनित दोष कछू नहि होय।।

हिन्दी भाषा में रोग निवारण हेतु सर्वप्रथम गोस्वामी तुलसीदास ने हनुमान बाहुक की रचना की थी जब वे बाहु-पीड़ा से और बर-तोर से ग्रसित थे। रीतिकाल के आचार्य कवि प्रताप साहि ने नेत्र पीड़ा दूर करने के उद्देश्य से हनुमान बत्तीसी की रचना की थी कवि मोहन लाल मिश्र ने रोग निवारण हेतु हनुमत रोग हरण षोडशी ग्रंथ लिखा। अधिकतर कवियों रोग निवारण के लिये हनुमान की कीर्ति का गान किया है। किन्तु हनुमतप्रसाद अकेले कवि हैं। जिन्होंने काग मैथुन दर्शन के कारण होने वाले संभाव्य कष्टों से मुक्त होने हेतु पवनपूत हनुमान का स्मरण किया है।

प्राचीन भारतीय धर्म शास्त्र ग्रंथों में विशेष कर ज्योतिष और तंत्र शास्त्र में काग मैथुन के प्रकोप से बचने का उपाय बताया गया है किंतु वह जन सामान्य के लिये कष्ट साध्य व व्यय साध्य है। वीर हनुमान का पूजन करना सर्व सुलभ है अत: हनुमत प्रसाद द्वारा बताया गया हनुमान की पूजा का मार्ग सरल है। यहाँ पर उनके द्वारा रचित हनुमान अष्टक का पूरा पाठ यथावत प्रस्तुत है-

श्री महावीराय नम:

दोहा- जय जय सुवन समीर के महावीर रणधीर ।
सुमिरत संतत सहज ही भंजत भव भय भीर।।१।।

कवित्त-कीनौ राम काम राम दासन के काम,
फैलो सुयश सनाम धाम चौदहू मझारी जू।
अंजनी के लाल सदा जन प्रतपाल,
कृपा कीजे हो कृपाल करौ बहुत बहारी जू।
हनुमत्प्रसाद कौं सुजान निज दास
सदा तेरी करैं आस सुनौ विनय हमारी जू।।

कीजे पर तोष पोष पूरी पैज चोष,
यह मैटौ काग मैथुन कौ दृष्ट दोषभारी जू।।२।।
प्यारे रामराजा के, दुलारे मात अंजनी के,
भारे दुख टारे रखवारे हौ हमारे इष्ट।
कारज कपीश के सुधारे पूर पारे,
मारे निश्चर संहारे अक्ष आदिक निकृष्ट भृष्ट।
हनुमत्प्रसाद दास तैरौ है कनिष्ट नाथ,
मेरे हौ वरिष्ट कीजे पूरण सुदृष्ट इष्ट।
बहुत बलिष्ट काग मैथुन अनिष्ट,
दृष्ट दोष जो अरिष्ट महानष्ट ताहि कीजे नष्ट।।३।।
राम सौं मिलाय कैं सुकंठ शोक दूर कियौ,
सीता शोक मैटौ मार अक्ष मनुजाद कौं।
लखन जिवाय राम राय कौ बहाय शोक
मिले धाय आय कविराय अंगदाद कौं।
पूजौ आश सुयश प्रकाश रामदास,
एक तैरो बल श्वास दास हनुमतप्रसाद कौं।
होय जो अरिष्ट काग मैथुन के दर्शन तैं,
ताकौं वेग मैटौमन के विषाद कौं।।४।।
दास पै करोर भांत कीजे कृपा कोर,
कवि केशरी किशोर वर जोर वीर वंका तूं।
दीन,दुखी दासन के दुसह दुरित दल,
दांहन कौं द्रुत ही दवानल दमंका तूं।
हनुमत्प्रसाद अनुरक्त भक्त कारज मैं,
प्रगट प्रशस्त वेग जैसें सिंधु नंका तूं।
तैंसें काग मैथुन के दर्शन कौ दोष दूर---
कीजे चूर-चूर मैटो भूर मन शंका तूं।।५।।
बल पुंज पंजन सौं गंजन गलीय गर्व,
भव भर्म भंजन प्रभंजन के प्यारे पूत।
कवि कुल कंजन कौ रवि सम रंजन,
मुनीष मन मंजन निरंजन रमेश दूत।
हनुमत्प्रसाद हनुमान हौ हठीले
हियैं हर्ष वरसीले हौ यशीले जक्त मै अकूत।
मैटौ काग मैथुन कौ दृष्ट दोष दास पोष,
विनती अदोष मेरी कान दै सुनौ बहूत।।६।।
जाममाली मार डारौ-अक्ष कौं पछार डारौ,
कालनेम दुष्ट कौं संहार डारौ छिन मैं।,
गहि अहिरावण कौ चरण चपेट दल
रावण दपेट बल भारी हतौ जिनमैं।
हनुमत्प्रसाद दीनदास की फिराद सुनौ,
भर अहिलाद राखैं आपकौ ही प्रिन मैं।
काग कृत मैथुन के दर्शन कौ दोष-चोष,
चुटकी सै चूर कीजे जौ है कहौ छिन मैं।।७।।
वीर वर बांकुरे हौ विपन बिहारी बड़े,
विर दै बढावत हौ विसे वीश बलवंत।
वालब्रहम चारी हौ, विसेष वेद विदयानिधि,
विसद बहार वारि वारिद से वरसंत।
हनुमत्प्रसाद सिया राम के सलौने दास,
सांचे शरणागत कौ सब सुख सर संत।
दोष काग मैथुन के दर्शन कौ चूर कीजे,
धूर कीजे दूर कीजे दै दै हांक हनुमंत।।८।।
अंगद के यार निराधार के अधार प्यारे,
अंजनी कुमार को निहार कै मनाऊ मैं।
दायक अनंद के, मुसाब रामचंद के,
दयाल दीनबंधु के विलंद गुण गाऊं मैं।
हनुमत्प्रसाद कौं अपार अहिलाद दीजे,
कीजे कृपा कोर नाथ विनय सुनाऊं मैं।
दोष काग मैथुन दर्शन कौ दूर कीजे,
यह वर दीजे हांत जोर शीश नाऊंमैं।।९।।
दोहा-यह अष्टक हनुमंत कौ, पढै सुनै नर कोय।
ताहि काग मैथुन जनित दोष कछु नहि होय।।१०।।
इति श्री हनुमान जू कौ अष्टक संपूर्ण।।
(हनुमान अष्टक की प्रति कवि के वंशज गुरुदेव रवीन्द्र कुमार मिश्र चरखारी-हमीरपुर से प्राप्त हुई थी अतः लेखक उनके प्रति आभारी है।)

-साहित्य कुटीर, कठारी बाजार
पो०-खमरिया जि.-संत रविदास नगर
(भदोही-उ.प्र.) पि. 221306

बुन्देली हास्य गीत

-नवलकिशोर सोनी 'मायूस'

सजकें गोड़ मूँड़ सें मोरी आफत करहै लाँगुरिया।
मोरी रातन की लौ तैंतौ निदिंया हरहै लाँगुरिया।।
निंगतन में तोरी पैजनियाँ छुन्न-छुन्न जब करहैं।
गैलारन के मन सुन सुनकें झुन्न झुन्न तब करहैं।।
तोरो ऐसो सजबो मोखाँ भौत अखरहै लाँगुरिया।
इयै देख कें जियरा सबको बँदरा जैसो बमकै।।
मोरे घाँई काउको मन धीरज नाँ धरहे लाँगुरिया।
जा तौ रइ है आज पैरकें जा नौंनी करदौनी।
हो ना जाबै गैल घाट में कऊँ कौनऊं अनहौनी।।
जाँ तैं जा रई ताँसे डेड़ कोस लौ घरहै लाँगुरिया।।
बनो ठनों देखें जब ऐसो सब तोखाँ पछयाहैं।
बिनइँ कामके कौनउँ मिससें तोरे ऐंगर आहैं।।
कौनउँ-कौनउँ द्वारे सें टारो नाँ टर है लाँगुरिया।
का करनें गाने गुरिया को ऐसइ नौंनी लग रइ।।
कब की इतै आइ गइ हो गइ तोइ लगत है नइ नइ।
मोरी छाती पै तैं मूँग कबै लौ दरहै लाँगुरिया।।
पैलाँ जौन हतो अब सुनके ओइ जमानो नइयाँ।
कीकी नियत बदल जाबै कब कछू ठिकानो नइयाँ।।
तोखाँ गाँव पुरा सब देख देखकें जरहै लाँगुरिया।
गाने गुरिया सें बड़ जैहै सोच चोर भँड़यन को।।
मौका पाकें बिड़ परहै तौ का करहै नँठयन को।
तोरे संगै जो 'मायूस' विचारो मरहै लाँगुरिया।।

-कोतवाली के पीछे, छतरपुर (म.प्र.)
मो. 9993693226

जन्मोत्सव के बिसरते लोकगीत

– डॉ. कुंजीलाल पटेल 'मनोहर'

बुन्देली लोकजीवन में जन्मोत्सव के अन्तर्गत आयोजित कार्यक्रम को चौक करना, पानी भरना, झूला चँगेर आना, कुँआ पूजना, गगरी उतारना, बधइया आना आदि अनेक नामों से जाना जाता है। जन्मोत्सव में जच्चा के मायके दूब व लडुआ भेजे जाते हैं। तदनुसार मायके वाले जच्चा और बच्चा सहित परिवार के अन्य लोगों के लिए अनेक प्रकार के वस्त्राभूषण, अनाज बगैरह 'पथ' के साथ लाते हैं। जच्चा के ननद-ननदेऊ की तरफसे झूला-चंगेर तथा जच्चा-बच्चा के लिए वस्त्राभूषण लाये जाते हैं। चौक के दिन सभी मेहमानों को आमंत्रण देकर निमंत्रित किया जाता है। जन्मदिन से कुँआ पूजन तक लगातार लोकगीतों दादरों, सोहरों आदि का गायन होता है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण गीत कुँआ पूजन के माने जाते हैं। प्रस्तुत आलेख के माध्यम से केवल उन्हीं पारम्परिक लोकगीतों को संकलित कर संरक्षित करना ही हमारा मूल उद्देश्य है। क्योंकि आधुनिकता की आपाधापी एवं विदेशी साँस्कृतिक अंधानुकरण से हमारी नई पीढ़ी इनसे विमुख हो रही है।

बुन्देलखण्ड के ग्रामीण अँचलों में आयोजित होने वाले कार्यक्रम चाहे वे साँस्कृतिक हों या सामाजिक, उन्हें सम्पन्न कराने में महिलाओं की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है। जनपदीय लोकजीवन में महिलाओं की एकजुटता छोटे से छोटे आयोजन को बड़े से बड़ा रूप देकर उसे मनोहारी स्वरूप प्रदान करना उनके लिए सहज ही नहीं सरल भी है। नारी समाज की सामूहिक सहभागिता हमारी लोकसँस्कृति की पहिचान और परख दोनों हैं। महिलाओं की सक्रिय भागीदारी के कारण बुन्देलखण्ड में आये दिन लोक परम्पराओं के लिए कुछ न कुछ होता ही रहता है। गाँव-पुरा में किसी के यहाँ नया मेहमान आने वाला है, इसकी सारी जानकारी पास-पड़ौस की महिलाओं को पहले से ही रहती है। गाँव की महिलायें पानी भरने कुँआ पर जाती हैं और किसके घर में क्या हुआ या होने वाला है, इसकी जानकारी के लिए महिलाओं के आपसी वार्तालापी सम्वाद किसी आधुनिक मीडिया से कम नहीं, सब कुछ एक ही जगह से पता कर लेती हैं।

मुहल्ले में किसी के घर में वंशवृद्धि हुई या होने वाली है, शीघ्र ही इसका बुलौआ लग जायेगा, फ्लाने के यहाँ दादरन या सोहरन का बुलौआ है। निर्धारित समय पर महिलाओं की महफ्लि मय अखौती के जमने लगेगी। थोड़ी ही देर में ढोलक की थाप और लोकगीतों के आलाप से सारा वातावरण गुंजायमान होने लगता है। लोकसँस्कृति में मंगलाकाँक्षाओं का प्रचलन प्राचीन काल से ही प्रचलित है। इसलिए हर उत्सवी और मंगलकारी आयोजन को भगवान की कृपा माना गया है। आने वाली हर विभूति का स्वागत हम पारंपरिक लोकगीत से दैवीय आगमन की अभिलाषा से गा बजाकर करते हैं-

मइया मोरे अँगनें आई निहुरकें, मैं पइयाँ लागौं।
जो मैं जानती के मइया मोरी आहैं,
ढिगधर अँगन लिपाती निहुरकें, मैं पइयाँ लागौं।
सोनें पिढइयाँ मइया आसन डारौं,
अँचरन चरन पखारौं निहुरकें, मैं पइयाँ लागौं।
कहा देख मइया अँगनें आई,
कहा देख मुसक्यानीं निहुरकें, मैं पइयाँ लागौं।
दूधा देख मइया अँगने आई,
पूता देख मुसक्यानी निहुरकें, मैं पइयाँ लागौं
दूधा तौ मइया मोरे सींके धरे हैं,
पूता परे पलना में निहुरकें, मैं पइयाँ लागौं।

दिन में नाऊ की सोर उठी, लीपा-पोती हुई और संध्या के समय कुँआ पूजना तथा पानी भरने का कार्यक्रम सबको मालूम हो जाता है। मुहल्ले में पानी भराई का बुलौआ लगा, बुलौआ वालीं आईं और गाँवघर की किसी सयानी दादी के साथ खवासन के निर्देशन में प्रसूता को सजाधजा पानी भरने की तैयारी कर महिलाओं का कुँआ पूजने तथा पानी भरने के लिए प्रस्थान होने लगता है। मार्ग में जाते समय महिलाओं द्वारा जो लोकगीत मधुर स्वरलहरी में गाया जाता है, इस प्रकार हैं-

ऊपर बदर घर्रायें हो, तरें गोरी कों निकरीं।
जाय जा कइयौ उन राजा ससुर सें, अँगना में कुँइया खुदाँय हो,
तुम्हारी बहू पानी कों निकरी।
जाय जा कइयौ उन जेठ बड़े सें, चँदन पाटें डराँय हो,
तुम्हारी लौरी पानी कों निकरी।
जाय जा कइयौ राजा ननदेऊ सें, सोने की गगरी मँगायें हो,
तुम्हारी सरज पानी कों निकरी।
जाय जा कइयौ उन ममिया ससुर सें, सोने की कुँडरी मंगायें हो,
तुम्हारी बहू पानी कों निकरी।
जाय जा कइयौ उन लौरे देवर सें, रेशम की डोरी मँगायें हो,
तुम्हारी भौजी पानी को निकरी।

लोकगीत गाती हुई महिलायें कुलवधु को लेकर कुँआ पर पहुँचती हैं। विधि-विधान से कुँआ का पूजन किया जाता है। प्रसूता के आँचर से कुँआ में दूध निचोकर वरुणदेव से यह अपेक्षा की जाती है कि जैसे कुँआ का पानी अक्षुण्य है, वैसे ही जच्चा के आँचर में बच्चा के लिए दूध की कभी कमी न रहे। इसके बाद पानी भरते समय एक और लोकगीत महिलाओं द्वारा समूहस्वरों में गाया जाता है। लोकगीत की कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं-

गर्रा पै डोरी डार गुइयाँ,
डार गुइयाँ और डराव गुइयाँ। गर्रा ....
गर्रा पै डोरी तब नीकी लागै,
सोने की गागर होय गुइयाँ। गर्रा ....
सोने की गागर तब नीकी लागै,
रेशम की डोरी होय गुइयाँ। गर्रा ....
रेशम की डोरी तब नीकी लागै,
पतरी सी धनियाँ होय गुइयाँ। गर्रा ....
पतरी सी धनियाँ तब नीकी लागै,
सैयाँ रसीले होंय गुइयाँ। गर्रा ....
सैंया रसीले तब नीके लागैं,
ओली में ललना होंय गुइयाँ। गर्रा ....

पानी भरने के बाद पनिहारी घर के लिए लौटती हैं। रास्ते में आते समय महिलायें सामूहिक स्वरों में एक और पारम्परिक लोकगीत गाती हैं। इस लोकगीत की कुछ पंक्तियाँ उदाहरित हैं-

फुलबगिया में बरसें मेह, गोरी तौ भींज गई गलियन में।
गोरी तौ भींज गई भींजै जानदेव, घुंघटा तौ इनकौ लइयौ बचाय,
गोरी तौ भींज गई गलियन में।।
घुंघटा तौ भींज गओ भींजै जनदेव चोली तौ इनकी लइयौ बचाय,
गोरी तौ भींज गई गलियन में।।
चौली तौ भीज गई भीजै जान देव, जुवना तौ इनके लइयौ बचाय,
गोरी तौ भींज गई गलियन में।।

यह लोकगीत गाते-गाते पनिहारी को लेकर सभी महिलायें एक और लोकगीत 'धीरे चलौ पनिहारी गगर छलके ना तुमारी' गाते हुए घर आ जाती हैं। अब गगरी उतारने की बारी आती है। गगरी देवर को उतारना होती है। गगरी उतराई में भाभी द्वारा देवर को नेंग में कुछ देना पड़ता है। गगरी उतारने के पूर्व बुन्देलखण्ड में एक पारम्परिक लोकगीत महिलाओं द्वारा समूह स्वरों में गाया जाता है। जिसकी कुछ पंक्तियाँ उदाहरण स्वरूप यहाँ प्रस्तुत हैं-

हम पैरें मूँगन की माला, हमारी कोऊ गगरी उतारौ।
कहाँ गयेरी तोरे सइयाँ-गुसइयाँ, कहाँ गयेरी बारे देवरा,
हमारी कोऊ गगरी उतारौ।
हाटै गयेरी सइयाँ-गुसइयाँ, खेलन गयेरी बारे देवरा,
हमारी कोऊ गगरी उतारौ।
एक हाँ सें गगरी समारौ, दूजे से कुँडरी समारौ,
हमारी कोऊ गगरी उतारौ।।

द्वारे पर इस गीत की समाप्ति पर गगरी उतारी जाती है, कुछ और नेंगचार होते हैं, बुलौआ में आई महिलाओं को जन्मोत्सव की खुशी में बतासा या लड्डू बाँटे जाते हैं। मेहमानों तथा इष्ट मित्रों को भोजन कराये जाते हैं।

बुन्देलखण्ड में इस प्रकार के और भी गई लोकगीत ग्रामीण अंचलों में गाये जाते हैं। लेकिन आधुनिकता के दुष्प्रभाव ने हमारे मौलिक और पारस्परिक इन रीति रिवाजों को धीरे-धीरे खत्म कर दिया है। आधुनिक शिक्षा प्राप्त एकल परिवार प्रिय आजकल की बहू-बेटियों को परम्परा की इस विरासत का अनुकरण करने में शर्म लगती है। जबकि सामूहिकता ही हमारी संस्कृति का मूलमंत्र है, जिसे हम भूलते जा रहे हैं, इससे हमें अपने सांस्कृतिक वैभव के पतनोन्मुखी होने के संकेत नजर आ रहे हैं।

- परमज्योति, तिरछी गली,
रेडियो कॉलोनी के सामने, छतरपुर (म.प्र.)

हास्य कविता

-करीम खाँ 'करीम'

ये देश है बाँकें वीरों का तुम गीत पराये गाते हो।
औ चलत गैल में अपनी ही परछाँई से डर जाते हो।।
ऊँसै तो तुम झूम झूमके खूबई आल्हा गाते हो।
परसई शाम सें बिलन में अपने चुखरा से घुस जाते हो।। ये देश...
उनके घर बन्दूक बिदेशी अनगिन बर्छी भाला है।
तुमने रखवाली को अपनी देशी कुत्ता पाला है।।
फिर भी कुत्ता बनकर उनकी रखवाली को जाते हो।.....ये देश
बेरोज नहीं तो कभऊँ तुम्हारे घर पे आके सो जाते।।
तुम बिना दाम के उनके घर ड्यूटी सी देने क्यों जाते।
ये चमचागीरी है भाई ब्योहार जिसे तुम कहते हो।।
यहाँ राम से रावण, कंस किशन से, राक्षस भी दहलाते थे।
यहाँ वीर शिवाजी, अकबर जैसे शासक देश चलाते थे।।
तुम चमचन के ही चमचा बनकर कोरी अकड़ दिखाते हो। ये देश
अशफाक वीर ना डरा किसी से दुश्मन को ललकारा था।।
और भगत सिंह ने अंग्रेजों को रेद रेद कर मारा था।
तुम मक्कारी चतुराई से लोगों से गाँव छुड़ाते हो।। ये देश.....
धनवान यहाँ जो पहले से धन उनपर बढ़ता जाता है।
और गरीबों के काँधें पे कर्जा चढ़ता जाता है।।
तुम चंदा भी मंदिर का प्यारे, बिना डकारे खाते हो। ये देश...
कुछ मंत्री के दुम छल्ले कूकर सी पूँछ हिलाते हैं।
कुछ सड़क छाप नेता का बस्ता, बगल में दाबे जाते हैं।।
तुमहऊँ काऊ की गहो पनहैयाँ काये 'करीम' शरमाते हो।
ये देश है बाँकें वीरों का तुम गीत पराये गाते हो।।

-खकसीस, जालौन उ.प्र.
मो. 9005207772

दो गज़लें

-प्रेम प्रकाश चौबे 'प्रेम'

भाजी मूरा खा नई पा रये
दूध, दही घी कां सें आ रये
पढ़ रै औलादें अनगई हैं
नै है फीस पढ़ा नईं पा रये
हम गरीब है जा तो सई है
पैसा एक बचा नईं पा रये
कै रये सब भारत गरीब है
हम जा बात पचा नईं पा रये
'प्रेम' जिंदगी में मन कैसों
पी नई पा रये, खा नईं पा रये

वोट को लड़आ हाथ हमारे
पूंछ हला रये कित्ते सारे
जीत गये तो फिर का आहो?
पाँच साल में कबे पधारे?
रमुआ, माधो पंचम, राधे
सबरे ठाडे हमरे द्वारे
कोउ लएँ मुरगा, कोउ लएँ दारू
जैसे नौकर होंय हमारे
'प्रेम' सबै बरसाती मेंढ़क
कबे दिखत बरसात बिना रे

-ब्राह्मण मुहल्ला, कुरवाई
लि-बिदिसा (म.प्र.)

राय प्रवीन

-प्रभुदयाल श्रीवास्तव 'पीयूष'

ललित लाड़ली लली भइ, चंदा की उनहार।
सो सुख लाल लुहार कौ, दमकत देरी द्वार।।
पुनियाँ अपने पिता संग, आइ ओरछा धाम।
डार मधुर सुर मोहनी, करो उजागर नाम।।
मंदिर में गारइँ भजन, सुनी सुरीली तान।
इंद्रजीत महराज के, तृप्त न होरए कान।।
सूरत अति मन मोहनी, कनक कमल कौ फूल।
नेह नदी में लहरियाँ, रइँ झूला सौ झूल।।
तन मन धन सब हार कें, लौट गए महराज।
अब लुहार की लली कौ, मन पै हो गऔ राज।।
पुनियाँ राय प्रवीन भई, जग जाहर भऔ नाव।
राय प्रवीन महल उनें, राजा ने बनबाव।।
नचत, रचत गावत मधुर, तिरबेनी सी धार।
बीना पानी सी करत, बीना की झंकार।।
कठिन काव्य के प्रेत लए, काव्य कला से जीत।
रूप, शील, मृदुगान सें, इन्द्रजीत मन मीत।।
काव्य नृत्य संगीत, में एकइ करै महान।
जे सब राय प्रवीन खों, मिले रूप संग आन।।
कीरत इनके गुनन की, अपने पंख पसार।
देर लगी नइँ पोंच गइ, दिल्ली के दरबार।।
नगर ओरछा में बसत, नारी दिव्य सरूप।
हैं जिनके प्रियतम पती, इन्द्रजीत सिंह भूप।।
गायन,वादन,नृत्य उर, सबइ गुनन की खान।
रूप राय प्रवीन कौ, कर नइँ सकत बखान।।
दिल्ली के दरबार की, बड़ी अनौखी सान।
बुलवालो परवीन खों, पठवादो फरमान।।
दूत आव है ओरछा, लै शाही आदेश।
इंद्रजीत महराज के, मन में भौत कलेश।।
जान बसत पिरवीन में, कैसें देबें जान।
बुंदेलन की आन पै, आँच न दैहे आन।।
इंद्रजीत के वदन में, रऔ है रोस समाय।
फिर फिर फरकत हैं अधर, हाँत तेग पै जाय।।
दिल्ली लौटो दूत जब, सुना दए सब हाल।
बादसाह ने ठोक दऔ, जुरमानों ततकाल।।
पोंचा दो पिरवीन सँग, रूपया एक करोड़।
नइँ तौ फिर जाने परै, नगर ओरछा छोड़।।

जुरमाने की खबर सुन, उड़ गए उनके होस।
राजा गुरू प्रवीन के, मन में भारी सोस।।
आफत आ गइ ओरछा, कैसें टारी जाय।
जे तीनउँ मिल बैठ कें, खोजन लगे उपाय।।
जा तै भइ पिरवीन अब, गुरू सँग दिल्ली जायँ।
काव्य कला सें शाह के, मन पै धाक जमायँ।।
जब दिल्ली दरबार में, पौंची राय प्रवीन।
पूर्ण चंद्र के ऊंगतन, भए तारे छबि छीन।।
लैन परीक्षा काव्य की, कर रए शाह सवाल।
छंद राय प्रवीन रच, दए उत्तर ततकाल।।
काहे खो ऊंचे उठे? का भऔ सम पै आय?।
काहे खों नैंचें झुके? कहौ हमें समझाय।।
ऊंचे उठ जीतो सरग, सम पै सब संसार।
विजै करन पाताल खों, झुक कें भए तैयार।।
धन्य राय प्रवीन तुम, धन्य तुमारौ धाम।
काव्य कला की का कने, करता शाह सलाम।।
जैसौ हमने सुनो तौ, है बड़ चड़ कें पाव।
मन खुस कर दऔ मांग लो, तुम इनाम मनचाव।।
विनय सुनों प्रवीन की, बादशाह धर ध्यान।
दिन दूनों निसि चौगुनों, बड़ै अपुन कौ मान।।
लायक नइँ मैं आपके, तन पवित्र अब नाँयँ।
बचन खुचन पातरन की, कउआ कुत्ता खाँयँ।।
जुरमानों हो माफ है, जेउ हमाब इनाम।
अज्ञा दै दो लौट हम, जायँ ओरछा धाम।।
जुरमानों भऔ माफ उर, मिलो भौत धन मान।
गुरू केशव संग ओरछा, करो प्रवीन पयान।।
दिल्ली कौ दिल जीत कें, लौटी राय प्रबीन।
इंद्रजीत महाराज की, बजी चैन की बीन।।
नगर ओरछा सज गऔ, बंद गए बंदन वार।
गेरउँ राय प्रवीन की, हो रइ जै जै कार।।

चित्रांश कालोनी, वर्मा शैल पैट्रोल पंप के
पास मऊ रोड टीकमगढ़ (म.प्र.)
पिन.472001 मो. 9179982221

बुन्देली लोक जीवन में नारी विमर्श

-पं. ओमप्रकाश बालकृष्ण तिवारी

अखिल विश्व में भारतीय संस्कृति के ही अन्तर्गत बुन्देली संस्कृति का अपना विशिष्ट स्थान और महत्व रहा है और हमेशा रहेगा भी। आज लोक जीवन में व्याप्त विभिन्न परम्पराओं एवं रीति-रिवाजों की परिपाटी बहुत प्राचीन है। यह रीति रिवाज एवं परम्परायें भारतीय संस्कृति के मूलाधार हैं। लोक जीवन की प्रत्येक गतिविधि प्रकृति के सानिध्य में पूर्ण होती है, इसीलिए प्रकृति की इस हलचल में मानव जीवन से लेकर वनस्पतियाँ तक प्रभावित होती हैं। बीज प्रस्फुटन से लेकर लहलहाते खेतों एवं फूलों फलों से लदे वृक्षों, कल-कल कर बहती हुई सरिताओं, कोयल की कूक, पक्षियों का कलरव सब कुछ लोक जीवन का अविभाज्य अंग है। क्योंकि जितना लोक जीवन हैं, उतना ही विशाल तो मानव है। मानव से बाहर लोक में कुछ भी शेष नहीं रहता इसीलिए तो वेद व्यास जी ने महाभारत में कहा है-

"गुह्यं ब्रह्म तदिदं ब्रवीमि, न हि मानुषाच्छ्रेष्ठतरं हि किंचित।"

अर्थात्- रहस्य ज्ञान की यह कुंजी तुम्हें बताता हूँ कि इस लोक में मनुष्य से बढ़कर कुछ भी नहीं है, तभी तो मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है। अगर हम निर्जीव की बातें छोड़ भी दे तो सजीव सृष्टि में पशु-पक्षी, जीव-जन्तु, कीड़े-मकोड़े आदि से भी इतर हाथ पैर और अनन्त संभावनाओं से पूर्ण, विचारयुक्त क्रियाशील मस्तिष्क से युक्त होने के कारण मनुष्य प्रकृति की सर्वोत्तम कृति है, चूँकि पूरी सृष्टि ही विचित्रताओं से भरी हुई है, इसे हम जितना जानते हैं, उससे कई गुना अंजान भी हैं यह रहस्य अत्यन्त गूढ़ है। जिसे जानने की हमारी उत्कंठा व जिज्ञासा बनी रहती है। मानव (स्त्री-पुरुष) की संतति को आगे बढ़ाने का कठिन किन्तु श्रेष्ठ कर्त्तव्य प्रकृति ने मातृत्व युक्त नारी के जिम्मे रखा है जो पुरुष को भी अपने गर्भ से उत्पन्न कर सृष्टि संचालन में ब्रह्मा जी की सहायता करती आ रही है, कहते हैं कि नारी की सफलता उसके मातृत्व मे है, क्योंकि नारी की स्वयं की संतान के बिना उसका जीवन रूपी घर-आँगन सूना रहता है। जो स्त्री माँ नहीं बन सकती उसे स्वयं भी अपना जीवन नकारा लगता है। बुन्देलखण्ड के जन जीवन में भी घर-परिवार में उसे यथोचित सम्मान नहीं मिलता है तथा कई बार तो उसे विभिन्न रूपों में प्रताड़ना एवं लाछन भी झेलने पड़ते हैं। दूसरी ओर बेटी पैदा होने पर भी उसे अपने परिवार में और न ही आज के तथा कथित सभ्य कहलाने वाले समाज में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। यहाँ तक कि आज तो बेटी को गर्भ से लेकर जन्म लेने तक के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। आर सरकार को तो "बेटी बचाओ अभियान" चलाना पड़ा है, और इसे प्रोत्साहन देने हेतु "लाड़ली लक्ष्मी योजना" भी चलाना पड़ी है, यह सब आज की उधार ली हुई आधुनिक सभ्यता और संस्कृति की दुहाई का परिणाम है क्योकि हमारी बुन्देली संस्कृति में तो यह मतभेद था ही नहीं, न ही हमारी वैदिक संस्कृति में भी कही देखने को मिलता है, यह सब तो सभ्यता के नाम पर फैल रहे नैतिक प्रदूषण का परिणाम है जिसने बेटी को इस उपेक्षा की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया है। आज के सभ्य समाज में तो बेटी का अस्तित्व ही खतरे में है क्योकि एक नहीं अनेक सामाजिक कुरीतियाँ आज बुन्देलखण्ड के कोने-कोने में नागफनी की तरह फैली हुई है इनके कॉटों से प्रतिदिन अनेक मासूम जिन्दगियाँ तार-तार हो रही हैं।

एक बार एक किसान बेटी के पिता ने एक व्यक्ति से पूछा-"क्या लड़की होना गुनाह है? उसने कहा-? किसान का माथा ठनका उसने पूछा-गुनाह क्यों है? उस व्यक्ति ने सीधा सा जबाब दिया-"समाज में दहेज का दानव जब तक जीवित रहेगा, तब तक बेटी का होना गुनाह माना जाता रहेगा।"

कदाचित इसीलिए आज भी हमारे बुन्देलखण्ड में भी पुत्र को ही सर्वाधिक महत्व दिया जाने लगा है। स्वयं मातायें भी जन्म को श्रेष्ठ मानती है और लड़की को पराई समझती है। पुत्र को वंशवृद्धिकारक माना जाता है, आज भी पितृ ऋण से मुक्ति हेतु पुत्र को प्रमुख माना जाता है। साथ ही आज लोक जीवन में भी जो कहावतें मिलती हैं वे भी पुत्र जन्म की बलिहारी का बखान करती है, जिनमें सर्वाधिक चर्चित-"दूधो न्हावो पूतो फलो" आशीर्वचन जो अमुक प्रकार से कहावत बन गया है इसमें पूत से तात्पर्य पुत्र से ही है। किसी भी सौभाग्यवती को भी आशीष देते समय पंडितों द्वारा भी-"पुत्रवती भव" कहा जाता है जबकि बुन्देलखण्ड के लोकजीवन में इस तरह की भेदभव पूर्ण परम्परा नहीं थी, जिस कारण यहाँ के पारम्परिक लोक गीतों में भी ऐसी पक्षपात पूर्ण भावना नहीं है और हमारी बुन्देली संस्कृति में भी संस्कारों पर विशेष जोर दिया गया है तथा देश काल बदलने के बाद भी इनकी मान्यता आज भी है, क्योंकि आचार्य गौतम, मारकण्डेय, जैमनी, सुमन्त, मनु, अंगिरा तथा वेद व्यास जैसे ऋषियों ने एवं आचार्य विनोवा भावे और महर्षि अरविन्द ने भी अपने-अपने मत रखे है, इनमें गौतम के अनुसार चालीस संस्कार कहे गये है और इनमें आठ आत्मीय गुणा मिलाकर इनकी संख्या अड़तालीस हो जाती है। सुमन्त ने पच्चीस तथा मनुस्मृति में बारह संस्कार कहे है चूकि महर्षि मृकण्ड़ के पुत्र महर्षि -मारकण्डेय जी का जन्म बेत्रवती के तट पर मरगांय जिला हमीरपुर में हुआ और भानुसुता काल भगवान यमुराज की बहिन यमुना जी के तट पर कालपी जिला जालौन में सत्यवती नाम की धीवर कन्या तथा ऋषि पाराशर के पुत्र महाभारत के रचयिंता कृष्णद्वैपायन वेद व्यास जी की जन्म स्थली है और इन स्थानों का संबंध बुन्देली भूमि से है इसलिये इनके द्वारा बताये गये सोलह संस्कार ही हमारे बुन्देलखण्ड के लोक जीवन में रचे बसे है क्योंकि कहा भी है-"यथा वेदे तथा लोके" अतः यहाँ के लोक जीवन में व्यास जी का शास्त्रमत सोलह संस्कार यथावत पाया जाना स्वाभाविक है, चूँकि हमारी बुन्देली भूमि सबसे प्राचीन है इस संबंध में कुण्डेश्वर-टीकमगढ़ से प्रकाशित "मधुकर" पत्रिका के वर्ष तीन अंक 17-18 जून 1943 के पृष्ठ 403-410 में श्यामा चरण "राय" सैशन्स जज बालाघाट के लेख बुन्देलखण्ड का भू-तत्व के अनुसार बुन्देलखण्ड की भूमि पैतीस-चालीस करोड़ वर्ष पुरानी है। उनके अनुसार यह भूमि "कैम्ब्रियन काल" से जल के ऊपर थल के रूप में बनी हुई है, क्योंकि आज जहाँ हिमालय है, गंगा-यमुना का मैदान है सुदूर अतीत में वहाँ उथला समुद्र था। किसी भूकम्प ने उस समुद्र को हिमालय और गंगा-यमुना के मैदान में बदल डाला, हालाँकि इसमें भी करोड़ों वर्ष लगे। इसलिये गंगा से नर्मदा और बेतवा पुरानी नदियाँ हैं और हिमालय से विन्ध्याचल और सतपुड़ा पुराने पहाड़ हैं। साथ ही टीकमगढ़ से प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका-लोकवार्ता के जनवरी 1946 के अंक में डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल के लेख-"महामहिम

लोक जीवन" में उन्होंने भी कहा है कि-"हमारा लोक जीवन बहुत ही विशाल और गहरा है। भारतीय इतिहास का कोई युग ऐसा नहीं जिसमें पुरातत्व की सामग्री शब्दों के रूप में लोक के जीवन" में कहीं न कहीं छिपी न पड़ी हो। किसी परत में वैदिक युग के शब्द घर किए बैठे हैं। कही श्रौत सूत्रों की शब्दावली आयुष्मती बनकर सुरक्षित है, कही गुप्तयुग की परम्पराएँ पहचान में आती है और कही मध्यकाल की धारा का स्पष्ट दर्शन मिलता हैं। इसी कारण हमारे बुन्देलखण्ड की संस्कृति भी इतनी ही प्राचीन है और संस्कृति में पुत्र-पुत्री के जन्म में भेद-भाव जैसी बातें नहीं है इसकी प्रमुख वजह है कि बुन्देलखण्ड का लोक जीवन युगों से इतना सतर्क रहा है कि भेद-भाव उसके किन्हीं भी संस्कारों में फटकने नहीं पाया।

जिसका प्रमाण है न जाने कब से लोक में अनुगुंजित पारम्परिक बुन्देली लोकगीत जो किसी महाकवि या समाजसुधारक की रचना नहीं है। वे तो समाज की अनुभूति परक ऐसी अभिव्यक्ति है जो प्राकृतिक नदी-झरनों अथवा बरसते हुए पानी की झड़ी के समान झड़े और सदाबहार होकर जनमानस के कंठों में सदा-सदा के लिए रम गए। यही कारण है कि हमारे यहाँ जो सोलह संस्कार बताए गए है। उनमें जन्म के पूर्व से लेकर बाल्यकाल तक सर्वाधिक संस्कार है, जिनमें जन्म के पूर्व तीन संस्कार है पहला गर्भाधान, दूसरा पुंसवन संस्कार और तीसरा है, सीमंत या सीमान्तोनयन इस शास्त्र सम्मत संस्कार को बुन्देलखण्ड में आगन्नो, सादें और चौक नाम से लोक जीवन में आज भी देखा जाता है। इस जन्म पूर्व के संस्कार में जो लोकगीत गाया जाता है उसमें सिर्फ पुत्र जन्म की ही आकांक्षा नहीं है यदि पुत्री ने जन्म लिया तो भी वह हमारे घर आँगन को गंगा-यमुना के रूप में पावन करेगी। गीत इस प्रकार है-

"अँगना में हरी-हरी दूबा, धिनोचिन केवरौ जू महाराज।
पहले पहर कौ सपनौ सुनों मोरी सास जू महाराज।
चंदा-सूरज दोई भइया आँगन बिच ऊरियो जू महाराज।
दूजे पहर कौ सपनो सुनों मोरी जिठानी जू महाराज।।
गंगा-जमुन दोई बैनें आँगन बिच बै रई जू महारज।
तीजे पहर कौ सफ्नो सुनो मोरी देवरानी जू महाराज।।
राम लखन दोई भइया आँगन बिच खेल रये जू महाराज।
होय परे री मोरे ललना ओली बिच खेल रये जू महाराज।।
नोंबद बाजें बधईयाँ, आँगन बिच घूम जू महाराज।
आँगन बिच हरी-हरी दूबा, धिनोंचिन केवरौ जू महाराज।।"

निश्चित ही लोक मन की सुखद कल्पनाएँ स्वप्नों का बहाना लेकर फूट पड़ती है, लोक संस्कृति में स्वप्नों का एक विज्ञान है उसमें देखने के काल पर विचार किया जाता है उसी के अनुसार उसका फल निर्धारित होता है। इस लोक गीत में भी नवागन्तुक शिशु जन्म से आँगन हँसता खेलता रहे तथा परिवार भी हरा-भरा रहे वंशबेल आगे बढ़े। पवित्र दूर्वा दल और केवड़े की भीनी सुगन्ध को इस लोकगीत में अनूठे ढंग से प्रतीक रूप मे पिरो दिया गया है। साथ ही पुत्र हो या पुत्री, शिशु जन्म को लोक ने मांगलिक ही माना है, यदि पुत्र है तो वह सूर्य चन्द्र के समान कुल रूपी आँगन की पवित्रता को सुरक्षित रखती हुई सुख-समृद्धि भरने वाली अवश्य है। अर्थात् बुन्देली संस्कृति के लोक मन ने पुत्र-पुत्री के जन्म को भेद की दृष्टि से कभी भी नहीं देखा। उसके लिए तो दोनों ही समान है इस विचार को लोकगीत में अनूठे ढंग से पिरो दिया गया है।

युगों से लोक जीवन में ऐसे अनगिनत पारम्परिक लोकगीत गूँज रहे हैं। सिर्फ ये लोकगीत ही बुन्देली संस्कृति में नारी विमर्श को, रेखाकित नहीं करते, अपितु लोक संस्कारों से पगे हुए यहाँ के रीति रिवाज भी इसके सशक्त गवाह है। महाराष्ट्र, बंगाल..... आदि भारत के अन्य क्षेत्रों में बेटियाँ अपने घर परिवार के वरिष्ठ जनों माता पिता बड़े भाई-भाभी, मामा-मामी.... आदि के चरण छूकर प्रणाम करती हैं। जबकि बुन्देली संस्कृति में पुत्रियाँ कभी भी अपने वरिष्ठ जनों के पैर नहीं छूती हैं। पुत्रियों को देवि रूप में बुन्देलखण्ड की संस्कृति परम पूज्य मानती है अतः वरिष्ठ जन ही पुत्रियों के चरण स्पर्श गर्व के साथ करते हैं यहाँ तक कि बुन्देलखण्ड के ग्रामीण आँचल में जब भी कन्या का विवाह होता है तो घर, परिवार, कुटुम्ब सहित पूरे गाँव के लोग मण्डप के नीचे पैर पखारने आते हैं इसमें कन्या किसी अन्य जाति वर्ग की हुई तो वह सभी गाँव के लोग सिर्फ कन्या के पैर ही पखारते है वर के नहीं।

साथ ही जिस गाँव में कन्या का विवाह होता था उसकी ससुराल वाले गाँव में सभी जाति वर्ग के बुजुर्ग तो पानी भी नहीं पीते थे अन्य ग्रहण करना तो दूर की बात। इसी परंपरा एवं प्रथा के प्रभाव में जब समय परिवर्तित हुआ और जनसंख्या वृद्धि के कारण उन गाँवों में शादियाँ होने लगी और बरातें पहुँचने लगी तब यह लोक परम्परा चली जो आज भी यथावत चल रही है इस में जब कोई बारात किसी अन्य गाँव में जाती थी तो उस गाँव में पहुँचकर बरात के वृद्धजन पहले यह पता करते थे कि अपने गाँव की किस-किस परिवार जाति वर्ग की लड़कियाँ इस गाँव में व्याही हैं फिर उसी गाँव के नाई को बुलाकर ढोल नगाड़ों के साथ कुछ बुजुर्ग उन लड़कियों के दरबाजों पर जाकर कुछ रुपये उसकी देहली पर रखकर उन्हें बारात में "स" सम्मान चलने का आमंत्रण देते है इसे बुन्देलखण्ड में देरी पूजना कहते है।

बेटी को बुन्देलखण्ड कि अति प्राचीन संस्कृति में श्रेष्ठ एवं वरेण्य अर्थात स्वयं वर चयन करने का अधिकार प्राप्त था परन्तु आज कथित रूप से सुसंस्कारों का लबादा ओढ़े हुए समाज में वही बेटी कमजोर निरीह मानकर सताई और शोषित की जा रही है, जिस कारण दुनियाँ में जिन्दगी की बेहतरीन समझी जाने वाली चीजों से उसे दूर रखने की कोशिश की जाती है। इसका एक उदाहरण प्राचीन काल में भी देखने को मिलता है जबकि निर्बलों को चट करके बलवान की सत्ता हिन्दुकरण की सांस्कृतिक प्रक्रिया नहीं हैं। चतुर्दिक जीवन के साथ सहानुभुति और सहिष्णुता का भाव इसकी विशेषता रही है फिर भी शक्ति सम्पन्न लोगों द्वारा बेटी उपेक्षा कि शिकार होती रही है, यथा-

"............... राजा रावण हुआ तो हरी जायेगी।
राजा राम हुये तो पुनः वनवास को चली जायेगी।। और भी
"............ राजा पाण्डव हुए तो जुएँ में हार जायेगें।
राजा कौरव हुए तो चीर हरण होगा।।"

तात्पर्य यह है कि बुन्देलखण्ड की संस्कृति में पगे संस्कारों ने युगों से हमें कन्या जन्म की श्रेष्ठता व पूज्यनीयता का पाठ पढ़ाया है। तब हम दिग् भ्रमित कैसे और क्यों हो गए? यह यक्ष प्रश्न हमारे समक्ष है।

-तिवारी सदन

पर्यटक ग्राम कुण्डेश्वर

बुन्देली हँसगुल्ले

-डाॅ. आर.बी. पटेल 'अनजान'

वर्तमान परिस्थितियों ने मानव की हँसी छीन ली है। आज वह हर समय परेशान व टेंशन में रहता है इसलिये मानव समाज बीमारियों की चपेट में है। जबकि प्राचीन समाजसेवा, गीत-संगीत, हँसी मजाक व अथाई में बिताता था तभी उनका मन स्वस्थ रहता, तन भी स्वस्थ रहता था। क्योंकि वह प्रत्येक कार्य को गीत संगीत में जोड़कर पूर्ण करता था।

अगर हम स्वस्थ जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो हमें पुनः अपने प्राकृतिक रूप में लौटना पड़ेगा साथ ही अपनी बुन्देली संस्कृति व साहित्य की शरण में जाना होगा। बुन्देली गीतों में वो सामर्थ्य है कि हम अपनी बात को आसानी से दूसरों के समक्ष प्रस्तुत कर देते हैं जिसमें उसकी समस्या का समाधान भी समझदार व्यक्ति कर देते हैं समाधान होने में वह व्यक्ति टेंशन मुक्त हो जाता है और बीमारी मुक्त भी।

बुन्देली संस्कृति और संस्कार हँसी मजाक के लिये आज भी प्रसिद्ध हैं देवर-भाभी, जीजा-साली, नन्द-भौजाई, पति-पत्नि, व पारिवारिक हास्य के गीत साहित्य में भरे पड़े है जिनकी बानगी इस लेख के माध्यम से प्रस्तुत हैं जो मानव को खुशी और स्वस्थ रख सकते हैं।

पारिवारिक कलह आज एक आम बात हो गई है आये दिन किसी ने फाँसी लगाई, जहर खा लिया, जान से मार दिया जैसी खबरें अखबारों में छपती रहती हैं किन्तु एक बुन्देली पति-पत्नि में कहा सुनी हो जाती है तो वह अपने पति को गीत के माध्यम से मना लेती है। यथा-ऐसे मिजाजी राजा, मोसे वे तो मुखई न बोले।

1. *मोरे ही मायके से आई पपरियां,*
   बैठे पातर सी तोड़े मोसे वे।।
2. *मोरे ही मायके से आये ते लड़ुबा,*
   बैठे कैथा से फोरे।।
3. *मोरे ही मायके से आओ तो सतुआ,*
   बैठे नाद में घोरे।। मोसे वे।।
4. *फूट गई नाद बगर गय सतुआ,*
   बैठे मताई खो रोवे।। मोसे वे।।

ऐसा ही देवर-भाभी के बीच हास्य गीत दृष्यव्य है-

मठा मोरो होय भौजी, जो डबला भर देओ,
मठा थोरो होय भौजी, तो पानी मिला देव।। मठा।।

1. *डुकरा के झर गये है दाँतऊ बत्तीस,*
   मीढ़ मीढ़ ऐहे तुम्हे दे है आशीष, चाहे खारो होय।। मठा ।।
2. *ननदी कऊं देखे दिखावै गटा,*
   सासो कऊं देखे तो मारे पटा, बासो सकरो होय ।। मठा ।।
3. *बिक गई मथनियां विथुर गओ फूल,*
   टूट गई कढ़नियां मै चाट गई धूल, थोड़ा बगरो होय ।। मठा ।।
4. *देदो तुम भौजी मटकियां खंगार,*
   घर में लगैबी हम हींग को बगार, चाहे पतरो होय ।। मठा ।।

बुन्देलखण्ड मे ननद और भौजाई का रिश्ता बड़ा नाजुक होता है उनमे नोंक झोंक हर क्षण होती रहती है। चाहे वे सांस्कृतिक कार्य हो या गृहकार्य इन दोनों के उत्तर प्रत्योत्तर चलते ही रहते हैं।

भाभी ने लड़के को जन्म दिया तब ननद बाई अपने यहाँ से बतासे, कपड़े, गहने लेकर भाभी के पास अपने मायके आती है तो हास्य करती है यथा-

हँस हँस पूछें भैया भौजी से, काहा बहिन लै आई लाल।
सोने के चार चूरा ले आई, ताबें की करधनियां लाल।।
हँस हँस पूछें संग सहेली, काहा ननद का दे हो लाल।।
लँगरी भैंस औ दूढ़ा बैलवा, या है ननद को देवी लाल।।

एक पति पत्नी की आपस में तकरार हो जाती है तो वह अपने मायके चली जाती है जिससे उसका पति उसे नहीं बुलाता कुछ समय बाद वह स्वयं सहेलियों से कह उठती है कि-

कोऊ के दो बलम से की लिवाये लये जाए,
ऐरी मोखो बलम बरोंटी दिखाये।। काऊ।।

1. *घोड़ा न चइये मोखो, गाड़ी न चइये,*
   ऐसी साईकिल पे आगे बिठाये लये जायें।। कोऊ।।
2. *सास जिठानी के संगे न रैहों न रैहों,*
   ई ननदी के नखरेंहमें न पुसाये।। कोऊ ।।
3. *टिकली न चइये मोखो बूंदा न चइये,*
   एक काजल की डिबियां है दइये लिबाय।। कोऊ।।
4. *बरफी न मांगो तो पेड़ा न मांगो,*
   मोखो मगोड़ा तै दइयो खवाय।। कोऊ।।

वर्तमान में नशा खोरी, जुँआ, व बुरी लतों से अधिकतर लोगों फँसे हुये है। जुआ खेलने वाले पति से पत्नी परेशान रहती है फिर भी वह कुछ नहीं कह सकती किन्तु वह गीत के माध्यम से अपनी बात कह डालती है। यथा-

1. *सैयां लइदे करधनियां, मंगा दे करधनिया, मै तोसे बिरझी।*
   मैं तो ठहरी गावँ की गोरी, तुम तो सइयाँ शहरी,
   तोरे राज में एक बार मैने करधनियां पैरी,
   बन आई जब दुल्हनियाँ, मै तोसे बिरझी।। सैंया।।
2. *जुआँ मे धर दई बिदिया मोरी, अब लौ नहीं उठाई,*
   कगना, बगरी, चूरो के बिन, सूनी लगे कलाई,
   बिक गई नाक की नथुनियां, मैं तोसे बिरझी।। सैंया।।
3. *चम्पा चंदा के घर वाले, ऐसे मिले कमाऊ,*
   मोरी किस्मत ऐसी फूटी, मिल गये खाऊ उड़ाऊ,
   गोरे देखत के चिकनियाँ, मै तोसे बिरझी।। सैया।।
4. *ब्याह काज मे संग सहेली, पहिर ओढ़ के जातीं,*
   चार जनन के पास पड़ोसन, हंमरी हंसी उड़ाती,
   कमला, विमला, पुनियां, धनियां, हाँ हँसे सारी दुनिया,
   मै तोसे बिरझी।। सैंया।।

निष्कर्षत : कहा जा सकता है कि बुन्देली लोक साहित्य में हास्य गीतों की भरमार है। मानव समाज का कोई भी पहलू नहीं है जो इनमें अनछुआ रह गया हो। यदि वास्तव में मानव समाज इन गीतों को जीवन में अपनाना प्रारंभ कर दे तो पुनः उसका जीवन सुखमय एवं नीरोगी बन सकता है।

बजरंग नगर छतरपुर
मो. 9755155016

धुबेला एवं उसके आसपास के स्मारक

-नरेश कुमार पाठक

धुबेला $25^0 01^0$ उत्तरी अक्षांस तथा $79^0 29^0$ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। विन्ध्य पर्वत श्रृंखलाओं से आच्छादित शस्य श्यामल समतल भू-भाग जहाँ तड़ागो की लालिमा से प्रतिबिम्बित उठता है, ऐसे मनोरम स्थल पर बसे हुये धुबेला ग्राम मऊ-सहानियाँ का अपेक्षाकृत प्रतिनिधित्व रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति इस प्राचीन नगर और उसके आसपास के क्षेत्र की सानुराग रचना की हो। झीलों और सरोबर नग्न पर्वतों और चट्टानों के बीच भी अक्षुण्य बनी हुई है। यह स्थल छतरपुर जिले की नौगांव तहसील में है जो प्राचीन स्थल मऊ-सहानियाँ के नाम से जाना जाता है। वस्तुतः सहानियाँ एक पृथक गांव है, जो मऊ से 1.6 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह छतरपुर-नौगांव राजमार्ग पर छतरपुर के उत्तर-पश्चिम में लगभग 18.6 कि.मी. की दूरी पर तथा नौगांव के उत्तपर-पूर्व में लगभग 8.6 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह एक नियमित बस स्टॉप है। गांव के उत्तरी ओर स्थित भड़ार नदियों द्वारा जलोत्सारित है।

अनुश्रुति के अनुसार मऊ की स्थापना उत्तानपाद के पुत्र के पौत्र राजा ध्रुव द्वारा की गयी थी राजा ध्रुव ने अपने पुण्य पर ध्रुव तारे का पद पाया था। ईसा पूर्व छठी शताब्दी में यह क्षेत्र चेदि राज्य में सम्मिलित था। चौथी शती ईसा पूर्व में इस क्षेत्र का शासक चन्द्रप्रद्योत था। लगभग तीसरी शदी में यह क्षेत्र पर मौर्यवंश के अधीन हो गया। मौर्यों के पश्चात् युग कुषाण एवं गुप्तों का अधिकार इस क्षेत्र पर रहा। हैनसांग ने अपने यात्रा विवरण में लिखा है कि बुन्देलखण्ड पर ब्राहमण राजा राज्य करता था। इन ब्राह्मण राजाओं को परास्त कर प्रतिहारों ने इस क्षेत्र पर अधिकार कर लिया, गोरेलाल तिवारी का मत है कि प्रतिहारों की प्रारंभिक राजधानी मऊ-सहानियाँ थी। जिसका समर्थन डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त ने करते हुये प्रतिहारों कि प्रारंभिक राजधानी मऊ-सहानियाँ लिखा है। परन्तु यह प्रतिहारों कि प्रारंभिक राजधानी तो नही हो सकती यह प्रमुख प्रशासनिक एवं धार्मिक केन्द्र अवश्य रहा होगा। इसकी पुष्टी यहाँ से प्राप्त मंदिरों एवं मूर्तियों से होती है। प्रतिहारों के पश्चात् उनके सामन्तों के रूप में चन्देलों ने अपना राजनीतिक जीवन प्रारंभ किया जिनके प्रथम शासक नन्नुक थे, गोरेलाल तिवारी ने नन्नुक के बारे में लिखा है, इसने प्रतिहारों को मऊ के युद्ध में परास्त किया था और इसी युद्ध से इस क्षेत्र पर चन्देलों का प्रभाव बढ़ा। यह चन्देल काल में यह काफी वैभव सम्पन्न नगर था, जिसके प्रमाण यहाँ से प्राप्त चन्देल कालीन मंदिर मूर्तियाँ, तड़ाग एवं अभिलेख है। इस काल खण्ड की प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेख में चन्देलों के शासनकाल की महत्वपूर्ण सूचनायें मिलती है।

चन्देलों के बाद कुछ समय तक यहां पर मुसलमानों का शासन रहा। गौंड़ लोगों ने भी यहां बुन्देलखण्ड के कुछ भाग पर शासन किया इसमें मऊ-सहानियाँ भी आता था। तेहरवीं शताब्दी के मध्य में बुन्देला सत्ता का उदय हुआ और 1671 ईस्वी में महाराजा छत्रसाल ने इसे अपना केन्द्र बनाकर वे बुन्देलखण्ड में अपना स्वाधीनता का अलग जगाने के लिये तत्पर हो गये। ईस्वी सन् 1687 में महाराजा छत्रसाल ने पन्ना का क्षेत्र भी गोंड़ो से जीतकर अपनी राजधानी बनाई परन्तु मऊ (सहानियाँ) उनका सैनिक मुख्यालय बना रहा और महाराजा छत्रसाल अपने जीवनकाल में मऊ-सहानियाँ में रहे। महाराजा छत्रसाल के समय में यहां पर कई प्रसाद, दुर्ग, मंदिर, समाधियां (मुकरवा) का विशाल निर्माण कार्य हुआ। महाराजा छत्रसाल की मृत्यु के बाद मऊ का भाग पन्ना राज्य के अधीन रहा। ई. सन् 1785 में सोनेशाह पवार ने छतरपुर राज्य की स्थापना करने के बाद मऊ-सहानियाँ दो भागों में विभाजित हो गया धुबेला ताल के मऊ गांव का भाग छतरपुर राज्य में एवं धुबेला ताल के दूसरा किनारा जहां पर महाराजा छत्रसाल की समाधि आदि है, वह चरखारी राज्य का भाग था, जिसके विभाजन की सीमांकन के अवशेष आज भी उपलब्ध है। पवारों के शासन काल में यहाँ के स्मारकों का जीर्णोद्वार हुआ और सहानियां माधोपुर की गढ़ियों को निर्मित करवाया जिसमें छतरपुर के पवार वंश के पवार जागीरदार यहां रहा करते थे, उनके वंशज आज भी गढ़ियों में रहते है।

मऊ-सहानियाँ बुन्देलखण्ड का ऐसा महत्वपूर्ण स्थान है, जहाँ पर पूर्व मध्यकाल से 18वीं शती तक के इतनी अधिक संख्या में मंदिर, दुर्ग, बिन्यास, प्रसाद, समाधियाँ एवं अन्य आवासीय भवन आज भी अवस्थित है। जो बुन्देलखण्ड के अन्य स्थानों पर नहीं मिलते है। यहाँ से प्राप्त प्रमुख स्मारकों का विवरण इस प्रकार है-

नाग बाबा मंदिर

यह मंदिर बस स्टेण्ड से धुबेला महल जाने वाले पहुँच मार्ग से आधा कि.मी. की दूरी पर मार्ग के बांयी ओर स्थित है, इस मंदिर को स्थानीय लोग मठ या चन्देला मठ के नाम से जानते है, परन्तु स.का. दीक्षित ने इसे नाग बाबा मंदिर लिखा है, जो कि अधिक युक्ति संगत है। मंदिर भूमि पर ही अवस्थित है। तल विन्यास में केवल गर्भ गृह ही है। ऊर्ध्व विन्यास में दो वांधों से सांदी जंघा कोण स्तूपाकार शिखर एवं आमलक है। कलश टूट चुका है। यह लघु और सादा मंदिर चार मीटर ऊँचा है एवं 180 से.मी.X180 से.मी. आकार में बना हुआ है। मंदिर का प्रवेश द्वारा नितान्त सादा है, उसमें न कोई प्रतिमा उत्कीर्ण है और न कोई अलंकरण है, जिसका आकार 85X50 से.मी. है। मंदिर के गर्भ ग्रह का आकार 125X125 से.मी. है। गर्भगृह की वांयी ओर से दीवार में 70 से.मी. की ऊँचाई पर एक सहतीर लगा हुआ है। इसी प्रकार का मंदिर समूह मऊ के पास ही पहाड़ी के किनारे भीमकुण्ड नामक स्थान पर है, यह मंदिर खजुराहो के चौसठ योगिनी मंदिर के समकालीन चन्देल कालीन स्थापत्य कला का प्रतिनिधित्व करता है। स्थापत्य शिला के आधार पर मंदिर 9वीं शतीं ई. का है।

कौंचा भवर (चौसठ योगिनी मंदिर)

जगत सागर तालाब के किनारे पर शाक्त सम्प्रदाय से संबंधित संभवतः चौसठ योगिनी मंदिर है। मंदिर की निर्माण योजना शैली असामान्य है। इस मंदिर का विन्यास दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व दिशा में है। मन्दिर के विस्तृत प्रांगण के चारो ओर 64 कोठरियों से परिवृत था, जिसमें अब कुछ मात्र अवशिष्ट है। मंदिर की दीवार में एक गर्भग्रह है, जिसमें मुख्य मंदिर संभवतः काली अथवा शिव का रहा होगा। चारों ओर सादे छोटे-छोटे अलिन्द बने हुये है। सामने बिम्बेदार बराड़ा है, इसके ऊपर साधारण छत बनी हुई हे। मंदिर में

वर्तमान में कोई प्रतिमा बिम्बेदार बराड़ा है, इसके ऊपर साधारण छत बनी हुई हे। मंदिर में वर्तमान में कोई प्रतिमा नहीं है। यद्यपि इस मंदिर में तिथि युक्त कोई अभिलेख नहीं प्राप्त हुआ है, जिससे मंदिर निर्माण की वास्तविक तिथि ज्ञात हो सके। स्थापत्य शिल्प के आधार पर दसवीं शतीं ई. के प्रारंभ का माना जा सकता है।

शिव (गणेश) मंदिर

जगत सागर तालाब के किनारे एवं कोंचा भंवर मंदिर के पार्श्व में यह मंदिर स्थित है। इसे पुराविद् स.का.दीक्षित ने शिव मंदिर लिखा है। मंदिर जगति पर बना हुआ है, जिसका आकार 690X640 से.मी. है, जिस पर ऊपर पहुँचने के लिए पाँच सौपान बने हुए है। मंदिर पंच रथ शैली का है, जो तल विन्यास में गर्भगृह ही है, अर्द्ध मण्डप भाग पूर्णतय: नष्ट हो गया है। ऊर्ध्व विन्यास जगती, अधिष्ठान, जंघा व शिखर में विभाजित है। अधिष्ठान एवं जंघा के मिलने स्थान पर तीन प्रक्षेपणों का अलंकरण है। जंघा एवं शिखर के मिलने के स्थान पर भी दो प्रक्षेपणों का अलंकरण है। जंघा एवं शिखर के मिलने के स्थान पर भी दो प्रक्षेपणों का अलंकरण है। गर्भगृह साधारण है, जिसका आकार 240X240 से.मी. है। गर्भगृह में 17वीं शताब्दी की तांत्रिक गणेश की प्रतिमा है। मंदिर की द्वार शाखा सामान्य है। जिस पर पत्र बल्लरियों का अंलकरण है। द्वार शाखा पर दायी ओरनदी देवी गंगा का अंकन है। वांयी ओर नदी देवी यमुना अंकित है। मंदिर की जंघा पर दांये-बांये पीछे आलिन्द बने है, जिनमें वर्तमान में कोई प्रतिमा अंकित नहीं है। तिथि क्रम की दृष्टि से यह मंदिर 11वीं शती ई. का है। इस मंदिर का समीकरण खजुराहो के पार्वती मंदिर से किया जा सकता है। स. का. दीक्षित ने इस मंदिर निर्माण की तिथि 10वीं 11वीं शती ई. निर्धारित की है।

भीम कुण्ड मंदिर समूह

यह मंदिर समूह मऊ-सहानियाँ गाँव से लगभग एक कि.मी. की दूरी पर स्थित पहाड़ी की आधी ऊँचाई पर बना हुआ है। यहां चंदेल कालीन पांच मंदिर सुरक्षित है, जिनमें मुख्य शिव मंदिर छोटे आकार के मंदिरों में एक चतुर्भुज लिंग मंदिर, हनुमान मंदिर एवं दो अन्य छोटे मंदिर निर्मित है। इन मंदिर के मध्य एक कुण्ड बना हुआ है, इसी कुण्ड के आधार पर इस मंदिर समूह को स्थानीय लोग भीम कुण्ड के नाम से जानते है। इस मंदिर समूह के मंदिरों का विवरण इस प्रकार है:-

शिव मंदिर

यह मंदिर इस मंदिर समूह का मुख्य मंदिर है। तल विन्यास की दृष्टि से मंदिर का गर्भगृह, अन्तराल एवं मण्डप में विभाजित था, ऐसा मंदिर के अवशेषों से स्पष्ट होता है। परन्तु अन्तराल एवं मंदिर नष्ट हो चुके है। ऊर्ध्व विन्यास में जंघा शिखर है, आमलक एवं टूट चुके है। मंदिर पंचरथ शैली का है एवं दो तलीय है। मंदिर का गर्भग्रह 175X175 से.मी. आकार का है जिसमें सामने अलिन्द है, जो प्रतिमा विहीन है। दायीं ओर एक ताक बना हुआ है। गर्भग्रह के चारों कोनों पर स्तम्भ है, जो घट पल्लव से अलंकृत है। ऊपर चार सहतीर है, जिन पर पुष्प एवं अन्य ज्योमितिक अलंकरण बने है। छत उलटे कमल फूलों कें अंकन युक्त है। गर्भग्रह में शिवलिंग था, उसे मऊ ग्राम के आधुनिक मंदिर में स्थापित कर दिया गा है। गर्भग्रह का द्वार सादा है, अन्तरण 105X104 से.मी. आकार का है, जिसमें दोनों ओर अलिन्द बने है। मण्डप 145X80 से.मी. आकार का है, जिसके दोनों ओर ताक बने हुये है।

चर्तुमुख लिंग मंदिर

यह मंदिर तल विन्यास में गर्भग्रह ही है, ऊर्ध्व विन्यास में जंघा एवं शिखर है, ऊपर का शेष भाग गिर चुका है, मंदिर का द्वार साधारण है। गर्भग्रह भी साधारण है। जिसकी छत पर कमल पुष्प का अंलकरण है। गर्भग्रह में चर्तुमुखी लिंग 115X34X34 से.मी. आकार का है, जिसका एक ओर का शिव प्रतिमा का अवाक्ष टूट चुका है, शेष तीन ओर शिव अवाक्ष बने हुये है जो जटा मुकुट, कुण्डल, हार एवं केशबंध पर फैले हुये है। इस प्रकार का चर्तुमुखी शिवलिंग नचना जिला पन्ना से मिला है, जो गुप्तकाल के माप दण्डों पर आधारित है।

हनुमान मंदिर

यह मंदिर तल विन्यास से गर्भग्रह ही है, ऊर्ध्व विन्यास में जंघा शिखर एवं आमलक सुरक्षित है। मंदिर 2X2 मीटर आकार में बना है। गर्भग्रह में एक ओर 75 से.मी. ऊँचाई पर दीपक रखने का ताख निर्मित है। गर्भग्रह में पवन पुत्र हनुमान की प्रतिमा रखी है, जो दांयी भुजा सिर पर चपेट मुद्रा में वायी भुजा वक्ष पर विवर्तक मुद्रा में है। इस प्रकार की हनुमान प्रतिमा खजुराहो के आधुनिक मढ़िया में प्रतिस्थापित है, जिसे हनुमान मंदिर कहते है। गर्भग्रह का द्वार 100X60 से.मी. आकार का एवं साधारा है।

दो लघु मंदिर

इन मंदिरों के अलावा दो लघु मंदिर भी है, इनमें मात्र गर्भग्रह ही अवशिष्ट है। ऊर्ध्व विन्यास जंघा, शिखर एवं आमलक में विभाजित है। कलश गिर चुका है। मंदिर के द्वार एवं गर्भग्रह पूर्णतय: साधारण है। एक अन्य मंदिर है जिसके कुछ अवशेष ही शेष है।

कुण्ड

भीमकुण्ड मंदिर समूह के मध्य में एक 450X450 से.मी. आकार का कुण्ड है, जिसमें पानी तक पहुँचने हेतु दस सोपान बने हुए है। कुण्ड में किसी मंदिर की देहरी लगी हुई है, जिस पर पद्मासन में बैठी नागदेवी का अंकन है। इनके पार्श्व में परिचारिका, नरव्याल एवं हाथियों का अंकन है। इसी कुण्ड की एक सोपान पर मंदिर का सिद्धल भी लगा है, जिसमें मध्य में विष्णु दायें ब्रह्मा बांये शिव का अंकन है। कुण्ड की दीवार पर लगे पत्थर खण्ड पर उड़ते हुए मानव रूपी गरूड़ का अंकन है। तिथिक्रम के आधार पर 10वीं 11वीं शती ई. का चन्देलों द्वारा निर्मित मंदिरों में इस मंदिर समूह को उत्कृष्ट उदाहरण कह सकते हैं।

धुबेला महल

धुबेला महल मऊ गांव के अंतिम छोर पर धुबेला ताल के उत्तरी तट पर स्थित है। यह महल तथा राज प्रसाद उत्तर मध्यकालीन क्षेत्रीय स्थापत्य का उत्तम नमूना है। निर्माण शैली को देखते हुये इसका निर्माण कार्य 17वीं 18वीं शती निर्धारित की जा सकती है। स्थानीय लोगों का कथन है, कि इस भवन का निर्माण बुन्देलखण्ड केशरी महाराजा छत्रसाल बुन्देला ने करवाया था और यह उनका सभा भवन था। इस महल के सामने उत्तर तथा पश्चिम की ओर एक बाग है, जिसकी चार दीवारी पक्की है। महल के प्रवेश द्वार के बांयी ओर द्वार

की छत पर जाने के लिए कए जीना की छत पर जाने के लिए एक जीना (सोपान) है, जिसमें 32 सीढ़ियां है। प्रवेश द्वार और राजप्रसाद के बीच आयाताकार आंगन है। इस आंगन के बांयी ओर वरांडा है, जिसमें आंगन की ओर सात महराब युक्त सपाट द्वार है। इसी प्रकार सामने भी वरांडा है, जिसमें बीच की दीवार में सात द्वार है। पीछे की ओर दीवार सपाट है।

धुबेला महल के मुख्य द्वार की बनावट जयपुर के हवा महल शैली की है। 17वीं 18वीं सदी के स्मारक पर रंगीन चित्रकारी बहुत ही सुन्दर है। इसके 20 फीट 4 इंच ऊंचे तथा 13 फीट 2 इंच चौड़े पार्श्व भाग पर पुष्प पात्र एवं धरातलीय आलेखन बने है। जिनमें से फर्स से 10 फीट 2 इंच तक का आलेखन नष्ट हो चुका है इस चित्रण में हिरमिज़ि तथा हरे रंग का प्रयोग किया गया है। चित्रण के पुनरूद्धारित भागों में सिन्दूरी, नील तथा श्वेत रंग है। चित्रण की सम्पूर्ण प्रभाव दर्शकों को दूर से आकर्षित करता है। इस चित्रण से महाराजा छत्रसाल का प्रकृति प्रेम प्रकट होता है। पौर से फर्स पर पहुँचते है। इस फर्स से 16 सीढ़ी चलकर विशाल आयताकार आँगन में पहुँचते है। इसके आसपास विशाल हाल बने हुये है। हवा पौर के ऊपर छत पर सामने की ओर तीन खण्ड मंदिर नुमा स्थापत्य अलंकरण है, इसके शिखर के ऊपरी भाग में तीन कलश रखे है।

धुबेला महल ईट निर्मित और रेत चूने की जुड़ाई द्वारा इसका निर्माण पतली ईटों से किया गया है। भित्तियों पर चूने का प्लास्टर है। स्थापत्य की दृष्टि से अलंकरण भव्य है। मुख्य द्वार के महराब में रंगीन चित्रकारी बनाने में यहां कारीगर भूले नहीं है। सौन्दर्य की अपेक्षा मजबूती का ध्यान कारीगरों ने अधिक रखा है। स्थानीय लोगों का ऐसा भी मत है कि छत्रसाल के वंशजों का यहां दरबार लगा करता था। अलंकरण भव्य है। मुख्य द्वार के महराब में रंगीन चित्रकारी बनाने में यहां कारीगर भूले नहीं है। सौन्दर्य की अपेक्षा मजबूती का ध्यान कारीगरों ने अधिक रखा है। स्थानीय लोगों का ऐसा भी मत है कि छत्रसाल के वंशजों का यहां दरबार लगा करता था।

इसी महल में मध्यप्रदेश शासन द्वारा संचालित महाराजा छत्रसाल संग्रहालय है। इसका उद्घाटन 12 सितम्बर 1955 में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू के कर कमलों द्वारा किया गया, संग्रहालय में संग्रहित सामग्री बुन्देलखण्ड एवं बघेलखण्ड से प्राप्त हुई है, एक है। इनमें प्रागेतिहासिक अवशेष, उत्खनित सामग्री, पाषाण प्रतिमाएं, मृण मूर्तियाँ, अभिलेख सिक्के, हांथी दांत, वस्त्र, प्लास्टिक, कांच अवशेष, अस्त्र-शस्त्र एवं चित्रकला का अच्छा संग्रह है, यह मध्यप्रदेश के श्रेष्ठ संग्रहालयों में से एक है।

मस्तानी महल- महाराजा छत्रसाल संग्रहालय धुबेला महल स्मारक के दायीं ओर पार्श्व में लगा हुआ, मस्तानी महल है। यह महल बुन्देलखण्ड केशरी महाराजा छत्रसाल ने मस्तानी के लिये निर्मित करवाया था। उत्तराभिमुखी निर्मित किया गया है। इसके मध्य में विशाल आंगन है, ऊपरी मंजिल पर जाने हेतु सौपान बने हुये है। भवन के पीछे की ओर जो सोपानों का निर्माण किया गया है, वह धुबेला तालाब में स्नान आदि के जाने हेतु बना रहा होगा। लगभग 18वीं शताब्दी में निर्मित बुन्देली कला शैली का यह भवन एक सुन्दरतम् नमूना है।

महाराजा हिरदेशाह का महल- महाराजा छत्रसाल संग्रहालय धुबेला के समीप दाहिनी ओर पहाड़ी की तलहटी में यह महल निर्मित है। यह महल महाराजा छत्रसाल के ज्येष्ठ पुत्र महाराजा हिरदेशाह ने 1731-39 के मध्य बनवाया था। धुबेला महल के बांये पार्श्व में ग्रेनाईट की ऊँची विशाल शिला पर पश्चिमी मुखी यह प्रसाद बहुत दूर से आगन्तुक का ध्यान आकर्षित कर लेता है। महल बुन्देला शैली का अच्छा नमूना है। महल के सामने का भाग महराबदार दरबाजे गुम्बज आदि शेष है। पीछे का भाग भग्न हो चुका है। महल प्रवेश द्वार 14 फीट चौड़ा तथा 18 फीट 8 इंच ऊँचा अग्रोन्नत भाग चित्रित होने का यथेष्ठ प्रमाण मिलता है। प्रवेश द्वार से दाहिनी ओर बना आलेखन में हिरमिजी, रामरज् तथा काले का मिश्रित आलेखन को रंगने में प्रयोग किया गया है। प्रसाद के पश्चिमी प्रांगण से संलग्न 49 फीट 8 इंच लम्बे तथा 9 फीट चौडे इस विहीन इसकी प्राचीरों के रंग समाप्त हो गये है। प्रांगण की ओर प्राचीरों पर धरातलीय आलेखनों में ज्यामिति का बड़ा पेचीदा रूप प्रस्तुत किया गया है। प्रवेश द्वार के दक्षिण भाग के ऊपरी खण्ड के गवाक्षों में कटाई शैली के आलेखनों में अब हिरमिजि रंग ही शेष रह गया है।

बादल महल

यह महल लगभग 18वीं शती ई. में निर्मित बुन्देली शैली का अप्रतिम उदाहरण है। यह महल धुबेला तालाब के दक्षिण-पश्चिम में पहाड़ी की ऊँची टेकरी पर निर्मित है। यह महल पूर्वाभिमुखी है। महल विशाल कक्ष तथा दालानों से युक्त है। महल में कक्षों का निर्माण पश्चिम-उत्तर तथा दक्षिण दिशा में है। मध्य में एक विशाल चबूतरा है। चबूतरों पर निर्मित स्तम्भों से यह प्रतीत होता है, कि चबूतरा छत युक्त रहा होगा। पश्चिम में निर्मित भवन के सामने की दीवार में लगे कंगूरो के मध्य रंगीन चित्रों में घोड़ो पर सवार एवं अन्य बेल-बूटों से सजाया गया है।

महाराजा छत्रसाल स्मारक

यह स्मारक बुन्देली शैली में निर्मित लगभग 17वीं शती ई. का है। यह स्मारक बुन्देलखण्ड के सुप्रसिद्ध शासक महाराजा छत्रसाल की छत्री (मकबरा) है। यह समाधि महाराजा छत्रसाल के दत्तक पुत्र वाजीराव पेशवा द्वारा सन् 1751 ई. के आसपास बनवाई गयी थी, वाजीराव पेशवा की अचानक मृत्यु के कारण यह अपूर्ण रह गई। यह समाधि बाहर द्वादश भुजाकार तथा अंदर से अष्ठ भुजाकार चौकी के ऊपर तीन खण्ड की है। इस स्मारक प्रवेश द्वार महराबदार एवं अंलकृत है। यह स्मारक पाषाण एवं चूने से निर्मित है। वराण्डे भित्तियों पर रथिकायो का अलंकरण है। प्रवेश द्वार के अन्दर आने पर चारो ओर वर्तुलाकार स्तम्भ युक्त वराण्डा है। वराण्डे का आन्तरिक भित्तियों पर रथिकायो का अलंकरण है। प्रथम वराण्डे के पश्चात् द्वितीय वराण्डा वर्तुलाकार स्वरूप लिए हुए अष्ट कोणीय है। द्वितीय वराण्डे की भित्तियों पर नीचे रथिकाओं एवं ऊपरी भाग में चित्रों का अलकरण है। द्वितीय दालान के पश्चात् मध्य में महाराजा छत्रसाल की छत्री बनी हुई है, जो महराबदार स्तम्भों पर आधारित है। अष्ट कोणीय संरचना है। ऊर्ध्व छंद में स्मारक तीन तलों में बना हुआ है। प्रत्येक कतल की वाय भित्तियों पर स्तम्भों पर महराबों का अंलकरण है। स्मारक का शिखर गुम्बदाकार है। प्रत्येक तल की अंधी पर छज्जे बने

हुये हैं।

अष्टभुजाकार चौकी के चतुर्दिशी बने बरामदें के भित्ति शीर्ष पर पार्श्व गत अश्व, मयूर, सिंह, बानर, सारस तथा अश्व सहित रथ चित्रित है। इनके बीच में आलेखन है। इस चित्रण जाला हिरमिजि रामरज तथा गेय के रंगों का यहां प्रयोग है। द्वितीय खण्ड पर अश्वरोहियों की पंक्ति है, तृतीय खण्ड के गुम्बद ही छत में केन्द्रीय आलेखन है, जिसमें हिरमिजि का विशेष प्रयोग है। यहाँ बने धरातलीय आलेखन में रातरज गेरू तथा हिरमिजि का प्रयोग किया गा है।

रानी कमलापति स्मारक

यह स्मारक महाराजा छत्रसाल की पत्नी महारानी कमलापति की छत्री है। यह स्मारक रानी की स्मृति में धुबेला ताल के दाहिने तट पर सन् 1715 ई. में निर्मित करवाया गया था। बुन्देली शैली में निर्मित है। यह छत्री ऊँची जगती पर स्थित है। तल छंद में स्मारक बर्तुलाकार आकार लिये हुये है। स्मारक के प्रवेश द्वार के अन्दर प्रवेश करने पर गर्भग्रह के चारो ओर बर्तुलाकार दालान स्थित है, जिसमें चारों ओर जालीदार गवाक्ष बने हुये है तथा मध्य में रथिकायें हैं। स्मारक के अन्दर मध्य में एक अष्टकोणीय कक्ष बना हुआ है। कक्ष के मध्य में कमलापति की समाधि स्थित है। कक्ष के ऊपरी भित्तियों पर चित्र बने हुये है, इसके पश्चिमी द्वार पर चित्र में पार्श्वभिमुख गणेश बने है। रंगों में हिरमिजि रंग तथा इसका मिश्रण हरा एवं रामरज प्रयुक्त है। कक्ष में प्रवेश के लिये दो द्वारा है। प्रवेश द्वार के दोनों ओर चित्रों का अलंकरण है। स्मारक के ऊपरी भाग में दो स्तम्भ एवं दो अर्धस्तम्भ पर आधारित छज्जे बने हुये है। छज्जों की छत ढोलकार स्वरूप लिये है। यह स्मारक बुन्देली शैली का अनुपम स्मारक है। यह स्मारक तीन तलीय है। वाह्य भू-विन्यास में स्मारक अष्टकोणीय संरचना है। आठों कोणों पर बुर्ज बने है, शिखर भाग के चारो ओर छोटी-छोटी छत्ररियों का अलंकरण है। छत्रियों की छत ढोलाकार स्वरूप लिये है। छत के दोनों पार्श्वों पर गुम्बदाकार संरचना है।

बेरछारानी का मकबरा

यह स्मारक बेरछा (बेरछा) के क्षत्री देवी सिंह परमार की पुत्री तथा महाराजा छत्रसाल की रानी देवकुंवरी का है, जो भुजवल की सुरई से 2 कि.मी. पूर्व की ओर है। यह स्मारक वर्गाकार एक कक्षीय संरचना है। मकबरा (छत्री) अधिष्ठान पर बना हुआ है। मकबरे के प्रवेश द्वारा चार बने हुये हैं। प्रवेश द्वार महराबदार प्रकार के है। मकबरें के जंघा भाग के ऊपर चारो ओर छज्जा बना हुआ है, जंघा भाग के चारों ओर चार महराबदार छत्रियों चारो कोनों पर बनी हुई है। छत्रियों के मध्य ढोलाकार गवाक्षों का अलंकरण है, प्रत्येक प्रवेश द्वार के दोनों ओर रथिकाओं एवं कमल फूलों का अंलकरण है। इस सुरई के आन्तरिक गुलाबी पृष्ठ भूमि पर अश्वहरित, शुक, मयूर, महिला एवं पुरूषों की आकृतियाँ हैं। गुम्बद के मध्य तथा किनारे आलेखन (डिजाईन) है।

सवाई सिंह का मकबरा

यह स्मारक महाराजा जगतराज (1804-87) के समकालीन सवाई सिंह का है। यह मऊ-सहानियां ग्राम से छतरपुर जाने वाले मार्ग के वांयी ओर लगभग 3 कि.मी.की दूरी पर स्थित है। स्मारक में प्रवेश के लिए द्वार चारों ओर बने हुये है। स्मारक इष्टिका एवं चूने से निर्मित है तथा चूने का प्लास्टर किया गया है। स्मारक की बाह्य भित्तियों पर महराबदार रथिकायों का अलंकरण किया गया है। चारों ओर स्थित वराण्डे के मध्य में चार प्रवेश द्वारो से युक्त कक्ष है, जिसमें सवाई सिंह की समाधि स्थित है। कक्ष की बाह्य भित्तियों पर अलंकृत गवाक्षों का अंकन है। स्मारक का शिखर गुम्बदाकार संरचना है। गुम्बद के चारों ओर एक-एक छत्री का निर्माण किया गया है। स्मारक 19वीं शती ईस्वी का बुन्देला शैली का है। इस छत्री के पूर्वी तथा पश्चिमी बरामदे 36 फीट लम्बे 9 फीट 9 इंच चौड़े उत्तरी एवं दक्षिणी बरांमदे का आलेखन ही अवशेष है, तथा समाधि के मुख्य भाग में हिरमिजी तथा रामरज के रंगों द्वारा केन्द्रीय आलेखन है।

छत्रसाल की रानी की सुरई

महाराजा छत्रसाल स्मारक (समाधि) के पीछे की ओर समतल भूमि पर यह सुरई अवस्थित है। लगभग 18वीं शती ई. में निर्मित यह स्थल किवदर्ती के अनुसार महाराजा छत्रसाल की किसी रानी की समाधि रही होगी। भवन चौकोर कमरे युक्त है, जिसकी छत ज्योमितीय अंलकरण से युक्त ढोलक आकार है। इसके ऊपर गुम्बद न होकर उल्टा कमल पुष्प बनाया गया है। समाधि के चार खुले महराबदार दरवाजे है। समाधि के अन्दर आठ आलो का निर्माण किया गया है।

महाबली तेली की सुरई

महाराजा छत्रसाल की समाधि के समीप ही 18वीं शती में निर्मित महाबली तेली की सुरई (समाधि) है। किवदंतियों के अनुसार महाराजा छत्रसाल के पिता श्री चम्पतराय का विश्वास पात्र महाबली तेली का अपने अंतिम समय में उन्होंने अपनी संचित निधि इसे देते हुए छत्रसाल की मदद करने का कहा था। बाद में महाबली तेली ने महाराजा छत्रसाल को उक्त संचित राशि हुए साम्राज्य विस्तार की उनके पिता की आंकाक्षा जताई। यह सुरई ऊँची जगती पर निर्मित है। इसका प्रवेश द्वार पूर्व की ओर है। ऊपर गोल गुम्बद है।

नक्की की सुरई

सहानियाँ महेबा मार्ग पर मुकरबा तिराहे के समीप नक्की की सुरई के नाम से प्रसिद्ध समाधि स्थल अवस्थित है। किवदंतियों के अनुसार यह समाधि स्थल महाराजा छत्रसाल के समय के नाकेदार (इलाकेदार) की रही होगी। समाधि उत्तराभिमुखि है। इसमें एक कक्ष है, ऊपर गोल गुम्बद है, उसके चारों ओर चार लघु गुम्बद हैं, इसमें रंगीन टाइल्स लगे हुये है। छज्जे के नीचे पाषाण में पुष्पित डिजाईन उकेरी गई है। छज्जा तोड़ो से युक्त है। समाधि में तीन द्वार हे, जिसमें दो अभी बन्द है। समाधि का आन्तरिक भाग भी पुष्पित डिजाईन से अंलकृत है। समाधि के चारों ओर प्लास्टर युक्त चबूतरा का निर्माण किया गया है। बुन्देली कला शैली की समाधि लगभग 18वीं शती की है।

सत्ती की सुरई

महेबा ग्राम के पूर्व में बछुआ तालाब के दक्षिण की ओर सुरई ऊँची पर निर्मित है। सुरई का प्रवेश द्वार पूर्व की ओर है। सुरई का बाह्य, भाग लताबल्लरी अलंकरण से अलंकृत है। ऊपर चारों कोंनों पर लघु गुम्बद और मध्य में विशाल गुम्बद निर्मित है। गुम्बद पर हरे

एवं नीले रंग की ईंट से अलंकृत किया गया है। सुरई के गर्भग्रह में सतीफलक रहा होगा, गुम्बद का आन्तरिक भाग विकसित गर्भग्रह में सतीफलक रहा होगा, गुम्बद का आन्तरिक भाग विकसित कमल से अलंकृत है। इसका निर्माण चूना गारे एवं लाखौरी ईट से निर्मित है। इस पर प्रवेश के लिए दो सौपान निर्मित है। सम्भवतः यहाँ पाँच सोपान बने रहे होंगे। इसके चारो ओर सुरक्षा पट्टी बनी हुई है।

सूर्य मंदिर

मऊ ग्राम के उत्तर दिशा में स्थित 18वीं शती में निर्मित बुन्देली कला का एक सुन्दरतम् नमूना है। मंदिर पूर्वाभिमुख है। मंदिर की दक्षिण दीवाल के लघु मंदिर का निर्माण कर लगभग 12वीं शती की एक जैन प्रतिमा वितान रखा गया है। वितान के ऊपर ही लघु आकार का पाषाण चक्र (आमलक सदृश्य) रखा है। इसी की जनमानुस सूर्य देव के रूप के रूप में उपासना करते है। इसी के समीप हनुमान प्रतिमा का ऊर्ध्व भाग एवं अन्य प्रतिमा खण्ड रखा है। मंदिर गोल गुम्बद युक्त है। मंदिर के चारों ओर सुरक्षा दीवार निर्मित है।

शनि देव मंदिर

मऊ सहानियाँ ग्राम के उत्तर-पूर्व में जगत सागर तालाब के मध्य एक विशाल चट्टान के ऊपर शनि देव के मंदिर का निर्माण किया गया है। इसका निर्माण 18वीं शती में किया गया था। मंदिर की प्रधान प्रतिमा काफी समय पूर्व ही चोरी चली गयी थी। मंदिर पश्चिमाभिमुखी है। इसके ऊपर गोल गुम्बद तथा उसके ऊपर उल्टे कमल का अंकन है। गुम्बद के निचले भाग में कमल का मनोहारी अंकन है। मुख्य गेट के दोनों ओर आले एवं ऊपरी भाग को पुष्पों से अलंकृत किया गया है।

बिहारी जू का मंदिर

लगभग 18वीं शती में निर्मित मंदिर बुन्देला शैली का स्मारक है। यह मंदिर जगत सागर के किनारे स्थित है। मंदिर ऊँची जगती पर बना हुआ है, मंदिर पर सोपान से होकर पहुँचा जा सकता है। मंदिर के प्रवेश द्वार के दोनों ओर ऊपरी भाग में महराबदार गवाक्ष है उसके पार्श्व पर महराबदार रथिकाएं है, प्रवेशद्वार की छत ढोलाकार स्वरूप लिए हुए है ऊपर चढ़ने पर आंगन में प्रवेश करते है। आंगन के बांयें पार्श्व में एक-एक आयाताकार कक्ष है। दाहिने पार्श्व में मन्दिर स्थित है। मंदिर का भू-विन्यास में अर्धमण्डप, मण्डप एवं गर्भगृह से युक्त संरचना है। अर्धमण्डप एवं मण्डप का भाग स्तम्भों में विभक्त है। मंदिर का गर्भग्रह वर्गाकार आकार में है। मंदिर का शिखर गुम्बदाकार है। मुख्य गुम्बद के चारों ओर एक-एक छत्री का अलंकरण है।

तपस्वी का अखाड़ा

यह अखाड़ा धुबेला ताल के दक्षिण-पश्चिम में स्थित कमलापत स्मारक और बादल महल के मध्य स्थित है। यह अखाड़ा दोनों स्मारकों के मध्य पहाड़ी की तलहटी में अवस्थित है। पूर्व में यह अखाड़ा दोनों स्मारकों के मध्य पहाड़ी की तलहटी में अवस्थित है। पूर्व में यह अखाड़ा छोटी मढ़ियों के पास था, बाद में महाराजा विश्वनाथ सिंह छतरपुर ने इसे हटाकर कमलापति स्मारक के पीछे बना दिया है। यहीं पर हनुमान जी की प्रतिमा स्थापित है। अखाड़े में प्रवेश के लिये पूर्वी दिशा में बुन्देली शैली का आर्च युक्त प्रवेश द्वार निर्मित है। प्रवेश द्वार से ही लगी हुई एक छोटी दालान है, जिसकी छत पर जाने हेतु सोपान बने हुये हैं। पश्चिम की ओर दो विशाल कक्ष और एक दालान रहा होगा जिनके अवशेष आज भी खण्डहर के रूप में विद्यमान है। इनके मध्य में एक लघु आकार का कक्ष है। इसकी छत पर जाने हेतु तत्कालीन समय में जनमानस तथा मल्ल युद्ध प्रेमी इन्हीं छतों पर बैठकर मल्ल युद्ध का आनन्द लेते रहे होगें। इसी कक्ष के समक्ष एक हनुमान मंदिर निर्मित है। अखाड़े के समीप हनुमान मंदिर का निर्माण बीरता की उपासना का द्योतक है। सुरक्षा हेतु अखाड़े के चारों ओर सुरक्षा दीवार निर्मित की गई थी, लगभग 19वीं शती ई. में निर्मित अखाड़ा बुन्देली कला शैली का सुन्दर नमूना है।

दीक्षित का डेरा

महाराजा छत्रसाल संग्रहालय धुबेला से 224 फीट दूरी पर दाहिनी पार्श्व में विशाल हबेली के भग्नावशेष महाराजा छत्रसाल के कोषाध्यक्ष का निवास भवन है। इसको दीक्षित डेरा कहते हैं। इसके अग्रोन्नत भागों में चित्रण के अवशेष है तथा कर्निस के नीचे पार्श्वगत गज, अश्व, शुक्र, मयूर तथा किनारे के आलेखन है, जिसमें हिरमिजि, रामरज तथा हरा रामरज नीले रंगों का मिश्रण प्रयोग किया गा है।

जगत सागर

मऊ ग्राम के उत्तर-पूर्व दिशा में एक विशाल तालाब है, जिसका निर्माण चंदेल शासकों द्वारा करवाया गया था, महाराजा छत्रसाल के पुत्र महाराजा जगतराज ने इस तालाब जीर्णोद्वार करते हुये घाटों के निर्माण के साथ-साथ उसके समीप कुछ मन्दिरों का निर्माण भी कराया था। तालाब के पश्चिम में बांध की दीवार के पास चौसठ योगिनी मंदिर, गणेश मंदिर एवं अन्य मंदिरों के अवशेष विद्यमान है, जो कि चंदेल कालीन कला का प्रतिनिधित्व करते हैं। चूंकि महाराजा जगतराज के द्वारा इस विशाल तालाब का जीर्णोद्वार कराये जाने के कारण वर्तमान में इसका नाम जगत सागर के नाम से जाना जाता है।

धुबेला तालाब

महाराजा छत्रसाल संग्रहालय भवन के ठीक पीछे एक विशाल तालाब है, जिसे वर्तमान में धुबेला तालाब के नाम से जाना जाता है। जनश्रुति एवं किवदन्ती के अनुसार राजकुमार ध्रुव ने यहां तपस्या की थी, इसी कारण इन्हीं के नाम से तत्कालीन समय में निर्मित ध्रुव सागर का ही अपभ्रन्श्र नाम धुबेला तालाब है। तालाब के उपयोग हेतु राजघाट एवं अन्य सामान्य घाट निर्मित कराये गये है। इसी के चारों ओर अनेक तत्कालीन स्मारकों का निर्माण पहाड़ की तलहटी आदि में कराया गया है।

शीतल गढ़ी

महाराजा छत्रसाल की समाधि के समीप ही कुछ दुरी पर शीतल गढ़ी अवस्थित है। शीतल गढ़ी (दीवान कीरत सिंह) की गढ़ी है, छत्ररन की गढ़ी भी कहते है। यह ऊर्ध्व भग्न प्रसाद महाराजा छत्रसाल के प्रपोत्र तथा जगतराज के पुत्र कीरत सिंह की है। इस स्मारक स्थानीय भाषा में छत्ररन की गढ़ी कहते है। गढ़ी दो मंजिला है, ऊपरी भाग में दो बड़े-बड़े हॉल (दालान) है, जिनके दोनो ओर दो-दो कक्ष बने हुये है। सामने खुला चबूतरा है, उसके बांयी ओर भी एक लम्बा दालान जिसमें सात दरवाजे है जो खुले है। दालान के ऊपर तोड़े युक्त छज्जा है, इसके मध्य में रंगीन पेटींग बनाई गई है। इसमें 64 फीट

लम्बा तथा 7 फीट 7 इंच चौड़े आयत में पार्श्वगत मानव कृतियां से जत संधिगत एक आलेखन है। कक्ष के बाहर कार्निस जो के नीचे 37 भाग में एक लम्बा दालान है, गढ़ी बुन्देली शैली का सुन्दर उदाहरण है।

आयाताकारों में से एक में मल्ल विद्याओं से संबंधित अनेक आकृतियां बनी है। इसमें शीर्ष पर बड़ी शिखा तथा अधोवस्त्र अच्छे है। रंगों में काला हिरमिजी तथा हरा प्रयोग किया गया है। मुख्य दरवाजे के ऊपर पाषाण का पुष्पित कमल का अंकन है। दरवाजे कमानीदार है तथा उसके किनारे अलंकृत है। दालान के सामने की दीवाल में दस आले निर्मित है, जिनके ऊपर भी पाषाण पुष्पो का अलंकरण है। ऊपर एवं नीचे जाने के लिए सोपान बनाये गये है, नीचे के भाग में एक लम्बा दालान है, गढ़ी बुन्देली शैली का सुन्दर उदाहरण है।

महेबा गेट

यह स्मारक धुबेला जाने वाले मार्ग पर धुबेला से लगभग 2 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। सम्भवतः यह द्वार धुबेला के लिए प्रवेश द्वार का कार्य करता रहा है। विशाल प्रवेश द्वार मुख्यतः दो प्रवेश दारों से बना हुआ है। महेबा ग्राम की ओर से आने या प्रवेश द्वार के दोनों बाह्य भित्तियों पर दो-दो रथिकायें बनी हुई है। रथिकायो के पार्श्वों पर दोनों ओर एक-एक अष्टकोणीय बुर्ज बना है। दोनों द्वार महराबदार है। प्रथम द्वार एवं द्वितीय द्वार के मध्य में दोनो पार्श्वों परै। द्वार की छत पर जाने के लिए सोपान निर्मित है।

बराण्डे बने हुए है। द्वार की छत पर जाने के लिए सोपान निर्मित है।

धुबेला मूल्यतः एक किला था, जिसकी दीबार के अवशेष आज भी उपलब्ध है, यह दीवार तिंदनी दरवाजे से प्रारंभ होकर मध्य मऊ दरवाजा आता है, उससे सीधी गौरईया माता तक जाती है, जहां से घूमकर सहानियाँ दरवाजे तक जाती है, यह दरवाजा टूट चुका है परन्तु अवशेष अभी भी है। वहां से महेबा गेट तक दीवार जाती है। उसके बाद कुछ दूरी चलने पर पश्चिम की ओर की दीवार का कार्य पहाड़ी करती है। अतः यह पूर्णतः सुरक्षित नगर दीवाल थी। दीवाल के भीतरी भाग में राजकीय भवन एवं अन्य भवनों का निर्माण करायागया पानी की व्यवस्था हेतु धुबेला तालाब था। अतः बुन्देलखण्ड केसरी महाराजा छत्रसाल बुन्देला ने इस स्थान को युद्ध कौशलात्मक दृष्टि से निर्मित करवाया था।

-संग्रहाध्यक्ष
महाराजा छत्रसाल संग्रहालय
धुबेला पो. मऊ-सहानियाँ
जिला-छतरपुर (म.प्र.)
मो.नं. 9826341257

कुछ फागें

-ललित परमार

आये दिन वसन्त के प्यारे, सब ऋतुअन में न्यारे,
डाल डाल में सुमन खिल रहे, भँवर करत गुंजारे,
ठिठुरन कमी शीत की रवि के रुप भये मतवारे,
बोलन लगी कुहुक कोयलिया, प्रियतम मिलौ कहारे,
"ललित" मोद में भरी दिशायें, जीवन जोत जगारे।।१

अब तुम चले आव फागुन में, रस बरसै आंगन में,
फूलो लाल पलाश सुहानौ, रंग भरो बागन में,
दिशा दिशा हो गई नवेली, सेंदुर भर मांगन में,
कुहुक कोयलिया देत नैवतो, अमुया की डारन में,
उड़त कपोत सुआना सुंदर, नौने नील गगन में,
"ललित" कात तुम सुंदर सपनौ वन झूलत आंखन में।।२

कोयल अमुआं डार कुहुक गई, मन की गली महक गई,
फैलो अब ऋतुराज अवनि पै, हर इक दिशा लहक गई,
फूले वन पलाश सें पावन जूही कली चटक गई,
भर कें रस यौवन पनहारी, घट लै कें पनघट गई,
"ललित" सुहाने ई मौसम में, कमी तुमाई खटक गई।।३

महकने लगी रात की रानी, उड़गन जोत समानी,
उर चकोर के लिखन लगी है, शशि की प्रेम कहानी,
खिली कमलिनी सरोवरों में, रूप राशि विलसानी,
"ललित" चौकसी स्वान कर रहे, सियार बोल रये बानी।।४

छा गओ अब बसन्त डारन वै, नदी, ताल, पारन पै,
जमा गओ अपनौ रंग रुतवा, अब पलाश हारन पै,
मद मानौ यौवन रस वोरो, अलबेली नारन पै,
"ललित" जुदैया भई रतनारी, रंग चढ़ो तारन पै।।५

धरती सज गई जैसें मेला, भई प्रभात की बेला,
उड़न लगे नीले अम्बर में, दल विहंग अलबेला,
बन उपवन सब दूजे के रओ न कोऊ अकेला,
रंगे नेह में एक दूजे के रओ न कोऊ अकेला,
"ललित" वांसुरी बजत प्रेम की, नोंनों जुरत झमेला,।।६

रंग हैं फूलन के चटकीले, हरे गुलाबी नीले,
जूही चंपा संग चमेली, और कनैर सजीले,
पंछी गावै डार डार पै, कर श्रृंगार छबीले,
कल कल के सुर नदी सुना रई, जौ जीवन रस पीले,
"ललित" प्रकृति की जा सुंदरता, देख देख कें जीले।।७

ऐसे वन उपवन मन भावन, सुंदर लोक लुभावन,
हुमक कूक कोयलिया भखै, मधुप करै गुंजारन,
नर्तन करत मोर् कऊ पपिहा, पीयू करत उच्चारन,
कऊँ फागुन के रंग पलाश कऊं दहक रहे अंगारन,
"ललित" गंध सोंधी धरती की झड़ी लगा रओ सावन।।८

ताजी हवा लेव जंगल की, वट पीपल द्रुमदल की,
प्रातः भ्रमण करौ नित चल कें मेंनत हलकी हलकी,
शोभा बनी अनूप धरा की, देखौ सुंदर झलकी,
"ललित" लखौ शोभा मनभावन, धरती के आंचल की।।९

कैसी मधुर मधुर मतवाली, पीपर तरु की डाली,
सुआ परेवा झूमत जी में, गाऊत कोयल काली,
पत्तन कौ सुर सर-सर झर झर पवन वजाऊत ताली,
बुल बुल तान छेड़ रई जी में, कौआ दै रओ गाली,
शीतल छाया प्रावन कौ सुख, चैन पा रहो माली,
"ललित" जिंदगी भई सुहानी, भई सवरें खुशहाली।।१०

ग्राम ललन जू का पुरवा
पो. निवारी, जिला छतरपुर (म.प्र.)

हमीरपुर की कासी

- डॉ. आशुतोष त्रिपाठी

हमीरपुर (उत्तरप्रदेश) जिला मुख्यालय से पश्चिम में हमीरपुर कालपी मार्ग पर जालौन जिले के कदौरा कस्बे से दक्षिण दिशा की ओर लगभग बारह किलोमीटर की दूरी पर बेतवा नदी के किनारे पर "जलालपुर" नामक गाँव अवस्थित है। गाँव का नाम पीर,फकीर जलालशाह के नाम पर है। गौरतलब है कि महोबा के राजा परमार (परमर्दिदेव) के दरबारी कवि "जगनिक" ने अपने महाकाव्य "आल्हाखण्ड" में नदी बेतवा कौ दरेरौ के प्रसंग में इस गाँव का नामोल्लेख किया है साथ ही गौर करने वाली बात यह भी यह भी है कि आप इसी गाँव के निवासी थे। उपर्युक्त प्रसंग आल्हा ऊदल तथा पृथ्वीराज चौहान के मध्य हुए युद्ध का है कि कानाखेड़ा की जगह में लाखन की सेना पड़ी थी और जलालपुर की घाटी में पृथ्वीराज की सेना ठहरी थी। दोनों ओर से मारू बजते थे, तो बेतवा की कगारें धँस जाती थीं। ऊदल आल्हा से कहने लगे कि दादा हमारी बात सुनें। यदि बेतवा में उतारा हो जाय, तो आगे का विचार करें। जितने सेना के कढ़ने वाले थे, उन्हें आल्हा ने बुलवा लिया। सोलह घाट बयालिस घाटियाँ पृथ्वीराज ने घिरवा लिये थे। आल्हा ने पाँच पान के बीड़ा लेकर स्वर्ण थाल पर रखवा दिये और घोषणा हुई कि जो क्षत्रिय बहादुर हो, बेतवा (युद्ध) का पान चबा ले। पान चबाकर घाट घुड़ा ले और चौहान का मान-मर्दन करे-

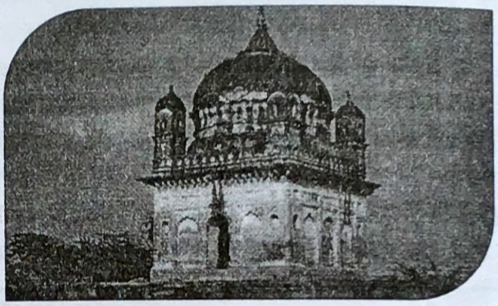
काना खेड़ा की जाँगाँ माँ, सेना परी कनौजी क्यार।
जलालपुर केरे घाटे माँ, परो तो सब्दबेध चौहान।
मारु बाजैं दोऊ ओर सें, वेत्रवती की धँसैं कगार।
ऊदल बोलो नुन आल्हा सें, दादा सुन होव बात हमार।
होय उतारा जो बेतवा माँ, तो आँगूं का करें विचार।

ऐसा माना जाता है कि मुगल काल में इस गाँव को तहसील का दर्जा मिला हुआ था, साथ ही अंग्रेजों के शासन में भी इसे यह रुतबा मिला रहा। इसकी प्रामाणिकता तहसील से प्राप्त अभिलेखों से होता है। लिहाजा आज भी इसके नाम से परगना लिखा जाता है। गौर करने वाली बात यह भी है कि मुगलकाल से लेकर अट्ठारवीं शताब्दी तक गाँव की बेतवा नदी से यहाँ से कोलकाता (तब कलकत्ता) तक सोना, चाँदी तथा अन्यान्य व्यापार होता था। इस कारण गाँव अपनी सम्पन्नता तथा धनाढ्यता की वजह से दूर दूर तक प्रसिद्ध था।

गाँव के व्यापारिक केन्द्र होने के नाते यहाँ तमाम व्यापारी निवास करते थे। उनमें से एक थे मन्नू अग्रवाल उर्फ मुन्ने पंडा। इन्होंने इस गाँव को भगवान शिव की नगरी अर्थात् काशी बनाने का स्वप्न देखा था। अपने स्वप्न को साकार करने की दिशा में कदम बढ़ाते हुए इक्यावन शिव मंदिरों का निर्माण करवाया साथ ही इतनी संख्या में कुए भी खुदवाये। आपकी एक सौ एक शिवमंदिरों के निर्माण की योजना थी इन वणिक श्रेष्ठ की धनाढ्यता का अन्दाजा इस बात से लगाया जा सकता कि इनका आवास तीन खण्डों का था तथा सबसे ऊपर के खण्ड में तालाब भी बनवाया था। साथ ही पाँच हजार तवायफों(नाचना-गाना जिनका पेशा था) को भी बसाया था। इनके बातचीत का लहजा मजाकिया होता था। इस बात की पुष्टि वहाँ के लोगों ने स्वयं की। यहाँ बेतवा नदी के किनारे पर सोलह घाट तथा बयालिस घाटियाँ भीं। जिनको युद्ध के समय पृथ्वीराज चौहान ने घिरवा लिया था-

"जितने कड़इया ते सेना के, नुन आल्हा नें लीन बुलाय।
सोरह घाट बयालिस घाटी, घिरवा लये ते पृथ्वीराज।
पाँच पान के बीड़ा लैकें, सोबरन थार पै दये धराय।"

परन्तु इन वणिक श्रेष्ठा की अकस्मात मृत्यु के चलते एक सौ एक शिव मंदिरों का निर्माण रुक गया। लेकिन आज भी यहाँ पर काफी संख्या



में मंदिर विद्यमान हैं। यहाँ के प्रमुख मंदिरों में बेतवा के किनारे बना "पक्का घाट मंदिर है। उल्लिखित मंदिर में शिवलिंग स्थापित है तथा ग्रामीण वहाँ पूजा अर्चना के लिये पहुँचते है। इसके पृष्ठ भाग में बजरंग बली का मंदिर है। साथ ही सिद्ध स्थान, राधाकृष्ण, रामजानकी मंदिर तथा एक ऐसा भी मंदिर है जिसके गर्भगृह में कोई भी मूर्ति नहीं है। रामजानकी मंदिर दो से तीन शताब्दी पूर्व का है। सुरहन मंदिर भी लगभग तीन सौ साल पुराना है। एक अन्य हनुमान मंदिर भी है जो कि जंगल में स्थित है। लिहाजा यहाँ पहुँचने के लिये पगडंडियों के मार्फत ही पहुँचा जा सकता है।

इसप्रकार निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि जलालपुर गाँव अपनी ऐतिहासिकता, धार्मिकता तथा प्राचीनता को अपने में आत्मसात किये हुए युद्ध के प्रमाण मौजूद है। आल्हाखण्ड चन्देलों की वीरता का प्रमाण प्रस्तुत है।

"घाट बयालिस नदिया बारे, सब लाखन ने लये छुड़ाय।
कड़ी लड़ाई भै नदिया माँ, पाई विजय कन्नौजी राय।
जीत का डंका लाखन राना, जलालपुर माँ दीन बजाय।"

आशा है उत्तरप्रदेश सरकार बुन्देलखण्ड के इस धरोहर को व्यक्तिगत रुचि लेकर इस स्थान को पर्यटन की द्वष्टि से विकसित करे तो यह वैश्विक धरोहर के रुप में अपनी महत्ता को सिद्ध कर सकती है। तथा यहाँ के लिये भारत सरकार के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय से भी सहयोग प्राप्त कर सकती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जल्द ही इस गाँव के भी अच्छे दिन आयेगें।

श्री रामकृष्ण परास्नातक महाविद्यालय
कुरारा हमीरपुर उ.प्र.
पिन कोड 210505

बुन्देली भाषा के नाटकन की परम्परा

- - डॉ. लखन लाल खरे

नाटक के बड़े भारी जनबा आचार्य भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र नाम सें एक भोत बड़ी पोथी लिखी ती। ई पोथी में उनने नाटक करबे बारे नट उर नटी को जिकर करो है। आज से पचास-साठ साल पेलां लो बुन्देलखण्ड में नट जाति भोत हती। ई जाति को कामइं करतब दिखा-दिखा कें पेट पालबो हतो। ई जात बारन के नांव तो मुसलमानी होत ते; पै, वे संकर जीखों मानत ते, उर इनें मरबे के बाद जलाव नइं जात तो, दफ्नाव जात तो। भरतमुनि ने संकरजी खों आदिदेव मानों-नाटक को। अब तो नट जात बुन्देलखण्ड सें बिला-सी गइ, पै जा बात खोज करबे की है कि बुन्देलखण्ड में नाटकन की परंपरा का तबइ सें है, जबसे भरतमुनि ने नाट्यषास्त्र पोथी रची ती? विद्वानन ने भरतमुनि को समय ईसा के पेलां दूसरी सें चौथी सताब्दी मानों। जो सोउ मानो कि नाट्यषास्त्र की रचना कष्मीर में भइ ती। हो सकत कि नट जात के कछू कबीला कष्मीर कोदाउं से घूमत फिरत बुन्देलखण्ड की भूमि पै आ गय होंय उर इतै अपनी कला दिखाबे को काम करत रय होंय। छतरपुर जिले की घौरा टप्पा तहसील के हरपुरा गाँव (रामटौरिया के ऐंगर) मे नटन के खूबं परिवार बसे ते। उतै नट बाबा के चौंतरा अबै लो बनें। बुन्देली बोली के सूरज की किरनें सातवीं-आठवीं शताब्दी सें निकरन लगी तीं। हरां-हरां ई बोली को उजयारो फैलन लगो, पै संस्कृत को चरचराटो कम नइं भव। चंदेलन के राज में केउ नाटक लिखे गय उर खेले गय। चंदेल नरेस कीर्तिवर्मन के समय में कृष्णमिश्रजू ने प्रबोध चन्द्रोदय नाटक लिखो। वत्सराज ने षट्रूपकम नांव सें छै नाटक लिखे। और भी केउ नाटक लिखे गय, पै सब संस्कृत में। चंदेल के बाद बुन्देलखण्ड में बुन्देलन को राज आव। बुन्देलन के राज में बुन्देली भासा को सूरज टीकाटीक दुपरिया की घाईं दमकन लगो। इनइं के राज काल में रामजू की उर कनैयाजू की भक्ति भावना को ऐंन फैलाव भव। बुंदेलखण्ड भर में रामलीला उर रासलीला की मंडलियां आउन लगीं। पै इनकी भासा अवधी उर ब्रज हती। इनकी देखा देखी बुन्देलखण्ड के लेखकन ने राम उर कृष्ण की कथाओं की टेक पै नाटक बनाय जरूर, पै उनमें बुन्देली कम उर ब्रजभासा जादां हती। बुन्देलखण्ड की सबई हलकी-बड़ी रियासतन में केउ नाटक लिखे गय हुइएँ, पै अबै लो ई कुदाउं कोउ ने जादां छानबीन नइं करी। दीवान प्रतिपालसिंह जू ने बारा भागन के अपने ग्रंथ-'बुंदेलखण्ड का इतिहास' उर गोरेलाल तिवारी ने ऐई नाम के अपने इतिहास ग्रंथ में कछू नाटकन के नांव दय। दीवान प्रतिपालसिंह जू ने जोंन नाम दय, उनमें पंहरप्रसाद दुबे के संवत् 1860 में लिखे दो नाटक- 'मेवाड़ केसरी' उर 'हरदौल', पन्ना के माखन

लखेरा उर अजयगढ़ के परमानन्द ब्राह्मण के संवत् 1920 में लिखे गय हनुमान नाटक उर महोबा के ईष्वरीप्रसाद कायस्थ के संवत् 1967 में लिखे गय 'तरंग' नाटक को ज़िकर है। इन नाटकन में खड़ी बोली, ब्रज उर बुन्देली को मिलो जुरो रूप है। ई के बाद तो बुन्देलखण्ड में केउ नाटककारन ने नाटक लिखे। ऐइ समैया पै हाथरस उर कानपुर में फ्ली-फूली नौटंकी की बुन्देलखण्ड में अवाई भई। ई नौटंकी नें बुन्देलखण्ड बारन पै ऐसो जादू करो कि राजा उर रंक सबरे ई के नगाड़े की टंकार पै लट्टू हो गय। गाँवन-गाँवन नौटंकी होन लगी। ई को असर जो भव कि कलाकार नौटंकी की छपी किताब सें पाठ देत ते उर अरथाउत ते बुन्देली में। ऐसे में बुन्देली के विकास की खूब गैल खुली। पै बात है सुद्ध बुन्देली के नाटकन की। संस्कृत व ब्रज में जोंन नाटक लिखे उर खेले जात ते, वे बंद रंगसाला में राजा-महाराजन उर बड़े-बड़े सरदारन के लाने होत ते। इन नाटकन में दई 'देवतन की उर राजा-राजकुमारन की कथाएँ दिखाई जात तीं। न तो जनता की कोनउं भावना इन नाटकन में होत ती उर न जनता जे नाटक देख पाउत ती सो जनता ने खुदइ ई की गैल ढूंढ़ लई। गाँवन में कोउ कोउ जनें मसकरीं करबे के जनबा होत ते। वे अपने हांत पावन सें, नैन-मटक्कन सें उर बोली-बानी सें सेठ-साउकारन की, हाकमन की उर बड़न-बड़न की नकलें उतारत ते। हरां-हरां इनन ने अपनो भेस बदल कें जनता को मनोरंजन करबो सुरू करो। जे बहुरूपिया कहाउन लगे उर इनके खेल खों स्वांग भरबो कव जान लगो। जबारन के समै उर कजरियन के समै सोउ ढाल छेंकबे के स्वांग होन लगे। जात-पांत भोत हतो, ऊ समै पै सो अपने-अपने जात बिरादरी बारन ने नाचबे-गाबे की मंडलियाँ बना लइं। गाँवन-गाँवन होन-हवान उर ब्याव-काज के औसर पै जे मंडलियाँ जान लगीं। कांड़रा, रावला, दुलदुल घोड़ी उर राई-दिवारी-मौनियां- जे बुन्देलखण्ड के लोकनृत्य जरूर हैं, पै बुन्देली नाटकन की सुरूआती झलक इनन में दिखाई दे जात, काय सें कि इन नाचन में नचबे-गाबे के संगे-संगे संवाद होत उर हाव भाव सें होत। सांसी कइ जाय तो बुन्देली नाटकन की सुरूआत इतै की महिलान ने करी- बाबा खेलकें। बुन्देलखण्ड के अलग-अलग भागन में बाबा खों जोगिया उर खोइया सोउ कात। जबघर भर लरका की बरात ले कें जात तो घर-बाखर सूनी हो जात ती, तबै बाबा खेलबे बारीं खेल-खेल में सूने घर खों रखाउत तीं। इनके नाटक पेलां से न लिखे होत ते उर न पैलां से तैयारी होत ती। सब तुरत फुरत होत ती। इनकी हाजिर जवाबी अच्छे अच्छे नाटकन के संवादन के कान काटत ती। तो जे हते ठेठ बुन्देली के पैले नाटक। जबलपुर के बुन्देली के बड़े भारी जनबा भैया गुप्तेष्वर द्वारका प्रसाद गुप्त जू को कैबो है कि बुन्देली में लिखो पैलो नाटक 'विवेकी और निपोची है जो राजनगर (छतरपुर) के कोनउं लेखक को लिखो भव है। जो नाटक सन् 1950 के पेलां छपो तो और आर्य समाजी संस्था ने

इये खेलो तो। फिर तो बुन्देली में केऊ नाटक लिखे गय, वे छपे उर खेले गय। मदन सोनी और ध्रुव शुक्ल द्वारा बुन्देली में केउ नाटक लिखे गये, केउ नाटकन को बुन्देली में उल्था करोगव उर केउ नाटक भारत भवन में संगीत नाटक अकादमी की तरफसें खेले गय। सागर के डॉ. बलभद्र तिवारी जू ने सोई एक किताब निकारी ती, जी में बुन्देली के पाँच नाटक हते। छतरपुर के बुन्देली के जनबा स्व. श्री नर्मदाप्रसाद गुप्तजू ने सोई बुन्देली में एक नोंनों नाटक- 'सुंदरिया और गंगिया' लिखो तो। खुद भैया गुप्तेष्वर द्वारका प्रसाद गुप्तजू ने बुन्देली में पचास सें जादां नाटक लिखे। इनमें ईसुरी, हंसा चल देस बिराने, हंसा कर ले किलोल, भोले भंड़या,ज्ञान पांड़े, लाला की बातें, जमराज के गरें परी जैसे केउ नाटक नोंने बने उर खूब खेले गय। बुन्देलखण्ड में नाटक परंपरा खूब फ़्लत-फूलत रई। महोबा में चंदेलन के समै की रंगसाला के खड़ेरा अबै लो हैं। डबरा के ऐंगर पवाया में संस्कृत के नाटककार भवभूति के समै की रंगसाला है। ग्वालियर के ऐंगर बरई (पनिहार) में मानसिंह तोमर की बनवाई रंगसाला है। पूरे बुन्देलखण्ड में ऐसी केउ रंगसालाएँ हैं। बुन्देली में सोउ पूरे बुन्देलखण्ड भर में खूब नाटक लिखे गय। पै अबै लो इनकी पूरी तरा सें खोज बीन नईं भई। पै, अब भव चइए। नाटककार भवभूति के समै की रंगसाला है। ग्वालियर के ऐंगर बरई (पनिहार) में मानसिंह तोमर की बनवाई रंगसाला है। पूरे बुन्देलखण्ड में ऐसी केउ रंगसालाएँ हैं। बुन्देली में सोउ पूरे बुन्देलखण्ड भर में खूब नाटक लिखे गय। पै अबै लो इनकी पूरी तरा सें खोज बीन नईं भई। पै, अब भव चइए।

- प्राचार्य

शासकीय महाविद्यालय, करैरा

लोक कवि ईसुरी जैन्ती समारोय की

-कल्याण दास साहू 'पोषक'

बुन्देली के महान कवि ईसुरी की जैन्ती में जाबे कौ, धूम-धाम सें मनाबे कौ न्यौतो पाकें भौत खुसी भयी। राम नौमी के बड़े भोर उतरत चैत मइंना की दसें (तारीक नौ) दिनाँ बुदवार खों हम उनकी जनम भूम 'मेढ़की' गाँव जाबे खों घर सें निकर परे। दिनइं-दिन कौ कार्यक्रम हतो, सो झटपट सपर खोर कें, पूजापाठ और कलेवा करकें बैठ गाड़ी में, मऊरानीपुर के मोटर स्टैण्ड पै न जाकें, गुरसराँय-गरौंठा तिगैला पै उतर गये। ई-तिगड्डा सें झाँसी कोद खों एक-दो फल्लांग पै, दाँयने हाँत पै एक ठऊआ लिंक रोड फूटौ है।

जौ लिंक रोड कितऊँ कच्चौ है, कितऊँ पक्कौ है कितऊँ सँकरो है, कितऊँ चौंरो है कितऊँ गढ़ा-गूँथरा हैं तो, कितऊँ माटी के गिट्टी के ढेर लगे हैं। रोड के ई-बगलै ऊबगलै खदानन में नेहर कौ पानी भरो। खेतन में पकी फसलें ठाँडीं। कछु खेतन की फसलें कटन लगीं। खेत निखराये-से दिखन लगे। निखराये खेतन में ढोर-बछेरू चर रए, पसु-पक्षी दाने चुनरए। खदानन में गड्ढन में पानी भरौ सो रखत की प्यास बुझत रत। बसन्त रितु कौ मौसम है, जाँगन-ताँगन रूख-बिरछ, पेड़-पौदा सुहाने लग रए। चिरैंयाँ चैंचया रयीं, कोयल की कूँक सुना रई। टेसू फूल रए, आमन में हल्कीं-हल्कीं अमियाँ लटकीं दिखा रयीं। कितऊँ-कितऊँ थ्रेसर सें लाँक कड़ रयी सो भुसा उड़त दिखा रओ। धूरा उड़त दिखा रयी। रस्ता ऊबड़-खाबड़ है, सो दचकाखूब लग रए। दो-तीन मील चलवे पै एक ठऊआ खूब ऊँची टोरिया पै मन्दिर दिखानों, फिर गाँव दिखान लगौ। इस्कूल लौं जाकें हम रुक गए। इतइं चहल-पहल मची ती, सजावट हती, ऐलान हो रओ तौ, सो हमने अन्दाज लगालओ कै-इतइं है कार्यक्रम। सबसें पैलाँ गाड़ी सें उतर कें 'मेढ़की' गाँव की पावन माटी खों माथे पै लगा कें नमन करो, धरती खों प्रणाम करो। तनकइ आँगें बढ़े सो श्री अमृतलाल वर्मा जू दिखा परे। गाड़ी कौ ऐरौ सुनकें वे हमाई कोद खों चले आ रयते। झट्टइं उनने दिल-दबंगी सें सबकी अगुवानी करी, सबखों हाँतन पै लओ। जो पाँव परबे लाक हते, सो उनके पाँव परे। कछू जनन सें गरें मिले। कछू जनन सें दोई हाँत जोर कें राम राम करन लगे हालचाल पूँछे। इतै तक आवे में जो दुख-तकलीफ भयी ऊके लाने हाँत जोर कें, सच्चे दिल सें ऐसानमन्द भए। सबखों छाँयरे में बैठारौ। ठण्डौ पानी पिआव, ठण्डाई पिआई। सबजनें पौंच गये, सो उनै भौत हाल-फूल भयी।

उतै मंच पै डॉ. दयाराम वर्मा "बेचैन जू ऐलान कर रयते, सबखों बिठारवे की विवस्था कर रयते। मंच के एक कुदाऊँ ऊँचे आसन पै माँ सरसुती जू पुस्तक और वीणा लयें पावन तस्वीर में विराजमान हतीं, तौ दूसरी तरपन लोककवि ईसुरी कौ चित्र सोभायमान हतौ। ऐसें लग रओ तौ-जैसें वे सजीवन मंच पै विराजे होंय। बीच में बैनर टँगो तो, जी में संस्थान कौ नाँव तथा पदाधिकारियन के नाँव उलछरे हते। मंच के अँगाऊँ खूब मैदन्ना हतो, फर्स बिछे ते, कुरसीं डरीं तीं। उनपै ग्रामवासी और साहित्यप्रेमी विराजमान हते। दूर-दूर के तथा ऐंगर सें पधारे सबइ अतिथि विदवानन खों बड़े आदर सें, मानपान सें, नाँव लै-लै कें, परिचय करात भए, मंच पै बिठारवे कौ दस्तूर भऔ।

भोपाल सें पधारे बुन्देली के उदभट विद्वान डॉ. के. एल. वर्मा "बिन्दु", छतरपुर सें पधारे बुन्देली के मर्मज्ञ श्री सुरेन्द्र शर्मा "शिरीष" जू, झाँसी सें पधारे आकाशवाणी के वरिष्ठ उदघोषक श्री जगन्नाथ "सुमन" जू, पृथ्वीपुर सें पधारे ख्यातिनाम साहित्यकार श्री उमाशंकर खरे "उमेश" जू तथा गुरसराँय सें पधारे लोकसाहित्य मनीषी डॉ. शिवाजी चौहान आदि जनन ने विधिवत फूलकी जाँगा पखरी अरपित कर माँ सारदे कौ पूजन करो, ऊदबती लगाई, जोत उजयारी, फूल माला चढ़ायी तथा माँ के श्री चरनन की पावन रज माथे सें लगाई। ई के बाद लोककवि ईसुरी के चित्र पै सिरधा-सुमन अर्पन करे, फूल माला चढ़यी। गुरसराँय सें पधारी कवयित्री श्रीमती पूजा ठाकुर ने मीठे सुर में माँ सारदे कौ आवाहन करो। गनेस जू भगवान की स्तुति सें कार्यक्रम कौ सुभारम्भ भओ। समारोय में पधारे सबइ अतिथि जनन खों ईसरुी शोध संस्थान मेढ़की के पदाधिकारियन ने टींका लगाव, फूल-माला पैरायी। वन्दन करो, अभिनन्दन करो। कार्यक्रम के पैले दौर की शुरुआत लोकसंगीत विधा "ख्याल गायकी" सें भयी। सबसें पैलाँ ईसुरी रचित चौकड़ियन कौ फागन कौ गायन भओ-"मोरी खबर सारदा लइओ"।

"हमसें दूर तुमाई बखरी, हमें रजऊ जा अखरी"

"बखरी रैयत हैं भारे की, दई पिया प्यारे कीई में बुन्देलखण्ड के जाने-माने ख्याल गायक श्री भगवान दास बक्सी" श्री जमनादास, श्री चन्द्रभान नामदेव, श्री बाबूराम पस्तोर आदि लोकगायकन ने ख्याल सम्राट डॉ. शिवाजी चौहान की अध्यक्षता एवं सुकदेव व्यास कें सफल संचालन में एक सें बढ़के एक धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक ,ख्याल (तुर्रा पक्ष एवं कलगी पक्ष) की प्रस्तुती दैकें सबइ कौ मन जीत लओ। सबइ जनन ने- विलुप्त होत जा रयी ख्याल गायकी कौ, फड़बाजी कौ खूब मजा लओ।

दूसरौ दौर साहित्यिक परिचर्चा कौ हतौ। ई में सबसें पैलाँ डॉ. डी. आर. बेचैन जू ने "ईसुरी शोध संस्थान मेंढ़की के" पंजीयन की खुसखबरी दयी। ई के बाद ईसुरी के बिखरे पड़े साहित्य खों इकटठो करकें खुद के पास सुरक्षित रखे होवै की जानकारी दयी। येई के संगै परिचर्चा में उनने ईसुरी के जीवन-परिचय कौ हवाला देत भए अपनी तरफ सें सिरधा सुमन अरपित करे। ई के बाद बुन्देली के मूर्धन्य विद्वान डॉ. के.एल. वर्मा "बिन्दु" जू ने ईसुरी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व कौ परिचौ लिखे कगदन खों वाँच कें दओ। उनने कइ-

"रामायन तुलसी कही, तानसेन ज्यों राग।

तैसइ ई कलिकाल में कही ईसुरी फाग।।"

उनने ईसुरी के लोक-साहित्य खों अमूल्य धरोहर मानौ है। उनके कये अनुसार "ईसुरी की फागें", चौकड़ियाँ एवं साहित्य के बिना "बुन्देली साहित्य" बिना नोंन की सब्जी जैसौ है। अन्त में उनने ईसुरी रचित ई दड़ींच (पंक्ति) सें सिरधा सुमन अरपित कर आलेख वाचन पै विराम दओ-

कैबे खों रै जाने जग में, ऐसे हते फलाने

येइ बीचाँ सम्मान समारोय के औसर पै लोकभूषण सम्मान (उ.प्र.) लखनऊ सें विभूषित डॉ. अवधकिशोर जड़िया हरपालपुर "अथाई की बातें" बुन्देली तिमाई पोथी के प्रधान सम्पादक श्री सुरेन्द्र शर्मा "शिरीष" जू (छतरपुर) डॉ. के.एल. वर्मा बिन्दु जू (भोपाल) कौ बुन्देली साहित्य सेवा सम्मान से तथा श्रीमती पूजा ठाकुर को कवियित्री सम्मान से ईसुरी शोध संस्थान मेढ़की के पदाधिकारियन ने शाल, श्रीफल एवं सम्मान पत्र दैकें सम्मान करौ। कार्यक्रम की गरिमा बढ़ी।

तीसरौ और अन्तिम दौर कवि सम्मेलन कौ हतौ। ई कौ संचालन जाने-माने बुन्देली हास्य कवि जगन्नाथ सुमन झाँसी वारन ने करो। सबसें पैलाँ उनने "शिरीष" जू खों आमन्त्रित करौ। उनने भौतइं नोनों-नीको गीत पढ़ो। ई के बाद उनने जड़िया जू खो बुलाव। श्री जड़िया जू ने भौतइं सुन्दर, श्रृंगार एवं भक्ति रस सें ओत-प्रोत रचना पढ़ी- "हम कवि बुन्देली वानी के, झाँसी की रानी के" अगले कवि के रुप श्री शिशुपाल सिंह "सरस" (इटावा) वारन ने भारत माँ कौ गुणवान कविता सें करो। ई के बाद श्री सुकदेव व्यास (गुरसराँय) ने वीर रस की कविता पढ़ी "अथाई की बाते" बुन्देली तिमाई पत्रिका के प्रबन्ध सम्पादक डॉ. राघवेन्द्र उदैनिया सनेही (छतरपुर) ने बुन्देली में गजल पदकें वाह-वाही लूटी। श्री उमाशंकर खरे "उमेश" (पृथ्वीपुर) की रचना खूब सराही गई- "देव गुणगान करें, कीरत बखान करें" ऐसी पुनीत मातृभूमि भवानी है।

पृथ्वीपुर सें पधारे डॉ. सन्तोष जैन "राही" ने श्रृंगार की चौकड़ियाँ पढ़कें माहौल खों रंगीन बनाओ। परशुराम भास्कर ससवारा वारन ने बेटी बचाओ अभियान की कविता पढ़के सबखों सोचवे पै मजबूर कर दओ। येइ क्रम में श्री बी.एस. सेंगर छतरपुर, प्यारेलाल बेधड़क मऊरानीपुर, मास्टर हिरदास हरि, बाबूराम पस्तोर (गुरसराँय), विन्द्रावन लाल वर्मा, श्रीमती पूजा ठाकुर, श्री सुमन जू, डॉ. बिन्दु, जी कल्याण दास साहू पोषक पृथ्वीपुर जिला टीकमगढ़ इत्यादि लगभग डेढ दरजन कवियन ने एक सें बढ़के एक रचनायें पढ़के उतै विराजमान साहित्य प्रेमियन कौ खूब मनोरंजन करो। हास्य-व्यंग्य, ओज, श्रृंगार एवं भक्ति रस से लबालब कवितन खों खूब पसन्द करो गओ। कवियन ने खूब तालियाँ बटोरी और लोक कवि ईसुरीर खों श्रद्धांजलि अरपित करी।

जैसइ कवि सम्मेलन कौ समापन भओ। तुरतइं सबखों भोजनन के लाने बैठारौ गओ। उमदा अफर पेट भोजन भए। सबखों विदाई राशि लिफापा में धरकें भेंट करी। दिन डूबे लौं कार्यक्रम कौ मजेदार समापन भओ। सबइ जनें ईसुरी की पावन जनम भूम खों नमन करत भए बुन्देली धरा-धाम की जै-जैकार करत भए खुसी-खुसी अपने अपने घरन खों लौट परे। श्री अमृत लाल वर्मा खों, आयोजन समिति खों और मेढ़की तथा आसपास के ग्रामवासियन खों कोटन कोट बधाई

-किले के पास, पृथ्वीपुर
जिला-टीकमगढ़ (म.प्र.)
मो. 9981087763

दो कवितायें

-डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय 'सरल'

सांसद और संसद

सांसद हो हल्ला कर रोजऊँ, ठप्प करें संसद खों।
कोंनऊँ काज होंन न देतई, धोकौ दयँ जनमत खों।।
वेतन भत्ता मनमानों लै, काम पाई भर नईयाँ।
जन-हित के बिल पास न हो रय, शरम रती भर नईंयाँ।।
आलीशान बंगलन में वे, ठाठबाट से रै रये।
चुने गये वे जिन कामन खों, उनै नैंक नईं करये।।
बिना काम के बेतन-भत्ता, डकर जाए ओ भइया।
रोके खों कानून बने तौ, मच जै हा हा दइयाँ।।
सवा अरब जनता सें चुनकें, संसद सबसे बड़ी बनी।
सबरी शक्ति बसी संसद में, साखऊ सबसें बनी धनी।।
बोटन की कीमत नाहुक के, कामन में करये बर्बाद।
चूना चटा करोड़न कौ वे, जनता खों लग रये जल्लाद।।
संसद की सत् साख मिटा रय, संग धींगा मस्ती करये।
विध सम्मत कामन खों रोकें, जन-घाती नीति पकरये।।

सारी

सारी खों सारी कै देखौ, मुस्का कें भगती सारी।
मुखड़े पै खिल जाऐ लाली, रस-भरती लगती प्याली।।
मौका जब जी खों मिल पाए, सारी सों जी भर बतियाएँ।
फूल हँसी के खिल खिल जाएँ, रोम रोम तन, मन भिद जाएँ।।
जाए तुमई ससरारै देखौं, आ घेरें वे टोली में।
बातन के फोरतई बतेसा, हँसी उड़ाएँ ठिठोली में।।
करें मसकरीं छेड़ाखानी, व्यंग भरी हो बरसातें।
हास प्रेम की बहै सुन्धारा, भर-रस चित हो मदमातें।।
जीजा सारी करें मसकरीं, रीत चली आई विख्यात।
मिरजादा ई में भी होतई, मूरख भूल जाऐं जे स्यात्।।

-97/17 ए सिविल लाईन
सरल साहित्य संगम झाँसी
मो. 9452921298

इतिहास और कल्पना का रसायन है यह उपन्यास

- डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त बरसैंयाँ

उपन्यास हिन्दी-गद्य की अपेक्षाकृत बड़ी विधा है। उसका कलेवर भी अधिक विस्तृत होता है जिसका आद्यान्त निर्वाह उतना सरल नहीं होता। उपन्यासकार को बड़ी सावधानी से सारे सूत्रों को संयोजित कर लक्ष्य तक पहुँचने के लिए पर्याप्त मशक्कत करनी पड़ती है। यह कठिनाई तब और बढ़ जाती है जब कोई ऐसी ऐतिहासिक रचना का उद्देश्य सामने हो जिसके प्रामाणिक ऐतिहासिक तथ्य अनुपलब्ध हों, केवल लोक प्रचालित तथ्यों को मुख्यतः आधार बनाना पड़े। रायप्रवीण संबंधी उपन्यास इसी प्रकार का है।

बुन्देलखण्ड के इतिहास में ओरछा का विशिष्ट स्थान रहा है। बुन्देलों का शासन कई शताब्दियों तक रहा। भारतीचंद, मधुकरशाह, वीरसिंह देव आदि नामी-गिरामी बुन्देला शासक रहे जिनकी कीर्ति गाथायें इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हैं। यही नहीं, उनकी जन-जन में लोक व्याप्ति और प्रतिष्ठा है। राजा इन्द्रजीत और रायप्रवीण के प्रसंग इतिहास में भले ही अंकित न हों, किन्तु बुन्देली जनजीवन में इनकी प्रेम कहानी पर्याप्त चर्चित है।

इन्द्रजीत का नाम तो ओरछा राज्य के इतिहास में उपलब्ध है! महाराजा मधुकरशाह के निधनोपरान्त उनके ज्येष्ठ पुत्र रामशाह को ओरछा की राजगद्दी मिली। इन्द्रजीत उनके छोटे भ्राता थे, उन्हें कछौआ की जागीर मिली थी तथा वीरसिंह देव को बड़ोंनी की जागीर सोंपी गई थी। चूँकि रामशाह भक्तिभावी स्वभाव के थे, पूजा-पाठ में संलग्न रहते थे अतः उन्होंने ओरछा के राज-काज का दायितव अपने प्रिय भाई इन्द्रजीत को सौंप दिया। इन्हीं इन्द्रजीत के साथ रायप्रवीण की प्रेमगाथा जुड़ी है।

गुणसागर सत्यार्थी बुन्देलखण्ड के सुपरिचित साहित्यकार है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी होने का विशेषण उन पर सटीक बैठता है। वे बुन्देली और खड़ी बोली हिन्दी के पद्य और गद्य की सभी विधाओं के मजे हुए लेखक हैं। कहानी, निबंध, नाटक, संस्मरण, रेडियो रूपक आदि से संबंधित उनकी अनेक रचनाएँ वर्षो से प्रकाशित-प्रसारित होती रही हैं। कविताएँ की संख्या सैकड़ों में हैं। संगीत में उनका अच्छा खासा दखल है जिसके अनेक उदाहरण इसी उपन्यास में कई जगह देखे जा सकते हैं। उन्हें राग-रागनियों तथा संगीत के शास्त्रीय पक्ष का अच्छा बोध है। वे चित्रकला में भी दक्ष हैं। कुण्डेश्वर में अपनी इस कला का वर्षो से प्रदर्शन-प्रशिक्षण करते रहे हैं। कालीदास के मेघदूत का उनका बुन्देली में पद्यानुवाद पर्याप्त चर्चा में रहा है। अब एक थी रायप्रवीण ऐतिहासिक-आंचलिक उपन्यास लेखक का साक्ष्य भी पाठकों के समक्ष है।

उपन्यास में ग्वालियर और ओरछा के इतिहास सूत्रों को भली प्रकार संजोया गया है। बुन्देलखण्ड की परंपरा, संस्कृति और लोकजीवन आदि का स्थान-स्थान पर अंकन लेखक की बहुज्ञता का द्योतक है। रीति-रिवाजों और पर्वों-त्योहारों-उत्सवों एवं रूप साज-सज्जाओं के वर्णन से लगता है कि लेखक का उनसे निकट का परिचय है और वे राज परिवारों के अंतरंग-बहिरंग को भी देखते रहे हैं। राज परिवारों में परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, कलह, सौत संघर्ष पुरानी बातें हैं, जिनकी झलक वीरसिंह देव और इन्द्रजीत के मध्य की प्रतिद्वन्दिता और रनिवास की कलह रावरानी के षड्यंत्र-प्रसंग से पहचानी जा सकती है। इन प्रसंगों से लगता है कि लेखक ने संबंधित इतिहास और राजपरिवारीय-जीवन तथा बुन्देलखण्ड की संस्कृति का गहरा अध्ययन किया है।

रायप्रवीण को लेकर अनेक रचनाकारों ने ग्रन्थों का प्रणयन करते हुये अनुमानित कल्पनाओं से काम लिया है। इसलिये कि कोई प्रामाणिक साक्ष्य उपलब्ध नहीं हैं। प्रायः सभी लेखकों ने क्षेत्र में प्रचलित किंवदन्तियों को रचना का आधार बनया है। किसी ने रायप्रवीण को नर्तकी लिखा, किसी ने प्रेमिका और किसी ने इन्द्रजीत की विवाहिता। जाति-पाँति और माता-पिता को लेकर भी विभिन्न मत है। लेखकों की कल्पनात्मक मनमानी रायप्रवीण पर ही नहीं, ईसुरी और आल्हा संबंधी प्रसंगों में भी कम नहीं चली। गुणसागर जी ने रायप्रवीण के प्रसंग में लगता है कि कुछ अतिरिक्त उदारता से काम लिया है। सुन्दरी तो वह थी ही, किन्तु गाँव की एक अनपढ़ लड़की बहुत कम समय में इतनी बिदुषी, गुणज्ञ, गायन-वादन, नृत्य, संगीत, चित्रकला आदि में निष्णात तथा हिन्दी-संस्कृत में वार्तालाप करने वाली इतनी वाकपटु, प्रत्युत्पन्नमति, हाजिर जवाब, चतुर हो जाती है कि राज परिवार ही नहीं कवि श्रेष्ठ केशवदास चमत्कृत तथा नौं रत्नों से सम्पन्न हिन्दुस्तान का शहंशाह अकबर भी हतप्रभ तथा निरुत्तर होकर उससे अपनी पराजय स्वीकार कर लेता है। यही नहीं, वह मानता है कि रायप्रवीण की वाक्चातुरी और सात्विक निष्ठा ने उसके जीवन की दिशा बदल दी। रायप्रवीण आगरे के लाल किले से यमुना की धारा देखकर जिस प्रकार की काव्यात्मक कल्पना करती है वह अच्छे-अच्छे कवि भी कम ही कर पाते हैं। इससे भी आगे वह इन्द्रजीत के प्रति जैसी निष्ठा, समर्पण और सतीत्व का प्रदर्शन करती है, माधव के द्वार आई बारात से दूर भाग कर छिप जाती है, अकबर के सामने सत्योदघाटन करती है और अंत में राजा इन्द्रजीत की मृत्यु पर जल समाधि लेकर जो उदाहरण प्रस्तुत करती है, वह किसी भारतीय सती नारी से कम नहीं है। ऐसा चरित्र-चित्रण पढ़कर पाठकों का विश्वास डग मगाने लगे तो कोई आश्चर्य नहीं है। मुझे लगता है इसके पीछे लेखक का विश्वास उसके पूर्व जन्म के प्रारब्ध पर अवश्य रहा होगा। जो भी हो साधारणतः पाठक के लिए यह विश्वास करने योग्य नहीं है।

लेखक ने कालिदास के मेघदूत का पद्यानुसार किया है इसके प्रकृति चित्रण में कालिदास का प्रभाव इसीलिए झलक रहा है। मीरा और वृन्दावनलाल वर्मा को पढ़ा है इसलिए कईबार वह रायप्रवीण का समर्पण मीरा से उद्धृत करता है, तो छोटी जाति की कन्या के गंधर्व विवाह को मानसिंह तोमर की मृगनयनी और महाभारत कथा में शान्तनु से स्मरण कराता है, वही नाच-गान में अर्जुन बृहन्नला को भी याद करा देता है। जल समाधि की कल्पना में भी लगता है कि वृन्दावन लाल वर्मा की विराहा की पद्मिनी से प्रेरित है। राय प्रवीण के लिए पाठशाला खोलना और निवास के लिए आनन्द महल बनवाना एवं राय प्रवीण की चिन्ता में इन्द्रजीत की मृत्यु भी सहज नहीं लगती। राजाओं-सामन्तों के यहाँ तो यह सब सामान्य घटनायें होती रही हैं।

राय प्रवीण की बरधुँआँ से गौना के साथ ता सम्मान की विदाई एवं बहुत दिनों तक ओरछा में रायप्रवीण का एक अनजान रूप में रहना भी स्वाभाविक नहीं लगता। न वरधुँआँ वाले ग्रामीणों ने चर्चा की जबकि सब कुछ प्रत्यक्ष देखा गया था, और न ओरछा निवासियों ने कोई जिज्ञासा व्यक्त की। कहीं तो थोड़ी-बहुत कानाफूसी होती। जबकि राजाओं के यहाँ तथा रानिवासों में तो गुप्तचरों का जाल बिछा रहता है।

राय प्रवीण की बरधुँआँ से गौना के साथ ता सम्मान की विदाई एवं बहुत दिनों तक ओरछा में रायप्रवीण का एक अनजान रूप में रहना भी स्वाभाविक नहीं लगता। न वरधुँआँ वाले ग्रामीणों ने चर्चा की जबकि सब कुछ प्रत्यक्ष देखा गया था, और न ओरछा निवासियों ने कोई जिज्ञासा व्यक्त की। कहीं तो थोड़ी-बहुत कानाफूसी होती। जबकि राजाओं के यहाँ तथा रानिवासों में तो गुप्तचरों का जाल बिछा रहता है।

उपन्यास के कथा सूत्रों को स्वाभाविक ढंग से सूत्रबद्ध किया गया है। पढ़ते हुए जिज्ञासा बनी रहती है। कुछ प्रसंग अधिक दीर्घ हो गये है, कहीं-कहीं थोड़ी पुनरावृत्ति है जिससे बचा जा सकता था। भाषा प्रवाहपूर्ण और शैली रोचक तथा साहित्यिक है। हाँ,यह बात अवश्य खटकती है कि ग्रामीणजन कहीं बुन्देली का प्रयोग करते हैं और कहीं स्तरीय खड़ी बोली। वैसे भाषा शैली पात्रानुकूल है। बुन्देली खड़ी बोली एवं उर्दू शब्दावली का भी प्रयोग है, कहावतें-मुहावरों का प्रसंगानुकूल प्रयोग संवादों को रोचक तथा अर्थगर्भित बनाता है। संवादों की संयोजना स्वाभाविक है पद और पात्रों के अनुसार भाषा का प्रयोग है।

यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि उपन्यास में कई अंश मनोवैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। रायप्रवीण, रामशाह और इन्द्रजीत की मन:स्थितियों और अर्न्द्वन्दों का अत्यन्त स्वाभविक चित्रण किया गया है। अन्तर्द्वन्द के ऐसे अंश कथा-सूत्रों को जोड़ने-बढ़ाने में भी सहायक हैं। कुछ स्थलों पर युगानुकूल संकेत भी दिये गये हैं, जैसे-कन्याओं के लिये शिक्षा का प्रबंध किये जाने की आवश्यकता संगीत अदि कलाओंको दरबारी मनोरंजन का साधन बनाने के दुष्परिणाम आदि।

कुल मिलाकर इतिहास और कल्पनाओं तथा किंवदन्तियों को जोड़कर लेखक ने एक ऐसे उपन्यास की रचना की है जिससे न केवल रायप्रवीण के चरित्र का नया रूप सामने आता है अपितु बुन्देलखण्ड की परंपराओं,संस्कृति,साहित्य, कलाओं, और शिल्प आदि पर भी प्रकाश पड़ता है। लेखक का मानना है कि ओरछा के शिल्प में राजपूताना और मुगल शैली का मिलाजुला स्वरूप है जिसे बुन्देली शैली कहा जाना चाहिए। अलिखित इतिहास प्रसंगों-पात्रों के चित्रण में वैसे किंवदन्तियाँ बहुत महत्वपूर्ण योगदान करती हैं, किन्तु लेखक की कल्पना शक्ति के बिना बड़े आकार के उपन्यास का ताना-बाना खड़ा करना सरल कार्य नहीं होता। गुणसागर जी ने यह ताना-बाना सावधानी से बुना है।

पुस्तक - एक थी रायप्रवीण
लेखक- गुणसागर सत्यार्थी
प्रकाशन- नेशनल पब्लिसिंग हाऊस
4230/1 दरियागंज नई दिल्ली-2
मूल्य- रु. 725 = 00

-ए 7, फारचून पार्क
जी-3, गुल मोहर,
भोपाल (म.प्र.)
पिन नं. - 462039
मो. 09425376413

उन्नीसवें बुन्देली उत्सव में सम्मानित विभूतियाँ

राव बहादुर सिंह बुन्देला स्मृति सम्मान २०१५
बुन्देली साहित्य सर्जना हेतु
डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय 'सरल' झाँसी को

तालबेहट जिला ललितपुर में ०२ जुलाई १९३८ को श्री विश्वनाथ उपाध्याय के घर जन्मे डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय सरल को प्रदत्त किया गया। इनकी प्रकाशित कृतियाँ भाव भारती, काव्य कुंज, आँखें, बालगीत, चाणक्य नीति, सरल सप्तक, बुन्देली ज्योति तथा बुन्देली लोकोक्ति कोश (दो भागों में) प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त चेतन चन्द्रिका, बुन्देली शब्द भंडार, परख तथा कथा संग्रह प्रकाशन की प्रतीक्षा में है। इन्हें देश के अनेक सम्मानों व पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। आप सरल साहित्य संगत झाँसी के संस्थापक तथा अध्यक्ष हैं।

राव बहादुर सिंह बुन्देला स्मृति सम्मान २०१५
बुन्देली समीक्षा हेतु
डॉ. कन्हैयालाल वर्मा बिंदु भोपाल को

टीकमगढ़ जिले की तहसील निवाड़ी में स्वर्गीय नंदकिशोर वर्मा के घर दस सितम्बर १९४१ को जन्मे डॉ. कन्हैया लाल वर्मा बिंदु को प्रदत्त किया गया 'बीन बीन फुलवा लगाये बड़ी रात' काव्य संग्रह के प्रकाशन के साथ आपने बुन्देली लोक साहित्य नामक ग्रंथ रचा है, जिससे शोधार्थियों तथा विद्यार्थियों को महत्वपूर्ण मार्गदर्शन मिलता है। आप आकाशवाणी तथा दूरदर्शन पर बुन्देली भाषा साहित्य तथा संस्कृति के विभिन्न मुद्दों पर अपनी बात रखते रहते हैं।

लोकविद् डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त स्मृति सम्मान २०१५
लोक कलाओं हेतु
सेठ राघवदास, गुरसराँय को

ख्याल गायिकी के उच्च प्रतिमान स्थापित करने वाले सेठ भोगीलाल के सुपुत्र सेठ राघवदास ने भी ख्याल गायकी को नए प्रतिमान प्रदान किए। आपने बुन्देलखण्ड की पारम्परिक ख्याल गायकी को देश के विभिन्न मंचों पर प्रस्तुत किया है।

डॉ. हरिराम मिश्र स्मृति सम्मान २०१५
श्रेष्ठ पत्रकारिता हेतु
श्री प्रतीक खरे एवं श्री शीलवन्त पचौरी को

प्रिन्ट मीडिया से जुड़े श्री प्रतीक खरे को बुन्देली संस्कृति को उद्घाटित करने तथा इलैक्ट्रोनिक मीडिया के श्री शीलवन्त पचौरी को मीडिया में बुन्देली लोक की खबरें दिखाने हेतु यह सम्मान प्रदान किया गया।

पोथी परखाव-

बुन्देली गुरयाई भरी है पोथी में

- कु. रोशनी जैन

बुन्देलखण्ड में भौत पैलेंइ सें बुन्देली भाषा में रचनायें करी जातर्ती। बुन्देलखण्ड की भूम पै कैउ महान कवि भय। जिननें ईं भाषा में रचना करी जिनमें जगनिक कौ नाव पैलउ आउत, जगनिक ने भौत नौनों आल्हाखण्ड लिखो। ईके इलावा कवि बिहारी, हरिराम व्यास, घासीराम व्यास, ख्यालीराम, गंगाधर, लालकवि, ईसुरी आदि महान कवि भये।

इनई महान कवियन में सें एक हैं आज के आधुनिक कवि श्री राघवेन्द्र उदैनियाँ 'सनेही' भौत बढ़िया पोथी लिखी है, "बेर-मुकुइँयाँ" पोथी राघवेन्द्र जी की गीत-गजलन कौ संग्रह आय। इनके पिता श्री शारदा प्रसाद उदैनियाँ "मनोज" एक सिद्ध कवि हते एइसें सनेही जू में जे गुण जनमजात हते, जा कला उनें अपने पिता सें विरासत में मिली एइसें वे इत्ती बढ़िया गीत-गजल लिख पाये।

इननें बुन्देली के ठेठ देहाती शब्द अपनी गीत-गजलन में चुने हैं और सुर और लय कौ विसेस खबर करकें गीतन खों लिखो है।

इननें ईं पोथी में सबसें पैलां सरसुती जू की वन्दना करी। ईं गीत में उननें लगन खों चंदा-चकोरकी उपमा दई। गीत में इननें कछु शब्द दएं जैसें घोरौं, निनोरौ, सकोरौ। इन शब्दन सें गीत और अच्छौ बन गव। इने बुन्देली भाषा कौ पूरौ ज्ञान है तबई इत्तौ अच्छौ गीत लिख पाये। इनके गीतन में इनकी कला साफ दिखाई परत है इननें लोकोक्ति, अहाने आदि कौ पिरयोग करौ है। इनकी भाषा सरल और मधुर है। ई पोथी में सबई विषयन पै गीत लिखे हैं। बुन्देलखण्ड कौ गुनगान करौ है-

" जाँ चाँदी की संजा होबै, सोने सौ भुन्सारौ।
ऐंसौ जौ बुन्देलखण्ड है, मोहाँ प्रानन प्यारौ।।"

बुन्देलखण्ड की महिता कौ गुणगान बुन्देलखण्ड के सबई कवियन नें करौ है। इसमें सनेही जू ने बुन्देली व्यंजन कौ भी उल्लेख करो है-

" जाँ दाखन से मउवा, काजू जैसी मूगफली है,
रसगुल्लन सें ऊँमर तेंदु, गुलगुच ऐंन भली है,
जाँ जरियन के बेर-मुकुँइँयाँ और करौंदा कारौ।।"

इनकौ देश प्रेम ई गीत में देखवे मिल जात। इनने ई गीत में कई कै-

"जीके पाँव पखारै सागर मुकुट हिमालय प्यारौ
ऐसौ जौ जगती सें न्यारौ भारत-देश हमारौ।।"

बुन्देलखण्ड के किसानों की स्थिति सोई अच्छी नइयाँद्ध। सनेही जू ने उनकी स्थिति कौ भौत नौनों चित्रण करौ है उननें किसानन की पीरा भौत लिंगा सें अनभूत करी-

"चाय कड़ाके कौ जाड़ौ रय, चाय दुपारी भारी,
करें मसकें काम सनेही कबऊँ न हिम्मत हारी,
जौ लौ जीनें तौ लौ सीनें जा पुरखन की बानी
साँसऊँ बड़ी कठन है, भइया खेती और किसानी।।"

ई गीत में सनेही जू ने किसानन की अन्तर-पीरा कौ सजीवर बेई कऔ-जैसें किसान अँदयाई सें आँखे मीउत खेतन हाँ कड़ जात, दिन-भर काम करत, हर हाँकत, पानी बराउत, रात लौ काम में लगों रात तोई साता नई रात।

बुन्देलखण्ड में एक महान वीर भये महाराज छत्रसाल जू देव, सनेही जू ने इनकी वीरता को भी बरनन करौ है। बुन्देलखण्ड में छत्रसाल सौ रनबाँकुरौ कौनउ नइँ भव सनेही जू ने उनकी वीरता को बरनन करत भौतंइ नौनों गीत लिखौ है और इननें नारियन पै भी गीत लिखौ है कै-

"इतै की नारी घरबारे हों पति परमेसुर कार्तीं।
उनके लाने तीजा करवाचौथ पुवासीं रार्तीं।।"

सनेही जू ने भौतइ अच्छे विषय भाव चुनें हैं। गीतन में बुन्देली रीत-रिवाज, संस्कार, संसकिरती अबढ़ाई दिखाई परत है। उनपें सरसुती जू की किरपा है और दद्दा भी उनके कवि हते एइसें उनमें जा कला कूट-कूट कैं भरी है। उनके गीत मन खौं छी-छी जात। बुन्देली भाषा में भौंत अहाने बोले जात ते पै आज कौ आदमी इनैं भूलत जा रवा जाई सौसकैं इनने इन बुन्देली अहाने हों जोर कै भौतई नौनों गीत लिखों है। कन्हैया जू के वियोग में गोपियन की जौंन दशा भई ऊपै नौनों गीत लिखो। उनमें गीतन के इलावा बुन्देली गजलें भी लिखी हैं। इनकी गजलन में रोचकता और बेई खनक है जौन गजलन में चाउने परत है। बुन्देली की मिठास इनकी गजलन में है।

पोथी कौ शीर्षक भी भौत छाँट कै धरौ, बेर कौ अरथ गीत और गजल खौं मकुँइँयाँ कई है। आज कौ मनुष्य पाश्चात्य सभ्यता सें जुड़त जा रव बुन्देली भाषा हों भुलाउत जा रव ऐंइ सौंसकै सनेही जू ने जा पोथी बुन्देली भाषा मैं लिखीं ईसें बुन्देली भाषा के बारे में समझे उऐं जानें।

बुन्देली भाषा के शब्दन में जोंन गुरयाई है बा कौनऊँ और भाषा में नइयाँ ऐइँ उददेस सें उननें जा पोथी बुन्देली भाषा मैं लिखी है। जें ई उददेस में सफल रये हैं। येई पोथी के बारे में मैं कछु पंक्तियाँ लिखत हों-

"जैसीं मीठी बेर मुकुँइँयाँ उँसई मीठे गीत गजल हैं,
कबिता उनकी एंसी मीठी पढ़तन मै गुरयाईं लगत है।
'रोशनी' शबदन में का कै इनके लानें,
पढ़कै बेर मुकुइयाँ, इनकी अन्तर मैं कवि भाव जगत हैं।"

-बड़ामलहरा, छतरपुर (म.प्र.)

बुन्देली बसंत पर पाठकीय प्रतिक्रिया

-डॉ. शिरोमणि सिंह 'पथ'

'बुन्देली बसंत' का अंक १६ वर्ष २०१५ प्राप्त होते ही मन पत्रिका पढ़ने के लिए उत्सुक हो उठा।

प्रति वर्ष की भाँति विषय वैविध्य पत्रिका स्वयं इस बात की साक्षी है कि समाज, इतिहास, भाषा, लोक संस्कृति और लोक जीवन के विविध रंगों से न केवल परिचित कराती है। वरन लेखकीय चिंतन को भी उजागर करती है। इन्द्रधनुषीय रंग लिए भावों से भरी यह पत्रिका समूचे लोक की सामंती व्यवस्था के प्रति चिंतित होना और अशिक्षा रूपी दानव की विकरालता को स्पष्ट करना उनकी गहरी सोच और मानवीयता का जीवंत उदाहरण है। बुन्देलखण्ड के लिए कुछ कर गुजरने की ललक पल-पल की व्याकुलता मानवीय संवेदनाएँ सराहनीय हैं। अनुकरणीय हैं।

सामंतवाद न केवल बुन्देलखण्ड की समस्या है वरन् संपूर्ण भारतीय समाज में ओछी मानसिकता है। बच्चा सामंतबाद का साक्षात्कार सबसे पहले अपनी माँ की गोद में करता है। जिसका माँ के साथ सबसे नजदीक रिस्ता होता है, क्योंकि घर में पिता का स्थान एक सामंती का होता है, सारे हक अधिकार पिता के पास होते हैं। तब हम सामंत विहीन मानसिकता की कल्पना कैसे कर सकते हैं? इसके लिए हमें स्वयं चेतना होगा। नारी के प्रति सम्मान और समानता की भावना को भलीभूत करना होगा। तभी हम अंचल के साथ-साथ सम्पूर्ण समाज के स्वस्थ होने की सोच सकते हैं। नही तो आज भी रात के अंधेरे में जूझने का सहारा लालटेन ही है। सम्पादक महोदय का यह कहना यथार्थ है कि प्रभू वर्ग को डर सताता है कि सच्चे मायने में लोग शिक्षित और जागरूक हो जायेगें तो शोषण नहीं कर सकेगें। और उनके अस्तित्व पर संकट खड़ा हो जायेगा। धन्य है सम्पादक महोदय मैं आपको भावना प्रणाम करता हूँ। महोदय, आपने जो समाज की वास्तविकता को अंकित किया है उससे आपके विचारों में मुक्तिबोध के भाव उभर आते हैं।

वे कहते है कि आज संस्कृति का नेतृत्व उच्च वर्ग के हाथ में है। जिसमें उच्च निम्न वर्ग भी शामिल है किन्तु यह आवश्यक नहीं है कि यह परिस्थिति स्थायी रहें। अनिवार्यता: यह बदल सकती है और जब बदलेगी तब इतनी तेजी से बदलेगी कि होश फाख्ता हो जायेगें। संस्कृति का नेतृत्व करना जिस वर्ग के हाथ में होता है वह समाज और संस्कृति के क्षेत्र में अपनी भावधारा और अपनी जीवन दृष्टि का इतना अधिक प्रचार करता है कि उसकी एक परम्परा बन जाती है। शायद वह जमाना जल्द ही आ रहा है। जब वे (अथार्थ दलित जातियाँ) स्वयं संस्कृति का नेतृत्व करेंगी और वर्तमान नेतृत्व अध: पतित होकर धराशायी हो जायेगा। इस बात से बे डरें जो समाज के उत्पीड़क है। या उनके साथ हैं। हम नहीं क्योंकि हम पद दलित हैं और अविनाशाय हैं- हम चाहे जहाँ उग आते हैं।

गरीब उत्पीड़क शोषित मध्यमवर्ग को ध्यान में रखकर मैं यह बात कह रहा हूँ। यही भावना आपकी सम्पादकीय में मुखरित होती है। आपके विचारों की पराकाष्ठा समाज को नव चेतना से भर देगी ऐसा मेरा विश्वास है। आपकी भावनाओं को समझकर मुझे डॉ. कमलेश गुप्त जी की पंक्ति याद आती है कि "आत्मीयता का शीतलजल आग में बाग लगा सकता है।"

'बुन्देली बसंत' में रसशिक्त कविता मंजरियों एवं गद्य से लोक धर्मिता के ध्येय रूप को निष्पादित किया है। 'बुन्देली बसंत' में समाज सुधार, देशभक्ति, उपचार, हिन्दी, नारी, त्यौहार, पर्यावरण, बुढ़ापा, मानसिकता आदि अनेक विषयों से संबंधित रचनाओं लेखों के अतिरिक्त व्यंग्य भी गुम्फित हैं। 'बुन्देली बसंत' में बुन्देलखण्ड की माटी की सुंगध भरकर अभिव्यक्ति के छोरों को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों तक फैलाने का कौशल है। चिट्ठी मिली अपुन की में विद्वानों ने चिंतन परक अपने विचार लिखकर पत्रिका के स्वरूप से रूबरू कराया है।

बुन्देली गद्य की अवधारणा में श्रद्धेय पं. गुणसागर सत्यार्थी जी ने बहुत ही सुन्दर ढंग से व्याकरण समझाया यह लेख सीख भरा है। जिसमें बुन्देली के स्वरूप को पुराने पत्रों की भाषा के उदाहरणों से स्पष्ट किया है, लेकिन मैं विनम्रता पूर्वक यह कहना चाहता हूँ। मुझे आश्चर्य हो रहा है कि एक विद्वान बुजुर्ग के लेख में कहीं कहीं खीज सी उत्पन्न कैसे हुई? क्योंकि लेखन की दीवानगी से जोड़कर श्रृंगाल की हुआ ऽऽऽ .... से समझाने की कोशिश नवोदित रचनाकारों, लेखकों को हत्तोत्साहित करने जैसी बात लगती है क्योंकि समूचा बुन्देलखण्ड न तो अपना गाँव है और न इतना छोटा भी है कि लेखक सम्पूर्णता से समूचे बुन्देलखण्ड के लिए लिख सके। अगर ऐसा होता तो फिर बुन्देली भाषा के विविध रूप भी न होते। वैसे बुजुर्गो से ही सुना है कि एक लिडइया चिल्लात (रोत) तो बाको ऐरो काशी जू नो जात है। तब ऐसे में बुन्देली के विस्तार के लिए यह हुआ ऽऽऽ .... भी कुछ हद तक सही है, वरना नव पीढ़ी तो अपनी भाषा अपनी संस्कृति, परम्परा, तीज, त्यौहारों को भुला ही देगी। आज कितने बच्चे जो अंग्रेजी माध्यम से स्कूल में पढ़ रहे हैं। वे कितने होगें जो अपने हिन्दी के तीज त्यौहार और तिथियों के बारे में जानते हैं, बहुत कम। तब हम कह सकते है कि हुआ ऽऽऽ .... से कुछ तो जरूर हुआ। रही बात समग्र बुन्देलखण्ड के लिए लिखने को तो उसमें समय लग सकता है। बुन्देली को अति क्षेत्रियता से निकालकर उसका साहित्यिक स्वरूप निखारना आवश्यक है। हमें यह उदासीनता तोड़नी चाहिए परन्तु बुन्देली भाषा को ग्रामीणों की भाषा छोड़कर हम उसे महानगरों की भाषा तो नहीं कह सकते? वैसे भी हमारा भारत गाँवों का ही देश है। साथ ही कलमकारों का बटवारा होना शेष है। यही हमारे राष्ट्र की, हमारे समाज की, हमारे परिवार की असल विडम्बना है।

'रामधई' बुन्देली कहानी ओ.पी.रिछारिया जी की सुन्दर कहानी है, जिसमें भाषा सरल-सरल सुबोध पात्रानुकूल है। कहानी उद्देश्य परक प्रेरणास्पद है। 'दो मिनट को मौन' पं. हरगोविन्द विश्व मैथिल जी द्वारा रचित कविता शहीदों की याद दिला गयी।
"आज अंसुँआ पौंछ दे उनके जो दुख से मौन है"। मार्मिक रचना है। डॉ. कन्हैया लाल अग्रवाल जी द्वारा लिखित आल्हाखण्ड हमें आल्हाखण्ड के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराता है। उसके इतिहास एवं लोकप्रियता और उसके रचनाकारों से परिचित कराता

है। श्री अभिनंदन गोइल जी द्वारा लिखित लेख काम और श्रृद्धा को मिलाप रितुराज बसंत सुन्दर लगा 'बुन्देली बसंत' और उसमें रितुराज की चर्चा न हो कैसे मुमकिन हो सकता है। सुन्दर लेख के लिए बधाई। डॉ. रामनारायण शर्मा जी का लेख 'पिसनारी जो इतिहास बना गई हृदय को छूने वाला है संग्रहणीय है। आपने जिन नारियों के इतिहास को उजागर कर इतिहास के ऐसे अनूठे पृष्ठ का दर्शन कराया जिसमें महिलाओं की श्रम साधना और उनके द्वारा समाज लिए कुछ कर गुरजने की भावना हे। आपको बहुत-बहुत बधाई सुधा रावत क्षमी जी द्वारा रचित दो बुन्देली गज़लें बहुत सुन्दर लगीं'' क्षमा जिय हम जानत अपनो। भुंज के जरूआ बरूआ हो रऔ।। गजल के कलापक्ष का मुझे गहरा ज्ञान तो नही है, लेकिन भावपक्ष प्रवल है। आपकी पंक्तियों में समाज की विद्रूपता स्पष्ट होती है। आज के छल छंद को बताया गया है, आप बुन्देली बाल कविता के साथ-साथ गज़ल लिख रहीं हैं। बहुत सुन्दर आपको बधाई। विदुषी डॉ. कामिनी जी द्वारा लिखित पीरू मेरे बरहा की खाँद तथा डॉ. मोना जैन जी का रहली के सूर्य मंदिर का उत्कृष्ट शिल्पांकन पुरातात्विक और ऐतिहासिक लेख हैं। वह हमें अनेक जानकारियाँ एक साथ उपलब्ध कराते हैं। आप जैसी विदुर्षी और विद्वानों ने ही अतीत को संभाल कर नवपीढ़ी के हाथों में सौंपा है। कुँ. अस्कंद गिरि रचित रसमोदक हजारा पर लिखित लेख बहुत सुन्दर लगा। डॉ. यशवंत सिंह द्वारा लोकोक्तियों भरा लेख बुन्देलखण्ड में प्रचलित कहावतों को सुन्दर ढंग से स्पष्ट किया है। आज भी हम अपने घरों में बूढ़े पुराने लोगों से सुनते रहते हैं। वह किसी न किसी बात पर कोई कहावत कह देते हैं, जिससे स्पष्ट होता है कि वह किस बात को स्पष्ट करना चाहते हैं। साथ ही यह कहावतें हमारी लोक भाषा को सुन्दर और रोचक बनाती हैं।

एक सुन्दर संस्कृति और परम्परा का निर्माण करती हैं। श्री रामस्वरूप पाण्डेय जी द्वारा लिखित कथा 'उचक्कन की अथाई' बहुत रोचक कहानी है, जो हमें मनोरंजन के साथ यह ज्ञान कराती है, कि हमें किसी के रिश्तों पर बिना सोचे विचार के एकाएक घिनौने विचार या शंका व्यक्त नहीं करना चाहिए, क्योंकि हम कभी-कभी पवित्रता को अपवित्र कर देते हैं तथा अपनी गलत मानसिकता का परिचय देते हैं। श्री राजकुमार पुजारी द्वारा रचित 'लामगीत' बहुत ही रोचक लगा देशभक्ति से ओतप्रोत यह गीत हमें भारत माता के प्रति समर्पित होने की प्रेरणा देता है। तो वहीं कौशिक जी का 'बतखाव' भी रुचिपूर्ण लगा मानो हम किसी से बतियाने लगे हों।

आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल जी का ललित निबंध 'लवरन' की बात इतना सुन्दर और रोचक लगा कि अन्य साथियों को भी पढ़कर सुनाया। गधे के गुणों का सुन्दर चित्रण किया है। सचमुच इतना लालित्य लिए है कि बार-बार पढ़ने को मन करता है। आचार्य प्रवर को प्रणाम करता हूँ। सुरेन्द्र तिवारी जी का 'गीत' मनोरंजन के साथ यथार्थ को अंकित करता है, तो प्रभू पीयूष की बुड़की मनोरंजन पूर्ण कविता है। संस्मरण अपनो-अपनो भाग डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय 'सरल' जी ने बहुत ही सुन्दर ढंग से लिखा है लेकिन कैनात को कहीं इस प्रकार लिखा जाता- ''माया तेरे तीन नाम- परसा, परशु परशुराम इस क्रम में शब्दों में लिहाज बढ़ती गयी है जबकि आपके लिखे शब्द सही क्रम में नहीं हैं। रेखा चित्र लोक का जादू, बुन्देली लोकगीत में नारी की मानसिकता, बुन्देलखण्ड की लुप्त प्राय बाल-क्रीड़ाए, बुन्देली लोक कथा गधे की आत्मा अनेक लेख सुन्दर और भावपूर्ण हैं।

'वीरांगना चम्पावती' सोम त्रिपाठी का मूल्यवान लेख है क्योंकि लोग तो अभी भी यही जानते हैं कि हरदौल को जहर दिया गया जहर से उनकी मृत्यु हुई है। यही सब हरदौल नौटंकी, भात आदि में दिखाया जाता रहा है। इस लेख से हमें एक नया ज्ञान प्राप्त हुआ है। डॉ. लखन लाल खरे जी द्वारा लिखित बुन्देलखण्ड में बौद्धपुरा सम्पदा एक अनोखा बिंदु है जो पाठकों को बौद्ध धर्म का ज्ञान कराता है, तो वहीं बिजावर-परिक्षेत्र का पुरातत्व इतिहास संस्कृति और विकास दर्पण डॉ. रामस्वरूप ढेंगुला जी का सुन्दर लेख है, वह सचमुच दर्पण है, जिसमें उस क्षेत्र का स्वरूप दिखाई पड़ता है। डॉ. दुर्गेश दीक्षित का लेख पं. बनारसी दास के पत्रों में कुण्डेश्वर प्रेम एक विराट व्यक्तित्व को उजागर करता है। इसी प्रकार डॉ. कुन्जीलाल पटेल मनोहर ने अमान सिंह और उनकी चौकड़ियों को खोजकर पाठकों को उपलब्ध कराया। यह डॉ. पटेल जी की खोजपूर्ण दृष्टि और बुन्देली प्रेम को व्यक्त करता है। सम्पादक महोदय डॉ. बहादुर सिंह परमार जी का लेख लोक विरासत में रोजगार की संभावनाएँ धनार्जन की दृष्टि से सुन्दर लेख है, लेकिन इसमें कुछ विद्वान पाठक, लोगों को जातीय कार्य में बँधें रहने का दोषारोपण कर सकते हैं, क्योंकि इन कार्यो को जातीयता से उठकर कोई और कर नहीं सकता। उसके साथ लेख में विरासत भी आ गयी, जो व्यक्ति को निश्चित करती है। अथार्थ मनुवाद की ओर इशारा लगता है। डॉ. शिवाजी चौहान जी की आत्मपीड़ा काँ मर जाबे? सचमुच की पीड़ा है। आज समाज प्रदूषित हो चुका है। जिधर देखो उधर वैमनस्यता दंगा फसाद फैला है। आपकी पंक्तियाँ-
अब तो पूछ झूठ बोलन की संगै मिठवोलन की।

जागन तागन पूजा हो रयी विगरैलन लोलन की।। गहरी सोच और चिंतन की परिचायक है। दिल में समा गयीं आपको बहुत-बहुत बधाई। श्री शकूर मुहम्मद जी द्वारा कहानी की अंतिम कहावत को आधार बनाकर लिखी गयी कहानी 'दस का नोट' अभावग्रस्त जीवन की कथा व्यथा को व्यक्त करती सुन्दर कहानी है, वहीं बच्चों की भीड़ से होने वाली परेशानी को उजागर करती है, पात्र कहानी में बोलते बतियाते लगते हैं। कहावतों ने कहानी को प्रभावपूर्ण और रोचक बना दिया है। डॉ. डी.आर.''बैचेन'' के कहावतों बाले दोहे सुन्दर लगे। डॉ. श्यामबिहारी श्रीवास्तव जी का पोथी परखाव पाठकों को समीक्षात्मक दृष्टि प्रदान करती है तथा पाठकों को पोथी पढ़ने के लिए प्रेरित करता है। ''बुन्देली संस्कृति को प्रकट करती कहानियाँ हैं। 'अंगनी' में पोथी परखाव नंदकिशोर पटेल जी की विद्वता का प्रमाण हैं। मैं यहाँ इसलिए अधिक कुछ नहीं लिखना चाहता हूँ क्योंकि 'अरगनी' मेरी स्वयं की कृति है। बस पटेल जी को प्रणाम करता हूँ। उन्हें धन्यवाद देता हूँ। आपकी समीक्षा से मुझे प्रेरणा और उत्साह मिला यही मेरा संवल है। डॉ. जगदीश रावत जी, डॉ. सत्या घोष द्वारा की गई समीक्षायें कृतिकारों को अवश्य ही प्रेरणा और संबल प्रदान करेगी। ऐसा मेरा विश्वास है। श्री लखन लाल पाल की कहानी की कहानी 'गवाँर' अच्छी लगी। ठेठ बुन्देली क्रियाएं शिरीष

जी का सुंदर और रोचक प्रयास है, यह सब क्रियायें बिसारने वाली नहीं है, लेकिन जैसे उछरवौ-कहा जाता है। इसी प्रकार गुड़यावौ-घरी या तह करना गलत है, बल्कि घरी या तह बिगाड़ना गुड़याबौ कहलाता है। हम कहते हैं कि विस्तर गुड़याकें उन्ना गुडयाकें धर दये। इन सब बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। इसके अलावा पत्रिका में सम्मानित की गई बिभूतियों का परिचय, नई पोथी अपुन के लाने सब कुछ संग्रहणीय है। पत्रिका में जितनी सामग्री है वह अद्भुत है। सभी साहित्यकार बंधु अपने-अपने फन में माहिर नज़र आते हैं। अठारवें बुन्देली उत्सव २०१४ का प्रगति प्रतिवेदन कु. नेहा सिंह बुन्देला जी द्वारा बहुत ही क्रमबद्ध तरीके से लिखा गया। पढ़ते ही कार्यक्रम की रूपरेखा आँखों के सामने आ जाती है। यह उनकी सच्ची लगन और मेहनत का प्रसाद है। प्रतिष्ठित पत्रिका बुन्देली बसंत प्रत्येक अंक में नवीनता और सार्थक साहित्य लेकर घर-घर बसंत की शोभा उड़ेलने आती है। यह सब हमारे सम्पादक महोदय संरक्षक महोदय और इस साहित्यिक अनुष्ठान में लगे सभी भइया बहनों की मेहनत का सुमधुर फल है।

-ग्राम व पो. गिरवासा, तह.- लहार
जिला-भिण्ड (म.प्र.) मो. 9993349750

नईं-नईं पोथीं अपुन के लानें

- ऋतु संहार: बुन्देली पुनर्रचना- प्रभु श्रीवास्तव 'पीयूष' प्रकाशक-सरस्वती सदन पुस्तकालय पब्लिक ट्रस्ट, छतरपुर कीमत 51 रु.
- कुणाल कथा (ऐतिहासिक नाटक) -रामरतन अवस्थी प्रकाशक-आस्था प्रकाशन, बी-116, लोहिया नगर, पटना कीमत 150 रु.
- राष्ट्ररत्न अटल बिहारी वाजपेयी-भानु प्रताप शुक्ल 'भानु' प्रकाशक -संदीप साहित्य सदन, निवाड़ी कीमत 80 रु.
- मन तरंग सागर- सेठ भोगीलाल 'लालन', गुरसरांय
  प्रकाशक-सेठ राघवदास, गुराई बाजार, गुरसराय कीमत 20 रु.
- पारिस्थितिकी, वन और जीव पर्यटन-डॉ जगदीश रावत
  प्रकाशक- ओरछा वन्य प्राणी अभ्यारण्य, टीकमगढ़ कीमत 125 रु.
- रस भरी रधिया-शिवाजी चौहान, गुरसरांय
- माटी के मोती-शिवाजी चौहान, गुरसरांय
- बुन्देल भारती-महाकवि अवधेश, झांसी
  प्रकाशक-अंजलि प्रकाशन, नई बस्ती, झांसी कीमत 75 रु.
- कहाँ गए घर? -मालती शर्मा
  प्रकाशक-क्षितिज प्रकाशन, पुणे कीमत 80 रु.
- द्वापर की नायिका-राधा जनार्दन, पन्ना
  प्रकाशक-ग्रंथ लोक-दिल्ली कीमत 530 रु.
- नहला पै दहला (बुन्देली कथाऐं)-श्यामबहादुर श्रीवास्तव 'श्याम'
  प्रकाशक-रामनाथ जाटव, उरई कीमत 180 रु.
- बुन्देला सपूत हरदौल (महाकाव्य)-श्याम बहादुर श्रीवास्तव श्याम
  प्रकाशक-बुन्देली साहित्य एवं संस्कृति सेवा संस्थान, उरई कीमत 185 रु.
- अभिशप्त सीता (खण्डकाव्य)- श्यामसुन्दर श्रीवास्तव 'श्याम'
  प्रकाशक-बुन्देली साहित्य एवं संस्कृति सेवा संस्थान, उरई कीमत 150 रु.
- मृत्युञ्जयी (खण्डकाव्य)-श्यामबहादुर श्रीवास्तव 'श्याम'
  प्रकाशक-बुन्देली साहित्य एवं संस्कृति सेवा संस्थान, उरई कीमत 150 रु
- बुन्देली धरा के अनखुले पृष्ठ -डॉ. गंगाप्रसाद बरसैयां
  प्रकाशक-आरती प्रकाशन, इलाहाबाद कीमत 225 रु.
- छत्तीसगढ़ की साहित्यिक विभूतियाँ-डॉ. गंगाप्रसाद बरसैयां
  प्रकाशक-देव वाणी प्रकाशन, इलाहाबाद कीमत 200 रु.
- चुटकी भर रेत-डॉ. सुरेश पराग
  प्रकाशक-पुस्तक प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली कीमत 180 रु.
- सनेही सतसई -डॉ. राघवेन्द्र उदैनिया 'सनेही'
  प्रकाशक-बुन्देली साहित्य प्रकाशन, छतरपुर कीमत 200 रु.
- रामलीला गीतमाला-डॉ. राघवेन्द्र उदैनियाँ 'सनेही'
  प्रकाशक-बुन्देली साहित्य प्रकाशन, छतरपुर 50 रु.
- नाम बिन चीन्हें-डॉ. श्यामसुन्दर दुबे
  प्रकाशक-आदिवासी लोककला अकादमी, भोपाल, कीमत 50 रु.
- बेटा। दूध करूल्ला करियौ-दीनदयाल तिवारी 'बेताल'
  प्रकाशक-श्री वीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद, टीकमगढ़ कीमत 100 रु.
- लोकजीवन में बुन्देलखण्ड-डॉ. सरोज गुप्ता
  प्रकाशक-अस्मिता प्रकाशन, इलाहाबाद कीमत 400 रु.
- सृजन और समीक्षा-डॉ. सरोज गुप्ता
  प्रकाशक-अस्मिता प्रकाशन, इलाहाबाद कीमत 450 रु.
- हमारा बुन्देलखण्ड-डॉ. सरोजगुप्ता डॉ. छाया चौकसे
  प्रकाशक-अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली कीमत 1100 रु.
- कांतिकुमार जैन, संस्मरण को जिसने बरा है
  संपादक-डॉ. सुरेश आचार्य, डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय
  प्रकाशक-अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली कीमत 999 रु.
- उरैन-डॉ.कामिनी, सेंवढ़ा
  प्रकाशक-आराधना ब्रदर्स, कानपुर कीमत 350 रु.
- प्यासे मन-डॉ. शिवेन्द्र सिंह 'शिवेन्द्र' रौन
  प्रकाशक-खुशबू प्रकाशन, रौन जिला-भिण्ड कीमत 100 रु.
- कृष्ण सुदामा- पं. उमादेव उपाध्याय, पन्ना
  प्रकाशक-अ.भा.बु. साहित्य एवं संस्कृति परिषद पन्ना कीमत 40 रु.
- सृजन की अनुभूति-डॉ. रामनारायण शर्मा झांसी
  प्रकाशक-बुन्देली साहित्य समिति, झांसी कीमत 250 रु.
- कोई ख्वाब नया देखना-बिहारी दुबे, पन्ना
  प्रकाशक-समय प्रकाशन, नई दिल्ली कीमत 250 रु.
- बुन्देली-निकष (पत्रिका) सं- अनीता, दमोह
  प्रकाश-हिन्दी अभ्यर्थना मंच, बुन्देलखण्ड, दमोह
- पीर घनेरी (बुन्देली लोक कथाऐं)- अभिनंदन गोइल कीमत 101 रु.
  प्रकाशक-मनीष प्रकाशन, भोपाल
- फागों में लोकरंग-आचार्य भगवत दुबे
  प्रकाशक-पाथेय प्रकाशन, जबलपुर कीमत 100 रु.
- सांसों के संतूर-आचार्य भगवत दुबे
  प्रकाशक-पाथेय प्रकाशन-जबलपुर कीमत 250 रु.
- बुन्देली रसरंग-पन्ना लाल 'असर'
  प्रकाशक-भारत बुक सेंटर, लखनऊ कीमत 250 रु.

दतिया का सूर्य मंदिर-बाला जी धाम

-विनोद मिश्रा 'सुरमणि'

सूर्यदेव की विशेषताएँ वैज्ञानिक दृष्टि से भी महत्व रखती है फिर भी धर्म भाव से उनके प्रभाव को लाने के लिये उनकी आराधना को महत्व दिया गया है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम सूर्यवंशी परम्परा के विराट स्वरूप वाले उत्तराधिकारी रहे है। गंगा पुत्र कर्ण सूर्य के अंश से ही उत्पन्न है। केसरी नंदन हनुमान जी महाराज जब सूर्य को लीलते हैं और उगलने के पश्चात सूर्य को ही गुरु मानकार शिक्षा ग्रहण करते है। भगवाताचार्य पं. राजेश्वर महाराज से हुई चर्चानुसार भागवत में जो कर्ण की कथा में अपने भाई धुंधकारी की मुक्ति का कार्य श्री कर्ण जी महाराज सूर्य ही मार्गदर्शित कर ढूँढ़ते हैं। कहने का तात्पर्य सूर्य जनकल्याण कारी, सभी जीवों के सुखदुख के सहायक देव है। सूर्य उपासना का अपना महत्व है। भारत में ऐसे स्थल है जो सूर्य आराधना के लिये आस्था और विश्वास के केन्द्र बिन्दु हैं।

म.प्र. में बुन्देलखण्ड क्षेत्र का बालाजी का सूर्य मंदिर एक ऐसी ही साधना का केन्द्र बिन्दु है। जहाँ जप तप एवं सिद्धि द्वारा मुक्ति पाने हेतु असंख्य लोग आकर पुण्य लाभ प्राप्त करते हैं। सांस्कृतिक नगरी दतिया से 17 कि.मी. पूर्व की ओर पहुँच नदी के तट पर बालाजी का सूर्य मंदिर जीर्ण दर्शन मात्र का मंदिर नहीं है बल्कि वह एक ऐसा धाम है। जहाँ लोगों के दुख-दर्द का हरण भगवान भास्कर स्वयं करते हैं। मूलतः सूर्य ग्रहण एवं मकर संक्रान्ति पर्व पर लाखों लोग नर-नारी मंदिर में सूर्य देव को अंजलि अर्पण करने हेतु आते हैं।

विंध्य पर्वत की श्रृंखलाओं से निकलती पवित्र सलिला पुष्पावती(पहूच नदी)की निर्मल जलधारा भगवान भास्कर के श्री चरणों में नमन करती उन्हें पखार रही है। प्राकृत दृष्टि से बाग बगीचों से घिरा यह वन क्षेत्र सुहावन लगता है। आज समयानुसार वनक्षेत्र की हानि हुई है और प्राकृतिक वन उपज नष्ट की जा चुकी है।

दतिया की ग्राम पंचायत उनाव में यह मंदिर बना हुआ है। मंदिर पुरातत्व दृष्टि से अति प्राचीन है। यहाँ के पुरातत्व महत्व के स्मारक संपूर्ण परिसर में देखने को मिल जाते है। चूंकि तीर्थ यात्रियों का आवागमन सदैव रहता है। इस कारण यहाँ ठहरने हेतु बड़ी-बड़ी दालानें, हॉल आदि का निर्माण मंदिर निर्माण के उपरांत भी समय-समय पर होता रहा है। मंदिर एक रथ आकार में बना हुआ है। वास्तुकला एवं स्थानीय चित्रकला को उभारा गया है। मंदिर के मेहराबों खण्डों की बनावअ शैली की अपनी विशेषता है। मंदिर की विस्तार व्यवस्था अंग्रेजों की पेशवा के द्वारा कराये गये सर्वेक्षण कार्य के आधार पर की गई थी। चूंकि यह दतिया स्टेट का एक महत्वपूर्ण नाम होने से बुन्देला शासक महाराज इन्द्रजीत (1736-62 ई.) ने इस कार्य को विराम लगवाया फिर ग्वालियर स्टेट द्वारा कुछ समय पश्चात् कुछ कार्य करवाया। दतिया नरेश भवानी सिंह जी ने मंदिर और बाजार का निर्माण कार्य कराकर इस तीर्थ क्षेत्र के तीर्थ यात्रियों हेतु व्यवस्थायें दी।

सूर्य यंत्र की पूजा होती है- उनाव के कालपी मंदिर में सूर्य की किसी प्रकार की प्रतिमा या विग्रह नही है, यहाँ 'सूर्य यंत्र' की पूजा-अर्चना होती है। एक बड़े पाषाण खण्ड पर त्रिभुजों के 21 स्वरूपों का प्रतिनिधित्व इस सूर्य यंत्र में है। भक्त गण पवित्र नदी में स्नान कर लोटा में जल भरकर इसी यंत्र को समर्पित करते हैं। यंत्र स्थापना की कथा के आधार पर काछी जाति में वरम जू नामक व्यक्ति को यह यंत्र पहूंच नदी के किनारे प्राप्त हुआ था। अपने पशुओं को चराने वाला वरम जू एक दिन गायों को चरा रहा था उसने देखा कि एक चट्टान पर उसकी गाय अचानक दूध देने लगी। दुग्ध की यह धारा बन्द नही हुई इस चमत्कार से आश्चर्य में पड़ा बरमजू को कुछ समझ ना आई आखे बंदकर उसने ईश्वर से प्रार्थना की कि आप कोई देव हो तो दर्शन दें। सूर्य देव ने बरम जू की प्रार्थना स्वीकार की और ऐसा प्रकट किया कि हम इसी स्थल पर जन सेवा हेतु जल कल्यार्थ रहेंगे। वरम जू ने सूर्य यंत्र की स्थापना की। आज भी मंदिर की आय में से एक भाग वरम जू काछी के वंशजों को हिस्सा में मिलता है। दतिया के पुरातत्व विद पं. राधाचरण गोस्वामी ने अपने एक लेख में ऐसे दो सूर्ययंत्र का उल्लेख किया था जो संसार में दो ही स्थलों पर हैं। जिसमें एक उनाव (दतिया) का यह सूर्य यंत्र दूसरा पेरू (दक्षिण अमेरिका) में स्थित है। इस तथ्यों की पुष्टि चमनलाल रचित हिन्दू अमेरिका नामक पुस्तक से होती है।

चर्मरोगों के लिये बरदान है बालाजी- दतिया में एक कहावत प्रचलित है कि कुढ़िया न छोड़े बालाजी और बालाजी ना छोड़ कुढ़िया' यानी कुष्ठ रोग से पीड़ित लोक अपने रोग सें निदान पाने के लिय यहाँ पर आते है और यहाँ कि पवित्र पुष्पावती नदी में जल इसी नदी के किनारे की रेत से लेपन से चर्म रोग से मुक्ति मिलती है। अन्य रोगों में भी यहाँ की जलवायु आस्था के साथ लाभकारी है। सभी कर्म जाति के लोग यहाँ स्वास्थ्य एवं पुण्य लाभ लेने ऊँच-नीच से परे रहकर आते हैं।

बुन्देली चित्रशैली का चित्रण- उनाव बाला जी के मंदिर में विशेष उत्सवों में दर्शनार्थियों की संख्या अधिक से अधिक रहती है। मंदिर के निर्माणकर्ताओं राजा महाराजाओं से इन्हें रुकने, ठहरने की व्यवस्था हेतु दालानों (धर्मशाला स्वरूप) का निर्माण करवाया।

इन दालानों की छतों के नीचे, मेहरावाँ, घूँघट दरवाजा आदि की बनावट बुन्देला स्थापत्य शैली की है वही इस पर की गई बुन्देली चित्रकारी देखते है बनती है, हालाँकि देखरेख के अभाव में यह दुर्लभ चित्रकला रहते हैं, अज्ञानता में या विशेष सेवा देने वालों ने इन्हें 'कलई' से रंग दिया है। दूसरा जो यात्रीगण यहाँ पर ठहरते हैं उन्होंने अपनी उदर पूर्ति हेतु भोजन बनाने हेतु जिस ईधन का उपयोग किया उससे भी यह चित्रकला नष्ट हुई है। वर्तमान में यहाँ पर जो भी पेन्टिंग (चित्रकारी) शेष है उसमें राम एवं कृष्ण कथा से जुड़े प्रसंग काफी रोचक एवं आकर्षित करने वाले है।

प्रमुख उत्सव एवं त्यौहार- सूर्य मंदिर बालाजी धाम पर वैसे तो नित्य कोई ना कोई उत्सव का माहौल बना ही रहता है वैसे बुधवार एवं रविवार को विशेष दर्शन का लाभ लेने भक्तगण आते हैं। विशेष उत्सव में यहाँ कि रथ यात्रा देखने योग्य उत्सव है। रथ गतिमान होता है जीवन में गति बनी रहे। इस बहुउद्देश्य से यह रथ यात्रा का महत्व है शास्त्र कहता है-

''रथस्थम् भास्करम् दृष्टिवा: पुर्न: जन्म न विद्यते'' कहते है, चलता है सो मधु लाता है। अथक प्रगति सूरज की देखो जो हरदम चलता जाता है। हमें निरन्तर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना चाहिये यही संदेश रथ यात्रा का क्षेत्र बालाजी धाम पर श्रावण पूर्णिमा को विशेष दर्शन होते हैं। फाल्गुन माह में रंगपंचमी के उत्सव में लाखों लोग रंग विभोर होते हैं। यहाँ पर अखण्ड ज्योति सैकड़ो वर्षो से प्रज्जुलित है जो एकाग्र साधना को दर्शाती है।

-संगीत गुरुकुल

मधुकर मार्ग, पकौरया महादेव, दतिया

उप वन विनोद

-बलभद्र मिश्र

समीक्षक-डॉ. कैलाश बिहारी द्विवेदी

प्रथमतः रचयिता का परिचय इसलिये आवश्यक है कि साहित्य के इतिहास में श्री बलभद्र मिश्र का नाम लगभग अपरिचित है। केवल ओरछा के प्रसिद्ध कवि और आचार्य केशव दास के बड़े भाई के रूप में यदाकदा उपलब्ध हो जाता है। हाल में ही टीकमगढ़ के पं. हरिविष्णु अवस्थी के सौजन्य से 'उप वन विनोद' की एक हस्तलिखित प्रति प्राप्त हुयी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के साहित्य शोधक पं. उदय शंकर दुबे, करेऊआ (जिला मिर्जापुर) उ.प्र. के सत्प्रयास से पं. शिवशंकर त्रिपाठी से सम्पादित कर प्रकाश में लायी गयी हैं। यह ग्रंथ साहित्य की श्रेणी में नहीं आता है, भले ही यह पद्य में लिखा गया है। विषय वस्तु की दृष्टि से एक वैज्ञानिक विषय-पर्यावरण और वाटिका विज्ञान हार्टीकल्चर पर प्रणीत ग्रंथ है।

ग्रंथ की रचना प्राचीन पद्धति से की गयी है, श्री गणेशनमन के पश्चात् ग्रंथ की विषय वस्तु का महात्म तत्कालीन राजा या आश्रयदाता की प्रशस्ति फिर कुल परिचय सहित आत्म परिचय। यह भूमिका के रूप में प्रस्तुत किया गया है। ग्रंथारंभ के प्रथम श्लोक में कुँए, बाबड़ी, तालाब आदि जल स्रोतों को खोदने तथा आम आदि वृक्षों को विधि-विधान से न रोपने पर अनिष्ट की चेतावनी दी गयी है।

दूसरे श्लोक से ऐसा प्रतीत होता है, कि विषय वस्तु को शिव-पार्वती के संवाद के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वस्तुतः यह पुराण शैली है, जिसमें भगवान शिव को सभी प्रकार के ज्ञान-विज्ञान का आदि स्रोत माना जाता है। वे रचना करने पश्चात् अपने मानस में धारण कर लेते हैं।

तरंग उठने पर माता पार्वती को प्रसंगों सहित कथा सुनाने लगते हैं। जैसे रामचरित मानस में शिवजी ने रामकथा की रचना कर अपने मानस हृदय में धारण कर ली प्रसंग वश माता पार्वती को सुनाई, काग भुषुण्ड जी ने गरूण जी को नरहरि दास जी ने तुलसीदास जी और उन्होंने लोक को सुनाई। बलभद्र ने यही शैली अपनायी। इसके रचना में और भी मिलते हैं। चाहे उद्यान में रोपे जाने वाले पौधे और वृक्ष हों चाहे अन्य जीव जगत ही जल सबके जीवन की आधारपूत आवश्यकता है। इसीलिये जल का एक नाम जीवन भी है। पुस्तक का रचयिता सर्व प्रथम जल की ही महत्ता स्थापित करते हुये कहता है-

"कूपाराम तड़ादि प्रपावापी प्रतिश्रयं।
सर्वे साधिवत्स अनन्तफलदायक मिति।।

अर्थात् कूप, वापी (आराम बाग) तड़ाग (ताल) आदि जो पानी के स्थान है उनके लिय उपाय, परिश्रम उनका निर्माण सर्वेश नारायण अथवा भगवान शिव की स्थापना के समान हैं। ऐसा करने वाला अनन्त फल का अधिकारी है। आगे रचयिता जल और वृक्षों की महत्ता को प्रतिपादित करते कहता है।

"दस कूप समो वापी दस वाणी समो ह्रदः।
दस ह्रदसमः पुत्रोदस पुत्रे समोद्रुमः।।"

अर्थात दस कूपों के समान एक वापी (बावड़ी) दस वापियों के समान एक सरोवर दस सरोवरों के समान एक पुत्र, दस पुत्रों के समान एक वृक्ष लगाना पुण्य दायक है, क्योंकि वह शताब्दियों तक वायु को शुद्ध करना हे। फल और छाया देता है। रचयिता विषय वस्तु को आठ खण्डों में आगे बढ़ाता है।

प्रथम खण्ड में जल स्रोतों के निर्माण तथा वृक्षारोपण की विधि और महत्व तथा विधि पद्धति का निरूपण करता है, तथा विधि विधान से न करने पर अनिष्ट होने की चेतावनी आदि विषयक जानकारी अड़तालीस छन्दों में प्रस्तुत की गयी है। द्वितीय खण्ड में मात्र तेईस छन्दों में वृक्षारोपण के पूर्व बीजों पचार आदि की विधि है तृतीय खण्ड चौदह छन्दों में वृक्षारोपण के लिए उपयुक्त भूमि तथा जल और जल का गुण आवश्यक मात्रा का वर्णन है। चतुर्थ खण्ड में पच्चीस छन्दों में बीजारोपण विधि तथा पौधों की स्थानान्तरण के संबंध बातों का उल्लेख है। पंचम खण्ड द्रुम रक्षा संबंधी है। इसमें 32 छन्दों में तुषार, दबार, आग आदि से वाटिका की रक्षा करने के उपायों का वर्णन है।

षष्ठ खण्ड में 82 छन्दों में कूपार्थ भूमि चयन के हेतु मिट्टी और उससे प्राप्त जल के स्नान और गुणों का वर्णन है। वस्तुतः इस खण्ड की विषय वस्तु प्रथम खण्ड की विषय वस्तु का विस्तार है। इसका वर्णन उसी खण्ड में उपयुक्त होता ।

सप्तम खण्ड में १९१ छन्द है, जिनमें विविध विषयों पर चर्चा है। यथा वृक्षों की चिकित्सा, वृक्षों संबंधी कुछ कौतुक अथवा आश्चर्य जनक क्रियाओं की विधि और परिणामों का वर्णन वृक्षों को नष्ट करने के उपाय आदि। वृक्षोत्सव विधि विधान आदि वास्तव में रही-सही सामग्री को समेंटने जैसा, यह सबसे लम्बा खण्ड है। पुस्तक में विषय-सामग्री का प्रस्तुतीकरण बहुत विश्रृंखल ढँग से हुआ है।

सम्पादक ने 'उपवन विनोद' पुस्तक में प्रस्तुत सामग्री की पुष्टि के हेतु वाराह मिहिर आदि पुरातन विद्वानों के ग्रंथों तथा पादप विज्ञान संबंधी आधुनिक विद्वानों के हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी के उद्धरण तथा संदर्भ जुटाकर एक लघु पुस्तिका को एक उपयोगी ग्रन्थ के रूप में प्रस्तुत किया है।

पं. बलभद्र मिश्र ने श्लोकों के नीचे उनका गद्यानुवाद भी किया है। यह एक नई उपलब्धि है, क्योंकि उस समय का गद्य बहुत कम प्राप्त है। होता भी है तो दानपत्रों, खरीतों, शिलालेखों आदि से प्राप्त होता है, जिमें लौकिक बोलचाल का स्वरूप उभरता है। बलभद्र मिश्र के गद्यानुवादों में समझाने की कोशिश में अभिधा मुखर रहती दिखती है। एक उदाहरण- -

अब कूप की शुभअशुभ दशा कहियतु है। जो नगर ग्रामते नैऋत्यकोण पाद होइ तौ बालकन की क्षय करै। जो वायव्य कोण में हो तो स्त्री क्षय करै। ईशान कोण में होय तो भय उत्पन्न करे। और शेष दिशा सब शुभ करिहे। अन्तिम श्लोक में वृक्षोत्सव मनाने की विधि तथा उसका पुण्य फल का वर्णन है।

संपादक एवं टीकाकार पं. शिवशंकर त्रिपाठी ने वर्तमान हिन्दी में टीका की है। उसकी भाषा पंडिताऊ है। एक बात विशेष खलती है जिस पर संपादक सहित किसी ने ध्यान नहीं दिया है। जिस प्रति का अनुवाद और संपादन किया गया है वह भूल नहीं है। प्रतिलिपि है, परन्तु इसका संपादन जिस ढंग से किया गया है। वहमूलप्रति का भ्रम पैदा करता है। समापन वाक्य है।

।।इति उपवन विनोद समाप्तम्।।
कार्तिक शुक्ल।।एकादशी।गुरुवासरे।।
।।श्री संवत् १८७७।।
मुकाम-ढेहरी।।रस्तु।।

-पुरानी नजाई, टीकमगढ़

बुन्देली कहानी संग्रह: प्रेम कौ प्रभाव

-राजकुमार अहिरवार

बुन्देलखण्ड का पानी और बानी दोनों अपनी मिठास के लिए ख्यात हैं। बुन्देली पानी और बानी ने अपनी आँचालिक सांस्कृतिक धरोहरों को निरन्तर गाँव से नगरों की ओर प्रवाहित किया है। पर नगर ऐसे आभासी सभ्य रहे हैं, जिन्होंने ग्रामीण जीवन की कभी परवाह न कर मिनरल वाटर और अँग्रेजियत को तरजीह दी है, उसने सरल समृद्ध संस्कृति और बुन्देली बानी को हाशिये पर डाल रखा है। लेकिन ग्रामीण जीवन और संस्कृति के वाहक उसी ग्रामीण समाज से कभी न कभी अवश्य निकल आते हैं। बुन्देली भाषा-बोली के लिखित प्रमाण तो काव्यात्मक रूप में जगनिक के 'परमाल रासो' से मिलना प्रारम्भ हो जाते हैं, परन्तु गद्यात्मक बुन्देली रुप राजाओं, जमींदारों की सनदों, पत्रों और प्रस्तर या धातु पत्रों में ही मिलते हैं। बुन्देली का गद्यात्मक रूप मौखिक परम्परा में बुन्देली कथाओं और गाथाओं में मिलता है। बुन्देली गद्य साहित्य का रूप स्वतन्त्रता पश्चात् पचास के दसक से मिलना प्रारम्भ होता है। बुन्देली पत्रिकाओं - मधुरकर, लोकवार्ता, भारती, मामुलिया, बुन्देली वार्ता, बेतवा वाणी आदि में बुन्देली गद्य साहित्य का परिष्कृत रूप लोक समाज के सम्मुख पहलीबार प्रस्तुत हुआ है, जिनमें लोक कथाओं, लोक गाथाओं, लोक कहावतों, लोक मुहावरों आदि को आधार बनाकर बुन्देली बोली में कहानी लिखने का प्रयास किया गया। लोक कथाओं और लोक गाथाओं को आधार बनाकर लिखी गई कहानियाँ बुन्देली भाषा को समृद्ध करने में तो सक्षम रही हैं, पर कथ्य की मौलिकता उनमें नहीं रही है। विषय की दृष्टि से ऐसी कहानियाँ राजा-रानी और पशु-पक्षियों की कहानियाँ बन कर रह गयी हैं, लेकिन उन्होंने लोक कहानी कला को निखरने का व्यापक अवसर अवश्य दिया है और उसी व्यापकता का परिणाम है - डॉ. दुर्गेश दीक्षित का कहानी संकलन 'प्रेम कौ प्रभाव'। इस कहानी संकलन का प्रथम प्रकाशन सन् 2007 में बुन्देली लोक साहित्य संस्थान, स्नेहनगर, मधुकरशाह वार्ड, सागर (म.प्र.) से हुआ है। इस संकलन में बुन्देली कथाकार दुर्गेश दीक्षित की कुल 21 कहानियाँ संकलित हैं।

कहानीकार ने 'समय कौ फेर' कहानी में उस पारिवारिक व्यवस्था और भ्रातृत्व में टूटन की बात सार्वजनिक की है जहाँ एक भाई 'रामधनी' अपने बड़े भाई के सहयोग से पढ़ लिखकर नौकरी पेशा, शादीशुदा, परिवारदार होकर उसी बड़े भाई (रामभरोसे) से नाता-रिश्ता तोड़ लेता है, और अचल सम्पत्ति हड़पने की कोशिश करता है। प्रतिक्रिया स्वरूप रामभरोसे अपनी सम्पत्ति खतरनाक लोगों को बेचकर अन्यत्र प्रवास कर जाता है। कुछ समय पश्चात रामधनी को पड़ोस से विवाद होने पर शारीरिक हानि होती है। गाँव-पड़ोस का कोई आदमी उसके पक्ष में खड़ा नहीं होता हैं, क्योंकि रामधनी ने लोक-मर्यादा के विरुद्ध स्वार्थ वश अपने बड़े भाई का अपमान किया है। रामधनी को अपनी गलती का अहसास हो जाता है। वह सपरिवार प्रवासी बड़े भाई रामभरोसे से अनुनय विनय कर उसी के साथ वापस अपने गाँव आता है। रामभरोसे अपनी सामाजिक औकात के बल पर पड़ोस की वैमनस्यता मिटा देता है। कहानी पारिवारिक समस्या पर आधारित है, जिसकी जड़ में बढ़ता आर्थिक स्वार्थ है। कथाकार ने इस स्वार्थीवृत्ति पर नकेल कसने के लिए भावनागत हृदय परिवर्तन का सहारा लिया है अर्थात् अर्थ पर भावना और सामाजिकता की विजय दिखायी है। अत: कहानी आदर्श प्रधान है।

बुन्देली परिवेश में अन्यान्य सामाजिक बुराइयाँ है। उन्हीं में से एक बुराई है मद्यपान की, जिसको कथ्य का विषय बनाकर कथाकार दुर्गेश दीक्षित ने 'नशा कौ गुलाम' कहानी में समाज के उसे नंगे चरित्र का पर्दाफाश किया है, जिसे हम मर्यादा के आवरण में ढँके थे। कहानी का पात्र मोहन लाल शराबखोरी का इतना गुलाम हैं, जो समाज की मर्यादा-बेटी की धन-सम्पति का उपयोग पिता पक्ष के लिए पाप है।' का उल्लंघन कर अपनी ही ससुराल शुदा बेटी के गहनों को गिरवी रखकर शराब पीता है। यहाँ तक कि लोकरीति के विरुद्ध मोहन लाल शराब के खातिर अपनी विवाहित बेटी का अन्यत्र सौदा कर लेता है। सामाजिक चरित्र के संबंध में कथाकार की यह बेबाक टिप्पणी हैं, परन्तु वह समस्या का समाधान प्रस्तुत नहीं कर पाया है।

'प्रेम कौ परिचय' कहानी संवेदना परक कहानी है। कहानीकार ने दाम्पत्य प्रेम की श्रेष्ठता को सिद्ध किया है। कहानी के पाठ से इतनी संवेदना तो अवश्य बलवान होती है कि पति के लिए स्त्री ही नहीं जीती हैं, बल्कि पत्नी के लिए पुरूष भी समर्पित होता है। कहानीकार ने उस जड़ व्यवस्था को नकार दिया है, जिसमें पुरूष के लिए पत्नी भोग्या मात्र है। विधुर होने पर वह पुन: दाम्पत्य सुख भोगने हेतु तत्पर रहता है और भोगता भी है। कहानीकार ने बड़ी उदात्तता का परिचय देकर उक्त अतार्किक सामाजिक व्यवस्था का खण्डन कर प्रेम के उस स्वरूप का चरित्रांकन किया हैं जहाँ पुरूष नारी प्रेम के प्रति समर्पित है। साथ ही पुनर्विववाह की अपेक्षा पत्निव्रत रहना अधिक श्रेयस्कर समझता है और पालन भी करता है।

कहानीकार ने 'मन कौ भँरम' कहानी में बुन्देली जन मानस की उस सूक्ष्म भावना का अंकन किया हैं जहां प्रेम, दाम्पत्य स्नेह, समर्पण के रिश्ते क्षणिक तन्तु तन्यता से टूट जाते हैं, जिन्हें पुन: जोड़ने या जुड़ने में वर्षो गुजर जाते हैं। कहानी के पात्र धनीराम का अपनी पत्नी से इतने मात्र से दीर्घकालीन अलगाव हो जाता है कि वह उसके चरित्र में शंकालु सी हो गयी है, सजा के रुप में चरित्र का धनी धनीराम पत्नी से मुँह मोड़कर प्रवासी हो जाता है। वहीं दूसरी ओर धनीराम की पत्नी को अपनी अनजान भूल का अहसास होता है। धनीराम को पुन: अपने पाले में लाने के लिए। ग्रामीण संस्कृति के अनुरूप वह अनेकानेक असफल प्रयास करती हैं पर पुरूष-प्रधान जड़ संस्कृति में पुरूष पत्नियों के लिए झुकता कब है। पत्नियाँ ही पति को परमेश्वर मानकर गुलामी करने, बिना मोल भाव अपना सर्वस्य अर्पण करने के लिए सामाजिक नियमाबद्ध हैं। नारी मानसिकता 'सौतिया डाह' की शिकार होने से तमाम परेशानियों का शिकार होती रहती हैं। इस तथ्य को इस कहानी में उठाया गया हैं जो अत्यन्त समयानुकूल है। पत्नी द्वारा अपनी गलती मानकर पुन: पुराने सद्भावना युक्त परिवेश को प्राप्त करना बड़ी बात है और कहानी की सफलता का राज भी है। हालाँकि कहानी आदर्श रूप को प्रस्तुत करती है पर सच्चाई के निकट भी अधिक है।

'प्रेम कौ प्रभाव' संकलन में संकलित कहानी 'समय कौ खेल' ऐसी कहानी है जिसमें स्वार्थवश खूनी रिश्तों को तार-तार होते और भावनात्मक संवेगों के सहारे पुन: विच्छिन्न रिश्तों को अविच्छिन्न होते दिखाया गया है। कहानी में यह संकेत है कि 'बहन बड़ी न भैया, सबसे बड़ा रूपैया', अन्यथा कहानी के पात्र मोहनलाल को उन्हीं के अनुज बन्धु तिरस्कृत न करते। मोहनलाल भी अपने सम्मान की

संरक्षा के लिए घर द्वार, सम्पत्ति, जायदाद का त्यागकर धर्माश्रय ग्रहण कर लेता है। यह घटना पलायनवाद से प्रेरित न होकर आत्मसम्मान और परस्वार्थ की परिचायक है। पर कथाकार ने आदर्श का सहारा लेकर विखण्डित परिवार को जोड़ने का प्रयास किया है जो उचित ही है। 'करनी कौ फल' नीतिपरक कहानी है। इस कहानी में यह बताने का प्रयास किया गया है कि धन सम्पत्ति की बदौलत किसी से जानबूझकर बेईमानी करना कभी न कभी हानिकारक होता है। कहानी के पात्र राधेश्याम की जो गति हुई वह उसकी करनी का ही फल है कि उसे अपनी स्वयं की जायदाद से विरत होना पड़ा है। कहानी का दूसरा पक्ष यह भी है कि अशिक्षित समाज या व्यक्ति कान का कच्चा अधिक होता है। वह बहकावे में न तो दूसरों की इज्जत का ख्याल रखता है और न ही अपनी आर्थिक सुविधाओं का; अन्यथा कहानी का दलित पात्र 'मन खुशी' चुगली का शिकार न बनता। 'स्वारथ की प्रीत' कहानी में जमींदार और मुखिया का वार्तालाप है। दोनों सम्भ्रान्त परिवार से हैं; पर दोनों की समस्या आर्थिक है, सामाजिक है। मुखिया बैंक का कर्ज चुकाने में असमर्थ है; क्योंकि प्राकृतिक प्रकोप से फसल नष्ट हो चुकी है। वहीं उसे अपने जातीय सम्मान की भी चिन्ता है कि कहीं तहसीलदार उसके बेटे से अभद्र भाषा में व्यवहार न करने लगे। इस कहानी में जमींदार की पीड़ा को महसूस किया गया है जो परिवार का मुखिया होने के नाते परिवार की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सामाजिक सरोकारों की जिम्मेदारियों के लिए परिवार की तरफ से पूर्णतः जवाबदार है। घर के शेष पुत्र, पुत्र-बधुएँ मात्र ऐशोआराम की जिंदगी जीने के लिए ही पैदा हुये है। कहानी की विशेषता यह है कि बुजुर्ग दम्पती माया-मोह, परिवार मोह त्यागकर तीर्थ स्थान चले जाते है; तब कहीं परिवार के बाकी सदस्य अपनी जिम्मेदारी महसूस कर परिश्रम करते हुए परिवार का भरण पोषण करने में सक्षम होते हैं। 'दूर के ढोल' कहानी में कहानीकार दुर्गेश दीक्षित ने पारिवारिक कलह को स्पष्ट किया है। गिरते नैतिक मूल्य और बढ़ते भौतिकवाद ने पारिवारिक लगाव को अलगाव में बदल दिया है और भाई-भाई की हत्या जैसे परिणाम सामने आने लगे हैं। लेकिन युवा पीढ़ी अल्पकालिक आर्थिक लाभ के पीछे दौड़ लगाने में अपना स्वाभिमान समझती है, भले ही पारिवारिक जन की हानि ही क्यों न उठानी पड़े। लिहाजा कहानी की प्रासंगिकता समसामयिक है।

'मन कौ मैल' कहानीकार दुर्गेश दीक्षित की बहुत संवेदनशील भावनापूर्ण कहानी है। कहानी बुन्देली ग्राम्य जीवन के बहुत नजदीक है। लगभग यथार्थ के समकक्ष। कहानीकार ने पारिवारिक विखण्डन को सच्चाई से पेश किया है जैसा कि आम अनुवांशिक परिवारों में होता है। परन्तु भावनात्मक धागों को टूटने नहीं दिया है, नैतिकता की दुहाई को साकार कर दिया है। ऐसा हृदय परिवर्तन कराया है कि कहनी के पात्रों-दोनों सगे भाई और दोनों की पत्नियों में जहाँ दस वर्ष तक बोलाचाली बन्द रही है, वहीं बीमारी और ऑपरेशन जैसी घटना परिवार को एकाकार करने में समर्थ होती है। कथा का कथ्य भले ही छोटा है, पर उसका उद्देश्य और सन्देश लोकोपयोगी है, लोक अनुकरण योग्य है। अर्थात् बुन्देली जीवन कितना ही भौतिकवादी चकाचौंध में लीन क्यों न हो जाये; पैसे की महत्ता कितनी भी क्यों न बढ़ जाये, वह अपनों के बिना, अपने खूनी रिश्तों के बिना अधूरा ही है। सौबात की एक बात कि समाज में यदि सम्मान, सहयोग और चिन्तामुक्त जीवन गुजारना है तो बन्धु-बान्धव के रिश्ते को आजीवन बरकरार रखना ही होगा; क्योंकि संकट में पहला सहयोग सगे-सम्बन्धी, सहोदर-सहोदरा का ही अपेक्षित होता है। 'बिटिया को ब्याव' कहानी प्रगतिशील विचारधारा को स्वीकार करती है। इस कहानी में कहानीकार दुर्गेश दीक्षित ने जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणामों की ओर इशारा किया है और 'हम दो हमारे दो' के नारे को सुख-समृद्धि का कारण माना है। बुन्देली जन मानस में ऐसी विचारधारा का पनपना स्वागत योग्य है, परन्तु इसका क्षेत्र सीमित है। बुन्देलखण्ड में दहेज प्रथा न के बराबर रही है, लेकिन बढ़ी आधुनिकता और भौतिकवादिता ने अर्थ की महत्ता को कुछ ज्यादा ही पंख लगा दिये हैं। कहानीकार ने देहज प्रथा के उन्मूलन के लिए शिक्षित अविवाहित युवा वर्ग के पुरूषों को प्रस्तुत किया है जो एक साहसिक कदम है; क्योंकि युवावर्ग सम विचार धारा का जीवन साथी चाहता है जो दहेज के माध्यम से तो कतई नहीं मिल सकता। दहेज आर्थिक सुख दे सकता है, व्यर्थ का सामाजिक सम्मान दे सकता है, पर उसमें नैतिक-बल, आत्म-बल, सात्विक-बल और प्रेम, सम्मान, सद्भाव का बल उत्पन्न करने की रंच भर क्षमता नहीं होती है।

'हत्या कौ भूत' कहानी एक दम निराशाजनक कहानी है। कहानी की मनोवैज्ञानिक सच्चाई हो सकती है। वर्तमान में यथार्थतः भी कभी-कभार परिवारजनों की हत्या किसी पारिवारिक सदस्य द्वारा कर दी जाती है। पर सोचने-विचारने का विषय यह है कि किसी पशु (भले ही वह व्यक्ति विशेष के लिए पूज्य हो, उसमें आस्था हो), की हत्या के प्रायश्चित हेतु या लोक भय से स्वतः की सन्तानों की निर्मम हत्या तो कदापि उचित नहीं है। और ऐसी मिथकीय परमपरागत धारणाओं, लोक विश्वासों को साहित्य में स्थान नहीं होना चाहिए जो मानसिक दुर्भावना या मानसिक अस्वस्थता को प्रदर्शित करती हो। लिहाजा कहानी की कथावस्तु लोकधारणा और स्वस्थ साहित्य के अनुकूल नहीं है।

निष्कर्षतः 'प्रेम कौ प्रभाव' बुन्देली कथ संकलन कथाकार दुर्गेश दीक्षित की सुन्दर कृति है।

संकलन का भावपक्ष (कथावस्तु) अधिकतर आदर्शपरक है। साथ ही पात्र संयोजना और उनकी पृष्ठभूमि अधिकांशतः उच्च वर्गीय ब्राह्मणवादी, सामंतवादी और वर्गवादी है, परन्तु जातीय संकीर्णता का बोध नकारात्मक नहीं है जो एक अच्छी बात है। कथानक में ऐसे प्रसंगों, घटनाओं को स्थान दिया गया है जो समाज को प्रत्यक्षतः या परोक्षतः प्रभावित करती हैं। सामाजिक बुराईयों; जैसे-पारिवारिक विखण्डन, दहेज, भौतिकवाद, बँटवारा, पारिवारिक वैमनस्य नशा आदि को उजागर किया गया है। कुछेक कहानियों में समाधान भी दिया गया है। परन्तु संग्रह की अधिकांश कहानियाँ पाठक को वर्तमान से अतीत के वातावरण में विचरण कराती हैं इसलिए कहानियाँ मात्र कथा ही प्रतीत हो रही हैं। नैतिकता और आदर्श कहानी के प्रमुख हथियार है लेकिन उनमें यथार्थ की धार नहीं है। संकलन का शिल्प विन्यास बुन्देली लोक धारा के अनुकूल है। बुन्देली कहावतों और मुहावरों की इस संग्रह में भरमार है। शब्दावली ग्रामीण परिवेश के रंग में रँगी है। भाषायी आनन्द देने में संकलित कहानियाँ पूर्णतः सक्षम हैं। बुन्देली शब्दों की, वाक्यों की उच्चारणगत शुद्धता प्रशंसनीय है। कहानियों की संवाद शैली (कथोपकथन) इतनी सरस है कि पढ़ते-पढ़ते आनन्दातिरेक सा होने लगता है मन प्रसन्न हो जाता है।

-सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शास. स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता
महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

बने रइयो जीजा जू तुमें कौल है

-सुधा रावत 'क्षमा'

होरी को असली आनंद लेने होय तौ कौनऊं भी गांव में नातेदारी होवो भौतई जरूरी है! काय से होरी को सही रंग तौ गाँव मेईं देखबे खों मिलत है! कजंतकीदार भाग्य से अगले की ससराइई गाँव में होय तौ फिर तौ- सौने पै सुहाग हैई! अरे दद्दा-ससरार खों ऐसई 'सुख की सार' नईं कहो जात, जीजा चाये खपसूरत और स्मार्ट होय चाये खूसट खडूस, बैठारौ तौ पलकन पई जात है! जा और बात है। कन्छेदी लाल के दो-चार दोस्तन के व्याओ गाँव-ग्योड़े भयें ते, उनके मुखार-बिन्द से अपनी ससरार के सुखन के किस्सा-कानियां सुन-सुन के वे भी गाँव की गोरियन पै लट्टू हते, उन की जोई अभिलाखा हती कै उनकै व्याओ भी कोनऊं गाँव में होय! सो भैया हरो ईसुर तौ सबकी मनोकामना पूरन करत है! मड़ियन में मार्गी गई मानता फलीभूत भईं और उनकी मुराद पूरी हो गई।"जिन खोजा तिन पाइयां" कि तरज पै कन्छेदी गाँव की गोरी ढूँढ़बे में कामयाव हो गये। एक हरे भरे खुशहाल निपट गबई गाँव में रिस्ता पै भओ और "चट्ट मंगनी पट्ट व्याओं हो गओ!

कन्छेदी लाल भौतइ खुश हते। गाँव में ससरार का भई उनके तो जैसे भाग्गई खुल गये! पिसी चना के संगे इ- संगै साग-भाजी, घी, गुर, सूपा, दोरियां-टिपरियां सबई कछू की आबक हो गई! शहर में जिन जिन्सन के लाने तरसत हते अब वे रोजमर्रा के उपयोग में शामिल हो गई! तीज-त्योहारन पै खूब चग्गबग्ग होन लगी! लगभग हर त्योहार पै कन्छेदी लाल को चक्कर ससरार को लगई जात तो। खूबई आवभगत होत ती। सो अबलाखा जा हती कै एक बार ससरार की होरी भी मनाई जाये तौ" लपकी गाय गुलेंदे खाय बेर-बेर मउआ तरें जाये"। जा कहावत चरितार्थ करत भये जा धमके ससरार! रिक्सा से उतरइ नईं पाये कै पुरा भरे के मौड़ा-मोड़ियन ने आ घेरो! जीजाजू आ गये-हो-हो जीजाजू आ गये और पानी भरीं पिचकारियन से होरी सुरू कर दई! ये क्या ये क्या? अभी से होली? कन्छेदी समरई नईं पाये कै अधभीजे हो गये! श्रीमती जी हँस के बोली- अरे जा गाँव की होरी आय 15 दिन पैल से शुरू हो गई और 15 दिन बाद तक चल है। इन शैतानन की टोली खों कछु रूपइया पइसा दै दो नईं तर जै तुमे भिजाउतई रै हैं। कन्छेदी लाल ने तुरन्त 50 रुपइया को करकरो नोट निकार के दओ और छींकत भये घर में पोंचे। सारे साब पा लागत भये बोले- अरे जीजाजू अपुन तो अबई से छींकन लगे, अबै तौ होरी शुरू अई नईं भई! ई बेर बड़ो मजा आ है। आपकी तो जा पैली होरी है। तनक बच के रइयो हमोरें जम के होरी खेलत हैं। वे बोले- "तो यहाँ डरता कौन है! हम भी तो होली खेलने ही आये हैं।"

दिन भर के स्वागत सत्कार के बाद जीजाजू घुरबा बैंच के सो गये! सबेरे नित्तक्रिया के बाद कलेऊ करबे बैठे गूजा-पपरियन कौ आनंद लैई रये ते कै ढोल-नगाड़न कौ सुर कानन में परो, जीजाजू फुर्ती से उठे, जिज्जी ने सैना कानी से रोकबे की कोंसत करी पै वे नईं माने और द्वारे पे पोंचई गये! रौ जाओ - रौ जाओ करत भई सास भवा जू उनके पाछे-पाछे भगी। पै उनने एक न सुनी।

'होरी के लरका हुरदंगा" बुरओ न मानो होरी है के नारों के संगे हुरयारन की टोली उनपै टूट परी काऊ ने मौं कारो करो काऊ नें कपड़न पै हांते छाप दये कौनऊं बुकसट तान रओ, कोऊ बारन पै झूम गओ। कन्छेदी बचाव-बचाव चिल्लाने तबई भीड़ में से एक लरका उनके पास आओ ऊ ने उनको हांत पकरो और हुररररर्ऽ करत भओ उने घसीट के गधा के पास लै गओ! और गदा पै बैठे भये लरका से बोलो- "काय रे तोय सरम नईं आउत जीजाजू नैचे ठांड़े और तैं सबारी पै बैठो, उतर नेंचें।" वौ झटपट गदा से उतरो - अरे जीजा जू गलती हो गई माफ करियो।" कै कैं कन्छेदी के पांव परबे झुको इत्ते में दूसरे लरकन ने कन्छेदी खों उठा के गदा पै धर दओ! एक लरका ने टूटे डबला कौ मौ उनकी मूड़ पे धरो ऊ पै बारा की कलगी लगा दई और ककरी, आलू, भटन की माला गरे में डार दई! और बोले वाह अब दूला सो दूला लगो, जम रये जीजाजू!

जीजाजू खों कछू सोचवे समझबे कौ मौकई नई मिलो हकला के बोले - "अरे-अरे ये क्या कर रहे हो? मुझे गधे पर क्यों बैठा दिया।" तोबा-तोबा जीजाजू इने गदा न कइयो जे बिगड़ गये तो मुश्कल हो जैहे। इने प्रेम से बलइयां लईं और सबरे खीस निपोर के हँस परे। फिर गदा आंगे बढ़ गओ। पूरो दिन ऐसई दोर-दोर घूमत भये मस्ती में कड़ गओ। कोऊ खों कछू होस नइ रओ जीजाजू ने हरी बर्फी और भांग के समोसा भी खूब डकारे जब संजा बिरियां घरै लौटे सो अजीब-अजीब हरकतें कर रये ते द्वारे पै सास भवाजू खों देख कें जोर सें सीटी मारी और हँसत भये भीतर घुसन लगे! उनने भी आव देखो न ताव द्वारे पै टिकी डेंड़का उठाओ और दै मारो- नठया को आय तैं मोय सीटी मारत- लै-लै-लै! वो तो गनीमत रई कै पाछे सें छोटे सारे अम्मा को हांत पकर कें डिढ़ोका छुड़ा लओ नईं तर सास भवा जू कछू और आव भगत कर देती! कन्छेदी अबै लौ होस में नईं ते! हँस-हँस कें उनकौ बुरओ हाल हो रओ तो। ऐसो लग रओ तो कै वे हंसी को बर्ल्ड रिकार्ड अपने नाम करकेई रै हैं, अकेले दुष्ट सारन ने डबला भर पानी मूड़ पै सें डार दओ। कोउ आम को अथानो लै दोरो तरां-तरां से नशा उतारबे के जतन शुरू कर दये। और विचारे कन्छेदी लाल गिनीज बुक में अपनों नाव दर्ज करवाबे से चूक गये!

भुन्सारे उठे सों मूंड पै पट्टी बंधी देखकें बोले- "ये क्या हो गया श्रीमती जी बोली - कछू नईं काल भांग जादां सूट गये ते तुम तो नशा में उपटा खा कें गिर परे ते।" इत्ते में छोटो सारो गाना गाउत भओ आओ- जीजाजू खूब ठुके तैंदू के बैंट से .... और जीजाजू का हाल है? काल तो अपुन ने खूब होरी खेली? वे बोले- "बार रे बाप मैनें तो कान पकड़ लिये! ऐसी होली होती है गाँव में, अब कभी नहीं खेलूंगा।" सारो बोलो- का बात कर रये जीजाजू काल तो "कीच गिलरी" की होरी मची रई। असली रंगन बारी होरी तौ आज आ होनें! नहीं-नहीं बिल्कुल नहीं आज तो मैं घर से बाहर भी नहीं निकलने बाला।" जौ कै कैं जीजाजू ने दौड़ लगाई और कोठा में घुस के किबारे बंद कर लये- इत्ते में हो-हल्ला सुनाउन लगो-होरी है- होरी है बुरओ न मानों होरी है- हुरयारन की टोली द्वारें पौंच चुकी ती! सारन ने खूबई मान-मनउअल करी पै जीजाजू कोठा से बाहर नईं निकरे। थक हार के हुरयारे भग गये अकेले कन्छेदी ने दुपारी तक दोरो नईं खोलो! दुपरिया बाद आदो किबार खोल के तनक झांके सो

लगो चारऊँ तरफ सन्नाटो है। छोटे सारे ने धीरे से कई कोऊ नइयां मसकऊं सें कड़याओ!

जैसई वे मुस्करात भये बाहर आये, सारीं साराजनों नें लागां लुंगरौ पैरा दओ काऊ ने चुनरियाँ उड़ा दई, एक ने डग-डगो काजर आंज दओ दूसरी ने लाली पोत दई, हांतन में रंग बिरंगी चुरियां पैरा दईं तौ पावन में घुंघरू बांध दये। पल भर में अच्छे खासे जीजाजू खों नर से सुगर-नार बना डारो एक सारी ने टेप खोल दओ लोकगीत बज उठो-

रसिया खों नार बना दो री
रसिया की अंखियन कजरा आंजौ,
लाली रचा नचा लो री।
रसिया खों ....

सारियन ने उने खूब जी भरकें नचाओ! बिचारे कन्छेदी कभऊं शरमा रये कभऊं लजा रये तौ कभऊं खिसिया-खिसिया कें नाच रये ते और सारी तारी बजा-बजा कें खूबई ठिलठिला रईं ती! गनीमत जा रई कै ओई टैम पै उनके ससुर आ गये सबरी सारीं इतै उतै दुक गईं और कन्छेदी की जान छूटी। दूसरे दिनां लाख मनुहारन के बाद कन्छेदी लाल रूकबे खों तइयार नईं भये। भुन्सारें बस कलेऊ करो और रबानगी लई! बस में बैठबे के बाद उननें चैन की सांस लई। अकेलें जैसई बस चली सो ड्राईवर ने टेप खोल दओ सो लोकगीत बज उठो - एक दिनां जीजाजू गये ससरारे,

सो- फागुन की हती शुभ-घरी
कै-फाग उनै उतई की परी ...

कन्छेदी लाल ने कानन पै हांत धर लये और चिल्ला के बोले- "अरे यार ये कौन सा गाना लगा दिया। दिमाग खराब हो गया बदलो इसे, दूसरा लगाओ!"

आज्ञाकारी ड्राईवर ने तुरन्त आदेश कौ पालन करो तुरन्त गीत बंद हो गओ और दूसरो बज उठो - "बने रइयो जीजाजू तुमे कौल है आज मंगीरन कौ डौल है।"

कन्छेदी खिच्चा कें अपने बार नोंचन लगे! बस में जित्ते जने बैठे तें ठहाका मारकें हँस परे। बगल में बैठीं उनकी श्रीमती ने हसी रोकबे की भौतइ कोंसट करी पैं खीं - खीं करके मोंसे, अब तौ वे अपने आप खों हँसवे से न रोक सकी और खिलखिला के हँस परी!

-एफ ७, गीत बंगलो फेस-२,
दुर्गेश विहार जे.के.रोड,भोपाल (म.प्र.)

मणि 'मुकुल' के फागुनी दोहे

फागुन राजा रूप का, रंगों का सरताज।
देख उमरिया रसभरी, रोज गिराता गाज।।
उमर बिरानी हो रही, फागुन चढ़ता देख।
माथा अपना पीटती, धरम-करम की रेख।
इस फागुन में लग गया, उमर में सोलह साल।
नैनों ने न्योते दिये, अधर भये बेहाल।।
चटक रंग चुनरी भई, पिचकारी पचरंग।
होली के हुड़दंग में, रसिया रंग-बिरंग।।
सावन गोरी सो गई, जागी फागुन मास।
अंग-अंग गदरा गये, बलम आस ना पास।।
एक सखी बतियां करत, राखी दूसरी संग।
अंगिया फागुन मास में, हो जाती क्यों तंग।।
नये-नये कंगना हाथों में, नयी-नयी करधनियां।
होली खेलन बलम ने भेजी, चोली और करधनियां।
कस्तूरी सी महकती, दस-छै की गुलनार।
घर-घर फागुन भटकता, मिलता नहीं करार।।
श्याम रंग नैना भये, टेसू रंग कपोल।
पटल पयोधर हठ करें, अंगिया के बंध खोल।।
होली तो होली है कर लो, तन की भी मन की भी
उमर पांव की पैजनियां, कल खनकी ना खनकी भी
भौजी ने देवर के ऊपर, चुपके से रंग डाला।
देवरानी की नींद उड़ गयी है, कुछ दाल में काला।
होली के दिन डर जाते हैं, नैना बड़ा बेबस के।
यादों की गठरी खुल जाती, रह जाते कस-कस के।
बरस-बरस की होली के दिन, रूठो मत रंग डालो।
समय किसी का सगा नहीं है, ऐसा रोग न पालो।।
जाते-जाते कह गया, फागुन नस-नस घोल।
अपनों से क्या रूठना, बोल सकै तो बोल।।
जात न पूछे, पांत न पूछे, नहीं पूछता रंग।
फागुन का महिना 'मुकुल' नाव-नदी का संग।।
होली के दिन आए संवरिया, जी भर होली खेलो।
लाज शरम की तोड़ किवरियां, तन-मन की सुध ले लो।।
तिरकन लगे क्वारें सपने, अंखियों ने मुंह मोड़ा।
अधरों ने घूंघट के पीछे, नहीं कहीं का छोड़ा।।
रूप तुम्हारा लगे कि जैसे, फागुन का महीना चढ़ता है।
सरसों जैसी भरी देह में, कोई पहला खत पढ़ता हो।।
बैरन अंगिया ने धो डाली, सीमाओं की रेखा।
उमर ने कितने जाल बिछाये, नहीं किसी ने देखा।।
ऐसा रंग लगा तो सजना, जो अंग-अंग बिध जाए।
जनम-जनम तक रहूं देखती, जब-जब फागुन आए।।
रंग ना छूटे, संग न छूटे, छूटे नही उमंग।
ऐसी प्रीत निभाते रहना, कभी न करना तंग।।
सांसों के संगीत बने हो, नैनों के स्वर-सपने।
अधरों में क्या घोल दिया है बस में नहीं है अपने।।
दूर रहो या रहो पास में, होली के दिन आना।
सांस-सांस में फांस-फांस को, जी भर के बहलाना।।
खेतो में फूली सरसों को, तुमने गले लगाया होगा।
आंखों में बरबस ही कोई, मन का मीत समाया होगा।।
फागुन का महिना 'मुकुल' चढ़ती उमर की बेल।
धका लगे से लिपटती, जैसी हो गुरबेल।।

एल.आई.जी-2
जयप्रकाश नगर, अधारताल,
जबलपुर, 482004(म.प्र.)
मो.नं. 98937690200

बुन्देली माटी के प्रखर कवि निर्मल चन्द्र 'निर्मल'

-डॉ. घनश्याम भारती

बुंदेलखण्ड के लोकप्रिय कवियों में निर्मलचन्द 'निर्मल' का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है। निर्मल जी देश के ख्यातिलब्ध कवियों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। इन्होंने देश के श्रेष्ठ कवियों के साथ काव्य पाठ किये हैं। निर्मल जी ने अपने परिचय में स्वयं लिखा है- ''काव्य मंच सम्पूर्ण भारत में पढ़े। अब मंचीय दृष्टि से शांत हूँ। आज न तो वे कवि रहे और न वे मंच। जिन कवियों के साथ मैंने मंच किये वे हैं - दादा भवानी प्रसाद मिश्र, श्रीकृष्ण सरल, कवि नीरज, बटुक चतुर्वेदी, शिवकुमार श्रीवास्तव, काका हाथरसी आदि और भी सहस्त्रों नाम हैं।''[१] प्रो. सुरेश आचार्य 'निर्मल सतसई' की भूमिका में लिखते हैं - श्री निर्मल चन्द निर्मल अपनी काव्य रचना और उसकी त्वरित एवं सहज संप्रेषणीयता के लिए देश-व्यापी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं।''[२] कवि निर्मलचन्द निर्मल का जन्म 6 मार्च 1931 को चकराघाट, सागर (मध्यप्रदेश) में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा सागर में हुई। आपने एम.ए. तथा बी.एड. की डिग्री प्राप्त की। इन्हें एक श्रेष्ठ कवि के रूप में कई सम्मानों से नवाजा जा चुका है। देश की चर्चित पत्रिकाओं में आपकी कविताओं को ससम्मान प्रकाशित किया गया है। अभी तक निर्मल जी के कुल 16 काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उठाओ कुदाली (1993), और कुछ नहीं हुआ (1994), गीत वही लिख पाता है (1996), गीत है ये जिंदगी (1999), कुछ ऐसे लोग हुआ करते हैं (2003), याद नहीं बिसरी (2005), जुगनुओं के पास भी ईमान है (2006), प्रीत के सुख-दुख घनेरे (2007), पसीना बोलता है (2008), गुड़िया पूछ रही मम्मी से (2009), प्रेम रूपी रंग कितने (2010), द्रवणांक (2011), आगे कौन बढ़े (2012), मील के पत्थर नहीं कोई (2013), एक पहर दिनमान शेष है (2014) निर्मल सतसई (2015) आदि काव्य-संग्रह उनकी काव्य-साधना के महत्वपूर्ण रत्न हैं। 'उठाओ कुदाली', निर्मल जी का प्रथम काव्य-संग्रह है। इसका प्रकाशन 1993 में हुआ। इस संग्रह की कविताओं में आम आदमी की संवेदना झलकती है। यह आत्मविश्वास से परिपूर्ण एक प्रेरणावादी हृदय को झंकृत करने वाली रचना है। 'और कुछ नहीं हुआ', काव्य संग्रह का प्रकाशन 1994 ई. में हुआ। इस संग्रह की कविताओं में राजनीति, चुनाव, आम आदमी की भूख आदि मुद्दों पर काव्यात्मक ढंग से प्रकाश डाला गया है। इस संग्रह की 'आदमी' कविता व्यंग्यात्मक-शैली में सत्य का उद्घाटन करती है-

''पत्तों में छिपकर किलकारियाँ भरते,
खगवृन्द, दहाड़ते शेर,
चौकड़ी भरते हरी दूब के प्रेमी मृग
स्वच्छन्द विचरते पशुगण, कल-कल करते झरने
उदरस्थ कर गया आदमी।''[३]

'गीत वही लिख पाता है', काव्य संग्रह 1996 में प्रकाशित हुआ। यह काव्य-संकलन म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन शाखा-सागर ने प्रकाशित किया गया। इस संग्रह में कुल 40 कविताएँ संग्रहीत हैं। प्रसिद्ध गीतकार तथा कवि विट्ठल भाई पटेल इस संग्रह की भूमिका में लिखते हैं - ''गीत वही लिख पाता है जिसमें दर्द होता है या जिसने दर्द से आत्मसात किया हो। अपने सरल स्वभाव, सादा जीवन और जीवन के कुछ आदर्श लेकर साहित्य साधना में रत निर्मल जी की कविताओं में युगबोध भी है और जमाने को बदलने के तेबर भी। ग्रामीण परिवेश से प्रेम और प्राकृतिक सुन्दरता का चित्रण एक चितेरे की तरह शब्दों के शिल्प से है।''[४] 'गीत है ये जिन्दगी', काव्य संग्रह सन् 1999 में साहित्यिक संस्था 'साहित्य सागर' सागर से प्रकाशित हुआ। इसमें कुल 42 कविताएँ संग्रहीत हैं। इस संग्रह में उनकी काव्य-कला के दिव्य-दर्शन होते हैं। जिन्दगी की बारीकियों का चित्रण इस संग्रह की कविताओं में हुआ है। ''गीत है ये जिन्दगी' में विभिन्न छन्द-प्रतिमानों एवं शैली में रचनाएँ पोषित हैं। स्वयं के जीवन के अनुभूत प्रातीतिक-सत्य इन रचनाओं में मुखरित हुआ है।''[५] 'कुछ ऐसे लोग हुआ करते हैं', काव्य-संग्रह निर्मल जी का पाँचवाँ संग्रह है। इस संकलन में उनकी 48 रचनायें सम्मिलित हैं। ''प्रस्तुत संकलन में मूल्य बोध की पावन प्रेरणा से उद्वेलित भावना सम्पन्न और वैचारिक समृद्धि लिए स्पंदित कृतियाँ हैं।''[६]

''देह कंचन है इसे श्रम का नगीना चाहिए।
हर लम्हे को जिन्दगी की तरह जीना चाहिए।
दूसरों का आसरा ठहरा हुआ पानी है दोस्त
मंजिलें पाने को तो खुद का पसीना चाहिए।।''[७]

'याद नहीं बिसरी', काव्य-संग्रह वर्ष 2005 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में 67 कविताओं का संग्रह है। इस संग्रह की भूमिका में निर्मल जी स्वयं लिखते हैं - ''इन रचनाओं में मैंने वर्तमान यथार्थ को ही उजागर करने का प्रयास किया है। सफल कितना हुआ हूँ मूल्यांकन पाठकों के हाथ में है।''[८] 'जुगनुओं के पास भी ईमान है', काव्य-संग्रह में 72 कविताएँ शामिल हैं। गजलकार निर्मल चन्द निर्मल ने समाज और परिवार के बीच तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का चित्रण इस संग्रह की कविताओं में किया है। निर्धनता, उत्पीड़न, निराशा, लाचारी, मजबूरी, बेकारी की मार्मिक अभिव्यंजना भी इस संग्रह की कविताओं में दृष्टिगत हुआ है। यह एक गज़ल-संग्रह है। 'प्रीत के सुख-दुख घनेरे', काव्य-संग्रह सन् 2007 में नवल प्रकाशन सागर से प्रकाशित हुआ। इसमें कुल 57 कविताएँ संग्रहीत हैं। इस संग्रह के संदर्भ में श्री निर्मल चन्द निर्मल ने 'भूमिका' में लिखा है - ''संग्रह की दो-चार रचनाएँ मेरे जीवन के यथार्थ से जुड़ी हैं जिन्हें मैंने भारी हृदय से कागज के सुपुर्द किया है। शेष रचनाएँ मेरे साहित्यिक और सामाजिक दायित्व की परिचायक हैं।''[९] प्रस्तुत काव्य-संग्रह निर्मल जी ने अपने स्व. पुत्र छोटू को समर्पित किया है। इस संग्रह की प्रथम कविता प्रस्तुत संग्रह के नाम पर ही है। इस कविता की कुछ पंक्तियाँ अत्यंत मार्मिक हैं-

''प्रीत के सुख-दुख घनेरे मनुज को चहुँ ओर घेरे।
हृदय डूबा है इन्हीं में नेह के हम तुम चितेरे।
एक टहनी पर हुये हैं फूल-काँटों के बसेरे।
प्रीत के सुख-दुख घनेरे मनुज को चहुँ ओर घेरे।।''[१०]

'पसीना बोलता है', निर्मलचन्द निर्मल का कर्मप्रधान काव्य-संग्रह है। इस संग्रह की कविताओं में निर्मलजी ने अंधविश्वासी, भाग्यवादी

तथा मेहनती लोगों को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया है। 'पसीना बोलता है' की अधिकांश कविताओं में निर्मल जी ने प्रगति व भौतिक उन्नति में शारीरिक तथा मानसिक श्रम को अनिवार्य बताते हुए श्रमिक को प्रोत्साहित किया है। 'भ्रष्टाचार' की जड़ें उखाड़ते हुए निर्मलचन्द निर्मल ने इस संग्रह की एक कविता में 'रिश्वतखोरी' का उदाहरण भी प्रस्तुत किया है।

''खुला हाट रिश्वत खोरी का बिकता है ईमान।
तुम्हीं बताओ कैसे कह दें, अपना देश महान।।'' ११

'गुड़िया पूछ रही मम्मी से', संग्रह में कुल 72 कविताएँ संग्रहीत हैं। इस संग्रह में कहीं विद्रोह तो कहीं समर्पण के स्वर मौजूद हैं। इस कविता संग्रह में गुड़िया की गरीबी का, लाचारी का जीवंत चित्रण हुआ है। मृत आत्माओं के प्रति स्मरण स्वरूप विनम्र श्रद्धांजली, निर्मल जी ने इस संग्रह में अभिव्यक्त की है। 'प्रेम रूपी रंग कितने', काव्य-संग्रह की कविताओं में गाँवों की वर्तमान स्थिति के साथ-साथ सामाजिक विसंगतियों, विद्रूपताओं, आतंकवाद व तानाशाही का जीवंत चित्रण हुआ है। आज के गाँव की वास्तविक स्थिति का चित्रण करते हुए कवि कहता है -

''कहाँ पंच अब काका जैसे
पंचायत की बदली शैली
खा-खा कसमें गंगा जी की
पूरी गंगा कर मैली
इच्छाएँ ईमान बेंचती
बेदागी ऊब चाव कहाँ है।
पहले जैसा गाँव कहाँ है।।''

'द्रवणांक', काव्य-संग्रह मुक्त छन्द में लिखा गया है। इसमें कवि की अन्तस चेतना मुखरित हुई है। इस संग्रह में आम आदमी के दुःख-दर्दों को बखूबी समेटा गया है। बेटी की बिदाई, पेट भरने के लिए, नारी उत्थान, लोकतंत्र बनाम वणिकतंत्र, माँ चली गयी, आदि कविताएँ मानवीय संवेदनाओं के उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। 'द्रवणांक' मार्मिक संवेदनाओं को पूरी जीवंतता के साथ प्रस्तुत करने वाला संग्रह है। 'आगे कौन बढ़े', काव्य-संग्रह सन् 2012 में एन.डी. पब्लिकेशन भोपाल से प्रकाशित हुआ। इसमें कुल 86 कविताएँ संग्रहीत हैं। निर्मल जी इस संग्रह की भूमिका में लिखते हैं - ''यह काव्य-संग्रह मेरी माँ और पिता के पावन चरणों में एक श्रद्धांजलि है। सभी रचनाएँ सीधे-सरल स्वभाव की हैं। वैसे इस संग्रह में काव्य की सभी विधाएँ पिरोई गई हैं।'' १२ 'मील के पत्थर नहीं कोई', निर्मल जी का यह संग्रह-2013 ई. में अपनी 64 कविताओं के साथ प्रकाशित हुआ। माँ वीणावादिनी की स्तुति के साथ निर्मल जी इस संग्रह का श्री गणेश करते हैं। इस संग्रह में राजनीति, धर्मनीति, विरह, श्रृंगार, युवा बेरोजगारी पर केन्द्रित कविताओं को संग्रहीत किया गया है। कवि ने अपनी युवावस्था की तरुणाई का चित्रण भी एक कविता में किया है।

'' घूमे बाग बगीचे सुरभित अमराई देखी।
मस्ती भरी उमंगों वाली तरुणाई देखी।।''

कवि ने इस संग्रह की कविताओं में सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक विचारधाराओं को शामिल किया है। 'एक पहर दिनमान शेष है', कविता-संग्रह वर्ष 2014 में रॉयल पब्लिकेशन सागर से प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में कुल 83 रचनाएँ हैं। ''सरस्वती वंदना से आरंभ हुई ये कविताएँ जिंदगी के हर छोटे-बड़े, ऊँचे-नीचे, मीठे और तीखे अनुभवों को रेखांकित करती हैं। दोहे, मुक्तक, कुंडली, सब पर 4 निर्मल जी का एकाधिकार तो है ही वे आँगन में खड़ी माँ, बाबा की खाँसी, अम्मा का घर है, किन्तु गाँव नहीं घूमे जैसी रचनाओं के द्वारा विषय और छंद पर अपनी पकड़ सिद्ध करते हैं।'' १३ 'निर्मल सतसई', काव्य-संग्रह उनका सोलहवाँ व अंतिम काव्य संग्रह है। इसका प्रकाशन सन् 2015 ई. में हुआ। इस संग्रह में 65 शीर्षक हैं। यह दोहों का संग्रह है। उनकी स्पष्टवादिता और समाजिक समस्याओं, संस्कृति, राजनीति तथा ऋतुओं पर केन्द्रित ये दोहे निर्मल जी की प्रखर काव्य प्रतिभा के परिचायक हैं। इस तरह श्री निर्मलचन्द निर्मल ने अपने विविध कविता-संग्रहों में अपने व्यक्तिगत जीवन के विविध पहलुओं के साथ-साथ अपने परिवार तथा आम आदमी की समस्याओं को अपनी कविताओं के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया है। देश में व्याप्त अनेकानेक समस्याओं, विद्रूपताओं पर निर्मल जी ने अपनी लेखनी चलायी है। इनकी कविताएँ रसात्मकता, लयात्मकता, छन्दबद्धता, गीतात्मकता, व्यंग्यात्मकता से ओतप्रोत हैं। जीवन के हरेक पहलू पर निर्मल जी ने कविताएँ लिखी हैं। गज़ल पर उन्होंने लीक से हटकर कलम चलायी है। चौरासी वर्ष पूर्ण होने के बाद आज भी निर्मल जी का हृदय, वाणी तथा चेहरा, ताजगी तथा तेज से ओतप्रोत हैं। इनकी कविताओं ने समाज को एक नई दिशा प्रदान की है।

संदर्भः

1. निर्मल चन्द निर्मल, एक पहर दिनमान शेष है, कवर पृष्ठ से उद्धृत, म.प्र. लेखक संघ भोपाल।
2. प्रो. सुरेश आचार्य, निर्मल सतसई, भूमिका से उद्धृत, पृ. 03, कृष्णा प्रिंटर्स सागर।
3. निर्मल चन्द निर्मल, और कुछ नहीं हुआ, पृ. 21, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, सागर।
4. गीत वही लिख पाता है, भूमिका-विठ्ठल भाई पटेल, म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन, सागर।
5. सुवचन राम, निर्मल मन की मधुरिम अभिव्यक्ति (गीत है ये जिंदगी-भूमिका से उद्धृत), साहित्य सागर प्रकाशन, सागर।
6. शिवकुमार श्रीवास्तव, मर्यादा-बोध से स्पंदित सार्थक कविताएँ (कुछ ऐसे लोग हुआ करते हैं-भूमिका का अंश), पृ. 5 साहित्य सागर प्रकाशन, सागर।
7. निर्मल चन्द निर्मल, कुछ ऐसे लोग हुआ करते हैं, मुख पृष्ठ से उद्धृत, साहित्य सागर प्रकाशन, सागर।
8. निर्मल चन्द निर्मल, याद नहीं बिसरी, पृ. 1 (भूमिका), नवल प्रकाशन, सागर।
9. निर्मल चन्द निर्मल, प्रीत के सुख-दुख घनेरे, पृ. 3, नवल प्रकाशन, सागर।
10. निर्मल चन्द निर्मल, प्रीत के सुख-दुख घनेरे, पृ. 11, नवल प्रकाशन, सागर।
11. निर्मल चन्द निर्मल, पसीना बोलता है, पृ. 9, एन.डी. पब्लिकेशन, भोपाल।
12. निर्मल चन्द निर्मल, आगे कौन बढ़े, भूमिका से, एन.डी. पब्लिकेशन, भोपाल।
13. निर्मल चन्द निर्मल, एक पहर दिनमान शेष है, भूमिका से उद्धृत, म.प्र. लेखक संघ भोपाल।

-'अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग,
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
गढ़ाकोटा, जिला-सागर (म.प्र.)

१८५७ में गढवई गढ़ की गाथा

-श्रवण सिंह सेंगर

बुन्देलखण्ड की वीरत्व प्रसूता वसुन्धरा के विख्यात झाँसी जनपद के उत्तर में गढवई-गढ़ तथा ग्राम स्थित है। गुरसराय उरई मार्ग के सातवें कि.मी. पर स्थित इस गढ़ का निर्माण ओरछा राजवंश के भसनेह निवासी बुन्देला क्षत्रिय श्री हरदेव सिंह के वंशजों द्वारा 1584 ई. के पश्चात कराया गया था। एक पाषाणीय पहाड़ी पर स्थित होने के कारण सामरिक दृष्टिकोण से यह एक महत्वपूर्ण दुर्ग है। महाराज श्री मधुकर शाह ने 1584 ई. में अपने सप्तम पुत्र श्री हरसिंह को ग्राम भसनेह जागीर में दिया था।[१]

भसनेह के जमींदार कुँवर निरञ्जन सिंह क्रान्तिकारियों का सहयोग सक्रिय रूप से कर रहे थे। उनके साथ में लगभग 300 क्रान्तिकारी गढवई दुर्ग में विद्यमान थे।[२] गढवई दुर्ग में क्रान्ति की गतिविधियाँ नियोजित करने तथा उनका क्रियान्वयन करने की योजनाओं पर विचार विमर्श होता था। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी उसका क्रियान्वयन करते थे। यद्यपि गुरसराय के महाराष्ट्रियन राजवंश के सदस्य श्री शिवराम ताँतिया के अतिरिक्त सभी लोग अंग्रेजों की सहायता कर रहे थे।[३] अस्ता के मालगुजार भी अंग्रेजों के सहयोगी थे।[४] आस पास के प्रभावशाली व्यक्तियों में से केवल यही दो परिवार 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों का सहयोग नहीं कर रहे थे।

किसी गद्दार व्यक्ति ने अंग्रेज सेना के सीपरी स्थित कमाण्डर मेजर मीड को कुँवर निरञ्जन सिंह की दुर्ग से सञ्चालित गतिविधियों की सूचना दे दी। दिनांक 21.06.1859 को मेजर मीड ने असिस्टेंट क्वार्टर मास्टर जनरल को सूचित किया निरञ्जन सिंह जमींदार गढवई के नेतृत्व में 200-300 विप्लवकारी एकत्रित हैं।[५]

मेजर मीड ने यह सुझाव दिया कि प्रथमतः इस सूचना का संतोषजनक सत्यापन किया जाय कि विप्लवकारी किस स्थान पर एकत्रित हैं। सत्यापन होने के पश्चात रात्रि के आवरण में पर्याप्त सैन्य बल के साथ सहसा आक्रमण कर दिया जाय। जिस स्थान पर विप्लवकारी एकत्रित हों, उसे विनष्ट कर दिया जाय। यह भी आकलन किया जाय कि वहाँ पर सेना की टुकड़ी अथवा सुदृढ़ पु



लस चौकी की स्थापना करने की आवश्यकता है अथवा नहीं।[६]

विशेषकर रात्रि के अंधकार में आक्रमण करने के आदेश देना मानवीय दृष्टिकोण तथा भारतीय समर संस्कृति के अनुसार निन्दनीय है। ब्रिगेडियर जनरल ने 24 जून 1859 को आयुक्त एफ.डब्ल्यू पिन्कने को लिखे गये अपने पत्र में लिखा है कि गढ़वई में विप्लकारियों के संगठित होने के समय यदि ग्राम वासी सहयोग करें तो इस ग्राम को पूर्णतः नष्ट कर दिया जाय।[७] इससे अधिक अतार्किक तथा अन्यायपूर्ण आदेश और क्या हो सकता है?

ग्राम को पूर्णतः विनष्ट करने के प्रस्ताव से अपनी सहमति व्यक्त करते हुये, मेजर एफ.डब्ल्यू पिंकने के द्वारा दिनांक 27.06.1859 को अपने उत्तर में लिखा गया कि गढवई के ठाकुरों का आचरण एवं व्यवहार इतना खराब रहा है कि उनकी जमींदारी तथा समस्त सम्पत्ति जब्त करकेकिसी राजभक्त ठाकुर को प्रदान कर दी जाना चाहिये।[८]

उच्च पदस्थ अंग्रेज अधिकारियों द्वारा बनाई गई नरसंहार की योजना का क्रियान्वयन मेजर मीड के द्वारा किया गया। 30 जून 1859 से लेकर 03 जुलाई 1859 तक भारी मात्रा में दुर्ग पर तोपों से गोले बरसाये गये। घमासान युद्ध हुआ। इतने अधिक समय तक अंग्रेजों की सेनायें असफल रहीं क्योंकि दुर्ग की सुदृढ़ दीवारों पर नीचे से चलाये गये गोले प्रभावी नहीं रह जाते थे। इसके बाद समीप ही स्थित पहाड़ी से तोपों का सञ्चालन किया गया। समीपस्थ पहाड़ी से चलाये गये गोले दुर्ग के अन्दर तक मार करने में प्रभावी हुये। क्रान्तिकारी भी प्रत्युत्तर में अपनी बन्दूकों से आक्रमण कर रहे थे। गढ़ को अंग्रेजों की सेना ने घेर रखा था। घमासान युद्ध हुआ 03 जुलाई 1859 तक यह युद्ध चला। गढ़ को ध्वस्त कर दिया गया। सैकड़ों पुरुष महिलाओं तथा शिशुओं का निर्ममतापूर्वक वध कर दिया गया। अनेक वीरों, क्रान्तिकारी युवकों के शवों की आहुतियों के साथ साथ इस स्वातंत्र्य यज्ञ की बलिवेदी पर 14 वीरांगानाओं तथा 23 शिशुओं ने अपने प्राणों की बलि दी।[१०]

भीषण नर संहार से क्षुब्ध एवं अपराध बोध से ग्रस्त मेजर मीड ने अनौचित्य पूर्ण कार्य के पक्ष में तर्क गढ़ लिये। दिनांक 04 जुलाई 1859 को उच्चाधिकारियों को प्रेषित अपने पत्र में यह तथ्य प्रतिपादित किये कि परिस्थितियाँ ऐसी आ गई थीं कि महिलाओं तथा शिशुओं की प्राण रक्षा नहीं की जा सकी। अपने अधिकारियों के शौर्य की प्रशंसा भी की।[११]

आयुक्त झाँसी ने गढ़वई पर आक्रमण सम्बंधी पूर्ण प्रतिवेदन प्रेषित करने हेतु पत्र लिखा। वह परिस्थितियाँ बताई जाँय जिनके कारण 14 महिलायें तथा 23 शिशुओं के प्राणों की क्षति हुई। ताकि उत्तर पश्चिमी प्रान्तीय सरकार को प्रतिवेदन प्रेषित किया जा सके।[१२]

पिंकने आयुक्त के द्वारा 15 जुलाई 1859 को मि.जी. कूपर, सचिव उत्तर पश्चिमी प्रान्तीय सरकार को पत्र प्रेषित किया गया। अपने पत्र में उल्लेख किया कि मेजर मीड ने गढ़वई में विप्लव कारियों का अस्तित्व समाप्त कर दिया। ठाकुर दूकन जू का पुत्र सुमन सिंह पलायन कर गया।[१३]

इसी पत्र में आयुक्त के द्वारा यह अनुशंसा की गई कि ग्राम गढ़वई को राजसात किया जा चुका है, इसे देवगढ़ निवासी राजभक्त ठाकुर जवाहर सिंह को दे दिया जाय। ग्राम पर अपना प्रभाव स्थापित करने की दृष्टि से तथा

सामान्य शक्तिशाली विप्लवकारियों के विरुद्ध वह पर्याप्त शक्ति सम्पन्न है।[१४]

आयुक्त के द्वारा महिलाओं तथा शिशुओं के वध को उचित बताते हुये यह आशा व्यक्त की गई कि इस संहार के प्रहार के कारण उस क्षेत्र में अंग्रेजों के विरुद्ध कोई विप्लव करने का साहस नहीं करेगा।[१५]

दिनांक 03.08.1859 को उत्तर पश्चिम प्रान्तीय सरकार के सचिव मि.जी. कूपर के द्वारा मेजर मीड के नेतृत्व में गढ़वई में की गई सफल सैन्य कार्यवाही के विषय में परम संतुष्टि की अभिव्यक्ति की गई तथा ठाकुर जवाहर सिंह निवासी देवगढ़ को इस ग्राम का अधिपत्य एक वर्ष हेतु प्रदान किया गया।[१६]

कुँवर निरञ्जन सिंह बुन्देला के शौर्य, त्याग और बलिदानों की स्मृतियाँ अपने अन्तः स्थल में संजोये हुये गढ़वई गढ़ आज भी गर्व की अनुभूति से अपना मस्तक ऊँचा किये हुये खड़ा है।

गढ़वई गढ़ के प्रस्तर एवं शिलाखण्ड क्रान्तिकारियों के त्याग, शौर्य और बलिदान की गाथाऐं तथा अंग्रेजों के अमानवीय अत्याचारों को अपनी मूक भाषा में कहने के लिये उद्यत हैं। तोपों के आघातों के चिन्ह स्पष्टतया आज भी अवलोकनीय हैं।

भारत के अन्य वीरों, वीरांगानाओं की तरफ ही गढ़वई गढ़ के क्रान्तिकारियों, बालाओं तथा शिशुओं के बज्र वक्ष स्थलों के टुकड़ों और लहू की नींव पर आज भारतीय स्वाधीनता का भव्य भवन दृढ़तापूर्वक खड़ा है।

गढ़वई गढ़ सामान्य पाषाणीय निर्माण नहीं अपितु प्रथम स्वातंत्र्य समर में क्रान्ति दूतों के बलिदानों तथा फिरंगियों द्वारा किये गये नरसंहार का विश्वसनीय साक्ष्य है। राष्ट्रप्रेम हेतु प्रेरणा स्रोत है।

संदर्भ संकेत

1. गजेटियर झाँसी, पृष्ठ 244
2. पत्रावली संख्या 30- डॉ. सेलेटोर पृष्ठ- 64
3. गजेटियर झाँसी-पृष्ठ 264
4. नैरेटिव (झाँसी) पृष्ठ 5 परिच्छेद -42
5. पत्रावली-30-डॉ. सेलेटोर पृष्ठ 64
6. पत्रावली-30-डॉ. सेलेटोर पृष्ठ 64
7. पत्रावली-30-डॉ. सेलेटोर पृष्ठ 65
8. पत्रावली-30-डॉ. सेलेटोर पृष्ठ 65
9. गजेटियर झाँसी-पृष्ठ 244
10. पत्रावली-30-डॉ. सेलेटोर पृष्ठ 67
11. पत्रावली-30-डॉ. सेलेटोर पृष्ठ 66
12. पत्रावली-30-डॉ. सेलेटोर पृष्ठ 67
13. पत्रावली-30-डॉ. सेलेटोर पृष्ठ 67-68
14. पत्रावली-30-डॉ. सेलेटोर पृष्ठ 67-68
15. पत्रावली-30-डॉ. सेलेटोर पृष्ठ 69
16. पत्रावली-30-डॉ. सेलेटोर पृष्ठ 71

गजेटियर-झाँसी (मुद्रित 1909) द्वारा श्री डी.एल. ड्रेक ब्रौकमैन, आई.ए.एस.

- पत्रावलियाँ (संख्या) संरक्षित राजकीय मुद्रणालय, इलाहाबाद, उ.प्र. (सेंट्रल रिकार्ड आफिस)
- नैरेटिव ऑफ इवेंण्टस, अटेण्डिंग दी आउटब्रेक ऑफ डिस्टर्बेसेज, एण्ड दी रेस्टोरेसन
- डॉ. सेलेटौर-द्वारा प्रेसलिस्ट ऑफ बुन्देलखण्ड रिकार्ड

-कैरोखर हाउस, गुरसराँय

जिला-झाँसी (म.प्र.)

उन्नीसवें बुन्देली उत्सव में सम्मानित विभूतियाँ

राव बहादुर सिंह बुन्देला स्मृति सम्मान २०१५
बुन्देली संस्कृति हेतु
डॉ. ब्रजलता मिश्रा झांसी को

दतिया के साहित्यिक परिवेश में पं. वासुदेव गोस्वामी के घर जन्मी डॉ. ब्रजलता मिश्रा को बुन्देली संस्कार तथा कलात्मक अभिरुचि बचपन से प्राप्त हुई। इन्होंने बीसवीं सदी के सातवें दशक से रेडियो पर बुन्देली लोकगीतों गायन की विधाओं पर आलेखों के माध्यम से बुन्देली संस्कृति को नई ऊंचाइयां प्रदान की। बुन्देली लोक संगीत के शास्त्रीय पक्ष को नवीन ढंग से व्याख्यायित किया है।

दिवान प्रतिपाल सिंह बुन्देला स्मृति सम्मान २०१५
बुन्देलखण्ड के इतिहास हेतु
डॉ. कन्हैया लाल अग्रवाल, नौगाँव को

बाँदा में जन्में डॉ. कन्हैया लाल अग्रवाल ने 'विन्ध्य क्षेत्र का ऐतिहासिक भूगोल' पर शोध करके उसे प्रकाशित कराया। मैकमिलन, नई दिल्ली से उनका ग्रंथ खजुराहो प्रकाशित हुआ। आप प्राचीन इतिहास के प्राध्यापक रहे। आप म.प्र. इतिहास परिषद्, भारतीय पुरा अभिलेख परिषद् धारवाड़ तथा इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस के पदाधिकारी रहे। आप बुन्देलखण्ड के इतिहास के नये-नये पक्षों को लगातार उद्घाटित करते रहते हैं।

गौरिहार नरेश प्रताप सिंह स्मृति सम्मान २०१५
बुन्देली उत्सव के उन्नयन हेतु
राजा लोकपाल सिंह परमार, छतरपुर

ग्राम ककड़ारी तहसील महरौनी थाना वानपुर जिला ललितपुर में श्री पृथ्वी सिंह परमार के घर दस जून १९४४ ई. को जन्मे राजा लोकपाल सिंह परमार बुन्देली उत्सव आयोजन समिति से प्रारंभ से ही जुड़े हैं। वे सातों दिन तन-मन-धन से बुन्देली उत्सव को समर्पित रहते हैं। अश्व नृत्य, बुन्देली व्यंजन तथा बैलगाड़ी दौड़ आयोजन को आप अपनी उपस्थिति से जीवंत बना देते हैं। आप मुख्य नगर पालिका अधिकारी पद से सेवानिवृत हुए हैं। आप सामाजिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों में सदैव सक्रिय रहते हैं।

नई बहू के पांलागने :

-पं. हरगोविन्द विश्व

औसर हतो बरात की लौटारी को। घर की पई पांवनी सजीधजी भारी खुशी में नायं मायं डोल रईं तीं। लरका की बऊ अपनी धरोअल बनारसी सारी में और फलालेन में सज संवर कें सबरे नेंग जेबर जेमे बैंदा, बीज, पटेली, नथ, हार, खंगोरिया, ठुसी, तिजानों, हंसली, हमेल, टकार, बौंटा, बाजूबंद, बंगरी, नोंगरे, ककना, सात बन्त्री, चुरियां मुदरियां, नौरी की लटकन वारी करधोनी, टोडल, रूले, गुन्जें, बोरादार कलशा वारे बिछिया ओई पे लच्छे पैर के नैनों में मोटो काजर देकें हाली फूली फिर रई ती तो पतरी सी ढोक तोला भर की पाइले कर्री ती और तो और मौड़ा खो दो रुपैया ने जुरे ते। हम सोई ऐंसई कर है। अरी कोऊ ने का करो ऐ पे धियान नई देऊने। फिर तोय जैसो नोनो लगे। ऐंसई सबरी पई पांवनी, काकी, आजी, अपनी अपनी खुटी थतोल रईं तीं।

इत्ते में बैलो की चौरासियों घंटियों की रुन झुन सुनाई देन लगी माने बरात लौट आई। चार कहारों ने दोरे के सामू म्यानों वैशाखी पे रोप दओ धरनी पे नई धरो, काय से के नेंग लेऊने हतों, बहूं म्याने में बैठी टंगी रहीं लरका के जेठे भैया ने ग्यारा कलदार नेंग में दये-सो उनने म्यानो धरनी पे उतार धरो। बहू ने म्याने पे डरी हरीरी अलवान को परदा उठाके देखो के घर की पई पाँवनी ऊके स्वागत खों ठांडी है मनो एक जनी नायं से मायं हाली फूली केत फिर रई ती के ऐ इन्द्ररानी, ओ जगरानी आरती तो ले आओ, गडुआ में गंगा जल तो ले आओ बहूं को उतारो करोओ की आरती उतारो और गैल घाट की अलाय भगावे गडुआ से पानी उतारो। बैठी बहू खों जा समझवे में देर नई लगी के होय जेई हमाई सास बाई आए। सो वा मनई मन में के उठी-

हाली फूली का फिरो सासो, का मटकाऊत कूल्हे।
डुलिया में से जैसई उतरों, न्यारे धर हों चूल्हे।।

बहूं खों सास नाव की चीज (बलाय) के वारे में भौत सी बातें मताई, भौजी, सहेलियों ने मन में भर दईं तीं। एक ओर कछू जनीं उतरी सी ढोलक पे दादरे गा गा कें के रईं तीं-

कोऊ इते आवरी, जुर आवरी।
ई नौनी दुलैया खों देख जावरी।।

बहूं खों म्याने में से उतार के दोरे में ठांडो करे पेले गडुआ सें पानी उतारो फिर आरती उतारी। और होन लगों मोंचायनो। सबसे पैले सास किशोरी देवी ने गुना में से बहू को घूंघट उठाके मों देखो। मों देख के सास बाई झन्न हो गई। कायसे बहू की एक आंख में फुली परी ती। काय रे बहू तो जा बदल दई है। जित्तो तोने देखो बड़ी बदनामी करी पे अब का होत जब चिड़िया चुन गई खेत। बहू केन लगी अरी सासू जी जिन घबराव हम तुमाव ऐसो पानूं उतारे के पानूं खों तरस हो और हम तुमाई दोई ने रेन दें हैं। और ऐंसई भओ के ब्याव के नेगचार, दस माननी भई, देई देवता पुजे और बहू ने अपनो सवरो मायके से मिलो दान दहेज न्यारे कोठा में धरवा लओ और न्यारे होवे खों हंडस गई। चार पांच दिना के पाछे ओ के लुआैआ गए सो व अपने कोठा में तारो लगा के भैया के संगे चली गयी। कछु दिना के पाछे ओखो फिर लुआ ल्याये। सासरे में आके ओ ने नाना भांति के ठनगन करे और अपनी रोटी-न्यारी बना के खाऊंन लगी जैसी ओने मन में सोची ती सो कर लई। माने न्यारे धर लए चूल्हे। ऐमे भैया जू संगे हो गए। अब बताओ काँ गई बऊ दद्दा की सीख के-

जाव लली तुम फरियो फूलियो सदा सुहागन रैयो मोरे लाल।
सास ससुर की सेवा करियो पति को जिया जुड़ैयो मोरे लाल।।

इते बाप मताई अपने भाग्य खों रो रो कें कोसत भये और केत रे गये के-

जिन लरकन खों पोसो बेई भये ने अपने।
बौअन के सुक साके ने रये, लाबरे हो गए सपने।।
साके को घर हतो हमाओ हो गओ टुकड़ा टुकड़ा।
घरमे जे खिच गई दीवारें भओ विश्व खों दुखड़ा।।
बिरधापन में केत किशोरी पानूं पीवे झूंकों।
सब कछु होत भये पे सांचऊ मरत रेत है भूकों।।
बानप्रस्त की जगां, ऐई से खुल गए 'बिरधा आश्रम'।
डरे रेत है 'डुकरा डुकरिया भरे कौन की वे दम।।

भैया घर घर के मटयारे चूल्हे है। हम के नई सकत के 'सरमन' को जुग लौट है के नई?

-तिलकगंज सागर
मों. 7879702208१✻

बुंदेली पनिहारी

-डॉ. अवध किशोर जड़िया

पनियाँ भरन जात कुअला पै, बुंदेली पनिहारी।
चाल नियारी चलै और फिर, गैल चलै अनियारी।।
नूपुर की धुनि बसी करन में, वशीकरन सौ डारें।
घट अरु घूँघट कौ संघटु, पनघट कौ रूप निखारें।।
चढ्यो कूप पै रूप जगत के नैंना हरष उठे हैं।
और दूसरी ओर जगत के नैंना तरस उठे हैं।।
फाँसी डारी जोरा में जोरे में गगरा फाँसो।
हँस हँस पानी खिचवावै देखौ जीवंत तमासौ।।
कंकण करत किलोल लपक लजुरी सौं खेंचत पानी।
करया घरया जावै मानों कसरत करत सयानी।।
टोरें लाज अनंग, अंग अंगन सें उठें हिलोरें।
ऐसी घनीं हिलोरें जे ज्ञानिन कौ ज्ञान बिलोरें।।
पानी खेंच धरयो गगरा नें तब गर फाँसी छूटी।
धरि के खेप अनूठी ले लजुरी चली ग्रामवधूटी।।
भरयो रूप कौ पानी तापर धरयो कूप कौ पानी।
कोमलता के ऊपर जा कठोरता की मनमानी।।
चली भरी गगरी सी सिर सों रिसत जात है पानी।
घट की घटा बरस रइ भींजत जात-रूप की रानी।।
धरत जात है चरन आचरन हरत जात दुनियाँ कौ।
विधि ने रूप भली विधि बिन टाँके कौ टाँकों बाँकौ

-हरिहर मार्ग, हरपालपुर✻

बुन्देली संस्कृति को संरक्षित करती दो पुस्तकें

-डॉ. बहादुर सिंह परमार

(एक)

बुन्देलखण्ड अँचल में बोली जाने वाली भाषा बुन्देली इन दिनों लगातार प्रगति पथ पर अग्रसर हो रही है। दो-तीन दशक पहले तक बुन्देली में अधिकांशतः कवितायें ही रची जा रहीं थीं। इसके बाद लोक कथाओं का संकलन तथा लेखन तीव्र गति से बढ़ा। किन्तु जैसा कि कहा जाता है कि विपरीत परिस्थितियाँ विकास में सहायक होती हैं। वैश्वीकरण की मार से लोक भाषाओं - संस्कृतियों तथा कलाओं के समक्ष अस्तित्व का संकट उत्पन्न हुआ तो जन चेतना जागरित हुई कि इन्हें बचाना हैं। बुन्देलखण्ड में भी इसी चेतना के चलते बुन्देली रचनाधर्मिता को प्रकाशित व प्रसारित करने का बेहतर वातावरण निर्मित हुआ है। इसमें आकाशवाणी के साथ बुन्देली पत्रिकाएँ, बुन्देली बसंत, बुन्देली दरसन, बुन्देली अर्चन, अथाई की बातें तथा बुन्देली बानी की अपनी भूमिका है। आज बुन्देली में गद्य की लगभग सभी विधाओं-यथा-ललित निबंध, कथा, नाटक, हास्य, व्यंग्य, संस्मरण, रिपोर्ताज, साक्षात्कार आदि में रचनाएँ न केवल लिखी जा रहीं हैं बल्कि प्रिंट तकनीक का लाभ उठाकर छप भी रहीं हैं। इससे बुन्देली साहित्य कोष समृद्ध हो रहा है। भाषा को विस्तार देने तथा समझने हेतु शब्दकोश, कहावत कोश तथा बुन्देली कोश का सृजन हुआ है। इसको समृद्ध करने में डॉ0 कैलाश बिहारी द्विवेदी, गौरी शंकर उपाध्याय 'सरल', डॉ0 मोहन लगुस 'चातक', सुरेन्द्र शर्मा 'शिरीष', प्रेमनारायण मिश्र तथा राघवेन्द्र उदैनियाँ 'सनेही' का अपना अनूठा योगदान है।

राघवेन्द्र उदैनियाँ पहले गजलें लिखते रहे। उनका 'विरासत' गजल संग्रह प्रकाशित है। इसके बाद वे बुन्देली भाषा की सेवा की ओर समर्पित हुए। वे तिमाई पत्रिका 'अथाई की बातें' के प्रबंध संपादक हैं। बुन्देली गीतों का संकलन 'बेर मकुइयाँ' उनका प्रकाशित है। बुन्देली कहावतों के पीछे निहित कथाओं को अनुभव, परम्परा तथा कल्पना से 'सूरे की सट्ट' में उन्होंने संकलित कर प्रकाशित कराया है। अभी हाल ही में 'सनेही सतसई' नामक पुस्तक बुन्देली साहित्य प्रकाशन, छतरपुर से प्रकाशित हुई है। जिसमें सात सौ बुन्देली अहानों को दोहों के साथ प्रस्तुत किया है। यह अपने आप में लोकानुभवों को सहेजे अनूठी पुस्तक है।

इस सौ पृष्ठों की पुस्तक में अहानों अर्थात् कहावतों, कानातों या लोकोक्तियों को अर्थ के साथ दोहों में प्रस्तुत किया गया है। दोहा जैसा सीमित शब्दों वाले छंद में कानात का अर्थ भरना चमत्कारिक है। इसके पीछे कवि की सूक्ष्म दृष्टि, लोक जीवन का गहरा अनुभव तथा लोक संस्कृति की सही समझ काम आई है। पुस्तक के हरेक पृष्ठ पर ठेठ बुन्देली शब्दों तथा अहानों का पाद टिप्पणी के रूप में हिन्दी रूपांतरण दिया गया है जिससे यह पुस्तक बुन्देली न समझने वाले हिन्दी भाषियों के लिए भी उपयोगी है। कवि सनेही की इस पुस्तक में जीवन के विविध पक्षों के अनुभव को पिरोया गया है।

लोकोक्तियों के पीछे निहितार्थों को कवि सनेही में अपने इन दोहों में पिरोया है। कुछ उदाहरण देखें। आप सब जानते हैं कि जिसकी जो प्रकृति या स्वभाव होता है, वह अनेक प्रयत्न करने पर भी नहीं बदलता चाहे जितने प्रयास क्यों न किए जाएं। इसको उन्होंने इस तरह कहा है कि -

जीको जोंन सुभाव हो, ऊकौ ऊसौ रेत।
सौ-सौ दइयाँ धोव पै, काजर हो न सेत।।

इसी को बुन्देली में कहा जा है कि-

'जीकौ जौन सुभाव जाए न जीसें।
नीम न मीठी होय खाब गुर घी से।''

अपनी सामग्री और धन का उपयोग दूसरे के घर से करना साधारणतः सामान्य जन को अच्छा नहीं लगता है। बुन्देलखण्ड में गरीबी और स्त्री-पुरुष अनुपात के अन्तर से विवाह का होना भी एक समस्या है। कई लड़की वाले ऐसे होते हैं जो धनहीन हैं, वे वरपक्ष से लोकभय के चलते विवाह का खर्च पर्दे के पीछे से लेकर बेमेल विवाह करने को विवश होते हैं। इसी समस्या और प्रवृत्ति को दृष्टिगत रखते हुए कवि सनेही लिखते हैं -

''कात सनेही काव तौ, कीखाँ कबै पुसात।
औरन के मड़वा तरें खाबैं अपनो भात।।''

बुन्देलखण्ड अँचल में ही नहीं बल्कि समस्त हिन्दी भाषी क्षेत्र में कहा जाता है कि ताकतवर लोग ही भूमि और स्त्री पर अधिकार जमा पाते हैं, कमजोर नहीं। इस पर सनेही जी फरमाते हैं -

जाँची परखी बात है, कल्लो भइया गौर।
जर, जोरन, जिमि जोर के, नइँतर भोगें और।।

राजनैतिक विडम्बनाओं और चापलूसों पर व्यंग्य लोक में सदा से कहावतों में विद्यमान रहा है। सामर्थ्यवान दोषी नहीं होते। अंग्रेजी में कहा जाता है कि ठवे पे ्सूले त्पहीज इसी तरह बुन्देलखण्ड में भी कहा जाता है कि जिस के राज्य में रहना है, उसी के मन की बात कहना पड़ती है। चाहे व सरासर झूठ हो। इसी से सम्बंधित अहाने को डॉ0 राघवेन्द्र ने इस प्रकार इस दोहे में कहा है -

सै जोरन के सामनें, सबरे पूँछ हिलाँय।
ऊँट बिलइया लै गई, सो हाँजू-हाँजू काँय।।

इसी तरह सत्तासीन लोगों के सलाहकार यदि चापलूस तथा स्वार्थी होते हैं, तो सत्ता जन विमुख होकर प्रताड़ना से युक्त हो जाती है। ऐसे में जनता यानि प्रजा को संभलकर चलने के अलावा कोई चारा नहीं बचता। अंधेर नगरी चौपट राजा - टके सेर भाजी - टके सेर खाना की तर्क पर अनेक दारूण दुख बुन्देलखण्ड की जनता ने भी भोगे हैं। इसी तरह के कुछ भाव लिये अटाने के माध्यम से कवि जनसामान्य को सावधान करता है। वे लिखते हैं -

रइयो हरदम संमरकें, भइया तुलसीदास।
राजा के मों लगो है, मैया दीन खबास।।

कहावतों में नीति, ज्ञान, भक्ति वैराग्य के साथ शिक्षा भी निहित मिलती है। सनेही सतसई के कई दोहे शिक्षा प्रद अहानों पर केन्द्रित हैं। कहा जाता है कि ज्ञान कहीं से भी हो हमें प्राप्त करना चाहिए। इसी को कवि सनेही इस तरह कहते हैं कि -

'उत्तम विद्या लैइ लो, चाँय नीच पै होय।
जैंसे घूरे पै डरो सौंनों तजे न कोय।।'

आजतक फूट डालो राज करो की नीति समाज में गहरे से पैठ गई है। इस पर व्यंग्य करते हुए कवि लिखता है –

''स्वारथ के संसार में, की की हम का काँय।
जीखाँ देखौ बेइ अब, कौरा डार लड़ाँय।''

सत्ता मिलने पर सभी को अहंकार आ जाता है। साधारण व्यक्ति भी सत्ता के रंग-ढंग में रच बस कर विशिष्ट आचरण करने लगता है। इस पर कवि व्यंग्य करते हुए लिखता है –

(1) *जोखाँ जाँ मौका मिलत, उतइँ हाँत दै देत।*
बैठ ऊँट पै आजकल, सब मलकइँयाँ लेत।।

(2) *को जानें फिर कबऊँ, मौका आय न आय।*
मिलो बैठवे ऊँट पै, करया लो मटकाय।।

समकालीन जीवन में लोकतंत्र की व्यवस्था में भी भाई भतीजावाद तथा भ्रष्टाचार व्याप्त हो रहा है। अपनों को लाभ देने के लिए गोपनीयता की आड़ ली जाती है। इसको निशाना बनाते हुए कवि यह दोहा रचता है –

लोकतंत्र के राज में, कइयक ऊँची खाज।
जाँ ताँ कथरी ओढ़कें, घी पी रए महराज।।

शारीरिक बनावट मात्र ही व्यक्तित्व के लिए महत्वपूर्ण नहीं होती। व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण गुणों से होता है। उसमें कितने मानवीय उदात्त गुण हैं, उसी से उसकी पहचान होती। गुणहीन अलग प्रदर्शित होते हैं। उनके बारे में एक दोहा सनेही सतसई में है –

बिना अकल कौ पूत तौ, ढेंगुर जानो जात।
बिन लच्छन बिटिया सबै, डेंगुर घाँइँ दिखात।।

धन, संपत्ति जीवन यापन के लिए आवश्यक हैं। धन से सम्मान भी समाज देने लगता है। धनहीन परेशान व उपेक्षित रहता है। इसीलिए कहा गया है कि ''बिना दाम के काउ खाँ, कऊँ नइँ पूछो जाय। जर है तौ नर-नर रहै, नइँ तौ खर कहाय।।'' धनहीनों का उपहास व उपेक्षा समाज की प्रवृत्ति बन जाती है। इसीलिए कवि सनेही कहते हैं – बारे बूढ़े ज्वान सब, हँस-हँस हँसी उड़ाँय। पइया धेला नइँ कुछू, बड मेला खाँ जाँय।।

इस पुस्तक के दोहों में कवि सनेही ने बुन्देलखंड की लोक संस्कृति की सजीव झाँकी प्रस्तुत की है जिसमें लोक चिंतन के उदात्त तथा संकीर्ण दोनों रूप दृष्टव्य है। यहाँ के समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव तथा उस पर आधारित कानातें भी हैं। लोक आचरण की विद्रूपताएँ प्रकट की गई हैं। लोक आचरण के आयामों में खानपान, रहन-सहन, तीज-त्यौहारों से सम्बंधित कहावतों को समाहित किया गया है।

भाषा के स्वर पर ठेठ विलुप्त हो रहे शब्दों का प्रयोग उनके संरक्षण में सहायक होगा। कई ऐसे शब्द पुस्तक में आए हैं, जो आजतक कम सुनाई देते हैं। यथा-गुलेंदरो, पोतला, सूमइँ, गन्नारे, नथ, घोकिया, ठेंगुर, कुकयात आदि। यह पुस्तक बुन्देली कहावतों के संरक्षण में महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। यह पुस्तक कवि की चालीस वर्षों के परिश्रम का फ्ल है। रचनाकार स्वयं 'अपनी बात' में स्वीकार करते हैं कि 1973 ई0 से अहानों का संकलन किया। इसके बाद उनकी निहित कथाएं खोजीं फिर दोहे रचे। निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि सनेही सतसई डॉ0 राघवेन्द्र उदनिया 'सनेही' की ऐसी पुस्तक है, जो पठनीय तो है ही, साथ ही इससे बुन्देली भाषा अध्येताओं को भविष्य में शोध करने में सहायता मिलगी।

(दो)

बुन्देलखण्ड अँचल की लोक संस्कृति में गायन वादन तथा नृत्य का विशेष स्थान है। यहाँ के अधिकांश पर्व इनके बिना अधूरे हैं, लोक जीवन में सम्पन्न होने वाले संस्कारों के अपने विशिष्ट गीत हैं। लोकगायन के गीतों में विपुल लोक साहित्य उपलब्ध हैं। बुन्देलखण्ड अँचल के लोक गीतों के संरक्षण हेतु काफी प्रयास किए जा रहे हैं। पं. बनारसी दास चतुर्वेदी द्वारा संपादित मधुकर के माध्यम से, डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त द्वारा संपादित मामुलिया तथा अन्य क्षेत्रीय पत्रिकाओं के माध्यम से यह कार्य किया गया है। इसके साथ गौरीशंकर द्विवेदी, कृष्णानन्द गुप्त, डॉ. बलभद्र तिवारी, डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त आदि ने इस क्षेत्र में कार्य किया है। अभी हाल ही में झांसी के पन्नालाल 'असर' ने महत्वपूर्ण कार्य करके उसे 'बुन्देली रसरंग' नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित कराया है। इस पुस्तक में जन्म से मृत्यु तक के संस्कार गीतों के साथ देवीगीत, ढिमरयाई, राई, दिवारी, होली, सैरा तथा मोनिया नृत्य के बारे में विस्तार से समझाया गया है। इसके साथ झिंझिया, सुआटा, टेसू, मामुलिया तथा पालना जैसे बालगीतों को स्थान दिया गया है। रावला, धुबयाई, जबारा, कछयाई, जुगिया नृत्य के बारे में पाठकों को परिचित कराया गया है। लांगुरिया, चैती, बिलवारी, गोट आदि के साथ बारामासी गीतों से रुबरू कराने में असर जी सफल रहे हैं। इसके साथ हरबोलों, फड़बाजी में ख्याल तथा लावनी से परिचित कराया गया है। इस पुस्तक की एक बड़ी विशेषता यह है इसको हिन्दी के साथ अंग्रेजी में पाठयवस्तु को अनूदित किया गया है। इस पुस्तक पर राजकुमार अंजुम की इस टिप्पणी से सहमत हुआ जा सकता है कि ''असर जी ने लोक संगीत और लोककलाओं को अपने जीवन में आत्मसात् करते हुए उन्होंने जो ज्ञान और अनुभव अर्जित किया है, उसी की अभिव्यक्तियों को इस कृति में अपनी विशिष्ट खूबियों के साथ समाहित कर दिया है, जिससे इसके स्वरूप का अनुपम, उपयोगी और संग्रहणीय हो जाना स्वाभाविक है।'' बुन्देली के लोकगीत और लोक साहित्य समय के थपेड़ों की आंधी में कहीं गुम होते जा रहे हैं। ऐसे में इन्हें पुस्तक रूप में संकलित, सम्पादित और समायोजित करने का प्रयास बेहद सराहनीय एवं प्रशंसनीय है।

निः संदेह असर जी ने 'बुन्देली रसरंग' लिखकर बुन्देली लोक संस्कृति साहित्य संरक्षण संवर्धन में स्तुत्य प्रयास किया है।

-प्राचार्य
शासकीय नवीन महाविद्यालय
राजनगर (छतरपुर) म.प्र.



हिन्दू या भारतीय : एक दृष्टि

-डॉ. जयवीर सिंह

भारत में पौराणिक काल में ही विष्णु पुराण के रचयिता ने भारत का भौगोलिक स्वरूप तथा भारत में बसने वाले लोगों को परिभाषित कर दिया था- *तरम् समुद्रस्य हिमाद्रृश्चैव दक्षिणम्।*

वर्ष तद् भारत नाम यत्र संताति भारती।।०२/३११

अर्थात्- समुद्र के ऊपर एवं हिमालय के दक्षिण वाले भाग को भारत एवं वहां रहने वाले लोगों (संतति) को भारती कहा जाता है। विद्वांनो का मानना है कि हिन्दू शब्द सिन्धु के अर्थ में या सिन्धु नदी के दोनों किनारों में बसने वाले लोगों के अर्थ में किया गया।

कतिपय विद्वान सिन्धु की जगह हिन्दू शब्द के प्रयोग के पीछे फारसी में "स" अक्षर का न होना कारण मानते हैं। किन्तु यह सटीक आधार ठहरता दिखाई नहीं पड़ता। फारसी में निम्न उल्लेखित शब्दों से इस कथन पर प्रकाश पड़ता है-

"फारसी"	"हिन्दी"
सजा	दण्ड
सपेत	उज्वल
सब्ज	ताजा
सख्त	कड़ा

प्राचीन भारतीय संस्कृति और इतिहास के मूर्धन्य विद्वान डॉ. भगवतशरण उपाध्याय का मानना है कि-"अपने पुरालेख में द्वारा (डेरियस) ने भारत और भारतीयों के अर्थ में पहलीबार 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग किया था, जिसका बाद में, बहुत बाद में भारतीय साहित्यों ने ग्रहण किया और हिन्दी तथा हिन्दू के रूप में बार बार दोहराया। दृष्टव्य-भारतीय संस्कृति के स्त्रोत गांधार, पंजाब, और सिन्ध द्वारा प्रथम के साम्राज्य के अंग बन गये, जो परसी पोलिस तथा नक्सये रुस्तम के पुरा लेखों से प्रमाणित हैं। भाषा विज्ञान के ख्यातिलब्ध विद्वान डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार, जब भारतीयों ने देखा कि फारस के लोग भारतीयों को हिन्दू कहते हैं, मगर हिन्दुओं को नापाक, गुलाम और काफिर कहते हैं, तात्पर्य यह कि हम भारतीयों के लिये नफरत भरे शब्दो का प्रयोग करते हैं, तब भारतीयों ने उनके देवता 'अहुर माजदा' को बदल कर 'असुर मजदा' कर लिया। (भाषा विज्ञान पृष्ठ 227) क्योंकि असुर शब्द जो ऋग्वैदिक काल में देवताओं के लिये प्रयुक्त होता था, अब वह राक्षस के अर्थ में प्रस्तुत होने लगा। भाषा की दृष्टि से असुर शब्द का अर्थापकर्ष कर दिया गया और राक्षस के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा। ऐसा भारतीयों को अपमानित करने के बदले में प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ। अब असुर शब्द पूर्णतः राक्षस अर्थ का बोधक बन गया।

उधर फारस के लोगों (इरानियों) ने देखा कि भारतीयों ने उनके देवता को राक्षस अर्थ दे दिया, है तो उन्होंने भी हमारे देव शब्द को बदल कर अदेव कर लिया। इस नीचा दिखाने की होड़ में फर्क यह आया है कि उन्होंने हम भारतीयों को जो हिन्दू शब्द दिया और उसके अर्थ में नापाक (अपवित्र) तथा गुलाम की व्यंजना दी और हमें वही समझा भी उसी शब्द और अर्थ को हम उसी रूप में अज्ञानियों की तरह स्वीकार कर ढोते चले आ रहे हैं।

यहाँ तक कि हम अपने को हिन्दू कहने में गौरवान्वित अनुभव करते हैं। इतिहास और संस्कृति की इस प्राचीनतम अपमानिक तनातनी पर बिना विचार किये हिन्दू और हिन्दुत्व पर छाती पीटना श्रेयस्कर नहीं कहा जा सकता। हमारा गर्व तो भारत और भारतीय होने में है। इन शब्दों में हमारी पुरातनता, सांस्कृतिक और प्राचीनतम निजता के साथ हमारी सार्वभौमिकता तथा सभी को समायोजित कर पचा लेने की शक्ति भी सन्निहित है। हम भारत और भारतीय शब्द छोड़कर विशालता व्यापकता से हटकर क्यों छोटे, संकुचित नहीं हो रहे है, यह विचारणीय यक्ष प्रश्न है। इस विषय पर राष्ट्रीय स्तर की गोष्ठी चुने हुये विद्वानों की होनी चाहिये। यहां यह भी ध्यान देने योग्य है कि गीता हमारी आध्यामिक चेतना का सर्वोच्च प्रामाणिक और सर्व स्वीकृत ग्रन्थ है जिसमें भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को सम्बोधित करते हुये तेईस बार भारत कहा न कि एक बार भी हिन्दू। यहां भारत से सीधा अर्थ भरतवंशी, भारतीय, या भारतीय से है। यह इस बात का प्रमाण है कि हिन्दू शब्द तब था भी नहीं। यह प्राचीनतम शब्द नहीं है। फिर गीता के बाद के ग्रन्थों जैसे-कौटिल्य के अर्थशास्त्र या कालिदास कृत ग्रन्थों या मौर्य कालीन अन्य ग्रन्थों के अतिरिक्त बाणभट्ट् कृत किसी ग्रन्थ में भी हिन्दू नहीं मिलता।

हिन्दू शब्द का प्रयोग भारत में मुगल काल में जब यहां की राजभाषा फारसी बनी तब से होने लगा। फारसी से अनेक शब्द हमारे शब्द भण्डार में सम्मिलित हो गये, क्योंकि शासन के कार्य में अब फारसी का उपयोग प्रारंभ हो चुका था। इस प्रकार से हिन्दू शब्द जो फारसी था। स्वभावतः हमारे देश की भाषा हिन्दी में सम्मिलित हो गया।

हम यहाँ पर फारसी से हिन्दी में आये कुछ शब्दों के उदाहरण दे रहे है। जैसे रोटी और तवा (तुर्की शब्द) गुलाब, बर्फ, जलेबी, खाना, तहसील, जिला, दरवाजा, दर्जी, रंग, जूता, मोजा, रजाई,गद्दा, सब्जी, सितार, तबला आदि। एक बात और भी यह की भारत में कुछ लोग अपने को भारतीय और संस्कृति को भारतीय संस्कृति तो कहते है। मगर धर्म के लिये हिन्दू धर्म कहते हैं। लोगों को शायद नहीं मालूम की सनातन धर्म हिन्दू धर्म से अधिक प्राचीन है। और इसी देश का धर्म है। जो हिन्दू का यथा उचित स्थान ग्रहण कर सकता है।

हिन्दू शब्द फारसी से भारत आया था। और यहां की भाषा का अंग बन गया। यह शब्द इस्लाम से नहीं आया था क्योंकि उस समय इस्लाम का उदय ही नहीं हुआ था। इस्लाम तो पैगंबर मोहम्मद साहब के जन्म 570 ई. के बाद भारत आया। शायद सातवीं आठवीं सदी में। एफ फोरोवकिन के ग्रन्थ 'विश्व का प्राचीन इतिहास' जिसके हिन्दी अनुवादक बुद्धि प्रसाद भटट् हैं उनके इस ग्रंथ के रंगीन चित्रों वाले क्रमांकों १७,१३,१२ एवं ७वें पर अंकित चित्रों को देखने से प्राचीन जमाने में विजयी लोग विजित लोगों पर किस प्रकार अत्याचार करते थे, उनसे भाति भांति के घरेलू कार्य कराये जाते, चर्खी चलाना, पानी भरना, आदि के साथ उनकी बाजारों में बोली लगाई जाती और बिक्री की जाती थी। ठीक उसी प्रकार से दारा (डेरियस) ने जब हमारे प्रातों गान्धार, पंजाब, और सिन्धु को जीत लिया हम पर विजय हासिल की तो हमारे साथ उसी प्रकार के व्यवहार किये जाते रहे होंगे। तभी सम्बन्ध और बिगड़े होंगे, इस कारण से उनके देवता को हमारे यहां राक्षस की पदवी मिली होगी। ऐसा अनेक विद्वानों का मानना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

1. प्राचीन भारत का इतिहास द्वारा-कृष्ण चन्द्र श्रीवास्तव
2. भारतीय संस्कृति के स्त्रोत द्वारा-डॉ भगवतशरण उपाध्याय पृ. 33 एवं 39
3. विश्व का प्राचीन इतिहास द्वारा-एफ फोरोवकिन हिन्दी अनुवादक बुद्धि प्रसाद भटट्
4. हिन्दी भाषा विज्ञान द्वारा-डॉ. भोलानाथ तिवारी पृष्ठ 227
5. वैदिक कालीन सभ्यता एवं संस्कृति द्वारा-आचार्य बलदेव प्रसाद उपाध्याय पृष्ठ 461
6. ऋग्वेद (1) 4/53/1 (2) 5/53/6 (3) 3/38/4

महारानी वृषभानकुँवरि एवं उनकी काव्य साधना

-डॉ. उमाशंकर खरे 'उमेश'

बुन्देलखण्ड का नामिकेन्द्र ओरछा के राजवंश में जहाँ महाराज मधुकर शाह, वीरसिंह जू देव हरदौल जैसे नर रत्नों ने जन्म लिया है, वहीं इस बुन्देला वंश को अनेक महारानियों ने भक्ति अपनी काव्य साधना द्वारा महिमा मण्डित किया है। इस राजवंश में अनेक रानियों ने काव्य साधना कर अपनी भक्तिपूर्ण रचनाओं के माध्यम से परमात्मा की आराधना की है। इन महारानियों में वखत कुँवरि, प्रेम कुँवरि, कंचन कुँवरि, रूप कुँवरि एवं महारानी वृषभान कुँवरि का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। महारानी वृषभान कुँवरि टीकमगढ़ नरेश श्री सबाई महाराज प्रताप सिंह जू देव (बब्बा जू) की धर्म पत्नि थी। महारानी वृषभान कुँवर का जन्म पूर्व मोहनगढ़ रियासत के एक छोटे से ग्राम विदारी में ज्येष्ठ शुक्ल 5 वि.सं. 1912 में हुआ था। इनके पिता जी का नाम कुँवर विजयसिंह परमार था। तत्कालीन समय में राज परिवारों एवं क्षत्रिय परिवारों में पर्दा प्रथा का प्रचलन था। अतएव बाल्यकाल में इनकी शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई। श्री विजयसिंह जू परमार का परिवारसात्विक एवं धार्मिक आस्थावान परिवार था। विजयसिंह जू स्वयं नित्य प्रति श्री हनुमान जी महाराज की पूजा-अर्चना किया करते थे। इसी कारण महारानी वृषभान कुँवरि में बाल्यावस्था से प्रभु की भक्ति के प्रति अनुराग रहा। वह अपने आराध्य श्री रामलला की माधुर्य भाव से पूजा-अर्चना किया करती थी। वृषभान कुँवरि जू का विवाह वि.सं. 1926 में 14 वर्ष की किशोरावस्था में ओरछा नरेश बुन्देला कुलभूषण हिज हाई नेस सबाई महेन्द्र श्री प्रताप सिंह जू महाराज टीकमगढ़ के साथ हुआ महाराज प्रताप सिंह जू देव भी एक धर्म परायण नरेश थे। वृषभान कुँवरि ने मोहनगढ़ के पूर्व दीवान श्री भूपति सिंह कायस्थ के कुशल निर्देशन एवं देख-रेख में अयोध्या में ख्याति नाम राम मन्दिर कनक-भवन एवं जनकपुर (नेपाल) में भव्य एवं विशाल श्री किशोरी जा का मन्दिर निर्माण कराया था।

महारानी वृषभानकुँवरि द्वारा रचित काव्य कृति 'वृषभान विनोद' मुझे ओरछा नरेश श्री मधुकर शाह जू देव (द्वितीय) नातीराजा टीकमगढ़ के सौजन्य से प्राप्त हुई है। वृषभान विनोद काव्य कृति में भक्ति परक 365 पद है। सम्पूर्ण पद भक्ति पूर्ण एवं गेय है। प्रत्येक पद किसी न किसी राग एवं ताल में निबद्ध है। इन पदों को पढ़कर ऐसा लगता है कि रानी वृषभान कुँवरि जहाँ कुशल कवयित्री थी वहीं सिद्धहस्त संगीतकार भी रही होगी। इन पदों में बधाई, होली, फंग, रसिया, ठुमरी, दादरे आदि अनेक गेय पद है।

वृषभान विनोद कृति के प्रथम संस्करण का प्रकाशन महारानी कुँवरि की पुत्रवधू एवं सबाई महाराज सावंत सिंह जू बिजावर नरेश की धर्म पत्नी महारानी रत्न कुँवरि के माध्यम से हुआ था। इस कृति के दूसरे संस्करण का प्रकाशन महारानी वृषभान कुँवरि के प्रपौत्र एवं वीर सिंह जू देव कृति का तीसरे संस्करण का प्रकाशन कौशल पब्लिसिंग हाउस फैजावाद के श्री वी.पी. पाण्डेय जी ने ओरछेश महाराजा मधुकर शाह जू देव टीकमगढ़ के आग्रह एवं श्री अजय कुमार छावछरिया कनक-भवन अयोध्या के सम्पादन में कराया। वृषभान विनोद कृति का शुभारंभ रचनाकार ने मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्री राम के अवतरण पर अयोध्या नरेश दशरथ जी के राजमहल में होने वाले बधाई महोत्सव में प्रस्तुत बधाई गीतो से किया है। दो छन्द बानगी स्वरूप प्रस्तुत हैं।

बधैया बाजै, अनुपम छाजै।
दशरथ भवन भयों सुखभारी, मिल चलिये ता काजै।।
विभव समाज अवध कौ देखत, लोकपाल सब लाजै।।
श्री वृषभान कुँवरि वर वनता, आँगन रचना साजै।।

उपरोक्त पद में महाराज दशरथ के राजप्रसाद का अनुपम सौन्दर्य, सुख की अनुभूति, अवध के वैभव को देखकर लोकपालों का लज्जित होना आदि का चित्रण बड़े ही भाव एवं लालित्य पूर्ण भाषा में किया गया है-

श्रवन सुन आई लेन बधाई।
जग जाहिर नृप दान देत है, जो जा के मन भाई।
जाचक भयें अजाच भूप जिमि, रवि कुल करत बड़ाई।।
बरसगांठ मन हरन लाल की, त्रिभुवन को सुखदाई।
राम प्रिया ये ही वर मागत, चरण कमल सिवकाई।।

प्रस्तुत पद में बधाई के अवसर पर महाराज दशरथ जू सभी याचकों को मन चाहा दान दे रहे है। यहाँ याचक महाराज दशरथ से इतना दान प्राप्त करते हैं, कि वह भी राजा समान हो गये है। बालरूप श्री राम का अनुपम सौन्दर्य सभी के मन को हरने बाला एवं तीनों लोकों में सुखकर है। यहाँ वृषभान जू प्रभु श्री राम के चरण कमलों की निरन्तर सेवा करने का मांगती है। भक्ति भाव एवं समर्पण का अनुपम उदाहरण है।

बधाई गीत्तों की इसी श्रृंखला में वृषभान विनोद में भगवती जनक नन्दिनी श्री किशोरी जी के प्राकट्योत्सव पर जनकपुर में महाराज निमि कुल भूषण विदेहराज श्री शीरध्वज (जनक) के राजमहल में आयोजित बधाई समारोह में प्रस्तुत बधाई पद-

अली निमिराज के बधाई है।
बाजे सुर दुंदभी सुहाई है।।
चली गजगामिनी पुर भामिनी सज उमंग,
जनु सिन्धु को नदी धाई है।।
महल के विच सोहले, बहुभांति सोहें नृपत मन
जानकी प्रगटाई है।।
सिरानी कूख श्री महारानी जू की अली
वृषभान की सुखदाई है।।

उपरोक्त पद में निमिराज जनक के राजभवन में ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे इस बधाई समारोह में देवता दुंदभी बजा रहे हो, इस बधाई समारोह को देखने के लिये जनकपुरी की गजगामिनी महिलायें ह्रदय में उल्लास धारण कर इस प्रकार जा रही है, जैसे कोई सरिता उल्लासित हो सागर से मिलन हेतु जा रही है। श्री किशोरी जी के प्राकट्योत्सव पर महल में होने वाले सोहरे महाराज कुँवरि को सुखदेने वाली है।

जनकपुर में सीता स्वयंवर में आयोजित धनुष यज्ञ महोत्सव में गाधि पुत्र महामुनि विश्वामित्र के साथ पधारे दशरथ नन्दन श्रीराम लक्ष्मण के अनुपम सौन्दर्य का दर्शन कर जनकपुर की

महिलायें राम जी की माधुर्य झाँकी का दर्शन करती हुई कहती है–

लखोरी आली मैने राम सलौना।
आये सुमन लेन फुलवारी नृप दशरथ जू के छौना।।
सुन्दर वदन मदन तन वारत कोउ न सखी जग होना।।
अति कोमल सुकुमार अलीरी लिये सुमन कर दौना।।
लतन ओटतै सखिन लखायों मानो विधि युग योना।।
ये ही धनुष टोर है आली ये ही पिया होना।।
वृषभान कुँवरि मन ये ही लालसा कर है सिया संग गौना।।

उपरोक्त पद में वृषभान कुँवरि कहती है। जनकपुर की पुष्प वाटिका में एक सखी ने राम का दर्शन कर वह अपनी सहेली से कहती है कि श्री दशरथ नन्दन राम पुष्प वाटिका में विहार कर रहे है। उनके सौन्दर्य के ऊपर कामदेव भी न्यौछावर होते हैं। लताओं की ओट से सखिया उनके अनुपम सौन्दर्य का दर्शन किशोरी को कराती हैं। उनके मन में लालसा है कि विधाता किशोरी जी का संयोग इन्ही से करायेगा राम ही धनुष का खंडन करेगें और किशोरी जी को ये ही वरण करेगे। वृषभान जी के मन में यही लालसा है कि प्रभु श्री राम के साथ ही किशोरी जी का गौंना होगा।

इस प्रकार सिय स्वयंवर के अवसर के वृषभानु जी ने बड़े ही भावपूर्ण पदों का सृजन किया है। विवाह संस्कार के अवसर पर बुन्देली जनपद में गाये जाने वाले गीत वना की बानगी प्रस्तुत है।–

वाँकी चलन हैसन वनरे की।
माथै मौंर खौंर चन्दन की, फुँदरी हलन लटन जुल्फन की।।
अली वृषभान कुँवरि मनभावन जुग जीवै जोरी सियावर की।।
मेरे मन भाये दोउ राजकुँर पाउने।
श्यामलाल गौर किशोर मनोहर कोटन काम लजाउने।।

वृषभान अली के वनरे को मन हिय माँझ वसावने।।

उपरोक्त पदों में बुन्देली भाषा का माधुर्य एवं लालित्य का जो दर्शन होता है, अन्य भाषाओं में दुर्लभ है। होली के सुअवसर पर गाये जाने वाले गीत, फाग, होली, रसिया की चन्द पदों में बानगी दृष्टव्य है–

रसिया अवध विहारी हमारी चूनर रंग डारी।
बहुतक करी विनय हम तुमसों हा–हा कर पचहारी।।
हटकत मोरी बैयाँ मरोरी सिर गगरी फोडारी।।
वृषभान कुँवरि कै अवध श्याम रे टोरत लाज हमारी।।

मुँह से करत वरजोरी छैल नव नागर रे।।
झपट आय घूंघट पट खोलत आन मलत मुख रोरी रे।
राम प्रिया लख जुगल माधुरी या होरी पर वारी रे।।

वृषभान विनोद कृति में होली के माध्यम से कृतिकार की प्रभु के चरणों में अनुराग एवं समर्पण भावना–

पिया खेलों में तेरे संग होरी।
अहो होरी होरी बरजोरी।।

अली वृषभान कुँवरि पिय रसिक सिरोमनि।
आज बनाऊँ तुम्हें गोरी।।
रघुराज लाल मतवारो छैल
देखो मोरी रोकत है पनघट की गैल।।
हो सरजू जल भरन जातती अनुज सखा लिये करत फैल।।
तनक न कान करत गुरजन की अंक भरत भुज कंठ मेल।।
लाज मरी कछु कह न सकत हों हाहा कर पिया भयो है झेल।।
वृषभान कुँवरि की स्वामिन सिया जू वातन दई है मेल।।

प्रभु श्री राम के वनगमन के अवसर पर वृषभान विनोद का वानगी स्वरूप पद पठनीय है–

वन वीथन राम चले आवैं।
पाछै अनुज विच सिया राजै, सीस जटा कर धनुष विराजै
कटि सरतून कसैं आवै।
शोभा धाम सुखमाके कोटन काम लख सकुचावै।।

सुन्दर स्वरूप एवं उनके सौन्दर्य का चित्रण कृतिकार ने अनूठा किया है–

अनेक साहित्य मनीषियों ने लीला पुरुषोत्तम श्री कृष्ण और श्री राधिका जू एवं वृज बालाओं के मध्य होने वाली रहस लीला का दर्शन कराया है लेकिन वृषभान विनोद कृति में वृषभान कुँवरि जू ने अपने को श्री राम की प्रिया मानकर रहस लीला की अनुभूति की है।

विरचो रहस कुंज सरजू तट।
श्री कमलेश किशोरी मान तज कौशल राजकिशोर करत हठ।
वृषभान अली लख लटक मुकुट की जाह गहौ सुन्दर पीरौ पट।।

रस रास रचौ प्यारे उपवन में आयकै।
पय सिन्धु अवध छाँड़ कै कामद में ल्याकै।
राम पिया जुग चरन लगाकै।
नित गौर श्याम वसौ हृदय रस विहार कै।

उपरोक्त पद में हमें जहाँ श्रृंगार की सुखद अनुभूति होती है वही अब बसन्त ऋतु में विरह की अनुभूति का उदाहरण प्रस्तुत है–

पिय प्यारे विन मोरे जिय कल न परै।
श्री अवधेश बिना सुन सजनी विरह अगिन दिन रैन जरै।
नहीं सुहात धन धाम ग्राम अब असन बसन सब त्याग धरै।।
श्री राम प्रिया को वेग मिलावौ पिया दे दरसन सब दुख हरै।।

वृषभान कुँवरि जू एक दोहा के माध्यम से अपनी एक सखी से कहती है–

जुगल माधुरी लखत नित धन सखि तुमरौ भाग।
सावन मन भावन निकट रहत भरी अनुराग।।

उपरोक्त पदों छन्दों के माध्यम से वृषभान विनोद कृतिकार वृषभान कुँवरि जू ने अपने को राम प्रिया के रूप मे प्रस्तुत कर प्रभु की भक्ति, अनुरक्ति एवं समर्पण भाव का जो दर्शन कराया वह स्तुत्य एवं वन्दनीय है। बुन्देली भाषा का माधुर्य, लालित्य अनुपम है। हम यदि वृषभान कुँवरि जू को बुन्देली जनपद की मीरा कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

–सुप्रभातम, साकेत नगर पृथ्वीपुर
(टीकमगढ़) म.प्र.
मो. 9893883776

ओरछा राज्य टीकमगढ़ का बुन्देली बसन्त

-पं. कपिल देव तैलंग

बसंत एक उत्साह और उमंग का पर्व है, राग और अनुराग का पर्व है, प्रकृति श्रृंगार का पर्व है पलाश के अंगार का पर्व है, कोकिल के गाने का पर्व है माननियों के मान का पर्व है। वासंतिक संस्पर्श मन का छू जाता है। इसलिए कवि पद्माकर जी ने लिखा है-

औरे भांति कुंजन में गुंजरत भौर भीर
औरें दौर मौरन के वोरन के ह्वे गए
कहें पदमाकर सु औरें भांति गलियान
छलिया छबीले छैल और छवि छवे गये।
औरें भांति विहग समाज में आवाज होत
ऐसे रितुराज के न आज दिन द्वै गए
औरें रस औरें राग औरें रंग औरें रीति
औरें तन औरें मन और बन होगे

यह वासंतिक परिवर्तन शब्दातीत बन गया है, वर्णनातीत हो गया है। अत: कवि केवल औरें शब्द से उस परिवर्तन का वर्णन कर पा रहा है इसलिए कवि कालिदास जी को भी लिखना पड़ा कि सर्वप्रिये चारुतरं बसंते। बसंत जहाँ जन जन को आल्हादित करता है वह तत्कालीन रियासतों में वह अनूठा उत्सव बन कर उभरता है।

मुझे कुछ स्पष्ट अस्पष्ट से संस्मरण मनोगत हो रहे हैं जिन्हें मैं शब्दों के बांधकर प्रकट करना चाहता हूँ। तत्कालीन ओरछा राज्य की राजधानी टीकमगढ़ में तत्कालीन ओरछेश महाराजा वीरसिंह देव (द्वितीय) के पास बसंतोत्सव एक राज्योत्सव बन जाता था। बसंत पंचमी की संध्या पर यह उत्सव राजप्रसाद में सोत्साह मनाया जाता था जिसमें प्रबुद्धजन, कविगण, अधिकारी वृन्द विशेष पोशाक में उपस्थित होते थे फिर होती थी गुलाल की वर्षा। इतनी गुलाल उड़ाई जाती थी कि प्रत्येक व्यक्ति की पोशाक में प्राय: एक इंच तक की गुलाल जम जाती थी। एक और विशेषता थी भीड़ कहे जाने वाले व्यक्तियों को छूट थी कि वे सरकारी अफसरों की पोल खोलें, मजाकिया ढंग से उन्हें पेश करे ताकि सही भी प्रकट हो जावे और किसी को बुरा न लगे। उस दिन कुमकुमों का प्रयोग होता था। उन्हें पेश करें ताकि सही भी प्रकट हो जावे और किसी को बुरा न लगे। उस दिन कुमकुमों का प्रयोग होता था। कुमकुम चावल के आटे से बने गोला होते थे जिनमें गुलाल भरी जाती थी और उसकी मार की जाती थी। कभी कभी उन कुमकुमों में रुपये रखकर फेंके जाते थे जिन्हे भाँड़ लोग (मसखरे) अपने मुँह में लपकते थे।

बसंतोत्सव का एक आकर्षण कवि सम्मेलन हुआ करता था जिसमें राजकवि के रूप में श्री मुंशी अजमेरी, अन्योक्त्याचार्य श्री रामाधीन लाल खरे, रीतिकालीन कविता के मर्मज्ञ श्री ब्रजेश जी तथा वीर रस के कवि श्री अम्बिकेश जी सम्मिलित रहते थे। यदाकदा बिजावर के कविराज श्री बिहारी लाल जी काव्य का रंग बिखेरते थे। इसका समायोजन राजप्रसाद के जुबिलीहाल में होता था। जिसके संयोजक स्व. श्री बालकृष्ण देव तैलंग रहा करते थे।

बसंतोत्सव यहाँ तक ही सीमित नहीं होता था। बसंत के अवसर पर कुण्डेश्वर में विशाल मेला का आयोजन होता था जिसमें दूर दूरस्थ की दुकानें आती थी मेला का प्रबंधन में पूरा मंत्रीमण्डल मेला में ही डेरा डाले रहता था तथा पूर्ण व्यवस्था रखता था। महाराजा स्वयं अपने अधिकारियों एवं प्रजा जनों के साथ समूह में भगवान कुण्डेश्वर के दर्शन करने जाते थे। इस मेले का प्रधान आकर्षण विशाल कवि सम्मेलन का क्रम प्राय: दो तीन दिनों तक चला करता था देश के विभिन्न स्थलों से कवि लोक अपनी कविताएँ भेजा करते थे। एक बार तो किसी कवि ने क्रेटा से भी कविता भेजी गयी थी। यह साहित्यिक कार्यक्रम श्री वीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद के तत्वाधान में होता था। इस कवि सम्मेलन में श्री जगदम्बा प्रसाद हितैषी एवं श्री दुलारे लाल भार्गव, श्री ग्याप्रसाद शुक्ल सनेही के अतिरिक्त श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान भी सम्मिलित हुई और उन्होंने वीरों का कैसा हो बसंत काव्य का पाठ किया था। कुण्डेश्वर के कवि सम्मेलन का सबसे अधिक आकर्षण देव पुरस्कार का समर्पण हुआ करता था। उल्लेखनीय है कि देव पुरस्कार की स्थापना महाराज वीरसिंह देव ने आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के अभिनंदन समारोह के अवसर पर की थी और यह पुरस्कार तत्कालीन सक्सेरिया पुरस्कार और मंगला प्रसाद पारितोषिक से भी अधिक राशि रु. 2100.00 की थी, जो इस वर्ष जिस कवि की रचना देव पुरस्कार के योग्य घोषित होती थी उसे बड़े आकर्षक ढंग से समर्पित किया जाता था। यह पुरस्कार के समर्पण का अनोखा ढंग ही हुआ करता था। जिनमे एक चाँदी के बड़े थाल में प्रचलित चाँदी के दो हजार एक सौ नवीन चमचमाते हुए सिक्के भरे जाते थे उस पर बासंतिक पीले एवं काले रंग की पट्टियों बाला ओरछा राज्य का ध्वज रंग (पीला व काला) से आच्छादित करकें सभास्थल पर लाया जाता था। थालभारी होने के कारण प्राय: दो सभासद उसको लाते थे और चयनित कवि को समर्पित करते थे, वह कवि उस थाल को कठिनता से संभालता और सभा मंडप तालियों की गड़गड़ाहट से गुंजायमान हो जाता।

मेला का समापन आतिशबाजी से होता था। कुण्डेश्वर के अंचल से प्रवाहित नदी जमडार के एक तट पर अमरूद के बगीचे मे राज परिवार राज्याधिकारी एवं प्रजाजन आसनस्थ होते और प्रतिबिम्ब नदी के प्रवाहमान जल पर पड़ता था जिससे ऐसा प्रतीत होता था कि एक आतिशबाजी आकाश में चल रही है एवं दूसरे नदी के जल मे। इस अवसर पर बहुप्रतिभा के धनी मुंशी अजमेरी अपनी काव्यमय रचना की फुलझड़ियां छोड़ते थे जो वातावरण को दुगुना सरस बना देते थे इस प्रकार निरंतर एक माह तक चलने वाली वासंतिक वयार ग्रीष्म ऋतु में परिवर्तित हो जाती थी।

-एस-11 मंदाकिनी कालोनी
कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.)

को नइँ जानत

-डॉ. राघवेन्द्र उदैनिया "सनेही"

आज काल कों कॉ का हो रओ, को नइँ जानत
कीखाँ को को कैसें धो रओ, को नइँ जानत।।
जीखां देखौ लम्बी चौंड़ी हाँकत फिर रओ,
को स्वारथ के गुरिया गो रओ, को नइँ जानत।।
अँदयारे में सकल करम कर थको गुसाँई,
उजयारे में रोना रो रओ, को नइँ जानत।।
लाज सरम तौ छू नइँ गई ऊ नासमिटे खों,
बची खुची सो ओई खो रओ, को नइँ जानत
हतो कबउँ अपनन में अपनौ यार 'सनेही'
आज बतादो की को को रओ, को नइँ जानत

-शारदा विद्या मंदिर, छतरपुर

बुन्देली के विशेषण शब्द

-सुरेन्द्र शर्मा 'शिरीष'

बुन्देली के संज्ञा औ क्रिया शब्दन के विशाल भण्डार जैसो बुन्देली के विशेषण शब्दन कौ भण्डार सोउ भौत बड़ौ है। बुन्देली में विशेषणों के हर प्रकार (भेद) के सैकरन-हजारन शब्दन की भरमार मिलत है। संज्ञा-सर्वनाम औ क्रिया विशेषण के भेदों के संग उनके बुंदेली विशेषण शब्दन की बानगी के रूप में दैकें, संगै-संगै बुन्देली विशेषण शब्दन की लघु सूची बुंदेली की व्यापकता बताने के लानें दइ जा रइ है।

अ- संज्ञा-सर्वनाम विशेषण के भेद, उनके बुंदेली विशेषण शब्द:

1. गुण वाचक विशेषण: गुण, दुर्गुण, रंग, रूप औ अवस्था सें संबंधित विशेषण - यथा-सद्द, टटकरे, मूसरचंद , विमेत्या, लटो-लटी, मस्करया, मसकरयाऊ, लड़ंका-लड़ंकू, गरजुआ, दलुद्दरी, फरचट्टा,फरचट्टिन, गमंइयाँ, गुनीले।

2. संख्यावाची विशेषण: जिन विशेषणों से संज्ञा व सर्वनाम की संख्या का बोध हो- यथा त्रिकालग्य, दोज्या, सबई अंक (एक सें लैकें पूरी गिनती) तिमाही, छैमाही, विसी, गड़ा, पचमेर

3. परिमाण वाचक विशेषण: यथा-तनां-तनां, भौत, चुटू सौ, कुल्ल-बिलात, टुटपुंजया, धन्नासेठ, रत्तीभर, पासंग, सवाये, ड्योड़े, सबरौ, सबरी, तन-तन, तनकसौ, भारी बड्डो।

4. संकेत वाचक विशेषण: अँगर-पछर, मद्दी, तेज, सुनवैरा, ठँडे-ठँड़े।

5. व्यक्ति वाचक विशेषण: ये विशेषण व्यक्ति वाचक संज्ञा से बनते हैं। यथा- अलीगढ़ी तारे, बनारसी पान, रामपुरी चाकू महोबिया पान, मलाराबारी, लुगासी बोर, कटनी को चूना, वनफरया वीर, खजुराहो मंदिर, सागरी भटा, इलाहाबादी बिही कटंगी के रसगुल्ला।

ब- क्रिया विशेषण के भेद उनके बुंदेली विशेषण शब्द-

1. काल वाचक क्रिया विशेषण: इनमें समय संबंधी विशेषता बतावे वारे विशेषण आउत हैं यथा- आजइँ, काल (भ्याँनें), परों अबइँ, रोजइँ, सदाँ, जबइँ, तबइँ, तुरतइँ, उलायते मुरकियो, झेल करवौ, अबेरे, सौकारूँ भरदुपरै, अदरातै।

2. स्थान स्थिति वाचक क्रिया विशेषण: क्रिया की स्थान संबंधी विशेषता बतावे वारे शब्द। यथा-एँगर, दूर, इतै-उतै, नायँ-माँय, नेंचें, उपरें, भीतरें-बायरें, छतपुरी पंचयात।

3. रीति वाचक क्रिया विशेषण: जे क्रिया के गुण-दोष स्थिति, बतावे वारे विशेषण होत। यथा-हरइँ हराँ, जोर सें, तेजी सें, तपाक सें, इकदम सें, चटाक सें, पटाक सें, जबरइँ, खुशीमन, अच्छें, अच्छीतराँ, नौनें।

4. परिमाण वाचक क्रिया विशेषण : जे क्रिया की मात्रा बताउत हैं इतनइँ, उतनइँ, कितनऊँ, अधूरौ, जादाँ, कमती, पूरौ, जितनौ, कितनौ, उतनौ, आदौ, आदी।

5. प्रश्न वाचक क्रिया विशेषण : जे क्रिया के वारे में प्रश्न करवे वारे शब्द होत। यथा क्याँयँ, कायेखों, कायेके लानें, कबै, काँ, काये, कैसें, कितै।

बुन्देली के कुछ विशेषणों की सूची

असत्ती, असत्तिन, दुदवार, लुक्का, लुक्कू, दुष्टी, दुष्टन, गुनमेंटा-गुनमेंटू, दुता-दुतू, झुट्टा, झुट्टू, लडंका-लडंकू, सम्पनया-सम्पनयाऊ, रूगंटया-रूंगटयाऊ, फरचट्टा-फरचट्याऊ, जंट-फंट, सजी सँवरी, जूड़ौ-ठंडो, तातौ, निचुरी-निचुरौ, निचुरे, हुरयानो-हुरयानी, कर्जीलौ-कर्जीली, लिवइया-लिवना-लिवनू, लिवार, धरउअल, दिवार-दिवइया, जनइया, रुबइया, सबाँयादौ, रूबनू-रूबना, छनइया-फुकइया, पिवइया, भुत्त, मतो-मती-मते, खबइया-खब्बू, लपकी-लपकौ, लपकनू, धुबी-धुबे-धुवो, भमकनू, हँसतोरा-हँसतोरू, झिझकनू, हुलक्याँयदो-हुलक्याँयदी, पतरी-पनछीली, छनकीली-छनकीलौ, रतनारी-रतनारे-रतनारौ, कजरारी-कजरारे, बंग (चरित्रहीन), कुलटा, सकरी-सकरे-सकरौ, कुटनी, गुड़ीलौ (स्वाभाव), इकारी, दूबरी-दूबरौ-दूबरे, दुहरी, लमछरौ, लमछरी, ऊँचे-पूरे, ऊँची-पूरी, ठुकैलू-ठुकैला, बैकस, कट्टसिर्री-कटसिर्रन, सिर्री-सिर्रिन, गुनीलौ, गुनीले, गुनीली, अक्खड़, अतकारे, अतकारौ, अतकारी, कर्कशा (नार), गबवारौ, गबवारी-गबवारे, सिरकारी-सिरकारू, मनहारी, मनहारिन, मनहार, गुनमेंटू-गुनमेंटा, डरपुक्का-डरपुक्की-डरपुक्के, अँदरा, अँदरू, निपोची-निपोचिन, चढ़तौ नातौ, उतरतौ नातौ, लँगुट्या यार, दाँतकाटी यारी, कटना-कटनू, घमघूसर, टिटइँ, सुकटा-सुकटू, मरका-मरकू, मरकनू, भुन्न-भुन्नाती, धाँसकें-ठेंसकें, दुसर्तो-चलाव, मसक्कें, मीठौ-खट्टौ, चिरपरौ-चिरपरी, ऐंठायलौ, पासंग-पासंगू, घुरका-घुरकू, करतूतलौ-करतूतली, छनक्वायरे-छन्क्वायरी, माँगी चूँगी, गर्रानो, गर्रानी, गर्राने, उपासी-तिपासी, उपासे-तिपासे, मुटानी-मुटाने, उबाऊ, दूबरे-दूबरौ, दूबरी, मुटल्ला-मुटल्ले, मुटल्लू, विर्रा, बिर्रो, जरूआ, जरू, उदमया, उदमयाऊ, दिखनौसू, रचनू, छुच्चम, हदरयानो, हदरयानी, पैलौटी, दुसरिया, पैलऊपैल, दूसरां, तीसरां, निरौना, नौंनो, नोंनी, नोंने, नोंनें कुजात-कुजातिन, दोगलू-दोगला, चोखो, दागी, दगैल्या,-दगेलयाऊ, दिनारू, बीमरया, रूगेन्टया-रूगेन्टयाऊ, भुक्कड़, मँगना-मँगनारो-मँगनारी, कंजूसड़ा-कंजूसड़ी, नंगौ-नंगे-नंगी, सजीधजी, सजे-धजे, सज-धज, फिचो-फिचाओ, हतपउँ, मटमैली, धुरमैलू, कच्ची पाँत-पक्की पाँत, मटया, मरकुल, मठकुल, उचक्का-उचक्कू, लुक्का-लुक्कू, खेली खाई-खेले खाय, खेलो खाओ, झट्टई, बजी भई-बजे भये, छुतया-छुतैलू, झक्क-फक्क, पचोतरा, विसी, गड़ा, पचमेर, दइयाँ-छँदयाँ-बेर, झंझटया-झंझटयाऊ, बजारू-घरू, गेरें, गुलगुलौ-गुलगुले-गुलगुली, नखरियाऊ-नखरैल, कुसमनया-कुसमनयाऊ, नन्नौ-नन्ने, नन्नी, चीकनों-चाँदनों, डढेल, डढ़ेला, घनों, भींजे-भिजायें, माहिल, क्वाँरौ-क्वाँरी-क्वाँरे, मुसरया, मुसरयाऊ, पनपथू, पुचके-फूले, बूचा-बूची, निन्नें, घिना-घिनऊँ, कनवाँ-काँनी, लुकी-छिपी, कबरू-कबरी-कबरा, दुदार, उपनयँ, ब्यावबरी, कुलच्छी-कुलच्छन-रखैल, उदना-इदना-किदना-जिदना, कुड़मुता-कुड़मुतू, ढलवाँ, ढरवां, साँचे ढरी, बजनू, सुकू सुकाए, कारे कोसन, नीरौ, किलकिलया, किलकिलयाऊ, हगोमुतो, सपरी खोरी, गर्मर, सिड़ी कुरया हिसाब, उमछानी, उमछानौ, उमछाने, हालेफूले, हालीफूली, वेहुलिया, टुटकया, सकोसी, सकोसिन, सकोची, मोंफट, हिरानौ, हिराने-हिरानी, कोंरी, कोंरे, कर्रो-कर्रो-कर्रे, निपकनू-निपकना, भ्याँवनी-भ्याँवनौ-भ्याँवने, खटमिट्ठी-खट्मिट्ठे-खट्मिट्ठौ, चिरपिरी-चिरपिरौ-चिरपिरे, अतकारी-अतकारे-अतकारौ, निखरारी, चुपर, लंगड़-लूले-लँगड़ू, कुनया, कुनयाऊ, छुट्टाँ-बँदी, पिसनारी, गमयाऊ, खवइया-खबनारी, खब्बू, नचनारी-नचइया, तिसनया, तिसनयाऊ, मँगौनी, फिंचीफिंचाई, ललत्तू-ललत्ता, सनकू-सनकी, तरऊपर-तराऊपरें, गहनेरू, फरास, साजी-साजे-साजौ, गबनारी, गबैया, हरए-गरए, मोहनियाँ, सुपेत, काँकरेजी, खैरौ, खैरी, करबरौ, करबरी, करबरे, सरकनू, ठाँड़े-बैठें।

आदर्श मार्ग, शुक्लाना छतरपुर
मो. ९६८५५१९२२३

उन्नीसवें बुन्देली उत्सव २०१५ का प्रगति प्रतिवेदन

-कु. नेहा सिंह बुन्देला

बुन्देलखण्ड को बुंदेली लोक कलाओं को सहेजने तथा संस्कृति के पोषक छः दिवसीय कार्यक्रम ''बुंदेली उत्सव का 29 मार्च 2015 को पर्यटक ग्राम बसारी में भव्य रूप से शुभारंभ हुआ। महाराजा छत्रसाल स्टेडियम, बसारी में मुख्य अतिथि के रूप में छतरपुर विधायिका श्रीमती ललिता यादव पधारी माननीया मुख्य अतिथि जी ने महाराजा छत्रसाल के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं पुष्पांजली अर्पण करके साथ ही रंगबिरंगे गुब्बारों तथा कबूतरों को आसमान मे उड़ाकर कार्यक्रम का भव्य शुभारम्भ किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाराजपुर विधायक मानवेन्द्र सिंह (भंवरराजा) के द्वारा की गई। बुंदेली विकास संस्थान के संरक्षक शंकर प्रताप सिंह जू बुंदेला ''मुन्नाराजा'' ने परम्परागत रूप से मुख्य अतिथि तथा अन्य अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया साथ ही स्वागत करने वालों में आदित्य शंकर बुन्देला अध्यक्ष बुंदेली विकास संस्थान, सिद्धार्थ शंकर बुंदेला, लखन दुबे, रामबाबू ताम्रकार, डा० एच. आर. एम. त्रिपाठी, अतीन्द्र मणि त्रिपाठी सहित गणमान्य नागरिक पत्रकार बंधु तथा आयोजन समिति के पदाधिकारी शामिल रहे।

मुख्य अतिथि श्रीमती यादव जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि बुंदेली लोककला एवं संस्कृति को सहेजने में बुन्देली उत्सव का बहुत बडा योगदान रहा हैं। इन्होंने संरक्षक महोदय श्री सिंह तथा क्षेत्रवासियों को आयोजन करने के लिये धन्यवाद दिया। इसी क्रम में कार्यक्रम के अध्यक्ष मानवेन्द्र सिंह जू ने भी बुन्देली संस्कृति को समर्पित इस आयोजन के लिये श्री शंकर प्रताप सिंह जू की भूरि-भूरि प्रशंसा की प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली पत्रिका ''बुंदेली बसंत'' 2015 का विमोचन माननीय मुख्य अतिथि द्वारा किया गया।

संरक्षक महोदय ने अपने उद्बोधन में उत्सव में सम्मलित मेहमानों का हार्दिक आभार प्रकट किया तथा क्षेत्रीय नागरिकों की अत्यंत प्रशंसा की एवं प्रतिवर्ष मिलने वाले सहयोग को सराहनीय बताया तथा कहा कि यह आयोजन पूर्णतया क्षेत्रीय नागरिकों के सहयोग से होता आया हैं और आगे भी ऐसे ही सहयोग की कामना की। उत्सव के प्रथम दिन कार्यक्रम के शुभारम्भ में दिल्ली पब्लिक स्कूल के छात्र-छात्राओं ने रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी। साथ ही कुश्ती प्रतियोगिता का भी लुफ्त उठाया। आज से ही कबड्डी वॉलीबाल, चौपड़ एवं गिल्लीडंडा प्रतियोगिताओं का आयोजन प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर संस्थान द्वारा सम्मानित होने पाले महानुभावों की श्रृंखला में श्री शीलवंत पचौरी (संवाददाता सहारा समय) एवं प्रतीक खरे को ''डा० हरिराम मिश्र सम्मान-2015'' से सम्मानित किया गया। सम्मान मे सम्मान पत्र, शाल, श्री फ्ल, एवं उपहारस्वरूप 2100 रूपये की राशि भेंट की गई। आज ही रंगोली एवं बुंदेली आधारित बच्चों प्रतियोगितायें आयोजित हुई। ईके लाने बुन्देली मे कई जाऐ तो

चारउ तरका छाऔ चकाचाँद, नई सुजा रऔ कछू हमें।
बुन्देली उत्सव आ गऔ हैं, जा कै रये है सबइ जने।।

30 मार्च 2015 को पर्यटक ग्राम बसारी में आयोजित ''बुंदेली उत्सव'' मे दूसरे दिन चौपड, कबडडी, वालीवॉल, गिल्लीडंडा एवं बुंदेली व्यंजन आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कबड्डी प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि श्री आदित्य शंकर बुंदेला तथा बॉलीवॉल प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि श्री सिद्वार्थ शंकर बुंदेला रहे। बॉलीवॉल की प्रथम प्रतियोगिता बिलानी और बड़ागाँव के बीच सम्पन्न हुई। जिसमें बिलानी एवं दूसरा मैच बौतराई एवं लखरौनी की टीम के बीच खेला गया जिसमे बौतराई टीम विजयी घोषित की गई इसी के साथ मेजवान बसारी एवं सरबई के बीच तीसरे मुकाबले में बसारी टीम ने बाजी मारी दूसरी ओर कबड्डी प्रतियोगिता का प्रथम मुकाबला नयागाँव एवं हमीरपुर के बीच हुआ जिसमे हमीरपुर दूसरा बसारी एवं छठी-बम्होरी के बीच हुआ जिसमें छठी-बम्होरी तथा तीसरा मुकाबला छठी-बम्होरी और अजनार के बीच सम्पन्न हुआ जिसमें अजनार ने जीत का परचम लहराया।

बुन्देलखण्ड के लुप्प्रतप्रायः प्रसिद्ध चौपड़ खेल के मुकाबले भी आकर्षण का केन्द्र बिन्दु बने रहे। चौपड़ प्रतियोगिता का पहला मुकाबला शत्रुघन सिंह बसारी एवं गोविन्द सिंह, दौरिया की टीम के बीच हुआ जिसमें शत्रुघन सिंह की टीम ने विजय प्राप्त की तथा दूसरा जीतेन्द्र सिंह दौरिया तथा पंकज खरे राजनगर की टीम के बीच हुआ। सायंकाल में ''बुंदेली व्यंजन'' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमे बुंदेलखण्ड के प्रचलित व्यंजनों के साथ प्रायः लुप्त होने की सीमा पर पहुचने वाले व्यंजन भी शामिल किय गये । इन विभिन्न प्रतियोगिताओं का आनंद लेने क्षेत्रीय जनों का विशाल जनसमूह उमड़ा। इस प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार गौरिहार महारानी श्रीमती सरोज कुमारी के सौजन्य से प्रदत्त किया गया।

31 मार्च 2015 को पर्यटक ग्राम बसारी में आयोजित बुंदेली उत्सव मे तीसरे दिन अश्वनृत्य, रस्साकशी प्रतियोगिताओं तथा कबड्डी, बॉलीवाल के सेमीफाइनल एवं फाइनल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया मुख्य अतिथि के रूप में विधायक राजनगर कुँवर विक्रम सिंह जू ''नातीराजा'' का आगमन हुआ इन्होंने अपने उद्बोधन मे म.प्र. के आंचलिक कार्यक्रमों की श्रृंखला मे बुंदेलखण्ड की संस्कृति एवं परम्पराओं पर आधारित बुंदेली उत्सव के आयोजक माननीय शंकर प्रताप सिंह जू ''मुन्नाराजा''की भूरि- भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि श्री सिंह ने बुंदेली संस्कृति को जन-जन तक पहुँचाया वे बुंदेली माटी के साँचे सपूत हैं।

अश्वनृत्य प्रतियोगिता तथा रस्साकशी प्रतियोगिता ने मनोहर समा बाँधा। साथ ही कबडडी का पहला सेमीफाइनल अजनारा और हमीरपुर टीमों के मध्य हुआ जिसमें हमीरपुर ने विजय प्राप्त की बॉलीवाल के सेमीफानल में पड़वाहा की टीम ने बौतराई को हराया कबड्डी प्रतियोगिता का फाइनल मुकाबला हमीरपुर एवं बसारी के बीच खेला गया जिसमे बसारी की टीम ने जीत हासिल की जिन्हें आयोजक समिति के द्वारा रुपये 11000/- एवं शील्ड तथा उपविजेता टीम को रुपये 7000/- देकर पुरस्कृत किया गया। अश्व नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम स्थान बिहारी पाल तथा कल्याण सिंह ''सेला'' ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया पुरस्कार के रूप मे रूपये 3100/- एवं 2100/- से प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया। सभी प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार के रूप में 500/- प्रदान किये गये। आयोजन समिति द्वारा सभी निर्णायकों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

01 अप्रैल 2015 को पर्यटक ग्राम बसारी में आयोजित

''बुंदेली-उत्सव'' के चौथे दिन बैलगाड़ी दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में माननीय श्री नितिन चतुर्वेदी ''बंटी भैया'' पधारे। जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता मानीनय श्री डीलमणि सिंह जू ''बब्बूराजा'' के द्वारा की गई। मुख्य अतिथि श्री चतुर्वेदी जी ने अपने उद्‌बोधन मे कहा कि बुन्देली उत्सव बुन्देलखण्ड की आन बान और शान के प्रतीक के रूप मे अपने आप को स्थापित कर चुका हैं। इस कार्यक्रम के द्वारा बुंदेलखण्ड की साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं परम्परागत विधायें गौरवान्वित हो रही हैं।

बैलगाड़ी दौड़ प्रतियोगिता मे 21 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमे गयादीन पटेल परा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया जिसे रूपये 3100/- की राशि साथ ही बैलगाड़ी से पुरस्कृत किया गया जबकि द्वितीय स्थान पर गोकुल पटेल परा और हरपाल कुशवाहा तृतीय स्थान पर रहे जिन्हे रूपये 3100/- व 2100/- की नकद राशि पुरस्कार के रूप मे भेंट की गई।

आज से ही रात्रिकालीन कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमे मुख्य अतिथि के रूप में माननीय श्री ब्रजेंद्र प्रताप सिंह जू (पूर्व मंत्री म.प्र. शासन) उपस्थित रहे तथा अध्यक्षता माननीय श्री डीलमणि सिंह जू के द्वारा की गई। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में कछयाई, सैर, कहरवा, कीर्तन, ख्याल, बनरे, अलगोजा, गारी, दिवारी, लम्टेरा एवं अहिरवारी बैठक आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रमों की इसी श्रृंखला मे कछयाई मे प्रथम स्थान राजा रंक कुशवाहा ने एवं भुमानीपुर बसारी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया जिन्हे क्रमशः रूपये 2100/- व 1500/- नगद पुरस्कार प्रदान किया गया। सैर प्रतियोगिता मे बजरंग मण्डल बसारी ने प्रथम तथा एकता डांस ग्रुप दमोह ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया अहिरवारी बैठक प्रतियोगिता में देवीलाल गुदाँरा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया जिन्हे रूपये 1500/- का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया। श्री गौरीशंकर उपाध्याय ''सरल'' झाँसी को राव बहादुर सिंह बुंदेला सम्मान-2015 से सम्मानित किया गया।

2 अप्रैल 2015 को पर्यटक ग्राम बसारी मे आयोजित ''बुंदेली उत्सव'' के पाँचवे दिन रात्रिकालीन कार्यक्रमों मे दलदल घोड़ी, बहुरूपिया, गोटें, बधाई गीत, कार्तिक गीत, आल्हा बिलवारी, काड़रा, रावला, सोहरे, हास्य आधारित बुंदेली एकांकी एवं राई की विशेष प्रस्तुति का मंचन किया गया जिनमें मुख्य अतिथि के रूप में नेपाल राष्ट्र के संविधान सभा के सदस्य एवं सांसद प्रदीप गिरी जू पधारे। माननीय मुख्य अतिथि बुंदेली विधाओं से प्रभावित होकर संरक्षक महोदय की अत्यंत प्रशंसा करते हुए प्रतीत हुये जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री तिलक सिंह लोधी जी ने की आज के कार्यक्रम का संचालन श्री शिवेन्द्र शुक्ला द्वारा किया गया। रात्रिकालीन सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में दलदल घोड़ी प्रतियोगिता में बजरंग मंडल (बसारी) ने प्रथम एवं गडू अहिरवार कर्री ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया जिन्हें रूपये 2100/- और 1500/- की नकद राशि से पुरस्कृत किया गया। बहुरूपिया मे बजरंग मंडल बसारी ने प्रथम, गोटे मे मूलचंद पाल (अटारन) ने प्रथम, कार्तिक गीत मे एकता डांस ग्रुप (दमोह) ने प्रथम, आल्हा प्रतियोगिता मे दिनेश सोनी (झाँसी) ने प्रथम, बिलवारी मे एकता डांस ग्रुप (दमोह) ने प्रथम, रावला मे कालीचरन अहिरवार ने प्रथम, सोहरे मे संध्या सरगम (उरई) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया इसी क्रम मे निर्णायक समिति द्वारा अन्य प्रतियोगिताओं के निर्णय घोषित किये गये एवं विजेता पार्टियों को निर्धारित राशि पुरस्कार के रूप में प्रदान की गई निर्णायक मण्डल मे डा0 एच.सी.शर्मा श्री सुरेन्द्र शर्मा ''शिरीष'' एंव बद्री प्रसाद खरे ''निरंकार'' का निर्णय सराहनीय रहा। साथ ही राई की विशेष प्रस्तुतियों ने समा बांधा।

3 अप्रैल 2015 को पर्यटक ग्राम बसारी मे आयोजित ''बुंदेली उत्सव'' समापन के छठवे दिन फाग, ढिमरायाई, एवं राई की प्रतियोगिताओं सम्पन्न हुई। समापन कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि के रूप में श्री यादवेन्द्र सिंह (जग्गू राजा), आलोक चतुर्वेदी '' पज्जन भैया'', पुष्पेन्द्र सिंह चंदेल (सांसद हमीरपुर) उपस्थित रहे। इस मधुर अवसर पर पुस्तक ''ऋतु संहार एक पुनः रचना'' अनुवादक प्रभु दयाल श्रीवास्तव ''पीयूष'' का लोकार्पण माननीय मुख्य अतिथि श्री अजय सिंह जू देव के द्वारा किया गया।

फाग प्रतियोगिता मे अर्जुन पटेल (घूरा) ने प्रथम ढिमरयाई मे बजरंग मण्डल (बसारी) ने प्रथम तथा राई प्रतियोगिता में सुखलाल आदिवासी ने प्रथम सीताराम टिकरा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया आज उद्‌घोषक के रूप मे श्री बहादुर सिंह परमार और शिवेन्द्र शुक्ला जी ने प्रमुख भूमिका निभाई। इसी के साथ राई की विशेष प्रस्तुतियों ने पूरी रात समा को बाँधे रखा साथ वृहद संख्या आये विशाल जनसमूह को भी। आज श्री सेठ राघव दास जी (गुरसराय) को ''डा0 नर्मदा प्रसाद गुप्त स्मृति सम्मान-2015'' एवं श्री लोकपाल सिंह परमार को ''गौरिहार महाराज प्रताप सिंह स्मृति-2015'' से नवाजा गया।

जहाँ एक ओर इन दिनों उत्सव मे विभिन्न कार्यक्रमों की धूम मची रहती हैं वही दूसरी ओर मेले की धूम भी बरकरार रहती हैं पर्यटक एवं दर्शक कार्यक्रमों के साथ मेले का भी भरपूर लुफ्त उठाते नजर आते हैं। इसी के साथ ''बुंदेली उत्सव-2015'' का परदा गिरा।

-महल परिसर, छतरपुर (म.प्र.)

रचनाकारों से अनुरोध

बुन्देली बसंत हेतु समस्त रचनाकारों से मौलिक रचनायें वर्ष भर आमंत्रित हैं। आप संपादक के अनुरोध पत्र की प्रतीक्षा न कर बुन्देलीधरा पर बिखरी साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक धरोहरों को सहेजने व विश्लेषण से युक्त आलेख रचें व संपादक के पास प्रकाशन हेतु प्रेषित करें।

बुन्देलखण्ड अंचल के रचनाकारों, साहित्यकारो, इतिहासविदों एवं संस्कृति से जुड़े कलाकारों को बुन्देली विकास संस्थान द्वारा उनके रचनात्मक अवदान को रेखांकित करने हेतु विभिन्न सम्मान प्रदान किये जाते हैं। इस संदर्भ में आपसे अनुरोध है कि आपके अंचल में या आपकी दृष्टि में कोई पात्र हो तो उसका विवरण समिति के पास प्रेषित कर सहयोग करने का कष्ट करें।

-संपादक

BUNDELI VIKAS SANSTHAN BASARI, CHHATARPUR (M.P.)

INCOME & EXPENDITURE FOR THE YEAR 2014-2015

EXPENDITURE	Rs.	Rs. (R)	INCOME	Rs. (R)
Bundeli Utsav Expenses		1,229,454.00	From Jan Sahyog	16,05,000.00
Medical Camp. Exp.	6,615.00		Membership Fees	4,680.00
Hasya Kabi Sameelan	36,395			
Plantation Expenses	20,850.00		Smarika Advertisement	269,000.00
Agriculture Trainning & Seed Di	17,204.00	81,064.00	Interest From Bank	2,144.00
Other Expenses			Grant NTPC Chhatarpur	343,000.00
Salary	151,761.00			
Honorarium	127,050.00		From Fortune stone Ltd.	1,00,000.00
Audit Fees & Income Tax	4,500.00			
Misc Exp.	21,784.00		From Delhi Public School, Chhatarpur	50,000.00
Stationary & Printing	26,237.00			
Teaching learning Exp.	36,450.00			
Ismarika Printing Exp.	175,455.00			
Postage	4,213.00			
Sangosthi (Meeting)	35,381.00	582,831.00		
		480,475.00		
TOTAL Rs.:		**2,373,824.00**	**TOTAL Rs.:**	**2,373,824.00**

BUNDELI VIKAS SANSTHAN BASARI,CHHATARPUR (M.P.)

RECEIPTS & PAYMENTS A/C FOR THE YEAR 2014-2015

RECEIPTS	Rs.	Rs. (R)	PAYMENTS	Rs	Rs. (R)
OPENING BALANCE			**BUNDELI UTSAV EXPENSES**		**1,229,454.00**
Cooperative Bank (46)	5,594.00		Medical Camp. Exp.	6,615.00	
Canara Bank (S/A) 1608	20,800.00		Hasya Kabi Sameelan	369,395.00	
F.D.R. Canara Bank	800,000.00	826,394.00	Plantation Expenses	20,850.00	
			Agriculture Traning & Seed Dis.	17,204.00	**81,064.00**
From Jan Sahyog		16,05,000.00	**OTHER EXPENSES**		
			Salary	151,761.00	
Membership Fee		4,680.00	Honorarium	127,050.00	
			Audit Fees & Income Tax	4,500.00	
Smarika Advertisement		2,69,000.00	Misc Exp.	21,784.00	
			Stationary & Printing	26,237.00	
Interest From Bank		2,144.00	Teaching learning Exp.	36,450.00	
			Ismarika Printing Exp.	175,455.00	
Grant NTPC Chhatarpur		3,43,000.00	Postage	4,213.00	
			Sangosthi (Meeting)	35,381.00	**582,831.00**
Fortune Stone Ltd.		1,00,000.00			**500,000.00**
			CLOSING BALANCES		
			Co-operative Bank (46)	5,594.00	
Delhi Public School, Chhatarpur		50,000.00	Canara Bank (S/A) 1608	1,275.00	
			F.D.R. Canara Bank	800,000,00	**806,869**
TOTAL Rs.:		**3,200,218.00**	**Total Rs.**		**3,200,218.00**

Certified that the above statement is correct.

President **Secretary** **Sagar : 25-07-2015**

R.V. Agrawal
Chartered Accountants

BUNDELI VIKAS SANSTHAN BASARI, CHHATARPUR (M.P.)

BALANCE SHEET AS AT 31-3-2015

FUNDS	Rs.	Rs. (R)	ASSETS	Rs.	Rs. (R)
Society Fund					
As per L.BS	1,216,687.00		**Fixed Assets**		
Less the year	480,475.00	1,697,162.00	Land (As per last B.S.)		308,646.00
Loans & Deposit			**Building Construction**	695,600.00	1,195,600.00
Nehru Yuva Club Basari		132,216.00	**Furniture (As per last B.S.)**	5,00,000.00	9,597.00
Loans Swami Pravanand Homeo College		5,00,000.00	**Dead Stock (W.D.V)**		8,666.00
			CLOSING BALANCES		
			Cooperative Bank (46)	5,594.00	
			Canara Bank (S/A) 1608	20,800.00	
			F.D.R. Canara Bank	800,000.00	806,869.00
TOTAL Rs.:		**2,329,378.00**	**Total Rs.**		**2,329,378.00**

We certify that receipts & Utilization of funds & Closing Balance (as above) are correct.

AUDIT REPORT
W/e have checked (enclosed) receipts and utilization a/c and Balance Sheet as on 31-03-2014 if any we certify them as correct.

President **Secretary** **Sagar : 25-07-2015**

R.V. Agrawal
Chartered Accountants

20वें बुन्देली उत्सव में पधारे कलाकारों, खिलाड़ियों एवं दर्शकों का हार्दिक अभिनंदन

नगर पालिका परिषद, पन्ना

समय पर टैक्स जमा करें। अतिक्रमण न करें।

पानी की बर्बादी रोकें। वृक्ष लगायें और वृक्ष बचायें।

मोहन लाल कुशवाहा
अध्यक्ष

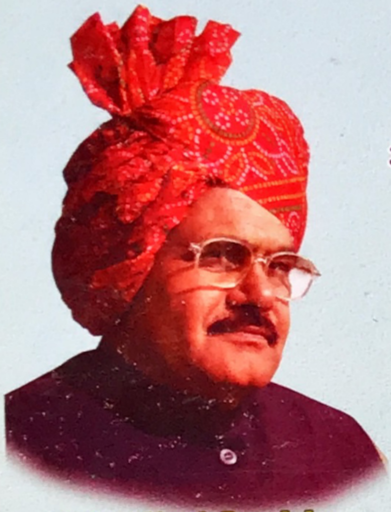
उपाध्यक्ष

ओ.पी. दुबे
सी.एम.ओ.

एवं समस्त पार्षदगण

बीसवें "बुन्देली उत्सव - 2016"

में पर्यटक ग्राम बसारी (बुंदेलखण्ड) में पधारे
अतिथियों एवं कलाकारों का हम हार्दिक अभिनंदन करते हैं।



Mr. S.P. Singh Bundela
Munna Raja
Patron



S.P.H. Medical College & Hospital Chhatarpur (M.P.)

Course run - B.H.M.S. (5½ Years Degree)

Specilities :

1. Recognised by Department of Medical Education of Madhya Pradesh Govt. & Central Council of Homoeopathy New Delhi Govt. of INDIA & Affiliated by Dr. H.S. Gour Central University Sagar (M.P.)
2. Well equipped Departments & Hospital (IPD & OPD).
3. Well Qualified & Experienced Teaching Faculty.
4. 50- Beded Hospital with well equipped OT



Mr. R.B. Tamrakar
President



Mr. Siddharth S. Bundela
Secretary



Mr. M.L. Beldar
Vice President



Mr. M. Singh
Administrator



Dr. H.R.M. Tripathi
Principal

WELCOME TO ALL GUEST



Ph. 07682-248352, 09755286989, 09630332232, 09407335046, 09584730068